पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी
देशरक्षा-अंक
वीर अर्जुन
सचित्र साप्ताहिक

संस्थापक—स्व० स्वामी श्रद्धानन्द

संपादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

★ अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम् ★ मूल्य १)

वर्ष १५] मंगलवार १ वैशाख २००५, १३ अप्रैल १९४८ [अंक १

नव जीवन नव प्राण चाहिये !

[श्री उदयशंकर भट्ट]

रक्त सिक्त विष-दग्ध धरा को नव जीवन नव प्राण चाहिये !
कुंठित गति लुंठित संस्कृति को अपना पथ निर्माण चाहिये !

'युद्ध युद्ध' की हृदय विदारक ध्वनि से आकुल विश्व प्राण है,
दुर्बल कांप रहे हैं भय से, बली सज रहे सविधान हैं।
डगमग डगमग भूधर डोले, अम्बर प्रलय मेघ छाये हैं,
नियति प्रकम्पित, दिग् दिगन्त तक, महानाश दल बल आये हैं।
साढ़े तीन हाथ के नर में भरा उदधि निःसीम पिपासा,
हिम शृंगों सी उच्च उमंगें, पोर पोर छाई अभिलाषा।
लूटी खप्पर, सत्य स्वर्ग सुख, बोलो, कैसा ज्ञान चाहिये !
रक्त सिक्त विष-दग्ध तुम्हें क्या नव जीवन नव प्राण चाहिये !

नग्न राक्षसी हिंसा जागी, महा काल जागे जल थल में,
नाश नाश औ' महानाश के सुन पड़ते गर्जन पल पल में।
स्वर्ग नरक भी अमृत बांटने वाला हमने आज खो दिया,
सत्य-धर्म का, दया कर्म का प्रेम मूर्ति शिर ताज खो दिया,
त्रिलोकी कम्पित, पर निर्भय पग ध्वनि सुन मरण अचेता हो गया,
विश्व दधीचि की वज्र अस्थि से खोता विश्व सचेत हो गया,
उसके अनुगामी नर को है बस उसकी मुस्कान चाहिए !
रक्त सिक्त विष-दग्ध धरा को नव जीवन नव प्राण चाहिए !

जीवन चिर न रहा पल पल में, प्राण प्राण में, रोम रोम में,
जीवन बिखर रहा पृथ्वी पर, जल में थल में, व्योम व्योम में,
इसे प्राण दें, इसे त्राण दो, रक्त पिपासा युद्ध विकृति है,
इसे ज्ञान दो, बुद्ध ज्ञान दो, जीवन ही निःशेष प्रकृति है।
जीने को यह लोक बना है, मरने को परलोक बना है,
तिमिर-हरण के लिए धरा पर रवि शशि का आलोक बना है।
कलुषित है इतिहास तुम्हारा, कितना और प्रमाण चाहिए !
रक्त सिक्त विष-दग्ध धरा को नव जीवन नव प्राण चाहिए !

स्वराज्य या स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश की रक्षा हमारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। आज हमारा भारतवर्ष स्वतन्त्र है। वह स्वाधीनता हमारे लाखों ज्ञात या अज्ञात देशभक्तों के कष्ट-सहन और त्याग व आत्मोत्सर्ग के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई है। इसलिए इसकी रक्षा के लिए हमें और भी अधिक सतर्क, उत्साहवान् तथा समर्थ होने की आवश्यकता है। इसी महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट करने के लिए 'देश रक्षा—अंक' प्रकाशित करने का निश्चय किया गया।

× × ×

अंग्रेज पिछली दो सदियों तक भारत का निरंतर शोषण करता रहा और जब वह यहां से जाने को विवश हुआ, तो यह हमारे खुशहाल मुल्क में, जहां लड़ाई झगड़े का नाम न था, एक ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर गया, जिससे समस्त देश भस्म हो गया देश के अनेक शहर वीरान हो गये, लाखों हिन्दू और मुसलमान मारे गये, घायल हो गये या अपने बापदादा के घरबार को सदा के लिये छोड़कर सर्दी गर्मी से बचने को आश्रय पाने या एक एक दाने अन्न के लिए तरसने लगे। और इससे भी अधिक भयंकर बात यह हुई कि हिन्दू और मुसलमान — जिनकी एक राष्ट्रीयता थी, एक दूसरे के शत्रु हो गये और हमारी भारतमाता न जाने कब तक के लिए खण्डित हो गई। और जब दो भाई लड़कर अपनी जायदाद का बटवारा कर लेते हैं, तब उनमें नित्य नये झगड़े पैदा होते रहते हैं। यही हाल आज हमारी अपनी मातृभूमि का है। वह दो परस्पर विरोधी खण्डों में विभक्त हो गई है।

मुस्लिम लीग ब्रिटिश सरकार के संकेत पर ही साम्प्रदायिकता का जहर फैला रही थी और उसी की इच्छा तथा कूटनीतियों के परिणामस्वरूप पाकिस्तान का निर्माण भी हुआ। आज भी ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसकी सहायता कर रहा है। आन्तरिक शासन में भी उसे ब्रिटिशों का सहयोग प्राप्त हो रहा है। इसका कारण अंग्रेजों का मुसलमानों या मुस्लिमलीग से सहज प्रेम नहीं है, यह निश्चित है। ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वार्थमयी संघर्ष में भारत का सहयोग प्राप्त नहीं कर सकता, वह उसकी धारणा है — और वह ठीक भी है। इसलिए ब्रिटेन की नीति भारत के विरुद्ध ऐसे एक राष्ट्र को शक्तिसम्पन्न कराने की है, जो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व आर्थिक स्वार्थों में पूर्ण सहयोग दे सके। पाकिस्तान के नेता पिछले कई वर्षों से अंग्रेजों के हाथों में खेलते रहे थे। आज भी पाकिस्तान उन्हीं के हाथों में खेल रहा है।

× × ×

पिछली एक सदी तक विश्व पर यूरोप का प्रभुत्व रहा। आज एशिया

सम्पादकीय

हमारे देश की अन्तर्राष्ट्रीय नीति व सुरक्षा

अपनी शृंखलाएं तोड़कर उठ खड़ा हुआ है। एशिया की यह जागृति साम्राज्यवादी राष्ट्रों के लिए स्वागत योग्य नहीं है। वे आज एशिया को शक्तिशाली रूप में देखने को उत्सुक नहीं हैं। भारतवर्ष, यह निश्चित है कि एशिया का नेतृत्व करेगा और यूरोपियन देशों के चक्रव्यूह से उनकी मुक्ति दिलाने में विशेष सहायक सिद्ध होगा। एशिया को कमजोर रहने देने का सबसे अच्छा उपाय भारत को सदा नित नई समस्याओं में उलझाये रहने देना है और भारत को परेशान करने का साधन आज पाकिस्तान है, जो उनकी मुट्ठी में है। काश्मीर पर पाकिस्तान की सहायता से आक्रमण इसी की भूमिका है। यही कारण है कि भारतवर्ष के अनेक नेता भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आज युद्ध के खतरे की बात करने लगे हैं।

× × ×

भारतवर्ष युद्ध नहीं चाहता। उसके आदर्श और उसकी परंपरा ही इसके विपरीत है। फिर धर्मविजय के महान् नेता सम्राट अशोक ने जिस तरह म० बुद्ध के अहिंसा के सन्देश को अपनाया था, म० गांधी के आदेशों व अमर बलिदान से आज भारत भी उसी तरह अहिंसा व शान्ति की भावना से अनुप्राणित है। साम्प्रदायिक एकता, विश्व शांति समानता, न्याय, मानवता और विश्वबन्धुत्व आदि आदर्श ही वस्तु भारत की अपनी संस्कृति है — और संसार को भी इसकी यही देन है। परन्तु इन आदर्शों की सुनहली दुनिया में रहकर हम यथार्थ की उपेक्षा नहीं कर सकते। यथार्थ तो अत्यन्त कठोर है, उसमें हिंसा है, द्वेष है, स्वार्थ है और है प्रतिहिंसा की ज्वाला। हमारे राष्ट्रनेता सदा शान्ति और प्रेम के इच्छुक रहे, इसी के लिए अपने प्राणप्रिय देश तक के दो खण्ड करने पर तैयार हो गये। लेकिन हमारी आदर्शवादिता देश को महान् रक्तपात से बचा नहीं सकी। इसके लिए कठोरता, दृढ़ता सतर्कता और शक्ति की अपेक्षा थी। हम स्वयं भले थे, हमने दूसरों से भी भलाई की आशा की और यहीं हम भूलकर बैठे। आज भी हमें सदेह है कि आदर्शवाद और निश्चिन्तता के कारण हम वही भूल फिर न कर बैठें। इसी दृष्टि से वस्तुतः यह अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

× × ×

आज संसार की स्थिति बहुत विषम है — १९३९ से भी अधिक पेचीदी। रूस और अमेरिका शक्ति और प्रभाव की प्रतिस्पर्धा में जो भयंकर कर रहे हैं, उनके फल में आज रूसी राष्ट्र जाने या अनजाने आ रहे हैं। इस भंवर में फंसने के बाद फिर निकलना कठिन हो जायगा। इसीलिए आगे हमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सम्बन्ध में बहुत अधिक सतर्क रहना होगा। एक दफा युद्ध की चिंगारी कहीं प्रज्वलित हुई, तो फिर न जाने कितने राष्ट्रों को उसमें भस्मसात होना पड़ता है। वस्तुतः आज राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति और सीमाओं के कारण भलेही अलग अलग सत्ता रखते हों, किन्तु वस्तुतः आज समस्त विश्व को अलग अलग खण्डों में विभक्त नहीं किया जा सकता। विज्ञान ने समय और स्थान की दूरी को शून्य कर दिया है। विश्व के एक कोने में हुई घटना का प्रभाव एक क्षण में दूसरे पर पड़ता है इसलिए आज यह और भी अधिक आवश्यक है कि हमारी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अधिक सावधानतापूर्ण हो, आदर्श उसका आधार अवश्य हो परन्तु व्यवहार मार्ग की ओर से हम आंखें न मूंद लें।

× × ×

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई पेचीदगी युद्ध को लगातार निकट ला रही है। अमेरिका में खुले आम अब युद्ध की चर्चा हो रही है। अमेरिकन राष्ट्रपति मि० ट्रूमैन की नई त्रिसूत्री योजना — सैनिक शिक्षण, मार्शल योजना और शस्त्रास्त्र निर्माण को भी हैनरी वालेस तथा ब्रिटेन के कई विचारकों ने युद्ध को निकटतर लाने वाला घोषित किया है। अमेरिका के भूतपूर्व विदेशसचिव श्री बर्न्स ने ४५ सप्ताहों में ही अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय संकट में पड़ने की सम्भावना प्रकट की है। अमेरिका के वर्तमान रक्षासचिव श्री फोरस्टल ने भी युद्ध के आसन्न खतरे की चिन्ता प्रकट की है। एक अमेरिकन प्रोफेसर ने तो नवम्बर के पूर्व ही रूस द्वारा संसार को हड़पने की भविष्यवाणी की है यूरोप में चेकोस्लोवेकिया के बाद इटली, आस्ट्रिया अथवा ईरान पर रूसी आक्रमण की संभावना अन्तर्राष्ट्रीय संकट को लगातार बढ़ाती जाती है। एक बार युद्ध आरम्भ हो और हमारा भारत — जिसे रूस व अमरीका दोनों प्रेम या बलपूर्वक अपना सहयोगी बनाने को उत्सुक हैं — अपने को तटस्थ कैसे रख सकेगा, यह कहना कठिन है। पं० जवाहरलाल नेहरू ने अत्यन्त दृढ़तापूर्वक भारत को तटस्थ रखने की घोषणा की है किन्तु वे यह जानते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में कभी कुछ सम्भव है, इसी लिए वे भी दो बुराइयों में से कम बुराई को लेने की सम्भावना प्रकट कर रहे हैं।

× × ×

आज के युद्ध में अन्तर्राष्ट्रीय ... [illegible]

के साथ साथ शक्ति सम्पन्न भी आवश्यक है, इस तत्व को हमारे राष्ट्र नेता हृदयंगम कर चुके हैं। इसी लिए वे उधर सतर्क हैं और भारत में सैनिक तैयारियों के प्रति उपेक्षा नहीं दिखाई जा रही है, यह सन्तोष का विषय है। परन्तु केवल सरकार की तत्परता और सेना का सामर्थ्य ही आज राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। समस्त जनता का पूर्ण सहयोग सरकार को प्राप्त होना चाहिए। राष्ट्र की आवश्यकता अपूर्ण नहीं रहनी चाहिए, किसान, मजदूर, दस्तकार, व्यापारी, उद्योगपति, साधारण जनता और सरकारी कर्मचारी — प्रत्येक के हृदय में यह भावना सदा जागृत रहनी चाहिए कि राष्ट्र उसका है, और उसकी रक्षा में उसे अपना भाग अदा करना है। बस, यही मुख्य उद्देश्य इस अंक को प्रकाशित करने में है।

इस अंक के सम्बन्ध में

यह अंक जिस उद्देश्य को सामने रखकर निकाला गया है, उसकी चर्चा ऊपर की गई है। विषय के विविध महत्वपूर्ण पहलुओं पर हम, इसमें चाहते हुए भी, लेख नहीं दे सके। आजकल कागज का संकट असाधारण है, इस लिए पृष्ठों की संख्या हमें अपनी योजना से बहुत कम रखनी पड़ी, परिणामतः अनेक आवश्यक विषयों की चर्चा हम नहीं कर सके। अनेक लेखकों के लेख भी प्रकाशित होने से रह गये। राष्ट्ररक्षा के मुख्यतः तीन अंग होते हैं — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, सेना और जनता का सहयोग। इन तीनों पहलुओं पर कुछ लेख दिये गये हैं। हमारी सरकार की नीति की उग्र आलोचना हमारा उद्देश्य नहीं है, फिर भी हम प्रत्येक विषय पर स्वतन्त्र दृष्टिकोण से चिन्तन की प्रवृत्ति को आवश्यक मानते हैं, इसीलिए ऐसे लेख भी दिये गये हैं। हम यह फिर स्पष्ट करना चाहते हैं कि यह अंक निकाल कर युद्ध के भावी खतरे से जनता को भयभीत व आतंकित करना हमारा उद्देश्य नहीं है। बहुत सम्भव है कि युद्ध टल सके और पाकिस्तान के नेता अपनी विषम परिस्थितियों अथवा सद्बुद्धि के कारण अपनी प्रवृत्तियों से बाज आजायें लेकिन युद्ध भी तो असंभव नहीं है और उस स्थिति में हिन्द एक क्षण के लिए भी आतंकित न हो, बस यही हम इस अंक के द्वारा प्रतिपादन करना चाहते हैं। हम सदा तैयार रहें, ताकि इससे ... समाचित आन्तरिक शत्रु से सावधान रहें। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हम ... रूस के पिछलग्गू बनें न अमेरिका के। यदि इस ... में किसी राष्ट्र के आदमियों ... युद्ध की ... , तो हम ... [illegible]

भारतीय सेना जनता की सेना है, उसका प्रत्येक सैनिक देश के सम्मान का प्रहरी है। —नेहरू

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति

[प० जवाहरलाल नेहरू]

आज सब जगह युद्ध की चर्चा है। लोग फिर एक नये युद्ध—तृतीय विश्व-युद्ध—की आशंका करने लगे हैं। मुझे आशा है कि निकट भविष्य में युद्ध नहीं छिड़ेगा। भारत चाहता है कि सब राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग करें और भारत को भी ऐसा करने दें। हम शान्ति चाहते हैं और इसे बनाये रखने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। हमारी किसी अन्य देश के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है और न किसी के विरुद्ध हमारे मन्सूबे ही हैं, किन्तु यदि कोई देश हमारे विरुद्ध आक्रमणात्मक विचार रखता है तो हम उसका सामना करने को प्रस्तुत हैं।

हम किसी कमजोर और गिरे हुए देश के नागरिक नहीं हैं और सैनिक दृष्टि से अथवा किसी भी अन्य दृष्टि से भयभीत होना हमारे लिए मूर्खता की बात होगी। मैं इस बात से नहीं घबराता कि यदि किसी बड़ी शक्ति ने हम पर आक्रमण कर दिया, तब हमारा क्या होगा। निस्सन्देह उससे हमें कुछ हानि पहुंच सकती है और हम कुछ जख्मी भी हो सकते हैं। किन्तु आखिर, अतीत में हमने अपने राष्ट्रीय आन्दोलन द्वारा संसार की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक का विरोध किया है। हमने उसका एक खास तरीके से विरोध किया और एक हद तक उस तरीके से सफल भी हुए। मुझे रंचमात्र सन्देह नहीं कि यदि हमें बुरे से बुरा समय देखना पड़ा, और सैनिक दृष्टि से हम इन बड़ी शक्तियों का सामना न कर सके, तो हमारे लिए यह बेहतर होगा कि हम अपनी आत्मा को बिकने तथा अपने आदर्शों को बेचने की अपेक्षा दूसरे तरीकों से और दूसरे हथियारों से लड़ें।

हमारी नीति क्या हो

मुझ से पूछा जाता है कि जब कि विश्व पर युद्ध के बादल फिर से गरजने लगे हैं और विभिन्न देश इस या उस गुट में सम्मिलित हो रहे हैं तब हमारी—हमारे देश की—नीति क्या होगी। मैं तो समझता हूं कि हमें अवसरवादिता के दृष्टिकोण से भी अपनी नीति के विषय में स्पष्ट, ईमानदार और स्वतंत्र होना चाहिये। किसी अवसर विशेष पर हमारी नीति क्या हो, यह कहना बड़ा कठिन है, क्यों कि स्थितियां दिन-ब-दिन तेजी से बदल रही हैं। यह हो सकता है कि किसी समय परिस्थितियश हमें एक ऐसी बुराई का चुनाव करना पड़े, जिसे हम औरों की अपेक्षा कम बुरा समझते हों। किन्तु जब कि हम इस देश में प्रजातन्त्र चाहते हैं और हमारी यह अभिलाषा है कि भारत एक स्वतन्त्र और पूर्ण सत्तासम्पन्न राज्य के रूप में रहे, यह स्वाभाविक है कि हम ऐसे किसी भी प्रयत्न का विरोध करें, जो संसार में प्रजातंत्रीय सिद्धान्तों को विनष्ट करना चाहता हो। हमें केवल राजनीतिक दृष्टि से ही प्रजातन्त्र की रक्षा में सहयोग नहीं देना है आर्थिक मामलों में भी यह देखना है कि कहीं किसी के साथ पक्षपात अथवा दुर्व्यवहार तो नहीं किया जा रहा है।

मुझ से कुछ लोगों ने कहा है कि हमें कमजोर और पददलित देशों का साथ देना चाहिये और साम्राज्यवाद का विरोध करना चाहिये। दूसरी ओर, यह भी मांग की गयी है कि हमारी सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय गुटबंदी में किसी एक का साथ देना चाहिये।

हो सकता है कि ऐसे समय आयें, जब कि भारत को इस अथवा उस शक्ति का साथ देना पड़े। हमें किन्हीं परिस्थितियों में किसी साम्राज्यवादी शक्ति का पक्ष भी ग्रहण करना पड़ सकता है, किन्तु यह तभी होगा, जब कि हमें दो बुराइयों में किसी एक को चुनना होगा। इसका चुनाव करते समय हमें यह देखना होगा कि दोनों में से कौन सी बुराई कम है। तथापि, एक सामान्य नीति की दृष्टि से मैं इसे अच्छी नीति नहीं समझता।

किसी गुट से न बंधेंगे

ऐसे भी लोग हैं, जो यह कहते हैं कि 'पाकिस्तान के राजनीतिज्ञ अधिक चतुर हैं। व्यावहारिक होने के कारण वे आंग्ल अमेरिकन गुट में अच्छी दृष्टि से देखे जाते हैं, जब कि हम सर्वथा मित्र विहीन हैं।' यह लोग ठीक उन लोगों की तरह हैं, जो अंग्रेजों के विरुद्ध कांग्रेस के आन्दोलन के समय यह कहा करते थे : 'जिन्ना एक पक्का कूटनीतिज्ञ है, वह अंग्रेजों से जो चाहता है, ले लेता है और हम हैं कि प्रत्येक लड़ाई में हार जाते हैं।'

मैं इन लोगों से कहूंगा कि सब बड़े राष्ट्रों की वैदेशिक नीति बुरी तरह असफल रही है। अपनी वैदेशिक नीति के मूलभूत सिद्धान्तों का निश्चय करते समय, हम अपनी पिछली परम्पराओं और पिछली प्रतिष्ठा को अपनी आंखों से ओझल नहीं कर सकते। हमें उच्च नैतिक सिद्धान्तों का साथ देना है। हम कोई छोटा सा राष्ट्र नहीं हैं, जो किसी बड़े देश के पिछलग्गू बन जाएं और उसकी हां में हां मिलाते रहें।

भले ही हम सैनिक और औद्योगिक दृष्टि से इतने सशक्त नहीं कि दूसरे हमारा स्मरण करने मात्र से भयभीत हो जाएँ। किन्तु हम अपने पैरों के बल पर खड़े होने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं और किसी भी देश की सैनिक शक्ति से डरने वाले नहीं हैं। हम पददलित और गिरे हुए देशों का साथ देंगे। किन्तु फिलहाल हम ऐसे किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े में रुचि नहीं लेंगे, जिस से हमारा सीधा सम्बन्ध न हो।

[शेष पृष्ठ १० पर]

भारतीय सेना देश के सम्मान की प्रहरी है

भारत की सेना जनता की सेना है। उसने देश तथा जनता की सेवा करने का व्रत लिया है। हम शान्ति के प्रेमी हैं और शान्ति तथा सद्भावना का प्रसार अपने देश में चाहते हैं, जिससे हमारे देश में रहन सहन की स्थिति उन्नत हो और देश शक्तिशाली व समृद्ध बने। परन्तु शान्ति तथा स्वतन्त्रता तभी कायम रखी जा सकती है, यदि हमारे पास शक्तिशाली सेना हो और हमें दूसरे देशों का आदर प्राप्त हो। स्वतन्त्रता का मूल्य सतत सावधानी है। इस लिए हमारी आदर्श सेना होनी चाहिए जो कर्तव्य पालन, नियम बद्धता तथा निपुणता में किसी भी अन्य देश की तुलना में आ सके। हमारे सैनिकों को अनिष्टकारी दलबंदी तथा साम्प्रदायिकता को छोड़ कर समूचे भारत के लिए सोचना चाहिये। भारत के प्रत्येक सैनिक को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह देश के सम्मान का प्रहरी है। भारतीय सेना ने एक उच्च स्तर स्थापित किया है और उसी के अनुसार हमारे सैनिक की परीक्षा होगी।

—जवाहर लाल नेहरू

यह सीमा, जहां हमारी मातृभूमि भारतवर्ष को दो खण्ड में विभक्त किया गया है।

हमारी रक्षा-समस्या के तीन पहलू

[श्री रामगोपाल विद्यालङ्कार]

वर्तमान युद्ध-कला का आधार वैज्ञानिक हो जाने के कारण और विज्ञान की कृपा से ही स्थान की दूरी, ऊंची पर्वतमालायें अथवा विस्तृत समुद्र आदि यातायात की दुर्लंघ्य बाधाओं की प्रायः समाप्ति हो जाने के कारण, किसी भी देश की रक्षा-समस्या इतनी विशाल बन गयी है कि उसका विवेचन अनेक ग्रन्थों में भी पूर्ण नहीं हो सकता। अतः प्रस्तुत पंक्तियों में मैं रक्षा-समस्या के केवल तीन पहलुओं पर चर्चा करूंगा और वह भी सांकेतिक रूप में ही। वे तीन पहलू हैं:—

१. हमारी आन्तरिक निर्बलतायें।

२. हमारी सीमावर्ती व्यवस्था।

३. और हमारी विदेश नीति।

भारतवर्ष के प्रायः सभी ऐतिहासिकों (स्वदेशी और विदेशी, दोनों) ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि हमारे विदेशी आक्रान्ता बहुधा हमारी ही आन्तरिक निर्बलताओं के कारण अपने आक्रमणों में सफल होते रहे और हमारी निर्बलतायें प्रधानतः पांच थीं —

क. देश का अनेक छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्यों में बंटे रहना और उनके राजाओं की परस्पर ऐसी तीव्र राजनीतिक प्रतिस्पर्धा कि वे एक दूसरे के विरुद्ध विदेशी आक्रान्ताओं की सहायता लेने में भी संकोच नहीं करते थे।

ख. भारतीय राजाओं का अपने पड़ोस विदेशों तक के विषय में चार... और उनके प्रति किसी भी प्रकार की उत्सुकता अथवा कुतूहल का अभाव।

ग. उनकी सेनाओं तथा शस्त्रों का ... आक्रान्ताओं की सेनाओं या शस्त्रास्त्रों की तुलना में हीन होना। मुगलकाल से पूर्व तक भारतीय राजा विदेशी आक्रान्ताओं के सामरिक साधनों और युद्ध प्रणालियों को जानना तो दूर रहा, जानने के पश्चात् भी उन्हें अपनाने का यत्न नहीं करते थे।

घ. जनता के, विशेषतः सैनिकों के, धार्मिक तथा सामाजिक अन्ध विश्वास। गौओं के सामने पर हिन्दू रक्षकों द्वारा शस्त्र रख देने की कहानियां तो प्रसिद्ध हैं ही, यह भी सत्य है कि सिपाहियों का खान-पान आदि का असीम परहेज होने के कारण सैनिक व्यवस्था यथेष्ट नहीं रह पाती थी।

ङ राजा और सेनापति प्रायः वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए लड़ते थे, देश के लिए अथवा अन्य किसी सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए नहीं। इसी कारण सेनापतियों के शत्रु से जा मिलने की कहानियों से समस्त इतिहास भरा पड़ा है।

शताब्दियों की दासता के पश्चात् अब देश के स्वतन्त्र होने पर हमारा जो नया राजनीतिक गठन हो रहा है, उसमें वे आन्तरिक निर्बलतायें बहुत कुछ दूर हो जाने की आशा है। इस सम्बन्ध में देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात्, सबसे बड़ी बात यह हुई है कि बहुसंख्यक स्वतन्त्र राजाओं की परम्परागत स्वतन्त्रता समाप्त होकर उनकी रियासतें भी एक हिन्दुस्तान देश का अंग बन गयी हैं। फलतः अब आन्तरिक शासन में तो केन्द्रीय सरकार की अनेक उलझनों का अन्त हो ही जायगा, देश पर बाह्य आक्रमण होने की दशा में भी यह भय नहीं रहेगा कि अपने ही देश के विविध राजा वैयक्तिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए कहीं परस्पर न लड़ बैठें अथवा उसी प्रयोजन से आक्रान्ता के साथ न मिल जायें। राजाओं के अतिरिक्त, सेनापति और मन्त्री आदि निजी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये प्राचीन काल तक विश्वासघात आदि के जो कार्य किया करते थे, उनका भी प्रजातन्त्र के युग में बहुत भय नहीं रहेगा। तथापि अभी हमारे देश की जनता में सार्वजनिक भावना का विकास इतना अधिक नहीं हुआ है कि इस भय से हम सर्वथा निश्चिन्त हो सकें। हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं तक में अभी बहुसंख्या ऐसे ही व्यक्तियों की है, जो सार्वजनिक कार्य लोक सेवा की या देश की उन्नति की भावना से उतना नहीं करते जितना आन्तरिक अहंभाव की तुष्टि के लिये। और इस प्रकार के सार्वजनिक कार्यकर्ता अनेक अवसरों पर वैयक्तिक स्वार्थ की पूर्ति के लिये सार्वजनिक लाभ तक का बलिदान कर बैठते हैं। इनसे हमें सदा सावधान रहना चाहिए — विशेषतः देश पर बाह्य-आक्रमण की दशा में।

परन्तु इस प्रकार के स्वार्थ-साधु सार्वजनिक कार्यकर्ता केवल हमारे ही देश की आबहवा में नहीं फूलते-फलते। संसार के अन्य भी अनेक देशों में इनका अभाव नहीं है। भेद केवल न्यून या अधिक संख्या का हो सकता है। और इनकी बुराई से देश को बचाने का एकमात्र उपाय जनता का शिक्षण और जागृति है। जिस देश की जनता जितनी जागृत, सुशिक्षित, सुसंगठित और व्यवस्था बद्ध (डिसिप्लिन्ड) होगी, वह देश उतना ही इन स्वार्थ साधु 'सार्वजनिक नेताओं' की बुराइयों से बचा रहेगा। परन्तु जनता के शिक्षण और जागृति का यह काम दिन दो दिन या बरस चार बरस में नहीं हो सकता। यह तो परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक समय लग कर ही होगा और जब तक यह पूर्ण नहीं होगा तब तक हमारी रक्षा-समस्या अन-सुलझी ही रहेगी।

व्यक्तियों के अतिरिक्त, देश रक्षा की दृष्टि से, परस्पर विरोधी विविध सम्प्रदायों और पार्टियों का होना भी हानिकारक है। जिस प्रकार मुसलमान हिन्दुओं को और हिन्दू मुसलमानों को हानि पहुंचाकर अपना अपना साम्प्रदायिक वर्चस्व स्थापित करना चाहें, तो देश को हानि होती है, उसी प्रकार किसान-जमींदार या मजदूर-मालिक या कांग्रेस-कम्यूनिस्ट आदि संकीर्ण पार्टी-बन्दी भी देश के अभ्युदय के लिये घातक है, विशेषतः तब जब इन पार्टियों के नेता अपने देश की परिस्थिति का भली भांति अध्ययन न कर केवल मिथ्या आदर्शवाद से प्रेरित होकर, विदेशों का अनुकरण करते हुए अपने देश में इन विदेशी-राजनीतिक तथा आर्थिक आदर्शों की स्थापना करने का हठ करें। ऐसा होने पर इन राजनीतिक तथा अपरिपक्व आदर्शों की कसमें खाने वाले अपने देश की आवश्यकता को भी भूल ही जाते हैं और इन आदर्शों के भ्रम-जाल में उलझ कर बहुधा न चाहते हुए भी, विदेशियों का लाभ तथा स्वदेश की हानि कर बैठते हैं। यही कारण है कि सेनाओं को राजनीतिक पार्टी बाजी से सदा पृथक् रखने का यत्न किया जाता है। परन्तु अब तो पार्टियों के कार्यकर्ता सैनिकों व अन्य सरकारी कर्मचारियों तक को अपना अनुयायी बनाने तथा अपने विचारों से प्रभावित करने लगे हैं। यह बात भयंकर है। इस जोखिम से हमारे देश को बचना चाहिये।

बहुसंख्यक राजाओं और रियासतों की समाप्ति के समान ही, हमारी सेनाओं तथा सैनिकों के संगठन में भी परम्परागत अन्ध विश्वास जनित बुराइयों का तो प्रायः अन्त हो गया है परन्तु हमें आदर्श और व्यवहार में समन्वय करके न चलने की अपने पूर्व पुरुषाओं की पुरानी उस भूल से अब भी बचने की आवश्यकता है, जिसका लाभ हमारे देश के विदेशी आक्रान्ता बहुधा उठाते रहे हैं। हमारे पूर्व पुरुषाओं की नीति विदेशियों के प्रति बहुधा उदारता, क्षमा, आतिथ्य, मनुष्यता, सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व आदि उच्च गुणों से प्रभावित रही और उनसे बार बार हानि उठाकर भी हमारे पूर्वजों ने गुणों की ओर से आंख मींचना अथवा इनका निरादर करना उचित नहीं समझा। मुझे भय है कि हमारे वर्तमान शासक भी, म० गांधी और उनकी शिक्षाओं के कारण सम्भावित शत्रुओं से व्यवहार करते हुए हमारे पूर्वजों की भूलों को न दोहरा बैठें। देश की रक्षा के लिये आवश्यक है कि शासक-वर्ग धर्म नीति और व्यवहार नीति के भेद को भली भांति समझ ले और वह धर्म का मार्ग धर्मात्माओं के लिये छोड़कर व्यवहार के मार्ग पर ही चले। यदि शासक धर्म के मार्ग पर चलने की चेष्टा करेंगे तो उनकी दृष्टि इतनी अन्तर्मुखी हो जायगी कि वे विदेशों की सैनिक उन्नति को अथवा उनकी प्रभाव-विस्तार की चेष्टाओं तक को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लग जायेंगे और अपनी सेना को समर्थ बनाने के प्रयत्नों पर यथेष्ट ध्यान देना छोड़ बैठेंगे, जिससे देश की रक्षा संकटापन्न हो जायगी।

सीमा-वर्ती व्यवस्था

देश रक्षा के लिए दूसरे पहलू की

स्वाधीनता के समारोह में राष्ट्रीय सेना का उल्लास

ओर मैं इन पंक्तियों में संकेत करना चाहता हूं, वह है हमारी सीमा-वर्ती व्यवस्था। ब्रिटिश काल से पूर्व तक हमारे देश पर अधिकतर आक्रमण स्थल मार्ग से, और वे भी, उत्तर-पश्चिमी दिशा से ही हुए थे। उन आक्रमणों को रोकने के लिए केवल बलवान् स्थल-सेना पर्याप्त होती। परन्तु अब तो देश पर जल, स्थल और आकाश, किसी भी मार्ग से और किसी भी दिशा से आक्रमण हो सकता है। अतः इस देश की रक्षार्थ सभी सीमाओं पर बलवान् और चौकसी सेना रखने के अतिरिक्त, हमें अपनी सैनिक व्यवस्था ऐसी रखनी होगी कि हम आक्रान्ता को अपनी सीमा से दूर ही रोक सकें। विज्ञान ने वर्तमान युद्ध कला को ऐसे साधन दे दिये हैं कि उनका प्रयोग करके पराजित शत्रु भी विजेता को इतनी क्षति पहुंचा सकता है कि वह जीत कर भी सदा या कुछ से अथवा दीर्घ काल के लिए पंगु हो जाय। फ्रांस, ब्रिटेन, रूस चीन आदि गत महायुद्ध के विजेता राष्ट्र इस सचाई के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अकेला अमेरिका ऐसा देश है जो युद्ध जीत कर पंगु नहीं बना, और उसका कारण यह है कि शत्रु उसके समीप तक पहुंच ही नहीं सका।

अतः हम को भी अपने देश की रक्षा के लिए अपनी सीमा-वर्ती व्यवस्था ऐसी रखनी होगी कि आक्रान्ता को अपनी सीमा से जितना सम्भव हो उतना दूर ही रोका जा सके। इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए सब स्थल सीमाओं पर बलवान् वायु-सेना रखने के अतिरिक्त, सीमा से दूर-वर्ती स्थानों पर भी अपने वायवीय और जलीय सैनिक अड्डों का होना आवश्यक है। ब्रिटिश सरकार, अपने भारतीय साम्राज्य की रक्षा के लिए ही पूर्व में सिंगापुर में और पश्चिम में ईरान की खाड़ी, अदन तथा ईराक आदि में बलवान सैनिक छावनियां स्थापित किए हुए थी। अब परिवर्तित परिस्थितियों में भी वह इस प्रकार सभी भागों में अपने वायुसैनिक अड्डे स्थापित करने तथा सब समुद्र को अपने जलसैनिक यातायात के लिए खुला रखने का यत्न कर रहा है। भारत को भी अपनी रक्षा के लिए इसी मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। हमारे देश के पुराने शासकों ने रक्षा समस्या पर इस दृष्टि से कभी विचार ही नहीं किया। बरमा, मलाया, ईरान की खाड़ी, अरब के दक्षिणी तथा अफ्रीका के पूर्वी तटों पर भारतीयों के व्यापार का विस्तार होते हुए भी उस परिस्थिति का उपयोग हमारे देश के पुराने शासकों ने अपनी रक्षा-व्यवस्था को दृढ़ बनाने के लिए नहीं किया स्वतंत्र भारत को वह भूल नहीं दोहरानी चाहिए। स्वतन्त्र भारत के शासक यदि ब्रिटिशों और अमेरिकनों के मार्ग पर चलना पसन्द न भी करें तो भी उन्हें विस्तृत हिन्द महासागर के दूर वर्ती द्वीपों में तो अपने बलवान जलसैनिक और वायुसैनिक अड्डे रखने चाहिए। देश की रक्षा के लिए अपनी सीमा-वर्ती व्यवस्था हमें इसी ढंग से करनी चाहिए।

हमारी विदेश-नीति

विदेश नीति तीसरी वस्तु है जिसके विषय में रक्षा-समस्या पर विचार करते हुए कुछ संकेत दे देने आवश्यक हैं। प्राचीन-काल में हमारी विदेश-नीति प्रायः कुछ नहीं थी। भारत के व्यापारी तो हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों में दूर-दूर तक व्यापार करने जाते थे, परन्तु हमारे शासक विदेशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में इससे अधिक प्रायः कुछ ध्यान नहीं देते थे कि विदेशों के जो प्रतिनिधि भारत के प्राकृतिक धन धान्य से आकृष्ट होकर उनके दरबार में आते अथवा आक्रान्ता के रूप में उनका सम्पर्क जिन विदेशियों के साथ हो उनके प्रति उदार आतिथ्य का व्यवहार किया जाय। उपेक्षा की इस विदेशी नीति के कारण ही हमारे देश पर विदेशियों का राज्य हुआ।

अब स्वतन्त्र भारत के शासकों की विदेशों के प्रति वैसी उपेक्षा अथवा निरी उदारता की वृत्ति तो नहीं है, परन्तु वे अन्तर्राष्ट्रीयता, मानवता, समानता, स्वतन्त्रता आदि आदर्शों के माया-जाल में इतने अधिक उलझ गये प्रतीत होते हैं कि अनेक अवसरों पर वास्तविकता और वस्तुस्थिति उनकी दृष्टि से ओझल हो जाती है। हमारी तो विदेशों की प्रति ऐसी वृत्ति है और अमेरिका, ब्रिटेन, रूस आदि अपने प्रभाव विस्तार के अभिलाषी देश हमारे साथ सब व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दी की दृष्टि से ही करते हैं। काश्मीर के मामले पर यू० एन० ओ० में बहुसंख्यक देशों ने जिस प्रकार पाकिस्तान का पक्ष लिया है, वह हमारी बात की सत्यता का ताजा उदाहरण है। अतः अपने देश को आक्रमणों से बचा कर चलना हो तो हमें अपनी विदेश नीति को निरा आदर्शानुगामी न बना कर व्यवहार से और अपने देश के लाभ से संगत भी रखना होगा।

हमारी आवश्यकता

[बच्चन]

हृदय भविष्य के सिंगार में सने,
दिमाग ज्ञान से अतीत की रंगें,
नयन स्वतन्त्र वर्तमान में जगें—
स्वदेश को
सुजान एक
चाहिए।

जिसे विलोक [illegible] जोश में भरें
जिसे लिए जवान शान से बढ़ें,
जिसे लिए जियें जिसे लिए मरें,
स्वदेश को
निशान एक
चाहिए।

कि जो समस्त जाति की उमंग हो,
कि जो समस्त जाति की पुकार हो,
कि जो समस्त जाति की सिंगार हो
स्वदेश को
[illegible] एक
चाहिए।

क्या हम आत्म-रक्षा में समर्थ हैं ?

[श्री हरिश्चन्द्र, स० सम्पादक दैनिक 'वीर अर्जुन']

अब जबकि फिर एक नये युद्ध— द्वितीय विश्व-युद्ध से भी अधिक भयकर युद्ध —की सम्भावनायें अधिकाधिक बढ़ती जा रही हैं, स्वतन्त्र भारतवासियों के लिए यह विचारणीय हो गया है कि सघर्ष छिड़ जाने की अवस्था में वे अपने देश की रक्षा करने में कहा तक समर्थ हो सकते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महात्मा गाधी का यह देश आज ही नहीं, सैकड़ों और सहस्त्रों वर्षों से शान्ति का उपासक रहा है। उसने कभी दूसरे पर आक्रमण नहीं किया और आज भी ऐसा नहीं चाहता। उसकी यह हार्दिक अभिलाषा है कि व्यर्थ में लाखों और करोड़ों व्यक्तियों का सहार करने वाले और उससे भी अधिक सख्या में स्त्रियों और बच्चों को विधवा तथा निस्सहाय कर देने वाले युद्ध के अभिशाप का सदैव के लिए अन्त हो जाए। हमारे प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्टतः यह कहा है कि "हम शान्ति के प्रेमी हैं और शान्ति तथा सद्भावना का प्रचार चाहते हैं। हमारी कामना है कि समस्त राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग करें और हमारे देश को भी वैसा करने दें। हमारी किसी अन्य देश के प्रति कोई दुर्भावना नहीं और न किसी के विरुद्ध कोई मन्सूबे ही हैं।" पंडित नेहरू की उपर्युक्त घोषणा भारत के आदर्शों और उसकी परम्परा के अनुरूप तो है ही, व्यावहारिक दृष्टि से उसे वही मार्ग अपनाना अभीष्ट भी है। विभाजन के पश्चात् भी हमारा देश एक विशाल देश है और प्रायः सभी भारतीय रियासतों के भारतीय सघ के प्रदेशों में विलीन हो जाने अथवा पृथक इकाइयों के रूप में रहते हुए उसका अग बन जाने से उसका और भी अधिक विस्तार हो गया है यह सत्य होते हुए भी इस वस्तुस्थिति से इन्कार नहीं किया जा सकता कि यदि युद्ध के भय ने वास्तविकता ग्रहण कर ली, तब भारत को बहुत बड़े सकट का सामना करना पड़ जाएगा। गत दोनों महायुद्धों के समय भारत ब्रिटिश साम्राज्य का अग था और तब उसकी रक्षा का दायित्व बहुत कुछ ब्रिटिश सरकार पर था। इसी कारण उसकी सेनायें तब दूर दूर प्रदेशों मे भी जाकर लड़ सकी। किन्तु आज स्थिति उससे सर्वथा भिन्न है। आज वह एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और ऐसे किसी भी सकट के समय उसे अपनी रक्षा का दायित्व अपने ऊपर ही लेना पड़ेगा। किसी पर आक्रमण करने का तो सवाल ही जाने दीजिये, प्रश्न है कि क्या हम अपनी रक्षा करने में भी समर्थ हो सकते हैं। हमारे पास जन-बल पर्याप्त है और जब चाहें, विशाल सेना तैयार करने के लिए सहस्त्रों और लाखों नहीं, करोड़ों व्यक्तियों को सेना में भरती कर सकते हैं। सवाल है उन्हें आधुनिक युद्ध के लिए शस्त्र-सज्जित करने का। आज उन्हें सशस्त्र करने के लिए हमारे पास पर्याप्त सख्या में राइफलें तक नहीं हैं। आधुनिक युद्ध में राइफिल का वह मूल्य नहीं रहा। अब तो स्टेनगन, ब्रेनगन, मशीनगन, टैंक और नये ढग की तोप ही नहीं, राकेट, रेडार और परमाणु बम की भी आवश्यकता है। आज हमारे पास कितने कारखाने हैं, जो इन शस्त्रास्त्रों का निर्माण कर सकते हैं अथवा आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त ही कर सकते हैं? हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी वाले अब तक मोटर के पुर्जों को जोड़ने मात्र का कार्य करते हैं बगलौर की हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट फैक्टरी ने अब तक एक भी हवाई-जहाज तयार करके बाहर नहीं निकाला है और 'जलउषा' का निर्माण करके हम ने जहाज निर्माण की दिशा में केवल पहला कदम बढ़ाया है। ऐसी दशा में स्पष्ट है कि हमें अपने को शक्ति शाली बनाने के लिए समय चाहिये। जब तक हमारी पर्याप्त औद्योगिक उन्नति नहीं हो जाती, हमारी स्वाभाविक इच्छा यही होगी कि ससार मे एक नया युद्ध न छिड़े — कम से कम आगामी कुछ वर्षों तक।

किन्तु, सदैव वही नहीं होता, जो हम चाहा करते हैं। शांति के उपासक और युद्ध के लिए अनिच्छुक होते हुए भी हमें प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार रहना है। हमें अपने भीतर इतनी भौतिक और नैतिक सामर्थ्य उत्पन्न करनी है कि अपने विरुद्ध आक्रमण की दशा में हम आक्रान्ताओं का सफलता पूर्वक सामना कर सकें। सन्तोष का विषय है कि भारत-सरकार इस दिशा में न केवल आवश्यक ध्यान दे रही है, वर्तमान साधनों का पूरा पूरा उपयोग करते हुए अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने का प्रत्येक प्रयत्न भी कर रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारतीय सेना की सख्या २० लाख से ऊपर पहुच गयी थी, किन्तु उसके विघटन और देश विभाजन के परिणामस्वरूप सेना का भी विभाजन हो जाने से उसकी शक्ति अपेक्षाकृत बहुत कम रह गयी है। भारत सरकार ने इस क्षतिपूर्ति के लिए तथा देश को अपनी रक्षार्थ उद्यत करने के निमित्त फिलहाल गत पौने आठ महीनों में निम्न योजनाएं तैयार की हैं. नेशनल कैडट कोर और टेरिटोरियल फोर्स का निर्माण। नेशनल कैडट कोर की योजना स्कूलों और यूनिवर्सिटी के छात्रों में सैनिक शिक्षा देने के लिए है और उनकी सख्या फिलहाल २ लाख होगी, जबकि टैरीटोरियल फोर्स अर्थात् प्रादेशिक सेना की योजना राष्ट्रीय सकट के समय स्थायी सेना के लिए दूसरी पांत का काम देने के उद्देश्य से बनाई गयी है। दूसरे शब्दों मे यदि किसी सकट के समय स्थायी सेना को और अधिक सैनिक टुकड़ियों की आवश्यकता पड़ी, तो यह सेना तुरत उसकी सहायता के लिए पहुच जायगी। यह सेना राष्ट्रीय सकट के समय आन्तरिक सुरक्षा का कार्य-भार सभालेगी और स्थायी सेना को इस दायित्व से मुक्त कर देगी। विमान-भेदी तोपों पर तथा तट-रक्षा के कार्यों पर भी इसी सेना को लगाया जायगा। प्रादेशिक सेना में लड़ाकू, टेक्नीकल और शासकीय तीनों प्रकार की टुकड़िया होगी। इस योजना को समस्त देश को निम्न आठ क्षेत्रों में विभाजित करके कार्यान्वित किया जाएगा—(१) पूर्वी पजाब, पूर्वी पजाब की रियासतें, राजपूताना, दिल्ली प्रात, (२) युक्तप्रात; (३) मध्यप्रान्त और पूर्वी रियासतें, (४) बम्बई और काठियावाड़; (५) मद्रास, मैसूर और ट्रावनकोर; (६) बिहार और उड़ीसा, (७) पश्चिमी बगाल, कूचबिहार, और (८) आसाम, त्रिपुरा व मनीपुर।

भारत सरकार ने प्रादेशिक सेना की संख्या फिलहाल १,३०,००० रखने का निश्चय किया है। यद्यपि समय की आवश्यकता को देखते हुए यह संख्या बहुत कम प्रतीत होती है, किंतु जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूँ, हमारे पास साधन अत्यल्प हैं और हमें नये सैनिकों को शिक्षित करने के लिए योग्य अफसरों की भी आवश्यकता है। अतः वर्तमान परिस्थितियों में हम इस दिशा में क्रमिक विकास ही कर सकते हैं।

हमें आशा करनी चाहिए कि देश युद्धों से होने वाले विनाश और ... की अनुपयुक्तता को अनुभव करेंगे।

कहानी —

गुरुबन्दा का सैनिक

[श्री धूमकेतु]

★

उस दिन दिल्ली नगरी की सजावट भी कुछ अद्भुत थी। राजमहल के रास्ते के दोनों ओर मनुष्यों की भीड़ जमा थी। आठ-आठ महीनों तक घोड़े से शासनों और मुट्ठी भर अनाज के ऊपर निर्वाह करके बादशाही फौज के तीस हजार मनुष्यों को परेशान कर देने वाले लोहरस-पायी गुरुबन्दा के सिख सैनिक आज बन्दी बन कर आ रहे थे।

रक्त-मुंडित सैंकड़ों सिर भालों के ऊपर लटकाकर चलते हुए मुगल सैनिक पहिले दिखाई दिये। उनके पीछे एक हाथी पर लोहे के पिंजरे में बैठे हुए गुरुबन्दा की वीर और निर्भय आकृति दिखाई दी। उनके पहिने हुए लम्बे जामे पर दाड़िम के से सुन्दर फूलों की चित्रकारी थी। सिर पर लाल पगड़ी ऐसे शोभित हो रही थी मानो हृदय के ही रंग से रंगी हुई हो। पीछे एक जमलदार नंगी तलवार लेकर खड़ा हुआ था।

और इस सबके पीछे सात सौ चालीस सिख सैनिक थे। किसी के भी चेहरे पर उदासी नहीं थी, न परिणाम का पश्चात्ताप था और न मृत्यु का भय।

कोमल आयु के बालक और माताओं में से किसी किसी की आंख से आंसू झरे होंगे, कइयों ने उपहास किया होगा और बहुतों ने—'अपने किये का फल चखो'—कह कर अपनी हृदगत घृणा बाहर प्रकट की होगी; पर बन्दियों में से एक के भी चेहरे पर किसी प्रकार की भावना का नामोनिशान नहीं था। सबके कण्ठ से एक ही आवाज आ रही थी।

'अलख निरंजन!'

× × ×

चबूतरे के ऊपर रोज एक सौ के सिर धड़ से अलग किये जाते हैं। प्रत्येक सैनिक प्रसन्न मुख-मुद्रा से निर्भीक बन कर जल्लाद से कहता है—'ओ मुक्त! पहिले पहिले मैं।'

बीरत्व की यह वाणी दिल्ली नगरी के कोट कंगूरों पर से होती हुई सुदूर पंजाब के मैदानों में फैल गई।

ऐसे समय में थकान से, धूप से, ताप से दुःख से और हृदय में भरी हुई महावेदना से केवल मात्र अस्थितन्तु पर लटकते हुए अस्थिपंजर की एक वृद्धा स्त्री ने दिल्ली में प्रवेश किया। बादशाह फर्रुखसियर से मिलने और अपने जवान पुत्र को बचाने के लिए उसने अत्यन्त प्रयत्न किया। दीवान रतनचंद की मार्फत उसने दिन रात खड़े पैरों सैयद अब्दुल्लाखां वजीर के पास प्रार्थनाओं का तांता लगा दिया, रो रोकर आंसुओं से पृथ्वी को आप्लावित कर दिया और हृदयद्रावक शब्दों से अपने जवान पुत्र को पुनः प्राप्त करने के लिए उसने आकाश पाताल एक कर दिया।

'मेरा एक ही बेटा है, वह निर्दोष है, भोला है। वह लड़ाई में शामिल था ही नहीं। सिखों ने जबर्दस्ती उसे पकड़ लिया था और उन्हीं के साथ वह यहां आ गया। वह गुरु का सैनिक नहीं था। मेरा इकलौता बेटा है, उसे छोड़ दो, उसे छोड़ दो, उसे छोड़ दो, एक बार मुझे सौंप दो। मैं उसे अपने साथ खेत में ले जाऊंगी। वहां पेड़ की छाया में हम मां बेटे खाट पर बैठकर टुकुर टुकुर रोटी खाएंगे। मेरा बेटा मुझे दे दो। मैं उसे समझा कर अपने साथ ले जाऊंगी।'

सैय्यद अब्दुल्लाखां वजीर का दिल पिघल गया। उसने बादशाह से विनती की और क्षमा-पत्र प्राप्त करके बुढ़िया को दे दिया।

× × ×

वृद्धा मां शाही माफीनामा लेकर एक जमलदार के साथ वधस्थल पर पहुंची। सौ मनुष्यों की कतार लगी हुई थी। उसका मातृ-हृदय इतने दिनों से जिस की चिन्ता से अहर्निश घुला जा रहा था उस का वह दूध भरे होठों वाला, कुंवर कन्हैया जैसा सहज-श्यामल, नखशिख रूप २ से भरा जवान बेटा ठीक तलवार के पास खड़ा था और इस समय उसकी ही बारी थी। कोतवाल ने बुढ़िया के कांपते हुए हाथ से शाही फरमान लिया और पढ़ा उसने एक बार बुढ़िया की ओर देखा तो उसकी आंखों से सावन भादों की झड़ी जारी थी।

कोतवाल ने धीरे से जवान को बुलाया — 'यह तेरी मां है, जा, तुझे बादशाह की ओर से माफी मिल गई है। तेरी माता ने प्रार्थना की है कि वह सिक्ख सेना में जबर्दस्ती पकड़ लिया गया था। गुरू के साथ की लड़ाई में वह शामिल नहीं था।'

और जैसे किसी एकाकी पर्वतशिखा पर बिजली गिरी हो —उस जवान सैनिक ने रुद्र स्वरूप से जवाब दिया — 'मां? किसकी मां? मेरी मां तो केवल एक ही है — और वह है यह धरती।'

'तो तू भी गुरुदासपुर की लड़ाई में था?'

सैनिक ने दृढ़ स्वर से जवाब दिया— 'हां!'

जिस लड़ाई में घास और पत्ते खा कर और अन्त में मरे हुए पशुओं की हड्डियां चबाकर उसके भाई लड़ रहे थे — वहीं पर वह भी लड़ रहा था। उनका शौर्य नहीं, अनाज समाप्त हो गया था। उसने फिर दृढ़ स्वर से जवाब दिया — 'हां मैं वहीं था!'

'बेटा!'

वृद्धा मां की कोख भार से झुकी कांपती हुई आवाज अन्तःकरण को हिला देने वाले महा विलाप के शब्द की तरह बैठ गई।

सैनिक बेटे ने वज्रवाणी में जवाब दिया —

'मां! ओ मां! गुरु गोविन्द सिंह ने चार-चार पुत्रों को समर्पण कर दिया और तुम से एक पुत्र का भी मोह नहीं छूटता। अपने सात सौ चालीस भाइयों को छोड़ कर अब मैं अकेला चला जाऊं? यह विश्वासघात है। मां! जाओ, लौट जाओ! मुझे अब मुक्ति में से वापिस मत लौटाओ। जाओ, मां जाओ! अपने खेत की बाड़ी में, उस जामुन के पेड़ के नीचे किसी किसी चांदनी रात में तुमसे मिलने आया करूंगा। जाओ, मां जाओ!'

हड्डियों को पीस २ कर आटा बनाकर खाते हुए भी जिनकी छाती में कंपकपी नहीं आई थी उनकी भी आंखें गीली हो गईं।

पर इससे पहिले तो वह जवान सैनिक सिंह-शावक की तरह कूद कर जल्लाद की तलवार के नीचे खड़ा हो गया था और हंसता हंसता कह रहा था—'ओ मुक्त! आज तो पहिले मैं; पहिले मैं!—चलाओ—वाह गुरु की फतह!!!'

अनु० — पथिक सिद्धान्तभूषित

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति

(पृष्ठ ५ का शेष)

हमारी सेना रक्षा के लिए है, आक्रमण के लिए नहीं

पूर्वी पंजाब में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं, जो पाकिस्तान पर आक्रमण की बात सोचते हैं। ये बातें बच्चों जैसी हैं। हमें ऐसी बेहूदा बातों को रोकना है। कोई कितना भी बड़ा क्यों न हो, हम उससे नहीं डरते। यह कहना बच्चों की सी बात होगी कि हम लाहौर को जीत लेंगे और पाकिस्तान पर हल्ला बोल देंगे। साथ ही मैं यह कहूंगा कि हम किसी आक्रमण से डरते नहीं हैं। हम लड़ाई से नहीं डरते। हमारे पास जो भी सेना है, वह एक शानदार सेना है। वह दूसरे देशों पर आक्रमण के लिए नहीं, प्रत्युत अपने देश की रक्षा करने के लिए है। हमारी सेना का कार्य भारत को आन्तरिक और बाह्य खतरे से बचाना है। स्वाधीनता ने विशेषकर हमारी सशस्त्र सेनाओं पर नयी जिम्मेवारियां डाल दी हैं। सेना को यह देखना है कि किसी के साथ अन्याय न होने पावे। उसे आक्रमणकारियों से लड़ने के लिए सदा तैयार रहना चाहिये और इसी लिए भारत के पास आधुनिक से आधुनिक शस्त्रों से पूर्णतः सज्जित एक सर्वोत्तम सेना का होना अनिवार्य है। आज हम में से किसी भी व्यक्ति को सबसे बड़ा जो सम्मान प्राप्त हो सकता है, वह है स्वतन्त्र भारत का सैनिक कहलाना।

स्थल सेनाओं के अतिरिक्त वायु सेना और जल-सेना भी ऐसी शक्तियां हैं, जिनका इस देश की रक्षा के लिए सबल होना आवश्यक है, और जिन्हें इस देश की आर्थिक समृद्धि के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। 'जल-उषा' समुद्र में उतारा गया पहला भारतीय जहाज है, जिसका निर्माण भारत में ही हुआ है। दुर्भाग्य से, पिछले ३०० वर्षों में और विशेषकर गत १५० वर्षों में तो हम अपने सभी मार्गों—पर्वतीय और समुद्रों—द्वारा अलग-थलग से रहे हैं। भारतीय इतिहास हमें बतलाता है कि हमारे पूर्वजों ने समुद्रों और पहाड़ों के उसपार जाकर बड़े बड़े साहसिक कार्य किये और हम लोग सदा ही दुनियां से अलग-थलग नहीं रहे। हमने सदैव आगे की ओर देखा, हम समुद्रों को चीरते हुए आगे बढ़े और दूर-दूर देशों में पहुंच कर अपनी संस्कृति का प्रचार किया। उन दिनों हम में संकीर्ण भावनायें नहीं थीं, किन्तु समय के साथ-साथ हम में संकीर्णता आती गयी और वह भी दुर्भाग्यवश धर्म के नाम पर। धर्म के नाम पर यह कहा जाने लगा कि समुद्र-यात्रा करना पाप है। वह धर्म ही क्या, जो किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से मिलने से रोके। हमें अपने जहाजों को निर्भयतापूर्वक समुद्रों पर छोड़ देना चाहिये और संसार के सभी भागों से अपने सम्बन्ध स्थापित करने चाहियें। आज के युग में जो पृथक हो कर रहना चाहता है वह मर जाएगा, विनष्ट हो जाएगा।

—————

...ट भविष्य में हमें पुनः युद्ध की भयाविभीषिका का सामना नहीं करना ...गा। फिर भी, यदि ऐसा हुआ तो हम ...क यथाशक्ति सैनिक प्रतिरोध करेंगे ...यदि हमारा यह प्रतिरोध सफल न ...तो जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री ने ...है, हमारे लिए उन उपायों को ग्रहण ...का मार्ग तो खुला ही है, जिनसे हमने ...ा सरकार को पराजित किया है।

—————

मिट्टी के प्रति

[श्री रांगेय राघव]

मिट्टी के प्रति
मिट्टी के प्रति
है मेरे जीवन की निर्मम
अनुरक्ति मुखर, युग युग की रति।
सुन रहा शब्द—
वह अंतिम जब,
हो गई पद्मिनी किंतु भस्म;
पर कब रुकता पलभर जीवन।

कल का वैभव वह अमतसार,
जीवन का दुर्बर मधुर प्यार,
मासल स्वरूप की मृदुल हार,
सब आज लुट गया शून्य विकल;
छवि का अमृत है लीन हुआ
क्या शेष गरल का ही नर्त्तन!

वह ज्वालाओं का इन्द्र धनुष—
अंगराई की सी लघु मरमर,
इस कर में गूंज रहा भयमय
वैभव तृष्णा का शब्द घोर,
ज्यों महाविलोडन प्राणी का
जीवन के चक्र स्फुलिंगी पर,
नारी की प्रतिकृति क्रीडा भी
नर के कौतूहल में लय, हर—

इतिहास पूछता है नतशिर:
पद्मिनी कहां वह अतुल रूप,
वह चिर रहस्य का गहन कूप!
पौरुष का दुर्बल चीत्कार
व्याकुल हो कर था गया डूब।

अब भस्म! भस्म यह लख लिये
हाथों में, कर लूं अट्टहास,
क्षणभर पहले का खड़ा महल
बिखरा, विनाश का छोड़ श्वास,

मिट्टी मिट्टी वह रूप प्यास—
है बता चुकी मुझको अशेष,
मिट्टी का चल वैभव था सब
मिट्टी का ही था प्रभु एक।

मेरे कर में निस्तब्ध भस्म
कर रही युगांतर का निनाद—
नत हो रे जड़ चेतना जाग!
मिट्टी में जीवन उठे जाग!
जागे गरिमा,
यह लघु व्याकुल दीन हीन
मानव की सत्ता—
जो चमार सी लखत पड़ी है

कलांत भ्रांत,
जो अपने रस के सचय को
विधवा सी रो रो खोती है,
सूत्रधार का प्रश्न नहीं यह—
मिट्टी जो अब पूछ उठी है।
सूनी तिथियों की उन भूली
स्मृतियों को ठोकर देती है।
जागे आज तड़प कर जागे!
आज जगा दे सोया जीवन।
यह उपक्रम जब!

जो अनादि युग का वह चलता
भारतयात्री देख रहा हूं,
जर्जर तन है, फटे वसन हैं,
खंड खंड है शक्ति बिखर कर,
एक उठा कर मुट्ठी भू से
इस मिट्टी से पूछ रहा हूं—
गूंज रही हुंकार,
कि कण कण से आती झंकार,
अपरिमित है अदम्य ललकार,
विश्व देखता अरे रक्त से
भीग आग को खोज रहा है,
ज्योतित करदे जिससे
अपना अंधकार वह।

लो इस यात्री के उर में है
अथह, ताप ले।
हाथ न अपने सेंक निठुर
जीवन का वह निर्मम अंगारा,
इस में है वह शक्ति कि
वह निर्माण निठुर
सबसे पर—
हो केवल मस्तिष्क सदृश,
जिसमें वह चल अभावड
चले जैसे विचार हों,
किंतु आज यह भूल गया है
ब्रह्म,
पेट में क्योंकि नहीं है इसके रोटी,
वह है लहू लुहान,
खींच कर अत्याचार—
खा रहा बोटी बोटी

मुझे चाहिये—भूमि कह रही—
अब मानव जन जन की संस्कृति,
इस धरती पर नहीं रहें दो
दुनिया बंट कर,

एक साथ, घर बने एक घर,
जो गाये, वह गीत सभी का,
अब सब बंधन शिथिल पराजित।
मिट्टी में गुलाम खिलता है—
बनता वही गुलाब मनोहर,
कहता हूं उसको समझा कर,
इस धरती पर एक उजाला
लाना होगा।

भोर हुई अब जाग,
नवल किरणों ने
रागिणि छेड़ी रे!
संसृति का तमाघ अणु अणु से,
जीवन का विषाद कण कण से
मिटा कर ओ विद्रोही जाग।
गूंज बज उठी यहीं
रणभेरी रे!

रूढिनाश आलोक जगा दे,
नूतन स्नेह स्रोत उमड़ा दे,
आहस मर कर ओ चिर मानव जाग,
स्फुलिंगी—
भस्म करो
दुख ढेरी रे!

जो युग युग का गीत आज
इस मिट्टी में गूंज रहा है,
इस माटी में जीवन दर्शन
चिर जीवन बन झूम रहा है।

और गूंजता—

"भारति हे!
वज्र वपुष!!

सदियों के जब मग पर
चर्चित तव महाप्रयाण,
सिंचित धरती में रस,
कन कन में उत्थान।

तू है मां स्नेह जननि!
युग युग जाग्रत सचेत,
विश्व ज्ञान प्रहण दान
चले प्रथक, जय विवेक
शुद्ध दर्शिनि!
क्रूर कलुष!!

असह यातना कठोर
करती मन दीन म्लान,
फिर भी तो है अदम्य—
गरिमा का महाज्ञान,
गुंजित यह दिग्दिगंत
तेरा गौरव निनाद,
दर्शन, जय, अभय छन्द,
भस्म करें चिर विषाद।
चले स्वर्ग—
पुत्र नहुष!

घनन घनन उठे वाद्य
जीवन रण शंख नाद,
चमर बने हिलें खेत
चेतन उद्योग साथ,
विप्लव में ज्ञान ज्योति
निश्चल जले अभीत,
रूढि स्वार्थ दीर्घ शिला
पिस पिस हों खंड भीत
कोटि बाहु!
उठा परशु!

नद गिरि वन सिंधु साथ
विश्व बंधु एक प्राण
गायें समवेत शब्द,
मंगलमय वीर गान,
फहरे तेरा निशान,
फूटे दीपित विहान,
क्षितिजों को उठें हाथ
तेरे बलिदान मान
नभ में बन
इन्द्र धनुष!
भारति हे!
वज्र वपुष!!"

विंध्य प्रदेश के उद्घाटन अवसर पर श्री गाडगिल और राजप्रमुख रीवा नरेश

संसार की सब से बड़ी क्रांति

[श्री राजेन्द्रलाल हाडा]

भारत की आन्तरिक सुरक्षा की दृष्टि से रियासतों की समस्या एक भारी खतरा थी जिसे सरदार पटेल हल करके संसार की सब से बड़ी क्रान्ति करने में सफल हो गये है।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होते ही संसार का घटनाचक्र बहुत तेजी से चलने लगा। इस घटना चक्र की गति भारत में शायद सबसे तेज रही है। युद्ध समाप्त होने के दो साल के अन्दर भारत और ब्रिटेन में बातचीत हुई, समझौता हुआ। जिसके फलस्वरूप अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़ गए और देश स्वतन्त्र हुआ भारत का विभाजन हुआ, एक करोड़ से ऊपर आदमी घर से बेघर हो गए और संसार का सब से महान व्यक्ति अपने ही देशवासी के हाथों मारा गया। ये सब घटनाएं इतनी बड़ी और महत्वपूर्ण हैं कि आगामी ऐतिहासिक यह आश्चर्य किये बिना नहीं रह सकेगा कि यह सब दो वर्ष के अल्पकाल में कैसे घटीं। गत कुछ महीनों से एक और घटना घट रही है जो क्रांतिकारिता की दृष्टि से उपयुक्त घटनाओं से भी महान् है। वह घटना है भारत के ५६२ देशी राज्यों का विलोप। जब-जब भी गत ४० वर्षों में भारत में वैधानिक सुधारों की बातचीत चली है, ये देशी राज्य एक विकट समस्या के रूप में हमारे सामने आये हैं। यह समस्या एक ऐसा सिरदर्द था, जिसका कोई इलाज ही नहीं जान पड़ता था। बड़े से बड़े आशावादी ने भी कभी ऐसी कल्पना न की होगी कि स्वतन्त्रता का सूर्य उदय होते ही पांच छः महीनों के भीतर यह समस्या पानी में चीनी के समान आप ही आप हल हो जायगी और सैंकड़ों रियासतें छायी माई हो जायगी। इसलिए इस परिवर्तन को हम भारत की ही नहीं, बल्कि संसार की सब से बड़ी क्रान्ति कह सकते हैं।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत संसार का पंचम भाग है। भारत में हुई किसी क्रान्ति का भी विश्वव्यापी महत्व है। इस क्रान्ति की तुलना हम संसार की सब महान क्रान्तियों से कर सकते हैं। इतिहास की सबसे बड़ी क्रान्ति १९१७ में रूस में हुई थी। रूस के जार सम्राट और सारे शाही परिवार को मार डाला गया था, सरकारी कर्मचारियों में से बहुतों को मौत के घाट उतारा गया था। और प्रायः समस्त धनीवर्ग को उनकी सारी सम्पत्ति से वंचित कर या तो पकड़ लिया गया था अथवा यमलोक पहुंचा दिया गया था। फिर भी रूसी क्रान्ति की सफलता एक ऐतिहासिक तथ्य है। इसकी तुलना में भारत की अर्वाचीन क्रान्ति का महत्व किसी प्रकार भी कम नहीं। भारत की क्रान्ति का सम्बन्ध ३० करोड़ मानवों के कल्याण से है, जब कि रूसी क्रान्ति का प्रभाव वहां की १५ करोड़ जनसंख्या तक ही सीमित था। रूसी क्रान्ति में खून की नदियां बह गयी थीं जब कि भारतीय क्रान्ति का आधार अहिंसा और सब वर्गों में सम्पूर्ण सहयोग और सद्भावना है।

अवशिष्ट समस्या

हैदराबाद के कासिम रजवी

इतिहास की दूसरी प्रसिद्ध क्रान्ति १८वीं शताब्दी में फ्रांस में हुई थी। इसमें भी व्यापक परिणाम में जो मारकाट हुई और युद्धों की जिस श्रृंखला का सूत्रपात हुआ वह इतिहास के सभी विद्यार्थी जानते हैं। यदि यह भी मान लिया जाय कि फ्रांसीसी क्रान्ति ने सारे यूरोप को प्रभावित किया तब भी यह नहीं कहा जा सकता कि परिणाम की दृष्टि से वह भारतीय क्रान्ति से अधिक व्यापक थी, क्योंकि सारे यूरोप की जनसंख्या भारतीय जनसंख्या से अधिक नहीं है।

भारत का बिस्मार्क

जब प्रथम राष्ट्रीय सरकार ने शासन सूत्र ग्रहण किया तो भारत की स्थिति लगभग वही थी जो राजकुमार बिस्मार्क के शासनारूढ़ होने के समय १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जर्मनी की थी। उस समय देश ३०० से ऊपर स्वतंत्र राज्यों में विभक्त था। जर्मन भाषाभाषी इन ३०० से अधिक इकाइयों में निवास करते थे। ऐसी केन्द्रीय सत्ता का, जो इन सब छोटे बड़े राज्यों को नियन्त्रण में रख सके, प्रायः अभाव ही था। बिस्मार्क ने शक्ति हाथ में लेते ही एक एक करके इन राज्यों को समाप्त किया और कैसर के आधीन एक बलवान् जर्मन राज्य की नींव डाली। जो कार्य जर्मनी में बिस्मार्क ने किया, उसी कार्य को भारत में सरदार पटेल सम्पन्न कर रहे हैं। सरदार पटेल का काम ऐसा ही दुरूह और कठिन है जैसा बिस्मार्क का रहा होगा। जिस कार्य क्षमता, सूझबूझ और विलक्षणता से रियासतों की समस्या को सरदार पटेल ने सुलझाया है और सुलझा रहे हैं, वह उनकी अनुपम प्रतिभा और असाधारण योग्यता का परिचय है। गत ५ महीनों में रियासती सचिवालय के मंत्री के रूप में उन्होंने जो कार्य किया है, केवल उसी के आधार पर भारत के इतिहास में उन्हें बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त होगा। लोकनायक तो सरदार पटेल ४० वर्ष से हैं ही, आज नरेश वर्ग भी, जिनसे वे बलिदान की अपील करते हैं, उनका भक्त है। रियासतों की समस्या का हल और इन राज्यों का अन्तिम भविष्य तो सभी लोग जानते थे। राजनीति का दुष्कर से दुष्कर खिलाड़ी भी यही कहता आया है कि भावी भारत में रियासतों के लिए कोई स्थान नहीं, किन्तु इस कथन के साथ ही इस भय की भी सभी चर्चा करते थे कि रियासतों के विलोप की प्रक्रिया घोर रक्तपात के बिना सम्पूर्ण नहीं हो सकेगी। यह सरदार पटेल की विलक्षण नीति का ही परिणाम है कि हम सब की आशंकाएं निराधार सिद्ध हुईं और रियासतों की समस्या ऐसी शान्ति और परस्पर सहयोग से हल हो रही है मानो कि एक साधारण व्यापारिक गुत्थी को सुलझाया जा रहा है।

अन्तिम मानचित्र

उड़ीसा और छत्तीसगढ़ की तथा काठियावाड़ की ३०० से ऊपर रियासतों का निपटारा तो पहले ही हो चुका है। ग्वालियर और मध्यभारत की तथा राजपूताने की रियासतों में पुनर्गठन की चर्चा हो रही है। सम्भवतः मध्यभारत एक सुन्दर प्रांत अथवा राज्य के रूप में शीघ्र ही भारतीय संघ का अंग बनने वाला है। राजपूताने में भी समाहार की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। मत्स्य प्रदेश और राजस्थान संघ में बहुत सी रियासतें विलीन हो गई हैं। इसी प्रकार पूर्वी पंजाब की रियासतों की भी एक इकाई बन रही है। पटियाला फिलहाल अलग ही रहेगा। उधर पंजाब की छोटी-बड़ी पहाड़ी रियासतों को "हिमाचल प्रदेश" का रूप दे दिया गया है। इस प्रदेश का शासन केन्द्र द्वारा होगा। वह दिन दूर नहीं जब शिमले की बिखरी हुई पहाड़ियां समृद्ध होंगी और प्रकृति ने उन्हें जो रत्न रूप दिया है मनुष्य उसका सदुपयोग कर सकेगा।

यह महान क्रान्ति भारत में इतनी शीघ्रता से हुई है कि अभी लोग उसका महत्व नहीं आंक सके हैं। जब रियासतों की समस्या पूर्णरूप से हल हो चुकेगी उस समय हम देखेंगे कि रियासतों के एकीकरण का महत्व देश की स्वतन्त्रता के महत्व से कम नहीं।

विश्व शान्ति की खोज में अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष व द्वन्द्वपूर्ण वातावरण के उत्तरदायी राजनीतिज्ञों की असेम्बली का एक दृश्य

भारत के विरुद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय षड़यंत्र

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा]

लेखक की धारणा है कि भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति का आधार आज भी यथार्थ व न्याय न होकर अवास्तविक है तभी वह एक ओर भारत का विभाजन स्वीकार करता है और दूसरी ओर फिलस्तीन के विभाजन का विरोध। लेखक की यह भी धारणा है कि भावी संघर्ष का आधार भौतिक स्वार्थ के साथ धर्म भी होगा, इसलिए जहां आज हमें अपने पश्चिम में उठने वाले महान् शक्तिशाली मुस्लिम राष्ट्र संघ के प्रति सतर्क रहना होगा, वहां अपने राष्ट्र में राष्ट्रीयता व मानवता के सांस्कृतिक व भौतिक स्तर को भी इतना ऊंचा करना होगा कि विश्व की महान् शक्तियां अपने स्वार्थवश भारत के विरुद्ध वह षड़यन्त्र न कर सकें, जो आज मित्रराष्ट्र संघ में किया जा रहा है।

परराष्ट्र नीति राष्ट्रीय सुरक्षा का प्राण है। आज के परमाणु युग में कोई भी देश पृथक्ता और अलगाव की नीति अपना कर न स्व-निर्माण कर सकता है न अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को अधिक देर तक कायम रख सकता है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि किसी भी देश की यह नीति पर ही अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसके मान अपमान और प्रभाव का दारोमदार है जैसा कि दक्षिण अफ्रीका के मामले में हमने अनुभव किया। मित्रराष्ट्र संघ की बैठक में पहले ही हमने श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के आकर्षक व्यक्तित्व से तथा छोटे राष्ट्रों की भावुकता पर असर डाल कर दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया परन्तु हम उसे कार्यान्वित न करा सके। बड़े राष्ट्रों में केवल सोवियत रूस ने हमारा पक्ष लिया था, संयुक्तराज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने हमारा विरोध किया था।

स्वतन्त्र भारत की परराष्ट्र-नीति पर समालोचना करते समय सर्वप्रथम मैंने उपर्युक्त घटना का इस लिए जिक्र किया है कि इसी प्रश्न को लेकर सबसे पहले स्वतन्त्र भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रवेश किया था। भारत को मौलिक विजय प्राप्त हुई और भारत फूला नहीं समाया परन्तु इस विजय के पीछे एक पराजय छिपी थी। भारत अपने पक्ष में किये गये निर्णय को कार्यान्वित नहीं करा सका। अपने प्राचीन इतिहास, धार्मिकता, आदर्शवादी विचारधारा, दर्शनों तथा विशेषकर महात्मा गांधी का जन्मस्थान होने के कारण संसार की जनता पर भारत का एक आत्मिक प्रभुत्व था। एशिया में पश्चिम के श्वेत प्रभुत्व के विरुद्ध स्वातन्त्र्य आन्दोलन का नेतृत्व करने के कारण भारत छोटे राष्ट्रों का प्रियभाजन था। छोटे राज्यों ने इसी कारण भारत का साथ दिया। परन्तु कुंजी बड़े राष्ट्रों के हाथ में थी, उन्होंने (रूस के अतिरिक्त) मौलिक अथवा आर्थिक दोनों सहयोग नहीं दिये। इसके दो प्रमुख कारण हैं, एक आत्मिक दूसरा शारीरिक।

संयुक्तराज्य अमेरिका ने अपने 'प्रजातन्त्रात्मक' सिद्धान्तों का सबसे अधिक प्रचार किया है। संसार भर को इस समय वह धन तथा खाद्यान्न की सहायता दे रहा है। परन्तु तो भी सामान्य जनता पर उसका तनिक भी प्रभाव नहीं; उसकी 'डिमोक्रेसी' के शब्दजाल में कोई नहीं फंसता क्योंकि सब जानते हैं कि स्वयं अमेरिका के अपने घर में डेढ़ करोड़ काले अमेरिकनों के साथ श्वेत अमेरिकन पशुवत् व्यवहार करते हैं। इस कलिक युग में भी आत्मिक और चारित्रिक बल का बड़ा प्रभाव पड़ता है। स्वदेश में ६ करोड़ अछूतों के साथ पशुवत् व्यवहार करते हुए दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध भारत का प्रस्ताव महज एक फुलझड़ी था जो तुरंत प्रकाशहीन हो गया।

दूसरा शारीरिक कारण सैनिक दृष्टि में भारत की अयोग्यता थी। यदि चीन और भारत में अमेरिकनों के प्रति कथ भी बुरा व्यवहार हो तो अपने देश में भी वैसी ही दशा के रहते हुए भी अमेरिकन अपनी सैनिक शक्ति द्वारा चीन अथवा भारत को उचित व्यवहार के लिए विवश करेंगे। भारत दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध ऐसी कार्रवाई नहीं कर सकता था।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत का दूसरा कार्य फिलस्तीन को लेकर था। मित्रराष्ट्र संघ की ओर से नियुक्त सात राष्ट्रों की समिति में भारत भी एक सदस्य था। पांच सदस्यों ने बटवारे की सलाह दी, भारत और चेकोस्लोवाकिया ने भारत के कैबिनेट मिशन प्लेन की तरह एक ढीले केन्द्रीय शासन का प्रस्ताव किया। यहां तक तो गनीमत थी क्योंकि इस प्रकार भारत ने 'संयुक्तता' के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। परन्तु मित्र राष्ट्र संघ में प्रश्न यह था कि बटवारा कर यहूदियों के अधिकारों की सुरक्षा की जाय या नहीं तो भारत ने कहा 'नहीं।' आश्चर्य तो यह है कि यह 'नहीं' भी उसी नेतृवृन्द से आया था जिसने अखिल भारतीय कांग्रेस महासभा में ३ जून १९४७ के पाकिस्तानी प्रस्ताव पर 'हां' कहा था। संघ में फिलस्तीन की समस्या को लेकर बटवारे का विरोध कर भारत ने न बुद्धिमत्ता का और न राजनीतिज्ञता का ही परिचय दिया है। फिलस्तीन की समस्या शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े को बढ़ाना चाहता है। सच तो यह है कि फिलस्तीन न केवल अरबों और यहूदियों अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिकनों और रूसियों के युद्ध का केन्द्रस्थल बन गया है वरन् संसार के भविष्य का निर्माता भी। भावी महायुद्ध केवल राजनीतिक मतभेद पर ही नहीं वरन् धार्मिक भित्ति पर भी लड़ा जायगा। दो संगठित धर्म समाज—ईसाई और मुसलमान (विशेषकर अरब) इस समय एक होकर यहूदी तथा अन्य अल्पसंख्यक प्राचीन धर्मों को मिटा पर तुले बैठे हैं।

मित्रराष्ट्रीय सुरक्षा समिति में भारत व पाकिस्तान के प्रतिनिधि।

फिलस्तीन यहूदियों का था। इस्लाम के प्रभाव में जिस प्रकार अरबों ने भारत पर आक्रमण किया था उसी प्रकार छठी शताब्दी में फिलस्तीन पर भी। फिलस्तीन छोटा-सा देश था और अरेबिया के निकट, इसलिए अरब यहूदियों को पूर्ण रूप से खदेड़ने में सफल हो गये। तब से लेकर आज तक यहूदी संसार भर में जहां तहां भटकते रहे। अरबों द्वारा ईरान से खदेड़े गये। प्राचीन धर्मावलम्बियों — पारसियों — को तो भारत में पनाह मिल गई परन्तु यहूदियों को कोई एक स्थान नहीं मिला। पिछले एक हजार वर्ष के इतिहास में जहां तहां भटकते हुए भी यहूदियों ने सदा फिलस्तीन को ही अपना देश माना है और वहां बसने की चेष्टा करते रहे हैं। यहूदी स्वभाव से परिश्रमी, आधुनिक और वैज्ञानिक हैं। जो थोड़े हुत फिलस्तीन में बस सके उन्होंने रेगिस्तान में भी हरियाली पैदा कर दी। फिलस्तीन का यहूदी ही फिलस्तीनको ब्रिटेन मुक्त करने में लड़ता रहा। अरबों ने ऐसी कोई चेष्टा नहीं की। अरबों ने जब भी हथियार उठाया यहूदियों के विरुद्ध, अंग्रेजों के उकसाने पर।

गत महायुद्ध में हिटलरी शासन में ोप में प्रायः ६० लाख यहूदियों को र डाला गया। यह आयोजित हत्या । धर्म और जाति को सदा के लिए टा देने का घृणित षड्यन्त्र था। तः युद्धोपरान्त फिलस्तीन को ब्रिटेन से तन्त्र कर उसे यहूदी राज्य बनाने यहूदी तुल गये। अमेरिका ने उन्हें लिक सहायता दी। मित्रराष्ट्र संघ में मेरिका ने यहूदियों का पक्ष इसलिए था कि रूस इसके विरुद्ध जायगा र इस प्रकार सारा अपराध रूस के थोप कर अमेरिका बेलाग हो ाया। रूस के विभाजन स्वीकार करने अमेरिका जाल में जा फंसा। अरबों अमेरिका के विरुद्ध रोष प्रकट किया। रिका अरबों की मित्रता खोना नहीं ता। इसके दो कारण हैं — (१) (२) रूस। अमेरिका में तेल की हो गई है। अमेरिका में अमरीकन कम्पनियों ने प्रायः २१ अरब बैरल का पता लगने पर पिछले वर्ष प्राप्त किये हैं। ईरान में भी २० बैरल तेल है और ईराक में १५ बैरल। इस सब पर अमेरिकन वादियों का अधिकार है। समस्त पूर्व में अमेरिका से भूमध्यसागर तेल लाने के लिए अमेरिका की तेल पाइप बिछाई पड़ी है। यदि अरब हो गये और एक भी पाइप कर दी तो अमेरिका की अत्यधिक होगी। तेल के लिए ही अमेरिका ट्रूमेन नीति के अन्तर्गत ईरान को निक सहायता भेजी है और १०० अमेरिकन अफसर ईरानियों को सैनिक शिक्षा दे रहे हैं। तेल के लिए ही अमेरिका सदा पाकिस्तान का समर्थक (बलूचिस्तान में तेल है) रहा है और सघ में काश्मीर समस्या में भारत के मार्ग में रोड़े अटकाता रहा है। अभी हाल में ही मुहम्मदअली जिन्ना के कलात जाने का समाचार पाकर "न्यूयार्क टाइम्स" ने एक सम्पादकीय द्वारा कलात को पाकिस्तान से मिल जाने की सलाह दी है ताकि ईरान और पाकिस्तान के बीच का मार्ग साफ हो जाय।

यहूदियों के प्रति अमेरिका की सहानुभूति मौखिक थी। जो यहूदी पहले नाजियों द्वारा पीड़ित किये जाते थे अब कम्युनिस्ट कह कर कुचले जा रहे हैं। यदि फिलस्तीन अथवा मध्यपूर्व में अमेरिकन स्वार्थ को तनिक भी हानि पहुंचे तो अमेरिका में यहूदियों पर आक्रमण या प्रहार होने की आशंका है। ब्रिटेन में तो प्रायः ही ऐसा होता रहता है तथा ब्रिटेन खुल्लमखुल्ला अरबों को सहायता — सैनिक और हथियार — दे रहा है। आखिरकार ब्रिटेन ने ही १९४५ में अरब लीग की स्थापना की थी, उसने ही गुप्त रूप से अरब फासिस्ट मुफ्ती को फ्रांस की जेल से भाग जाने में सहायता पहुंचायी थी।

अमेरिका ने हाल ही में संघ से कहा है कि अमेरिका फिलस्तीन में शांति बनाए रखने के लिए सेना देने को तैयार है परन्तु विभाजन कार्यान्वित करने के लिए नहीं। इस दोरंगी घोषणा का क्या अर्थ है? इस घोषणा के तुरन्त बाद एक राजनीतिज्ञ ने कहा — 'भाषण बड़ा सुन्दर था, परन्तु अमेरिका चाहता क्या है?' दूसरे ने कहा — 'अमेरिका चाहता है कुछ न किया जाय, बहुत जल्दी।'

यहूदियों को मिली एकमात्र पनाह को भी अमेरिका तथा अरब राष्ट्र पैदा होने से पहले ही नष्ट करने पर तुले बैठे हैं। हम भारतीयों और विशेषकर हिन्दुओं को यह समझ लेना चाहिए कि अगले ५० वर्षों में हमारी भी वही दशा होगी जो आज यहूदियों की है यदि हम समझे नहीं तथा न्याय का पक्ष नहीं लिया अथवा तटस्थ नहीं रहे। जिन रूढ़ीवादी तुर्कों ने १५ लाख आरमीनियनों का खून किया था उन्हीं का पक्ष लेने के लिए हमने 'खिलाफत' आन्दोलन किया। न्याय के कारण नहीं वरन् भारत के मुसलमानों को चापलूसी करने के लिए। आज हम पुनः उन अरबों का साथ दे रहे हैं जो फिलस्तीन के ६ लाख यहूदियों का खून करने पर उतारू हैं, जिनके नेता फासिस्ट मुफ्ती ने १९४१ में ईराक में १५०० यहूदियों का कत्लेआम करवाया था। क्या हम समझते हैं कि यदि मोरक्को

[शेष पृष्ठ ५१ पर]

हमारे राष्ट्र के गौरव की रक्षा में सर्वस्व अर्पण करने को कटिबद्ध वीर सैनिक।

देश की रक्षा और हमारी राष्ट्रीय सेना

[श्री सुरेन्द्रकुमार]

पिछले दिनों जब अमरीकी राष्ट्रपति मि० ट्रूमैन से युद्ध की भीषण तैयारियों के बारे में प्रश्न किया गया तो उनका उत्तर था कि निकट-भविष्य में सम्भावित युद्ध को रोकने का एकमात्र उपाय है अपनी सैनिक शक्ति को चरम सीमा तक पहुंचाना। ऐसा ही विचार ब्रिटेन व अमरीका के भी अनेक राजनीतिज्ञों ने प्रकट किया है।

यदि सैनिक शक्ति का संग्रह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को बनाये रखने के लिये आवश्यक है तो भारत जैसे नव शिशु-राष्ट्र के लिये उसके लिए तय्यार रहना नितान्त अनिवार्य है। यह देश आज आन्तरिक शत्रुओं के अलावा बाह्य शत्रुओं से भी घिरा पड़ा है। प्रत्येक कूटनीतिक दौड़ में अमरीका और ब्रिटेन को भारत के सामने मुंह की खानी पड़ी, साथ ही भारत ने अपनी दासता की शृङ्खलाओं के अलावा अनेक परतन्त्र देशों को स्वतन्त्र होने में सहायता दी है। अत: उसके शत्रु प्रतिरोध लेने के लिये कटिबद्ध रहे हैं। यह देश दोबारा दासता अंगीकार नहीं करना चाहता, यह देश षड्यन्त्रकारियों के स्वप्नों को कभी भी पूर्ण न होने देने के लिये कटिबद्ध है। अत: बाह्य शत्रुओं का भय उसे बना हुआ है।

साढ़े चार सौ मील की केवल एक ही सीमा काश्मीर और पाकिस्तान के मध्य है। इसी प्रकार भारत की पश्चिमी सीमा भी ५०० मील से कम नहीं। पूर्वी पाकिस्तान की सीमा भी चार सौ मील के लगभग है।

नौ-सेना की दृष्टि से भारत के पूर्वी व पश्चिमी तट की सीमायें भी हजार मील से कम नहीं हैं और इतने विशाल तटों में केवल एकाध ही बन्दरगाह अपनी रक्षा में समर्थ हो सकते हैं। पश्चिमी तट पर बम्बई ही एक बड़ा बन्दरगाह है। परन्तु कराची या पर्शियन खाड़ी से काठियावाड़ अथवा मेडागास्कर से कोचीन के निकटवर्ती क्षेत्रों पर कोई आक्रमण हुआ तो समस्त पश्चिमी तट क्षण भर में अपने हाथ से निकल जायेगा। यही दशा पूर्वी तट की है। चटगांव से यदि कोई आक्रमण कलकत्ता बन्दरगाह पर किया गया तो स्थिति बड़ी उपहासास्पद हो जायेगी।

यह स्थिति है, जिसमें भारत को अपना सैन्य बल बढ़ाने की अत्यन्त आवश्यकता है। भारत सरकार के नेता देश की इस स्थिति से अपरिचित न हों, यह बात नहीं और इसलिए आज वे स्थान-स्थान पर अपने भाषणों में देश के युवकों से सेना में भरती होने की — जल, स्थल और वायु सेना के वीर सैनिक बनने की—अपीलें कर रहे हैं। पिछले दिनों दिल्ली में हुई सैनिक प्रदर्शनी का उद्देश्य भी सम्भवतः जनता को सेना में भरती होने की अपील करना था।

भारत की नौसेना के पास इस समय केवल ४ स्लूप, १५ माइन स्वीपर (सुरंग साफ करने वाले छोटे जहाज) २०।२५ मोटर लाचेंज हैं। यदि ये तमाम जहाज एक ओर खड़े हों और एक बैटलशिप दूसरी ओर खड़ा हो, तो इनका कहीं अस्तित्व भी अवशेष नहीं रह सकेगा। भारत सरकार ने व्यापारिक जहाजों को प्रोत्साहन दिया है। स्वतन्त्र होने के पश्चात् पहली बार प्रथम विशुद्ध भारतीय जलयान 'जल उषा' भी तय्यार हो गया है।

मोटे नजर से भारत की वर्तमान जलसेना की शक्ति इस प्रकार है।

तमाम जहाजों की संख्या	३४
नौसैनिकों तथा अफसरों की संख्या।	११८५०
कुल व्यय।	५ करोड़ रुपया

सन् ३८ की तुलना में यह प्रगति अवश्य ही उत्साहप्रद है। उस समय जहाजों की संख्या कुल ८ थी, उस समय नौ सैनिक व अफसरों की संख्या ८४१ थी तथा कुल व्यय ६० लाख रुपया था। इतनी उन्नति के बावजूद स्थिति के महत्व को देखते हुए नौसेना का सुदृढ़ कहना मजाक ही है। नेशनल कैडेट कोर के अनुसार समुद्र तट पर रहने वाले छात्रों को नौसेना की ट्रेनिंग दी जायेगी यह प्रशंसनीय कदम है। भारतीय लोग अब भी अपने विशाल समुद्रों का महत्व समझने का यत्न नहीं करते। इस समय पूर्वी व पश्चिमी तट पर बन्दरगाहों का जाल बिछा देना चाहिये जिनकी रक्षा के लिये महान नौसेना हो।

वायुसेना पहले और अब

सन् १९३८ में भारत की वायुसेना के पास केवल ३५०० आदमी थे जबकि आज ८७०० हैं। वायुयानों की संख्या १२५ से अधिक नहीं है। आज देशरक्षा के लिए सबसे अधिक शक्तिशाली वायुसेना का होना अनिवार्य है। सरकार ने भारत में ही वायुयान निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया है। रक्षामन्त्री सरदार बलदेवसिंह ने भारतीय पार्लमेंट को हाल में बताया था, कि वायुसेना के सर्वोत्कृष्ट बनाने में भारत सरकार व्यय में संकोच नहीं करेगी।

आर्डनेंस फैक्टरियां

युद्ध से पूर्व देश में कुल ६ आर्डनेंस फैक्टरियां थीं। युद्धकाल में उनकी संख्या कहीं अधिक हो गई थी। सरकार द्वारा नियुक्त एक कमेटी की सिफारिशों के अनुसार अब उनकी संख्या १६ रख दी गयी है। ब्रिटिश लोगों ने इन फैक्टरियों का सामान चुराने और पाकिस्तान भेजने से अपने को स्वतन्त्र भारत का कट्टर शत्रु सिद्ध कर दिया है। तमाम शस्त्रास्त्र

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

भारतीय वायुसेना का एक विमान।

स्वतन्त्र भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति के महान् निर्माता

प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू

'आत्म-रक्षा के लिए

पूर्वी पंजाब सेना के प्रधान सेनापति लेफ्टि जनरल करियप्पा सैनिक अधिकारियों से बातचीत कर रहे हैं।

युद्ध क्षेत्र में फील्ड-गन पर कुछ सैनिक।

एक सैनिक यन्त्र की सहायता से अपने लक्ष्य को पहचान रहा है।

काश्मीर डिविज़न के सेनापति मेजर-जनरल कुलवन्तसिंह ब्रिगेडियर सेन के साथ।

भारतीय सेना की एक छोटी सी टुकड़ी।

भारत समर्थ है'

— नेहरु
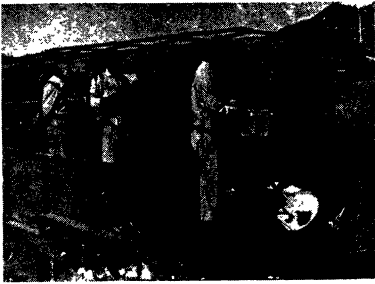
युद्ध-क्षेत्र में इंजिनीयरिंग के सब साधनों से सुसज्जित एक गाडी।

भारतीय वायु-सेना का एक विमान।

भारतीय महिलायें भी देश की पुकार पर रणक्षेत्र में जा सकती हैं।

भारतीय सैनिक छतरी से उतरने का अभ्यास कर रहा है।

घुड़सवार सैन्य की एक छोटी सी टुकड़ी।

भारत के हाई कमिश्नर और सहायक नौसेनाध्यक्ष जल सेना के प्रसङ्ग में ब्रिटिश नौसेनाध्यक्ष के साथ।

हिंद महासागर और भारतीय तट की रक्षा-समस्या

[श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार]

यदि हिटलर के पास ब्रिटेन की सी नौसैनिक शक्ति भी होती, तो वह कभी परास्त न होता— इस उक्ति में सत्य हो या न हो, किन्तु यह असदिग्ध है कि तीन ओर से समुद्र से घिरे और ४००० मील समुद्र तट वाले भारत जैसे राष्ट्र के लिए नौसेना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। भारतीय नौसेना का परिचय इस लेख में पाठक पढ़ेंगे।

भारत एक सामुद्रिक देश है। तीन ओर से समुद्र भारत को पखार रहा है और कवीन्द्र रवीन्द्र की 'पोत-परपंतल' की कल्पना को साकार रूप दे रहा है। भारत की स्वाधीनता सामुद्रिक-शक्ति के अभाव में नष्ट हुई। जब भारत यह भूल गया कि वह एक सामुद्रिक देश है और हिन्द महासागर की रक्षा पर उसकी स्वाधीनता, प्रतिष्ठा और उसका गौरव निर्भर है, तब उसकी स्वाधीनता लुप्त हो गई, बृहत्तर भारत और भारतीय उपनिवेशों से उसका संबंध टूट गया, भारतीय व्यापार और भारतीय श्री सिमट कर भारतीय तट तक सीमित रह गई। आज भारत स्वाधीन हुआ है, पर उसके पास नौ सेना नहीं है। भारत का समुद्र तट ४००० मील विस्तृत है, पर भारतीय नौ सेना में केवल ३४ जहाज और ११८५० अफसर और सैनिक तथा अन्य लोग हैं। इसके मुकाबले ब्रिटेन की सामुद्रिक-शक्ति इस प्रकार है :—

	१९३९	१९४८
जंगी जहाज	९	२
बैटल क्रूजर	२	—
विमानवाही पोत	४	४
क्रूजर	२६	१६
विनाशक	७०	३४
पनडुब्बी	३९	२६
फ्रीगेट	—	२५
सुरंग अपसारक	—	१२

सोवियट रूस की नौ सेना में ६००००० और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की नौ सेना में ३९२००० सैनिक हैं। इन देशों की आबादी क्रमशः १६ कोटि और १५ करोड़ है। भारत स्वतंत्र पर-राष्ट्र नीति का अनुसरण करना चाहता है, आग्नेय-एशिया और हिन्द महासागर को यूरोपियन राष्ट्रों के प्रभाव से मुक्त करना चाहता है, अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में अपनी भौगोलिक स्थिति के अनुकूल अमरीका और रूस के समान स्थिति और प्रतिष्ठा चाहता है। यह नौ-शक्ति के बिना सम्भव नहीं है। भारत को भी एंग्लो-अमरीका के समान अपनी अजेय नौ शक्ति का निर्माण करना चाहिए।

पूर्व की गौरवपूर्ण परम्परा

भारत के लिए नौ सेना नई चीज नहीं है। १३ वीं सदी तक हिन्द महासागर की लहरों पर चोल-नौ बेड़ा शासन करता था। इसके बाद भारतीय नौ बेड़ा तटवर्ती ही रहा। १७५७ में मराठा बेड़े के विनाश के साथ भारतीय नौ सेना का ही अन्त हो गया और हम भूल गए कि भारत एक सामुद्रिक देश है। सम्राट् अकबर सदृश शक्तिशाली मुगल सम्राट् का भी ध्यान इधर न गया और वह हज के यात्रियों की दुर्दशा चुपचाप देखता रहा। पर चौथी से बारहवीं सदी तक भारत सम्भवतः सबसे बड़ी औपनिवेशिक और सामुद्रिक शक्ति था। भारत के उपनिवेश पश्चिम में अफ्रीका के तट तक, और पूर्व में जावा, सुमात्रा, बोर्नियो- और दक्षिणी फिलीपाइन तक फैले हुए थे। स्याम यह नाम ही इस बात का प्रमाण है कि यह भारत का उपनिवेश रहा है। हिन्द चीन का नाम भी यही सूचित करता है। तथ्य यह है कि सर्वाधिक दीर्घकालिक औपनिवेशिक और सामुद्रिक शक्ति का 'ब्लू रिबन' आज भी भारत को ही प्राप्त है।

चौथी ई० पू० से भारतीय समुद्र-पार से व्यापार कर रहे हैं। मौर्य सम्राटों का इस स्रोत की आमदनी पर विशेष रूप से ध्यान था। दूसरी सदी में गुजरात के राजा ने जावा में सबसे पहले अपना राज्य स्थापित किया। गुप्तों के शासन में भारतीय उपनिवेशों का और अधिक विस्तार हुआ। नवम और दशम शताब्दी में उपनिवेशों का विस्तार चरम सीमा पर पहुंच गया। इस महान् कार्य में मौर्यों, सौराष्ट्रों, गुप्तों, हूणों, कलिंगों, पाण्ड्यों, चोलों और श्रीविजयों ने मुख्य रूप से भाग लिया। चोलों और श्रीविजयों के बीच मलाया और सुमात्रा के ऊपर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए हुई लड़ाइयों के कारण भारत की सामुद्रिक शक्ति को धक्का लगा। इस समय अरब और मूर रंगमंच पर आए और इन्होंने भारतीय बेड़े पर घातक प्रहार किया। भारत का सामुद्रिक विस्तार इसके बाद रुक गया। बृहत्तर भारत भारतीय तट तक सीमित रह गया।

११ मई १९४८ को वास्कोडिगामा कालीकट, मालाबार में आया और नौ-क्षेत्र से भारत का अन्त इस दिन से प्रारम्भ हो गया। कालीकट के राजा जमोरिन के प्रधान सेनापति कुंजा अली तृतीय और मराठा नौसेना के सेनापति कान्होजी आंग्रे ने, १६ वीं सदी से १८ वीं सदी के बीच भारत ने विदेशी आक्रान्ताओं का दृढ़ता से प्रतिरोध किया। पर यूरोपियनों की बढ़ी-चढ़ी शक्ति के आगे भारतीय नौसेना टिक न सकी। इसके साथ भारतीय नौसेना का ही अन्त नहीं हो गया, बल्कि सामुद्रिक शक्ति के विचार का भी अन्त हो गया भारत की सुरक्षा के लिए नौसेना प्रधान साधन है, यह विचार ही लुप्त हो गया पर यह एक ऐसी गौरवपूर्ण परम्परा है जो भविष्य में भी भारतीय सन्तान को सामुद्रिक साहस और बृहत्तर भारत के निर्माण के लिए अनुप्राणित और उत्साहित करती रहेगी।

हिंद महासागर पर ब्रिटेन का प्रभुत्व

सम्पूर्ण १९ वीं सदी में समुद्र की लहरों पर अक्षरशः ब्रिटिश नौ बेड़े का शासन था। ब्रिटिश नौसेना ने दक्षिण अमरीका को स्पेन के शासन से मुक्त कराया। ब्रिटिश जहाज चीनी तट और नदियों के अन्दर पहुंचे हुए थे। ब्रिटिश नौसेना को चुनौती देने वाला कोई न था। १८९५ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने स्पेन को हराया और फिलीपाइन को जीता। लगभग इसी समय जापान ने चीन को हराया और फारमूसा को कब्जा किया। प्रशान्त महासागर में ये महत्वपूर्ण घटनायें हुईं। दूसरी ओर १८९० में फ्रांस ने मैडागास्कर पर अधिकार किया। हिन्द महासागर के अन्दर महत्वपूर्ण सामरिक स्थान पर इस प्रकार फ्रेंच पताका फहराने लगी। जर्मनों ने टांगानिका पर प्रभुत्व स्थापित करके अरब सागर में प्रवेश किया। इटली भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहा और उसने सोमालीलैण्ड पर अधिकार जमाया। अदन के सामने अफ्रीका तट पर जीबूती में फ्रेंच बेड़े ने अपना अड्डा बनाया। इटली ने इरीट्रिया में प्रवेश कर मसा...

[शेष पृष्ठ ५१ पर]

भारतीय नौसेना में सम्मिलित एक नया दिल्ली नामक क्रूजर।

निकट भविष्य में

अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध की आशंका

[श्री राजगोपालाचार्य]

लेखक

मुझे इस बात का बड़ा भय है कि कहीं संसार में शीघ्र ही युद्ध न छिड़ जाये। इस समय आवश्यकता है कि कोई अमेरिका की बात रूस को समझाये और रूस की बात अमेरिका को और इस तरह युद्ध को टाले।

संसार की शान्त स्थिति चिन्तनीय गति से बिगड़ती जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास रखने वालों को आशा है कि एक दिन आयेगा, जब कि संसार के सब राष्ट्र मिल कर एक संघ में आबद्ध हो जाएंगे और उस संघ-शासन में समस्त व्यक्तियों को, भले ही किसी की जाति, वर्ण अथवा सिद्धान्त कुछ ही क्यों न हो, शान्ति एवं न्याय प्राप्त होने का विश्वास होगा। जब तक ऐसा नहीं होता, प्रायः समान शक्तिशाली राष्ट्रों में किसी वास्तविक अथवा काल्पनिक घटना के परिणामस्वरूप एक दूसरे के प्रति अकस्मात भय उत्पन्न होने की आशंका बनी रहेगी। उस दशा में यह धारणा अपना काम करती रहेगी कि जो संघर्ष अनिवार्य दीखता है, उसे जितना शीघ्र आरम्भ कर दिया जाए, उतना अच्छा है, ताकि शत्रु को और अधिक शक्तिशाली बनने का अवसर न मिल सके।

ठीक यही स्थिति अब पैदा हो गयी है। मैं आशा करता हूं कि मेरी आशंका निर्मूल सिद्ध होगी, किन्तु मुझे इस बात का बड़ा भय है कि कहीं संसार में पुनः शीघ्र ही युद्ध न छिड़ जाए। इस समय आवश्यकता इस बात की नहीं कि हम आत्म-रक्षा के नाम पर पर युद्ध की तैयारियां करें, जिससे उन लोगों की जबान बन्द की जा सके जो शान्ति के अत्यन्त प्रेमी हैं। इस समय आवश्यकता तो इस बात की है कि कोई रूस को अमेरिका की बात समझाये और अमेरिका को रूस की और युद्ध को टाले। यह कार्य वही कर सकता है, जिसका दोनों सम्मान करते हों, जिसका दोनों पर प्रभाव हो और जिस पर दोनों विश्वास रखते हों।
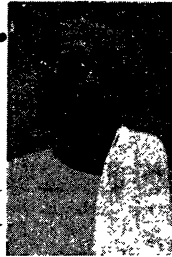
जहां तक भारत का सम्बन्ध है, यदि पाकिस्तान और भारत मिल कर कार्य करें तो वे उस नयी विपत्ति से बच सकते हैं, जिसका आज दुनिया को खतरा हो रहा है। अन्यथा वे भी इसकी लपेट में आने से न बच सकेंगे।

समर क्षेत्र में एक नर्स

[श्री रांगेय राघव]

मेरिया चुप बैठी रहती। मैं उन दिनों सेना की सेवा में आने के लिये भेजा गया था। मेरे साथ एक इटालवी स्त्री थी, जिसकी मां अगरेज थी। कुछ दिन उसे संदेह के कारण जेल में भी रखा गया, किंतु जब उसके घर की तलाशी में ऐसा माल बरामद हुआ, जिससे यह प्रगट हुआ कि वह बहुत दिन से ही मुसोलिनी के विरुद्ध संगठन करने वाले मजदूरों के साथ थी और तभी भाग कर इंग्लैण्ड में बस गई थी, उसे छोड़ दिया गया। और विस्तार से सब बातों को बताने में मुझे काफी देर लगेगी। अतः मैं केवल यही कह कर अपनी असली बात पर आ जाना चाहता हूं कि वह अपने नाच के बल पर मेरी साथिन हो गई और फिर मेरे साथ ही रहने लगी। उसके बाद हमने विवाह कर लिया। घूमते घूमते काफी दिन बीत गये। मैं अपनी पत्नी को सदैव 'लिली' कहता और वह किसी भी दूसरे नाम को भुला देना चाहती थी।

उस दिन लिली के नृत्य के बाद एक स्त्री ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर कहा :—'अद्भुत ! बहुत सुन्दर ! तुम्हारे नृत्य में संजीवन है। घायलों को भी तुम्हारे नृत्य की आवश्यकता है।' लिली ने मेरी ओर कनखियों से देखा और बच्चों की भांति हंस उठी।

'आप ?' स्त्री ने कहा। 'मैं, हूं। अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रास की नर्स। आप ?'

'मेरे' लिली ने कहा, और हंस दी।

मेरिया ने कहा :— 'सुंदर ! जोड़ी बहुत सुन्दर है।' लिली की आंखें हठात् चमक उठीं, क्योंकि नर्सों का चरित्र सदा से ही कुछ संदेह से देखा जाता है। किन्तु मेरिया के शेष वाक्य — 'बिल्कुल ऐसा ही मेरा एक भाई था, युद्ध में चला गया, सदा के लिये —' बात दूसरी हो गई। मृत्यु ने लिली को उसके समीप खींच लिया।

और मैंने देखा मेरिया चुप बैठी रहती। और उस निस्तब्धता में एक रहस्य की भावना सी दिखाई देती, जिसको न समझ कर लिली मेरी ओर देख उठती। एक दिन उसकी उत्सुकता इतनी बढ़ गई कि वह एकदम पूछ बैठी। मेरिया ने सुना और अपने गम्भीर स्वर से कहा :— ऐसा क्यों सोचा तुमने लिली ! बताओ ! मैं ? चुप तो नहीं बैठती। न कोई खास बात ही है। केवल एक बात सोच रही थी।'

'हम भी तो सुनें' लिली ने झटके से सोलहवीं सदी के उस प्राचीन नाटक को बन्द करके किताब मेज़ पर रखते हुए कहा। 'तुम तो प्रायः समस्त यूरोप देख चुकी हो। उफ् ! कैसा है तुम्हारा हृदय ! भयंकर युद्ध भूमि में जाकर घायलों की देख रेख करना, उन्हें उठा लाना...
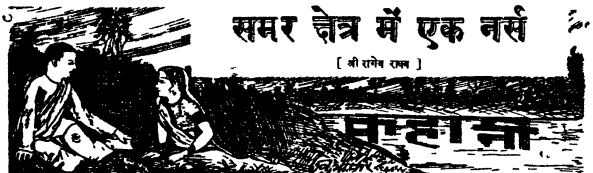
'लिली !' मेरिया ने कहा :— 'मौत कितनी भयानक है, इसको भी तुम कभी सोचती हो ? यह जो सौंदर्य है, शांति है, नृत्य है, कला है, प्रेम, जो कुछ भी है, इस जीवन के ही अनेक पहलू हैं। लेकिन जिंदगी क्या किसी कबाड़िये की दुकान है जहां हर चीज सस्ते दामों पर ता मिले, पर किसी की बरती हुई उतरन हो ? तुम शायद नहीं सोचती होगी। मेरे एक मामा हिन्दुस्तान में सेना में काम करके लौटे थे। वे बताते थे कि अपना सब सामान जब वे नीलाम कर रहे थे, तब हिन्दुस्तान में लोग बड़ी इज्जत से उनके सामान को खरीद रहे थे, क्योंकि यह सब उनके लिये काफी कीमती था।

मैं भूल गई हूं। उनके पास एक किताब थी, जिसे मैंने पढ़ा था। एक बहुत पुराने जमाने में कोई धर्मयुद्ध हुआ था। उसमें एक पुराने योद्धा ने अपने मरने की तरकीब भी बता दी थी। वह कई दिन तक तीरों के बिस्तर पर लेटा रहा और अंत में परमात्मा का ध्यान करता करता मर गया। वह अखंड ब्रह्मचारी था। उस लड़ाई में सेना सेना से लड़ती थी। जनता पर कोई हाथ नहीं उठाता था। अब तो वैसा नहीं होता।

तुम कारण बता सकती हो ? तब राजा अपने राजवंश के लिये लड़ते थे। अब राजा या कहो राज्य, बाजारों के लिये लड़ते हैं। मुझे यह देखकर बहुत खेद होता है। बताओ। मेरा भाई मारा गया। किसके लिये ? मृत्यु की भयानक छाया जहां खड़ा करती है, वहां मुझसे कहा गया है कि मैं जीवन का वरदान बन कर खड़ा करूं। माफी किससे मांगूं। पहले पाप तो करलूं। क्यों मारता है आदमी को आदमी और क्यों फिर भीख दी जाती है जिंदगी की।

जिस समय मैंने झुक कर दवा गले के नीचे उतारी, उस हिन्दुस्तानी सिपाही ने मेरे हाथ पकड़ लिये और कहा :— मेम साहिब ! अब नहीं सहा जाता।

मैंने देखा। मुख की विकराल आकृति पर रक्त की कमी एक डरावनापन लेकर छा गई थी। लगता था जीवन की चमक उस पर से ऐसे चली गई हो, जैसे पत्थरों से ठोकर खा खा कर पुराने जूते की। मैं कांप उठी। मैंने कहा :— 'तुम ठीक होजाओगे। घबराओ नहीं तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे।' मेरे शब्दों में कातर करुणा थी।

किन्तु वह अविश्वास से मुस्कुरा उठा :— नहीं, अब मैं जीवित नहीं रहूंगा। अब मैं नहीं बचूंगा। मैं मर जाऊंगा।

कितनी बड़ी बात कह गया था वह। यानी अब उसके लिये जो कुछ दिख रहा है, वह सब नहीं रहेगा। अब इन आंखों में से एक ऐसा अंधेरा इसके भीतर उतर जायेगा, जो इसको उस मिट्टी से मिला देगा जिस पर हम चलते हैं, जिसमें उजाला नहीं घुसता। कहां हुआ था इसका जन्म। कहां आकर दम तोड़ रहा है। यहां सब अनजाने हैं। कोई आंसू बहाने वाला तक नहीं।

मैं दहल उठी।

और वह कहता रहा :— 'मैं कायर नहीं हूं। मेम साहिब, मैंने आगे बढ़ कर हमला किया था... मैंने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये...। थक कर उसने फिर कहा :— लेकिन सब बेकार हैं यह.... मैं गरीब था.... मेरे घर के लोग भूखे थे। बीस मील पैदल चलकर गांव से शहर....भर्ती हुआ था मैं... वर्दी मिली थी...खाना...अच्छा था... उस दिन से लोग मुझसे डरने लगे थे... नहीं मेम साहिब.... नफरत करने लगे थे...।

और वह कराह उठा।

'कोई नहीं, कोई नहीं...अंधेरा... अंधेरा छा रहा है मेम साहिब। उफ् ! मां ! मेरे बच्चे .. उनकी मां... अब भूखे मरेंगे... जमींदार तो उनकी जमीन छीन लेगा... कौन देखेगा उन्हें... मेरे बच्चे... मेरे दुधमुंहे बच्चे,... भगवान... आह...' और फिर एक दर्दनाक आवाज़ गूंज उठी, घहरती हुई, भीषण। लिली ! वह कह रहा था... 'भगवान... क्यों दिया यह दण्ड...।

लिली, मेरे कान बहरे होगये थे, हृदय विद्रोह से फट रहा था। यह व्यक्ति। क्या यह एक भेड़ की ही भांति नहीं था, जिसने कुछ लोगों के पेट भरने के लिये अपनी जान को दांव पर लगा दिया। किसके लिये लड़ा था वह ? किसका गर्व करे ? आज मनुष्य का अभिमान और राष्ट्र का गौरव क्या कभी इसकी लाश पर खड़ा हो सकेगा जो एक विदेशी के लिये कुत्ते की मौत मर रहा था ? लाचार ! हिन्दुस्तानी ! क्या यही थी तेरी बहादुरी की कीमत ?

मैं देख रही थी। वह एक निस्सहाय बालक सा मेरे हाथ में पड़ा था। मैं देख रही थी। किन्तु सिपाही दर्द से बेहोश हो चुका था।

घड़ी अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी। मैंने उसे तकिये के सहारे लिटा दिया।

दूर एक बिस्तर पर कोई जैसे अपनी बेहोशी जैसी नींद से जाग उठा। उसने भर्राए गले से कुछ कहा।

हिंदुस्तानी सिपाही बेहोश सा पड़ा था।

मैं अधिक नहीं ठहर सकी। जागे हुए सैनिक के समीप चली गई। वह कराह उठा था :— पानी ..पानी. .।

पास जाकर मैंने उस से कहा : ठहरो। घबराओ नहीं।

और पानी पिलाकर कहा; डरो नहीं। मन न हारो। भगवान सबका भला करता है। वह पानी पीकर कुछ जैसे स्वस्थ हुआ। उसने कहा· नर्स ! तुम बहुत अच्छी हो......

उसने मेरे हाथ पर हाथ फेरा। मैं जानती हूं, उसमें विलास नहीं था। किन्तु उसमें पौरुष का का जाग्रत स्पर्श था...

उसमें अभिमान था। दास्य की वह भावना नहीं थी इसमें। मानों मैं इस पर दया नहीं कर रही थी। उसे अपना गर्व था जो मेरे कर्तव्य से अपने को कम समझने से इन्कार करता था।

मुझे उस फ्रेंच लड़की की याद हो आई जो सिआमी से होनलूलू चली गई थी, जो नर्स थी, और हर शाम को सिपाहियों के साथ शराब पीकर सिनेमा देखती और रात को बागीचे में उनके साथ अपने आपको बेचा करती। नितांत वेश्या सी। क्या यह सैनिक मुझे भी वैसा ही समझता है ? सैनिक जो है। जीवन को दांव पर लगा कर समझता है कि संसार के सुखों को इसने त्याग दिया है, तभी उसे हर उचित अनुचित का अधिकार है। क्योंकि इसको पैसे के अतिरिक्त और मिलेगा भी क्या। किन्तु इस का यह स्पर्श ......

घृणा से मेरा मन तिक्त हो गया। किन्तु फिर सोचा। मातृत्व की वह भावना, जो हिन्दुस्तानी सिपाही ने मेरे प्रति दिखाई थी, कितना गर्व हुआ था मेरे जीवन को उस समय। किन्तु छिन्न भिन्न यह स्वप्न एकदम। इसकी दृष्टि में मैं सेवा के उज्ज्वल धर्म से आलोकित नहीं

है। और वह फ्रेंच लड़की जो चलते सिपाहियों को स्वयं छेड़ती थी ... कभी कभी अधनंगी होकर 'बाल' में नाचती थी .... मैं वह सब नहीं सोचना चाहती ......

मैंने उससे कहा; तुम निराश क्यों होते हो ? बड़े २ घायल भी ठीक हो जाते हैं। एक आया था जिसके पेट को गोलियों से छलनी कर दिया था। भगवान की दया से वह भी ठीक हो गया ...

'ठीक है नर्स ! भगवान की दया मुझ पर .... नहीं होगी। उसी दिन समाप्त हो गई थी वह दया, जब भयानक बमबारी में ग्लैसगो में मेरी मां पर गई थी। मां ! ब्रिटेन ! उफ ! बच्चे दहल कर रो रहे थे। बर्बर ... जानवर ... असभ्य.... निहत्थों पर वार ...' सिपाही कराह उठा; लेकिन मैं मजबूर था। मुझे फौज में जबर्दस्ती दाखिल कर लिया गया। मैं जानता हूं। उस समय मुझे कायरता ने घेर लिया था। मैं ने सोचा था। क्यों लड़ूं ? क्या मिलेगा मुझे ? क्या मुझ से पूछ कर लड़ाई शुरू की गई है ? किंतु मां की लाश देख कर मेरी आंखें खुल गईं। पीछे जाने का वक्त न था। इंगलैंड पुकार रहा था ! हथियार उठाने लायक अपने हर बच्चे को देश पुकार रहा था। मैंने सुना ... मैं जलती आग में कूद पड़ा। जर्मनी के खूनी पांव मेरे देश को नहीं रौंद सकेंगे ...' और फिर उसने दृढ़ स्वर से कहा; इंगलैंड ने कभी सिर नहीं झुकाया ... वह कभी सिर नहीं झुकायेगा ... इंगलैंड कभी दास नहीं होगा ... एक भी आदमी जब तक जिंदा रहेगा ... समुद्र की लहरों पर .... शासन करने वाला इंगलैंड ...

मैंने सुना। गर्व से मेरा वक्षःस्थल फूल उठा ! यह है मेरे देश का गौरव-तब मैं ने उसके पौरुष से प्रभावित होकर उसके हाथ पर हाथ फेरा। यह व्यक्ति देश के लिए मर रहा था। इसे सारे सुखों की आवश्यकता थी।

किंतु फिर अन्तर्राष्ट्रीय सेवा ! मैं तो इन सबसे ऊंची हूं। वह निरीह हिंदुस्तानी .... सभी सैनिक अपनी जिस्मी निर्बलता में कराह उठा : इंगलैंड बच जायेगा ... लेकिन मैं नहीं बचूंगा... नर्स ... इंगलैंड आबाद रहेगा .... पर मैं नहीं बचूंगा ... मेरा जीवन नष्ट हो गया है ... मेरे बच्चे बिना बाप के हो जायेंगे ....

मैं सुन रही थी। राष्ट्र के गौरव में व्यक्ति अपने को निस्सहाय क्यों अनुभव कर रहा था ...

सांझ हो गई थी। बाहर बरफ गिरने लगी थी। मैं उठ कर औरों को दवा देने लगी। घड़ी फिर टनटना उठी। देखा ! बत्तियां जलने के पहले एक अजीब उदासी हवा पर फैल रही थी।

अस्थायी अस्पताल में चारों ओर हल्की २ कराहें उठ रही थीं। नर्सों डाक्टरों में हलचल हो रही थी। सब अपने २ काम में लग रहे थे। डाक्टर मिले। देख कर मुस्कराये। और अपनी सारी हंसी हंस कर कहा; नर्स ! दुनिया एक पहिये की भांति घूम रही है। एक मिनट का विश्राम नहीं है। लगता है दो चार दिन में सारी दुनिया के नौजवान खत्म हो जायेंगे।

मैं आगे बढ़ रही थी। सुना ! पीछे से किसी ने दबी आवाज से कहा; तब बकल औरतों की परेशानियां बहुत बढ़ जायेंगी ...

थकान से मैं चूर चूर हो रही थी ! इस वक्त भी यह मजाक ... जिस देश में स्त्री अपने को पुरुष के विलास की वस्तु समझती है, वहां पुरुष अपनी स्वाभाविकता खोकर लोलुप पशु हो जाता है ! क्योंकि स्त्री इस बात की शर्म करती है कि वह स्त्री है ... जैसे स्त्री होना भी, मां होना भी, कोई छिपाने लायक, झेंपने लायक बात है ... पड़ते ही नींद आ गई, सारा कोलाहल, सारी चिंता, परेशानी खोगई ! बड़ी गहरी थी वह नींद ! वह बेहोशी ! लोग कहते हैं मरने के बाद इंसान को यह बेहोशी जगा देती है ! बस मेरा जीवन !

लिली ! मैं उस समय बेहद थक गई थी। कोस भागती रही ! इधर मैं बेहोशी के सुख में सोई हुई थी, इधर लोग हम सोच रहे थे। वहां मेरे प्राण चेतना कि मैं सोचती कि उनको एक एक करके घर के चिह्न याद आ रहे होंगे। बंदूकों की नालियों के बीच जिंदगी गुजारने वाले।

हठात् मुझे किसी ने जगा दिया।

'सो रही हो ! भयानक लड़ाई हुई है। तैयार हो जाओ। मैदान में से लाशें उठानी हैं।'

कहने वाला चला गया। मुझे अत्यन्त बुरा लगा। अभी तो सोई थी, पर काम तो काम था। काश मैं भी किसी की पत्नी, घर पर रहती....

जिस समय मैं तैयार होकर पहुंची, डाक्टर तैयार खड़ा था। वह हंस रहा था। मुझे उस पर अचरज हुआ। वह अजीब आदमी था। मैंने उसे कभी उदास नहीं देखा।

'बैठो, बैठो।' ट्रकों पर सामान इत्यादि लेकर चढ़ गये। डाक्टर मेरी ही गाड़ी पर चढ़ गया। उसने कहा; सोचती होगी वे लोग अच्छे होंगे, जो घर रहते होंगे। कारखानों, खेतों में काम करते होंगे... वह हंस रहा था।

गाड़ियां चल पड़ीं। अंधेरे में उनकी रोशनी ने घूंसा मारा और भारी चक्कों से रबड़ के दांतों वाले पहिये एक घर्र २

[शेष पृष्ठ ४६ पर]

क्या पाकिस्तान भारत पर आक्रमण कर सकता है ?

[प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

लेखक

युद्ध बहुत बुरी वस्तु है। मनुष्य जाति सदा उससे बचने की चेष्टा करती रही है। धार्मिक नेता, तत्ववेत्ता और राजनीतिज्ञ उपदेशों व लेखों और व्याख्यानों द्वारा युद्ध के विरुद्ध प्रचार करते रहे हैं। परन्तु आश्चर्य की बात है कि सृष्टि के आरम्भ से २००४ विक्रमी तक का इतिहास युद्धों से भरा पड़ा है। युद्ध ने राज्य बनाये और बिगाड़े हैं, युद्ध ने जातियों को स्वाधीन और पराधीन किया है। आदर्शवाद की रङ्गीन ऐनक उतार कर वास्तविकता की आंखों से देखा जाय तो हम इस परिणाम पर पहुंचे बिना नहीं रह सकते कि युद्ध मनुष्य जाति के जीवन का अत्यन्त अप्रिय परन्तु सबसे अधिक आवश्यक और आवश्यक अङ्ग है। युद्ध से जन और धन की जो हानि होती है, उसे ध्यान में रखते हुए हमें शान्ति प्रेमी तत्ववेत्ता के साथ इस बात में सहमत होना पड़ता है कि युद्ध बुरी चीज है। परन्तु हमें यह बात कभी न भूलनी चाहिए—बुरी होते हुए भी युद्ध एक वास्तविक चीज है। हम स्वयं उसका कारण बनने से बचने की चेष्टा कर सकते हैं पर उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। बीमारी बहुत बुरी चीज है, उससे बचना चाहिए। किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि संसार के चिकित्सकों और दवाखानों को उठा देना चाहिये। जैसे बुरी होती हुई भी बीमारी असली चीज है, वैसे ही अप्रिय होता हुआ भी युद्ध मनुष्य जाति के जीवन का एक आवश्यक अंग है, इस कारण उसके सम्बन्ध में विचार करना निन्दनीय काम नहीं।

इतनी भूमिका मैंने इसलिए लिखी है कि पाठक इस लेख का शीर्षक देख कर घबरायें नहीं। जैसे यह सोचना आवश्यक है कि इस वर्ष बरसात के मौसम में दिल्ली में हैजा फैलने की सम्भावना है या नहीं, इसी प्रकार इस प्रश्न पर विचार करना भी आवश्यक है कि क्या पाकिस्तान भारत पर आक्रमण कर सकता है?

मेरा उत्तर है कि पाकिस्तान भारत पर आक्रमण कर सकता है। इसके निम्न-लिखित कारण हैं—

[१] पहिला कारण मनोवैज्ञानिक और अतएव मौलिक है। प्राचीन भारत के सबसे बड़े व्यावहारिक राजनीतिज्ञ के विद्वान् आचार्य चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में लिखा है कि जिन राज्यों की सीमाएं आपस में मिलती हों, वे एक दूसरे के स्वाभाविक शत्रु हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह सर्वथा स्वाभाविक है कि पड़ोसी राज्यों में सीमाओं के सम्बन्ध में तथा अन्य अनेक प्रकार के विवाद उठते रहें, जो उग्र होकर युद्ध का रूप धारण कर सकते हैं। यही कारण है कि समान बल वाले पड़ोसी देश एक दूसरे के शाश्वतिक शत्रु बने रहते हैं। इंग्लैण्ड और अमेरिका के बीच में विशाल समुद्र पड़ा हुआ है, इस कारण वे एक दूसरे के मित्र बन कर रह सकते हैं, परन्तु फ्रांस और जर्मनी, फ्रांस और स्पेन, जर्मनी और रूस, रूस और टर्की—इसी प्रकार अन्य पड़ोसी बड़े देश चिरकाल तक एक दूसरे के मित्र बन कर नहीं रह सकते। सदियों तक ये देश परस्पर विरोधी बने रहे हैं। भारत और पाकिस्तान पड़ोसी देश होने से एक दूसरे के स्वाभाविक विरोधी रहेंगे। पूरा यत्न होना चाहिये कि यह विरोध कभी उग्र रूप धारण न करे, परन्तु युद्ध या आक्रमण की सम्भावना की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि अङ्कों में उस सम्भावना का वर्णन करना हो तो हम कह सकते हैं कि ५१ ०/० सम्भावना आक्रमण के पक्ष में है।

[२] सम्भावना के पक्ष में दूसरी युक्ति यह है कि पाकिस्तान की स्थापना जिन भावनाओं के आधार पर हुई है वे आक्रमणात्मक हैं। पाकिस्तान का भवन हिन्दू मुसलमानों के नैसर्गिक विरोध पर खड़ा किया गया। हम नैसर्गिक विरोध की कल्पना को नहीं मानते, परन्तु पाकिस्तान का तो जीवन प्राण यही है। पाकिस्तान का रेडियो आज भी महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी के कारनामे सुना कर पाकिस्तान के निवासियों का मनोरञ्जन करता है। इस मनोवृत्ति का परिणाम यदि युद्ध नहीं तो क्या है? कहा जा सकता है कि हमें ऐसा न मान लेना चाहिए कि पाकिस्तान की ओर से अवश्य आक्रमण होगा, यह बात ठीक है। सम्भव है कि पाकिस्तान और भारत में अनन्त काल तक युद्ध न हो। परन्तु जहां मूल में ही विरोध की भावना विद्यमान हो, वहां संघर्ष की सम्भावना तो बनी ही रहेगी।

[३] सम्भावना को बढ़ाने वाला तीसरा कारण काश्मीर का प्रश्न है। यदि काश्मीर का प्रश्न भारत और पाकिस्तान के परस्पर समझौते से हल हो जाय, तो बहुत उत्तम हो। परन्तु ऐसी कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती है। पाकिस्तान के शासक चाहते हैं कि काश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा बन जाय, परन्तु काश्मीर के निवासी ऐसा नहीं चाहते। वे भारतीय संघ में रहना पसन्द करते हैं। वे पाकिस्तान के आदर्शों और कार्यों से असहमत हैं। इधर भारतीय संघ काश्मीर निवासियों की इच्छानुसार उनकी रक्षा के लिये वचन बद्ध है। यदि सुरक्षा कौंसिल कोई ऐसा बीच का रास्ता निकाल सके, जिसे दोनों पक्ष मान लें, अन्यथा काश्मीर का प्रश्न उग्र रूप धारण कर ले तो कोई आश्चर्य नहीं। उस दशा में सम्भव है पाकिस्तानी सेनाओं का जो आक्रमण इस समय केवल काश्मीर पर चल रहा है, वह सारे भारतवर्ष पर होने लगे।

[४] चौथा कारण जो पाकिस्तान को भारत पर आक्रमण करने की प्रेरणा कर सकता है, यह है कि विभाजन से पूर्व और उसके पश्चात् मुस्लिम लीग और लीगी सरकार ने अशान्ति और हिंसा के जो भूत खड़े किये हैं, उन्हें कोई न कोई भोजन चाहिये। काश्मीर और पंजाब के अन्तः सीमा प्रान्त पर जो आततायीपन हुआ है, या हो रहा है, उसके लिये कबायलियों या पठानों को तो व्यर्थ में ही बदनाम किया जा रहा है। गुजरे हुए एक वर्ष में पाकिस्तान के निवासियों ने, मुस्लिम लीग का नारा लगाते हुए ऐसे-ऐसे अत्याचार किये हैं कि कबायली और पठान उनसे मात खा गये हैं। आततायीपन की यह बाढ़ इतना जोर पकड़ गयी है कि पाकिस्तान का शासक वर्ग आसानी से उसे नहीं रोक सकता। इस डर से कि कहीं यह बाढ़ पाकिस्तान को ही जलमग्न न कर दे, सम्भव है पाकिस्तान के विधाता उस बाढ़ का मुंह भारत की सीमाओं की ओर मोड़ दें।

[५] भारत पर पाकिस्तान के आक्रमण की सम्भावना को बढ़ाने वाला पांचवा और अन्तिम कारण अन्तर्राष्ट्रीय है। यूरोप के देश लगभग साढ़े तीन सौ साल से एशिया और अफ्रीका की शतरञ्ज पर मोहरों का खेल खेलते रहे हैं। इंग्लैण्ड भौगोलिक दृष्टि से तो भारत से अपना बोरिया-बधना उठाकर जा रहा है, परन्तु लक्षणों से प्रतीत होता है कि उसकी अन्तरात्मा अभी बहुत समय तक भारत के अन्तरिक्ष पर ही मंडराती रहेगी। इधर अमरीका भी दूसरे विश्वव्यापी युद्ध के पश्चात् शतरञ्ज के खेल में पूरी तरह शामिल हो गया है, उसे भी एशिया प्रदेश में चलने के लिये कोई मोहरा चाहिये। लक्षणों से प्रतीत होता है कि भारतीय संघ अभी किसी अन्य देश का मोहरा बनने को तय्यार नहीं है। ऐसी दशा में योरोप के पश्चिमी संघ की दयादृष्टि पाकिस्तान पर पड़े, तो कोई आश्चर्य नहीं। लक्षणों से प्रतीत होता है कि पाकिस्तान उन देशों का मोहरा बनने को तयार है। इसमें अब कोई सन्देह नहीं रहा कि पाश्चमी संसार तीसरे महायुद्ध की ओर बड़े वेग से बढ़ता जा रहा है, यदि युद्ध आरम्भ हुआ तो खिलाड़ियों के हाथ भारत पर दबाव डालने के लिये पाकिस्तान के मोहरे को दिल्ली की ओर बढ़ा दें तो कोई आश्चर्य नहीं।

मैं यह नहीं कहता कि पाकिस्तान कल ही भारत पर आक्रमण करने वाला है। मेरा केवल इतना कहना है कि भारत पर पाकिस्तान के आक्रमण की सम्भावना ऐसी वस्तु नहीं कि उस पर शीघ्र और गम्भीरता पूर्वक विचार न किया जाय। व्यावहारिक राजनीति में सम्भावनाओं का महत्व वास्तविकताओं से कुछ कम नहीं होता। कभी कभी वह अधिक होता है, क्योंकि वास्तविक संकट की मात्रा को आसानी से जाना जा सकता है, इस कारण मुकाबला करने के लिये तय्यारी भी बहुत अधिक चाहिये, दूरदर्शिता इसी में है।

देशवासियों, देश के नेताओं और भारतीय संघ के कर्णधारों से मेरा निवेदन है कि केवल भावुकता में आकर सम्भावित संकट की उपेक्षा न करें। याद रक्खें कि आज कल के युद्ध युद्ध घोषणाओं से आरम्भ नहीं होते, अपितु शत्रु की राजधानी पर बम वर्षा से होते हैं। आक्रमण पहले होता है और घोषणा पीछे। यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये कि पाकिस्तान की सीमा से दिल्ली की दूरी ३०० मील से भी कम है। लड़ाकू हवाई जहाज इतनी दूरी को दो घण्टे में पार कर सकता है। पश्चिमी पंजाब और पूर्वी पंजाब की सीमा को प्रकट करने के लिये न कोई ऊंचा पर्वत है और न बड़ी नदी। इन परिस्थितियों को सामने रखकर देश की रक्षा के प्रति देशवासियों और भारतीय संघ के संचालकों का जो कर्तव्य है, उसकी ओर ध्यान खेंचना ही इस लेख का उद्देश्य है।

———

जहां से विश्व को शान्ति व मानवता का

सेव ग्राम की ओर—

विदेशी कलाकार की दृष्टि में सत्याग्रही।

अत्यन्त साधारण होते हुए भी इस कुटिया को संसार के सबसे प्रसिद्ध और महान व्यक्ति का निवासस्थान बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

इस युग के सब से बड़े शान्ति दूत।

यही वह आश्रम है, जहां आज भी गांधी जी के भक्त उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने में प्रयत्नशील हैं।

गांधी-विचारधारा के उत्तराधिकारी आचार्य विनोबा भावे।

शान्त वातावरण में कभी-कभी चहल-पहल भी देखने में आ जाती है एक सम्मेलन के समय का दृश्य।

सभी आश्रमवासी स्वावलम्बन का पाठ सीखते हैं।

अमर सन्देश दिया जाता रहा है !

बाल मन्दिर की ओर—भारत के भावी स्तम्भों के लिए शिक्षित होना आवश्यक है।

किताबी कीड़े ही न बनो, कला कौशल भी जानो, इसी पर गांधी जी जीवन पर्यन्त बल देते रहे हैं।

अच्छी गृहिणी के लिए पाक-विज्ञान की जानकारी आवश्यक है। इसी लिए सेवाग्राम के बाल मन्दिर में बच्चियों को आरम्भ से ही भोजन बनाना सिखाया जाता है।

बच्चे हैं तो क्या हुआ, वे भी वाशिंगटन टी० बुकर के छात्रों से कम नहीं, जिन्होंने स्वयं ही विद्यालय की सारी इमारत तैयार कर ली थी।

स्वयं सफाई करना घृणित कार्य नहीं, यही तो गांधी जी ने सिखाया है।

हम में से किसी का वर्ण, जाति या सम्प्रदाय कुछ ही क्यों न हो, हम सब मिल कर भोजन करते हैं।

★

चक्की पीसना लड़कियों का सब से अच्छा व्यायाम है। काम का काम और व्याय ।

राष्ट्र की आन्तरिक शांति और सुरक्षा के जागरूक कर्णधार

सरदार पटेल

युद्ध और विश्व-शान्ति के उत्तरदायी—

भारत के प्रधानमन्त्री
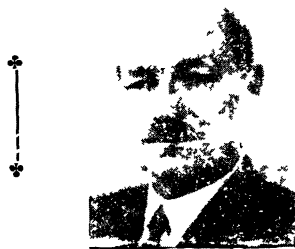
प० नेहरू

रूस के प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ

म० ग्रोमिको

रूस के सूत्रधार

माशल स्टालिन

ब्रिटेन क ्रधानम

श्री एटली

ब्रिटेन के विदेशम त्री

अनस्ट बेविन

इटली के विदेशमन्त्री

काउण्ट स्फोर्जा

रूस के विदेशमन्त्री

म० मोलोटोव

फ्रांस के विदेशम त्री

म० बिदोल

विभिन्न राष्ट्रों के महान कर्णधार

पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल

श्री जिन्ना

अमेरिका के राष्ट्रपति

श्री ट्रूमैन

अमेरिका के विदेशमंत्री

जार्ज मार्शल

यूगोस्लाविया के प्रधानमंत्री

मार्शल टीटो

चीन के राष्ट्रपति

च्यांग काई-शेक

मिश्र के प्रधानमंत्री

नोकराशीपाशा

यहूदी नेता

वीजमैन

अरब गवर्नर निज

अमीर फैजल

हमारे देश के छिपे खतरनाक शत्रु

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार]

प्राय प्रत्येक देश में कुछ ऐसे आदमी होते हैं, जो असाधारण संकट के समय अपने स्वार्थ के लिये या किसी दूसरे कारण से अपने देश की अपेक्षा विरोधियों का साथ देने लगते हैं। इस सम्बन्ध में विश्व के ज्ञात इतिहास में सबसे प्रथम विभीषण का नाम मिलता है, जो अपने भाई रावण का साथ छोड़कर राम के साथ आ मिला था। इसके बाद भारतीय इतिहास में चिरकाल तक ऐसे विभीषणों का कोई उदाहरण नहीं मिलता। पर शायद इसका कारण इतिहास की अपूर्णता है, मानव प्रकृति का बदल जाना नहीं। सिकन्दर के आक्रमण के समय ऐसे विभीषणों और आजकल के शब्दों में पांचवें कालम के उदाहरण मिलते हैं। मुस्लिमकाल में भी मुस्लिम विजेताओं को हिन्दुओं में से ऐसे विभीषण या जयचन्द समय समय पर मिलते रहे। अंग्रेजों का तो राज्य ही ऐसे देशद्रोहियों के विश्वासघात की नींव पर स्थापित हुआ था। सरकारी नौकर जिस श्रद्धा व भक्ति से ब्रिटिश सरकार के लिए जी जान से काम करते हुए कांग्रेसियों पर जुल्म व सितम ढा रहे थे वह उनका देशद्रोह ही था। वस्तुतः देश के स्वातन्त्र्य युद्ध के विरुद्ध देश के लिए जिस वर्ग ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया, वे सब पांचवें कालम के थे।

भारतवर्ष ही नहीं, अन्य देशों में भी ऐसे विभीषण पाये जाते रहे हैं। चीन में मचूवंशी राजा जापान सरकार के कठपुतली बन गये। नानकिंग सरकार भी स्वतन्त्र चीन के लिए पांचवें कालम का काम करती रही है। इंगलैण्ड का प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ कर्नल लारेंस अरब आदि में बहुत से विभीषणों का समूह कर सका था। प्रत्येक साम्राज्यवादी देश पराधीन राष्ट्र में बहुत से देशद्रोही पैदा कर लेता है और वस्तुतः उन्हीं के आधार पर वह उन्हीं देशों में शासन करता है। पिछले विश्वयुद्ध में हिटलर को भी अनेक देशों में क्विस्लिंग तलाश करने में कोई कठिनता नहीं हुई।

यह पांचवां दस्ता, क्विसलिंग और ये जयचन्द, मीरजाफर या विभीषण किसी भी देश के लिए बहुत अधिक खतरनाक होते हैं — देश के प्रत्यक्ष शत्रु की अपेक्षा भी अधिक खतरनाक। शत्रु को तो हम पहचानते हैं और उससे बचने के उपाय करते हैं, किन्तु न आन्तरिक शत्रु के स्वरूप का हमें ज्ञान होता है और न यही मालूम होता है कि वह कहां चोट करेगा और कैसे करेगा। इसी लिए प्रत्येक देशवासी को इनके सम्बन्ध में अधिक सतर्क होने की आवश्यकता है।

× × ×

समय समय पर शत्रु भेद से ये क्विसलिंग और मीरजाफर की श्रेणी बदलती रहती है। आज जबकि हम स्वतन्त्र हो गये हैं और इससे भी अधिक जब अन्तर्राष्ट्रीय संकट भयङ्करतर होता जा रहा है, हमें यह निश्चय कर लेना चाहिये कि किस किस श्रेणी से ऐसे देशद्रोही निकल सकते हैं। इन पङ्क्तियों में संक्षेप से हम इसी प्रश्न का कुछ विवेचन करना चाहते हैं।

× × ×

आज १ अप्रेल १९४८ का दिन है, जब कि मैं यह लेख लिख रहा हूं। आज की तारीख का अखबार मेरे सामने है। उसमें बिहार के प्रधानमन्त्री श्रीकृष्णसिंह का भाषण दिया गया है, जिसमें वे कहते हैं —

'बिहार प्रान्त में ऐसे दल भी हैं, जिन पर सरकार को निगाह रखनी पड़ेगी। ऐसे गम्भीर समाचार आये हैं, जिनसे सरकार को राज्य के विरुद्ध गुप्त कार्रवाइयां करने वाले शत्रुओं के प्रति सतर्कता रखनी आवश्यक हो गई है। १५ दिन पूर्व मैंने गैरकानूनी शस्त्र रखने की अपील की थी, तब एक भी मुस्लिम लीगी ने उस पर अमल नहीं किया। मुसलमानों का एक ऐसा दल भी प्रान्त में मौजूद है, जो पाकिस्तान को अपना देश (होम लैण्ड) मानता है और इस काम के लिए बिहार में षड्यन्त्रकारियों का पार्ट तक अदा करने को तैयार है।'

यह पङ्क्तियां लिखते समय मुझे युक्तप्रान्तीय असेम्बली में ४ सप्ताह पूर्व पुलिस मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का वह वक्तव्य भी स्मरण आ रहा है जिसमें उन्होंने बताया था कि मुस्लिमलीगियों के घरों की तलाशियां लेने पर बड़ी संख्या में छुरे, पिस्तौल, तलवारें और भाले बरामद हुए। यू० पी० लीग के अध्यक्ष की तलाशी लेने पर कुछ ऐसे कागजात मिले, जिनमें भारत का कुछ प्रदेश पाकिस्तान को देने का समर्थन किया गया था। उसी भाषण में श्री लालबहादुर ने यह भी बताया था कि फिलस्तीन ब्रिगेड के नाम से स्थापित मुस्लिम संस्था ने मुसलमानों को एकत्र करके काश्मीर के हमलावरों को मदद करने के लिए भेज दिया।

ये दो उदाहरण किसी मुस्लिम विद्वेषी हिन्दू सभावादी या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के किसी स्वयंसेवक के नहीं हैं। ये हैं उत्तरदायी अधिकारियों के जिनकी देशभक्ति में सन्देह नहीं किया जा सकेगा। वस्तुतः आज यह कहने के लिए हम विवश हैं कि, आज भी भारत में

> देश के प्रत्येक शत्रु की अपेक्षा आन्तरिक शत्रु — पांचवां दस्ते के सैनिक — अधिक खतरनाक होते हैं क्योंकि जहां प्रथम शत्रु को तो हम पहचानते हैं वहां आन्तरिक शत्रु के स्वरूप का हमें न ज्ञान होता है न यही मालूम होता है कि वह कहां चोट करेगा। भारत के गुप्त शत्रु कौन हैं क्या आप यह जानते हैं? इस लेख में इसी महत्वपूर्ण प्रश्न का संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

ऐसे मुसलमानों की संख्या कम नहीं है, जो धर्मान्ध हैं और जो मुस्लिम लीग द्वारा इतने भ्रान्त हैं कि अब भी वे पाकिस्तान को भारत की अपेक्षा अधिक प्रेम करते हैं। राष्ट्रीयता की बजाय वे अपने मजहब को अधिक महत्व देते हैं। उनके हृदय में देवनागरी लिपि की अपेक्षा विदेशी पर्शियन लिपि का अधिक प्रेम है, उन्हें भारत के ऐतिहासिक वीर नेता राम या बुद्ध की अपेक्षा विदेशी खलीफा फकीर अधिक पूज्य हैं। ऐसा व्यक्ति अपने देश को प्रेम नहीं कर सकता और यह आशङ्का प्रतिक्षण है कि जब भारत पर कोई मुस्लिम शक्ति आक्रमण करेगी और धर्मान्धता का नारा लगायगी, तो ऐसे मुसलमानों की संख्या भारत में कम न होगी, जो भारत की अपेक्षा किसी मुस्लिम शक्ति का साथ देना अधिक पसन्द करेंगे। इसके लिए वे क्या क्या ना प्रयत्न करेंगे, यह आज नहीं कहा जा सकता। लेकिन मुस्लिम लीगियों की डायरेक्ट एक्शन के लिए की गई देशव्यापी तैयारियों और नोआखाली

प्राप्य —नई सड़क दिल्ली।

पंजाब, सीमाप्रान्त व सिंध की सीमवर्ती घटनाओं को ध्यान में रखते हुए यह कल्पना अवश्य की जा सकती है कि समय आने पर इस क्षेत्र से क्या-क्या सम्भावनाएं की जा सकती हैं।

× × ×

ऐसे भी अवसर आ सकते हैं कि जब देश को मुस्लिम लीगियों के अतिरिक्त किन्हीं अन्य क्षेत्रों से देशद्रोह की आशंका हो। हम ऊपर कह आये हैं कि शत्रुभेद से बिभीषण या क्विसलिंग और पांचवें कालम में भी भेद आ जाता है। आज जिस तरह अन्तर्राष्ट्रीय संकट लगातार विषम होता जा रहा है, उसमें यह बहुत सम्भव है कि कभी रूस को भारत-विरोधी संघर्ष में कूदना पड़े। इन पंक्तियों के लेखक की यह दृढ़ धारणा है कि रूस और अमरीका दोनों घोर साम्राज्यवादी हैं। दोनों ही सब प्रकार के छल प्रपंच का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से पाप कर सकते हैं। इसलिए यह असंभव नहीं है कि कोई ऐसी स्थिति आ जाय कि रूस भारत के विरुद्ध लड़ा हो जाय। यदि मुस्लिम राष्ट्रों के नाम पर बहुत से मुसलमान कर्तव्यच्युत हो सकते हैं तो इससे भी अधिक सम्भावना यह है कि कम्यूनिस्ट रूस के आह्वान पर देशद्रोह करने को तत्पर हो जायें। १९४२ में भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के समय कम्यूनिस्टों ने हमारी दृष्टि से पांचवें कालम का काम किया था। उनकी न कोई नीति है, न कोई सिद्धांत। रूस का संकेत उनके लिए वेदवाक्य है। साम्यवाद के सिद्धान्त भी उन्हें उतना नहीं लुभाते, जितना स्टालिन का जादू। आज वे लेनिन और ट्राटस्की दोनों को भूल रहे हैं, उनका आराध्य देवता है स्टालिन। अपने देश की अपेक्षा दूसरे देश के प्रति भक्ति से ही इंग्लैंड की मजदूरदली सरकार सशंक हो गई है और किसी भी उत्तरदायी पद पर कम्यूनिस्टों को न रखने का फैसला किया गया है। अमेरिका में भी कम्यूनिस्टों का 'पर्ज' इसी भय से किया जा रहा है। बरमा में भी यही हो रहा है और भारत में भी राष्ट्रीय सरकार को कम्यूनिस्टों के विरुद्ध इसीलिए कदम उठाने पड़ रहे हैं कि वे अपने देश की अपेक्षा रूस को अधिक प्रेम करते हैं। आज भारतीय कम्यूनिस्ट यूरोपियन देशों की तरह भारत में भी आर्थिक अशान्ति, असन्तोष, क्षोभ व अराजकता के प्रचार में प्रयत्नशील हैं।

प्रश्न यह है कि क्या रूस भारत के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हो सकता है? हमारा उत्तर यह है कि दुनिया में असंभव कुछ नहीं है। यदि एण्टि-कमिण्टर्न संधि के पुरस्कर्ता हिटलर और रूस में संधि हो सकती है, यदि रूस और जर्मनी आपस में लड़ सकते हैं, यदि जर्मनी व इटली के नाश के उत्सुक विजेता राष्ट्र यूक चाट कर उसे पुनर्जीवित करने के लिये फिर से प्रयत्नशील हो सकते हैं, तो इस दुनिया में सब कुछ संभव है। इसलिए हमारा यह भी कर्तव्य है कि कम्यूनिस्टों की गतिविधि का अत्यन्त सतर्कता से निरीक्षण करें।

× × ×

हमारा शक्तिशील हृदय यह भी यदि सोचे कि इसके विपरीत भी परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है तो अनुचित नहीं है। आज की दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं है। ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि जब ब्रिटेन व अमरीका भारत के विरोधी दल में खड़े हों। उनकी हमारे देश से कभी सहानुभूति नहीं रही। वे आज निजी पूंजी और उद्योगपतियों के संरक्षक हैं। इसलिए संघर्ष की स्थिति में यदि रूस कम्यूनिस्टों के सहयोग की अपेक्षा रख सकता है, तो ब्रिटिश-अमेरिकन उद्योगपति भी भारत के कुछ राजाओं और सम्पन्न वर्ग के एक अंश से आशा कर सकता है। इसीलिए आज यह आवश्यकता है कि रियासती राजाओं को भारत संघ में आत्मसात कर लिया जाय या निःशक्त कर दिया जाय। और भी किसी तीसरी श्रेणी से हम देशद्रोह की संभावना कर सकते हैं, यह अभी तक दिमाग पर जोर डालने पर भी हमारे ध्यान में नहीं आया।

———

युद्ध से अन्तर्राष्ट्रीय समस्या हल नहीं होगी

[श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल]

★
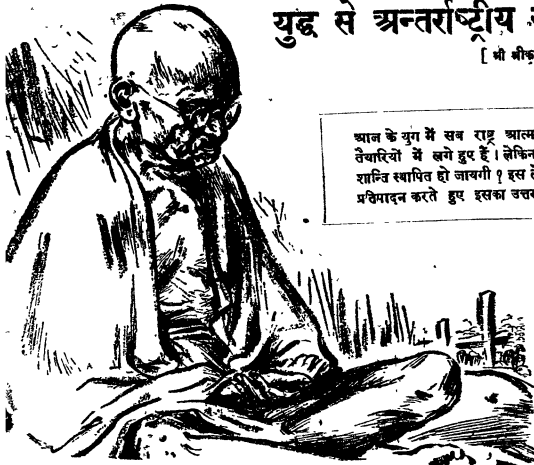
आज के युग में सब राष्ट्र आत्मरक्षा के लिए शस्त्रास्त्रों के संग्रह तथा युद्ध की अन्य तैयारियों में लगे हुए हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इससे संसार में सचमुच शान्ति स्थापित हो जायगी? इस लेख के विद्वान् लेखक ने गांधीजी के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए इसका उत्तर दिया है—नहीं। कैसे, यह इस लेख में पढ़िये।

'पारस्परिक अविश्वास और संघर्ष से आज जगत क्षति-विक्षत है और दूसरा महायुद्ध आसन्न दिखाई पड़ता है।...लोगों की आँखें भारत की ओर लगी हुई हैं क्योंकि शान्ति की उनकी एकमात्र आशा भारत में ही नियोजित है। भारत की शक्ति का स्वरूप मुख्यतः नैतिक और आध्यात्मिक है। यदि भारत विवेक से काम ले और गांधीजी के अहिंसा के सिद्धान्त को अपना ले तो युद्धोन्मुख राष्ट्रों पर उसका अच्छा प्रभाव ही सकता है।

—विनोबा भावे

हमारे बापू, संसार के मसीहा, महात्मा गांधी ने बीसवीं सदी में दुनिया को सत्य और अहिंसा के जो दो संजीवन मन्त्र दिये हैं, उनमें से सार्वजनिक जनान्दोलनों में अहिंसा की गतिशीलता, उसकी अमोघ शक्ति को देख कर सारा संसार चकित रह गया है।

जब महात्मा जी ने राजनीति में अहिंसा का प्रवेश किया तब तो देश में लगभग सभी राजनैतिक नेता और विचारक उसमें अविश्वास रखते थे। लोग उस समय तक अहिंसा में अविश्वास करते रहे जब तक कि १९३१ में गांधी-इरविन समझौते के रूप में उसके सर्वव्यापी चमत्कार को नहीं देख लिया।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि हिंसा मनुष्य की प्राकृतिक और परम्परागत प्रवृत्ति है। यह तो मनुष्य को पशु से विरासत में मिली है। सार्वजनिक तथा राजनैतिक और सामाजिक जीवन में उसका प्रयोग एक मात्र महात्मा गांधी का अपना आविष्कार था।

हिन्दुस्तान में यह हालत हुई कि अहिंसा की आलोचना करने वाले तथा लड़ाकू कौमों तक को बरबस अहिंसात्मक सत्याग्रह से अपने उद्देश्य पूरे करने पड़े। मराठों ने अहिंसात्मक सत्याग्रह किया। सिखों ने गुरुद्वारे के सुधार में अहिंसात्मक सत्याग्रह से ही सफलता पाई। सरहद के पठानों ने भी बादशाह खां की रहनुमाई में अहिंसात्मक सत्याग्रह से ही सरहदी सूबे में शासन सुधार प्राप्त किये। आर्यसमाजियों को भी हैदराबाद में अहिंसात्मक सत्याग्रह की शरण लेनी पड़ी। अहिंसा को शरीयत के खिलाफ बताने वाले मुस्लिम लीडरों को भी लखनऊ में तबर्रा और मदहे सहाबा का निपटारा करने के लिए अहिंसात्मक सत्याग्रह के सिवा दूसरा रास्ता नहीं सूझा; न शियों को और न सुन्नियों को। भारतीय स्वाधीनता संग्राम का तो आधार ही अहिंसा था। लार्ड माउन्टबैटन को १० अगस्त को यह कहना पड़ा कि संसार के इतिहास में अहिंसा द्वारा स्वाधीनता प्राप्त करने का यह पहला उदाहरण है।

सच बात यह है कि बीसवीं सदी में दुनिया भर की पीड़ित जनता के पास अहिंसा के अमोघ अस्त्र के अलावा शासक और शोषकवर्ग तथा सत्ताधारियों का सामना करके अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए और कोई रास्ता नहीं रह गया है। वैज्ञानिक आविष्कारों से सरकारों की, शासकवर्गों की सभी जगह संहारक-शक्ति जनता के मुकाबले में बेतहाशा बढ़ गई है।

इस ताकत की वजह से दुनिया भर में हर मुल्क में जनता के लिए सरकार का मुकाबला करना असंभव हो गया है। जे० एन० जोड नाम के एक पाश्चात्य लेखक ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अब हिंसा द्वारा ताकत हथियाने का सिद्धान्त बिल्कुल बेकार है। कम्युनिस्टों की यह उम्मीद भी बेकार हो गयी है कि फौजें जनता में मिल जायेंगी! लड़ाई का अब आखिरी फैसला वायुयानों के हाथ है और हवाई जहाज में सरकारें बीच के दर्जे के फिरके के लोगों को भरती करती हैं और ये लोग मार्क्सवाद के खिलाफ हैं।

अणुबम की वजह से तो जनता के लिए हिंसा के जरिये सरकार का मुकाबिला करना और भी असंभव हो गया है। अणुबम का मुकाबिला जनता की कोई भी पार्टी हिंसा के जरिये कैसे कर सकती है? विज्ञान की वजह से सरकारों की संहारक शक्ति इतनी ज्यादा बढ़ गई कि जनता के लिए लोकतंत्र की रक्षा करना भी नितान्त असंभव हो गया है।

आज की दुनिया में इसी बेबसी की वजह से शासकों, शोषकों और सत्ताधारियों का मुकाबिला करने के लिये महात्मा जी के बताये हुए अहिंसा के रास्ते के अलावा दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। इसीलिये महात्मा गांधी ही आज सारे संसार के त्राता हैं। दुनिया भर के जन संग्रामों के वे ही एकमात्र सेनानायक हो दुनिया भर के लिये बीसवीं सदी के युग निर्माता थे। जिस तरह से मार्क्सवाद १९ वीं सदी की युगधारा थी, उसी तरह गांधीवाद २० वीं सदी की युगधारा है।

फिर हिंसा से कभी कोई समस्या हल नहीं होती। हिंसा से पाई हुई सफलता और अधिक धोखे की टट्टी साबित होती है। आल्डस हक्स्ले नाम के नामी विद्वान् ने अपनी साध्य साधन "Ends and Means" नामक पुस्तक में लिखा है कि फ्रांस के

लुई राजवंश की हिंसा से फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति की हिंसा पैदा हुई। रूस के जार की हिंसा से बोलशेविकों की हिंसा पैदा हुई। कम्यूनिस्टों की हिंसा से फासिस्टों और नात्सियों की हिंसा पैदा हुई।

१९१४-१८ के प्रथम विश्व युद्ध में हारा हुआ जर्मनी १९३९ में फिर से लड़ने को उठ खड़ा हुआ। और कौन कह सकता है कि आगे और क्या होगा? दूसरा संसार व्यापी युद्ध पूरी तरह खत्म भी नहीं होने पाया था कि तीसरे युद्ध की चर्चा होने लगी और दिन पर दिन बढ़ती जाती है। यानी हिंसा से सिवा सबकी तबाही और बरबादी के किसी को कुछ फायदा नहीं होता है।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि जनता की स्मरण शक्ति बहुत थोड़े वक्त तक रहती है। वह पिछले नुकसान को बहुत जल्दी भूल जाती है। अगर कहीं याद रहे तो वह कभी भूल कर भी हिंसा का और लड़ाई का नाम न ले। लेकिन आदत से मजबूर होने के कारण लोग हिंसा हिंसा चिल्लाने लगते हैं।

पिछली लड़ाई में यह भी देखा गया कि ज्यादा हिंसा से मुकाबिला होने पर सभी हथियार डाल देते थे। चाहे वह अमेरिकन हों या अंग्रेज हों, या फ्रांसीसी हों या रूसी अथवा जर्मन हों या जापानी, लाखों की तादाद में सबके सब हथियार डालते देखे गये हैं। परन्तु महात्मा गांधी के शब्दों में सच्चा सत्याग्रही कभी हथियार नहीं डालता है। वह हमेशा प्रेमिका की तरह मृत्यु का स्वागत और आलिंगन करने को तैयार रहता है। अकेला एक सत्याग्रही भी सारे संसार का सामना करने को तैयार रहता है। उसका आत्मबल अणु बम से भी अधिक शक्तिशाली होता है।

[शेष पृष्ठ ४७ पर]

कहानी—

देश-सेवा

[श्री विष्णु प्रभाकर]

रामकृष्ण अपने देश को प्यार करता था। जबसे उसने होश सम्हाला था, उसने गान्धी को शिखर पर देखा था। उसी को ध्रुव मानकर देश सप्तर्षि की भांति उसके चारों ओर घूमता रहा था। वह सप्तर्षि मण्डल में था अथवा नहीं, इसकी चिन्ता किये बिना वह भी अपनी परिधि पर घूमता रहा। अनेक बार जेल गया, भूख हड़ताल की, लाठियां खाईं, मर मर कर जिया और अब तक जी रहा है। यही नहीं, उसने अपने को कभी हीन नहीं समझा। उसने माना है — वह है और उसके होने का उद्देश्य है। उस उद्देश्य को, अपनी बुद्धि के अनुसार, पूरा करने का प्रयत्न भी वह करता रहा है। वह न अकेला है न आवारा। उसका भरा पूरा परिवार है और उसके लिये परिजनों का महत्व औरों से कुछ अधिक है। समय मिलने पर वह घर जाता है। दादी को तंग करता है, दादा को गालियां सुनाता है, मा को रुलाता है और बाप तथा भाइयों की उस दृष्टि को सहता है, जिसमें घृणा तो नहीं है पर उदासीनता इतनी है कि कभी कभी वह अपने को अपमानित अनुभव करता है। वह उन पर आश्रित नहीं है। सन् तीस के आन्दोलन से पहिले वह एक स्कूल में पढ़ाता रहा है। यही नहीं, उसके विवाह की बात भी प्रायः पक्की हो चुकी थी, परन्तु इससे पहिले वह प्रणय बन्धन में बन्ध जाता, उसने अपने को जेल में पाया और जब सन् चौंतीस में वह बाहिर आया तो न उसे स्कूल वालों ने स्वीकार किया न उसकी भावी पत्नी के परिवार ने। उसका विवाह किसी दूसरे स्कूल मास्टर से हो गया था और रामकृष्ण के जेल से छूटने तक वह नारी जीवन के चरम लक्ष्य पर पहुंच चुकी थी। ये सब बातें उसकी दादी ने उसे सुनाई थीं। रोते रोते वह बोली — तू अगर ठीक रास्ते पर चलता तो आज एक बेटे का बाप होता।

रामकृष्ण ने धीरे से जवाब दिया — दादी! अभी तो मैं ही बच्चा हूं।

हां — दादी सांस खींचकर बोली — मेरे लिये तो तेरा बाप भी बच्चा है, पर इससे क्या तू पैदा ही नहीं होता।

वह क्या जवाब देता? देता भी तो क्या दादी उसे स्वीकार करती। इसलिये ऐसे प्रश्नों को उसने हंसी में उड़ाना सीखा है। कभी दादी की कमर दाबने लगता है, कभी छोटे बच्चों को दादी की सेवा करने का महत्व समझाने लगता है और फिर उसी तरह चुपके से खिसक जाता है जिस तरह वह आया करता है। जब जब कभी आता है मा का स्नेह पिघल कर बहने लगता है। उसे सरलता बड़ी बुरी लगती है। सरलता में आदमी बह जाता है। फिर भी एक दिन देश-सी लगी, जिस दिन वह मा से क्रुद्ध हुआ हो। अभी उस दिन मा जब बहुत दुखी हो रही थी तो उसने कहा — मा! तुमसे बड़ी एक और मा है। वह तुम्हारी और दादी की ही नहीं, सारे देश की मा है। उसकी सेवा भी हमें करनी चाहिये।

मा बोली — रामू! मैं तुझे देश सेवा से नहीं रोकती, पर तू शादी करले।

रामकृष्ण ने जवाब दिया — शादी तो मैं करने आला था, पर वह हुई नहीं। अब तो बस देश के आजाद होने पर ही शादी करूंगा।

यह बात उसने कुछ सोच कर नहीं कही थी। कुछ कहना चाहता था कह गया, फिर उसे कहे की पत्त पड़ गयी और वह शहीद बन गया। परिवार में एक और व्यक्ति था, जो उसे सदा आदर और स्नेह से देखता था। वह उसकी छोटी भाभी थी। वे कभी उससे घर गिरस्ती की बातें नहीं करती थी। एक दिन उन्होंने पूछा — भइया! क्या सचमुच हमारा देश आजाद हो सकता है। रामकृष्ण ने जवाब दिया — एक दिन अवश्य होगा, भाभी।

उन्होंने श्रद्धा से भर कर कहा — गांधीजी सचमुच अवतार हैं। उनके साथी देवता हैं। राम और कृष्ण के साथ भी तो देवता लोग वानर और मानव के रूप में धरती पर जन्मे थे।

रामकृष्ण हंस पड़ा — तो मैं भी देवता हूं।

'क्यों नहीं! तुम तो कोई बड़े देवता हो।'

'बताओ तो कौनसा देवता हूं।'

भाभी हंस पड़ी — तेतीस करोड़ देवता हैं। सबके नाम तो मैं नहीं जानती।

'पर मैं जानता हूं।'

'तो बताओ।'

रामकृष्ण ने धीरे से कहा — भाभी, मैं मनुदेवता का छोटा बेटा हूं।

भाभी अचरज से मुस्कराई — मनु देवता! ऐसा नाम तो मैंने नहीं सुना।

"भाभी! तेतीस करोड़ देवता हैं, तुम क्या सबके नाम जानती हो।"

वे दोनों हंस पड़े। सन् उनतालीस में जब वह फिर जेल में था, तो अचानक एक दिन इन्हीं भाभी का पत्र उसे मिला। लिखा था "कल दादाजी का स्वर्गवास हो गया। अन्तकाल के समय जब वे सबको देख रहे थे, तो अचानक तुम्हारा नाम लेकर कहा — 'बस एक रामू ही नहीं आया। वह असल में हमारा है ही नहीं!' न जाने उनका क्या मतलब था पर उन्होंने ठीक ही कहा था तुम हमारे नहीं हो। सबको इस बात का दुख है। इस दुख के लिये वे तुम्हें कोसते हैं। तुम कहोगे यह उनका मोह है। तुम्हें तुम्हारे काम बुरे नहीं लगते। बुरे तो किसी को भी नहीं लगते, पर फिर भी वे तुम्हारे कारण दुख मानते हैं। यह उनकी गलती है। गांधीजी क्या बुरे आदमी हैं लोग उन्हें महात्मा कहते हैं। तुम उन्हीं की बात मानते हो। फिर हम दुखी नहीं होना चाहिए। हमारा देश आजाद होगा तो घर वाले समझेंगे तुम क्या हो।"

× × ×

और देश आज आजाद हो गया था पर न तो घर वाले उसे ठीक ठीक समझ पाये थे, क्योंकि वे अब उसे विवाह करके घर बसाने की सलाह देते थे न वह स्वयं अपने को समझ रहा था। देश को आजादी मिल गयी थी। पर वह खत विक्षत आजादी थी। स्वयं उसका देश आजादी के अर्थ नहीं जानता था। उसके लिये आजादी का अर्थ था मनमानी करना। वह उनकी छुपी हुई कामनाओं का एक कुरूप तसवीर थी। वे कहते थे— 'अब हमारा राज्य है। हम कहीं भी जा सकते हैं। कुछ भी कर सकते हैं। हम न पुलिस का कहना मानेंगे, न कोई कर देंगे।' पर दुख इतना ही नहीं था। भयंकर नर संहार और नारी के घोर अपमान ने उसे पागल कर दिया था। वह सोचा करता था — 'क्या वास्तव में हम आजादी का मूल्य जानते हैं? क्या सपने कभी समाप्त ही नहीं होगा? क्या हजारों वर्ष की गुलामी से हम मुक्ति पायेंगे?" इन प्रश्नों का उत्तर और भी निराशाजनक था। उसके वे साथी, जो कभी उसके साथ कंधे से कंधा लगा कर लड़े थे, कहते थे — हम अयोग्य हैं हमारी आजादी क्षणभंगुर है। पाकिस्तान शीघ्र ही हमारे देश पर शासन करेगा। अमर का हमारा दुश्मन है। मुसलमान दुनिया में फैले पड़े हैं। हिन्दू सदा गुलाम रहेगा।

यही नहीं। एक बन्धु एक दिन सवेरे सवेरे आये, कहने लगे — अरे रामकृष्ण! तुम ने कुछ सुना?

'क्या।'

'एक लड़की पैदा होते ही बोलने लगी है।'

'सच!'

'हां! कहती है मैं रक्त की प्यासी हूं, मुझे रक्त चाहिये!'

रामकृष्ण ने उस मित्र को देखा।

लेखक

वे मजाक नहीं कर रहे थे। उसे दुख हुआ कैसी पराजित मनोवृत्ति है! उसने तीव्र होकर कहा — वह लड़की रक्त पीने आई है पिये, पर इसी कारण देश को अपना रक्त नहीं सुखा देना चाहिए।

इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि वह कुछ करने को आतुर हो उठा। इन दिनों शरणार्थी बच्चों के लिए राज्य ने एक अपील निकाली थी। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था और वे लोग चाहते थे देश के भावी नागरिक परिवार के स्नेह में पलें। रामकृष्ण ने उन बच्चों को देखा। वे उसे बड़े दयनीय लगे। उनमें कुछ निश्चिन्त थे, कुछ अल्हड़। कुछ थे जो रोते रहते थे, उनकी आंखें सूज गई थीं और शरीर सूखता जा रहा था। वे दान के कपड़ों में अजायब घर के पुतलों की तरह लगते थे। तभी उसकी दृष्टि एक लड़की पर पड़ी। वह चुपचाप एक कोने में बैठी थी। वह साधारण लड़की थी परन्तु उसकी आंखें बड़ी आकर्षक थीं। आंखें रामकृष्ण की कमजोर हैं। वह आंखें देख कर किसी के बारे में अपनी धारणा बना लेता है। लड़की को देख कर उसने सोचा — निस्सन्देह इसके मा बाप भले आदमी रहे होंगे। अब शायद वे इस लोक में नहीं रहे। उनके स्नेह के अभाव में यह बच्ची मुरझा कर गिर जायेगी। जीती भी रही तो उसमें जीवन का अभाव रहेगा। वह सदा मुर्दा रहेगा

वह कांप उठा। उसने वहां से भाग जाना चाहा, पर हुआ यह, वह कैम्प इन्चार्ज के पास गया और उस लड़की को अपने घर ले आया। जैसे उसका सूना जीवन एक मधुर स्वर से गूंज उठा, एक मधुर बन्धन ने उसे चारों ओर से जकड़ लिया। उसने बच्ची से पूछा — तुम्हारा नाम क्या है?

उसकी ओर देख कर वह बोली— राज।

'बड़ा प्यारा नाम है, राजरानी।'

राज, तुम्हारे पिता क्या करते थे।

'स्कूल में पढ़ाते थे।'

'और मा।'

'हां, मेरी मा भी।'

रामकृष्ण हंस पड़ा, तुम्हारी मां स्कूल नहीं जाती थी।

राजकुमारी उसे देख कर बोली—नहीं तो। मा स्कूल नहीं जाती थी।

रामकृष्ण कहानी को दोहराना नहीं चाहता था। फिर भी उसने पूछा – और राज। तुम्हारे बाबू जी कहा गये।

'मा कहती थी उन्हें मुसलमानों ने मार डाला। मुसलमानों ने बहुत सारे आदमी मार डाले थे ...

कहते २ लड़की के मुख पर अजीब अजीब भाव आये और गये। उसकी आखें डर और खौफ से भर उठीं। उसका बदन कांपने लगा। लगा, वह चिल्ला उठेगी। रामकृष्ण ने उसे गोद में उठा लिया। सोचा उधर मुसलमान बच्चे भी यही कहानी कहते होंगे। क्या होगा इन मासूम बच्चों का। कैसे भूलेंगे वे इस दर्दनाक कहानी को।

तब वह राज को उसी वक्त बाजार ले गया। बहुत देर लिये फिरा। काफी देर में चाय पिलायी, पार्क में घुमाया फिर सिनेमा दिखा कर रात को घर लौटा। उसने उसे अपनी ही खाट पर सुलाया। उसे बड़ा अजीब सा लगा। वह सो गयी तो देर तक बैठा हुआ उसे देखता रहा, सोचता रहा—क्या मैं इसे मा बाप का स्नेह दे सकूंगा। क्यों हम दूसरों के बच्चों को इतना प्यार नहीं करते जितना अपनों को करते हैं। क्या इसमें अधिकार की भावना नहीं है।..कि राज चौंक कर उठी—बाबू जी, बाबू जी, वे मुझे मार रहे हैं।

उसने धीरे धीरे राज को थपथपाया, कहा—यहां कोई नहीं है, राज।

राज चुप हो गयी। रामकृष्ण फिर सोचने लगा। राज फिर चौंकी, कांपती रही। रामकृष्ण उस रात सो नहीं सका। सवेरे उठ कर सबसे पहिला काम उसने यह किया कि छोटी भाभी को पत्र लिखा। सारी कहानी बता कर उसने लिखा—'परन्तु प्रश्न इनका इतना नहीं है जितना अनाथ नारियों और बच्चों का है। ये बच्चे जो देश के भावी नागरिक हैं, इन की रक्षा करना हमारा पहिला कर्त्तव्य है। कौन जाने इन्हीं में कोई 'भावी बोस, रमन, गांधी, टैगोर या नेहरू छिपा हुआ हो। देश इनके प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं करेगा तो उन पर अधिकार कैसे जतावेगा। मैं जानता हूं, यह राज्य का काम है, पर वह हमारा राज्य अभी नवजात शिशु है। वह स्वयं रक्षा की अपेक्षा करता है। वह हमसे बना है। हम उसकी इकाई हैं। मैं भी हूं। मैं एक अनाथ बच्चे को ले आया हूं पर मैं क्या उसे मा का स्नेह दे सकूंगा, क्या वह यहां अपनी दुनिया को पा सकेगी। तब क्या तुम उसे अपने पास नहीं रख सकोगी। वहां वहां बच्चे हैं और बच्चों में रह कर वह कड़वी याद को भूल जावेगी......।'

पत्र का जवाब वापिसी डाक से मिला। उसके भाई ने लिखा था—तुम्हारी भाभी प्रसूति गृह में है। घर में एक लड़की पहिले ही बढ़ गयी है, दूसरी के लिये जगह नहीं है।'

पढ़ कर रामकृष्ण को लगा, उसने पत्र लिख कर भाभी के प्रति अनजाने ही एक अपराध किया है। घर वालों से विद्रोह करने की शक्ति उसमें नहीं थी। करती भी तो उसे सन्देह की दृष्टि से देखा जाता। आगे जो कुछ मन में आया, उसने उसे झंझोड़ कर रख दिया, पर उसने लड़की को लौटाया नहीं। वह उन दिनों एक अखबार में काम करता था। दफ्तर जाता तो राज को साथ ले जाता, साथ ही ले आता। उसे लेकर घूमने जाता, सिनेमा देखता, बोटिंग करता और रात को बैठ कर कहानियां सुनाता। एक दिन सोचा—क्यों न इसे हैप्पी स्कूल में दाखिल कर दूं पर कुल चार पांच माह की बात थी। दो माह बीत चुके थे। अप्रैल में वह उसे फिर राज्य को सौंप आयेगा। वह फिर किसी शिशु गृह में जाकर रहेगी और वहीं से एक दिन इसकी मा, यदि वह जिन्दा है, इसे आकर ले जावेगी। तब राम कृष्ण का मन भर आया। उसे जान पड़ा वह राज को प्रेम करने लगा है। प्रेम—वह कांपा—यह राज को प्रेम करता है तो यह दुख क्यों। दुख तो पूंजी में है और प्रेम पूंजी सहेजता नहीं बांटता है। यह सब दार्शनिक व्याख्यायें थीं। बात यह थी वह राज को स्नेह करने लगा था और उसे छोड़ते उसे दुख होता था।

× × ×

एक दिन डाकिये ने रामकृष्ण को पत्र दिये। एक पत्र अनाथ बच्चों के संरक्षण गृह से आया। उसने शीघ्रता से खोल कर उसे पढ़ा, लिखा था—'राज की मा का पता लग गया है। गुण्डे उसे भगा कर ले गये थे। वह अभी अभी पाकिस्तान अधिकारियों द्वारा अमृतसर पहुंचायी गयी है। वह यहां आने वाली है, इस लिये आप राज को कैम्प में छोड़ जावें। आपने अब तक उसे अपने पास रखा है। इसके लिये हम आपके कृतज्ञ हैं आपने.....।'

रामकृष्ण ने आगे नहीं पढ़ा, उसका मन सहसा एक अनीवर्चनीय करुणा से भीग उठा। वह खोया खोया अन्दर आया। वह दूसरा पत्र खोलना तक

झुक गया। राज तब खाना खा रही थी। क्षण भर एक टक उसे देख कर वह बोला—क्यों राज। तुम अपनी मां के पास चलोगी।

राज ने सहसा उसे देखा, फिर बोली—हां।

रामकृष्ण के दिल को धक्का लगा, पर तभी राज फिर बोली—तुम भी चलोगे।

'नहीं।'

'क्यों।'

'मैं यहीं रहूंगा।'

'तो मैं भी रहूंगी। मा को यहीं बुला लाओ'

रामकृष्ण ने राज को उठा कर छाती से लगा लिया, फिर उसका सामान बटोरने लगा। उसके वस्त्र, जूते, रिबिन, खिलौने, किताबें सभी उसने एकत्रित किये। एक ढेर लग गया। उसे स्वयं आश्चर्य होने लगा — इतना सामान!

कैम्प इन्चार्ज ने भी जब वह सब सामान देखा तो बोला – क्या यह सब राज का ही है!

'जी हां।'

'तुम्हारा और बच्चा नहीं है।'

'जी नहीं।'

'तभी तुम्हारी बीवी राज को इतना स्नेह करने लगी है।'

जी, मेरी बीवी नहीं है। मैं अकेला हूं।

'क्या ' कैम्प इन्चार्ज ने राम कृष्ण को आश्चर्य से देखा वह हंस रहा था, परन्तु यदि वह दिल देख पाता तो देखता उसका दिल लावे की तरह पिघल रहा है। इन्चार्ज ने कहा— मिस्टर रामकृष्ण। तुम बहुत अच्छे आदमी हो, बहुत अच्छे।

रामकृष्ण ने पूछा — राज की मा कब तक लौटेगी।

'आज ही तो आ रही है, पर एक समस्या उपस्थित हो गयी है। बेचारी गर्भवती है। पति के घर वालों का कुछ पता नहीं। मा बाप ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।'

'तो उसका क्या होगा।'

'होगा क्या, स्त्रीगृह में रहेगी। राज को इसीलिये बुला लिया है दिल बहला रहेगा, मिस्टर रामकृष्ण। सब से अधिक कष्ट इन अभागी नारियों को उठाना पड़ा। ये जब तक अपने पैरों पर खड़ी होना नहीं सीखेंगी, तब तक देश का कल्याण होने वाला नहीं है।'

रामकृष्ण बहस नहीं करना चाहता था। उसने शीघ्रता से इन्चार्ज का समर्थन किया और राज की ओर मुड़ा। वह दूसरे बच्चे के साथ खेल में व्यस्त हो गयी थी। उसी को पुकार कर उसने कहा—राज तुम खेल रही हो। मैं तुम्हारी मां को बुला लाता हूं। तुम यहीं रहना।

राज बोली — नहीं। मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।

'नहीं राज, बड़ी भीड़ है। बहुत भीड़ है। तुम यहीं ठहरो। मैं अभी आया।'

राज का मन बहुत दुखी हुआ, पर बच्चों को अपने कपड़े और खिलौने दिखाने का लोभ भी वह सम्वरण नहीं कर सकी बोली – जल्दी आना अच्छा।

रामकृष्ण ने दृढ़ता से कहा – अभी आता हूं।

वह लौट आया और उसने दृढ़ निश्चय कर लिया, वह फिर कभी उधर नहीं आवेगा। उसके जीवन का

तुम्हें साथ लेकर मैं देश की अधिक सेवा कर सकूंगा।

एक और अध्याय समाप्त हो गया था। नहीं जानता था दूसरे अध्याय में क्या है। उसके सामने बहुत प्रोग्राम थे। वह अपने राष्ट्र की शक्ति का बल देखना चाहता था और वह मानता था कि उसे आन्तरिक शत्रुओं का भय है। इसलिये वर्ग और वर्गहीन राष्ट्र के स्वप्न देखता था। उसके सामने साम्प्रदायिक समस्या मजदूर वर्ग का संगठन और सब से बढ़ निराश्रित दुखी परिवारों की समस्या थी। पर ठीक ठीक निश्चय नहीं कर पा रहा था। एक बार मन से उठा — क्यों न विवाह करके नये जीवन का आरम्भ करूं। अब तो देश आजाद हो चुका है। वास्तव में यह बात उसके साथी ने कही थी। उसने बयान दिया था — 'देश के आजाद होने पर तो देशभक्तों का दायित्व और भी बढ़ गया है।

मित्र बोले — निस्सन्देह वह बढ़ गया है। इसीलिये तुम्हें पत्नी की सहायता की आवश्यकता है। उसे मित्र की बात में बल दिखाई दिया, पर वह कुछ निर्णय करे कि तभी राज ने उसके जीवन में प्रवेश किया। वह कई महीने तक उस घर रही पर तु जब चली गयी तो जीवन पहिले से भी अधिक सूना लगने लगा। उसको करने के लिये उसका अन्तमन व्याकुल हो उठा, परन्तु इससे पहिले वह कुछ सोचे राज एक बार फिर उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। वह म कर उठा ही था कि उसने सुना कोई उसे पुकार रहा है वह उस स्वर को पहिचानता था। वह राज का स्वर था। वह घबरा कर उठा तो राज भाग आयी।

उसने किवाड़ खोले देखा— सामने राज है और और एक नारी है। नारी जो नारीत्व की आभा से रहित है मात्र नारी का स्वरूप है, परन्तु उसके विकृत होकर भी नेत्रों में आकर्षण है और उस आकर्षण में वह पीड़ा है जो घन की तरह चोट नहीं करती बल्कि छुरी की तरह काटती है।

रामकृष्ण ने पूछा — आप की मा हैं।

नारी मूर्ति ने कहा — ह ।

'आइये।

वह बोली — आकर क्या करूंगी। कहने आई थी कि राज को अपने पास ही रखलें।

हठात रामकृष्ण ने उस ...

थी ।

तभी सहसा राज बोल उठी – आप कहां चले गये थे। फिर नहीं आये।

वह मुस्कराया तुम्हारी मा आ गयी।

हा -- उसने मा को देखा। पर तुम क्यों नहीं आये।

तभी मा ने कहा — मैं आई नहीं थी, बुलायी गई थी। मेरी पुरानी दुनिया किस तरह बरबाद हुई वह आप जानते हैं। उसके बाद मैं एक नई दुनिया में पहुच गई। वह कैसी भी थी, मेरे लिए दुनिया थी। वहीं से खींच कर इन लोगों ने मुझे फिर से नरक में डाल दिया है। पुरानी दुनिया क्या अब लौटने वाली है। अपमान, घृणा, अनादर तिरस्कार और बेबसी यही सब यहा हैं। इन्हें लेकर क्या करूं? मैं नारी हूं, मैं हिन्दू मुसलमान की बात नहीं जानती ..

कांप कर रामकृष्ण ने कहा—अन्दर आ जाइये।

नहीं — उस नारी ने दृढ़ता से कहा — आपको कलंकित करू यह मुझ से नहीं होगा। मैं भी अपनी इच्छा से लौट जाना चाहती हू। राज ने मुझे आपके बारे में बहुत कुछ बताया है। मै चाहती हूं आप इसे अपने साथ रख लें। आपका स्नेह पाकर यह भी उठेगी।

पर रामकृष्ण तो तब उसकी बात नहीं सुन रहा था। वह उसे देख रहा था कि वह मात्र खिलौना है। मनुष्य रूपी बच्चे उससे खेलते हैं। उसको लेकर आपस में छीना झपटी करते हैं पर... वह चौंका — इस खिलौने में जीवन है सौन्दर्य है ..... इसलिए तो वह अधिक आकर्षक है, अधिक झगड़े का कारण है .. ।

उसने गरदन को जोर से झटका दिया, बोला — आप एक बार अन्दर आ जाइये, फिर आप कहीं भी जा सकती हैं।

और उसने राज को गोदी में उठा लिया। बरबस नारी के कदम उठे। वह रामकृष्ण के पीछे पीछे अन्दर आ गई। तभी एक तांगा आकर वहा रुक गया।

रामकृष्ण मुड़ा, देखा — छोटे भइया और भाभी आये हैं।

वह मुस्कराया —भाभी आप।

हा मैं ही हूं - भाभी बोली — स्टेशन पर भी नहीं आये।

स्टेशन — वह चकित विस्मित बोला - मुझे क्या तुम्हारे आने का क्या पता था।

'चिट्ठी नहीं मिली ?'

नहीं तो — वह कांपा। उसे याद आया कल जो दूसरा लिफाफा था, वही तो नहीं था।

भाभी तब अन्दर आ गई थी भइया भी पीछे पीछे थे। राज की ओर देख कर भाभी बोली - तो यह राज है ? बड़ी प्यारी बच्ची है।

जी हा।'

और तभी उनकी दृष्टि उस नारी पर जा पड़ी। वे अचकचाई और बे ?

रामकृष्ण ने उसी तरह कहा — ये राज की दुखिया मा है।

जैसे भूचाल उठा। धरती कांपने लगी। भाई ने आगे बढ़ कर यह कहा— तो यह बात है।

तब क्रोध से उनका चेहरा तमतमा उठा था। वे कांप रहे थे। वे पत्नी की ओर मुड़े और बोले - चलो, इसी वक्त चलो। हम अभी लौटेंगे।

सुनो तो — भयातुर कम्पित भाभी ने कहना चाहा।

'नहीं, एक क्षण नहीं। तुम्हें इसी क्षण चलना होगा। मुझे क्या मालूम था करुणा इतनी गहरी है। इसने कुल को कलंकित किया है। हम इससे कोई वास्ता नहीं रख सकते।

भाभी रुक नहीं सकी। उन्होंने दयनीय दृष्टि से रामकृष्ण को देखा फिर पति के पीछे घिसटती सी चली गई। चली गई तोफिर रामकृष्ण को होश आया वह ठहाका मार कर हस पड़ा। उसने सकपकाई घबराई उस नारी से कहा — बैठिये। अब हम बातें करेंगे, भइया ने कहा — मैंने आपसे शादी कर ली है। सुझाव कुछ बुरा नहीं है। तुम्हें साथ लेकर मैं देश की अधिक सेवा कर सकूंगा।

नारी और भी सकपकाई बोली— आप .... आप क्या कह रहे हैं।

———

हमारी विदेशी नीति का आधार क्या हो ?

[श्री शान्तिप्रसाद वर्मा]

विदेशी शासन में भारत की विदेशी नीति का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व न था। ब्रिटेन की अन्तर्राष्ट्रीय नीति ही भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति थी। स्वाधीन होने के बाद भारत को स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय नीति का निर्माण करना पड़ा है। इस मार्ग में हमारे सामने कौनसी बाधाएं हैं, यह बताते हुए योग्य लेखक ने इस दिशा की तीन विभिन्न विचारधाराओं का विवेचन किया है और अपने सुझाव रखे हैं।

भारत की विदेशी नीति-के निर्माता

पं० जवाहरलाल नेहरू

हमारी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

यह हमारे सौभाग्य की बात थी कि १५ अगस्त १९४७ को जब हमें आजादी मिली, तब संसार के छोटे बड़े सभी देशों की सहानुभूति हमारे साथ थी। चीन और अमरीका तो उन दिनों भी, जब हम अंग्रेजी साम्राज्य से एक बड़े संघर्ष में व्यस्त थे, हमें अपना नैतिक समर्थन दे रहे थे। रूस का प्रत्यक्ष समर्थन हमारी आजादी की लड़ाई के साथ था ही। जिन साधनों से हमने ब्रिटेन के विरुद्ध संघर्ष किया और जिन परिस्थितियों में और जिस कुशलता से उसने हमारे साथ समझौता किया, उससे ब्रिटेन के साथ भी हमारे सम्बन्ध अच्छे हो गए थे। दूसरी ओर अन्य सभी देशों के प्रति हमारे मन में भी आदर, मित्रता और सहानुभूति का भाव था। चीन के साथ इसलिए कि वह हमारा पड़ोसी और एशियायी है, रूस के साथ इस लिए कि उसने एक महान् जन-क्रांति को जन्म दिया है और एक शानदार ढंग से वह अपनी व्यवस्था चला रहा है, और ब्रिटेन और अमेरिका से इसलिए कि जनतंत्र की सामान्य भावनाएं इन दोनों के साथ हमारा पिछली एक शताब्दी का आत्मिक सम्बन्ध स्थापित कर चुकी थीं। इसके अतिरिक्त जिस महान् व्यक्ति का प्रभाव हमारी राजनीति पर ही नहीं, जीवन के सभी क्षेत्रों पर पूर्ण रूप से व्यक्त था, वह तो हमें सभी देशों से सम्मान और मित्रता रखने की शिक्षा देता रहा। महात्मा गांधी ने जहां हमें आजादी दिलायी वहां अपने महान् व्यक्तिगत प्रभाव के द्वारा हमें सभी देशों के आदर और सद्भावना का पात्र भी बनाया। हमारी विदेशी नीति के विकास में सबसे बड़ा भाग जिस व्यक्ति का रहा है, वह पं० जवाहरलाल नेहरू हैं। जवाहरलाल नेहरू भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रगण्य नेता होते हुए भी अपनी विचारधारा से संपूर्णतः अन्तर्राष्ट्रीय रहे हैं। जहां तक उनके दृष्टिकोण का सम्बन्ध है, उन पर अंग्रेजी संस्कारों की गहरी छाप है और हैरो एवं कैम्ब्रिज में दी जाने वाली शिक्षा का उनके व्यक्तित्व के निर्माण पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। अंग्रेजों के प्रति जवाहरलाल के मन में कभी कड़वाहट नहीं आ सकी है और हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि वह किसी बड़े संघर्ष में हिन्दुस्तान का ब्रिटेन और अमरीका के खिलाफ खड़ा होना पसंद करेंगे। दूसरी ओर रूस के प्रति भी जवाहरलाल नेहरू का बड़ा आकर्षण रहा है। रूस की क्रान्ति के प्रति उनके मनमें श्रद्धा की भावना है और रूस की जनता ने फासिज्म को नष्ट करने में जो बड़ा भाग लिया है, जवाहरलाल उससे भी प्रभावित हैं। रूसी साम्यवाद में उनका विश्वास कुछ कम होता जारहा है, पर समाजवाद के वे कट्टर समर्थक हैं। जवाहरलाल चाहते हैं कि रूस से हमारे सम्बन्ध अच्छे से अच्छे रहें।

इन बड़े देशों से जहां जवाहरलाल प्रभावित हैं, वहां छोटे देशों, और विशेष कर एशिया के उन गुलाम देशों के साथ जो योरोपीय साम्राज्यवाद से छुटकारा पाने का प्रयत्न कर रहे हैं उनकी विशेष सहानुभूति है। हिन्देशिया, हिन्द चीन, मलाया, बर्मा, लंका सभी देशों की जनता उन्हें वैसे ही आदर की दृष्टि से देखती है, जैसे अपने राष्ट्रीय नेताओं को। चीन के प्रमुख कर्णधारों से तो जवाहरलाल का कुटुंबियों का सा संबन्ध है। सभी एशियायी देशों से निकटतम संबन्ध स्थापित करने की दिशा में मार्च १९४७ में दिल्ली में आयोजित एशियायी सम्मेलन एक बड़ा और सफल प्रयत्न था।

प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रवृत्तियां

परन्तु राजनीति में अपनी अभीप्सित इच्छाओं को पूरा करना सरल नहीं होता। जहां हम सभी देशों से अच्छे संबन्ध स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हैं, हम यह भी देख रहे हैं कि दुनिया तेजी से दो गुटों में बटती जा रही है। एक ओर से अमरीका और दूसरी ओर से रूस दोनों ही अपने प्रभाव-क्षेत्रों को अधिक से अधिक व्यापक बना लेने की सतत चेष्टाओं में लगे हुए हैं। अमरीका रूस के आस पास, एक ओर पश्चिमी यूरोप से यूनान और टर्की तक, दूसरी ओर समस्त अरब-देशों और तीसरी ओर चीन में तेजी से अपने आर्थिक साम्राज्यवाद के द्वारा फौलादी दीवार खड़ी कर देने के प्रयत्न में है और दूसरी ओर रूस इस चहारदीवारी को तोड़ कर एक ओर पोलैण्ड और चैकोस्लावाकिया से जर्मनी तक, दूसरी ओर अरब देशों में और तीसरी ओर चीन के पूर्वी समुद्री-तट तक अपना प्रभाव स्थापित कर लेना चाहता है।

ऐसी परिस्थितिमें प्रत्येक देशके लिए यह निश्चय कर लेना जरूरी हो गया है कि वह अमरीका का साथ देगा या रूस के पीछे पीछे चलेगा। हमें यह सोचना होगा कि क्या हमारे लिए यह सम्भव हो सकेगा कि हम इन दो परस्पर विरोधी नावों पर एक साथ खड़े होकर किसी स्पष्ट लक्ष्य तक पहुंचने में सफल हो सकेंगे। ब्रिटेन ने इस प्रकार का प्रयत्न किया था। मजदूर दल ने शक्ति प्राप्त करने के बाद यह चाहा था कि वह रूस से अपने सम्बन्ध सुधार ले, जो अनुदार दल के हाथों में देश का शासन होने के समय बिगड़ चले थे, और अमरीका प भी बिल्कुल ही निर्भर रहने की स्थिति में न रहे। इसी विचार से उसने एः तो पश्चिमी यूरोप के देशों से अपः सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाना चाहा औ दूसरी ओर अपने प्राचीन देशों को स्वा धीनता आदि प्रदान करके उनका सहयो प्राप्त करना चाहा, परन्तु परिस्थितियों बहुत जल्दी उसे रूस से खिंचने औ अमरीका के आश्रय में जाने पर विवश कर दिया। चीन अपने को जितना स्वतन्त्र रखने का प्रयत्न कर रहा है, व

एक दोहरी गुलामी और जम्मे फेलते हुए गृह-युद्ध में फंसता जा रहा है। हिन्दुस्तान ने भी अपनी सब से भाईचारा स्थापित करने की नीति से कोई लाभ नहीं उठाया है। आजादी मिलने से पहले रूस की हमारे साथ बड़ी घनिष्ठ सहानुभूति थी, परन्तु हमने जब ब्रिटेन के सुझाए हुए देश के बटवारे के प्रस्ताव को मान लिया और उसके प्रति अपनी मैत्री की भावना प्रदर्शित करने के लिए लार्ड माउण्टबेटन को अपना पहिला गवर्नर जनरल नियुक्त किया तो रूस को यह विश्वास हो गया कि हम अमरीका के डालर साम्राज्यवाद में फस गए हैं और हमारा लक्ष्य अंग्रेजी कामनवेल्थ के अन्तर्गत एक उपनिवेश का दर्जा प्राप्त कर लेना मात्र है, तो वह हमारे प्रति उदासीन हो गया। दूसरी ओर ब्रिटेन और अमरीका ने संयुक्त राष्ट्र परिषद् में जब हमारे प्रतिनिधि को एक छोटे बच्चे के समान उनकी अंगुली पकड़ कर चलते हुए नहीं देखा और हमें कई अवसरों पर रूस और यूक्रेन जैसे खतरनाक देशों का साथ देते हुए भी पाया तो उन्होंने हमारे प्रति अपने रहे सहे विश्वास को भी खो दिया और हमारी गिनती अविश्वसनीय देशों में करने लगे। उधर पश्चिमी यूरोप के देशों में, विशेष कर मार्च १९४७ के बाद से, यह धारणा तेजी के साथ फैलने लगी थी कि पूर्व में जवाहरलाल नाम के एक ऐसे धूमकेतु का उदय हुआ है जो उनमें एशियायी साम्राज्यों को खतम करके इन देशों का नेतृत्व अपने हाथ में ले लेना चाहता है। रूस की उदासीनता, अमरीका के अविश्वास और पश्चिमी यूरोप के विरोध का एक अच्छा प्रदर्शन काश्मीर के मामले में हुआ, जब हम एक बहुत सीधी सादी प्रार्थना लेकर सुरक्षा परिषद् के सामने उपस्थित हुए थे कि पाकिस्तान को काश्मीर के आक्रमण में सहायता देने से रोका जाए, और पाकिस्तान के सुझाव पर उसने हमारे सामने अनर्गल और अर्थहीन प्रस्ताव रखे, जिनमें कहा गया था कि हम काश्मीर से अपनी फौजें हटालें (और कबायलियों व पाकिस्तानियों को काश्मीर की सुन्दरी घाटी को लूटने, काश्मीर की स्त्रियों पर बलात्कार करने और काश्मीरी हिंदुओं का धर्म नष्ट करने की पूरी आज्ञा दे दें) और शेख अब्दुल्ला के राज्य में वहां जिस शासन प्रबन्ध की स्थापना की जा चुकी है उसे भी अपने हाथों तोड़ दें। शक्ति की राजनीति में हम पहिला बार पड़े थे और यह मानना पड़ेगा कि उसमें हम बुरी तरह असफल रहे।

तीन मार्ग

विदेशी नीति के सम्बन्ध में जो विचार सामने रखे जाते हैं उन्हें हम तीन धाराओं में बाट सकते हैं। पहिली विचार-धारा के अनुसार तो हमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सभी प्रश्नों पर ब्रिटेन और अमरीका का मुक्त हृदय से साथ देना चाहिए। ब्रिटेन से हमारे बहुत पुराने सम्बन्ध रहे हैं। उसमें जनतन्त्र-सम्बन्धी हमारे विचारों के निर्माण में और उन्हें कार्यान्वित करने के प्रयत्नों में हमें सदैव सहायता पहुंचाई है, और यदि उसके पीछे हमारी बहुत सी शिकायतें थी भी तो जिस ढंग से उसने हमारी आजादी को मान लिया है, इसे देखते हुए हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उसका साथ दें। ब्रिटेन के साथ देने का अर्थ है अमरीका का साथ देना। इस देश में हम एक बड़े औद्योगीकरण के युग के प्रवेश द्वार पर हैं। औद्योगीकरण में हमें ब्रिटेन और अमरीका से बहुत सी मशीनरी खरीदनी होगी और विशेषज्ञ मंगवाने होंगे, जिसके परिणामस्वरूप एक लम्बे अर्से तक हमारी अर्थनीति का ब्रिटेन और अमरीका की अर्थनीति से घनिष्ठ सम्बन्ध रहेगा। इन सब बातों को देखते हुए यह तर्कसम्मत दिखाई देता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हमें ब्रिटेन और अमरीका का ही समर्थन करना चाहिए। साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना है कि आज तानाशाही के चारों ओर से बढ़ते हुए प्रभाव में ब्रिटेन और अमरीका ही ऐसे देश हैं, जिन जनतन्त्र के प्रभावपूर्ण समर्थन की अपेक्षा की जा सकती है। पर इसके साथ कुछ और भी प्रश्न हैं, जिन्हें हम दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते। यदि हम अंग्रेजी कोमनवेल्थ में शामिल हुए तो क्या हम अपनी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को वैसा ही बनाये रख सकेंगे जैसा हम पूर्ण स्वाधीनता की स्थिति में उसे बनाना चाहते हैं? और इससे भी बड़ा प्रश्न तो यह है कि क्या यह सच है कि ब्रिटेन और अमरीका हमारी मित्रता को खोना नहीं चाहते, क्या आज उन्हें सचमुच हमारी बहुत बड़ी आवश्यकता रह गई है?—राजनीति में मित्रता तो अधिकतर उपयोगिता पर ही निर्भर रहती है? क्या ब्रिटेन ने हमें आजादी इसीलिए नहीं दी कि उसकी दृष्टि से अब हमारा अधिक आर्थिक उपयोग नहीं रह गया था? ब्रिटेन और अमरीका की सब से बड़ी उत्सुकता आज तो अरब के मुसलमान देशों में अपना आर्थिक साम्राज्यवाद फैलाने की है, जो राजनैतिक चेतना की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। इन अरब देशों में पूंजी लगाने और व्यापार फैलाने की दृष्टि से भी हमारे और अंग्रेजी भाषा भाषी देश के बीच में काफी मतभेद उपस्थित हो सकता है। इन देशों और विशेष कर पाकिस्तान के प्रति हमारे सम्बन्ध की दृष्टि से मतभेद के और भी अनेकों अवसर आ सकते हैं, यह भी निश्चित है कि इन मतभेदों में ब्रिटेन और अमरीका अपने स्वार्थों अथवा

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

पाकिस्तान व भारत की सीमा पर एक दृष्टि

लेखक

डा० रघुवीर एम० ए०

अफरीदिस्तान के कर्नल लारेंस के ये शब्द हैं:— "हमें पिछले दो सहस्र वर्षों के कटु उदाहरण ज्ञात हैं; तथापि युद्ध की घड़ियों में हम जिस अवज्ञा से युद्ध करते हैं, वह तो हमें निरुत्तर कर देती है।"

हमें भी पाकिस्तान की सीमा पर एक दृष्टि डाल कर देखना चाहिए कि इस सीमा पर कहां २ आक्रमण किया जा सकता है और उसकी रक्षा किस तरह की जाती है।

हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि हमारी सरकार हिंद पाकिस्तान सीमाओं के लिए सेनादलों के दस अतिरिक्त जत्थों का निर्माण कर सैनिक शक्ति को बढ़ा रही है और छोटी सैनिक शक्ति तो केवल शत्रुओं की हल-चलों की सूचना मात्र दे सकती है। इससे अधिक इन से आशा नहीं रखी जा सकती। केवल उन पर निर्भर तो कदापि नहीं रहा जा सकता, चाहे युद्ध-भय इतना गंभीर न समझा जाय। दक्षता के साथ सतर्क रहने के लिए सेना ही अत्युपयुक्त कही जा सकती है। शत्रु सेना सैनिक भेष में कूच नहीं करेगी। सम्भवतः वे सैनिक समीपवर्ती देहाती ही होंगे, जिन्हें आवश्यक सैनिक शिक्षण दिया गया होगा। नियमित सैनिकों को भी सम्भवतः भारतीय सीमान्त सामान्य जन-भेष में रखा जायगा, ताकि हमारे सैनिक तब तक उन्हें पहचान न पायें, जब तक कि वे पराजित एवं परवश न हो जायं।

[१] उत्तर-पश्चिमीय सीमाप्रांत

(अ) लखपत से सुरचन्द तक की दो सौ मील लम्बी सीमान्त भूमि रेखा घोर दलदली है, एतदर्थ इस स्थूल गणना के लिए यह छोड़ी जा सकती है।

(आ) सुरचन्द से अनूपगढ़ तक का भाग नगण्य आवागमन के साधनों एवं क्षीण जनसंख्या से युक्त होते हुए मरुस्थल है। यह भाग सामरिक हलचलों के लिए उपयुक्त नहीं है, अतएव सामान्य दृष्टि से रक्षित रखा जा सकता है। रक्षित बस्तियों की शृंखला के साथ २ चल सैनिकों की एक टुकड़ी का सीमान्त रेखा पर रखा जाना पर्याप्त होगा। सामान्य संरक्षण की दृष्टि से भी यह ५०० मील लम्बा भाग नियमित सैनिकों की संख्या के बड़े भाग का उपयोग चाहेगा; अतएव एक अनियमित सैनिक सगठन आवश्यक एवं उपयोगी सिद्ध होगा। गत महासमर में अत्यन्त सामान्य संरक्षित स्थान रूस के सीमान्त प्रदेशों के थे, जहा प्रति दस मील पर सेना की एक टुकड़ी रखी गई थी। यह लगभग प्रति मील १७०० से १८०० पुरुषों के हिसाब से हुआ। हमें केवल निरा अनुकरण ही तो नहीं करना है और न केवल हमें उन अनुभवों का उपयोग करने तक ही सीमित रखना है। हमें यह न भूलना चाहिये कि रूस-जर्मनी की सीमा, दोनों ओर सेना होते हुए भी कभी २ रूसी सैनिक आक्रमण का आघात सहने में सफल नहीं रही। कारण यही था कि शत्रुदल अत्यधिक यंत्र-सज्जित, दक्ष, सुसंगठित एवं शिक्षण-प्राप्त तथा ऐसे उत्तम ढंग से संचालित था कि वह कई बार सफलता से रूस का सीमोल्लंघन कर सका। भारत के युद्ध-मोर्चे भी उतने ही बहु-संख्यक होंगे; संवाद-साधन भी रूसी सीमान्त क्षेत्रों से अधिक ही होंगे तथापि उभय पार्श्व के दल केवल आंशिक यंत्र सज्जित ही नहीं होंगे अपितु अधिकांश में वे आधुनिक युद्ध प्रणाली की दृष्टि में पूर्ण सुसज्जित होंगे। अतएव ये सैनिक दल सावधानी से संगठित किये जायें। केवल रूस, जर्मनी, अथवा फ्रांस की युद्ध भूमि पर प्राप्त अनुभव ही कोई यथेष्ट योग्यता नहीं मानी जा सकती — यद्यपि यह योग्यता कुछ अंशों में सहायक अवश्य सिद्ध हो सकती है। सैनिकों की शर्तें, कार्य क्षेत्र (बंगाल एवं आसाम को छोड़ कर) तथा युद्ध-कला बहुत भिन्न होगी। मान लीजिये कि इस भाग में प्रत्येक ५० मील पीछे संचिति दल समेत टुकड़ी होगी। हमें यह भी मान लेना है कि यह भाग दीवारों एवं खाइयों द्वारा रक्षित बनाया जायगा। इन दस टुकड़ियों के अन्तर्गत १,६०,००० से २,००,००० तक सैनिक रहेंगे।

(३) महान् समरांगण

अब हम अनूपगढ़ से पठानकोट तक के अत्यन्त महत्वपूर्ण सीमांत विभाग का वर्णन करेंगे। यही २५० मील का सीमा प्रदेश घोर संग्राम का रणांगण बनेगा। यही 'डिसाइसिव थियेटर आफ आपरेशन' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके लिए प्रति ५ मील के लिए एक डिविजन आवश्यक रहेगा चाहे हम रक्षात्मक ध्येय रखें अथवा आक्रामक, तात्पर्य यह कि उपर्युक्त ध्येय की पूर्ति के लिये आठ और दस लाख के बीच में सुसज्जित एवं दक्ष सैनिकों की आवश्यकता

रहेगी आक्रमक अथवा सरक्षणात्मक उपक्रमों से सम्बन्धित निर्णय केवल राजनैतिक दृष्टि से ही निश्चित नहीं होगा, वह तो हमारी पूर्व बंगाल की सीमा एवं मुस्लिम सरकारों से सम्बन्धित नीति एवं तैयारियों के अनुरूप होगा। यदि हम चाहें तो भी सभी सीमाओं पर घातक आक्रमणों की नीति नहीं अपना सकते।

पश्चिम में लाहौर सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्व का क्षेत्र है। इस विशाल नगर का पतन शत्रुओं के विरोध की भावनाओं के उन्मूलन एवं उनके हित के सम्पूर्ण यातायात के साधनों के ठप्प होने के साथ अवश्यम्भावी है, तथापि यदि सामरिक महत्व के नगर का मोह नेताओं को सीधे आक्रमण के लिए लालायित न करे, नहीं तो 'स्टेलिनग्राड' की पुनरावृत्ति में वे व्यर्थ ही परेशानी में पड़ेंगे। निस्सन्देह लाहौर की सरक्षणात्मक शक्ति सीमान्त के समीप होने से कुछ कम अवश्य हो जाती है तथापि इन बातों से यह तो निश्चित है कि शत्रु आत्म रक्षण के लिए हर सम्भव उपाय उपयोग में लायेंगे।

२ पूर्वीय सीमा प्रदेश

आसाम एवं बंगाल का पूर्वीय सीमा प्रदेश लगभग ७५० मील लम्बा है। इस प्रदेश की लड़ाई केवल पारस्परिक ही हो सकती है। आक्रमणात्मक हमलों पर की गई लागत अवश्य ही इन शत्रुओं की आक्रमणकारी वृत्तियों को हतोत्साह करने में सफल होनी चाहिए। शत्रुओं के घातक हमलों में कोई सामरिक औचित्य नहीं होगा, कारण, वे आत्मरक्षण के लिये पश्चिमी पाकिस्तान से कोई सहायता प्राप्त नहीं कर सकेंगे। उनकी उपलब्ध सैनिक शक्ति की कमजोरी ही ऐसे किसी आयोजन के करने में असमर्थ हैं। क्रियात्मक सरक्षण के साथ कुछ छिपे हमले शत्रु की शक्ति के विनाश के लिए पर्याप्त हैं। लूट एवं भय सचार के उद्देश्य से कलकत्ते पर कदाचित् शत्रु एक आध बार हमला भी कर दे। उसकी हवाई हमले से रक्षा करने के लिए उपायों की विशेष आवश्यकता है। एक भयानक बमवर्षक एक असली आक्रमण से अधिक आतंक फैला सकता है। साथ ही उसका वास्तविक पतन तो हमारी जनता एवं अन्य युद्ध स्थलों में सलग्न सैनिकों के लिये घातक सिद्ध होगा। अस्तु कलकत्ता एवं बंगाल आसाम सीमान्त क्षेत्र की रक्षा का भार स्वयं सेवक दलों को सौंपा जा सकता है, जिनकी सहायता के लिये महत्वपूर्ण स्थलों पर कुछ सख्या में नियमित सेना भी रखी जाय।

[३] हैदराबाद और भोपाल

सामरिक दृष्टि से ये दोनों रियासतें बड़े महत्व की हैं। भोपाल भारत के अत्यन्त महत्वशाली रेलमार्ग पर स्थित जंक्शन है। सामरिक महत्व की दृष्टि से दूसरा मौके का जंक्शन इटारसी उसके समीप ही है। बम्बई—मद्रास तथा बम्बई बेजवाड़ा की प्रमुख रेलवे कड़ियां हैदराबाद रियासत में से ही गुजरती हैं। दक्षिण भारत, बम्बई एवं मद्रास के साथ सम्पूर्ण सम्बन्ध खटाई में पड़ जायगे, यदि हैदराबाद अपनी सम्पूर्ण शक्ति पाकिस्तान से गठबन्धन करने में लगा दे, जिसकी सम्भावना भी है ही। हैदराबाद एक बड़ी रियासत है। उसको सहज ही में पादाक्रांत नहीं किया जा सकता और न उसकी सुदृढ़ सीमाओं पर पहरा ही रखा जा सकता है। उसकी सीमा लगभग १४०० मील की परिधि में है जिसे सुरक्षित रखने के लिए लाखों सैनिकों की आवश्यकता रहेगी जिनका उपयोग अन्यत्र युद्ध क्षेत्रों में होगा आवश्यक है। बम्बई एवं मद्रास के बीच बड़ा अन्तर है इसलिये योग्य रक्षा के उपाय जरूरी हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि भारत एवं पाकिस्तान के बीच सभावित युद्ध की स्थिति में ये रियासत भुलाई नहीं जा सकती यह भारतीय रक्षा विभाग के सन्मुख एक विकट एवं जटिल समस्या ही रहेगी, यदि युद्ध के प्रारम्भ में ही सशक्त आक्रमण द्वारा इन रियासतों का समूल सफाया न कर दें। इसका अर्थ हुआ कि पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तों के साथ युद्ध कुछ अर्से तक स्थगित रख या फिर रक्षणात्मक नीति अपनायें, जिसमें एक भारी सैनिक सख्या व्यर्थ में अटकी रहेगी और जिसका प्रयोग प्रधान युद्ध स्थलों पर हुआ रहेगा।

ऐसी परिस्थितियों में एक सुझाव है कि स्वयं सेवक दलों का सगठन एवं शिक्षण बड़े पैमाने पर हो एवं यह कार्य अधिक द्रुत गति से चलाया जाय। यदि ये दल किसी विषम परिस्थिति के पहले ही सुशिक्षित एवं सुसज्जित नहीं किये गये तो निश्चय ही ऐसी स्थिति में जबकि हमारी सेनाएं पाकिस्तानी सेनाओं से गुथी होंगी, हमारे पीछे से हमारी पीठ में अवश्य छुरा भोंका जा सकता है।

हमार युवकों में सैन्य शिक्षण की प्रथ· वृहद् योजना

[सरदार बलदेवसिंह]

कुछ समय से जनता की ओर से यह माग रही है कि देश के नवयुवकों को फौजी शिक्षा दी जाय। इस में राष्ट्र का हित भी है और नवयुवकों के ठीक तौर पर चरित्र निर्माण का भी प्रबंध हो जाता है। जब से हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की है यह माग स्वभावतः और पकड़ती गई है। सरकार जनता के भावों से सहमत है और इस काम को पूरा करने के लिये कार्य कर रही है।

जुलाई १६४६ में देश के सब स्कूलों और कालिजों के निमित्त राष्ट्रीय सैन्य शिक्षार्थी दल की व्यवस्था करने के लिए एक समिति नियुक्त की गई थी। इस समिति के प्रधान श्री हृदयनाथ कुंजरू थे और हमारी सेना के कई बड़े अफसर और जनता के कई बड़े आदमी सदस्य थे। इस समिति ने अनेकों साक्षियों के बयान लिये, भारतीय विश्वविद्यालयों का दौरा किया, विदेश गये, विशेषकर कई सदस्य इंगलैंड में विद्यार्थियों की सैन्य शिक्षा की व्यवस्था का निरीक्षण करने गये। इस समिति की रिपोर्ट सरकार को जुलाई १६४७ में प्राप्त हुई थी। इस समिति की सिफारिशों पर यदि अमल किया गया तो हम सचमुच ही एक बहुत अच्छे राष्ट्रीय सैन्य शिक्षार्थी दल की स्थापना कर सकेंगे।

समिति ने राष्ट्रीय सैन्य शिक्षार्थी दल की तीन डिवीजन बनाने का परामर्श दिया है —

(क) ३२,५०० शिक्षार्थियों की एक सीनियर डिवीजन विश्वविद्यालयों के लिए होगी जिसमें कि आधुनिक यूनीवर्सिटी ट्रेनिंग कोर मिला दिया जायगा।

(ख) १३,५०० शिक्षार्थियों का स्कूलों के लिये एक जूनियर डिवीजन होगी जिसमें स्कूलों के बालक फौजी शिक्षा ग्रहण करेंगे।

(ग) लड़कियों के लिए तीसरी अलग डिवीजन होगी।

यह हमारा केवल श्रीगणेशमात्र है। यह प्रयत्न समूचे देश की आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त नहीं। परन्तु हमारे रास्ते में कई प्रकार की आर्थिक और अन्य टैकनिकल बाधाएं हैं, जिनके कारण सरकार इससे वृहद् योजना का भार अपने ऊपर नहीं ले सकती। हमारी सेना सरकार की सर्वोत्तम सेनाओं में से है। हमें उस पर बहुत गर्व है। इस लिए हमारा सैन्य शिक्षार्थी दल भी उसके अनुरूप होना चाहिए। राष्ट्रीय सैन्य शिक्षार्थी दल की स्थापना का विशेष प्रयोजन यह है कि नवयुवकों के चरित्र का निर्माण हो सके और उनमें साथीपन की भावना, सेवा और नेतृत्व के गुण उत्पन्न किए जा सकें। इसके अतिरिक्त देश की रक्षा भी हमारा ध्येय है।

सरकार ने निश्चय किया है कि इस दल में भरती पूर्णत ऐच्छिक रखी जाय, जिससे कि इसका कोई शिक्षार्थी सशस्त्र सैनिक सर्विस के लिए बाध्य न हो। सरकार को यह विश्वास है कि देशभक्ति के भावों से प्रेरित होकर स्कूल, कालेजों के नवयुवक पर्याप्त संख्या में भर्ती हो जायेंगे, क्योंकि इस दल से न केवल शिक्षार्थियों को ही लाभ होगा, बल्कि देश रक्षा भी होगी। परन्तु यदि किसी कारण से भर्ती सन्तोषजनक न हुई तो सरकार को अनिवार्य भरती पर विचार करना पड़ेगा।

सरकार इस दल में शामिल होने वालों को कोई आर्थिक प्रलोभन देना नहीं चाहती, परन्तु शिक्षार्थियों को वर्दी, शिविरों में मुफ्त राशन, आने जाने का किराया आदि अवश्य देगी।

उच्च डिवीजन में कलेज स्टाफ के निर्वाचित सदस्यों के अतिरिक्त कुछ नियमित सैन्य अफसर भी होंगे। जूनियर डिवीजन तथा लड़कियों के डिवीजन में स्टाफ के सदस्य ही अधिकारियों के रूप में काम करेंगे। उच्च डिवीजन में काम करने वाले असैन्य अफसरों को सैन्य पद दिये जायेंगे और जितने समय तक वे शिविर में रहेंगे तब तक उन्हें सैन्य पदों का ही वेतन मिलेगा। जूनियर डिवीजन तथा लड़कियों के डिवीजन के अफसरों को पारिश्रमिक मिलेगा।

राष्ट्रीय सैन्य शिक्षार्थी दल रक्षा सचिवालय के नियन्त्रण में होगा। यह व्यवस्था इस दल को सचमुच राष्ट्रीय बनाने के लिए ही नहीं की गई, वरन् इसके कारण सम्पूर्ण देश में ट्रेनिंग तथा अनुशासन आदि का स्तर एक सा ही रखा जायगा। प्रान्तीय सरकारें अपने अपने इलाकों में इस सगठन को हर तरह की सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने-अपने प्रान्तों में इस योजना का खर्च का दायित्व लेना भी स्वीकार कर लिया है और केवल केन्द्रीय संगठन का खर्च भारत सरकार सम्भालेगी। जो भारतीय रियासतें इस योजना में सम्मिलित हो रही हैं तथा जो प्रान्तों के समान शर्तों पर ही इस में सम्मिलित होना चाहती हैं उनमें भी इस को चालू किया जा सकता है।

शीघ्र ही एक केन्द्रीय सलाहकार समिति की स्थापना करने का निश्चय किया गया है।

देश के युवकों को शस्त्र शिक्षा देने की जनता द्वारा जो इच्छा प्रकट की गयी है वह सर्वथा उचित है। इस माग के पीछे हमारी कोई आक्रमणात्मक वृत्ति नहीं है। हमारी सम्पूर्ण परम्परा ऐतिहासिक हो या सांस्कृतिक, शान्ति की आकांक्षा से ओतप्रोत है किन्तु हमारे असंख्य निर्दोष देशवासियों, स्त्रियों और बच्चों पर दुःखों और कष्टों के जो पहाड़ गिराये गये हैं, उन्हें हम भूल नहीं सकते। यह सब अत्याचार पड़ोसी उपनिवेश के हथियारबन्द कबीले वालों के गिरोहों और हथियार चलाने की शिक्षा पाये हुए

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

देश को शक्तिशाली बनाओ

[जनरल मोहनसिंह]

★

आजाद हिन्द फौज के एक प्रमुख अधिकारी जनरल मोहनसिंह ने पूर्वी पंजाब में देश सेवक सेना का संगठन किया है। उनके विचार पाठकों के लिए विचारणीय हैं।

संसार की आज की स्थिति के अनुसार यदि हम भारत को सैनिक दृष्टि से सुदृढ़ नहीं कर लेते तो अन्य क्षेत्रों में हमारी प्रगति निरर्थक सिद्ध होगी। अधिक क्या हमारी स्वाधीनता भी अल्पकालीन होगी। वर्तमान युग के युद्ध में केवल सेना ही संग्राम नहीं करती, अपितु सारा राष्ट्र संग्राम में जूझ पड़ता है; इसलिये प्रत्येक राष्ट्र के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसके नागरिक युद्ध करने का सारा भार सैनिकों पर ही न डाल दें, अपितु नागरिकों का ऐसा संगठन करें जिससे आवश्यकता पड़ने पर वे सेना की दूसरी पंक्ति में खड़े हो कर युद्ध कर सकें। ब्रिटिश सरकार ने जानबूझ कर एक ऐसी नीति का अनुसरण किया था, जिस से नागरिक सैनिक से मिल न सकें, उन्हें सैनिक शिक्षा प्राप्त न हो सके और वे सैनिकों के कार्यों का महत्व न समझ सकें। यदि हम यह चाहते हैं कि संसार की राजनीति में भारत एक महत्वपूर्ण भाग ग्रहण करे तो यह आवश्यक है, कि हम भारत को नैतिक दृष्टि से एक शक्तिशाली राष्ट्र बनायें। ऐसा करके ही हम नेहरू-सरकार का वास्तविक रूप से समर्थन कर सकेंगे और उन शक्तियों से युद्ध कर सकेंगे जो भारत के मार्ग में बाधक बन कर खड़ी हैं।

१५ अगस्त से पूर्वी पंजाब पर बहुत अधिक उत्तरदायित्व आपड़ा है। भारत के पश्चिमी द्वार की रक्षा का भार इस पर है। शायद फिर भारत के भाग्य का निर्णय इसी भूमि पर हो। देश सेवक सेना में अभी १० हजार सैनिक हैं। वे सैनिक शुद्ध राष्ट्रीय ढंग से पंजाब के नागरिकों को ऐसी सैनिक शिक्षा देंगे, जिससे अवसर पड़ने पर वे सेना की दूसरी पंक्ति में खड़े हो सकें। हमारी सेना कोई व्यक्तिगत सेना नहीं है, वह राष्ट्र की सेना है। पंजाब को यह गौरव प्राप्त है, कि वह भारत की स्वाधीनता की रक्षा करे।

सेना जनता का सहयोग व विश्वास प्राप्त करे

हर एक भारतीय को यह कामना होगी कि हमारी सेना हमारे अभिमान की वस्तु बनी रहे और उसने जो मान-सम्मान विदेश की सेनाओं में प्राप्त किया है, वह कायम रहे। इस कामना की पूर्ति में सब से बड़ी बात यह है कि हमारी सेना को जनता का पूर्ण सहयोग और विश्वास प्राप्त हो। मुझे आशा है कि साधारण जनता की अपनी थल, जल और वायु सेना के प्रति सद्भावना और मित्रता बढ़ेगी।

— ब्रि० गुरदयालसिंह

★

१७ वीं सदी में ब्रिटिश सैनिक ईस्ट इण्डिया कं० के साथ भारत में आये थे। इस देश में उन्होंने पिछली दो सदियों तक जो अत्याचार किये, उसकी करुण कहानी पाठकों से अविदित नहीं है। लेकिन अब अंग्रेज सैनिक भारत से सदा के लिए गये। उनका अन्तिम दस्ता भी भारत छोड़ रहा है।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

व्यक्तियों द्वारा हमारे नागरिकों पर किये गये हैं। इस लिए हमें अपने देशवासियों को हथियार चलाने की शिक्षा देनी ही पड़ेगी जिससे हमारे नागरिकों पर भविष्य में इस प्रकार के संकट फिर न आवें। हम अपने नागरिकों के विरुद्ध हिंसात्मक कार्रवाइयां और स्वदेश की रक्षा के कार्य में व्यवधान डालने के किसी भी कृत्य को नहीं सह सकते।

हमारी यह सेना, जो अब तक ब्रिटिश साम्राज्य के लिए लड़ती थी, अब हमारे देश के शत्रुओं के दांत खट्टे करेगी।

देशरक्षा के लिए सन्नद्ध भारतीय सैनिकों का एक दल

सेना नहीं, समस्त राष्ट्र युद्ध करता है

[श्री गोवर्धनदास मेहता]

इतिहास के आरम्भ में सैनिक की वीरता ही सर्वोपरि थी। देश के राजाओं में जो युद्ध होते थे, उनमें सैनिक टुकड़ियां मोर्चे पर जाकर तलवारसे एक दूसरे का सामना करती थीं। उनकी बहादुरी पर ही युद्ध की जीत हार का निर्णय होता था। युद्ध का प्रभाव जन-साधारण पर विशेष रूप से नहीं पड़ता था। फिर बारूद की खोज हुई और तोपों का प्रयोग युद्ध में प्रारम्भ हुआ। तोपों से विनाश की मात्रा में वृद्धि हुई। इस के बाद भाप और फिर तेल युग आये, जिसने गत दो महायुद्धों में नर संहार का खेल दिखाया। टैंकों और विमानों द्वारा हिटलर ने किस प्रकार एक के बाद दूसरे देश जीते और किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति युद्ध से प्रभावित हुआ, इसकी कहानी अभी पाठक नहीं भूले हैं। पिछले युद्ध के पांच वर्षों तक मानव-समाज की जो तबाही हुई, वैसी इतिहास में पहले कभी नहीं हुई थी। विज्ञान और आगे बढ़ा, और उसका अभूतपूर्व करिश्मा ५ अगस्त १९४५ को संसार ने उस समय देखा, जब कि हिरोशिमा पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने प्रथम परमाणु बम गिराया। ४॥ मील का क्षेत्र खण्डहर बन गया और १॥ लाख से अधिक व्यक्ति या तो मारे गये या घायल हुए तथा २ लाख व्यक्ति गृह विहीन हो गये।

वीर युग से लेकर परमाणु युग तक की युद्ध कला से यह बात प्रमाणित होती है कि अब विनाश केवल लड़ने वाली सेना तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह बहुत व्यापक और सामूहिक होता है। युद्ध प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को झकझोर देता है। अब किले बना कर या मेजिनोट-लाइन बनाकर ही देश की रक्षा नहीं हो सकती। युद्ध इतने अधिक व्ययसाध्य हो गये हैं कि उन्हें सुचारुरूपेण संचालन करने के लिए देश के समस्त साधनों का एक साथ प्रयोग करना होगा और रक्षा के लिए भी समस्त जनता को जनता के प्रत्येक अंग को भरसक प्रयत्न करना होगा। युद्ध के मोर्चे के लिए भी और शत्रु के आक्रमण से अपनी रक्षा के लिए भी। पिछले दिनों में भारत से युद्ध दूर था, परन्तु ए० आर० पी० के सैकड़ों प्रकार के प्रयत्न सिविकगार्ड, कन्ट्रोल, राशन तथा अन्य अनेक व्यापक और समठित योजनाएं हमें भी अपनानी पड़ीं।

युद्ध आरम्भ हो जाने की सूरत में देश की सरकार तो सैनिक दृष्टि से जनता का बचाव करती ही है जल थल वायु सेना शत्रु के दांत खट्टे करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। लेकिन युद्ध में जीत हासिल करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति भी को अपना निम्न भाग लेना होगा। संक्षेप में —

(१) युद्ध काल में जीत उसी की होती है, जो साहस नहीं खोता। ब्रिटेन की जनता पर जबर्दस्त बमबारी जर्मनी ने की। अगणित नर नारी मारे गये व बड़ी बड़ी इमारत धराशायी हो गई। लेकिन ब्रिटेन की जनता ने हिम्मत नहीं हारी। रूस के लोगों को भी कम मुसीबत नहीं उठानी पड़ी, पर वहां के लोगों ने भी साहस नहीं छोड़ा। किसी भी राष्ट्र पर कोई आक्रमण करे तो उस देश की जनता को शत्रु के आगे कभी आत्म समर्पण नहीं करना चाहिए।

(२) युद्ध काल में जनता को अपनी आवश्यकताएं कम कर देनी होती हैं। सबसे प्रथम सैनिकों की जरूरतें पूरी करनी है। खाद्य-सामग्री कपड़े तथा अन्य जीवनोपयोगी सामान सैनिकों को पहुंचाना है और उनकी प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखना है। जनता को अपने राष्ट्र-रक्षा की खातिर प्रत्येक आवश्यक वस्तु का त्याग करने को तैयार रहना चाहिए।

(३) युद्ध काल में समस्त यातायात व्यवस्था गड़बड़ हो जाती है। कुछ को शत्रु नष्ट कर देता है और शेष सैनिक प्रयोग में ले ली जाती है। जनता का कर्त्तव्य है कि यातायात-साधनों का उस समय कम से कम प्रयोग करे और अपने स्थान पर जमी रहे। इधर उधर न जाये

(४) युद्ध काल में नागरिकों को वार्तालाप में सतर्क रहना चाहिए। शत्रु विभिन्न रूपों में देश में अपने जासूस छोड़ देता है। कहीं ऐसा न हो कि आपकी बातों से शत्रु के जासूस कई भेद पा लें।

(५) युद्ध काल में शत्रु गलत प्रचार द्वारा जनता को भ्रमित करने की कोशिश करता है। यह प्रचार का युग है जो कभी २ भूत व बसिर पैर का होता है। मुझे याद है कि मैंने रूस पर जर्मनी के आक्रमण के दिन जापानी रेडियो सना था। जापानी रेडियो ने सुनाया कि रूस और जर्मनी में यह सन्धि हो गई है कि जर्मनी की सेनाओं को मध्य पूर्व में जाने के लिए रूस गुजरने देगा। यह है आज

किसी सभ्य मन की वरन और मेनपन की रण कुशलता पर जय य वि य निर्भर थी परंतु अब के युग में केवल सेना नहीं समस्त राष्ट्र युद्ध करता है आज युद्ध काल में जनता को क्या भाग किस तरह पूरा करना चाहिए ... इस लेख में पढ़िए

कल के प्रपगण्डा का ढंग। जनता को किसी भी बात पर तत्काल विश्वास नहीं करना चाहिए अफवाहें फैलाने वालों से भी बचना है इनसे ही जनता का नैतिक बल कम होता है।

(६) युद्ध काल में कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है उस समय उन्हें सारे मतभेदों व दो तथा अपनी छोटी मोटी शिकायतों व मांगों को ताक में रख कर परिश्रमपूर्वक अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहिए। यदि उन्होंने ऐसे मौके पर राज्य का साथ न दिया तो युद्ध में विजय कठिन हो जायगी। एक ओर सैनिक सामग्री की आवश्यकता होगी, जिसके लिए सैनिक कारखानों में तेजी से अस्त्रशस्त्रादि बनाने होंगे। दूसरी तरफ वस्त्र तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं की आवश्यकता होगी जिन्हें सैनिकों के लिए मोर्चे पर भेजते रहना पड़ेगा। हमारे मजदूर ऐसे समय हड़ताल करने का स्वप्न में भी ख्याल न करें। उस समय उनका कर्तव्य अधिकसे अधिक कार्य करना ही है, अन्य सब प्रश्न बाद में।

(७) युद्ध काल में इञ्जीनियरों, डाक्टरों, टेक्नीकल लोगों आदि की सेवाओं की आवश्यकता होती है। इन सभी का यह धर्म है कि ये राष्ट्र की खातिर वेतनिक अथवा अवैतनिक, जब जैसी जरूरत हो, अपनी सेवाएं सहर्ष अर्पित करें।

(८) युद्ध काल में पत्रकारों, कवियों लेखकों, साहित्यकारों आदि का कर्तव्य है कि वे जनता में जोश, साहस, वीरता आदि भावनाओं को भरें। पत्रकार जनता तक युद्ध के सही समाचार जल्दी से जल्दी पहुंचाये और लोगों में उत्साह पैदा करे। जो पत्रकार ऐसे अवसर पर जनता को गुमराह करता है, वह राष्ट्र का शत्रु है। कवि अपनी कविता द्वारा रण-भेरी सुनाये और लोगों को बलिदान का पाठ पढ़ाये। लेखक व अन्य साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा वीर-साहित्य का प्रचार करें।

(९) युद्ध-काल में महिलाओं का उत्तरदायित्व भी कम नहीं है। उन्हें अपने पतियों, भाइयों और पुत्रों को वीरता का पाठ पढ़ाना है और देश पर मर मिटने के लिए बलि होना सिखाना है। राजपूती-काल में वीर माताएं जिस प्रकार अपने पुत्रों को तिलक लगाकर रण-क्षेत्र के लिए बिदा करती थीं, उसी प्रकार आधुनिक देवियों को करना होगा। एक ओर वे अपने आत्मीयों को मोर्चे पर भेज कर विजयबेला की प्रतीक्षा करेंगी, दूसरी तरफ वे स्वयं भी राष्ट्रीय कार्य में अपना पार्ट अदा करेंगी। वे स्वयं-सेविकाएं बन कर घायलोंकी सेवा कर सकती हैं।

(१०) युद्ध-काल में छात्रों का धर्म है कि वे अपने आपको सेवा-कार्य के लिए अर्पित कर दें। जो छात्र सेना में भर्ती होकर मोर्चे पर जा सकें, पर जो न जाय वे स्वयं-सेवकों का कार्य करें।

(११) युद्ध-काल में राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी धर्म, जाति वर्ग आदि का हो, कुछ न कुछ कार्य अवश्य करना चाहिये। उस समय सरकार नागरिकों से जो भी सेवा लेना चाहे, वह उन्हें सहर्ष देने को प्रस्तुत रहना चाहिए।

(१२) चीन और रूस ने जापान व जर्मनी से युद्ध जीतने में जो भी साधन बरते हैं, उनमें गुरिल्ला-युद्ध का महत्व कम नहीं है। दोनों देशों की जनता ने गुरिल्ला युद्ध के कारण ही शत्रु के पैर टिकने नहीं दिये। भारतवर्ष ने भी १९४२ में इसकी भूमिका बांधी थी। वस्तुतः शत्रु के आक्रमण के समय समस्त राष्ट्र की जनता को बड़ा हवाई हमलों से बचने का उपाय करना चाहिए, वहां शत्रु को खदेड़ने के लिए गुरिल्ला-युद्ध के उपाय भी सीख लेने चाहिए।

२२०० वर्ष पहले भारत में देशरक्षा की तैयारियां

[श्री गोपाल दामोदर तामसकर एम० ए०, एल० टी०]

देश की रक्षा आज बहुमुखी और व्यापक है। कौटिल्य के समय भी सरकारें उसके महत्व को समझती थीं। इस लेख में बताया गया है कि उस समय सरकारें देश की रक्षा के लिये कितनी बहुमुखी-प्रवृत्तियों की ओर ध्यान देती थीं।

देश काल के अनुसार किसी भी देश की रक्षा के साधनों तथा रीतियों में परिवर्तन होता आया है। उसी प्रकार युद्ध के साधनों और रीतियों में परिवर्तन हुआ है। निम्न लिखित वर्णन को पढ़ते समय इस छोटी-सी बात को न भूलना चाहिये। प्राचीन काल में देश की रक्षा की दृष्टि से दुर्गों का महत्व बहुत अधिक था। कौटल्य कहता है — चारों दिशाओं में और जनपद की सीमा पर दुर्ग बनाना चाहिये, अथवा वहां यदि कोई उस उपयोग के योग्य स्वाभाविक विकट स्थान हो तो उन्हें ही दुर्ग का स्वरूप दे देना चाहिये। दुर्ग बहुधा चार प्रकार के होते हैं:— (१) औदक, (२) पार्वत, (३) धान्वन, और (४) वनदुर्ग। नदी के बीच में उसके पानी से घिरा अथवा बड़े बड़े गहरे तालाबों से घिरा हुआ स्थान औदक दुर्ग के योग्य है। बड़े बड़े पत्थरों से घिरा हुआ अथवा स्वाभाविक दुर्ग के समान बना हुआ स्थान पार्वत दुर्ग के योग्य होता है। जल और घास से रहित अथवा ऊसर भूमि में बना हुआ दुर्ग धान्वन कहलाता है। दलदल से अथवा कांटेदार घनी झाड़ियों से घिरा हुआ दुर्ग वन-दुर्ग कहता है। (अधि० १, अ० ३, सू० १ ३)

जनपद की रक्षा केवल दुर्गों से नहीं हो सकती; क्योंकि सभी लोग उनका आश्रय नहीं ले सकते दूसरे जीवन की सामग्री का सरलता से मिलना भी आवश्यक है, इसलिये जनपद के स्थान पर सामग्री संग्रह के स्थान बनाना चाहिये, ऐसे स्थान वास्तु विद्या के अनुसार उचित स्थानों में, अथवा नदी के संगम पर अथवा जलाशयों के बीच अथवा किनारे पर बनाये जांय। स्थानीय भूमि के अनुसार वे गोल, चौकोर या लम्बे हों, उनमें छोटी, छोटी नहरों का जल प्रवाह बहते रहना चाहिये, चारों ओर होने वाली वस्तुओं का वहां संग्रह होना चाहिये। उसके चारों ओर एक एक दण्ड के अन्तर पर तीन खाइयां होनी चाहिये। ये खाइयां क्रमशः चौदह दण्ड, बारह दण्ड और दस दण्ड चौड़ी होनी चाहिये। उनकी गहराई तीन चतुर्थांश, आधी, या एक तिहाई होना चाहिये। उनकी तली पत्थर से बन्धी रहे और किनारे पत्थर या ईंट से बन्धे रहें, वहां उनको इतना गहरा बनाना चाहिये कि उनमें स्वभावतया जल निकल पड़े नहीं तो, उनमें किसी नदी से पानी लाकर भर देना चाहिये। इनमें से पानी निकलने का मार्ग भी रहे और उनमें कमल खिलते रहें तथा मगर रहें। खाईं से चार दण्ड के फासले पर छः दण्ड ऊंचा, अच्छा दृढ़, जितना ऊंचा हो उससे दुगुनी चौड़ी तलीका बान्ध बनाना चाहिये, इसके बनाने में खाई की खोदी हुई मिट्टी काम में लायी जाय, उस पर कांटेदार झाड़ियां तथा विषवल्लियां लगा देनी चाहिये। इस बान्ध के ऊपर दीवाल खड़ी करवानी चाहिये, व अपनी चौड़ाई से दुगुनी ऊंची हो, इसकी लकड़ी का न बनाना चाहिये, क्योंकि उसमें आग लगाने का डर सदैव रहता है। प्राकार के आगे अट्टालक (मनोरा) बनवाना चाहिये जो कि प्राकार के समान ही चौड़ा हो, उनमें चढ़ने उतरने के लिये सीढ़िया होनी चाहिये। अट्टालकों के बीच तीस, तीस दण्ड अन्तर रहे, दो अट्टालकों के बीच दो मंजिला तथा छत सहित चथाई से ड्योढ़ी लम्बी प्रतोली बनाई जाय। अट्टालक और प्रतोली के बीच एक इन्द्रकोश बनवावे, जिसमें तीन धनुर्धारी बैठ सकें। इसके सामने रुकावट के लिये तख्ता लगा रहे, पर उसमें छेद अवश्य रहें, ताकि उनमें से देखते बने और आवश्यकता पड़ने पर तीर मारते बने, प्राकार से लगे हुए अट्टालक, प्रतोली और इन्द्रकोश के बीच दो हाथ से बढ़ते बढ़ते प्राकार के पास आठ हाथ चौड़े हों। ऐसे गुप्त मार्ग बनाना चाहिये, एक या दो दण्ड के अन्दर पर प्राकार पर चढ़ने की सीढ़िया बनानी चाहिये (अधि० १, अ० ३, सूत्र ४-१८)

शत्रु को न दिखाई दे, ऐसे स्थान में प्राकार के ऊपर ही प्रधावितिका और निष्कुर द्वार बनावे (शत्रु के बाण आदि से बचने के लिये छिपने का जो आवरण बनाया जाता है, उसे, प्रधावितिका कहते हैं)। इस आवरण में जो छोटे बड़े छेद रहते हैं, उनमें से शत्रु की प्रत्येक चेष्टा दिखाई दे सकती है। इसे ही निष्कुर द्वार कहते हैं। परिख के बाहर की भूमि

को घुटने बराबर खूंटे, त्रिशूल अन्धेरे गड्ढे, लोहे का शलाक, तिनकों से ढके हुए गड्ढे लोहे के काटे, तीन तीन नोक वाले नुकीले काटे, मरे साप वाले पत्रके, समान बने हुये, लोहे की जाली, कुत्ते की दाढ़के समान नुकीले कीले अथवा एक ही पैरके, बराबर कीचड़ से भरे गड्ढे, अग्नि के गड्ढे तथा दूषित जल के गड्ढे आदि वस्तुओं से पाट देवें। कौटिल्य ने किलों के दरवाजे की रूपरेखा भारी विस्तार के साथ दी है। प्रहार करने के साधनों में पत्थर, कुदाल कुठार बाण, कल्पना हाथियों के उपकरण, भुशुण्डी, मुग्दर दण्ड, चक्र, यन्त्र, शतघ्नी शूल, वेधनाग्र (भाले) नाल उष्ट्र ग्रीव्य (उष्ट्र के गर्दन के आकार के हथियार) अग्निसंयोग (अग्नि लगाने पर चलने वाले आयुध) आदि का उल्लेख है। (अधि० १, अ० ३, सूत्र ७६ ४२)

दुर्ग किस प्रकार का होता था और उसकी रक्षा कैसे हो, यह बताने के बाद दुर्ग के भीतर की योजना का बहुत विस्तृत वर्णन है। रक्षा की दृष्टि से खाने पीने का सब सामग्री से उसे परिपूर्ण करने पर तथा आवश्यक आयुध जमा करने पर कौटिल्य ने बहुत जोर दिया है (अधि० १, अ० ४, सूत्र १३ २२) कोई एक अधिकारी शत्रु से जा कर मिल सकता है, इस लिये हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सेनाओं को अनेक मुख्य अधिकारियों के हाथ में रखना चाहिये। (अ० १, अध्याय ४ सूत्र ३६ ३७) राजा को चाहिये कि नट नर्तक धूर्त तथा जुआरी लोगों को नगर में न बसने दे, क्यों कि ये लोग नगर तथा जनपद लोगों को अपने काम दिखा कर कुमार्ग में प्रवृत्त करते हैं। (अधि० १, अ० ४, सूत्र ३६)

रक्षा तथा युद्ध के साधनों में कौटिल्य ने हाथियों का महत्व बहुत अधिक माना है। दूसरे अधिकरण के दूसरे अध्याय में वह कहता है—राजा की विजय हाथियों पर विशेष अवलम्बित है, क्यों कि ये बड़े डील डौल होने के कारण शत्रु के सेना समूह को, उस के किलों को तथा छावनियों को केवल नष्ट ही नहीं कर सकते हैं, किन्तु अनेक, अन्य भयानक काम कर सकते हैं। इस लिये (१४ १५) उसने हाथियों के जंगल लगाने का उनके पकड़ने के साधनों का, उनके पालन पोषण तथा चिकित्सा का बहुत वर्णन किया है।

किले की रक्षा के वर्णन के सम्बन्ध में जिन आयुधों का वर्णन किया है, उनके सिवा आयुधागाराध्यक्ष के कार्यों का वर्णन बताते समय (अधि० २, अ० १८) अनेक प्रकार के अन्य आयुधों और साधनों का वर्णन दिया है। संग्राम में काम में आने वाले, दुर्ग की रक्षा के काम में आने वाले, शत्रु के नगर का विध्वंस करने वाले, चलयन्त्र, आयुध, आवरण, और उपकरण, यन्त्रों में ये नाम गिनाये हैं — सर्वतोभद्र, जामदग्न्य, बहुमुख, विश्वास घाति, संघाटी, यानक, पर्जन्यक बाहुयंत्र उर्ध्वबाहु और अर्धबाहु चलयन्त्रों के नाम दिये गये हैं। पञ्चालिक, देवदण्ड सूकरिका, मुसलयष्टि, हस्तिवारक, तालवृन्त, मुग्दर, गदा, स्पृक्तला, कुदाल, आस्फोटिम, उद्धाटिम उत्पाटिम शतघ्नी त्रिशूल और चक्र, इनका ठीक ठीक अर्थ आज समझना कठिन है। कुछ टीकाकारों ने उनका अर्थ इस ढंग से किया है कि मानो उस समय आज के सब प्रकार के आयुध प्रचार में थे। इतनी दूर हाकना कदाचित् ठीक न होगा, तथापि यह स्पष्ट है कि आज के आयुधों की कई कल्पनायें उस समय थीं। यह वर्णन काल्पनिक तो नहीं हो सकता। यह अवश्य वस्तुस्थिति का निदर्शक है। आज, जैसे सूक्ष्म कार्य करने वाले यन्त्र उस समय भले ही न रहे हों, पर यह तो स्पष्ट है कि उनमें आग बरसाने वाले, पानी बरसाने वाले (या फेंकने वाले) इसी प्रकार एक ही समय पत्थर के सैकड़ों टुकड़े या अनेकों किस्म के बम बरसाने वाले यन्त्र अवश्य थे। भाले तथा धनुषबाणों के कई प्रकार दिये हैं। उन में आकार प्रकार, तथा वस्तु के उपयोग के अनुसार उनके नाम गिनाये हैं। इसी प्रकार तलवार, फरसे, कवच, आवरण, आदि के आकार, प्रकार उपयोग तथा उपयुक्त वस्तु के अनुसार अनेक नाम इस ग्रन्थ में आये हैं। उनके नाम यहां देने से कोई विशेष लाभ नहीं है तथापि यह स्पष्ट है कि रक्षा में इन सभी बातों का विचार अवश्य है। ये भी वस्तुयें काल्पनिक नहीं हो सकतीं। इस से यह स्पष्ट है कि उस समय देश की रक्षा का भरपूर विचार हुआ था।

अश्वाध्यक्ष, हस्त्यध्यक्ष, पत्यध्यक्ष, तथा रथाध्यक्ष के कार्यों का वर्णन करते समय घोड़े, हाथी, पैदल सेना, तथा रथ इन का विस्तारपूर्वक वर्णन आया है (अधि० २, अ० १, ३०, ३१, ३२, और ३४) घोड़े और हाथी के पालन, पोषण, शिक्षा दीक्षा के नियम भी बहुत दिये हैं। कहां २ ये जानवर अच्छे हैं, यह भी बताया है। इनके अध्यक्षों को इन जानवरों के सम्बन्ध में सब बातें जानने का आदेश है। इसी प्रकार रथ के आकार प्रकार और उसके समस्त साधनों का विस्तृत वर्णन है। पत्यध्यक्ष को, निम्नयुद्ध, प्रकाशयुद्ध, कूट युद्ध, कनक युद्ध, आकाश युद्ध, दीवा युद्ध, अथ रात्रि युद्ध की कला जानना आवश्यक कहा है। इन युद्धों के प्रकारों को पढ़कर आश्चर्य अवश्य होगा। इसमें आकाश युद्ध भी बताया है। वह कैसे होता था, कौन जाने।

प्र० सि० वर्मा

हमारी विदेशी नीति का आधार क्या हो ?

[पृष्ठ ३४ का शेष [

मुस्लिम देशों के दृष्टिकोण को न्याय अथवा हमारे हितों पर तरजीह देंगे — जैसे अभी काश्मीर के मामले में हुआ भी है। ऐसी स्थिति में, जब हम अपने पैरों पर खड़े होने की स्थिति प्राप्त कर चुके हैं, ब्रिटेन के पीछे चलना हमारे लिए कहां तक वाञ्छनीय होगा, जबकि उसका स्पष्ट अर्थ रूस और उसके गुट के अन्य देश में से दुश्मनी मोल लेना हो, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

रूस के साथ

दूसरी ओर कुछ लोगों का यह कहना है,कि परिस्थितियां हमें अनिवार्य रूप से रूस का साथ देने के लिये मजबूर कर देंगी। आज की दुनिया में किसी भी देश के लिए अकेले खड़ा रहना असम्भव हो गया है, इस लिए ब्रिटेन और अमरीका से हमारे सम्बन्धों में ज्यों २ तनाव बढ़ता जाएगा, हम रूस की ओर खिंचेंगे, और यह भी कहा जाता है कि हमारा अन्तिम लक्ष्य तो समाजवाद ही हो सकता है। उस दिशा में जब हमें अनिवार्य रूप से बढ़ना ही है, तब हम क्यों न एक ऐसे देश के अधिक से अधिक निकट सम्पर्क में आवें जो इस दिशा में बहुत कुछ उन्नति कर चुका है। रूस से हमने बहुत कुछ सीखा है बहुत कुछ ग्रहण करना है। हमें देश के उस बड़े भूभाग को, जहां अभी खेती नहीं होती है, खेती के योग्य बनाना है, जहां खेत होती है वहां वैज्ञानिक साधनों का प्रवेश करना है, उद्योग-धंधों का विकास करना है, देश के अनन्त प्राकृतिक साधनों का समाजीकरण करना है, बड़ी २ योजनाएं बनानी हैं, उन सब योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए एक नया शासन-तन्त्र संगठित करना है और इन सब बातों को पूरा करने के लिए हमारे सामने इससे अच्छा मार्ग नहीं हो सकता कि हम रूस के आदर्शों पर चलें पर यदि हम ऐसा करते हैं तो हम क्या ब्रिटेन और अमरीका में अपने प्रति अधिक से अधिक अविश्वास की भावना को जन्म नहीं देंगे और आज अनिवार्य दिखने वाले तीसरे महायुद्ध को नजदीक नहीं ले आएंगे और उसकी लपटों में अपने को झोंक नहीं देंगे ?

एक स्वतन्त्र विदेशी नीति का निर्माण

इनके अतिरिक्त एक तीसरी विचार धारा भी है जिसके अनुसार हमें न तो ब्रिटेन और अमरीका का मूक समर्थन करना चाहिए और न रूस के पीछे ही आंख मींच कर चलना चाहिए। यदि जनतन्त्र की भावना से हम ब्रिटेन और अमरीका की ओर खिंचते हैं तो वहां की स्थिति के थोड़े से अध्ययन से भी हम यह जान सकते हैं कि वास्तविक जनतन्त्र वहां नहीं है और इसी प्रकार रूस में भी आज जो व्यवस्था है उसमें सच्चे साम्यवाद के दर्शन हमें कठिनाई से ही हो सकेंगे। ऐसी स्थिति में इन दोनों गुटों से, जिनमें आज दुनिया तेजी से बंटती जा रही है, अपने को अलग रखना ही हमारे देश के लिए श्रेयस्कर है। सभी देशों के प्रति हमारी परम्परागत मित्रता की भावना, शक्तिस्पर्द्धा। की राज नीति से अपने का अलहदा रखने का हमारा निश्चय, तीसरे महायुद्ध के सीधे सम्पर्क से अपने अछूता रखने का हमारा प्रयत्न और शान्ति, जनतन्त्र और समानता के के सिद्धान्तों को संसार में स्थापित करने का ध्येय, इन सभी का संकेत स्पष्ट इसी दिशा में है कि हम आज के बढ़ते हुए अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष से अपने को तटस्थ रखने का प्रयत्न करें।

इस तीसरी विचार धारा का मैं समर्थक हूं, बशर्ते कि तटस्थता का अर्थ निष्क्रियता न हो। जब दो दलों में झगड़ा बढ़ता जा रहा हो तब किसी समझदार आदमी का यह कार्य नहीं है कि वह उनमें से किसी एक दल में शामिल हो जाए। पर वह चुप भी नहीं बैठ सकता। समाज का एक अविच्छिन्न अंग होने के कारण उसका यह फर्ज हो जाता है कि वह ऐसे लोगों को अपने साथ ले जिनकी सहायता से झगड़ा निपटाया जा सकता है और एक शान्तिमय व्यवस्था की स्थापना में जुट पड़े, क्योंकि यदि झगड़े को बढ़ने दिया गया तब तो कहीं कोई व्यक्ति सकुशल नहीं बैठ सकेगा। हिन्दुस्तान को आज यह मान कर चलना है कि (१) अमरीका और रूस तेजी से एक बड़े विश्वव्यापी संघर्ष की ओर बढ़ रहे हैं और उसके लिए जोरदार तैयारियां कर रहे हैं, (२) यदि इस संघर्ष को समय रहते रोका नहीं गया तो उसकी लपटें सभी देशों में और विशेषकर उन देशों तक, जो रूस के भौगोलिक सामीप्य में हैं, पहुंचेंगी, (३) विश्व शान्ति के लिए यह आवश्यक है कि यह संघर्ष यदि अनिवार्य भी है तो उसे सीमित किया जाए और जितने अधिक देश उसके बाहर रखे जा सकें उन्हें संगठित करने का प्रयत्न किया जाए, (४) इस दिशा में इस प्रकार के तटस्थ देशों का नेतृत्व ब्रिटेन के असफल हो जाने और चीन के गृह युद्ध में उलझा होने के कारण हिन्दुस्तान पर आ जाता है और (५) इस काम में उसे चीन का सहयोग और एशिया के अधिकांश देशों का क्रियात्मक सहयोग तो

मिल ही सकेगा, बाहर के देशों का भी समर्थन पाने की वह अपेक्षा कर सकता है।

एशिया का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व

एशिया की एकता और संगठन, और हिन्दुस्तान के द्वारा उसके कुशल नेतृत्व पर आने वाले वर्षों की विश्व शान्ति निर्भर रहेगी। एशिया यदि संगठित है तो बड़े राष्ट्रों में आपसी संघर्ष के बहुत से अवसर आप ही मिट जाएंगे अमरीका और रूस में अपने प्रभाव क्षेत्रों को बढ़ाते जाने की जो होड़ लगी हुई है एक संगठित एशिया की दुर्भेद्य दीवारों से टकरा कर वह नष्ट हो जाएगी और यदि ये सीमाएं दुर्भेद्य नहीं हैं यदि वे निःशक्त हैं तो यह निश्चित है कि अमरीका और रूस के बीच छिड़ने वाला आगामी महायुद्ध एशिया की जमीन, एशिया के समुद्रों और एशिया के आसमान पर लड़ा जाएगा, और उसका परिणाम यह होगा कि इस आगे बढ़ते हुए महाद्वीप की प्रगति रुक जाएगी। अपनी रक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दोनों की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हिन्दुस्तान ने पिछले एक साल में एशिया के संबंध में जो नीति बना ली है उस पर वह मजबूती के साथ चलता रहे। एशिया के प्रायः सभी देशों से ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े पुराने सम्बन्ध होने के कारण उसे अपने इस काम में सहायता ही मिलेगी। इन देशों में चीन सबसे बड़ा और सबसे पुराना देश है। चीन को कमजोर रहने देना और उसे अमरीका और रूस की आर्थिक और राजनैतिक प्रतिद्वन्द्विता का अखाड़ा बन जाने देना हमारे लिए बड़ा खतरनाक सिद्ध हो सकता है। चीन से हमारे जितने निकट के सम्बन्ध हैं उससे अधिक निकट के सम्बन्ध दक्षिण पूर्वी एशिया से हैं। यह वह प्रदेश है जिसे एक बार हमने अपनी संस्कृति के पोषक तत्वों से अनुप्राणित किया था। पिछले कुछ वर्षों से प्रायः इन सभी देशों में स्वाधीनता के आन्दोलन उठ खड़े हुए हैं और उनमें एक बड़ी सीमा तक सफलता भी मिली है। इन देशों को हमें पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने में सहायता देनी पड़ेगी।

और यदि दक्षिण पूर्वी एशिया की राजनीति के प्रति हम उदासीन नहीं रह सकते तो मध्य-पूर्व अथवा पश्चिमी एशिया के देशों की राजनैतिक स्थिति के प्रति तो हमें और भी सतर्क रहना है। आज मराको से लेकर ईरान की खाड़ी तक समस्त अरब देशों में अरब संस्कृति का आधार लेकर एक नई सांस्कृतिक चेतना के व्यापक चिह्न दिखाई दे रहे हैं। अरब देशों में एकता और संगठन की भावना बढ़ती जा रही है, पर यह निश्चित है कि उसके पीछे अधिक राजनैतिक बल नहीं है यह भी निश्चित है कि उसके पीछे जो भी राजनैतिक बल है उसे ब्रिटेन और अमरीका का समर्थन मिल रहा है और उसका एक बड़ा कारण यह है कि ब्रिटेन और अमरीका इन देशों को रूस के बढ़ते हुए प्रभाव से मुक्त रखना चाहते हैं और दूसरा बड़ा कारण यह है कि ब्रिटेन और अमरीका इन्हें अपने आर्थिक प्रभुत्व से मुक्त करना नहीं चाहते। पश्चिमी एशिया के देश इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों का एक अखाड़ा बन गए हैं। इन देशों से भी हमारे ऐतिहासिक संबंध बड़े पुराने हैं। लगभग एक हजार वर्षों से हम अरब देशों व ईरान की संस्कृति से निकटतम सम्बन्धों में बंधे रहे हैं। इन देशों के धर्म, स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीत और साहित्य का हमारे जीवन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा है। सच तो यह है कि पश्चिमी एशिया के ये मुसलमान देश हमारे बचाव की पहली श्रेणी हैं। इनमें यदि अराजकता रही अथवा किसी साम्राज्यवादी देश का स्वार्थपूर्ण हस्तक्षेप रहा तो इसका प्रभाव हमारी राजनीति पर पड़ना अनिवार्य होगा। एशिया के नक्शे पर यदि हम दृष्टि डालें तो देख सकते हैं कि हिन्दुस्तान एशिया का भौगोलिक केन्द्र है और वह चीन, दक्षिण पूर्वी एशिया और पश्चिमी एशिया के सभी देशों के जमीन, पानी और हवा के यातायात के साधनों का भी केन्द्र है। एशिया की जो दो बड़ी संस्कृतियां हैं, हिन्दू बौद्ध और इस्लामी वे दोनों भी हमारी इस भूमि पर ही एक दूसरी से अविच्छिन्न रूप से घुलमिल गई हैं। इन्हीं भौगोलिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का यह परिणाम है कि राजनीतिक स्वाधीनता के सिंहद्वार में प्रवेश करता हुआ यह देश एशिया भर की राजनीति का भी केन्द्र बन गया है। हमें अपनी इस जिम्मेदारी को समझ लेना है और उसे अच्छी तरह निभाना है।

विदेशी नीति और आन्तरिक

इस दिशा में हिन्दुस्तान को चलना है पर इसके साथ ही हमें यह भी नहीं भूल जाना है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर वही देश अपना प्रभाव डाल सकता है जो शक्तिशाली हो। बंटवारे के बाद भी हमारी जनसंख्या और हमारा भौगोलिक विस्तार चीन को छोड़ कर दुनिया के सब देशों से बड़े हैं और हमारे प्राकृतिक साधन संभवतः चीन से भी अधिक हैं। हमारे सामने जो काम है वह यही है कि हम अपनी इस अपार जनसंख्या को इन असीम प्राकृतिक साधनों का अधिक से अधिक उपयोग करने के काम में लगा दें उसके लिए जहां एक सर्वाङ्गीण योजना की आवश्यकता है वहां यह भी आवश्यक है कि देश में शान्ति, सुव्यवस्था और राष्ट्रीय सरकार के प्रति विश्वास की भावना हो। यदि हमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपने देश की शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाना है तो यह आवश्यक है कि हम जवाहरलाल जैसे व्यक्ति को, जिनका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव है और जिनसे आशा की जा सकती है कि वह आज की अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थी को सुलझा सकेगा, अपने छोटे मोटे आन्तरिक, साम्प्रदायिक अन्तप्रान्तीय पार्टी-बंदी झगड़ों से मुक्त करें उन्हें मौका दें कि वह हमारे प्रतिनिधि के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपना उचित स्थान ले सकें।

हमारी वायुसेना का एक दृश्य।

युद्ध से अन्तर्राष्ट्रीय समस्या हल नहीं होगी

[पृष्ठ २७ का शेष]

अगर दुनिया में इसी तरह लड़ाइयां और हिंसा होती रही तो मनुष्य उन्नति करने के बजाय पशु हो जायगा और तमाम दुनिया तबाह हो जायगी। एच० जी० वेल्स ने अपनी होमो सैपियन नाम की पुस्तक में लिखा है कि इसी तरह हिंसा से मानव जाति नष्ट हो जायगी।

इन्हीं सब कारणों से आज के अन्तर्राष्ट्रीय संसार में मानव और मानव समाज के लिये अहिंसा का रास्ता अख्तियार करने के सिवा जीवित रहने और उन्नति करने का कोई दूसरा रास्ता नहीं, अहिंसा ही मानव और मानव समाज के त्राण और कल्याण का एक मात्र मार्ग है। एक मात्र मार्ग होने के साथ वह गतिशील और बहादुरों का हथियार, अमोघ अस्त्र है। यानी अहिंसा केवल एक मात्र मार्ग ही नहीं है, सर्वोत्तम मार्ग भी है। मानव और मानव समाज को झख मार कर अपनी पशुता और जड़ता छोड़नी पड़ेगी और अहिंसा की शरण लेनी होगी।
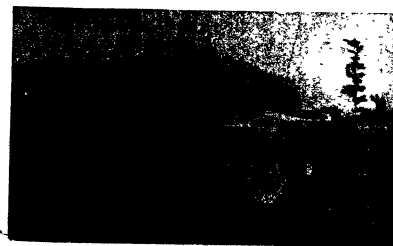
कभी कभी हिंसा से काम लेना पड़ता है। कांग्रेसी सरकारें भी हिंसा से, पुलिस फौज से काम लेती हैं, पुलिस और फौज रखती हैं, यह अहिंसा की विफलता कोई दलील नहीं हुई।

हिंसा तो मानव को विरासत में मिली हुई प्रकृति है। जब तक मानव पूर्ण तथा उन्नत और विकसित न हो जाय, तब तक वह अहिंसा के आदर्श को सामने रखते हुए यदा कदा हिंसा से भी काम लेता रहेगा। कई लोग व्यभिचार करते हैं, समाज में वेश्याएं हैं। क्या यह इस बात की दलील हो सकती है कि ब्रह्मचर्य और सदाचार को आदर्श न माना जाय, उनका प्रचार न किया जाय? क्या भारतीय दण्ड विधान की उन दफाओं को उड़ा दिया जाय जिनमें चोरी, डकैती, झूठी गवाही व गैरजुर्म दण्डनीय करार कर दिये गये हैं? आदर्श तक पहुंचने में कमी रहना, देरी होना, आदर्श को छोड़ देने की हिंसा, वेश्यागमन, झूठ, चोरी व डकैती वगैरह का प्रचार करने की तर्कसंगत युक्ति नहीं हो सकती।

संक्षेप में, आज के अन्तर्राष्ट्रीय संसार में, स्थायी शान्ति, वास्तविक लोकतन्त्र और सच्ची स्वाधीनता की स्थापना के लिये सिवा अहिंसा के और कोई उपाय नहीं है। अहिंसा ही इनका एकमात्र तथा सर्वोत्तम उपाय है। इसीलिए महात्मा गांधी बीसवीं सदी के मसीहा हैं। दुनिया भर के सब देशों और सब युगों के मसीहा हैं। लोकतंत्र और जनतन्त्र तो अहिंसा बिना जीवित ही नहीं रह सकता। हिंसा की आबोहवा से तो उसका दम घुट जाता है।

महात्मा जी की अहिंसा केवल हिंसा का अभाव या किसी को न मारना ही नहीं है। वह सिर्फ किसी की आत्मा को दुःख न पहुंचाने तक ही महदूद नहीं है। वह तो प्रेम का दूसरा नाम है। हर इन्सान दूसरे इन्सान से, हर मजहब दूसरे धर्मों से, हर कौम दूसरी कौमों से नफरत करना छोड़ कर मुहब्बत करे, यह अहिंसा है। इसी अहिंसा से आज के इन्सान उसके समाज और उसकी दुनिया में उसकी एक दुनियां और भाईचारे के सपने पूरे होंगे। ठीक उसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान में उसकी आजादी का सपना पूरा हुआ।

इसी से भंयरहीन, शोषण रहित नवीन सुन्दर संसार और मानव समाज का नवनिर्माण होगा। सत्य और अहिंसा से ही वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय संसार की समस्त जटिल समस्याएं सुलझ जायंगी अहिंसा में ही इतनी गतिशीलता, इतना विद्युत भंडार है कि वह समस्त संसार को एक साथ प्रकाशमान तथा मानव मात्र को शक्तिशाली कर सके।

आयदकरों की भारत को अभी बहुत आवश्यकता है।

समर क्षेत्र में एक नर्स

(पृष्ठ २० का शेष)

करते नदी को गुंजाते हुए बढ़ चले। मैं चुपचाप आकाश की ओर देखती खड़ी रही। अनजान है यह पृथ्वी, यह हवा, यह मिट्टी ... या जीवन........

युद्धभूमि से कराहों की आवाज कर्कश होकर गूंज रही थी। मैं कांप उठी। युद्धभूमि में से लाशों में से जिंदा लाशों को ढूंढना — यह काम मैं ने पहली बार आज प्रारंभ किया था। लाशों का इंतजाम किया था... पर यह न देखा था कि जिंदा आदमी लाश किस तरह बनता है, किस तरह चलती हुई गाड़ी के अन्दर पंजर ढीले किये जाते हैं, किस तरह दोनों सुइयों की तरह उसकी आंखें शून्य की ओर फैल जाती हैं......

मेरा हृदय हाहाकार कर उठा। मैंने अनुभव किया मैं बहुत भयानक जन्तु के बीच खड़ी थी। अच्छे थे वह जंगली जीदड़, कुत्ते ... भेड़िये जो इन पर टूट कर अपनी भूख मिटा लेने का इंतजार कर रहे थे......

क्या चाहता है जर्मनी ? यही है संसार को सभ्य बनाने की योजना ? कि लाशों के अंबार पर उसकी विजय का कल्याण चिन्ह बन कर स्वस्तिक चमका करे। मैं स्त्री हूं उस समय मन किया रो पड़ूं।

मैं लाशों पर बढ़ने लगी। किसी का बदन दो टूक होकर पड़ा था। किसी का हाथ कट गया था, किसी का आप आप से अलग हो गया था। मांस के उन लोथड़ों में मैं आगे बढ़ रही थी। पांव बार २ डगमगा जाते थे। किसी के मृत शरीर पर पांव पड़ते ही हृदय कांप उठता था। लगता था जैसे आज घोर अपराध हो गया था......

पर वह मांस, जो जीवन बन कर चलता था, आज टुकड़े-टुकड़े हो गया था... अब यह व्यर्थ था। अब वह किसी भी काम नहीं आ सकता क्योंकि इसमें से रक्त बाहर बह गया है...

उजाले में देखा। एक व्यक्ति मुंह के बल पड़ा था। बड़ी दया आगई मुझे। न जाने किसकी आंखों का तारा था। कैसा कीचड़ में पड़ा था। अबोध-सा, निर्बल।

मैंने उसे अपने सहारे उठा कर बिठा लिया। देखा वह एक जर्मन था। शायद सिपाहियों के ऊपर वह नायक था। यह उसकी वर्दी से जाहिर हो रहा था।

वह होश खो चुका था। बक रहा था — हिटलर भगवान है... जर्मनी का बोझ... संसार दास होगा। हमारी हुकूमत... कमीने रूसी... इन्हें कुचल दो... जीने न दो... ...उन्हें मिटा दो। उनका साम्राज्य छीन लो। जर्मन युवको। सारा संसार तुम्हारा है। उन्होंने वादा किया था। हिटलर ने वादा किया है... हम सारे संसार के शासक होंगे...

फिर कुछ रुक कर वह कह उठा —

'संसार असभ्य रह जायेगा। मैं मर रहा हूं। जर्मनी के बिना..... ओ... तुम्हें कितना सामान भिजवाया था, वह गांव में लूटा था। गांव में आग लगाई थी... बच्चों को कुचला था... अब वे बड़े होकर भी बदला नहीं ले सकेंगे...' और वह हंस पड़ा।

क्रोध से मैंने उसे छोड़ दिया। नर्क। पशु। मृत्यु के समय भी इसे अपने पापों का प्रायश्चित्त करने का ध्यान नहीं। पर फिर सोचा। इसके दिमाग का सूराख बन्द हो चुका है।

और मैं फिर उसको गर्म गर्म ब्रैन्डी पिलाने लगी, जिससे उसके हाथ पांव ढीले हो गये। और वह पृथ्वी पर लेट गया।

लोग अब स्ट्रैचर लेकर उठाने लगे थे। मैंने सोचा कि आवाज देकर उनमें से किसी को बुलाऊं।

उसी समय मेरा ध्यान टूटा। देखा। एक व्यक्ति धीरे-धीरे हिल रहा था। उसमें कुछ जान बाकी थी। मैंने सोचा। यह भी कोई जर्मन ही होगा।

समीप जाकर उसके सिर को थप-थपाया। सैनिक को कुछ भी ज्ञात नहीं हुआ। मैंने उसे सीधा किया और उठाया। फिर उसके मुख को देखा। वह बहुत घायल हो चुका था। उसकी आंखें बन्द थीं।

शीत बहुत भयानक थी। मैंने उसको, दूर से आते आलोक की जब किरणें फिर इधर आईं, देखा। वह रूसी था। इन लोगों की अभी-अभी यहां जीत हुई थी। बहुत से जर्मन भाग गये थे। बहुत से कैद हो गये थे। उजाला इधर-उधर चलते आदमियों से कह रहा था।

ब्रैन्डी पीते ही उसे कुछ होश आया। एकबारगी उसके नयन खुले। पर अंग हिला डुला नहीं। मुझे इस समय ऐसा लगा जैसे बच्चों को घायल चिड़िया के बच्चे के मुख पर पानी डाल कर उसे चैतन्य होते देख कर एक सुख-सा होता है।

उसने अधमुंदी आंखों से देखा। जैसे उसके शरीर में अब कुछ शक्ति संचरित होने लगी थी। उसके होंठ हिले, पर कुछ भी कह नहीं सका।

थोड़ी सी ब्रैन्डी और पिलाई। शक्ति कांपने लगी।

एक दम उसने पूछा: 'कौन जीता ?'

मैंने धीरे से कहा : 'तुम।'

वह कहने लगा : 'सच ?'

'सच। बिल्कुल सच।'

विभोर होकर जैसे सिर झुक गया।

फिर वह अपने आप कहने लगा : मुझे विश्वास था ... ... मुझे मालूम था ...... वह नहीं जीत सकते... वह कभी नहीं जीत सकते ... वे लुटेरे हैवान ...... वे मजदूरों को कुचल देंगे, वे सामंतों को खड़ा कर देंगे, फिर हमारे खेतों में कांटे उगा करेंगे, जिन्हें लोग कभी न खा सकेंगे, भूखे मरेंगे ...... गद्दार ...... गद्दार पैदा होंगे, वे अपने लिये दूसरों को चूस लेंगे......

मैंने देखा। उसके हृदय में कितनी श्रद्धा थी। अपने ऐक्य की कितनी संगठित भावना थी। वह मरते-मरते भी चेतना की शक्ति थी। उसके वे शब्द जैसे दुनिया भर के गुलाम और शोषित सुन रहे थे.....

और वह आधा बेहोश-सा, आधा चैतन्य, विभोर होकर कह रहा था : मेरी नई दुनिया... मेरे खेत ... सारा गांव... याद रखना... हम सब एक थे ... हमारे खेत ... वे लहलहाते खेत ... वे फूलों से भरे बागान ... वे हरे भरे मैदान... वे ट्रैक्टर ... वे सांझ के उठते शोर, वे सब के गाये हुए गीत ... वे सम्मिलित नृत्य ...

मैं सोच रही थी .. आबादी, गुरिल्ला युद्ध, संग्राम के दावपेंच, बहादुरी, जासूसी, देशभक्ति, हमले, जीवन और मृत्यु .. कहां, किस देश में नहीं है ... सब में यही है। शक्ति की भूख कहां नहीं है ? पर यह भेद कहां है ? तनख्वाह ले कर तो सब लड़ सकते हैं।

उसने फिर कहा: 'निकोलाला... मेरी निकोलाला। मैं तुम्हारे पास कभी नहीं लौटूंगा। पर तुम्हारा जीवन कभी कलुषित नहीं होगा ...'

वह फिर बेहोश हो गया था। मुझे याद आया। वह हिंदुस्तानी बीवी के लिए रो रहा था। वह अंग्रेज भी उसी की इज्जत के लिए लड़ा था। वह जर्मन उसे लूट का सामान भेजता था। और यह व्यक्ति मौत की गोद में भी उसी भावुकता से उसे याद कर रहा था।

एक क्षण को जैसे उसमें चेतना लौट आई।

'कौन हारा ?' उसने हठात् पूछा।

मैंने कहा : जर्मन हार गये।

सच कहती हो ! वह तो पहले ही से हार गये थे। जो पाप करता है उसकी हार वहीं से शुरू हो जाती है ....

वह हंसा।

यही तो ...... मैं जानता हूं। मेरा देश अपार है ... उसे कोई पार नहीं कर सकता .... उसका हर आदमी चट्टान है... यहां कोई गद्दार नहीं ... मैं जानता हूं .. जर्मनी नहीं जीतेगा।

मेरे यहां का बच्चा-बच्चा आबाद है, वहां वर्ग आजाद है ... न मर्द भिखारी है, न औरत वेश्या है ...

मैं किसान का बेटा हूं... निकोलाला मैं अपनी मर्जी से आया था। हम किसी के गुलाम नहीं हो सकते ... तुम्हारी आंखें। जीवन के ऊष्ण स्पंदन ... वह जिन्दगी ... मैं जा रहा हूं ... पर तुम तो रहना ...

मेरे घर ... मेरी नई दुनिया ... कोई नहीं... कोई नहीं लूट सकता मुझे। मेरा देश, रूस ... वाइलप्रथा, कोहकाफ, साइबेरिया ... सबके लोग मेरे साथ मैं सबका ... सब मेरी याद करेंगे ... ओह ! मैं कितना सुखी हूं .... वे जागीरदार वे पूंजीपति ... कभी नहीं .... जनता नहीं मिटेगी ... मैं नहीं मिटूंगा ...

और उस समय अंधकार की भीषण दाढ़ें अट्टहास कर उठीं और हमारी जलाई हुई बत्तियां ऐसी लगीं जैसे उन जबाड़ों में चमकते हुए दांत हों जो धरती को चबा जाना चाहते थे। लिलि ! मैं अजीब-सी पड़ गई। मैंने चौंक कर देखा। इस समय गाड़ियां चलने लगी थीं सैनिक लोग स्ट्रैचर लिये हमारी ओर बढ़ते आ रहे थे। सैनिक मर चुका था।

सच कहती हूं लिलि। बाकी सब मरे थे। तब वे मर गये थे। किन्तु यह एक आदमी नहीं था जो मर जाता। मुझे लगा यह एक खुशनुमा मौत थी। इस मौत के पीछे एक जिन्दगी का पैगाम है, इस मौत के पीछे एक नई दुनिया का ऐलान है ...... यह आदमी मरा है तब इसके हृदय में जिंदगी की तपिश है। इसकी मौत से कड़ी टूटती नहीं ...... बढ़ती है ......

और वह निकोलाला ... वह इस मृत्यु को सुन कर फिर प्रतिज्ञा करेगी। उसका यौवन वहां शराब की बोतल नहीं होगा। उसका नारीत्व एक आदरणीय प्रेयसी का सुख है, तो चरम सीमा में मातृत्व का शाश्वत गौरव ...

मैंने देखा जनता जीवित थी .... वह जीत रही थी ......

अब बर्फ घनी होकर गिर रही थी। रात का अन्धेरा कड़कड़ाने लगा था। हवा में कुछ गर्म सी भभक थी। मैं बैठी प्रतीक्षा कर रही थी। उस युद्ध भूमि में घायलों के बीच में ... जहां सैकड़ों योद्धा प्राचीन काल से लड़ते आये हैं, जहां सुंदरियों के पीछे, धर्म के पीछे, साम्राज्यों के लिए, पैदल, घोड़े पर, मोटर, टैंकों पर युद्ध हो चुके हैं ... पर आज इंसान ने इंसानियत के लिए युद्ध किया है...

और मैं सोचती हूं कि जिनकी पृथ्वी स्वर्ग नहीं है, नरक है, जहां आदमी जानवर है, वहां स्वर्ग की कल्पना छला करती है। मैं वह गाना सुनना चाहती हूं जो बेथोवन ने गाया है ... मौत का गान ... इस पुरानी दुनिया के ध्वंस में भी कितना सुख है ... मैंने देखा .... वह मौत जिंदगी की राह पर झाड़ू की तरह लगी थी, गलाजत मिटाने ! ..

मेरिया चुप हो गई थी।

★ खतरे की घंटी ★

प्रिय पाठकगण — आप आप तरह तरह के विज्ञापन देख रहे हैं और देखेंगे। किसी समाचार पत्र को उठाकर देखिये। कालम के कालम लम्बे चौड़े विज्ञापनों से भरपूर मिलेंगे जिनमें अधिकतर नामर्दों को मर्द बना देने वाली औषधियों तिले आदि के ही होते हैं। कोई २४ घण्टे कोई ७ दिन, कोई १० दिन में ही बिल्कुल गए गुजरे नामर्दों को मर्द बना देने का वादा करता है। कोई अपने खानदानी प्रयोगों की डींग मारता है। किसी को सिद्ध पुरुष, संन्यासी आदि नुस्खा बता गया था और ३ ही खुराक में नामर्द को मर्द बना देने की गारण्टी करता है। विज्ञापन की भाषा ऐसी चटपटी होती है कि रोगी तो रोगी, निरोगी और अच्छे अच्छे लिखे पढ़े विद्वान तक उन विज्ञापनों के जाल में फसे ही जाते हैं और अपने रक्त तथा पसीने की कमाई का बहुत कुछ भाग बरबाद करके सिवाय पछताने के और कुछ हासिल नहीं होता इसी तरह से नयी नयी चिड़िया इस बीसवीं सदी के विज्ञापनी जाल में फसती रहती हैं।

पाठकगण — जरा ध्यान से सोचिये, ऐसा क्यों होता है? इसका उत्तर और कारण स्पष्ट है।

भारत बीमार है

भारत माता की उन्नति का जिन नवयुवकों पर दारोमदार है। हाय, उनकी हालत रक्त के आसू बहाने के काबिल है। खराब सोसाइटियों ने उनको चिता चिता की तरफ झुका रखा है। हाय शोक — जिस भारत में भीम, अर्जुन, भीष्मपितामह, राणा प्रताप आदि वीर पुरुष उत्पन्न होते थे, जहा २५ से ५० वर्ष की अवस्था को तरुण अवस्था कहते थे आज उसी देश में ६० प्रतिशत ५० साल के अन्दर ही इस संसार को छोड़ कर चल देते हैं। दुनिया के नक्शे में एक भाग्यहीन भारत ही ऐसा देश है जहा १० २० नहीं, हजारों और लाखों की तादात में ५ साल से कम उमर दूध पीती बच्चिया भी विधवा कहला सकती हैं कोई भी नवयुवक अपनी आत्मा से इस का उत्तर नहीं पा सकता कि वह २५ साल की अवस्था तक पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन कर सका हो। २५ साल कहना तो स्वप्न की बात है। १५ साल में ही हमारे नवयुवक ऐसी औषधिया ढूढने लगते हैं।

प्रिय पाठकगण — जब हालत यह है तो क्यों न उन विज्ञापन बाज धूर्तों का जाल कामयाब हो, मसल मशहूर है कि डूबते को तिनके का सहारा। बस जब किसी पत्र में हमारे खोखले जेण्टलमेन ऐसा विज्ञापन देखते हैं तो ७ दिन में ही नामर्द से मर्द बनने की लालसा में फड़क उठते हैं। फिर नतीजा जो कुछ होता है आप लोगों पर विदित ही होगा, यदि हमारे कहने पर विश्वास न हो तो किसी अपने मित्र से पूछ सकते हैं जो ऐसे विज्ञापनों के फन्दे में फस चुका हो। हाय हाय। जब हम अपने कार्यालय में आने वाली प्रतिदिन की सैकड़ों चिट्ठियों पर दृष्टि डालते हैं तो हमारी आखों से उन नवयुवकों की हालत पढ़कर आसू निकल पड़ते हैं। कलेजा काप उठता है वह क्यों? केवल इस लिए कि आयुर्वेदिक विद्या के धुरन्धर विद्वान हमारे पूज्य ऋषि महर्षि भी जिन रोगों पर इस तरह छू मन्त्र की गारण्टी नहीं कर सके, शोक है कि आज इस बीसवीं सदी में निरक्षर भट्टाचार्य, दो-चार औषधिया इधर-उधर से बटोर कर, कुछ चादी के टुकड़ों के सहारे लम्बी-चौड़ी फर्जी डाक्टरी, वैदिक आदि की डिगरिया अपने नाम के साथ जोड़कर हमारे भोले-भाले नवयुवकों को जिस तरह अपने विज्ञापनी जाल में फंसा रहे हैं बल्कि कोई कोई तो परोपकार की दुहाई देकर अन्टसन्ट प्रयोगों तक को भी अपने विज्ञापनों में छाप कर नामर्द को मर्द बना देने की पूरी गारण्टी करते हैं। वह प्रयोग क्या है? भानमती का पिटारा। यदि किसी से न बने तो ताजा व ताजा विज्ञापक महाशय से मगा लें। बस पाच दस रुपये विज्ञापक महाशय की पाकेट में पहुचते ही कुल परोपकार का तमाशा खतम हो जाता है। दस बीस ही नहीं बल्कि हजारों पत्र ऐसे विज्ञापनी जाल में फंस कर हताश हुए नवयुवकों के हमारी दृष्टि के सामने मौजूद हैं। उन सब पत्रों पर विचार करते हुए हमारी यह प्रबल इच्छा हुई कि प्यारे नव युवकों को इस कपट जाल से बचाया जावे और इसी शुभ कामना को लेकर भारत विख्यात पुस्तक 'खजाना करामात' के प्रसिद्ध लेखक आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा के धुरन्धर विद्वान नपुसक रोगों के विशेषज्ञ ने लाखों छोटे छोटे ट्रेक्ट वीर्य सम्बन्धी रोगों पर आसाम, बगाल ही नहीं, बल्कि भारत के कोने कोने में मुफ्त बटवाये हैं और लेखक महाशय ने गवर्नमेंट सर्विस में एक उच्च पद पर रहते हुए भी ३२ साल तक अपने सतसग, व्याख्यानों, तथा सेवा द्वारा आसाम के लाखों नव युवकों की काया पलट दी।

* नपुसकता या नामर्दी *

नपुसकता रोग के सब से मुख्य तीन कारण हैं —हस्तमैथुन गुदामैथुन-अतिमैथुन।

१ हस्तमैथुन — आज कल के नामर्दों में अधिकाश सख्या हस्तमैथुन (हथलस) के द्वारा हुए नपुसकों की है। स्कूल के लड़कों में तो बहुत कम लड़के ऐसे भाग्यशाली मिलेंगे जिन्हें यह कुटेव (बुरी आदत) न पड़ी हो। इस बुरी आदत ने भारत के करोड़ों नव युवकों का सत्यानाश कर रक्खा है। शोक है कि कोई भी नव युवक इस बुरी आदत में फस कर अपने वीर्य को बरबाद करते समय यह नहीं सोच पाता कि मैं अपने ही आप अपने जीवन की ज्योति को बुझा रहा हूं। ऐ प्यारे नव युवक! क्या तू नहीं जानता कि इस बुरी आदत से तेरी जिन्दगी बरबाद हो जावेगी, मर्द होते हुए भी नामर्द हो जावेगा कोई भी बात सोचने के काबिल न रह सकेगा, बल्कि एक न एक दिन आत्म हत्या तक करने पर उतारू हो जावेगा। इस बुरी आदत से बचो और अपने मित्रों को भी बचाओ। सावधान!

२ — गुदामैथुन यह प्राकृतिक नियमों के प्रतिकूल सब से बढ़कर पाप कर्म है। इस बारे में तो हमारे ऋषियों ने यहां तक आज्ञा दे रक्खी है कि जहा पर ऐसा पाप कर्म हो दोनों के ऊपर सूखी लकड़िया डाल कर आग लगा देना चाहिये जिसमें दूसरों को शिक्षा मिले। सब से बूढ़े और मुख्य तः यही दो कारण नामर्द रोग की जड़ है।

३ — अतिमैथुन (अधिकता से) मैथुन करने वाले पुरुष यदि वीर्य पैदा करने और बढ़ाने वाली औषधियों का सेवन नहीं करते तो निश्चय ही वे भी कुछ दिनों में नामर्द बन जाते हैं। कारण स्पष्ट है — वीर्य शरीर में रहता नहीं फिर चैतन्यता ही कैसे हो थोड़ी बहुत हुई भी तो एक दम शिथिलता आ जाती है। स्त्री के सन्मुख शरम उठानी पड़ती है। ऐसे आदमी आयुर्वेद शास्त्र के लिखे अनुसार वीर्य को बढ़ाने वाली औषधिया प्रति वर्ष इस्तेमाल करें तो ७० ८० वर्ष की आयु तक भी स्त्री सुख भोग सकते हैं। दुनिया भर की वाहियात फजूल खर्चियों को बन्द करके अपने उस शरीर (जो एक बार जाकर फिर नहीं आता) की हिफाजत में पैसा खर्च करना आपकी बुद्धिमता का परिचय है।

प्रिय नवयुवको। सावधान। सावधान।

यदि आप महीना या साल दो साल बदकिस्मती से किसी ऐसी ही खराब सोसायटी में फस कर अपने को बरबाद कर चुके हों और परिणाम स्वरूप आपका दिल सुस्त रहता हो किसी काम में मन न लगता हो, थोड़े से परिश्रम से ही दिल में धड़कन, आखों के सामने अन्धेरा और सिर चकराने लगता हो, चेहरा पीला पड़ गया हो, शरीर सूख कर लकड़ी की तरह हो गया हो, नसें कमजोर पड़ गयीं हों, स्त्री प्रसंग में पूरा आनन्द न आता हो, और वीर्य रोगों के कारण यदि आप सन्तान का मुंह न देख सके हों तो विज्ञापनी जाल में फसने से पहिले आप हमसे पत्रव्यवहार करें या यहा पधारें। कार्यालय की आलीशान कोठी में आपके ठहरने आदि का सारा प्रबन्ध मुफ्त में होगा। दूसरे आपको कार्यालय की हैसियत तथा कारोबारके बारे में स्वयं अनुभव हो जावेगा। आप देखेंगे कि इतने बड़े कार्यालय के अंग्रेजिंग प्रोप्राइटर का व्यवहार छोटे व्यक्ति के साथ भी कैसा प्रदर्शनीय है। यह कार्यालय जनता की सेवा को ही अपना मुख्य धर्म समझता है अतः आज आसाम बगाल ही नहीं भारत के कोने २ में इसके लाखों प्रेमी मौजूद हैं। उनके अनुरोध पर ही 'बनाघरी' (पंजाब) में भी आलीशान कोठी बना कर अपना आफिस खोल दिया है जिस में पश्चिम भारत की जनता भी पूरा २ लाभ उठा सके।

हम प्रत्येक रोग का ठेके पर गारण्टी से भी इलाज करते हैं, यदि आपको हमारे इलाज से लाभ न हो तो आने जाने का व्यय भी कार्यालय ही देगा। यदि किसी कारण से आप यहां न आ सकें और इस कार्यालय पर आपके दिल में पूर्ण विश्वास हो तो आज से ही कार्यालय के मेडीकल बोर्ड की तैयार की हुई हजारों लाखों युवकों को पुनर्जीवन प्रदान करने वाली अमीर तथा सामर्थ्यवान पुरुषों के लिए सोना, मोती, कस्तूरी अम्बर आदि मूल्यवान पदार्थों से बनी हुई 'गोहर पिल्स' गोहर तिला पूरे ४० दिन का कोर्स मू० ५०) रु० आधा कोर्स २० दिन के लिए ३०) रु० या दूसरी दवा अमीर, गरीब सबके लिए 'अमृत टानिक पिल्स' अमृत तिला, पूरा कोर्स १०) आधा कोर्स ६) रु० महसूल आदि १-) पृथक। इनमें से कोई भी दवा अपनी सामर्थ्य के अनुसार सेवन करके सदा के लिए अपने आप को मर्द कहने के लायक बना लें। हमारी औषधियों से लाभ तो आपको २ ३ दिन में ही मालूम होने लगेगा। आप अपने शरीर की प्रत्येक नस में बिजली की सी लहर देख कर स्वय ही कह देंगे, परन्तु ४० दिन सेवन कर लेने पर कमजोर से कमजोर और हीन वीर्य पुरुष भी अपने आप को पूर्ण रूप से सामथवान पावेंगे। अधिक प्रशसा करना व्यर्थ है। प्रत्येक मौसम में इन औषधियों को सेवन कर सकते हैं। नोट कर लें —

नोट—जिस तरह से ९०% प्रतिशत पुरुष आजकल वीर्य सम्बन्धी रोगों में फसे हुए हैं ठीक उसी तरह से हमारी माताएं और बहनें भी योनि सम्बन्धि रोग प्रदर (ल्युकोरिया) आदि की शिकार हैं। फिर उत्तम सन्तान की आशा निराधार है। कार्यालय ने स्त्रियों के लिये भी "प्रदरी" और सुपारिपाक न० १ स्पेशल यह २ दवाएं बड़ी छानबीन से निकाली हैं। जहा आप अपने लिये सैंकड़ों रुपये खर्च कर डालते हैं। इन बिमारियों का भी ध्यान रखें। दोनों का मूल्य ४० दिन के लिये पूरा कोर्स १८) रु० आधा कोर्स १०) रु० है। आप इन औषधियों को सेवन कराके उनकी भी जान बचावें।

आवश्यक निवेदन—यदि आप ठीक से अपना इलाज कराने की इच्छा रखते हैं तो यह कार्यालय पूर्ण रूप से सेवा को तैयार है। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है। बालकपन और सन्तान के लिये ठेके पर भी इलाज होता है। आर्डर में [illegible] दें।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा [illegible]

हिन्द महासागर और भारतीय तट की रक्षा समस्या

(पृष्ठ १७ का शेष)

में आधुनिक ढंग का नौ अड्डा बनाया। जर्मनी ने हिंद महासागर में प्रवेश पाने के लिए बर्लिन से बसरा तक रेलवे-लाइन बनाने की योजना बनाई।

१६१४ में जब प्रथम महायुद्ध आरम्भ हुआ तब यह स्थिति थी। तीन ओर से ब्रिटेन को चुनौती मिल रही थी। लड़ाई समाप्त होने पर ईराक से जर्मनी को ब्रिटेन ने हरा दिया और मोसल के तेल-क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व दृढ़ किया। फ्रांस ने मेडागास्कर के अन्दर डीगो सारे में महान् नौ अड्डा बनाना आरम्भ किया। इसका उद्देश्य हिन्द महासागर पर कमान करना था। मसावा के नौ अड्डे को इटली ने मजबूत किया और मुसोलिनी ने गर्व से घोषित किया कि उसने ब्रिटिश यातायात को काट दिया है। भारत के पूर्व में जापान ने वर्साई-सन्धि के फलस्वरूप प्राप्त प्रशान्त के जर्मन द्वीपों पर अधिकार किया और ट्रक और यामा में नौ अड्डों का निर्माण किया। सिंगापुर के वर्चस्व को कम करने को लहर बनाने के लिए जापान ने स्याम से बात चलाई। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने हवाई द्वीप में पर्लहारबर में अपना शक्तिशाली अड्डा स्थापित किया। मिडवे, गुआम, और वेक द्वीप पर उसने नौ-स्टेशन कायम किए। चीनी समुद्र में इस प्रकार उसने अपनी स्थिति दृढ़ बना ली। ब्रिटेन ने इस के बचाव में प्रशान्त और हिन्द महासागर के द्वार सिंगापुर को मजबूत बनाया।

इस स्थिति में दूसरा विश्व महायुद्ध छिड़ा। फ्रांस के पतन के साथ इटली ने लड़ाई में प्रवेश किया। उसने सीधा भूमध्यसागर और लाल सागर में हमला किया। ब्रिटेन ने अनुभव किया कि अदन और सुडानपूर्व पर उसकी पकड़ ढीली हो गई है। जापान ने भी इसको अनुभव किया और उसने इसका लाभ उठाया। उसने पर्ल हारबर पर अमरीका के बेड़े को तोड़ कर कुछ सप्ताहों के अन्दर फिलीपाइन, गुआम, वेक द्वीप, मलाया को जीत लिया और सिंगापुर पर जापानी पताका फहरा दी। अन्डेमान और नीकोबार पर भी उसने अधिकार किया। सीलोन (लंका) उसका अगला लक्ष्य था, और इस समय बंगाल सागर में यदि अमरीका का बेड़ा न आता तो कुछ भी होना सम्भव था। इस कारण जापानी बेड़े को हिन्द महासागर से हटना पड़ा। यद्यपि जापानी पनडुब्बियां हिन्द महासागर और अरब सागर में चक्कर लगाती रहीं और ब्रिटिश व्यापारिक जहाजों को भारी खतरे में डुबोती रहीं। जापानी आक्रमण के समय भारत सर्वथा असुरक्षित था। ब्रिटिश बेड़ा भारत की रक्षा के लिए इधर आने में असमर्थ था। मेडागास्कर और विशेषतः डीगो सारे का नौ अड्डा यदि जापान के हाथ में आ जाता तो हिन्द महासागर पर उसका पूर्ण रूप से अधिकार हो जाता।

युद्धोत्तर काल में

युद्ध समाप्त हो गया। प्रश्न यह है आज की स्थिति में एडमिरलों और राजनीतिज्ञों का क्या कर्तव्य है? भारत की स्वाधीनता, एकता, अखण्डता, व्यापार और व्यवसाय इस पर निर्भर है कि हिन्द महासागर और उसके पार्श्ववर्ती समुद्रों पर उसका कमान और वर्चस्व किस मात्रा में है. इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों में कुमारी आशा अन्तरीप से केनिया, मारशस, बर्मा, मलाया में भारतीय बसे हुए हैं और उनकी भारत को चिन्ता होनी स्वाभाविक है। बगैर शक्तिशाली नौसेना के भारत उनकी सहायता नहीं कर सकता। प्रशान्त में जापान की जगह अमरीका ने ली है। अमरीका बेड़ा आज सर्वाधिक शक्तिशाली और विशाल है। चीन आज गृह युद्ध में फंसा हुआ है। पर वह हमेशा नहीं रहेगा। चीन की भी पुरानी नौ परम्परा है और उस की नौ आकांक्षाओं का कोई सीमा नहीं है। चीनी सागर पर आज अमरीकी बेड़े का राज्य है। भारत के पश्चिम में ईरान, अरब और ईराक के तेल क्षेत्रों में अमरीका का व्यापक हित है। इस लिए यदि अमरीका हिन्द महासागर पर अप्रतिहत अधिकार चाहे तो आश्चर्य नहीं। अदन और सिंगापुर पर आज भी ब्रिटेन का अधिकार है। एंग्लो अमरीका का हिन्द महासागर पर वर्चस्व भारतीय स्वाधीनता के लिए भय है। महत्वपूर्ण बात यह है कि सोवियत रूस ईरान या ईराक की राह हिन्द महासागर में पैर बढ़ाने को अत्यधिक उत्सुक है। पिछली लड़ाई में सोवियत रूस को बसरा और ईरान की राह मित्रराष्ट्र युद्ध-सामग्री पहुंचाते रहे। सोवियत एशिया का तेजी से विकास हो रहा है और उसको निकट ही कोई सामुद्रिक मार्ग चाहिए। व्लाडिवास्टक सोवियत मध्य एशिया के लिए बहुत दूर पड़ता है। भारत को इस ओर सतर्क दृष्टि रखनी चाहिए। पाकिस्तान की स्थापना से भी भारत को सकट बढ़ गया है। इन्हीं अड्डों से भारत पर हमला हो सकता है। और स्थित अड्डों का आज की लड़ाई में बहुत महत्व है। भारत के तट के पास द्वीप नहीं हैं। सिंगापुर, मारिशस, सोकोत्रा और अदन पर इस लिए भारत के मित्रराष्ट्र का अधिकार होना आवश्यक है। भारतीय बेड़े का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह इन को दुश्मन के हाथ में न पड़ने दे। इस दृष्टि से भारत की सामुद्रिक सीमा पूर्व में सिंगापुर, दक्षिण में त्रिनकोमली, और चागो द्वीप, दक्षिण पश्चिम में केपटाऊन, मेडागास्कर, और मारिशस, पश्चिम में मोजम्बीक, सोकोत्रा और अदन है। भारत की इस सीमा की रक्षा करना भारतीय नौ-योजना का एक आवश्यक अंग होना चाहिए। इसी अवस्था में भारत की स्वाधीनता और उसके स्वतन्त्र अस्तित्व की गारण्टी दी जा सकती है। भारत यह उद्देश्य बर्मा, सीलोन, पाकिस्तान, मलाया से सन्धियां करके और आग्नेय एशिया में फेडरेशन की स्थापना करके सिद्ध कर सकता है। आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, मेडागास्कर के लिए फ्रांस से, हिन्द चीन के लिए वीतनाम, सुमात्रा की समुद्रधुनी के लिए सुमात्रा, थाईलैण्ड और हिन्देशिया से भारत को सन्धियां करनी चाहिए। १६ वीं सदी से १८ वीं सदी तक स्पेन और पुर्तगाल सबसे बड़ी विश्व शक्ति थे। पर ब्रिटेन ने स्पेन में जिब्राल्टर, इटली तट पर माल्टा, तुर्की तट पर साइप्रस, मिश्री तट पर पोर्ट सईद, अरेबियन तट पर अदन भारतीय, तट पर बम्बई, सीलोन तट पर कोलम्बो, मलाया तट पर पेनाम और सिंगापुर और चीन तट पर हांगकांग एक सदी में प्राप्त किया और इस प्रकार १६ वीं सदी में विश्व की सर्वोपरि और सर्वोच्च शक्ति हो गया। इसी प्रकार भारत को भी नियन्त्रण या प्रभाव क्षेत्र स्थापित करना चाहिए।

तीन बेड़े

भारत पुराना होते हुए भी नया राष्ट्र है। यदि ५० साल के लिए वह एक विशाल योजना बना कर अपनी नौ सेना का निर्माण करे, तो भारत पूर्ण रूप से हिन्द महासागर का स्वामी हो सकेगा। इसके लिए भारत को अन्डमान, त्रिनकोमली और मारीशस में तीन बेड़े रखने चाहिये। सीलोन भारतीय फेडरेशन में सम्मिलित हो सकता है। मारीशस को तो अवश्य भारतीय नियन्त्रण में लाना ही चाहिए। ये तीन बेड़े पूर्वीय दक्षिणी और पश्चिमी अंचल की रखवाली करेंगे। इन तीन बेड़ों के निर्माण का व्यय भारतीय स्वाधीनता के मूल्य से अधिक नहीं है। इन तीन बेड़ों के बनाने में प्रति वर्ष १२००,००० पौंड पूंजी व्यय होगी, और २५ करोड़ रु० प्रति वर्ष उनको कायम रखने का व्यय होगा। यह व्यय ऐसा नहीं है, जो भारत वहन

न कर सके। इसके साथ ट्रम्बे द्वीप मारमागोआ, कालीकट, विजगापट्टम, सलाया या सिक्का (जामनगर) और ओखा (बड़ौदा) में जहाज बनाने के अड्डे स्थापित करने चाहिएं। नौसेना का निर्माण बगैर औद्योगिक उन्नति के सम्भव नहीं है। इन दोनों का अन्योन्य सम्बन्ध है। प्राचीन काल के समान आधुनिक युग में भी भारतीय व्यापारिक बेड़ा जंगी जहाजों द्वारा सुरक्षित होना चाहिए। व्यापारिक अभियान के लिए गये व्यापारी सुरक्षित होते थे और सशस्त्र रक्षक और गार्ड उनके साथ रहते थे। अब भी व्यापारिक जहाज और सशस्त्र जंगी बेड़ा अलग अलग नहीं रहने चाहियें। इनमें पहले के समान सम्बन्ध होना आवश्यक है।

आवश्यक है

अणु बम के युग ने नौशक्ति और नौ सेना के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। १९४६ में बिकनी द्वीप समूह पर अमरीका द्वारा किए गए परीक्षणों से सिद्ध है कि नौ-जहाज अणु बम के विरुद्ध संरक्षण दे सकते हैं। जहाजों पर रखे जानवरों में से ९० प्रतिशत बच गए और १५-२० प्रतिशत ही जहाज नष्ट हुए। अणु बम से बचने के लिए जल के अन्दर जहाजों में शहर बसाने का नवीन युग आ रहा है। मानव-समाज को अणु बम और इससे भी अधिक भयानक और विनाशक शस्त्रास्त्रों से रक्षा के लिए भविष्य में नौ-जहाज ही उपयोगी सिद्ध होंगे। अतः भारत को दूर भविष्य पर दृष्टि रख कर हिन्द महासागर की उत्तुंग लहरों पर पूर्ण स्वामित्व और अधिकार स्थापित करने के लिए शक्तिशाली भारतीय नौ-सेना और बेड़े के निर्माण में लग जाना चाहिए। भारत की स्वाधीनता भारतीय जंगी बेड़े के निर्माण में निहित है, यह शब्द सदा हृदय-पट पर अंकित रहना चाहिए।

———

भारत के विरुद्ध एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र

[पृष्ठ ४७ का शेष]

से लेकर ईरान तक अरब साम्राज्य और आगे लाहौर तक मुस्लिम साम्राज्य स्थापित हो जाय तो मोक्ष सुरक्षित रहेगा। इस समय जरूरत है भारत के मुसलमानों को यह बताने की कि वे भारतीय हैं। मुसलमान हैं यह तो ठीक है परन्तु क्या इसी नाते वे 'अरबों की गुलामी' पसन्द करेंगे? फिलस्तीन में सिवाय भावुकता और भारतीय मुसलमानों की चापलूसी के भारत का और कोई स्वार्थ नहीं।

पाकिस्तान स्पष्ट रूप से अरबों की सहायता कर रहा है। भारत लाख चापलूसी करने तथा प्रत्येक अरब देश में मुसलमान राजदूत भेजने पर भी पाकिस्तान से अधिक सहानुभूति नहीं पा सकता। मुझे अपने अरब मित्रों — अमेरिका में तथा मध्यपूर्व से पत्रों द्वारा — से ज्ञात हुआ है कि — 'हिन्दू और यहूदी ही इस झगड़े की जड़ हैं' — वाक्य अरब देशों में सब से अधिक प्रचलित है। पंजाब से भगायी सैंकड़ों हिन्दू युवतियां ईराक, सीरिया, फिलस्तीन ईरान आदि में बेची गयी हैं और इस मुस्लिम देशों में यहूदी-विरोधी भावना के साथ-साथ हिन्दू विरोधी भावना भी बढ़ती जा रही है। काश्मीर के मामले में अरब राष्ट्रों तथा संयुक्तराज्य ने साफ साफ पाकिस्तान का पक्ष लिया है। पाकिस्तान से सहायता पाने के कारण अरबों ने तथा स्वार्थ के कारण अमेरिका ने।

तेल के अतिरिक्त दूसरा कारण है रूस। मित्रराष्ट्र संघ द्वारा प्रभाव डलवा कर अमेरिका ने ईरान से रूसी सेना को तो निकल जाने पर विवश कर दिया परन्तु स्वयं अमेरिका की सेना ईरान आइसलैंड ग्रीनलैंड, यूनान आदि में मौजूद है। जर्मनी यूनान, ईरान तथा जापान को सशस्त्र किया जा रहा है। उत्तरी अफ्रीका में लीबिया में एक विशाल हवाई अड्डा बनाया है, जहां से समस्त बाल्कन प्रदेशों की राजधानियां ६०० मील की मार के अन्दर आ जाती हैं। उधर साउदी अरेबिया में जहरान नामक स्थान में एक शक्तिशाली हवाई अड्डा बनाया गया है जहां से रूसी बाकू के तेल के कारखाने तथा काश्मीर एक ही मार में आ जाते हैं। जहरान का अड्डा मध्यपूर्व में अमेरिकन "सुरक्षा" का केन्द्र है। यही स्थिति जापान, चीन तथा दक्षिण कोरिया में है। तात्पर्य यह है कि चारों ओर से रूस को घेरा जा रहा है। इस घेरे में काश्मीर का महत्व है।

काश्मीर के मामले में भी [illegible] ने [illegible] [illegible] के [illegible] और [illegible] [illegible]

काश्मीर की रूस से अपनी "सुरक्षा" के लिए चाहते हैं। रूस जो हौवा समझते तथा हर मामले में "सुरक्षा" पुकारने में भारत ने भी दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों का ही यथानुकरण किया है।

परराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत का एक और उद्योग संघ की सिक्योरिटी कौंसिल में सदस्यता प्राप्ति की चेष्टा थी। आस्ट्रेलिया और पोलैंड के स्थान पर दो सदस्य चुने जाने वाले थे। आस्ट्रेलिया के स्थान पर भारत का हक था, एशिया के प्रतिनिधित्व के नाते परन्तु ब्रिटेन के दबाव के कारण वहां तो भारत ने एतराज नहीं किया और कनाडा को चुन लिये जाने दिया, परन्तु पोलैंड के स्थान पर अपना नाम पेश कर साथ दिया। पोलैंड पूर्वी युरोप का प्रतिनिधित्व करता था और यही न्यायोचित था कि पूर्वी युरोप का ही अन्य सदस्य चुना जाता। युक्रेन के मुकाबले में जिद्दी भारत ७ सप्ताह तक जुटा रहा अंत में हार गया। क्या हमारी प्रतिष्ठा बढ़ी? हमें सदा ही अक्ल देर में आती है।

भारत के लिए अत्यन्त संकटपूर्ण

भविष्यवाणी करना मेरा कर्तव्य नहीं परन्तु स्थिति का परिवेक्षण करने के उपरान्त जो स्पष्ट दिखाई देता है, वह यह है — काश्मीर के मामले में भारत की हार होगी, भारत को काश्मीर छोड़ना पड़ेगा। फिलस्तीन का बंटवारा नहीं होगा, अमेरिका और ब्रिटेन नहीं होने देंगे। उधर यदि रूस ने सचमुच यह देखा कि अरब तथा मुसलमान उसके हाथ से निकले जा रहे हैं तथा पाकिस्तान के जरिए काश्मीर होते हुए अमेरिका उसकी सरहद पर आ गया है तो खुल्लमखुल्ला अरबों की शत्रुता मोल ले लेगा। फिलस्तीन में यहूदियों को सहायता देगा अरमानियों का तुर्की के विरुद्ध, अजरबैजानियों को ईरान के विरुद्ध तथा अफगानों को पाकिस्तान के विरुद्ध उभाड़ेगा। अमेरिका और ब्रिटेन की शह पाकर फ्रेंच अफ्रीका से लेकर पाकिस्तान तक सारा मुस्लिम जगत अत्यन्त शक्तिशाली हो उठेगा। अवश्य ही रूस के विरुद्ध एक मोर्चा बनाने के लिए, परन्तु यह स्थिति भारत के लिए भी अत्यन्त संकटमय हो सकती है।

तीसरे युद्ध में अतलांतक तथा प्रशान्त महासागर का महत्व बहुत कम होगा। युद्ध मुख्यत वायु में लड़ा जायगा और उसके लिए उत्तरी ध्रुव का मार्ग उपयुक्त होगा। स्थल युद्ध मुख्यत मध्य ° में होगा तथा जल युद्ध भूमध्यसागर व हिंदसागर में।

ऐसे संकट के समय भारत की परराष्ट्रीय नीति को देखने से ज्ञात होता है कि वह बहुत कुछ अंश में ब्रिटेन अमरिका की हिमायत तथा कमयुनिज्म को हौवा समझने वाली है। गृहनीति अब भी

अनुचित रूप से मुसलमानों की चापलूसी करने की है, जिसका अन्तर्राष्ट्रीय नीति में बहुत बुरा असर पड़ता है।

हमें एक ऐसी नीति अपनानी होगी जो सबसे स्वतंत्र हो तथा शुद्ध रूप से न्याय पर आश्रित हो। संसार में इस समय दो महाशक्तियां हैं, अमेरिका तथा रूस। यदि हम इन दोनों की अच्छाइयों से शिक्षा लें, और एक मध्यवर्ती नीति को ग्रहण करें तो हमारा कल्याण है।

अमेरिका का सबसे बड़ा आकर्षण आर्थिक वैभव तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता बड़ी अच्छी चीज है, परन्तु इसे यदि अबाध छोड़ दिया जाय तो यह दूसरे की स्वतन्त्रता का भक्षण करती है। रूस का सबसे बड़ा आकर्षण आर्थिक समानता तथा जातिपाति का पूर्णतया अभाव है यदि संसार के युद्ध-ग्रस्त इतिहास को टटोला जाय तो मुख्य कारण जातीय अभिमान तथा जातीय घृणा ही दिखाई देगा।

भारत को आवश्यकता है एक जाति-पाति विहीन समाज की- जिसमें सब नागरिकों को उन्नति करने का न केवल समान अवसर मिले, वरन् जिसमें यथार्थ समानता का आस्वादन भी हो। भारत को सचमुच साम्यवाद (अथवा समाजवाद कह लें) की जरूरत है परन्तु भारत भी दूसरे यूरोपीय देशों की तरह भूल कर रहा है। संसार की समस्याएं अब इतनी विषम हो चुकी हैं तथा आबादी इतनी बढ़ गई है कि आगामी युग समाजवाद का होना आवश्यक है। समय की इस चेतावनी को रूढ़िवादी उद्योगपति नहीं समझ रहे हैं और वे अन्तिम दम तक देशभक्त समाजवादियों का विरोध करते रहे हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जनता कराह उठती है, बगावत करती है, और कम्युनिस्ट इससे लाभ उठा कर कब्जा कर लेते हैं। यूरोप के पश्चिमी राष्ट्रों की यही बदनसीबी है कि वे देशभक्त समाजवादियों (सोशलिस्ट पार्टियों) से सहयोग नहीं करते — अमेरिका भी उन पर दबाव डालता है। हालांकि ब्रिटेन की सरकार पूंजीवाद और समाजवाद का मिश्रण है, परन्तु तो भी अमेरिका उससे खुश नहीं। अंत में समाजवादी हार कर साम्यवादियों से मिल जाते हैं। भारत में भी यही हो रहा है। भारत सरकार समाजवादियों को ठुकरा रही है। परिणाम यह होगा कि अराजकता बढ़ेगी और उससे लाभ उठावेंगे कम्युनिस्ट।

देश की रक्षा और हमारी राष्ट्रीय सेना

(पृष्ठ ४६ का शेष)

बनाने वाली फैक्टरियों में युद्ध के समय ३,०० अंग्रेज काम कर रहे थे परन्तु अब उनकी घातक हलचलों को देख कर केवल ८० अंग्रेज उनमें बाकी रहने दिये गये हैं। भारत सरकार ने शीघ्र ही इन फैक्टरियों को पूर्णतः भारतीयकरण करने का फैसला किया है। केन्द्रिक सरकार ने इन फैक्टरियों में कर्मचारियों की संख्या पौने दो लाख से घटा कर ४० हजार कर दी थी, परन्तु अब युद्ध के बादल आकाश पर मंडराते देख कर पुनः भर्ती प्रारम्भ की जा रही है।

स्थल सेना के सही सही आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। पर सरकार का ध्यान इसे भी सुदृढ़ व परम शक्तिशाली बनाने की ओर है। सीमाओं का प्रश्न आज भारत के लिए प्रथम समस्या है। साढ़े चार सौ मील लम्बी सीमा [काश्मीर व पाकिस्तान] आज एक ओर उपद्रवग्रस्त क्षेत्र है। पूर्वी पाकिस्तान से त्रिपुरा रियासत व आसाम की ओर सशस्त्र लोगों का आक्रमण जारी है। पूर्वी पंजाब के गावों पर पश्चिमी पंजाब की ओर से हमले हो रहे हैं। किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध के छिड़ जाने पर भारत को अनेक शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा।

पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध अड्डा बनाया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय विचार रखने वाली सोशलिस्ट नेत्री श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय को भी यह कहना पड़ा है —

"पाकिस्तान आज शत प्रतिशत मुस्लिम राष्ट्र नहीं बल्कि पुलिस राज बन चुका है जहां आंग्ल अमेरिकन देश अपने आर्थिक व फौजी अड्डा बनाने में व्यस्त हैं।"

"यदि भविष्य में आंग्ल-अमेरिकन सीमाएं टर्की, ग्रीस, ईरान से बढ़कर सिंध नदी [पाकिस्तान] तक बढ़ गईं तो आश्चर्य की कोई बात नहीं।"

उन्होंने अन्त में यह भी ध्वनित किया है कि देश के विभाजन के पीछे एक भारी षड्यन्त्र था। कल सम्भव है कि वे पाकिस्तान से अपनी पिस्तौल को दिल्ली की ओर तानें !!

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आज उनकी ही आवाज कीमत व महत्व रखती है जिनकी भुजाओं में बल है और जिनकी जेबों में परमाणु शक्ति है। भारत ने भी परमाणु शक्ति के अनुसंधान की ओर कदम बढ़ाया है। देश यह देख रहा है कि क्या भारत के वैज्ञानिक समय के साथ उठ कर इस उद्देश्य की पूर्ति कर सकेंगे ?

———

टेलीफोन ५०७१ **पर्ल क्लोरियम आई ड्राप** (रजिस्टर्ड) तार का पता क्लोरियम देहली

अन्धे नेत्रों को पुनः ज्योतिर्मय बनाती है

—प्रमाण—

अनगिनत प्रशंसा पत्रों एव सर्टीफिकेटों में से कुछ नवीनतम पत्रों का सार

मोतिया बिन्द—खान बहादुर फतेहुल्मुल्क इज्जत अली खान साहिब प्रधान मन्त्री स्वात स्टेट—पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड के प्रयोग से मेरे नेत्रों को अत्याधिक लाभ हुआ। मैं इस औषधि का आभारी हूं।

अन्धे नेत्र पुनः ज्योतिर्मय हो गए—श्रीमान काका राव साहिब जनरल मर्चेंट ईस्ट कैम्प नं० ११/८ बायसराय रोड, देहरादून—मेरी धर्मपत्नी के नेत्र पूर्णतया अन्धे हो चुके थे पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड के प्रयोग से पुनः ज्योतिर्मय हो उठे।

हाई मायोपिया—डा० सैयद अब्दुल अली साहिब MBBS प्रो० मैडिकल कालेज कलकत्ता—पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड का मैंने स्वयमेव प्रयोग किया जिससे मेरी नेत्र ज्योति में वृद्धि हुई। यह औषधि नेत्रों के लिए सर्वोत्तम है। कृपया एक दर्जन छोटी शीशी मूल्य २॥।) रु० (दो रु० बारह आने) वी० पी० द्वारा भेज दें।

मोतिया बिन्द दूर—हाफिज अब्दुल अजीज साहिब अत्तर व्यापारी दरवाजा मिट्याबुर्ज कलकत्ता—पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड के प्रयोग से मेरे नेत्रों का मोतिया बिन्द पूर्णतया जाता रहा। एक बड़ी शीशी मूल्य ५) रु० तुरन्त भेज दें।

पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड—एक सच्चा व जीवित जादू है। श्री धर्मपाल साहिब हनुमान आयल मिल्स पोस्ट बाक्स नं० ४४० पो० फरमेसा जि० (मानभूम) की चिट्ठी का सार। मैंने इससे पूर्व पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड की आठ शीशियां मंगवा कर स्वयं व अन्य नेत्र रोगियों पर प्रयुक्त कीं। औषधि क्या है? एक अच्छा एवं जीवित जादू है। आशातीत लाभदायक है जिसकी न तो प्रशंसा की जा सकती है और न ही मूल्य चुकाया जा सकता है।

५७५००० से अधिक नेत्रों के असाध्य रोगी लाभ उठा चुके हैं

विशुद्ध भारतीय जड़ी बूटियों और अत्यन्त मूल्यवान् द्रव्यों के मिश्रण से बनाई जाती है।

मूल्य

स्पेशल पोटेंसी — १॥।) रु० नार्मल पोटेन्सी बड़ी शीशी ५) रु० छोटी शीशी २॥।) रु०। डाक व पैकिंग व्यय अलग।

प्रयोग विधि — प्रत्येक मात्रा में शीशी के साथ होगी। स्पेशल पोटेन्सी की औषधि रोगों की चिकित्सा करने में नार्मल पोटेन्सी की अपेक्षा १/३ समय लेती है।

लाभ

जो पैदाइशी अन्धे के नेत्रों के सिवाय नेत्रों के सब रोगों अर्थात काला मोतिया बिन्द, मोतिया बिन्द सब प्रकार का, चेचक से नष्ट हुए नेत्र, आंख का बैठ जाना, टैंट (आंख का डेला बाहिर निकल आना) पुतली का फट जाना, नेत्र का चोट से नष्ट होना, नाखूना, जाला, फोला, कुकरे, पड़वाल, हाई मईयोपिया, प्रत्येक प्रकार का मायोपिया। आंख की खारिश, आंख का नासूर, धुन्द, रतौंद (रात्रि-समय दिखाई न देना) दिन-अन्धा (दिन को न दीखना) ऐनक लगाने की आदत, ढलका, पेरी, नेत्रों से पानी बहना, काली पुतली का वर्म, नेत्र दुखना, श्वेत स्थान का वर्म। पुतली का सिकुड़ जाना, फैल जाना इत्यादि को ठीक करती है। यदि चंगे भले नेत्रों में भी सप्ताह में एक या दो बार डाली जाए तो नेत्रों में कभी कोई रोग नहीं होगा अपितु नेत्रज्योति नार्मल रहेगी।

पच्चीस वर्षों से अपनी अमर प्रसिद्धि के कारण संसार के कोने २ से प्रशंसा प्राप्त कर रही है

सब अंग्रेजी औषधि विक्रेता बेचते हैं या निम्न पता से मंगवाए। नेत्र रोगियों को चाहिए कि डा. एन. आर. शर्मा आविष्कारक पर्ल क्लोरियम आई ड्राप रजिस्टर्ड व स्वामी पर्ल एण्ड कम्पनी रजिस्टर्ड की बहुमूल्य सम्मति और नेत्रों का परीक्षण प्रातः ६ से ११ बजे तक मुफ्त करवा कर लाभ उठाए।

दिल्ली के लिये एजेन्ट्स—मैसर्ज देसराम एण्ड ब्रदर्स, निकट मार्गेयिय पैलेस चांदनी चौक। मैसर्ज नवटैरियन फार्मेसी, निकट मार्गेयिय पैलेस, चांदनी चौक। मैसर्ज नारायणदास भगवानदास चांदनी चौक मैसर्ज रंग फ़ैन्ड्स एण्ड को० निकट फव्वारा चांदनी चौक। मैसर्ज देहलवुरा एण्ड क० फतेहपुरी। मैसर्ज देहली ब्रादर्स चांदनी चौक। मे० जगदीश एण्ड को० चांदनी चौक। डा० ईश्वरचन्द चांदनी चौक। मे० हैल्थ एण्ड कम्पनी चांदनी चौक। मे० कुमार ब्रादर्स चांदनी चौक। मे० मोहन ब्रादर्स चांदनी चौक। मे० मैडीको कैमिस्ट, निकट फव्वारा। देहली ड्रग एजेन्सी चांदनी चौक। दी मैडीकल स्टोर्स चांदनी चौक। मैसर्ज जे० हन्स कैमिस्ट चांदनी चौक। हीरो ब्रादर्स कैमिस्ट चांदनी चौक।

रीगल कैमीकल कम्पनी, खारी बावली। इण्डिया कैमीकल कम्पनी, खारी बावली। मैसर्ज चतुर्भुज एण्ड ब्रादर्स कैमिस्ट, सीस गंज के सामने, चांदनीचौक। मैसर्ज डी० गोपाल एण्ड कम्पनी कैमिस्ट, चांदनीचौक। मैसर्ज एम० एल लक्ष्मी एण्ड सन्ज कैमिस्ट, चांदनी चौक। डा० डी० एम० सोनी कैमिस्ट मेनबाजार पहाड़गंज नई दिल्ली। डा० रामसरूप मेन बाजार पहाड़गंज नई दिल्ली।

अमृतसर के लिये स्टाकिस्ट : मैसर्ज लक्ष्मी फार्मेसी मठ्ठा मल स्ट्रीट, लोहगढ़ अमृतसर शहर।

मैनेजर पर्ल एण्ड कंपनी (रजिस्टर्ड) फ्लैट नं० ३४, कारोनेशन होटल, फतेहपुरी (H. M. D.) चांदनी चौक, दिल्ली।

अंगूठी का मशहूर कारखाना हमारे यहां अंगूठी गिंट धातु व नगदार तथा मीनावाली, मुलम्मे का फैन्सी जेवर थोक भाव पर मिलता है सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये। चन्द्र मैटिल वर्क्स गली परीपच मथुरा।

जवाहर होजरी फैक्ट्री किनारी बाजार आगरा के शेरमार्का मोजे, मफलर व सूटर तथा लाला बांड वाला कलावा टोपा अति उत्तम, सस्ते व मजबूत होते हैं। एक बार परीक्षा कीजिए।

तितली ड्राप
बूट पॉलिस

भारतीय पूंजी से भारतीय श्रमिकों द्वारा तैयार किया हुआ। एक बार प्रयोग करने पर सदैव के लिए ग्राहक बन जाएंगे।

जय भारत केमिकल इनडस्ट्रीज लि०
दिल्ली तथा आगरा।

---

५००)
प्रति मास कमाइये
(चप्पल एजेंसी)

५००) प्रति मास कमाने की इच्छा रखने वाले एजेंटों और स्टाकिस्टों की आवश्यकता है जो कि सुप्रसिद्ध सुन्दर और टिकाऊ चप्पलों और सैंडिलों की बिक्री कर सकें। नमूने और नियमों के लिए कृपया लिखिए—

जे० के० लेदर वर्क्स,
पो० ब० २८६, कानपुर (यू० पी०

अग्नि बीमा—समय की महान आवश्यकता

[श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त]

लेखक

"हानि उठाने वाले ही व्यक्ति ही बीमे का लाभ प्राप्त करते हैं क्योंकि उनकी क्षति पूर्ति उसके द्वारा होती है' यह वास्तव में अत्यन्त अशुद्ध विचार है। इसका कारण मनोवैज्ञानिक है। प्राय मनुष्य हरएक वस्तु को अपनी निजी लाभ हानि की दृष्टि से ही देखता है। यह विचार गलत है कि जिसको बीमा कम्पनी से आग लगने पर क्षतिपूर्ति के लिए रुपया मिलता है, उसको ही बीमे का लाभ मिलता है। अग्नि बीमे के सम्बन्ध में तो यह बात बिल्कुल ठीक नहीं है। जिस दुर्घटना के लिए बीमा कराया जाता है, उसके घटने के उपरान्त लाभ की कोई सम्भावना नहीं है। लाभ प्राप्ति की आशा कितनी निरर्थक है, यह तो इसी से प्रत्यक्ष हो जाता है कि दुर्घटना के उपरान्त बीमा कराने वाले को केवल उसी सीमा तक धन प्राप्ति होती है, जितनी कि उसकी क्षति हुई है अग्नि दुर्घटना किसी भी प्रकार से आय का साधन नहीं है अत आग लगने पर क्षति पूर्ति का वायदा (लिखा पढ़ी) उतना ही मूल्यवान है, जितना ऐसे अवसर पर प्रत्यक्ष धन प्राप्त करना।

जोखिम भिन्न भिन्न प्रकार की होती है। बीमे में हमारा सम्बन्ध अनिश्चित जोखिम से ही है अर्थात ऐसी 'जोखिम' जिसमें हानि की सम्भावना तो सदा से है, परन्तु निश्चय नहीं है और जिसके होने से हानि हो सकती है। उदाहरणार्थ जब एक व्यक्ति अपनी सम्पत्ति का अग्निबीमा कराता है तो उसे दुर्घटना होने या न होने का कोई निश्चय तो रहता ही नहीं है। इस अनिश्चित अवस्था में वह सोचता है कि यदि कोई अवाञ्छनीय दुर्घटना हो जायेगी तो वह बीमे द्वारा पूर्णतया सुरक्षित है, क्योंकि ऐसी स्थिति में उसको क्षति पूर्ति बीमा कम्पनी कर देगी। यही विचार है, जो उसे बीमा करने को उत्साहित करता है।

दुर्घटनाओं से बचाने का शुल्क

यह तर्क किया जा सकता है कि यदि बीमा कराने वाला लगातार उसका शुल्क (प्रीमियम) देता रहता है और उसे कुछ उसका बदला नहीं मिलता, तब तो इस प्रकार उसकी हानि ही हो रही है। इस तर्क में भ्रम की सम्भावना है। लाभ रुपये के अथवा किसी ऐसी ही अन्य ठोस वस्तु के रूप में ही होना जरूरी नहीं है। इसकी गणना तो उन खर्चों में की जानी चाहिए जो सम्पत्ति को आपत्ति एवं दुर्घटना से बचाने के लिए होते हैं। कई पारिवारिक चिकित्सक मासिक वेतन तथा भत्ता पर सेवा लेते हैं और आवश्यकता के समय परिवार के किसी भी व्यक्ति का निःशुल्क इलाज करते हैं उन्हें यदि किसी माह में परिवार के सब व्यक्तियों के स्वस्थ रहने के कारण औषधि इत्यादि न देनी पड़े तो हम यह नहीं कह सकते कि उस माह में उनको दिया गया रुपया व्यर्थ गया या वह हानि तथा फिजूल खर्ची हुई। वास्तव में तो वह उस सुविधा या प्रबन्ध का मूल्य है, यदि आप कभी भी किसी रोग से ग्रस्त हो जायें तब आप को चिकित्सक की सहायता तुरन्त प्राप्त हो सकेगा। इसका दूसरा उदाहरण चौकीदार के वेतन से दिया जा सकता है, जो रात्रि को जाग कर चोर-डाकुओं से हमारे मकान तथा धन दौलत की रक्षा करता है। यदि घर में चोरी या डाका न पड़े तो क्या उसके वेतन में जो व्यय हुआ वह व्यर्थ गया और हमें हानि हुई। इसी प्रकार बीमे का शुल्क (प्रीमियम) भी उस सुविधा का मूल्य है जिसके द्वारा भविष्य में जब तक आप का बीमा चालू है आप सुरक्षित हैं, क्योंकि जब कभी कोई क्षति होगी आप को वह क्षति बीमा कम्पनी पूरा कर देगी।

यह कहा जा सकता है कि जहां आग बुझाने के यंत्रों का पूर्ण प्रबन्ध है वहां बीमे की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे यन्त्र वास्तव में दुर्घटनाओं की सम्भावना तो कम कर देते हैं, पर उनके अस्तित्व को नष्ट नहीं करते। दूसरे शब्दों में जोखिम की प्रकृति नहीं बदलती और वह उसी प्रकार बनी रहती है।

सम्पत्ति-स्वामी स्वयं अपनी जोखिम के उत्तरदायी नहीं बन सकते उन्हें अवश्य किसी बीमा कम्पनी की सहायता लेनी चाहिए। बीमा कम्पनी एक प्रकार की सहयोग समिति है, जिसका काम अपने सदस्यों को दुर्घटनाओं से जो क्षति होती है उसको पूरा करना है। अपने सदस्यों से जो बीमा कराता है उसका निश्चित हिसाब से जितना रुपया होता है चन्दे के रूप में लेती है और उन्हें सुरक्षित बनाती है। जब कभी कोई क्षति होती है तो वह उसे उस धन से पूरा करती है जो निश्चित दर से इकट्ठा किया जाता है।

"सोशलिस्टों और कांग्रेस की लड़ाई पिता और पुत्र की लड़ाई की तरह होगी।"
— अरुणा आसफअली

देवी जी, कहीं औरंगजेब और शाहजहाँ के ड्रामे का ही रिहर्सल तो नहीं करोगी? खैर अगर करो ही तो इतना अपने राम को बता दीजिये जाने से पहले कुछ पता चला कि पिता के दिल्ली दुर्ग, पर औरंगजेब की चुनी दलिल दिया से होगा या दिल्ली का चुनाव भी औरंगजेब का भाई (कम्यूनिष्ट) करेगा।

× × ×

कांग्रेस की गलतियों को दूसरी पार्टी ही सुधार सकती है।
— रफीअहमद किदवई

शायद आप लोगों के निकलने से ही कुछ सुधार हो जाय।

× × ×

विश्वशांति के लिए एक विश्व-सरकार का होना जरूरी है।
— नेहरू जी का अमरीका के लिये भाषण

इसी लिए तो भगवान् जी, बेचारा मार्शल गिरह के पैसे घर-घर बांट रहा है: "घरबार तुम्हारा, कारबार हमारा, खाओ पियो अपना, गुण गाओ हमारा।

× × ×

पाकिस्तान में अड्डे बनाने के लिए अमेरिकन इंजीनियर कराची पहुँच गये।
— एक समाचार

लिख भेजिये आयंगर को, चुपचाप घर चला आये, जब तक अड्डे न बन जायें तब तक लोकसभा से काहे माथा खपाना समझो।

× × ×

जनतंत्र की सफलता, उन्नति और सुधार का काम केवल हमीं पूरा कर सकते हैं।
— आचार्य नरेन्द्रदेव

माफ करना आचार्य जी, बात सोचों को तो अब तक बस इतना ही पता था कि उपर्युक्त कार्यों को अंग केवल अकेले बेचारे कम्यूनिस्टों ने ही कलकत्ते से पूरा करना शुरू किया है। हमें क्या पता था कि रहे-सहे का बीड़ा आप ही उठाये फिर रहे हैं।

× × ×

राजनीति में धर्म का संमिश्रण खतरनाक है।
— नेहरू जी

क्यों पंडित जी, सोशलिस्ट-कम्यूनिस्ट मिल कर कौन सा धर्म बन सकता है? और उसका राजनीति में दुरदम कैसा रहेगा?

× × ×

इस वर्ष कहीं अकाल का भय नहीं।
— जयरामदास दौलतराम

पिछले वर्ष भूखों की मिन्नत ने ही काफी भगवान् की फसल काट लो। अब भी पेट भरे पर तो भगवान् ही मालिक है।

× × ×

पाकिस्तान से हिन्द लौटने वाले मुसलमान कहीं दिल तोड़कर फिर एक होने का नारा न लगा दें।
— लक्ष्मीकृष्णमा

मियां बात तो वाकई दूर की सोची है। काठ की फिर एक बार और चढ़ा कर देख लो न!

× × ×

हमारा बर्लिन से हटने का कोई इरादा नहीं।
— ब्रिटिश सेनापति

इच्छा आपकी चिकिमारों का, और बर्लिन से भी १२ गज आगे जाकर बैठ जाइये और एक कार्ड पर घर हमने लिख दिया है, तेरे घर के सामने लिख कर बैरंग स्टालिन को भेज दीजिये।

× × ×

सरकार में अगर हिम्मत है, तो कम्यूनिस्टों पर मुकदमा चलाये।
— एक कम्युनिस्ट नेता

अजी, सरकार की कुछ सूझ ही ऐसी है कि वह दस नम्बरियों और कम्यूनिस्टों पर मुकदमा न चला कर, बस बेचारों को मुफ्त में ही बे-घर किये रहती है।

भाइयों की दुकान रजिस्टर्ड

लाहौर वाले

हमने अपना कारोबार दिल्ली में आरम्भ कर दिया है। अब हमारे उपहार जवाहर सेंट व जवाहर आंवला हेयर आयल अपने शहर के दुकानदार से प्राप्त कर सकते हैं। प्रतिष्ठित व्यापारी गण एवं संरक्षकों से निवेदन है कि वे निम्न-लिखित पते पर पत्र व्यवहार करें:—

भाइयों की दुकान

रजिस्टर्ड

परफ्यूमर्ज लाहौर वाले

शाहदरा—दिल्ली।

२००००) अवश्य जीतिये

प्रतियोगिता नं० मई

खाली खानों को इस तरह पूरा करो कि जिस तरफ से इसका हिसाब जोड़ा जाय १११ हो, जिनका पूरा हल सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि० देहली में रखे हुए हमारे सीलबन्द हल से मिल जायगा उन्हें १२०००) तथा जिनकी प्रथम दो पंक्तियां मिलेंगी उन्हें ८४००) रु० इनाम मिलेगा।

१०० का उत्तर

२१	१८२	९७
१७६	१००	२४
१०३	१८	१७९

खुलता ७-५-४८
परीक्षाफल घोषणा तिथि
१५-५-४८

एक ऐन्ट्री की फीस १।) तथा ५ से ऊपर १) प्रत्येक ऐन्ट्री

१११

नियम—चाहे जितनी खाना पूर्ती उपरोक्त आवश्यक फीस के साथ एक ही सादे कागज पर भेजी जा सकती हैं टुकड़ों पर नहीं। मनीआर्डर रसीद ६ पैसे के टिकट के साथ परीक्षा फल मंगाने के लिये ऐन्ट्री के साथ भेजनी चाहिये। बिना फीस वाली ऐन्ट्री अमान्य होगी। मैनेजर का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा। अखबार का हवाला अवश्य दीजिये।

ऐन्ट्री व फीस भेजने का पता—

दी डायमन्ड पजल्स कारपोरेशन, चांदनी चौक, देहली।

स्त्रियों का भयानक शत्रु

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं वह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करने वाला भयानक शत्रु है। लज्जावश बिचारी रोग को छिपाये रहती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही नहीं करनी चाहिये। इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुंअला रंग का बदबूदार पानी या लेस सा निकलता रहता है महीना ठीक समय पर नहीं होता है, जिसके कारण कमर, पेढ़ू, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मूर्छा बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं होती और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करने वाली २५ वर्ष की आजमूदा नारी सञ्जीवन दवा का आविष्कार किया है जिसके द्वारा आज तक सहस्त्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी सञ्जीवन के सेवन से तमाम बीमारियां दूर होकर स्त्रियां सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और संतान सुन्दर बलवान दीर्घायु पैदा होती है। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डाल कर एक शीशी नारी सञ्जीवन को मंगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। कीमत १ शीशी० ३=) डाक खर्च व पैकिंग खर्च अलग।

मंगाने का पता रूपविलास कम्पनी नं० ४८८ धनकुट्टी, कानपुर।

रेडियो व ?००) से १०००) मासिक

घर बैठे मुफ्त

गलत सिद्ध करने पर १०,०००) इनाम। विश्वास रखिये यह असम्भव नहीं।

लिटरेचर व नियम भी मुफ्त मंगाइये।

दि हिन्द स्टोर्स, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

१९४८ में

क्या होने वाला है

ज्योतिष की विद्या अन्धेरी दुनिया में सूरज की रोशनी है। अगर आप भी इस अंधेरी दुनिया में बदलने वाली किस्मत के होने वाले उलट-फेर का साफ-साफ उतरा हुआ फोटो वक्त से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल पसन्द फूल का नाम या पत्र लिखने का समय और साफ-साफ अपना पूरा पता फौरन लिख कर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आने वाले बारह माह की तकदीर की तस्वीर लाभ हानि, किस प्रकार से रोजगार मिलेगा, किस व्यापार में लाभ होगा, नौकरी में तरक्की, तबादला, पतन स्वास्थ्य बीमारी, देश परदेश की यात्रा, और संतान का सुख, किसी से नया मेल-जोल, दिल पसन्द सगाई, शादी, जमीन में गड़ा हुआ धन, जायदाद, लाटरी, सट्टा या किसी अज्ञात प्रकार से सुख और धन का मिलना अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर कुछ साल में पेश आने वाली सब बातों के खुलासे के साथ मासिक वर्ष फल बनाकर केवल सवा रुपये [१।)] में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख देंगे। ठीक न होने पर कीमत वापिस की गारन्टी है। एक बार अवश्य आजमाइश करें।

श्री भृगुसंहिता ज्योतिष आश्रम (V. A.)

गाजियाबाद (यू० पी०)

भारत की सुरक्षा में काश्मीर का महत्व

[श्री रतनलाल जोशी]

काश्मीर की सुरक्षा भारत की सुरक्षा के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पाकिस्तान की स्थापना के बाद तो उसका महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि सामरिक व्यूह रचना की दृष्टि से आज काश्मीर को वही महत्व प्राप्त हो गया है जो अविभक्त भारत में उत्तर पश्चिमी सीमाप्रांत को था। वर्तमान काश्मीर की सीमा विभिन्न बिन्दुओं पर पांच राष्ट्रों की सीमाओं का स्पर्श करती है। आज के भौगोलिक परिधि के वैचित्र्य का ऐसा उदाहरण अन्यत्र प्राप्य नहीं है और आज की शिविरबद्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इतने भौगोलिक सम्पर्कों से आवेष्टित राज्य की स्वतन्त्रता का अक्षुण्ण बने रहना असम्भव है। चेकोस्लोवेकिया इसका सबसे ताजा उदाहरण है।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा की परिभाषा काश्मीर के सम्बन्ध में लागू होती है। उसकी भौगोलिक परिधि के सम्पर्क में आने वाले राज्यों का सीमा स्पर्श इस प्रकार है :

(मीलों में)

भारत की सीमा के साथ प्राय	२५०
स्वात और चित्राल राज्य के साथ	२००
पाकिस्तान की सीमा के साथ	३००
अफगानिस्तान की सीमा के साथ	७०
सोवियत रूस की सीमा के साथ	१००
चीन की सीमा के साथ	३००
तिब्बत की सीमा के साथ	३५०

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि भौगोलिक सम्पर्क के विस्तार की दृष्टि से पाकिस्तान का दावा काश्मीर पर निराधार और भ्रमोत्पादक है। सीमा के सम्पर्क का विस्तार ही यदि मापदंड माना जावे तो काश्मीर पर वस्तुतः तिब्बत का अधिकार होना चाहिये। लेकिन इस सीमा-सम्पर्क से भी अधिक महत्वपूर्ण सम्बन्ध आर्थिक और ऐतिहासिक सम्बन्धों की है। ऐतिहासिक दृष्टि से काश्मीर का वर्तमान पाकिस्तान से कभी इतना सम्बन्ध नहीं रहा है जितना कि आधुनिक भारत से है।

ऐ६ पार्श्वभूमि

ऐतिहासिक साक्ष्य के अनुसार काश्मीर का सांस्कृतिक सम्बन्ध सीमाप्रान्त के कबीलों एवं उत्तर-पश्चिमी पंजाब के निवासियों की अपेक्षा पंजाब के उत्तर पूर्वीय भाग पर अवस्थित कांगड़ा, कुल्लू और चम्बा से ही अधिक रहा है। वंश परम्परा की दृष्टि से भी वर्तमान काश्मीर प्रान्त की सारी मुस्लिम जनसंख्या वस्तुतः काश्मीरी पंडितों की सन्तान है। इसी प्रकार जम्मू के मुसलमानों की उत्पत्ति भी भारत के राजपूतों से हुई है। सीमाप्रान्त के छोर पर बसे काश्मीरी मुसलमान मंगोल नस्ल के हैं किन्तु वे मुसलमान बनने के पहिले बौद्ध थे। इस प्रकार सांस्कृतिक दृष्टि से काश्मीरी मुसलमान एवं काश्मीरी हिन्दू अथवा जम्मू के हिन्दू और जम्मू के मुसलमान में तत्वतः कोई अन्तर नहीं है।

इस पार्श्वभूमि के साथ यदि हम भारत की सुरक्षा के सम्बन्ध में विचार करें तो काश्मीर का भारत के साथ रहना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि काश्मीर भारत का ही एक अंग है और उसका अपने मूल वृत्त से विच्छिन्न होकर अपरिचित पक्ष में सम्मिलित हो जाना स्वयं काश्मीर के ही लिये नहीं वरन् भारत के लिये भी काफी हानिकर है। हर हिटलर को सुडेटनलैंड, सार और पोलिश गलियारे की आवश्यकता इसलिये नहीं थी कि उसकी प्राप्ति से जर्मनी के भौगोलिक विस्तार में वृद्धि हो जाती, किन्तु इसलिये थी कि पिरेनीज से होकर यूराल तक का भूभाग इस प्राप्ति के फलस्वरूप उसके अधिकार में आ जाता था।

एंग्लो-अमेरिकन संघ का स्वार्थ

काश्मीर का अकेले और स्वतंत्र रहना भारत के लिए ही नहीं, वरन पाकिस्तान के लिए भी हानिकर है। काश्मीर की सीमा पर तीन बड़े राज्यों का सम्मिलन होता है। काश्मीर के निर्बल शासन उनकी प्रसारोन्मुख महत्वाकांक्षाओं का प्रतिरोध करने में असमर्थ हैं। वर्तमान पाकिस्तान इतना बलवान नहीं है कि वह निकटभविष्य में काश्मीर पर किसी साम्राज्यवादी शक्ति के आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना कर सके। काश्मीर का असुरक्षित रहना पाकिस्तान व की भारत दोनों सुरक्षा के लिए भी भयप्रद है। सुरक्षा कौंसिल से लौट कर शेख अब्दुल्ला ने स्पष्ट कहा था कि "एंग्लो अमेरिकन संघ की धारणा है कि यदि काश्मीर पाकिस्तान के अंतर्गत रहेगा तो रूस के विरुद्ध अधिक सहायक सिद्ध होगा। यही कारण है कि ब्रिटेन काश्मीर के मामले में इतना हस्तक्षेप कर रहा है।"

गिलगित और ब्रिटिश स का ·

काश्मीर पर अंग्रेजों की गृध्र दृष्टि प्राचीन काल से है। जब तक वे भारत में रहे, तब तक वे काश्मीर को अपने प्रभुत्व में बनाये रहे। काश्मीर की व्यूहात्मक महत्ता से वे भली-भांति परिचित थे। यही कारण है कि उन्होंने सदैव काश्मीर के प्रत्येक मामले में औचित्यहीन हस्तक्षेप किया है। चित्राल पहले काश्मीर का ही एक भाग था। डोगराओं ने अपने भुजबल से उसे जीता था किंतु लार्ड कर्जन ने महाराजा की अनिच्छा के बावजूद उसे सीधे ब्रिटिश संरक्षण में ले लिया और वहां के शासक को भारत के अन्य देशी राजाओं की भांति खिताब और तोपों की सलामी देकर अपनी नकेल

में मिलो लिया । लार्ड कर्जन ने 'हिज हाइनेस' का खिताब देकर चित्राल के राजा से उसकी रियासत में अंग्रेजी फौजें कायम करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। काश्मीर के अन्य दो प्रान्तों 'सरहदी इलाके' और गिलगित के लिये भी ब्रिटिश सरकार ने इसी कूटनीति का अवलम्बन किया था। सीम-प्रांत में स्थित वर्तमान हजारा जिले से लेकर पामीर, अफगानिस्तान, सिंकियांग और लद्दाख तक के एक अर्ध-वृत्ताकार भूभाग की प्रवृत्तियों को इन दोनों इलाकों (सरहदी इलाके और गिलगित) से आसानी के साथ नियंत्रित किया जा सकता है। भारत में अपना साम्राज्य कायम करने वाले अंग्रेजों ने इन दोनों प्रान्तों के भौगोलिक महत्व को भली भांति हृदयगम कर लिया था। यही कारण है कि काफी दीर्घकाल तक ब्रिटिश शासकों ने काश्मीर के राजाओं पर उन्हें सीधे ब्रिटिश अधिकार में दे देने के लिए दबाव डाला था। चित्राल की भांति काश्मीर के महाराजा अब तक ये दो प्रान्त पूर्णतया अंग्रेजों को नहीं दे सके। अपने कूटनीतिक प्रयत्नों में अंग्रेजों को इतनी ही सफलता मिली कि गिलगित में ब्रिटिश रेजिडेंसी कायम हो गई और सरहदी इलाकों एवं गिलगित का नग्न नियंत्रण ब्रिटिश पोलिटिकल एजेण्ट के हाथों में आ गया।

गत १५ अगस्त से भारतीय स्वातन्त्र्य के बाद गिलगित की ब्रिटिश एजेन्सी का भी अन्त हो गया। गिलगित वापस काश्मीर राज्य में सम्मिलित कर दिया गया। चित्राल की भांति वह स्वच्छन्द न हो सका। पाकिस्तान ने भी इस वस्तुस्थिति का कोई विरोध नहीं किया, क्योंकि उसे यह आशा थी कि काश्मीर का पलड़ा पाकिस्तान की तरफ ही झुकेगा। लेकिन बाद में परिस्थितियों का रूप ऐसा परिवर्तित हुआ कि पाकिस्तान की महत्वाकांक्षा पूरी न हो सकी और कायदेआजम जिन्ना की ताजपोशी के लिए की गई श्रीनगर यात्रा में लाहौर तक ही आकर रुक गये। अब तो इस स्वप्न-पूर्ति की कोई आशा ही नहीं। आज काश्मीर भारत का एक सजीव अंग हो गया है। भारतीय सैनिकों के रक्त ने रही सही विच्छिन्नता को भी समाप्त कर दिया है।

गिलगित के काश्मीर में सम्मिलित हो जाने और काश्मीर के भारत से सलग्न हो जाने के साथ ही भारत के लिए नई सीमा कायम हो गई है। आज भारत की सीमा चीन और सोवियत रूस की सीमा का स्पर्श करती है। आज की शिविरबद्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रभुत्व-प्रतियोगिता के लिए जो दांव-पेच खेले जा रहे हैं उसकी पार्श्वभूमि में भारत को इस नई सीमा रेखा के महत्व को हृदयगम करना होगा।

भारत और मध्य एशिया के संबन्ध

चीन का सिंकियांग प्रान्त गिलगित की सीमा का स्पर्श करता है। इस प्रान्त पर सोवियत रूस की लोलुप दृष्टि गड़ी हुई है। भारत के लिए इस प्रान्त का ऐतिहासिक महत्व है। सदियों से भारत का मध्य एशिया से जो सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है, वह इस प्रान्त के ही माध्यम से रहा। सिंकियांग वस्तुतः मध्य एशिया के देशों और भारत का सेतु है। भारतीय संस्कृति के भग्नावशेष आज भी सारे मध्य एशिया में मिलते हैं। मध्य एशिया के इतिहास में प्रसिद्ध काश्मीरी बौद्ध भिक्षुक कुमारजीव को जो अमरत्व प्राप्त है और अन्य किस को प्राप्त हो सका है?

लेकिन मध्य एशिया ने इस सांस्कृतिक भेंट का बदला साम्राज्यवादी आक्रमणों के द्वारा दिया। ७४७ ई० में चीनी सेना ने तिब्बत पर आक्रमण किया था। उसमें काश्मीर का तत्कालीन राजा मुक्तापीड़ (संस्कृत में लिखित काश्मीर के इतिहास के अनुसार) 'रेत के समुद्र' में लड़ते हुये वीर गति को प्राप्त हुआ था। १४ वीं सदी में तिब्बत के एक सरदार रिंचन ने काश्मीर पर आक्रमण किया था। १५३२ में मिर्जा हैदर ने काश्मीर पर अधिकार कर लिया था और श्रीनगर को अपनी राजधानी बनाया था।

आज फिर जब भारत अपने पड़ोसी देशों में सांस्कृतिक विनिमय के लिये अपने दूत भेज रहा है, तब सिंकियांग में प्राचीन इतिहास के पुनरावर्तन की आशंकायें बलवती होती जा रही हैं। सिंकियांग की मौन मूक शृंगमाला शासों और मंगोलिया में गरजती तोपों का गर्जन सुनकर कांप रही हैं। सिंकियांग की सीमाओं पर रणवाद्य बज रहे हैं। एक ओर सोवियत रूस अपने प्रभुत्व प्रसार की महती लिप्सा से सिंकियांग के किनारों पर आघात कर रहा है, दूसरी ओर अमेरिका की डालरशाही का बदामत ग्रहण करता हुआ आधुनिक कुमिन्तांग शासित चीन सिंकियांग की भूमि पर आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित सेनायें भेज रहा है। आज सिंकियांग विपत्तिग्रस्त है।

सिंकियांग पर आज जो विपत्ति के बादल मंडरा रहे हैं, वे वास्तव में उसकी खनिज सम्पत्ति के कारण हैं जिसमें सब से प्रमुख तेल है जो आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का मूल प्राण वेग है। तेल के अतिरिक्त लोहा, सीसा, ताम्बा, गन्धक और फिटकरी भी यहां काफी मात्रा में मिलती है। यारकन्द के दक्षिणी भाग की नदियों के किनारों पर सोना भी कई वर्षों पूर्व से निकाला जा रहा है।

सिंकियांग से जो समाचार प्राप्त हो रहे हैं। वे काफी चिंताप्रद हैं। सोवियत रूस के प्रोत्साहन से मंगोलिया ने सिंकियांग पर आक्रमण किया। मंगोलिया में आज सोवियत सरकार का प्रभुत्व है। सोवियत रूस के हवाई जहाजों के संरक्षण में मंगोलियन फौजें सिंकियांग में प्रविष्ट हुई और २०० मील भीतर तक फैल गई। जनरलिस्सिमो च्यांग काई शेक ने भी सिंकियांग स्थित चीन के सेनाध्यक्ष को संदेशा भेजा कि आखिरी सैनिक के रहते समय तक शत्रु का सामना किया जावे।

भारत की सीमा पर ही ये सब घटायें सघन होती जा रही हैं। सिंकियांग पर रूस या अमेरिका दोनों में से किसी का भी अधिकार गिलगित के लिए खतरा है। यह निश्चित है कि सोवियत रूस और च्यांग काई शेक की सरकार में मुठभेड़ अवश्य होगी और वह मंचूरिया के लिए नहीं वरन सिंकियांग के लिए ही होगी। ऐसी परिस्थिति में भारत की सीमा भी खतरे से खाली नहीं रह सकती। यही कारण है कि काश्मीर भारत की सुरक्षा की कुंजी है, अतः अपने अस्तित्व को खतरे में डाल कर ही भारत काश्मीर की उपेक्षा कर सकता है।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

सोमवार ७ वैशाख

19th April 1948.

वर्ष १५
संख्या २

शरणार्थियों को आश्वासन

आधी दुनिया

हिन्दू नारी के नये अधिकार

उत्तराधिकार तथा तलाक

पिछले कई सालों से हिन्दू नारियों में जागृति की जो लहर चली, उसका परिणाम अब वस्तुतः दृष्टिगोचर होने लगा है। नारी के समान अधिकारों की घोषणा तो कई साल पूर्व की जा चुकी थी, परन्तु आज की जागृत नारी जिस दृष्टि से इस प्रश्न को देखती है, उसे कानूनी रूप अब दिया जाने लगा है। हिन्दू नारी को उत्तराधिकार और विवाह मर्यादा के पुराने दृष्टिकोण पर आपत्ति थी। उसे दूर करने के लिए बड़े बड़े कानूनदां पिछले कुछ वर्षों से प्रयत्न कर रहे थे। अब स्वतन्त्र भारत की असेम्बली ने इस सम्बन्ध में एक बिल को सिलेक्ट कमेटी के सुपुर्द कर दिया है। इस बिल की मुख्य धारायें निम्नलिखित हैं —

१—हिन्दू लड़कियों को भी अपने पिता के उत्तराधिकार में भाइयों की तरह भाग मिलेगा।

२—हिन्दू स्त्री किन्हीं विशेष स्थितियों में तलाक दे सकेगी।

... रहते

सभी हिन्दुओं पर

बिल में यह भी व्यवस्था की गई है कि यदि कुछ अवस्थाओं में, जिन पर स्त्री का वश न हो, उसे अपने पति से अलग रहना पड़े, तो वह उतने समय के लिए पति से अपने गुजारे के लिए रकम की मांग कर सकती है।

बिल के प्रारंभिक भाग में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि यह कानून सभी हिन्दुओं पर — जिनमें वीर शैव, या लिंगायत, ब्राह्म, प्रार्थना और आर्य-समाजी सम्मिलित हैं, लागू होगा। बौद्ध, जैन व सिख भी इस कानून के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं और अन्त में कोई हिन्दू इसके क्षेत्र से बाहर न रह जाये, यहां तक लिख दिया गया है कि जो व्यक्ति मुसलमान, ईसाई, पारसी और यहूदी न हो, उस पर भी यह बिल लागू होगा।

जब तक किसी धोखे या बलात्कार का मामला सिद्ध न हो, धर्म विवाह कानूनी तौर पर स्वीकृत किये जायंगे। सिविल विवाह के लिए वर या वधू के २१ साल से कम उम्र के होने पर अभिभावकों की सहमति आवश्यक होगी। धर्मविवाहों का रजिस्ट्रेशन भी रजिस्ट्रार के यहां किया जा सकेगा। विवाह के सर्टिफिकेट की पुस्तक जनता के निरीक्षण के लिए खुली रहेगी।

यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी या पति के रहते हुए भी विवाह करेगा, तो उसे भारतीय दण्ड विधान ४९४-४९५ दफाओं के मातहत दण्ड मिलेगा।

पति का आवश्यक कर्तव्य है कि वह पत्नी का पालन करे, लेकिन उसी अवस्था में, जब वह उसके साथ रहती हो। यदि पति को छूत की बीमारी हो वह रखेल रखता हो, उसके साथ रहना पत्नी के लिए निरापद न हो, वह बिना किसी विशेष कारण के दो साल या अधिक समय के लिए पत्नी को छोड़ दे, यदि वह हिन्दू धर्म त्याग दे अथवा कोई और उचित कारण हो तो स्त्री पृथक् रहकर भी अपने जीवन निर्वाह का दावा पति कर सकती है।

...ा के लिए काश्मीर की वीरांगनाओं ने भी बन्दूकें संभाल ली हैं

...ह
...प में बहुत सी ...ई हैं। कोई भी ... या पत्नी धर्म ... बशर्तेकि: — ...समय कोई पति या
... साल से और ...ा न हो।
... या विकृत-
... सपिण्ड न हों,
... साल से कम ...भावकों की
... पूर्ण होने ...यगा।

तलाक

इस बिल का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रसंग तलाक का है। कोई भी स्त्री या पुरुष जिला अदालत या हाई कोर्ट में विवाह सम्बन्ध विच्छेद की दरखास्त निम्न कारणों से दे सकता है —

१— पति या पत्नी विवाह के समय भी किसी पत्नी या पति को रखे हुए थे।

२— पति या पत्नी विवाह के समय नपुंसक है।

३ — पति या पत्नी सपिण्ड हैं, जो कि शास्त्रीय नियमों व परम्पराओं के विरुद्ध है। विवाह के समय दूसरा पक्ष पागल या विकृत मस्तिष्क था या अब हो गया है।

४ —यदि माता पिता की सम्मति बलात् या धोखे से ली गई हो। लेकिन इस सम्बन्ध में दरखास्त एक साल के अन्दर अन्दर आ जानी चाहिए।

५ — यदि दोनों में से कोई पक्ष पीड़ित है।

६ — पांच साल से एक पक्ष दूसरे को छोड़ गया है।

७ — अब हिन्दू नहीं रहा।

८ — ५ साल से पागल या असाध्य अथवा गुप्त रोगों से रोगी हो गया है।

बिल के अन्तिम भाग में संरक्षकों के अधिकार व कर्तव्य तथा गोद लेने के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण धाराएं विस्तार के साथ दी गई हैं।

माताओं के दूध का बैंक

लड़ाई के दिनों में घायल सैनिकों की रक्षा के लिए स्वस्थ पुरुषों के खून का संग्रह चिकित्सक करते थे। भारत में भी ब्रिटिश सरकार ने ऐसा प्रबन्ध किया था। पाठकों को याद होगा कि पं० जवाहर लाल नेहरू ने भी रुधिर-कोश के लिए अपना खून दिया था।

लेकिन ... शिशुओं के स्वास्थ्य की समस्या अब तक हल नहीं हुई।

जिन की माताएं या तो मर गई हैं अथवा बहुत दुर्बल या रोगिणी हैं और अपने शिशुओं को दूध नहीं पिला सकतीं या उनका दूध लाभकारी नहीं होता, उन बालकों को खून नहीं दिया जा सकता। इसलिए अमेरिका में ऐसे बालकों के लिए अब स्वस्थ माताओं का दूध लिया जाने लगा है। यह दूध इस तरह सुरक्षित रखा जायगा, कि वह अत्यन्त शुद्ध और स्वाभाविक रूप में रह सके और दुर्बल बालकों को दिया जा सके।

कुछ समाचार

—श्री गोपीचन्द भार्गव ने एम्प्लायमेंट एक्सचेंज को यह परामर्श दिया है कि वह स्त्रियों को भी नौकरी दिलाने का प्रबन्ध करे।

—दिल्ली के एक वकील श्री नारायण सीरोवाल की पत्नी श्रीमती प्रकाशवती ने डिप्टी मजिस्ट्रेट की अदालत में जीवन निर्वाह के लिए व्यय का दावा पेश किया है। उसका कहना है कि उसका पति अत्यन्त क्रूर है और एक दिन तो उसने गंगा की मझधार में उसे डुबो देने की भी कोशिश की थी।

—बम्बई में ११ अप्रेल को होने वाले महिला हाकी मैच में सिर्फ तीन प्रान्तों की — बंगाल, मद्रास और बम्बई की स्त्रियां भाग लेंगी।

— भारत सरकार के ... की गाडगिल की पत्नी का देहान्त हो गया है।

—केन्द्रीय असेम्बली में श्रीमती दुर्गा बाई को श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर ने बताया है कि दिल्ली में तांगा चलाने का लाइसेंस मिलने में स्त्रियों पर कोई रोक नहीं है। लेकिन अभी तक किसी स्त्री ने लाइसेंस की दरखास्त नहीं दी।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ७ वैशाख सम्वत् २००५

हैदराबाद की समस्या

हैदराबाद में होने वाली घटनाओं ने इस सप्ताह भारतीयों का जितना ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर दिया है, उतना अन्य किसी घटना ने नहीं। हैदराबाद की स्थिति सचमुच इस समय विचित्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि इत्तहादुल मुसलमीन के धर्मान्ध और प्रमादी नेता आज निजाम को घेर कर सारी मशीनरी पर कब्जा किये बैठे हैं। निजाम पहले ही साम्प्रदायिकता का शिकार था। उसकी इस दुर्बलता का लाभ उठाकर और शायद उसे कुछ प्रलोभन देकर कासिम रिजवी जैसे अदूरदर्शी मुसलमान आज समस्त रियासत और उसके निकटवर्ती भाग में प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित करना चाहते हैं। पिछले दिनों वे और उनके कुछ साथी हैदराबाद में जिस तरह भाषण दे रहे हैं, उनसे स्पष्ट है कि वे बहुत गैर-जिम्मेवारी के साथ एक ऐसी आग जलाना चाहते हैं, जो न भारत के लिए हितकर है और न स्वयं हैदराबाद के लिए। हैदराबाद की रियासत चाहे कितनी सम्पन्न क्यों न हो, वह भारत जैसे सम्पन्न शक्तिशाली राष्ट्र का मुकाबला नहीं कर सकती। एक तो यों ही दोनों का कोई मुकाबला नहीं है, दूसरे वह रियासत चारों ओर से भारतीय संघ से घिरी है और तीसरे वहां की ८५ फी सदी जनता हिन्दू है। केवल डरा धमका कर शस्त्रबल से जनता को बहुत समय तक वश में नहीं रखा जा सकता। लेकिन फिर भी इत्तहादुल मुसलमीन के अधिकारी आज साम्प्रदायिकता के उन्माद में बंगाल की खाड़ी तक निजाम का झंडा फहराने या दिल्ली में काश्मीरी व पूर्वी बंगाल के शेर के साथ हाथ मिलाने की धमकियां दे रहे हैं। वे स्वयं जानते हैं कि हैदराबाद के मुट्ठी भर मुसलमान कुछ कर नहीं सकेंगे, इसलिए वे भारतीय मुसलमानों को अपनी ओर आकृष्ट करने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि भारतवर्ष के हिन्दू वस्तुतः मुसलमानों की उस साम्प्रदायिक बन्धु-भावना को समझ ही नहीं सकते, जिसके कारण दुनिया का एक मुसलमान शेष मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त कर लेता है, इसलिए ज्यों ही हैदराबाद व भारत में संघर्ष आरम्भ हुआ, भारत के ४॥ करोड़ मुसलमान हैदराबाद का साथ देने लगेंगे।

उनकी भविष्यवाणी सफल होगी या नहीं, इसकी चिन्ता किये बिना भी यह तो स्पष्ट है कि इस प्रकार की धमकियों का हैदराबाद को कोई अच्छा फल नहीं मिल सकता। इस प्रकार भारत की देशभक्त जनता, जो पहले ही समस्त देश में मुसलमानों की लीगीय वृत्तियों के कारण क्षुब्ध थी सशंक और सतर्क हो उठी है और यह भारतीय मुसलमानों के हित में नहीं है। इसीलिए आज एक साथ भारतीय मुसलमान देश के प्रति अपनी भक्ति व श्रद्धा का प्रमाण पेश करने के लिए लम्बे लम्बे वक्तव्य निकाल रहे हैं। अनेक मुसलमान नेता भारत सरकार से हैदराबाद के विरुद्ध कोई कदम उठाने की भी मांग करने लगे हैं। वस्तुतः हैदराबादी मुस्लिम नेताओं ने भारतीय मुसलमानों की स्थिति बहुत हीन कर दी है। वे समझते हैं कि उनका हित तभी सुरक्षित है, जब कि वे भारत के प्रति पूर्ण निष्ठावान् बनकर रहें। लेकिन हमें इस प्रसंग में उन्हें यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि आज कल कुछ वक्तव्यों की बजाय अपने व्यवहार से स्थिति स्पष्ट करना अधिक आवश्यक है। आज मुसलमान नेताओं का कर्तव्य है कि वे हैदराबाद व पाकिस्तान में जाकर वहां के धर्मान्ध मुसलमानों को यह समझावें कि साम्प्रदायिकता की भित्ति पर कोई भवन बहुत समय तक खड़ा नहीं किया जा सकता। इसलिए उनका फर्ज है कि त्रस्त पीड़ित हिन्दुओं व सिखों को शान्ति और सुरक्षा का आश्वासन देकर वापस बुलावें। भारतीय मुसलमानों को अपनी राष्ट्रीयता का सबूत देने के लिए यह भी करना चाहिए कि वे भारत की भाषा को अपनी भाषा मानें, भारत की संस्कृति को अपनी संस्कृति, भारत के इतिहास को अपना इतिहास और भारत के पूर्व ऐतिहासिक नेताओं को अपना पूर्वज मानें। आज वस्तुतः भारतीय मुसलमानों की परीक्षा का अवसर उपस्थित है। हैदराबाद की घटना ने उसे और अधिक निकट ला दिया है। देखना है, उसमें वे सफल होते हैं या नहीं।

× × ×

हैदराबाद की समस्या का एक दूसरा राजनैतिक पहलू भी है। आज समाजवादी नेता हैदराबाद में सत्याग्रह करने का विचार कर रहे हैं। हम नहीं जानते कि वे कितने तैयार हैं, लेकिन यदि वे इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर कुछ भी सफल हो जाते हैं तो देश की राजनीति में, जो आज प्रतिपक्षी दलों का अखाड़ा बन रही है, उनका बल बहुत बढ़ जायगा, इस लिए कांग्रेस का और उसके साथ भारत सरकार के नेताओं का यह कर्तव्य है कि वे इधर अधिक सतर्क रहें।

× × ×

अंग्रेज की राजनीति और उसकी नीयत पर विश्वास नहीं किया जा सकता। भारत इसके कटु अनुभव कम नहीं ले चुका। इसलिए यदि आज हम हैदराबाद के अंग्रेज सलाहकार मौंकटन को देखकर सशंक हो उठते हैं, तो यह अस्वाभाविक नहीं है। अंग्रेज जिस तरह पाकिस्तान को, जो उसकी अपनी कृति है, समर्थन दे रहा है, काश्मीर के मामले में जिस तरह भारत का विरोध कर रहा है, उसे देखते हुए यह कल्पना की जा सकती है कि वह दक्षिण भारत में अपना पैर जमाने के लिए भी कूटनीतिक चालें चले। इस सम्बन्ध में लार्ड मौंटबेटन की क्या स्थिति है, यह हम नहीं कह सकते, किन्तु राजनीतिज्ञता का यह तकाजा है कि हमें इस ओर से भी असावधान न रहना चाहिए।

काश्मीर का प्रश्न

एक ओर हैदराबाद का प्रश्न उठ खड़ा हुआ है दूसरी ओर अब भी काश्मीर का प्रश्न भी अधिकाधिक उलझता जा रहा है। सुरक्षासमिति में यह प्रश्न समझौते से हल होने के कोई आसार नजर नहीं आते। इसीलिए यह भय है कि सुरक्षासमिति का निर्णय भारत को प्रतिकूल स्थिति में ला देगा। अब तक जब कभी अंग्रेज ने कोई निर्णय दिया है, वह सदा भारतीय हितों के विरुद्ध रहा है। रैमजे मैकडानल्ड का साम्प्रदायिक निर्णय हो या सर रैडक्लिफ का सीमा-विभाजन निर्णय, दोनों से ही भारत को कल्पनातीत हानि पहुंची है। सुरक्षासमिति में एंग्लो अमेरिकन गुट की चलती है, और इस गुट के स्वार्थ पाकिस्तान के साथ बंध गये हैं। इसलिए यह असम्भव नहीं है कि काश्मीर के विभाजन अथवा अन्य किसी ऐसे अप्रिय प्रस्ताव सुरक्षासमिति प्रस्तुत करे। उसके लिए भी देश को तैयार रहना चाहिए। क्या वह अकेला सुरक्षा-समिति के निर्णय का सामना कर सकेगा अथवा क्या रूस ठीक समय पर अपने वीटो का अधिकार प्रयुक्त करके भारत की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए उसे महान् सहायता दे देगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता। यह समस्या क्या रूप लाती है, यह अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक हम देखेंगे।

दिल्ली में हिन्दी

पाठक अन्यत्र दिल्ली के स्कूलों में हिन्दी के प्रसार का एक संक्षिप्त विवरण पढ़ेंगे। हिन्दी का प्रसार जिस गति से बढ़ रहा है, वह असाधारण है। उर्दू वस्तुतः आज केवल राजभाषा थी, इसी कारण पढ़ी जा रही थी, राजभाषा के पद पर हिन्दी को भी उर्दू के समान आसन मिलने का आश्वासन पाते ही हिन्दी ने हमारे शिक्षणालयों पर छाकर यह सिद्ध कर दिया है कि वही एकमात्र भाषा है, जिसे राजभाषा का पद प्राप्त होना चाहिए। लेकिन यह आश्चर्य व खेद का विषय है कि दिल्ली में अभी तक हिन्दी को उसके गौरव के अनुरूप स्थान प्राप्त नहीं हुआ। हमें आशा करनी चाहिए कि दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी और दिल्ली सरकार दोनों के अधिकारी इस ओर शीघ्र ही कोई प्रभावकारी कदम उठावेंगे, ताकि हिन्दी दिल्ली की राजभाषा बन सके।

अंग्रेजी का मोह

यह जान कर सभी विचारशील भारतीयों को दुःख हुआ कि मौलाना अब्दुलकलाम आजाद जैसे विद्वान और राष्ट्रभक्त नेता अभी तक अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ सके। उन्होंने एक वक्तव्य में यह विचार प्रकट किया है कि अभी भारत अंग्रेजी के बिना काम नहीं चला सकता और इसलिए कम से कम पांच साल तक पारिभाषिक शब्दों का हिन्दी रूपान्तर किये बिना अंग्रेजी शब्दों से ही काम चलाना चाहिए। हम शायद इन विचारों की ओर पाठकों का ध्यान भी आकृष्ट न करते, किन्तु मौलाना आजाद भारत के शिक्षा मन्त्री हैं और इसलिए जब उन जैसा उत्तरदायी अधिकारी ऐसी बात कहते हैं तो प्रतीत होता है कि यह भारत सरकार का अभिमत है। राजनैतिक दासता से बढ़कर मानसिक दासता हानिप्रद है। भाषा की दासता मानसिक दासता का सबसे बड़ा चिन्ह है। जब टर्की के कमाल पाशा ने कुरआन तक का तुर्की अनुवाद इसलिए करा लिया कि उसकी भाषा विदेशी अरबी है, तो हम अपने विज्ञान, ज्योतिष और राजनीति में राष्ट्रभाषा के शब्द प्रयुक्त न करें यह कहां तक उचित है। भारतवर्ष के पास सौभाग्य से संस्कृत का अक्षय भण्डार है, जो न केवल समस्त देश के विभिन्न प्रान्तों की भाषाओं को परस्पर निकट सम्पर्क में लाता है, बल्कि उसमें भाव प्रकाशन की अद्भुत क्षमता भी है। दिल्ली के कुछ हिन्दी प्रेमियों ने भारत सरकार का ध्यान मौलाना आजाद के इस वक्तव्य के अनौचित्य की ओर आकृष्ट किया है, यह हर्ष की बात है। आशा है कि अन्य हिन्दीभाषी भी इस ओर सरकार का ध्यान खींचेंगे।

हैदराबाद और भारत

हैदराबाद के प्रधानमन्त्री मीर लायक अली विदेशी मामलात के सेक्रेटरी श्री जहीर अहमद के साथ भारत सरकार से हैदराबाद के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिये पुन दिल्ली आये हैं। निजाम के वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मौंकटन पहले आ चुके हैं और प० नेहरू, लार्ड माउण्टबेटन तथा सरदार पटेल से भेंट कर चुके हैं।

उधर रियासत भर में रजाकारों और गुण्डों द्वारा लूट, आगजनी और उपद्रवों की खबरें निरन्तर आ रही हैं। इत्तिहादुल मुसलमीन के नेता कासिम रिजवी ने पिछले दिनों सारी रियासत में 'रजाकार दिवस' मनाकर अपने अनुयायियों को जिहाद के नाम पर भड़काया है और हिन्दसंघ को चुनौती दी है। रिजवी की इस बकवास से राजनैतिक क्षेत्र अत्यन्त चिन्ताग्रस्त है। स्वय मौलाना आजाद तक ने निजाम को सलाह दी है कि इस प्रकार के अनुत्तरदायी व्यक्तियों का मुह बन्द करें। पर, निजाम ने स्वयं ही जिस संस्था को पाल पोस कर बड़ा किया है उसको वे कैसे विघटित कर सकते हैं। इन धर्मान्ध रजाकारों ने सारी रियासत में जो आतक का साम्राज्य फैला रखा है उसी का परिणाम है कि दस हजार शरणार्थी स्टेट से भाग कर बेजवाड़ा पहुंचे हैं और इतने ही आदमी देहातों से भारतीय यूनियन के लिए रवाना हो चुके हैं।

समाजवादी दल के नेताओं ने हैदराबाद की इस सकटापन्न परिस्थिति से प्रजा को उबारने के लिये भारतीय संघ की सरकार से आग्रह किया है कि वह तुरन्त ही 'यथास्थित समझौता' समाप्त करके हैदराबाद को भारतीय संघ में प्रविष्ट होने के लिये बाधित करे। नहीं तो समाजवादी पार्टी रियासती जनता को शस्त्र-सज्जित करके उत्तरदायी शासन की प्राप्ति में उसकी सहायता करेगी और यदि आवश्यकता पड़ी तो रजाकारी गुण्डों का मुखमर्दन करने के लिये समाजवादी पहल करने में भी नहीं हिचकिचायेंगे।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हबीब ने मांग की है कि रजाकारों के नेता कासिम रिजवी पर सामान्य अदालत में मुकदमा चलाया जाए और उन्हें दण्ड दिया जाए।

सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर

काश्मीर के प्रश्न को हल करने के लिए सुरक्षा कौंसिल के अध्यक्ष ने अन्य सदस्यों की सहायता से जो नवीन प्रस्ताव तैयार किया है वह मूल चीनी प्रस्ताव के मसविदे से थोड़ा भिन्न है। परन्तु मूल-आधार वही है। पाकिस्तान की सरकार को यह प्रस्ताव भी स्वीकार नहीं है। मतभेद का आधार गैरकश्मीरी सेना का प्रश्न तथा काश्मीर सरकार का स्वरूप है। पहले भी इन्हीं दो पर मतैक्य न हो सका। इस प्रकार काश्मीर की समस्या जहां की तहां अटकी हुई है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के भारतीय प्रतिनिधियों के शीघ्र भारत लौटने की आशा है।

राजौरी पर भारतीयसेना का अधिकार

झगड़ क्षेत्र में आक्रमण कारियों को परास्त करते हुए ब्रिगेडियर यदुनाथ सिंह के नेतृत्व में भारतीय सेना ने राजौरी पर अधिकार कर लिया है। जम्मू प्रान्त का यह जल-बहुल क्षेत्र है। भागते हुए आक्रमणकारियों ने 'घरफूक' नीति का आश्रय लिया है। सड़कें और मकान नष्ट कर दिये हैं। निहत्थे लोगों पर बहशियाना ढंग का कत्ले आम और स्त्रियों का अपहरण किया है। जिस समय हमारी सेनाएं राजौरी में प्रविष्ट हुईं उस समय सारा नगर लाशों से पटा पड़ा था।

मद्रास प्रान्त में मद्य-निषेध

मद्रास प्रान्त के प्रधान मन्त्री श्री रेड्डियर ने तामिल नववर्षारम्भ पर रेडियो से ब्राडकास्ट करते हुए यह घोषणा की है कि अक्टूबर मास से मद्रास प्रान्त में, जिस में मद्रास नगर भी शामिल है, मद्य-निषेध लागू हो जाएगा। इस पूर्ण मद्य-निषेध से सरकार को प्रतिवर्ष १७ करोड़ रुपये की हानि होगी, लेकिन गरीब जनता को ७० करोड़ रुपये का लाभ होगा।

हिमाचल एक नया प्रान्त

भारतीय संघ में हिमाचल प्रदेश नाम का एक नया प्रान्त बन गया है। इसका क्षेत्रफल ११००० वर्गमील और आबादी १ करोड़ ४ लाख है। इस प्रदेश की २४ रियासतों का शासन उन उन रियासतों के चीफ एक्जीक्यूटिव अफसरों को सौंप देने का आदेश रियासत सचिवालय की ओर से दे दिया गया है। अगली व्यवस्था होने तक वे अफसर शासन करेंगे। सम्भवतः शिमला इस प्रान्त की राजधानी होगी।

सौराष्ट्रसंघ का निर्माण

नवा नगर रियासत भी अब सौराष्ट्र शासन के अन्तर्गत आ गई है। इस रियासत के सौराष्ट्र में शामिल हो जाने से काठियावाड़ की सब रियासतें, जूनागढ़ और बड़ौदा के कुछ भाग को छोड़ कर एक शासन में आ गई है।

कलकत्ता में अन्तः डोमिनियन कान्फ्रेंस

भारत व पाकिस्तान के शरणार्थियों की समस्या तथा अन्य सम्बद्ध मसलों पर विचार करने के लिये जो अन्तः डोमीनियन सम्मेलन बुलाया गया था वह पश्चिमी बंगाल के सेक्रेटरियट में शुरू हो गया है। सम्मेलन में भारत व पाकिस्तान के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और उन्होंने मैत्रीपूर्ण वातावरण में अनेक प्रश्नों पर विचार किया। कुछ मामले दोनों पक्ष के अधिकारियों की एक विशेषज्ञ समिति को सौंप दिये गये हैं।

राजस्थान संघ के प्रमुख उदयपुर के महाराणा

१८ अप्रैल को जब उदयपुर रियासत बाजाब्ता राजस्थान संघ में शामिल होगी तो कोटा के महाराव के स्थान पर उदयपुर के महाराणा राजप्रमुख नियुक्त किये जावेंगे। अठारह अप्रैल को उदयपुर में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू उदयपुर के महाराणा को राजप्रमुख के पद की शपथ ग्रहण करवायेंगे। वर्तमान राजप्रमुख कोटा के महाराव, संघ-निर्माण के समय उपराजप्रमुख होंगे।

ब्रिटेन में मृत्युदण्ड समाप्त

ब्रिटिश लोक-सभा में श्री सिल्वरमैन (मजदूर दल) ने क्रिमिनल जस्टिस बिल में एक नई धारा जोड़ने का प्रस्ताव किया जिस में परीक्षणात्मक रूप से ५ वर्ष के लिए मृत्युदण्ड को स्थगित करने का सुझाव था। यह बिल २२२ के विरुद्ध २४५ वोटों से स्वीकृत हो गया, और फलस्वरूपतः मृत्युदण्ड हटा दिया गया। कोड़े लगाने, आजन्म कारावास तथा कठोर सपरिश्रम कारावास को भी हटा दिया गया है। नजरबन्दी को सादी 'कैद' का रूप दिया जायगा।

फिलस्तीन का संघर्ष

१६ मई से, जबकि ब्रिटिश अधिकारी फिलस्तीन का शासन छोड़ देंगे, फिलस्तीन का शासन संभालने के लिए यहूदी एजेंसी ने १२ मन्त्रियों तथा एक राष्ट्रपति का मन्त्रिमंडल बनाया है।

फिलस्तीन में अरबों और यहूदियों के संघर्ष को रोकने के लिए अमेरिका ने एक विराम सन्धि की योजना प्रस्तुत की है, जिस में समस्त राजनीतिक हलचलों को स्थगित करने तथा 'युद्ध बन्द' करने की बात कही गई है। राजनीतिक परिवर्तनों को स्थगित करने का यह अर्थ होगा कि यहूदियों को यहूदी-सरकार के निर्माण की योजना बन्द कर देनी होगी तथा अरबों को 'स्वतंत्र अरब फिलस्तीन सरकार' की योजना स्थगित करनी होगी।

डी० ए० वी० कालिज के जन्म-दाता म० हंसराज जी

१९ अप्रैल को आप का जन्म दिवस मनाया जा रहा है।

फिलस्तीन के अरबों और यहूदियों पर इस विराम सन्धि की योजना की प्रतिक्रिया का समाचार अभी तक नहीं आया है परन्तु इस समय जो उभय पक्ष के हताहतों और मृतकों तथा परस्पर आक्रमणों के समाचार आ रहे हैं उनसे परिस्थिति की भीषणता अवश्य पता लगती है और पता लगता है कि यदि फिलस्तीन की समस्या को बिना सुलझाये छोड़ दिया गया तो १६ मई को ब्रिटिश सेना के विदा हो जाने पर कितना भयकर रक्तपात हो सकता है।

यह भी समाचार है कि फिलस्तीन के विभाजन के पक्ष में प्रेजिडेण्ट ट्रूमैन पर दबाव डालने के लिए ४० लाख मजदूर अमेरिका में हड़ताल करने पर उतारू हैं।

देखा की दृष्टि में

२००५ वि. सं. में क्या क्या होगा?

[श्री हरदेव शर्मा सपादक स्वाध्याय, सोलन (शिमला)]

चैत्र शु० ४ मगलवार ता० १३ अप्रैल १९४८ ई० को प्रातः काल इष्ट घट्यादि ७।३८ पर वृषभलग्नमें सूर्य मेष राशिमें प्रवेश करेंगे। इसी समयसे नवीन सौरवष स० २००५ प्रारम्भ होगा। उस समयकी लग्न कुण्डली परसे ससारके शुभाशुभ भविष्यका निर्णय किया जाता है, नये वर्षकी जन्मकुण्डली यह है—

जगत्-लग्न—

उपर्युक्त सभी योगों, वर्षलग्न, जगल्लग्न कुण्डलियों की ग्रहस्थिति और कूर्मचक्रका सम्यक् विचार करने से ज्ञात होता है कि यह नया वर्ष अपने साथ अनेक अप्रत्याशित अप्रत्याशनीय घटनाओं को लेकर आ रहा है। विश्व के रंग मंच पर अनेक नवीन दृश्य दिखाई देंगे। कष्ट-पीड़ित ससार के लिए इस वर्ष में शांति और सुरक्षा की कोई आशा नहीं है। ससार का राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध रहेगा। दुर्भिक्ष, रोग, भूकम्प, गृहयुद्ध, जलप्रलय, अग्निकाड, तूफान आदि आधिदैविक, आधिभौतिक उत्पातों से कई प्रान्त त्रस्त होंगे। विश्व की महाशक्तियों के सामने नई-नई विषम समस्याएं उत्पन्न होंगी। श्रावण मास (जुलाई) तक का समय संसार के लिए विशेष कष्टप्रद है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज अविश्वास और सदेह से घिरा रहेगा, तीसरे विश्वयुद्ध की काली घटाएं आकाश में मंडराने लगेंगी।

वर्ष का राजा शनि है, यद्यपि शुभ-अशुभ फल प्रायः समस्त ससार में समान रूपेण होता है, तथापि काश्मीर, काम्बोज और कलिंग देश में कुछ विशेष प्रभाव माना गया है। शनि पश्चिम दिशा का अधिपति है और दक्षिण पश्चिम में इस वर्ष शनि की दृष्टि भी रहेगी, अतः यूरोप अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में शनि का अनिष्ट फल अधिक होगा। प्राचीन परिभाषा में पाताल या नागलोक अमेरिका को कहा गया है, इस वर्ष अमेरिका में आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात, भूकम्प, जलप्लावन, विस्फोट, अग्निकाण्ड, रोग, युद्धादि द्वारा जन धन का विनाश अधिक होगा। अथवा अमेरिका की ओर से कोई ऐसा पग उठाया जायगा, जिससे ससार की शान्ति भग होती दिखाई देगी। वैशाख (अप्रैल) मास से काश्मीर हैदराबाद और फिलस्तीन की समस्या अधिक गम्भीर बनेगी, वहा क्रांति होगी। फिलस्तीन में घोर रक्तपात और अराजकता होगी। श्रावण में शनि सिंह राशि में जा रहा है, वह संसार को दो भागों में विभक्त करने वाला तथा कुटिलता, षड्यंत्र, असत्य, अत्याचार, अशान्ति और संघर्ष को प्रश्रय देने वाला सिद्ध होगा। आगे इसी वर्ष के अन्त में जब गुरु नीच राशि (मकर) में जायगा वहा से भयकर विश्व संकट की सम्भावना है। प्रधानामात्यों द्वारा शासित राज्य अथवा शासन संस्थाओं और कृषि-प्रधान देशों के लिए सिंह का शनि और मकर का गुरु 'खतरे की घण्टी' समझना चाहिये। शनि के कारण ससार में साम्यवाद का प्रभाव बढ़ेगा। फ्रांस, इटली, टर्की, यूनान, मन्चूरिया, मध्ययूरोप और मध्यपूर्व अरब आदि सभी यवन राष्ट्रों में रूस का वर्चस्व तेजी से बढ़ता दिखाई देगा। इंगलैंड की वर्तमान मजदूर सरकार के समाजवादी ढाचे को सम्राट शनि देव पूंजीवादी अमेरिका से दूर और साम्यवादी रूस के समीप ले जाने का प्रयत्न करेंगे।

भारतवर्ष

भारत वर्ष की शुभाशुभ स्थिति और भविष्य जानने के लिए कांग्रेस, भारतीय स्वतंत्र उपनिवेश, पाकिस्तान और श्री नेहरू जी की जन्म कुण्डलियों पर विचार करना आवश्यक है। गत १५ अगस्त को भारतीय स्वतंत्र-उपनिवेश की स्थापना हुई थी। वर्षलग्न, जगल्लग्न-कुण्डली, कांग्रेस भारतीय उपनिवेश और पाकिस्तान की जन्म-कुण्डलियों पर सम्यक् विचार करने से ज्ञात होता है कि यह वर्ष भारत के लिए भी शुभावह नहीं है। सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित सी बनी रहेगी। साम्प्रदायिकता पूर्ण रूपेण दूर नहीं होगी। इस विषय में साम्प्रदयिक सघर्ष की अपेक्षा आर्थिक सघर्ष भयानक रूप धारण करेगा। हड़तालों का भय अधिक रहेगा। भूमि और सीमा सम्बन्धी विवाद बढ़ेंगे। उत्तर पश्चिम और पूर्व में पाकिस्तान सीमा पर तथा दक्षिण में भयकर उत्पात होंगे। जनता विवेक खो बैठेगी। वर्ष के पूर्वार्ध में भारत सरकार के भरसक प्रयत्न करने पर भी शरणार्थियों की स्थिति सन्तोष जनक न हो सकेगी। भारतीय उपनिवेश का जन्म-लग्न वृषभ है और पाकिस्तान का मेष। भारतीय लग्नका अधिपति शुक्र न्याय एव शांति प्रिय उदार चरित कला-कुशल विवेकशील सौम्य ग्रह है और वृषभ राशि भी शुभ है, अत भारत की ओर से न तो पहले किसी पर आक्रमण होगा और न वह किसी का अनिष्ट ही सोचेगा। हा, शुक्र नीतिकुशल अवश्य है अतः भारत आत्मरक्षा के लिए सभी सम्भव प्रयत्न करेगा। पाकिस्तान लग्न का अधिपति मगल संहारप्रिय, षड्यन्त्रकारी, रक्तपात, आतंक और आग लगाने वाला [अगारक] क्रूरग्रह है, मेषराशि भी क्रूर ही है। भारत से पाकिस्तान की स्थायी मैत्री कभी भी सम्भव नहीं। मगल के कारण वह आंतरिक गुप्त संगठन कर के किसी समय भी भारत की शान्ति में बाधक बन सकता है वैशाख म मगल के सिंह में जाने पर और आगे श्रावण में सिंह राशि में जाने वाला शनि पाकिस्तान को अनेक प्रकार की आपत्तियों और राजनैतिक उलझनों में फसाने वाला तथा भारत की राजनीति का चमकाने वाला सिद्ध होगा। काश्मीर और हैदराबाद की समस्या गम्भीर बनती जायगी। वैशाख में काश्मीर की समस्या कुछ सुलझती प्रतीत होगी, परन्तु शनि के कारण असखण्ड काश्मीर का कुछ अङ्ग-भङ्ग हो जाना सम्भव है। यदि ऐसा न हुआ तो वह समस्या और भी लम्बी खिंचकर विषम बनेगी। इस वर्ष में विभाजित

पंजाब का पुनः कुछ विभाजन हो जाना भी सम्भव है। किन्तु यह विभाजन गत-वर्ष जैसा भयानक जन-धन विनाशक न होगा। केन्द्रीय सरकार, पंजाब, बंगाल और मद्रास के मन्त्रिमण्डलों में कुछ उलट फेर होंगे।

हैदराबाद (निजाम) की कर्क राशि है। कर्क का शनि मंगल वहां भयंकर रक्तपात जन-धन-विनाश और क्रांतिकारक है। कर्क राशि के अन्त में जाता हुआ शनि हैदराबाद के अनार्य शासन (निजाम के व्यक्तित्व) का भी अन्त कर जायेगा। श्रावण तक हैदराबाद में घोर अशान्ति रहेगी। वर्ष के पूर्वार्ध में वहां भयंकर रक्तपात और नये नये षड्यन्त्र होंगे। वैशाख से श्रावण तक का समय भारत की राजनीति और शासन-व्यवस्था में महत्वपूर्ण, क्रांतिकारक, ऐतिहासिक सिद्ध होगा।

भारतीय कांग्रेस

यह वर्ष कांग्रेस के लिए अधिकार-राशि और प्रतिष्ठा के लिए जितना उज्ज्वल है, उतना ही इस संस्था की आन्तरिक परिस्थितियों के लिए कठिनाइयों से भरा हुआ भी है। विरोधी तत्व ...पेंगे। कुछ स्वार्थलिप्सु लोग अधिकार प्राप्ति के लिए अनुचित उपायों का अवलम्बन करके जनता को उभारने का अवांछनीय प्रयत्न करेंगे। शनि का सम्बन्ध मजदूर तथा दलितवर्ग से है, अतः इनका उत्कर्ष होगा और इन्हीं के द्वारा उत्पात भी खड़े होंगे।

वर्षलग्न और जगल्लग्न

वराहमिहिर के मतानुसार भारत की राशि कन्या लग्न में है और पाश्चात्य मतानुसार मकर पंचम में। जगल्लग्न कुण्डली में प्रजासत्तात्मक चन्द्रमा उच्च का बली होकर स्वक्षेत्री ...क के साथ लग्न में पड़ा है। भारत की उपर्युक्त दोनों राशियां पंचम नवम (त्रिकोण) स्थान में आई हैं। भारत के ...ए यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योग बन ...रहा है। भारत का राजनैतिक महत्व ...ार में बहुत बढ़ेगा, ब्रिटिश सत्ता-...रक शनि निर्बल है और इंग्लैण्ड की ...श मेष वर्ष लग्न से अष्टम और ...त्लग्न से व्यय में पड़ी है अतः ...टेश सत्ता भारत से पूर्ण रूपेण समाप्त ...जायगी। वैशाख से भाद्रपद तक ...कर गरमी पड़ेगी, अग्निकाण्ड, चोरी ... खसोट, डाके, हत्याकाण्ड, याता-...ा दुर्घटनाएं और अचानक मृत्यु की ...दाते अधिक होंगी। वैशाख में सूर्य ...ग्र के बाद भारत के किसी ख्यातिप्राप्त ... के लिए भी आघात योग बन रहा ... अतः मेष कन्या मकर राशि और ...ा वाले नेता एवं शासकों को इस ...धि में विशेष सावधान एवं सतर्क ...की आवश्यकता है। इसी अवधि में ...घी तत्वों के द्वारा विषाक्त वाता-...ा निर्माण किया जायेगा, परिणाम-...स कुछ कारखानों में हड़ताल और ...व कार्य में गतिरोध उत्पन्न होता ...ई देगा। गुरु अष्टम में है और ...श बुध नीच राशि में, अतः भा...रत

विधान सभा का कार्य पूर्ण हो जाने पर भी जनता उससे पूर्णरूपेण सन्तुष्ट न होगी। कुछ नवीन संशोधन परिवर्द्धन करने पड़ेंगे। वर्ष के पूर्वार्ध में नया विधान कार्य रूप में परिणत नहीं हो सकेगा। प्रान्तों में भी कई प्रकार की वैधानिक समस्याएं गतिरोध का कारण बनेंगी।

सप्तमेश मंगल नवमेश दशमेश शनि के साथ तीसरे हैं अतः संसार की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। मंगल शनि के कारण पश्चिम उत्तर के शक्तिशाली दो राष्ट्रों में सैनिक संगठन और शक्ति सम्वर्द्धन की प्रतिस्पर्धा संसार के लिए भय का कारण बनेगी। भारत के अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक और व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ मैत्रीपूर्ण होंगे। अष्टमेष गुरु का शुक्र से षडष्टक योग है अतः संसार के किसी महान् राजनीतिज्ञ की आकस्मिक मृत्यु होगी। भारत में भी किसी लोकप्रिय विशिष्ट महापुरुष के लिए अपघात योग है। गुरु किसी आर्यप्रकृति के वयोवृद्ध लोक नेता, वैज्ञानिक, विधान शास्त्री या धार्मिक महापुरुष की मृत्यु का सूचक है। भाग्येश शनि पराक्रम में मंगल के साथ है और वर्ष लग्न में भाग्येश शुक्र भाग्य भाव में ही है अतः इस वर्ष भारत अपने बल पौरुष से उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेगा। अनार्यों की ओर से डाली जाने वाली सभी प्रकार की गुप्त एवं प्रकट बाधाएं अन्त में विफल होंगी।

समाचार चित्रावलि

श्री नेहरू के सम्मान में बेगम एजाज रसूल ने पार्टी दी है।

प्रसिद्ध कलाकार श्री पृथ्वीराज सहायता कोष के लिए रुपयों व नोटों की झोलियां भर रहे हैं

पं० जवाहरलाल नेहरू चीन में नियुक्त नये राजदूत श्री पनिक्कर से मिल रहे हैं।

टर्की में नियत राजदूत दीवान चमनलाल

भारतीय वायु सेना का एक दृश्य

अमेरिका में नियत राजदूत श्री आसफअली अपना कार्यकाल समाप्त कर लौट रहे हैं।

भारतीय संघ में शामिल होने वाली रियासतें

शामिल होने की तारीख	रियासतों के नाम	रियासतों की संख्या	किस प्रान्त में शामिल हुई	वर्ग मील क्षेत्र फल	आबादी लाखों में	आमदनी लाखों में
१ जनवरी, १९४८	(क) अथगढ़, अथमलिक, बांमरा, बारामवा, बैनकनाल, हलपड़ा, गंगपुर, हिंडोल, कालाहांडी, खरसावन, खांडपारा, नरसिंहपुर, नयागढ़, नीलगिरी, पालहारा, पटना, रामराखाई, रानपुर, सेरैकला, सोनपुर, तालचर, टिगरिया, सनपुर, बालचे, डिनरिया, रिया।	(क) २५	(क) उड़ीसा	१८०००	१०.२५८	०.११
१ जनवरी, १९४८	(ख) बस्तर, जशपुर, कंकेर, चंगभकर, कवर्धा, सेरागढ़, कोरिया, नन्दगांव, रायगढ़, शक्ती, सारनगढ़, सुरगुजा, उदयपु।	(ख) १४	(ख) मध्यप्रांत व बरार	३८०००	४०.५०	१११-१२
१ फरवरी	(ग) मकराय।	(ग) १	(ग) ,, ,,	१५१	.१४	.२५
२१ फरवरी	(घ) लोहारू।	(घ) १	(घ) पूर्वी पंजाब	२२६	.२८	१.९ ६
२२ फरवरी	(ङ) बंगनापाली।	(ङ) १	(ङ) मद्रास	२५९	.४५	१. २५
१ मार्च	(च) पुदुक्कोटा है।	(च) १	(च) ,	११८५	४.३८	२७.५६
८ मार्च	(छ) अक्कलकोट, औंध, कुरंदवाड़, (ज्यू. सी.) भोर, सामन्तवाडी, जत्नीर, मिरज, (ज्यू. सी.) जामखंडी, जत, मुधोल, फल्टन, रामदुर्ग सांगली, सौनूर।	(छ) १६	(छ) बम्बई	७८१५	१६.२१	१४२ १५
५ जून ४८	(ज) बालासीनोर, बांसदा, बरिया, खंभात कोट्या, उदयपुर छोटा, लूनावाडा, धर्मपुर, राजपीपला, सचिन, संत, इडर, राधनपुर, विजय नगर दाता, पालनपुर, सोरोही, और गुजरात के बाने जागीरें, और ताल्लुके।	(ज) २८९	(ज) ,,	२७०७९	२६.२४	१६५. ००
१५ अप्रैल १९४८	(झ) बाघल, बाघाट, बलसन, बुशाहर, मण्डी, बिलासपुर, बीजा, दरकोटी, धामी, जुब्बल, कुठाड़, क्योंथल, कुमारसेन, कुनिहार, कुथर, मंगल, महलोग, नालागढ़, सांगरी, सिरमुर, थरोच, मंडी, सुकेत चंबा,	(झ) २४	(झ) हिमाचल प्रदेश के नाम से इन रियासतों का शासन केन्द्र से होगा।	११२५४	१०.४६	९१.०४
		३७२		१०१९६९	११९.६१	६२४.४६
	रियासतों के नये संघ					
२५ फरवरी १९४८	(क) नवां नगर, भावनगर, पोरबंदर, धरंगधरा, मोरवी गोंडल, जफराबाद, वीकानेर, पलिताना, धरोल, लिमडी, राजकोट, वधवन, लखतर, सयाला, चूडा, बाला, जसदान, अमर नगर, थाना, देवली, वाविया, लाथी, मूली, वाजना, वीरपुर, मेलिया, कोट्या संगानी, जलधर, विजाना, पड़ी सिरासरा।	(क) ४४९	(क) सौराष्ट्र	३१ ९४६	३२.०९	८००.००
१७ मार्च	(ख) अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली	(ख) ४	मत्स्य	७.५८२	१८.३८	१८३.०६
२५ मार्च	(ग) बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावार, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुर, टोंक।	(ग) ९	राजस्थान	१६.८०७	२३.१४	१९१.१९
२ अप्रैल	(घ) अजयगढ़, बावनी, बरौंधा, बीजावर, छतरपुर, चरखारी, दतिया मैहर, नागोद ओरछा पन्ना, रीवा समथर, अलीपुर, बांका, पहाड़ी, बेरी, भाईसोंदा, बीहट, बिजना, धूरवाई, गरौली, गौरीहर जासो, जिगनी, कांता, रजौला कमिथाना, कोठी, लुगासी, नएगावन, रेवाई, पहरा, पलदेव, नयागांव, सरीला, सोहावल, तराव, तोरी, फतहपुर।	(घ) ३५	विन्ध्य प्रदेश	२४.५९८	३५.६९	२४१.१०
		४९७		८१,९४०	१०९,९०	१४११०००
		[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]

जयपुर का नया मन्त्रिमण्डल क्या इस प्रथा का समूलोन्मूलन कर सकेगा ?

राजपूताने की एक निन्दनीय प्रथा

आज भी हमारे स्वतन्त्र देश में मनुष्य गुलाम है

[हरिश्चन्द्र बेडवाला]

सामन्तवाद की मुख्य देन दारोगा जाति है। जहां राजपूत होंगे दारोगा-चाकर भी अवश्य ही मिलेंगे। राजस्थान में इस जाति का आधिक्य है। इस जाति का सर्व प्रथम नाम गोला था। 'गोला' शब्द संस्कृत के 'गोलक' का अपभ्रंश है। इसका अर्थ है — उप पति द्वारा उत्पन्न किसी विधवा का पुत्र ('अमरकोष' में)

विभिन्न स्थानों में उन्हें खास, खवास चाकर, दारोगा, वजीर, चेला, टिकडिया, लाला तथा रावणा भी कहते हैं। ये अपने को विदुर वंशी बताते हैं और इसी में अपनी प्रतिष्ठा भी मानते हैं। गोला शब्द घृणा सूचक है, अतः गोला कहना उन्हें बुरा लगता है। मुसलमानों के गुलाम-लौंडियों तथा गोलेगोर्यों में तनिक सा ही अन्तर है। सदियों से भव्य राजप्रासादों के सुनहरे साये में यह जाति फलती फूलती आ रही है। वस्तुतः ये लोग जागीरदारों एवं राजे महाराजों के आजन्म गुलाम हैं। किसी दारोगिन को प्रसूति का सामान दे कर उसका गर्भ खरीद लिया जाता है। लड़का होने पर वह आजन्म दास बनता है तथा लड़की होने पर दहेज में दे दी जाती है। कभी कभी तो इस तरह दारोगों के कुनबे के कुनबे ही दहेज में दे दिये गये हैं।

दारोगिन — कुमारी, विवाहिता, अथवा विधवा ही क्यों न हो, उसके बेधड़क मालिकों तथा उनके सम्बन्धियों को पूर्ण अधिकार है कि वे उन्हें अपनी पासवान तथा पड़दायत बनालें या मित्र और साथियों को सौगात के रूप में कहीं भी भेज सकें। चाकरों को जबान खोलने की सख्त मुमानियत है। व्यवहारतः यह जाति राजपूतों की चल सम्पत्ति है।

एक दारोगिन अपने पति पर हजार जानें न्योछावर करती है। यह सोचने की न तो किसी को आवश्यकता ही है — न कानून ही कभी यह सोचता है। वह अपराधिनी है और उसका अपराध है, छलकते यौवन की मादकता, खिलता सौंदर्य व बल खाती कमर। इसका दंड मिलता है—मालिक की सभी इच्छाओं की पूर्ति उसे करनी पड़ती है। क्षमा उसे नहीं किया जा सकता। बरबस उसे किसी सरदार उमराव की जूठन खिलाई जायगी, पांव में सोने की एक बेड़ी पड़ेगी और विवश होकर वह उक्त सरदार की पासवान अथवा पड़दायत बनाई ही जायगी।

कौन उसके दरारों पड़े दिल को टटोलने बैठा है! किसे पड़ी है कि जाने, उसके अन्तर के कितने अधूरे अरमान बुझ गये हैं!! क्यों कोई खोज करने लगा कि यौवन सुलभ उसके मनोराज्यों की नींव ढह चुकी है—सुकुमार कल्पनाओं पर पाला पड़ गया है!!! उसे तो अपने में घुट-घुमड़ कर भी ठाकुर-सा'ब—अन्नदाता के कमरे में प्रवेश पाते ही खुमार भरी आंखों की तीखी चितवन के साथ सामने प्याली करके कहना ही पड़ेगा।

दारू तो भकभक करै,
सीसो करै पुकार,
हाथ पियालो धण खड़ी,
पीवो राजकुमार।
दारूड़ो दाखों को॥

[मदिरा की सुमधुर भभकन चारों ओर फैल रही है। बोतल पुकार कह कह रही है और आपकी प्रियतमा प्याला हाथ में लिए खड़ी है। ए राजकुमार! पान कीजिए। अंगूर की हाला है।]

× × ×

इस जाति के जनक सामन्त थे और आज भी अपनी काम पिपासा को शान्त करने या उसे अधिक प्रज्वलित करने के हेतु वे इसे बनाये रख रहे हैं। कौटिल्य के अर्थ शास्त्र के अनुसार कोई भी आर्य (हिन्दू) दास नहीं बनाया जा सकता था। किन्तु उसके बहुत बाद जाति प्रथा के वर्तमान स्वरूप का आविर्भाव होने लगा। अनेक जातियां अपने अलग २ समूह बनाने लगीं। विभिन्न जातियों में विवाह सम्बन्ध निषिद्ध होने लगे और कितने ही ऐतिहासिक कारणों से स्त्रियों का पर्दों में रहना अनिवार्य समझा जाने लगा। कई नूतन सामाजिक जरूरतें भी पैदा होने लगीं, विशेषकर सैनिक जातियों में। राजपूत जाति सदा से एक सैनिक जाति रही है। इन लोगों को युद्ध अथवा और किन्हीं कारणों से अपने घर से बहुत दूर रहना पड़ता था। लेकिन, स्त्रियों को घर के पर्दों में। उन्हें कुछ इस तरह के सेवकों की आवश्यकता पड़ी जो हर तरह की सेवा को कटिबद्ध हों और जिनका अपना कोई अस्तित्व न हो। इसीलिए एक ऐसी श्रेणी को जन्म दिया गया, जिसके व्यक्ति वंशानुक्रम से अधिनाथ रह कर जी सकें। उक्त श्रेणी में उन्हें स्थान दिया गया जो 'गालक' थे, अपनी जाति में जिनका हुक्का पानी बन्द था। कालान्तर में उन्हें कुछ उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर भी प्रतिष्ठित किया जाने लगा और वे किसी विभाग के मुखिया (दारोगा) कहे जाने लगे। स्वामी की नकेल को अपने हाथ में लेने का यह भी एक तरीका था कि ये दारोगिनें उन्हें अपना सतीत्व समर्पित करती चलें।

× × ×

कौटिल्य-काल को आज ढाई हजार से भी अधिक वर्ष बीत चले हैं। पानी के बबूलों की तरह युग बने और बिगड़े। लोल लहरों की मानिन्द सदियें आईं और गईं। परन्तु इस दारोगा जाति को प्रगति के पथ की ओर अग्रसर नहीं होने दिया गया। उनकी वाणी पर मालिक का अधिकार, श्रम पर मालिक का अधिकार, शरीर और शरीर में प्रवाहित रक्त पर मालिक का अधिकार, स्त्री और लाडले बच्चों पर मालिक का अधिकार।

पर आज परिस्थिति बदल चली। सांसें अन्दर ही घुटी घुमड़ी और धमनियों का प्रवाहित रक्त हिलोरें लेने लगा। और तब भान हुआ कि अरे, हम भी इन्सान हैं, ठीक मालिक कहाने वालों के समान। और उनींदी आंख खुलने लगीं। उन्होंने कवियों के छन्द देखे। नीतिकारों के बोल सुने और जाना कि बीते कल के कवि और नीतिकार सामन्ती संस्कृति के शिकार थे। आज का प्रगति प्रिय कवि अथवा नीतिकार कभी भी उस स्वच्छ जबान से नहीं कह सकता —

नहीं हुवे पग नागरे
हिरण न थिरता हुन्त,
सिसिया रे नह सींग जू,
गोला रे नह गोत।

[जिस तरह सर्प के पैर नहीं होते, हरिण कभी स्थिर नहीं रह सकता। और खरहा सींगयुक्त नहीं होता, ठीक इसी तरह गोलों के भी गोत्र नहीं होता।]

अथवा —

गाल बजावै गोलणा,
गोल सवारै गात।
सदा नचीता संचरै,
सदा सुहागण मात।

[गोलिन (दारोगिन) अपने गाल बजा रही है। गोले का शरीर सवारा जा रहा है। ये लोग हमेशा निश्चिन्त ही फिरते हैं। मा अमर सुहागिन जो है।]

इस अतीत संस्कृति को आज के युग में कोई सही कह सकेगा!

आज दारोगा जाति भी गुलामी को बरदाश्त नहीं करना चाहती। अपनी बहू बेटियों की इस भांति रनिवासों तथा रावलों में बेइज्जती नहीं सह सकती, और वह सामन्ती नरक से छुटकारा पाकर ही दम लेगी।

विश्व इतिहास के पन्ने पलटने से मालूम होता है, कई देशों में इस भांति की चाकर-प्रथाओं का प्रादुर्भाव हुआ था। पर क्रांति काल की पहली ही चपेट से उन्हें ध्वस्त हो जाना पड़ा। अमेरिका और फ्रांस आदि के उदाहरण हमारे सामने हैं। क्या इन उदाहरणों को देख-भाल कर भी हम कुछ स्फूर्ति नहीं प्राप्त कर सकते?

कई स्वाभिमानी राष्ट्र इस तरह की प्रथा को कितने दिन तक सहता रह सकता है!!!

मद्रास बन्दरगाह का एक दृश्य।

नन्दगांव की चिट्ठी

★

प्यारे नटवर।

तुम तो सबके घट घट की समझते बूझते हो, तो तुम्हें पता ही है कि कितने युगों से हम ग्वालबाल तुम्हारी खोज में भटक रहे हैं। तुम मिले नहीं, लेकिन हमें ऐसा मालूम पड़ता है कि हमारे प्रेम से खिंचे आकर तुम उसी खिलाड़ी कुंवर कन्हैया के रूप में एक दिन जरूर मिलोगे। तुम्हारी तलाश में पागलों की तरह घूमते देख कर लोग हमें बुलाते हैं, कहते हैं। 'अब उन कृष्ण मुरारी के लिए क्यों भटकते हो! वे अब कलियुग में प्रकट नहीं होंगे। हमारे साथ आओ और सुखों से रहो।

मुझे तो ये अत्याचारी कंस के दूत से मालूम होते हैं, जो प्यारे नटवर से हमें अलग करना चाहते हैं। यह ठीक है कि आप श्यामसुन्दर रूप में शरीर से हमारे पास नहीं हो, पर तुम्हारी वह मोर मुकुट वाली बालछवि सदा आंखों और मन में रम रही है। भला, वहां से उसे कौन हटा सकता है! एक बार जिसने तुम्हारी रासलीला का रस पा लिया, तुम्हारे संग एक बार भी खेल चुका वह भला किसी दूसरे के पीछे क्यों जाने लगा? हे गोवर्धनधारी, तुम्हारी प्रेम की मधुर बंसी की तान सुनते ही मनुष्य क्या पशु पक्षी भी तुम्हारे वश हो जाते हैं। फिर तो वे तुम्हें और तुम्हारी बंसी को भुलाये नहीं भूलते। माधव! तुम्हारी गीता की गुरुगंभीरवाणी सुन कर लाखों अर्जुनों की कमजोरी की बातें और कुशंकायें पलभर में मिट जाती हैं। वे सब स्वार्थ और मतमतान्तर छोड़ कर एक तुम्हारी शरण में ही आ जाते हैं। नदियों को समुद्र के सिवाय और गति भी क्या है? हम भी एक तुम्हें ही ढूंढते रहेंगे और पा कर ही दम लेंगे।

तुम्हारी खोज में भूमंडल के किस कोने की खाक नहीं छानी? तुम्हें अपनी जी की जलन कैसे सुनाये? आखिर, हार कर अखबार की शरण ली है। शायद इसके जरिये हमारी अटपटी बोली तुम तक पहुंच जाय।

पिछले दिनों ख्याल आया कि कहीं आप क्षीर सागर में शेषनाग की कोमल शय्या पर विश्राम न करते हों। यह मनमें आते ही कुछ साथी बाल-ग्वालों के साथ क्षीर सागर पहुंचने की ठान ली और चल पड़े। आपकी कृपा से हमारी सब लोकों में अबाध गति है, सो पासपोर्ट की जरूरत भी ही नहीं। लाल सागर से स्वेज नहर पार कर भूमध्य सागर पहुंचे तो उसकी छाती रौंदते हुए कई बड़े-बड़े पर्वत जैसे जहाज देख पड़े। उन पर तारे और धारियों-वाले झंडे थे। पूछने पर मालूम हुआ कि अमरीका बीसवीं सदी के तीसरे महाभारत की तैयारी कर रहा है, उसी के जहाज हैं। यह भी सुना कि इटली से उसने सांठ गांठ कर ली है और इंगलैंड व फ्रांस के साथ मिल कर लीबिया, मोरक्को आदि में हवाई अड्डे भी बना लिये हैं। कहते हैं दूसरा महाभारत ६ साल चलता रहा, तीसरा और भी लम्बा चलेगा। मालूम होता है ये दानवों के देश हैं जहां सौ-सौ साल भी लड़ाई चलती रही है। तुमने तो महाभारत १८ दिनों में ही खतम करा दिया था और बिना हथियार उठाये ही धर्मपक्ष को जिता दिया था। शायद इन में कोई धर्मपक्ष नहीं—दोनों ओर ही दानव हैं, तो तुम वहां कहां मिल सकते हो? अधिक समय बर्बाद करना फिजूल समझ हम आगे चल दिये। रास्ते में रेडियो से सुना कि अंध महासागर के पार बड़ा भारी यज्ञ हो रहा है। वहां पृथ्वी भर के राजे महाराजे इकट्ठे हैं। हमने सोचा शायद कलियुग में कोई धर्मराज उपजे हों और उन्होंने राजसूय रचाया हो। अब तो इसमें अवश्य तुम्हारी अग्रपूजा होगी। सागर पार कर पाताल लोक की उस भूमि पर पैर रक्खा जिस पर कभी तुम्हारे सखा—गांडीवधारी अर्जुन दिग्विजय करते हुए आये थे। आजकल इसे अमरीका कहते हैं। बन्दरगाह पर उतरे तो आगे स्पेशल तैयार थी। उसी में घुस गये। बड़ी भीड़ भाड़ थी। पूछा तो सभी लोग लेक सक्सेस—जहां यज्ञ हो रहा था—जा रहे थे। अधिक बातचीत करने को जी नहीं किया क्यों कि आस पास बैठे लोग मेरा सांवला रंग देख कुछ नाक भौं सिकोड़ रहे थे। मुझे यह देख हैरानी हुई क्यों कि तुम्हारे कारण भारत में तो श्यामवर्ण की पूजा होती है। शायद पाताल के लोग गुणों की परख नहीं जानते, चमड़े की परख अच्छी करते हैं।

खैर ले दे कर यात्रा समाप्त हुई। स्टेशन से बाहर निकल कर देखता हूं कि बड़ी ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं खड़ी हैं। ऐसा लगा जैसे भोगवादी दानवों ने आर्यों के योगमार्ग के मुकाबले बिना ही स्वर्ग पहुंचने की सीढ़ी बनाई हो। यज्ञमंडप के सामने पहुंचा तो सिपाही ने अन्दर जाने से रोका। पूछा—'किस देश के प्रतिनिधि हो?'

'गोकुल के।'

'हैं! गोकुल! ये कौनसा देश हुआ? यह नाम तो पहले नहीं सुना।'

'अच्छा, गोपाल के गोकुल का नाम नहीं सुना?'

'ठीक, समझ गया।' गोपाल-स्वामी के देश के हो। तो पहले ही इंडिया क्यों न कहा? खैर, इधर से अंदर चले जाओ।'

अन्दर गया तो सभाभवन की शोभा देख कर दंग रह गया। मय दानव के वंशजों ने पुराने शिल्प की परम्परा की रक्षा ही नहीं की अपितु उसे बढ़ाया भी है। सामने मंच पर नजर पड़ी तो एक सजे हुए ऊंचे आसन पर एक चीनी को बैठे देखा। यह तो हमारे नटवर नहीं। मन में सोचा कि भूल हुई। अब फिर क्षीर सागर की ओर मुंह करूं। इतने में ही वह चीनी बोला—

'भारत के प्रतिनिधि गोपाल स्वामी आयंगर।'

मैं चौंक पड़ा। सम्हल कर देखने लगा। बाईं ओर से हैट सूटधारी एक व्यक्ति उठ कर खड़ा हुआ। रंग तो सांवले से भी कुछ गहरा था। क्या ये ही हमारे बालसखा हैं? किंतु यह वेष, वह मनमोहनी मूर्ति नहीं। सुदर्शन चक्र भी हाथ में नहीं। आंखें मल कर फिर देखा। उनके पीछे एक तिरंगे कपड़े के बीचों बीच चक्र सा बना था। चक्र कपड़े पर क्यों बना है? हाथ में क्यों नहीं? इसी प्रकार की बीसियों शंकायें क्षण भर में मन में घूम गईं। इतने में वे बोले। सुनते ही आशा निराशा में बदल गई। यह तो गीता गाने वाले भगवान् की देववाणी नहीं, कलियुग के गोपाल अपने मालिकों की जबान अंग्रेजी में कुछ कह रहे हैं। मैं सुन न सका। कुछ बोल कर वे बैठे ही थे तो सुना—'पाकिस्तान के प्रतिनिधि जफरुल्ला खां।'

महिषासुर की शकल का सा एक आदमी उठा। वह खड़ा तो हुआ था भारतीय प्रतिनिधि के प्रश्नों का उत्तर देने, पर ऊलजलूल बोलने लगा। उसने भारत पर नये नये दोष लगाने शुरू किये। एक घंटे बाद झूठे आरोपों का जवाब देने गोपाल स्वामी खड़े हुए तो भी शान्त थे। कुछ देर बहस चली। मुझे लगा कि भारत के गौरव के लिए

[शेष पृष्ठ २२ पर]

हिन्दी संसार

दिल्ली के स्कूलों में हिन्दी

(श्री धर्मराज वेदालंकार अध्यापक रामजस हा० सै० स्कूल नं० २ दिल्ली)

पिछले वर्ष तक दिल्ली में ६० प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी पढ़ा करते थे, किन्तु १५ अगस्त १९४७ के पश्चात् यहां हिन्दी के लिए अपूर्व उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा है। अब यह उपदेश देने की आवश्यकता नहीं रही कि हिन्दी पढ़ना उपयोगी है। विद्यार्थी स्वयं और उनके मां बाप भी हिन्दी के महत्व को अनुभव कर रहे हैं। यद्यपि यहां हिन्दी राजभाषा घोषित नहीं हुई है, तथापि युक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रांत, राजस्थान तथा पूर्वी पंजाब में जो इसका गौरव प्रतिदिन बढ़ रहा है, उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव यहां पड़े बिना नहीं रह सकता।

प्राइमरी कक्षाओं में इस समय ६० प्रतिशत भर्ती हिन्दी में हो रही है, उर्दू में नहीं। इस लेख में हम उदाहरण रूप से केवल सेकंडरी स्कूलों को ही लेंगे।

कमर्शल हायर सेकण्डरी स्कूल चर्खेवालान में वर्षों से एकमात्र हिन्दी का राज्य है। आर्य कन्या पाठशाला नई दिल्ली, आर्य गर्ल्स हायर सेकंडरी स्कूल चावड़ी बाजार तथा इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स हायर सेकंडरी स्कूल आदि कन्याओं के विद्यालयों में प्रायः सर्वत्र शत प्रतिशत हिन्दी है।

बिड़ला हायर सेकंडरी स्कूल सब्जी मण्डी तथा संस्कृत हायर सेकंडरी स्कूल दरियागंज में इस वर्ष से नवम कक्षा तक उर्दू के सब विद्यार्थियों ने हिन्दी ले ली है। इसी प्रकार रामजस हायर सेकंडरी स्कूल नं० ३ में दशम कक्षा तक हुआ है। सातवीं कक्षा तक यही कार्य हीरालाल जैन हायर सेकंडरी स्कूल सदर बाजार तथा डी० ए० वी० हायर सेकंडरी स्कूल दर्यागंज में हुआ है। एम० बी० हायर सेकंडरी स्कूल रीडिंग रोड में ९० प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी पढ़ रहे हैं। माडर्न हायर सेकंडरी स्कूल नई दिल्ली में ६०० में से सिर्फ ४० लड़के उर्दू पढ़ते हैं, शेष सब हिन्दी। डी० ए० वी० हायर सेकंडरी स्कूल नई देहली में उर्दू पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भी विशेष रूप से हिन्दी पढ़ाई जा रही है, ताकि अगले वर्ष उर्दू का स्थान पूर्ण रूप से हिन्दी ले सके। खालसा हायर सेकंडरी स्कूल करोलबाग में आठवीं कक्षा तक ८५ प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी या पंजाबी पढ़ रहे हैं, सिर्फ १५ प्रतिशत उर्दू। रामजस बंगाली हायर सेकंडरी स्कूल रीडिंग रोड में पिछले वर्ष तक न हिन्दी थी और न उर्दू; इस वर्ष से आठवीं कक्षा तक हिन्दी अतिरिक्त विषय के रूप में पढ़ाई जा रही है। क्षत्रियोपकारक हायर सेकंडरी स्कूल बाग दीवार ने अगले वर्ष के आरम्भ से नवम कक्षा तक एक मात्र हिन्दी रखने का निश्चय किया है। जनता की बोली हिन्दी को अपनाने में दिल्ली प्रांत का देहात और भी आगे है। १५ अगस्त के बाद से कितने ही प्राइमरी स्कूलों ने एकदम उर्दू के बदले हिन्दी की शिक्षा आरम्भ कर दी। दिल्ली से १२ मील परे बदरपुर में एकमात्र हिंदी है। १६ मील परे कंझावला के शक्ति हायर सेकंडरी स्कूल में ९५ प्रतिशत छात्र हिन्दी पढ़ने वाले हैं।

परिवर्त्तन इतनी शीघ्रता से हो रहा है कि लक्षणों के आधार पर हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि दो महीने बाद नए वर्ष के आरम्भ में उर्दू के मुकाबले में हिन्दी छात्रों की संख्या ९१-९२ प्रतिशत तक पहुंच जायगी।

ऊपर जिन स्कूलों का नाम नहीं आया है उनमें भी हिन्दी का आन्दोलन हो रहा है। अगले साल से उर्दू की बजाय हिन्दी की पढ़ाई का हमारे लिये प्रबन्ध किया जाय, इस आशय के मुद्रित प्रार्थना पत्र (ये प्रार्थना पत्र बिना मूल्य लेखक से प्राप्त हो सकते हैं) सैकड़ों की संख्या में भर भरकर विद्यार्थी अपने स्कूलों के अध्यक्षों के पास भेज चुके हैं और रोज भेज रहे हैं।

उर्दू के प्रति आकर्षण मुख्य रूप से उसके कचहरी की भाषा होने के कारण था। जब से यू० पी० कचहरी में भी हिन्दी का बोलबाला हो गया है, तब से दिल्ली में भी यह आकर्षण खत्म हो रहा है। यहां अभी अतिरिक्त भाषा के रूप में हिन्दी को कचहरी की भाषा माना गया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ देश की संस्कृति से ओतप्रोत हिन्दी का मान बढ़ना स्वाभाविक है। दिल्ली के कितने ही स्कूलों ने अपना दफ्तरी काम भी हिन्दी में आरम्भ कर दिया है। वह दिन दूर नहीं जब राजधानी में प्रान्तभाषा और राष्ट्रभाषा कदाचित् विश्वभाषा के रूप में भी हिन्दी का अत्यन्त गौरवास्पद एवं महनीय स्थान होगा। किन्तु देखना यह है कि कब वर्त्तमान जनतन्त्र सरकार जनता की भाषा को अन्य प्रांतों के समान यहां भी राजभाषा का पद प्रदान करती है ?

हिन्दी विरोधियों क कुचक्र

[श्री राहुल सांकृत्यायन]

हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों ने हिन्दी को राज भाषा बनाने के पक्ष में अपनी राय दे दी, हिन्दुस्तानी के पक्षपाती अब एक दूसरी चाल चल रहे हैं। हिन्दी प्रान्तों में अपनी दाल गलते न देखकर उन्होंने अहिन्दी प्रान्तों को अपना कार्य क्षेत्र बनाया है और अपनी मनोरथ सिद्धि के लिए कोई भी उपाय छोड़ना नहीं चाहते। सुनते हैं हिन्दुस्तानी समर्थक एक धुरन्धर आचार्य ने विधान परिषद् में हिन्दी को भारत संघ की राष्ट्रभाषा न बनने देने के लिए बीड़ा उठाया है और दूसरों के असगुन के लिए अपनी नाक तक कटवाने को तैयार हैं। वह कहीं कहते हैं — 'बापू के जीवित रहने तक तो चाहे हिन्दुस्तानी उर्दू को ठुकरा भी सकते थे लेकिन अब उसका ठुकराना बापू के प्रति महान् कृतघ्नता होगी।' कहीं लोगों को यह कह कर भड़काया जाता है कि हिन्दी जैसी एक तुच्छ भाषा कैसे सारे भारत की राष्ट्रभाषा
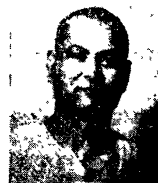
लेखक

हो सकती है। राष्ट्रभाषा बनाना है तो बंगला, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगू जैसी समुन्नत भाषाओं को वह पद दिया जाय और कहीं पर यह भी कहते हैं कि क्यों एक राष्ट्रभाषा हो। क्यों नहीं स्विटजरलैंड की तरह हमारे देश में अनेक राष्ट्रभाषाएं हों। अहिंसा और सत्य के ये अवतार अब कल-बल-छल हर तरह से हिन्दी का विरोध करने के लिए कटिबद्ध हुए हैं। हिन्दुस्तानी का अर्थ उर्दू लिपि और उर्दू भाषा को घुसेड़ना छोड़कर और कुछ नहीं। आसेतु-हिमालय जहां उर्दू आज तक पहुंच नहीं पायी थी, वहां भी उसे लादने का यह प्रयत्न कितना दुस्साहस है। इसे कई बार बतलाया जा चुका है कि उर्दू जिस अरबी लिपि में लिखी जाती है, यदि सुगम होती तो वह तुर्की और मध्य एशिया के देश से निकाली न जाती। रही उर्दू भाषा, उसका अर्थ है साठ सत्तर प्रतिशत संस्कृत के तद्भव शब्दों की जगह उससे अधिक परिमाण में अरबी फारसी शब्दों को स्वीकार करना। यही तद्भव तत्सम शब्द हैं, जो भारत की सभी भाषाओं को एक दूसरे के समीप लाते हैं। बंगला, मराठी, गुजराती तेलगू आदि सभी भाषाओं में यह संस्कृत के शब्द एक समान मिलते हैं। इन साठ, सत्तर प्रतिशत शब्दों को निकाल कर अरबी फारसी के अपरिचित साठ, सत्तर शब्दों को रखना कौनसा अविकृत मस्तिष्क ठीक समझ सकता है।

देश के स्वतन्त्र होने के साथ अब गाव की पंचायतों से लेकर हाईकोर्टों तक, प्रांतों और केन्द्र की पार्लियामेंट तक, प्राथमिक पाठशालों से विश्वविद्यालयों तक अंग्रेजी का स्थान मातृभाषाएं लेने जा रही हैं। हिन्दी कभी नहीं चाहती कि प्रान्तों की मातृभाषाओं का स्थान ले। अपने अपने क्षेत्र में मराठी, गुजराती तेलगू का सभी जगह अखण्ड राज्य होगा। हमें मातृभाषाओं को उचित स्थान दिलाने के लिये एक विशाल साहित्य तैयार करना है। इसके लिये सब से पहली आवश्यकता है पारिभाषिक शब्दों की, और ये पारिभाषिक शब्द थोड़े नहीं, ढाई लाख से चार लाख तक होंगे। क्या हिन्दुस्तानी की खाल में छिपे ये उर्दू-पक्षपाती चाहते हैं कि ये लाखों की संख्या में लिये जाने वाले पारिभाषिक शब्द अरबी- से लिये जाय। कम से कम राजकाज सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द तो सब के लिए एकसे चाहियें। तो क्या इन शब्दों को अरबी से लेकर सारे भारत को सिखलाया जाय। इस विषय में हिन्दी का रास्ता सरल और समान है। वह अपने पारिभाषिक शब्दों को संस्कृत से लेती है। उसी तरह बंगला, गुजराती मराठी, तेलगू आदि ही नहीं बल्कि स्यामी और सीलोनी (सिंहली) भी। यह साफ है कि हिन्दी की रास्ता सभी प्रान्तीय भाषाओं के लिए सुलभ और व्यावहारिक है।

हमें आशा है कि आज जो हिन्दुस्तानी के प्रचारक हिन्दी के विरुद्ध पागल होकर अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में घूम-घूमकर झूठा प्रचार करके अपने को गांधीजी का सच्चा भक्त सिद्ध कर रहे हैं, उनके धोखे में कोई नहीं आवेगा। भारत की एक सूत्रता के लिए एकराष्ट्र भाषा की आवश्यकता है, उसका काम प्रांतीय भाषा का स्थान ग्रहण करना नहीं है, बल्कि एक भाषा-भाषी प्रान्त का दूसरे भाषा-भाषी प्रान्त के साथ और प्रांतों का केन्द्र के साथ सम्बन्ध जोड़ना है। हमारा हिन्दी के लिए आग्रह सिर्फ इसलिए है कि वह पहले ही से भारत के एक विशाल भाग में व्यवहृत होती है। यदि लोग हिन्दी की जगह किसी दूसरी भाषा को इसके योग्य समझें तो उसे भी हम मानने के लिए तैयार हैं, लेकिन वह भाषा ऐसी होनी चाहिये जो दूसरी भारतीय भाषाओं के साठ सत्तर सैंकड़े समान शब्दों को रखे। उर्दू ऐसी भाषा नहीं है, यह निश्चित है।

अच्छाई बुराई

[श्री सुरेन्द्र]

मा में सन्नाटा छाया हुआ था। श्रोता मुग्ध थे। वक्ता ने उन पर जादू सा कर रखा था। वक्ता एक नौजवान, सुन्दर, खद्दर पोश। उनका चेहरा ओजस्वी था। वे कालेज के एक विद्यार्थी थे और कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य भी। वे ग्राम जागीरों और जमींदारियों में गुलामी की जो प्रथा है, उस पर बोल रहे थे। जमींदारों के अत्याचारों की जो रोमांचक कहानी उन्होंने सुनाई उसने — सब श्रोताओं को मुग्ध कर लिया था — एक को छोड़कर। वह व्यक्ति मेरे सामने खड़ा था। वक्ता की किसी किसी बात पर वह झुंझला उठता था। जब दूसरे श्रोता तालियां बजा रहे थे, उसके मुंह से एक अजीब सी आवाज निकली थी, किसी क्रुद्ध जन्तु के गुर्राने की सी। साफ था कि वह वक्ता के विचारों से सहमत नहीं। युवक बहुत गरीब मालूम होता था और उसकी सूरत से यह नहीं मालूम होता था कि वह पढ़ा लिखा होगा। इस युवक पर वक्ता की वाक् चातुरी का उल्टा असर देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। इस युवक के बारे में और बातें जानने की जाने क्यों मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई। मैंने बातों में लगाया। कहा — "बड़ा अच्छा भाषण था। क्या ख्याल है आपका?"

युवक — "जी हां! ये लोग खूब बोलते हैं। बातें सच हों या झूंठ, सुनने वालों को विश्वास हो जाता है कि जो कुछ यह कह रहे हैं, वही देव-वाक्य है।"

मैं — "मेरे ख्याल में तो जो कुछ उन्होंने कहा, सब सच है। जागीरदारी में और जो कुछ बुराइयां होती हैं वे तो हैं ही, लेकिन यह गुलामी की प्रथा उनमें सब से बुरी है। देश के लिए यह कलंक है।"

युवक — "आप इस प्रथा के बारे में क्या जानते हैं?"

मैं — "क्या यह बात ठीक नहीं है कि यह लोग अपने नौकरों पर वैसा ही अधिकार रखते हैं, जैसा आदमी जानवरों पर!

युवक — "यह तो कोई ऐसा काम नहीं है जो सिर्फ जागीरों में ही होता हो। शहरों में भी तो यही होता है। किसी की किसी आफिस में जरूरत नहीं रही और उसे दूसरे मालिक के सुपुर्द कर दिया।"

मैं — 'लेकिन उनको अधिकार होता है वे चाहें तो जायं, चाहें न जायं, कोई उनको जबरन नहीं भेज सकता। गुलामों को तो जाना ही पड़ता है।"

युवक — "गुलाम भी, अगर वह काबिल हो, और वह नहीं जाना चाहे तो जाने से मना कर सकता है। हां उसे वह गांव छोड़ना पड़ेगा।

मैं — "तो मैं यह समझूं कि आप इस प्रथा के समर्थक हैं। चलो एक तो ऐसा मिला जो इस बारे में जमींदारों और जागीरदारों की हिमायत करता हो।"

युवक — "आप मुझे गलत समझ रहे हैं। मैं खुद एक समय ऐसा ही गुलाम था और मैं भी इस प्रथा के बिल्कुल खिलाफ हूं। लेकिन इसको मिटाने ने जो तरकीबें की वक्ता बताई हैं उनसे मैं सहमत नहीं हूं। गुलाम लोगों को अक्सर खाने और कपड़े पर काम करना पड़ता है। अच्छा मालिक उन्हें आराम से रखता है। उन लोगों को हाथ खर्च के लिए भी कुछ मिल ही जाता है। गाव के किसानों के मुकाबले में यह अमीर माने जा सकते हैं। मैं आपको कहूंगा कि उन्हें इस प्रथा से नहीं इसके नाम से नफरत है। अगर इसका नाम बदल कर नौकरी, मजदूरी या और कुछ रख दिया जाय तो वक्ता महोदय खुश हो जायंगे। अगर वक्ता के हाथ में शासन की बागडोर आ जाय तो वह इससे ज्यादा कुछ नही कर सकते कि इसका नाम बदल दें। अगर अभी आपने यह कानून बना दिया कि कोई जागीरदार गुलाम नहीं रख सकता और जो कोई नौकर रखना चाहे उसे पैसे देकर नौकर रखना पड़ेगा तो नतीजा क्या होगा। खाना वगैरह देना जागीरदारों को अखरता नहीं है, क्योंकि अनाज उनके यहा पैदा होता है। पैसा देना उनको अखरेगा। फल यह होगा कि वे अपने नौकरों की संख्या कम कर देंगे। इस तरह बेकारी बढ़ेगी।

मैं — "आपने कहा कि आप गुलाम थे लेकिन आपकी बातों से तो आप बड़े समझदार आदमी मालूम होते हैं। क्या सब गुलाम ऐसे ही अक्लमन्द होते हैं?"

युवक — "थोड़ी बहुत अक्ल सभी आदमियों में होती है। कुछ को उसके विकास का अवसर मिल जाता है और कुछ को नहीं।

मैं — "अच्छा, अगर तुम गुलामी को इतना अच्छा समझते हो तो फिर अपने जागीरदार को छोड़कर यहां आये क्यों?"

युवक — "आप यह सब क्यों जानना चाहते हैं?"

मैं — "वैसे ही, लेकिन अगर आप कहना नहीं चाहते तो कोई बात नहीं।"

युवक — "मुझे कहने में कोई आपत्ति नहीं है। मैं एक बड़े भले जागीरदार के यहां नौकर था। बड़े आराम से रहता था। अच्छा खाना, अच्छे कपड़े, काम मामूली। लेकिन फिर भी मैं गुलाम था। हमारी हालत गांव के किसानों से अच्छी थी, लेकिन फिर भी किसान अपने को हमसे ऊंचा समझते थे क्योंकि हम गुलाम थे और वे किसान। मुझे यह बुरा लगता था। जब कोई मुझे 'गोला' या 'हजूरी' कहता, मेरे बदन में आग सी लग जाती थी।

"जागीरदार के लड़के की शादी हुई। उसके दहेज में एक नौकरानी भी आई। वह देखने में खराब नहीं थी। उससे मेरी शादी कर दी गई। हम दोनों सुख से रहने लगे। उस समय मैं अट्ठारह वर्ष का था। तीन वर्ष बाद मैं एक लड़की का बाप हो गया। लड़की बड़ी सुन्दर थी। मैं उससे बहुत प्रेम करता था। वह बड़ी होने लगी। धीरे धीरे तेरह वर्ष की हो गई।

"जागीरदार के जिस लड़के के दहेज में मेरी बीबी आई थी, उसके घर भी शादी के एक साल बाद ही लड़की हुई थी। वह इस समय ब्याह के योग्य हो गई थी। जागीरदार ने मेरी लड़की को उसके दहेज में देना चाहा। वह मुझे बहुत नागवार मालूम हुआ। मैंने जागीरदार को अपनी असहमति बताई। मुझे समझाया गया कि मेरी लड़की की शादी कुछ दिन बाद करनी ही पड़ेगी। जहां वह दहेज में जा रही है वहां एक सुन्दर लड़का नौकर (गुलाम) है और उससे मेरी लड़की की शादी कर दी जायगी। लेकिन फिर भी मुझे मेरी लड़की का निर्जीव वस्तु को तरह दूसरों को दे दिया जाना बुरा लगा।

"हमारे गांव में शहर से कभी कभी एक सज्जन आकर किसानों से बातें किया करते थे। मुझे पता नहीं वे कांग्रेसी थे या कम्यूनिस्ट। कोई भी हों, उनसे ठाकुर प्रसन्न नहीं थे। उनसे ही मैंने अपनी विपत्ति में राय लेना ठीक समझा। मुझे शहर के सुनहरे चित्र दिखाये गये — 'कुछ घण्टे काम करो और महीने में बीस रुपये ले लो।' मैं किसी मिल में मजदूरी करने के स्वप्न देखने लगा।

"पूर्व कथित शादी होने के कुछ दिन पहले मैं अपनी बीबी और लड़की के साथ गाव से चल दिया। शहर पहुंचा। यहां मैंने नौकरी की कोशिश की लेकिन नौकरी कहीं न मिली। मुझे चिन्ता होने लगी। ठाकुर के यहां हमें अक्सर ईनाम वगैरह मिल जाया करता था, जिससे हमारे पास सौ के करीब रुपये हो गये थे। इन पर गुजर होने लगा। पैसे आधे रह गये, लेकिन नौकरी न मिली। आखिर मेरे पास सिर्फ पचीस रुपये बच रहे। मैंने घबराकर मजदूरी करना तय किया। मैं दिन भर मजदूरी करता। कभी मुझे छः आने मिल जाते और कभी आठ। इन आठ आनों में तीन आदमियों का गुजर करना असम्भव सा जान पड़ा। जमा में से खर्च होते रहे। कुछ मास में जमा भी खर्च हो गई। बड़ी मुश्किल से रूखा सूखा खाकर पेट भर लेते थे। कपड़े भी बेहद मैले और पुराने रहने लगे। काम बहुत ज्यादा करना पड़ता था और बर्ताव हमारे साथ पहले से भी खराब किया जाता था। जितनी गालियां मैंने मजदूरी करते खाईं, उतनी ठाकुर के यहां सारी जिन्दगी रह कर भी न खाता। सिर्फ एक बात अच्छी थी। अब मैं गुलाम नहीं था, मजदूर था। वैसे थी वह भी गुलामी ही और इसका रूप पहले से भी भयानक था, सिर्फ नाम बदल दिया गया था।

परिस्थिति वश मेरी स्त्री ने भी मजदूरी शुरू कर दी। ठाकुर के यहां आटा पीसना पड़ता था, झाड़ू लगानी पड़ती थी लेकिन इतनी मेहनत का काम नहीं करना पड़ता। और न ही उसे दूसरे मजदूरों और ठेकेदारों के भद्दे मजाक सहने पड़ते। मैं यह नहीं कहता कि सब जागीरदारों के यहां हमारी स्त्रियों की इज्जत बची रहती है। यह तो अमीरों का गरीबों पर अत्याचार है जो दुनिया के किसी भी कोने में देखा जा सकता है। हमारी लड़की ने भी मजदूरी करना शुरू कर दिया।

"एक दिन हम मजदूरी से वापिस आये — मैं और मेरी पत्नी। मेरी लड़की

(शेष पृष्ठ २० पर)

अमरीका में 'युद्ध' महामारी

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा कोलम्बिया (अमेरिका)]

"सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि अमेरिका में अब कोई शांति की बात ही नहीं करता। जिधर देखो युद्ध की ही चर्चा है। हालत यह है कि अब अमेरिकन ही अपने आप से पूछने लग गये हैं — 'अरे! हमें क्या हो गया है! हम इतने डरे डरे क्यों हैं?'" तपेदिक की तरह "युद्ध रोग" स्वस्थ और सुन्दर अमेरिका के मस्तिष्क और हृदय को कलुषित कर रहा है। इसके साथ ही साथ एक बात निश्चित रूप से समझ लेनी चाहिए कि न अमेरिका युद्ध चाहता है न रूस परन्तु दोनों ही हतोत्साह होकर कह रहे हैं कि — "बात हमारे बस की नहीं! युद्ध हो ही जायगा।"

हम पूर्वीयों पर ये श्वेत पश्चिमी रहस्यवाद और रूढ़िवाद के आरोप लगाया करते हैं। अब जरा इन "मूढ़मतों" से यह पूछा जाय कि भला इससे बढ़कर और क्या रहस्यवाद हो सकता है कि — "युद्ध चाहते नहीं परन्तु हो ही जायगा।" एक अमेरिकन पत्रकार ने चुटकी लेते हुए लिखा है कि — "वेश्या से विषय आनन्द करते हुए कोई यह चाहता नहीं कि उसे घृणित रोग लग जाय परन्तु वह लग ही जाता है।" इस पत्रकार का कहना ठीक है परन्तु इस "कमबख्त" को यह नहीं सूझा कि वेश्या से सम्भोग किया ही क्यों जाय?

यही नासमझी राजनीतिज्ञों के भी दिमाग में घुसी है। राष्ट्रपति ट्रूमैन, परराष्ट्रमन्त्री मार्शल, रक्षामन्त्री फौरेस्टल ने युद्धात्मक भाषणों, अनेक धमकियों की मांगों, चेतावनियों तथा सैनिकव्यय के लिए धन मंजूरी के लिए बिल पर बिल पेशकर मार-नाक में दम कर दिया है। और यह सब किस लिये? सब एक स्वर में कहते हैं — "शांति बनाए रखने के लिए।"

अमेरिका के भूतपूर्व परराष्ट्रमन्त्री कार्डल हल ने, जो राष्ट्रपति रूजवेल्ट के शासनकाल में १६ वर्ष तक संयुक्तराज्य के परराष्ट्रमन्त्री रहे, अपनी "जीवन गाथा" में लिखा है — "मुसोलिनी से जब अन्तिम बार अनुरोध किया गया कि वे अबीसीनिया पर आक्रमण न करें तो मुसोलिनी ने कहा कि इटली ने इतनी बड़ी सेना तैयार की है, अरबों लिरा (इटालियन मुद्रा) व्यय किया है। आखिर उसका कुछ न कुछ उपयोग तो होना ही चाहिए।"

आखिर अमेरिका इतनी बड़ी सेना समवाम अपने के लिए तो तैयार नहीं कर रहा और न सेना चौकीदारी करने के लिए तैयार की जाती है, और न परमाणु बम — जो अमेरिका बहुत बड़ी संख्या में तैयार कर रहा है — रसगुल्लों का काम देंगे।

सभ्य अमेरिकन

अमेरिकन राजनीतिज्ञ एक दूसरी ही दलील देते हैं। उनका कहना है कि साम्राज्यवादी रूस संसार पर प्रभुत्व जमाना चाहता है जिसके फलस्वरूप मानव सभ्यता पुन आदमयुग में धकेल दी जायगी। अमेरिका मानव सभ्यता का संरक्षक है, वह युद्ध नहीं चाहता और वह किसी पर आक्रमण "कर ही नहीं सकता, करेगा ही नहीं" — इसलिए उसके पास सैनिक शक्ति का रहस्य बुरा नहीं है। परन्तु रूस युद्ध चाहता है और उन "डाकुओं" को सिवाय "घूसे का जवाब घूसे' वाली भाषा के और कोई भाषा समझ में ही नहीं आती।

"सभ्य" दुनिया भले ही अमेरिकन सैनिक तैयारी को अपनी संरक्षता के लिए समझ लें, रूस ऐसा नहीं समझेगा। उसे शंका है कि अमेरिका उसपर आक्रमण करेगा। वह अभी तक यह नहीं भूला है कि १९१९ में सोवियत रूस के जन्म होते ही अमेरिकन सेनाओं ने रूस पर आक्रमण किया था, १४ वर्षों तक रूस को अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति नहीं दी गयी, उसे लीग आफ नेशन्स से निकाला गया, जर्मनी को पहले रूस से लड़ने को उभाड़ा गया, युद्धकाल में भी दूसरा मोर्चा खोलने में १६ महीने की देरी लगायी गयी और यही राष्ट्रपति ट्रूमैन-जो कि तब सिनेटर थे — ने एक बार कहा था — "रूस और जर्मनी को आपस में भिड़कर एक दूसरे का खात्मा कर लेने दो।"

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए रूस अपनी सीमा बढ़ाता जा रहा है। गेहूं के घुन की तरह दो साम्राज्य वादियों के बीच बेचारे छोटे राज्य कुचले जा रहे हैं।

अमेरिकन मनोवृत्ति

सोवियत रूस में क्या हो रहा है यह बता सकना कठिन है परन्तु अमेरिका को मैं पिछले दो वर्षों से अधूरे-प्रजा तन्त्रात्मक शासन से धीरे धीरे फासिस्ट बनते देख रहा हूं। इस समय अमेरिकन राजनीतिज्ञों और समाचारपत्रों का मानो एक ही कार्य बाकी रह गया हो। जनता को डराना और बहकाना। पिछले सप्ताह बड़े बड़े मोटे शीर्षकों में अमेरिकन तट के पास रूसी पनडुब्बियों के देखे जाने के समाचार छपे। शीर्षक था — "रूसी पनडुब्बी अमेरिकन तट के समीप!" समाचार था — "जलसेना सचिव ने कांग्रेस में भाषण करते हुए बतलाया कि एक वायुयान चालक ने हवाई द्वीप समूह के २०० मील दूर (अमेरिकन तट से २८०० मील दूर) एक ऐसी पनडुब्बी देखी जो किसी पश्चिमी राष्ट्र की नहीं है, तथा एक अमेरिकन जहाज ने अल्युशियन द्वीप समूह (अमेरिका से ३००० मील दूर) के पास एक ऐसी वस्तु देखी जो सम्भवत रूसी पनडुब्बी है।" पहले शीर्षक पढ़कर जनता आतंकित हो उठी। समाचार पढ़ने की किसी को सुधि ही नहीं रही। कम से कम चौबीस घंटे बाद कुछ समझदारों को यह सूझा कि — "अमेरिका से २८०० और ३००० मील दूर ऐसी वस्तु देखी गयी है जो सम्भवत पनडुब्बी हो और जिसके सम्बन्ध में अनुमान है कि वह पश्चिमी राष्ट्रों की नहीं है इसलिए रूस की ही होगी।"

आश्चर्य नहीं कि कल अमेरिकन कहने लगें कि रूसी हवाई जहाज मास्को के ऊपर उड़ते हैं और मास्को के ऊपर भी वही वायु और आकाश है जो अमेरिका के ऊपर इसलिए रूसी वायुयानों का उड़ना अमेरिका के लिए खतरनाक है।

रूस की मानस ग्रन्थि

मैं पिछले लेख में लिख चुका हूं रूस को केवल इसीलिये कि उसे अमेरिकन आक्रमण का खतरा है अब और आगे बढ़ने नहीं दिया जा सकता क्योंकि शक्ति, अधिकार और उपनिवेश पाकर वह भी ब्रिटेन फ्रांस की तरह साम्राज्य-वादी न बन जायगा और समाजवाद का जो चोला बहुत जामा उसने पहना हुआ है वह भी उतार नहीं फेंकेगा इसका क्या प्रमाण है। इतिहास दूसरी ओर ही इशारा करता है। परन्तु क्या रूस को बिना सैनिक तैयारी परमाणु बम और तीसरे महायुद्ध के नहीं रोका जा सकता?

रूस ने यह नीति क्यों अपनायी है तथा इसका असली रहस्य क्या है यह मैं पिछले लेख में स्पष्ट कर चुका हूं। यह अमेरिका और ब्रिटेन की ही कट्टर दाक्षिण पन्थी नीति, फासिस्ट मनवृत्ति साम्राज्यवाद को प्रोत्साहन उदारमत के दलन, समाजवाद से अपार घृणा, और चोर बाजार तथा दुराचार को प्रोत्साहन देने का अप्रत्यक्ष परिणाम है। इस नीति में अब भी परिवर्तन नहीं हुआ है। निम्नलिखित उदाहरण लीजिए —

(१) फासिस्ट फ्रांको स्पेन को भी मार्शल योजना में सम्मिलित कर लिया है। जिस योजना में फासिस्ट फ्रांको, हिन्द चीन का हत्यारा फ्रांस, हिन्द-एशिया के खूनी डच, अधिनायक शाही के प्रचारक पोर्चुगीज और पाखण्डी ब्रिटेन शामिल हो उसमें इन्हीं देशों के शांतिप्रिय नागरिकों तथा नार्वे स्वीडन, डेनमार्क, स्वीटजरलैंड जैसे छोटे देशों का शंकित हो उठना स्वाभाविक है। जनता में बेचैनी फैलेगी और कम्युनिस्ट लाभ उठायेंगे। इसका कारण मार्शल योजना में फ्रांको का शामिल किया जाना है पर अपराध मढ़ा जायगा रूस के सिर।

(२) पश्चिमी जर्मनी के अमेरिकन शासकों ने अनात्सीकरण बन्द कर दिया है। नाजियों पर चलने वाले मुकदमे उठा लिये गये हैं और हत्यारे' स्वतन्त्र छोड़ दिये गये हैं। इसका जनता पर क्या असर पड़ेगा—इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

(३) अमेरिका में जो भी शांति का प्रचार करता है, सरकार के विरुद्ध बोलता है, या ट्रूमैन को स्टालिन का निमन्त्रण स्वीकार करने के लिए कहता है—या तो देश से निकाला जा रहा है या नौकरी से। किसी को कम्युनिस्ट कह देना अमेरिका में सख्त गाली है। यह भावना इतनी तीव्र हो गयी है कि कोलम्बस ओहायो में ४० व्यक्तियों की भीड़ ने एक तथाकथित कम्युनिस्ट के मकान को लूट लिया और पुलिस तथा ३०० नागरिकों की भीड़ तमाशा देखती रही। पुलिस कप्तान केरी का कथन है—'अधर्मियों के लिए पुलिस की सुरक्षा का इन्तजाम नहीं किया जा सकता।'

(४) इटली के चुनाव में अधिक से अधिक हस्तक्षेप किया जा रहा है। ट्रिस्ट्र', इटली को लौटा देने का प्रस्ताव यदि ईमानदारी से किया गया होता तो इसे अमेरिका की सबसे बड़ी राजनीतिक विजय कहा जा सकता। परन्तु प्रस्ताव महज युगोस्लोविया तथा रूस को भड़काने के लिए किया गया है। जिस इटालियन सन्धि द्वारा ट्रिस्टी को अन्तर्राष्ट्रीय नगर बनाया गया था उसी सन्धि द्वारा उत्तर पश्चिम इटली के दो नगर ब्रिग और टेन्डे फ्रांस को दे दिये गये थे। क्या नहीं ये नगर भी इटली को लौटा दिये जाते?

जब तक अमेरिका अपने कार्य में सौजन्य और सत्यता नहीं लाता तब तक आर्थिक और सैनिक सहायता पाते हुए भी संसार की जनता अमेरिका की नीयत पर विश्वास नहीं कर सकता।

रूस को रोकने का उपाय

रूस को रोकने का उपाय क्या है? एक नया प्रकाशित पुस्तक—'हाउ टू स्टाप रशा विदाउट वार' (रूस को बिना युद्ध के रोकने का उपाय) में श्री फ्रिट्स

[शेष पृष्ठ १८ पर]

पूर्वी पंजाब

भारत सरकार का परीक्षा-स्थल

[श्री सहदेव चक्रवर्ती विद्यालङ्कार]

★

भारत सरकार ने १५ अगस्त १६४७ के बाद की गई एक घोषणा में कहा था कि अब देश के नये शासन विधान में किसी भी दल को साम्प्रदायिक आधार पर विशिष्ट प्रतिनिधित्व नहीं दिया जायेगा। प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू तो प्रारम्भ से ही देश के सार्वजनिक जीवन से साम्प्रदायिकता को सर्वथा समाप्त कर देने के पक्ष में रहे हैं। गांधी जी की मृत्यु के बाद तो भारत सरकार ने स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि हमारी शासन नीति साम्प्रदायिकता विरोधी और साम्प्रदायिकता को कहीं भी किसी भी रूप में सहन न करने की होगी। सरकार ने अपनी इस प्रबल नीति का परिचय सारे देश में राष्ट्रीयस्वयंसेवक संघ तथा मुस्लिमलीग नेशनलगार्ड के दमन द्वारा दिया।

परन्तु भारत सरकार की अग्नि-परीक्षा तो पूर्वी पंजाब में अकाली सिक्खों की साम्प्रदायिकता का दमन करते समय होगी। यदि सरकार ने अपनी घोषित नीति पूर्वी पंजाब के सिक्खों पर भी लागू की तो उसे भयंकर संकट का सामना करना पड़ेगा। सिक्खों की साम्प्रदायिकता मुसलमानों की साम्प्रदायिकता से कम भयंकर नहीं है। अकाली दल के नेता मास्टर तारासिंह की प्रवृत्तियां मुस्लिम लीग के कायदेआज़म से कम घातक नहीं हैं। यदि मि० जिन्ना की प्रवृत्तियों का परिणाम पाकिस्तान' था तो मास्टर तारासिंह की प्रवृत्तियों का परिणाम अन्ततोगत्वा 'सिक्खस्तान' होगा।

निजी सेनाओं की स्थिति

पूर्वी पंजाब में राष्ट्रीयस्वयंसेवक संघ, अकाल सेना, देशसेवक सेना और नेशनलवालण्टियर कोर — ये चार प्राइवेट सेनाएं हैं। इनमें से राष्ट्रीयसंघ में तो हिन्दुओं की प्रधानता है। अकाल सेना अकालीदल का सैनिक रूपान्तर है। देशसेवक सेना के संगठनकर्ता आज़ादहिन्द फौज के भूतपूर्व जनरल मोहनसिंह हैं। इस सेना को हिन्दू तथा सिक्ख दोनों का सहयोग प्राप्त है। नेशनल वालण्टियर कोर बाबा खड़गसिंह के अनुयायियों की संस्था है। इस सेना की एक शाखा भारत की राजधानी दिल्ली में भी कार्य कर रही है।

पूर्वी पंजाब की उक्त सेनाओं में से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर तो सरकारी प्रतिबन्ध लगा दिया गया, किन्तु आश्चर्य है कि भारत सरकार ने पूर्वी पंजाब की अन्य स्वयंसेवक संस्थाओं को उससे सर्वथा मुक्त रखा। क्या भारत सरकार की दृष्टि में अकाल सेना की प्रवृत्तियां राष्ट्र संघ की प्रवृत्तियों की अपेक्षा कम घातक हैं। अकाल सेना तथा सिक्खों की अन्य निजी सेनाओं की सरकारी प्रतिबन्ध से मुक्ति का अर्थ यह है कि वह पूर्वी पंजाब के सिक्खों पर अपनी नीति लागू करने में संकोच अनुभव करती है।

भाषा का प्रश्न

यद्यपि भारत सरकार ने अधिकृत रूप से देश की राजभाषा तथा राष्ट्र भाषा के विषय में कोई घोषणा नहीं की, तो भी अन्ततोगत्वा इस पद पर हिन्दी के ही आसीन होने की अधिक सम्भावना है। भारतीय विधान-परिषद् की कांग्रेस पार्टी ने बहुसम्मति से हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा मान लिया है। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या हिन्दी के राष्ट्र भाषा घोषित किये जाने पर पूर्वी पंजाब के सिक्ख और विशेषतया अकाली उसे अपनायेंगे? क्या वे गुरुमुखी (पंजाबी) का मोह छोड़ सकेंगे? सिक्खों का 'नामधारी' सम्प्रदाय हिन्दी के पक्ष में है। इस सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र लुधियाना से १५ मील दूर स्थित भैनीसाहब में है। नामधारियों के वर्तमान नेता सतगुरु प्रताप सिंह तो अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हरिद्वार वाले अधिवेशन में सम्मिलित भी हुये थे और उन्होंने उक्त अधिवेशन के सभापति पं० माखन लाल चतुर्वेदी को सम्मेलन का आगामी अधिवेशन भैनी साहब में ही करने के लिये निमन्त्रित किया था।

किन्तु हिन्दी के प्रति वास्तविक उदासीनता तो मास्टर तारा सिंह के अनुयायी अकाली सिक्ख ही प्रकट कर रहे हैं। गुरुमुखी तथा हिन्दी में अधिक समानता है तथापि अकाली सिक्ख उसे सीखने में क्यों संकोच अनुभव करते हैं, यह समझ में नहीं आता। हिन्दी के अधिकृत रूप से राष्ट्रभाषा घोषित होने पर अकाली सिक्ख जनता उसे सहर्ष अपनायेगी—इस में अभी सन्देह की गुंजायश है।

रियासतों की समस्या

भारत सरकार को जिस प्रकार काश्मीर तथा हैदराबाद की समस्या के सम्बन्ध में मुस्लिम साम्प्रदायिकता का सामना करना पड़ रहा है, उसी प्रकार पूर्वी पंजाब की रियासतों में भी उसे सिक्ख साम्प्रदायिकता का सामना करना पड़ेगा। सरदार पटेल ने कुछ दिन पूर्व भारतीय रियासतों के प्रजामण्डलों को रियासतों में उत्तरदायी शासन के लिये प्रारम्भ किये गये आन्दोलन को इसलिये अनिश्चित काल तक स्थगित कर देने का परामर्श दिया, कि इससे भारत सरकार की समस्या और अधिक उलझ जाने की सम्भावना है। पूर्वी पंजाब की रियासतों में प्रजामण्डलों द्वारा उत्तरदायी सरकार की स्थापना के लिये चालू किये गये आन्दोलन में सिक्खों द्वारा उपस्थित की गई बाधा ही यह समस्या हो सकती है। सरदार पटेल को इस आन्दोलन में हिन्दू सिक्ख संघर्ष की आशंका दृष्टिगोचर हुई, तभी उन्होंने प्रजामण्डल वालों को आन्दोलन स्थगित करने का परामर्श दिया।

अकाली दल वाले पूर्वी पंजाब की पटियाला, नाभा, फरीदकोट और कपूरथला — इन पांच रियासतों को 'सिक्ख-रियासत' कहते हैं और इन्हें प्रान्त में सम्मिलित न करके इनका एक पृथक् संघ स्थापित करने के पक्ष में हैं, जिसका स्पष्ट अभिप्राय 'सिक्खिस्तान' की स्थापना से है। अकाली सिक्ख इन रियासतों को सिक्ख राजाओं के कारण ही सिक्ख मानते हैं। यद्यपि इन में से किसी भी रियासत में आबादी की दृष्टि से सिक्खों का बाहुल्य नहीं है। इन रियासतों का पृथक संघ स्थापित करने की प्रवृत्ति देश की राजनीतिक तथा आर्थिक प्रगति के मार्ग में बाधक सिद्ध होगी। यदि भारत सरकार इस अकाली साम्प्रदायिकता के रूप को अधिक उग्र होने से पूर्व ही न रोक सकी तो उसका मार्ग कण्टकाकीर्ण हो जायगा। इसी लिए हम कहते हैं कि केन्द्रीय सरकार का वास्तविक परीक्षा-स्थल पूर्वी पंजाब है।

———

पूर्वी पंजाब की चिट्ठी

पंजाब में आर्यसमाज का भविष्य

१५ अगस्त १९४७ से पहले मैं आर्य समाज में यह आदोलन किया करता था कि आर्यसमाज को सामूहिक रूप से राजनीति में भाग लेकर विदेशी शासन के पाप को दूर करना चाहिए, परन्तु वह विचार धारा आर्य समाजी जजों, वकीलों, सरकारी नौकरों तथा सरकारी शिक्षा विभाग से सम्बद्ध शिक्षालयों के सचालकों की अर्थप्रधान और कम से कम विरोध की मनोवृत्ति से कारण सफल न हो सकी। हमने आर्य समाज की स्वतन्त्र आत्मा का खून कर, उसकी कीमत पर आलीशान बिल्डिंगें बनाने को आर्य समाज का मुख्य कार्य समझा। निहत्थे क्षत्रिय, निस्तेज ब्राह्मण, दलाल वैश्य, रिश्वत लेने वाले देने वाले ठेकेदारों ने जिस आयसमाज का निर्माण किया था, उसकी शक्ति का नाश ऐसे ही होना था।

अब विदेशी राज्य की समाप्ति के बाद हमें आर्य समाज के आन्दोलन का सचालन किस प्रकार करना चाहिए।

मैंने अपने भ्रमण में अनुभव किया है कि अब पूर्वी पजाब के अधिकाश आर्य समाजी, आय समाज को बोझ समझते हैं, उनके हृदयों में आर्य समाज के लिए मूल्य नहीं है। मुसलमानों के पूर्वी पजाब से विदा हो जाने के कारण उनको आश दिलाने वाली कोई प्रत्यक्ष चीज नहीं रही। हा यह बात प्राय सब जगह दिखाई देती है कि पश्चिमी पजाब से आई हुई आर्यसमाजी साधारण जनता पूर्वी पजाब के समाज मन्दिरों में, सत्सगों में सम्मिलित होकर अपने धार्मिक उत्साह तथा जोश को प्रकट कर रही है। केवल मात्र स्वामी आत्मानन्द जी (भूतपूर्व उपाध्याय मुक्तिराम जी) को छोड़कर शेष पश्चिमी पजाब के आर्य समाजी नेता — सगठन, सम्पत्ति, तथा सामाजिक स्थिति की दृष्टि से बड़े माने जाने वाले व्यक्ति — दिल्ली में पहुंच गये हैं। उनके प्रभाव से भी पूर्वी पजाब की जनता वंचित हो गई। ऐसी दशा में आय समाज के आदोलन का सचालन किस दृष्टि से किया जावे।

इस समस्या का हल तब तक अधूरा है, जब तक हम आर्य समाज के प्रचारकों, उपदेशकों, कार्यकर्त्ताओं तथा वानप्रस्थी सन्यासी महात्माओं के जीवनों तथा विचारों पर इस राजविप्लव के परिणामस्वरूप हुए परिवर्तनों पर विचार न करें। अब स्थिति इस प्रकार है। पूर्वी पजाब से मुसलमानों के चले जाने के कारण उपदेशकों तथा प्रचारकों के खण्डनात्मक भाषणों द्वारा जनता को आकृष्ट करने के साधन बेकार हो गये हैं। सनातनी सिक्ख तथा अन्य पन्थों के खण्डन को जनता पसन्द नहीं करती और समयानुकूल नहीं समझती, क्योंकि अब वह आत्मरक्षा के लिए मुसलमानों के मुकाबले में एक होना चाहती है।

साथ ही आर्य समाज की प्रबन्ध कमेटियों ने चन्दा इकट्ठा न हो सकने के कारण नई भर्ती भी बन्द कर दी है और यथासम्भव पुराने वैतनिक कार्यकर्त्ताओं को भी विदा करने के तरीके सोचने शुरू किये हैं। वानप्रस्थ सन्यासी भी इस राज विप्लव के कारण सुरक्षित स्थानों की तलाश में आश्रमों और मठों की छत्र छाया में बैठे हुए वायुमण्डल शांत होने की प्रतीक्षा में हैं। साराश यह कि चारों ओर गति अवरोध दिखाई देता है।

मेरी सम्मति में इस समय आर्य जनता को, स्थानीय आर्य सभासदों को चाहिए कि वह केन्द्रीय और प्रान्तीय सभाओं के आदेशों की प्रतीक्षा न करें क्योंकि इन सस्थाओं के अधिकारियों को इधर विचार करने का अवकाश नहीं है। इस समय सब से बड़ी आवश्यकता रचनात्मक कायक्रम को क्रियात्मक रूप देने की है।

(१) आर्यसमाजों के प्रधानमन्त्री और पुस्तकाध्यक्ष ऐसे ही व्यक्ति बनाये जायें जो वैतनिक या अवैतनिक उपदेशकों की सहायता के बिना स्वयं आर्यसमाज के सभासदों में सध्या, हवन, पच महायज्ञ और वैदिक स्वाध्याय का प्रेम जमायें। आर्यसमाज के पुस्तकालयों को निर्जीव पुस्तकाध्यक्ष पुस्तक सग्रह न बना कर पठित स्वाध्यायशील व्यक्ति के द्वारा आय सभासदों में पुस्तकालय से लाभ उठाने की योजना बनानी चाहिये। वानप्रस्थी और सन्यासी महानुभावों द्वारा ही मुख्यतया प्रचार कराया जाय। उपदेशकों तथा भजनीकों द्वारा प्रचार कराने की प्रथा बन्द की जाय क्योंकि अधिकाश आर्य जनता इनको उपदेशक न समझ वैतनिक कर्मचारी समझ कर इनसे काम लेती है।

आयसमाज के वर्तमान वैतनिक कार्यकर्ताओं को आजीवन सदस्य बनने का अवसर देना चाहिए। आए दिन वतन वृद्धयों और अवकाशों के झगड़ों तथा प्रपचों से उन्हें मुक्त करना चाहिए।

(२) आयसमाज जनतन्त्रवादी सस्था है परन्तु हमने अपनी शिथिलता तथा कार्य नीति के कारण इसे निर्जीव बना दिया है और शिक्षणालयों और सस्थाओं के बोझ के कारण इसे पूंजीवादियों का मुखापेक्षी बना दिया है। परिणाम रूप में साधारण जनता यह समझने लग गई है कि धनिकों के दान पर ही समाज चल रहा है। इस मनोवृत्ति को बदलने और आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होने के लिये हमें आयसमाज के आन्दोलन उसी मात्रा तक बढ़ाने चाहियें जिस मात्रा तक हमें आय सभासदों से शताश शुल्क और दशाश दान की राशि मिले। आर्थिक सहायता के लिये दूसरों के आगे हाथ पसारने की नीति ने आर्य समाज के आन्दोलन को निस्तेज, परावलम्बी तथा चन्दा आदोलन बना दिया है।

(३) आर्यसमाजों को मौखिक प्रचार की मात्रा कम करके सेवा शिक्षा तथा साधारण जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने की योजनाए अपना कर — उन तक आयसमाज के साहित्य को पहुचाने की कोशिश करनी चाहिए। उपदेशकों के स्थान पर लेखक अध्यापक का काय करने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति प्रचारक होने चाहिए। इन उपदेशकों के मुख्य काय स्थान शहर न होकर देहात ही होने चाहिए।

(४) यह अनुभव किया जा रहा है कि आयसमाज ने राजनीति में भाग नहीं लिया इसलिये वह सार्वजनिक जीवन की दौड़ में अन्य सस्थाओं से पिछड़ गया है। इस लिये अब आयसमाज का देश की राजनीति में विशेष रूप से भाग लेना चाहिये। मेरी सम्मति में आयसमाज को सामूहिक रूप से राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। हा, मजदूर, किसान साधारण स्थिति की जनता की राजनैतिक शिकायतों तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये लोकमत सगठित करना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक आर्यसमाजी को किसी न किसी राजनैतिक दल का सदस्य बनना चाहिए। यदि राजनैतिक दल का निर्माण करना हो तो स्वतन्त्र राजनैतिक दल बनाना चाहिए जो कभी भी शासनतन्त्र में कोई पदग्रहण नहीं करेगा। बिना किसी दलबन्दी में न पड़े, जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए सामयिक सरकार के कायक्रम की समालोचना कर उसे स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राजनैतिक सिद्धान्तों के अनुकूल बनाने का यत्न करेगा।

इस प्रकार आयसमाज के आन्दोलन में प्रगति तथा शक्ति पैदा हो सकेगी।

धारावाहिक उपन्यास—

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे। सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत हो गया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया। बंटवारे से ही सन्तुष्ट न होकर देवकी ने चम्पा और सरला को उड़ाने का षडयन्त्र किया और इसके लिए वैदेहीशरण और कैलाश को नियुक्त किया। बिहार भूकम्प के बाद सेवा के लिए आया हुआ रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत हिल मिल गया था। उसके ठीक समय पर पहु च जाने से वह षड्यंत्र असफल होगया और सरला व चम्पा बचा ली गई।

[गताङ्क से आगे]

(८)

उपर्युक्त बातचीत के दो-तीन दिन पश्चात् माधवकृष्ण और रमा में निम्न-लिखित बातचीत हुई। रमा ने कहा —

'तुम्हें एक शुभ समाचार सुनाऊं, तो क्या दोगे ?'

'सुनाओ, तब बताऊं।'

'पहले बताओ, तब समाचार सुनाऊंगी।'

'यह तो बड़ी मुश्किल बात है, खैर ! अगर समाचार सचमुच शुभ हुआ, तो जो कुछ तुम मांगोगी, वह दूंगा।'

'समाचार तो सचमुच ही शुभ है। उसे सुन कर कहीं अपने वायदे को भूल न जाना। अच्छा तो सुनो। सरला बेटी ने मान लिया है कि वह विवाह करा लेगी, और यह भी निश्चय होगया है कि शादी किससे होगी।'

'यह तो सचमुच शुभ समाचार है कि सरला विवाह के लिए राजी होगई है। हां, यह तो बताओ, लड़का कौनसा चुना है ?'

'लड़का यही तिवारी जी हैं।'

'कौन, तिवारी जी ?'

'अहो अपने तिवारी जी पटने वाले।'

'तुम्हारा मतलब रामनाथ तिवारी से है ! क्या तुम मजाक कर रही हो ?'

'नहीं, मजाक नहीं बिल्कुल सच है।'

'यह सच कैसे हो सकता है। मुझे तो इसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। चुनाव किसने किया ?'

'चुनाव हम लोगों ने किया। मैंने और जीजी ने। तुम्हारी तो सहमति होगी ही, यह मानकर हमने फैसला कर लिया।'

इस उत्तर से माधवकृष्ण की त्योरी [चढ़] गयी। उसने तेज होकर कहा— 'मेरी [सम्म]ति तो इस चुनाव में बिल्कुल नहीं। [मैं] तो तिवारी को इस योग्य नहीं समझता कि उसके साथ सरला जैसी भोली लड़की का गठजोड़ा किया जाय। वह तो बड़ा गुनकमिजाज आदमी है। जब बिगड़ जाता है, तब मनुष्य नहीं रहता, दैत्य हो जाता है। ऐसे पुरुष से बिटिया की शादी करना तो गाय को बाघ से बांधने के बराबर होगा।'

रमा बोली —'तुम्हें तो कोई भी पुरुष अच्छा नहीं लगता, सब में दोष ही दोष देखा करते हो। पुरुष की आदत ही ऐसी होती है.... .'

माधवकृष्ण ने बात काटते हुए कहा — 'पुरुषों के सम्बन्ध में अपनी [बे]मतलबी राय देना छोड़ कर पहले मुझे यह बताओ कि यह बात तुम लोगों ने अभी सरला से तो नहीं कही।'

रमा ने उत्तर दिया — 'कही क्यों नहीं, कह दी है और उसने चुप्पी साध कर स्वीकार भी कर लिया है। उसने कह दिया है कि मुझे इस बारे में कुछ मत पूछो, जीजी जो ठीक समझें करें। मुझे सब कुछ मंजूर है।'

माधवकृष्ण ने गम्भीरता पूर्वक उत्तर दिया — 'यह सब कुछ तो ठीक नहीं हो रहा है। अभी इसके बारे में तिवारी से तो कुछ नहीं कहा गया।'

'नहीं, तिवारी जी से अभी कुछ नहीं कहा गया। वह तो अभी यहां थे ही नहीं परन्तु बात तय हो गई समझो। वह कभी इन्कार नहीं करेंगे। उनका सरला से बहुत प्रेम है।'

यह कह कर रमा ने माधवकृष्ण को शान्त करने का यत्न किया। परन्तु माधवकृष्ण पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह असंतोष प्रगट करता हुआ बोला — 'मुझे यह सब बात बिल्कुल पसन्द नहीं, कोई निश्चय करने से पहले मुझ से सलाह भी नहीं ली गयी। क्या मैं सरला का कोई नहीं हूं। यदि मुझ से सलाह ली जाती, तो मैं कभी इस सम्बन्ध को मंजूर न करता। इसमें हमारे कुल की हेठी तो है ही, बेचारी सरला को भी सुख नहीं मिल सकता। मेरी तो सम्मति है कि इस विचार को अब भी त्याग देना चाहिये।'

रमा घबराहट के साथ बोली — 'देखो तुम्हें मेरे सिर की सौगंध, तुम इस मामले में कुछ मत बोलना। अपनी राय को अपने तक ही रहने दो। जीजी का दिल इस सम्बन्ध पर जम गया है और सरला ने भी इसे स्वीकार कर ही लिया है। अब इसमें विघ्न मत डालो। बेचारी जीजी को एक सहारा मिल जायेगा, और बिटिया के भी हाथ पीले हो जायगे। इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है। तुम्हें अच्छा लगे या बुरा, मैं तुम्हारे पांव छूकर कहती हूं कि इस शुभ काम में रुकावट मत डालो।'

माधवकृष्ण की तबीयत नर्म थी और वह मतभेद होने पर भी अन्त में रमा की बात मान जाता था। कोई सन्तान न होने से दोनों की प्रसन्नता बहुत कुछ एक दूसरे पर ही अवलम्बित थी। बीच में तीसरी कोई चीज न होने से दोनों मानों एक ही शरीर को दो अंग बन गये थे। रमा का अत्यन्त आग्रह देखकर माधवकृष्ण ने कहा — 'जब तुम्हारी ऐसी इच्छा है, तो मैं इस विषय में कुछ नहीं बोलूंगा, न पक्ष में और न विपक्ष में। तुम लोग जानो और तुम्हारा काम जाने।'

माधवकृष्ण उसी दिन शाम को बंटवारे के मुकद्दमे की पैरवी के लिये बेलूर से चला गया।

माधवकृष्ण के जाने के तीन दिन पीछे रामनाथ पटना से लौटा। वह वहां से कांग्रेस कमेटी के चुनाव में सफल होकर लौटा था। वह जिला कांग्रेस-कमेटी की वर्किंग कमेटी की सदस्यता का उम्मीदवार बना था। पटना के कांग्रेसी क्षेत्र में बलधारीसिंह का भी एक दल था। उसने रामनाथ का खूब विरोध किया, परन्तु बिहार की स्वयंसेवक मण्डली में रामनाथ बहुत लोक प्रिय हो गया था। उस मण्डली के उद्योग से रामनाथ सफल हो गया। वह जिला कांग्रेस-कमेटी की वर्किंग कमेटी का सदस्य चुना गया। चुनाव के गर्मागरम संघर्ष में उसकी बलधारीसिंह से दो-चार चोंचें भी हुईं, जिसमें बलधारीसिंह को रामनाथ की पैनी तुरत-बुद्धि और उससे भी पैनी जिह्वा के सामने हार खानी पड़ी। जब रामनाथ बेलूर में खाना खाने के लिये बैठा, तो उसका दिल पटना के समाचारों को सुना डालने के लिये इतना उत्सुक हो रहा था कि वह घर के सब लोगों की मानसिक दशा में आये हुए परिवर्त्तन को न माप सका और बहुत देर तक चुनाव-संग्राम के विस्तृत समाचारों के सुनाने में ही मग्न रहा। उसने अपनी विजय का वृत्तान्त सुनाने की धुन में यह भी नहीं देखा कि उसके पास केवल चम्पा ही बैठी थी। प्राय: भोजन के समय परोसने का काम सरला करती थी, जो आज अदृश्य रही। जब रामनाथ का पहला धारा-प्रवाह जरा ढीला हुआ, तो उसे सरला का अभाव अनुभव होने लगा। क्योंकि वह अपनी जीत पर चम्पा और सरला दोनों से साधुवाद और बधाई की आशा रखता था। बलधारीसिंह को उसने जो फड़कते हुए जवाब दिये और उनसे बलधारीसिंह जिस तरह खिसियाना होकर रो दिया, वह सब रामनाथ खूब नमक मिर्च लगाकर सुना गया था। वह आशा कर रहा था कि उस पर सब लोग खूब हंसेंगे, और उसकी तारीफ करेंगे। परन्तु जब चम्पा केवल मुस्कराकर ही सन्तुष्ट हो रही और सरला दिखाई न दी तो रामनाथ ने भौंचक्का सा होकर पूछा — 'भाभी, आज क्या बात है, तुम आज चुप-सी हो। और सरला भी दिखाई नहीं देती।'

चम्पा मुस्कराती हुई बोली — 'सब बताऊंगी। खाना खाकर निश्चिन्त हो कर बैठो, तब बातें होंगी।'

रामनाथ और भी अधिक आश्चर्यित हो गया। यह तो उसने चम्पा की मुस्कराहट से जान लिया कि बात अप्रिय नहीं है। परन्तु यह अनुमान न लगा सका कि क्या बात है ? यद्यपि वह सरला की ओर पूरी तरह आकृष्ट हो चुका था, तो भी उससे विवाह होने की सम्भावना उसके दिल मे नहीं आयी थी। यह बात तो उसे ऐसे ही असम्भव मालूम होती थी, जैसे चांद के टुकड़े का मिलना। उस इलाके में सिंह-परिवार की बड़ी मानता थी। सुप्रबन्ध के कारण जमींदारी का रावसी ठाठ भी कम नहीं था। अड़ोस पड़ोस में चम्पा की धर्म-परायणता और उदारता की धूम थी। इधर सरला भी जीवन की इतनी मंजिलें तय करके भी अभी तक अछूती कली की तरह पवित्र थी। इन सब बातों को देख कर रामनाथ इस परिणाम पर पहुंच

चुका था कि 'सिंह परिवार' ऊंचा वृक्ष है, और वह एक बौना आदमी है, जो अत्यन्त इच्छा रहते भी उस वृक्ष के फलों को केवल देख सकता है, प्राप्त नहीं कर सकता। उसने चम्पा की बात कर सुनकर जो-जो कल्पनाएं की, वह सभी सत्य से बहुत दूर थीं।

(क्रमशः)

आपके स्वाध्याय के लिए उपयोगी पुस्तकें

आहार—हिन्दी में आहार-विज्ञान पर लिखी हुई अपूर्व पुस्तक। मूल्य ५)

वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं के लिए तपस्वी अभयदेव जी लिखित वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त का सुन्दर स्पष्टीकरण। मूल्य २)

बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय सस्कृति के संस्थापकों की विस्तृत गौरव गाथा। मूल्य ७)

विज्ञान प्रवेशिका — मिडिल स्कूलों के लिए हिन्दी में लिखी गई विज्ञान शिक्षा की अति सरल पाठ्य पुस्तक। दोनों भागों का मूल्य २॥)

वैदिक विनय (तीन भाग)	५)
भारत का इतिहास (तीन खण्ड)	७)
ब्राह्मण की गौ	॥।)
सन्ध्यासुमन	१।)
वरुण की नौका (दो भाग)	६)
वेद गीताञ्जलि	२)
तुलसी	२)
सद्गुण प्याज	२॥)
आत्म मीमांसा	२)
अथर्व वेदीय मन्त्र विद्या	१॥)
देहाती इलाज	१)
सोम सरोवर	१॥)
वैदिक उपदेश माला	।–)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

कुतुबमीनार या विष्णु-ध्वज

[श्री विराज]

रात को १२ बजे ड्यूटी समाप्त करके अखबार के दफ्तर में ही सो गया। नींद कुछ अच्छी नहीं आई। सपने ही आते रहे। एक के बाद एक, न जाने कितने सपने आये।

एक स्वप्न में आकाश में चन्द्रमा चमक रहा था और एक दूसरी काली मूर्ति उसकी ओर बढ़ रही थी। तभी भीत चन्द्र की आवाज सुन पड़ी, 'बचाओ, बचाओ'। चन्द्र भय से पीला पड़ा हुआ था।

स्वप्न आया और बीत गया। और भी कितने ही सपने आये, पर सवेरे तक कोई याद नहीं रहा।

अगले दिन महरोली के पास कुछ काम से 'अरविन्द निकेतन' गया। और अरविन्द निकेतन में काम कर चुकने पर कुतुब मीनार (?) देखने के लिए चला गया।

कुतुब मीनार दिल्ली का एक अच्छा खासा मनोरंजन है रविवार को लोग छुट्टी पाकर यहां आ जाते हैं और सुन्दर बगीचों में मनोविनोद करते हैं।

इस स्थान के साथ मेरी छात्रावस्था की कितनी ही मधुर-स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। जब गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में पढ़ता था, तो वहां से बहुत बार दल बना कर हम लोग यहां भ्रमण के लिए आया करते थे। वह दिन अत्युत्तम मनोरंजन का होता था। रास्ते में शरलक होम्स की कहानियां सुनते आते; आकर स्वयं भोजन पकाते, खाते और फिर उन्हीं चमत्कारपूर्ण कहानियों को सुनते हुए गुरुकुल लौट आते।

आज उन रसभरी यात्राओं के कितने ही साथी इस यात्रा में नहीं हैं,—यह भाव कुतुब मीनार पर पहुंचते २ मेरे हृदय पर इस तरह छा गया कि मन की सारी प्रसन्नता जाती रही।

कुतुब के ऊपर चढ़ा। सब ओर देखा। फिर न जाने कितनी ही स्मृतियां सजग हो उठीं। नीचे हरी घास पर बच्चे खेल रहे थे। एक गुब्बारे वाला अपने गुब्बारे और पीपनियां बेच रहा था। रेशमी वस्त्रों से चमकती हुई युवतियां इधर उधर टहल रही थीं। दूर २ तक का सारा निर्जन प्रदेश एक ही दृष्टि में दिखाई पड़ रहा था।

यह प्राचीन दिल्ली ! जिस ओर देखो, खंडहर ही खंडहर दीख पड़ते थे। कोई अर्धभग्न बुर्जी थी तो कोई टूटी हुई दीवार। जो वस्तु जितनी विशाल थी, वह उतनी ही अधिक टूटी हुई थी। छोटी छोटी इमारतें शान्त भाव से सुरक्षित खड़ी थीं।

कुछ देर देखता रहा। फिर दिल्ली के विमल गौरव के विनाश की कल्पना से मन को और भी उदास करके नीचे उतर आया।

ध्यान आया कि पहले यहां सब ओर मुसलमान ही मुसलमान बसे रहते थे; हिन्दुओं के लिए आतंक सा बना रहता था। अब वे सब भाग गये हैं। इस विचार से मन कुछ उज्ज्वल सा हो उठा और दृष्टि में एकाएक कुछ परिवर्तन सा आ गया।

ध्यान आया कि पास ही एक लोहे का स्तम भी है। पहले जब भी कभी आना हुआ है, उसे अवश्य देखा है। इस लिए उसे भी देखने जा पहुंचा। यह लोहस्तम और कुतुब मीनार (?) एक विशाल आयताकार भवन के बीच में बने हुए हैं। इस भवन के सब खम्भे पत्थर के बने हुए हैं और इन पर जो कला अंकित है, वह सारी हिन्दू कला है।

इन खम्भों पर कहीं झूलती हुई घण्टियों के चित्र हैं, तो कहीं अजन्ता की सी अप्सराओं के। कमल, शंख और सूंडें उठाये हुए हाथी आज भी इन में स्पष्ट देखे जा सकते हैं, यद्यपि खम्भों पर की मूर्तियों को बड़ी बर्बरता के साथ तोड़ा गया है। ये सब मूर्तियां हिन्दू संस्कृति से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं। वास्तुकला की दृष्टि से सारा भवन असंदिग्ध रूप से हिन्दू दीख पड़ता है।

ये सब बातें मैंने नई नहीं सोचीं। बल्कि सब पहले सुनी हुई बातें याद आने लगीं और स्वभावतः जहां हाथी, शंख, घण्टे और कमल चित्रित थे, वहां दृष्टि विशेष रूप से आकृष्ट होने लगी।

इन्हीं खम्भों में फिरते हुए संगमर्मर की एक पटिया पर यह लिखा दिखाई दिया कि इस लौह स्तम्भ पर जो खुदा हुआ है, वह देवनागरी लिपि में यह है—

यस्योद्वर्तयतः प्रतीपमुरसा
शत्रून् समेत्यागतान्
वङ्गेष्वाहव वर्तिनोभिलिखिता
खड्गेन कीर्तिर्भुजे
तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे
सिन्धोर्जिता वाह्लिकाः,
यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधि—
र्वीर्यानिलैः दक्षिणः।
खिन्नस्येव विसृज्य गां नरपते —
र्गामाश्रितस्येतरां,
मूर्त्या कर्मजितावनिं गतवतः
कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ,
शान्तस्येव महावने हुतभुजो
यस्य प्रतापो महान्,
नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशितरिपो
र्यत्नस्य शेषक्षितिं
प्राप्तेन स्वभुजार्जितं च सुचिरं
चैकाधिराज्यं क्षितौ
चन्द्राह्वेन समग्र चन्द्रसदृशीं
वक्त्रश्रियं बिभ्रता
तेनायं प्रणिधाय भूमिपतिना
भावेन विष्णौ मतिं
प्रांशुर्विष्णुपदे गिरौ भगवतो
विष्णोर्ध्वजः स्थापितः ॥

'जिसने एकत्रित होकर आये हुए शत्रुओं को बंगाल के युद्ध में छाती से पीछे धकेल दिया; सात नदियों को पार करके सिंध के वाह्लीकों को जिसने पराजित किया; खड्ग से भुजा पर जिसकी कीर्ति लिखी हुई; जिसके बल की सुगन्ध से आज भी दक्षिणी समुद्र सुवासित है; यद्यपि खिन्न-सा होकर शरीर से वह स्वर्ग चला गया है, परन्तु अपने कर्मों से अर्जित यश के रूप में जिस शत्रुनाशी का महान् प्रताप आज भी भूमि को नहीं छोड़ रहा है, जैसे महावन में अग्नि के बुझ जाने पर भी उसका ताप नष्ट नहीं होता; जिसने अपनी भुजाओं के बल से एक छत्र सर्वोच्च सत्ता प्राप्त की और उसका चिरकाल तक उपभोग किया; पूर्ण चन्द्र के समान सुन्दर मुखवाले 'चन्द्र' नामक राजा ने हृदय में विष्णु का ध्यान करके इस विष्णुपद पर्वत पर यह भगवान् विष्णु का ऊंचा ध्वज स्थापित किया।'

इसे पढ़ कर मैंने उस लोह स्तम्भ को देखा, जिस पर यह सब लिखा हुआ था। पास गया। उस पर ६ लम्बी पंक्तियों में न जाने किस लिपि में, पर स्पष्ट गहरे अक्षरों में यह बात लिखी हुई है।

पर बात मन पर कुछ जमी नहीं। संस्कृत में एक भी शब्द व्यर्थ लिखने की प्रथा नहीं है; श्लोक में लिखा है कि 'प्रांशु' बहुत ऊंचा-ध्वज स्थापित किया। परन्तु यह लोहे का स्तम्भ तो २०, २२ फीट से अधिक ऊंचा नहीं। जिन प्राचीन अर्ध भग्न मकानों के बीच में यह खड़ा है वे ही इससे काफी ऊंचे हैं। फिर 'प्रांशु' विशेषण क्यों है ? क्या और कोई विशेषण नहीं दिया जा सकता था। मजबूत, सुन्दर, पवित्र गोल ऐसी विशेषता कवि के मन में नहीं आई ?

परन्तु स्पष्ट लिखा है 'प्रांशु' ऊंचा, बहुत ऊंचा, ऐसा जिसकी ऊंचाई ही पहले दृष्टि में आती है। अवश्य ही ऐसा कोई 'विष्णु का ध्वज' यहां स्थापित किया गया है।

सहसा मेरी आंख कुतुब मीनार (?) की ओर उठ गई। समस्या हल हो गई। 'प्रांशु' तो यह है। जिसकी 'प्रांशुता' पर ही सब से पहले दृष्टि जाती है, वह यही है। सारे भारत में यही 'प्रांशु' है। तो क्या स्तम्भ पर वर्णित 'विष्णु का ध्वज' यह कुतुब मीनार ही है।

फिर लोहस्तम्भ पर यह क्यों लिखा है कि 'यह ध्वज स्थापित किया ?'

पर लोह स्तम्भ पर जो कुछ लिखा है वह लोह स्तम्भ के बारे में तो निश्चित नहीं है। क्यों कि स्तम्भ स्थापित नहीं किये जाते। संस्कृत की भाषा में स्तम्भ गाड़े जाते हैं। कालिदास ने लिखा है 'निचखान जयस्तम्भान् गंगास्रोतोन्तरेषु सः।' तो यदि लोहस्तम्भ के बारे में यह विवरण होता तो अवश्य ही गाड़ने की बात कही जाती। पर श्लोक दो बातें साफ और स्पष्ट कह रहा है कि १ विष्णु का ध्वज बहुत ऊंचा है और २. वह स्थापित किया हुआ है।

तो कहीं यह कुतब मीनार ही तो विष्णु का ध्वज नहीं है ?

अमरीका में 'युद्ध' महामारी

(पृष्ठ ११ का शेष)

स्टर्न बर्ग लिखते—'निस्संदेह रूसी नीति विस्तार करने की है।'

परन्तु उसका उपाय—'रूस को बिना युद्ध के रोका जा सकता है यदि अमेरिका, युरोप और एशिया की डेढ़ अरब शोषित, भूखी, नंगी जनता का विश्वास पा सके, और मध्यवर्गी विचार-धारा और उदारमत को प्रोत्साहन दे।'

श्री स्टर्नबर्ग ने अपने उन विचारों को और अधिक स्पष्ट करने की चेष्टा नहीं की है; परन्तु मेरे अपने विचार से निम्न-लिखित तीन बातों पर यदि तुरन्त अमल हो तो संभव है तीसरा महा युद्ध न टले, परंतु चौथा नहीं ही होगा।

(१) उपनिवेश प्रणाली का सर्वथा त्याग। जब तक हिन्द चीन और हिन्द एशिया स्वतन्त्र नहीं होते, चीन और भारत वास्तव में सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं करते संसारभर में फैले और सैंकड़ों उपनिवेशों का उद्धार नहीं होता—संसार की अपार जनता अमेरिका तथा उसके पश्चिमी युरोपीय राष्ट्रों के विरुद्ध ही रहेगी। इन बाहरी उपनिवेशों के अति-रिक्त भीतरी उपनिवेशों (शोषित वर्ग) का भी खात्मा होना चाहिए। प्रायः सब युरोपीय देशों में यहूदी वर्ग, अमे-रिका में नीग्रो समुदाय, भारत के हरिजन—इन देशों के 'भीतरी उपनिवेश' हैं। इनकी समाप्ति का एक मात्र उपाय आर्थिक तथा सांस्कृतिक (शिक्षा आदि) समानता ही है।

(२) धरती। इस विषय पर जितना अधिक जोर दिया जाय उतना ही कम है। मा बाप, भाई बहन, पति पत्नी, संतान से भी बढ़ कर मोह धरती का होता है—विशेषकर एक किसान के लिए। दूसरे देशों की बात तो जाने ही दीजिए अमेरिका में भी केवल ४० प्रति-शत किसान ही अपनी धरती का मालिक है। संसार में अन्यत्र किसान धरती का मालिक है ही नहीं। नेतागण किसानों को धर्म का नशा पिला कर उस धरती की रक्षा के लिए लड़ने पर राजी करते रहे हैं, परंतु ज्यों ज्यों किसान जागरूक होता जायगा और यह समझने लगेगा कि जिस धरती की रक्षा के लिए वह लड़ रहा है वह उसकी है ही नहीं तो वह उसके लिये लड़ने से इन्कार कर देगा। स्मरण रहे कि इसी दलील पर जापानी खतरा रहते हुए भी गांधी जी ने १९४२ में 'अगस्त क्रांति' का समर्थन किया था — स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए, ताकि स्वतन्त्र होकर भारतीय यह यह समझें कि वे अपने देश के लिए लड़ रहे हैं। गुलाम भारत के लिए अंग्रेज हो या जापानी—एक ही बात है। संसार अब राष्ट्रियता के बन्धन तोड़ अन्तर्राष्ट्रियता की ओर बढ़ रहा है। कुछ ही समय बाद किसानों को धरती से वंचित रखकर केवल राष्ट्रियता का नशा पिलाकर लड़ने के लिए राजी न किया जा सकेगा। धरती किसानों को मिलनी ही चाहिए।

(३) राजनीति में उदार मत का प्रतिपादन। संसार की बढ़ती हुई जन संख्या तथ विषम स्थितियों में व्यक्तिगत व्यापार नीति और पूंजीवाद नहीं चल सकता। परन्तु उसी प्रकार कट्टरवादी कम्युनिज्म भी मानवीय अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए घातक है। आवश्यकता है उदार समाजवाद की —परन्तु हिटलर मुसोलिनी के संकीर्ण तथा कट्टर राष्ट्रवादी समाज की नहीं। अन्त र्राष्ट्रिय समाजवाद की। युग की इस बदलती हुई आवाज को हम जितनी जल्दी सुन लेंगे उतना ही कल्याण है।

हाला कि 'कल्याण' शब्द का उच्चारण ही एक आशातीत कल्पना मालूम पड़ती है — जब कि बर्लिन में आज दोनों ओर के टैंक एक दूसरे के सामने खड़े हो गये हैं तथा प्राण अधर में लटके हैं — कि कब निकलें। परन्तु तो भी आशावादी होने के नाते कल्पना सागर में गोते लगाना मैं बुरा नहीं समझता। आखिर यही तो मन बहलाने का एक उपाय रह गया है।

विविध चित्रावलि

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र टेम्स नदी पर नौ चालन का अभ्यास कर रहे हैं

न्यू आर्मस्ट्रौंग व्हिटवर्थ का प्रथम हवाई जहाज, जिसमें रौल्स रोयस के दो इंजन लगे हैं।

अमेरिका की जलसेना के प्रधान एडमायरल ल्यूस ई डेनफील्ड।

जर्मनी का सुप्रसिद्ध कन्डक्टर विलहैल्म फर्टवेन्गलर, जो अब लड़ाई के बाद लन्दन में कार्य कर रहा है।

हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में ब्रिटेन तथा अलबानिया के झगड़े का निर्णय करने के लिये आयोजित सभा में सर हटले शौक्रोस

अच्छाई बुराई

(पृष्ठ १० का शेष)

उस दिन वापिस न आई। हमें बड़ी चिन्ता हुई, लेकिन क्या करते। हमें उम्मीद थी कि वह दूसरे दिन आ जायगी, लेकिन वह तब भी वापिस नहीं आई। बाद में हमें यह पता लगा — हमारी लड़की को इतना ज्यादा काम करना अखरता था। वह जवान भी हो चुकी थी और सुन्दर भी थी। उस पर किसी पैसे वाले युवक की निगाह पड़ी। उसके यहां एक दिन मजदूरी करने गई थी। धीरे २ यहां तक होगया कि उसे काम नाम मात्र ही दिया जाने लगा। उस बिगड़े दिल युवक ने उसे मिठाइयां और ज्यादा पैसे भी देने शुरू किये। उसे जिन्दगी भर आराम से रखने का वचन दिया गया — हां शादी वह नहीं कर सकता था। 'लेकिन उससे क्या, सचमुच में मेरी बीवी तो तू ही रहेगी। मैं किसी दूसरी से शादी तो सिर्फ दुनिया को दिखाने के लिए करूंगा' — उस युवक ने कहा था। लड़की मेहनत की जिन्दगी से परेशान हो गई थी और उस युवक के कहने में आगई। तभी वह हमारे पास से भाग गई थी। कुछ दिन — शायद कुछ महीने — वह उस युवक के साथ उसके घर वालों से छिप कर रही। फिर घर वालों को पता लग गया। युवक अपने वायदे को भूल गया, मेरी लड़की को भी। कुछ दिन इधर उधर ठोकरें खाने के बाद उसने मजदूरों का दिल बहलाना शुरू कर दिया, कुछ पैसों के लिए। जिस दिन मुझे इसका पता लगा उस दिन मैंने अपने आप को बहुत कोसा। अगर मैं ठाकुर के यहां रहता तो मेरी मेरी लड़की की शादी तो ठीक तरह से हो जाती। वह इस नीच कार्य से तो बच जाती।

"जिस दिन लड़की भागी उस दिन मेरे दिल की क्या हालत थी, मैं कह नहीं सकता। मुझे ऐसा मालूम होता था कि मेरी लड़की मर गई है और जैसे उसे मैंने ही मारा है। दूसरे दिन मजदूरी से वापिस आते समय मेरी निगाह रास्ते के एक ताड़ी खाने पर पड़ी और मैं उस में घुस गया। उस रात मैं नशे में बेखबर घर पहुंचा और उस रात पहली बार मेरे और मेरी बीवी के बीच झगड़ा हुआ। फिर रोज यही किस्सा होने लगा।

"एक दिन रात को जब मैं नशे में चूर घर पर आया तो झगड़ने के लिए बीवी घर नहीं थी। दूसरे दिन जब मुझे होश आया तो इस का मतलब समझ आया। मेरी बीवी भी मुझे छोड़ कर भाग गई थी। मैं उसको दोष न दे सका। इतने दिनों तक मेरी लातें, घूंसे और गालियां खाते रहने पर भी उसने मुझे अपने पसीने की कमाई से खाना खिलाया, इस के लिए मुझे उसकी सराहना करनी ही पड़ी। कहने की जरूरत न होगी कि उस के चले जाने का मुझे बहुत सदमा हुआ।

"एक सदमे ने मुझे शराबी बना दिया था। दूसरे सदमे ने मुझे शराब से दूर भगा दिया। मुझे आश्चर्य है क्यों? चाहिये तो यह था कि दूसरे सदमे के साथ मैं और शराब पीता। शायद इस डर ने काम किया हो कि अब बीवी तो है नहीं, अगर शराब पीता रहा तो कमा कर कौन खिलायेगा। मैंने शराब छोड़ दी। उसके बाद मैं अपने फालतू समय का सदुपयोग अखबार वगैरह पढ़ कर करने लगा। लेकिन मेरी याद से मेरी लड़की और बीवी कभी न निकलते। पैसे अभी भी वही आठ आने मिलते — किसी तरह खाने भर को। मैं बहुत दुखी था। मैं इस जिन्दगी से छुटकारा पाने का इरादा करने लगा।

'कल जब मजदूरी से लौटा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मेरी कोठरी के दरवाजे पर मेरी बीवी बैठी थी — मेरी राह तकती। वह कुछ घबराई सी मालूम पड़ी और बोली — इस तरह लाल आंखों से मेरी तरफ देखने की जरूरत नहीं है। मैं किसी दूसरे आदमी के साथ नहीं भागी थी। मैं कुछ दिन के लिये, तुम्हारी और हमारी बच्ची की भलाई के लिये तुम्हें छोड़ कर चली गई थी।'

'बच्ची का नाम सुनकर मैं सब कुछ भूल गया और उससे जल्दी सब कुछ बताने को कहा। उसने जो कुछ कहा उसका सारांश यह है —

'मेरे मारने पीटने और गालियों से वह परेशान जरूर रहती थी लेकिन मुझे छोड़कर जाने का उसे कभी ख्याल भी न आया था। लेकिन ऐसे समय उसे कुछ मजदूर स्त्रियों से अपनी लड़की का पता लगा — तानों के रूप में। मजदूरों से कुछ पता नहीं लगा, शायद वे अपने मनोरंजन के सामान को सुरक्षित रखना चाहते थे। लेकिन औरतें अपनी किसी साथिन को अपनी अच्छाई और उसकी बुराई बताने से क्यों चूकतीं। उसकी इच्छा अपनी लड़की को उस दलदल से निकालने की हुई। मुझ से मदद की उसे बहुत कम उम्मीद थी और उसे एक अच्छी तरकीब भी सूझ गई थी। शायद मुझ पर से उसका विश्वास उठ गया था। शायद उसे यह भी डर हो कि अपनी लड़की की दुर्दशा का हाल सुनकर मैं और बिगड़ जाऊं। कुछ भी हो, उसने मुझे कुछ न कहा और एक दिन अपनी पुरानी मालकिन के पास चली गई। वहां जाकर उसने सारा किस्सा उन्हें रो रोकर सुनाया। उन्हें उस पर बहुत दया आई। उन्होंने उससे कहा कि वह अपनी लड़की के पेशे का हाल किसीसे न कहे। फिर उन्होंने अपने पति को मेरे शराबी होने का और मेरी बीवी की मुसीबत का हाल सुनाया। बड़े ठाकुर का देहान्त हो चुका था और उनके पति ही अब घर के मालिक थे। पहले तो वे मुझे रखने को राजी न हुए। लेकिन उनकी पत्नी के रूठने और आंसुओं के सामने उनका निश्चय टिक नहीं सका। आखिर वे हमें रखने को सहमत हो गये।

'उनकी सहमति लेकर मेरी स्त्री मुझे और अपनी लड़की को लेने आई जब वह घर आई तो मैं मजदूरी के लिये गया हुआ था। उसे मोहल्ले की स्त्रियों से मेरे शराब छोड़ने की खबर मिल गई थी। उसने कुछ देर खुशी के आंसू बहाये। फिर अपनी गठरी एक पड़ोसी के यहां रख वह अपनी लड़की को ढूंढने चली। वह लड़की की कोठरी पर पहुंची। उसकी हालत खराब थी। फिर भी वह हमारे पास आने को तय्यार न हुई। उसे विश्वास न था कि मैं कभी भी उसे माफ कर सकूंगा। मेरी पत्नी ने उसे बहुत समझाया तो वह आने को राजी हो गई लेकिन शर्त यह थी कि उसे इस बात का विश्वास दिला दिया जाय कि मैंने उसे माफ कर दिया है।

"अपनी स्त्री से सब हाल सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ और खुशी भी। दुःख अपनी लड़की की दुर्दशा पर और खुशी इस लिये कि अब वह उस नरक से निकल जायगी। हम उसी दिन शाम को उसे वापिस ले आये। एक या दो दिन में हम वापिस अपने ठाकुर के पास जा रहे हैं। हम फिर गुलाम कहलायेंगे, लेकिन जो गुलामी हम यहां करते थे उससे वह अच्छी होगी।'

× × ×

उसकी कहानी खत्म हो गई थी। हम दोनों कुछ समय तक चुप चाप चलते रहे। एक मोड़ पर वह रुका और बोला—'अच्छा, अब मुझे इजाजत दीजिये। मुझे आशा है, आप मुझे गलत नहीं समझे होंगे। मैं कोई पढ़ा लिखा आदमी नहीं हूं और अपने विचार अच्छी तरह प्रकट नहीं कर सकता हूं। मेरा मतलब सिर्फ यह है कि वह गुलामी जो आम है, जो शहरों में भी प्रचलित है और जिसके शिकार गरीब मजदूर और किसान हैं, वह जागीरदारों की गुलामी से भी बुरी है। दुनिया चाहे उसे मजदूरी कहे, मैं तो उसे गुलामी ही कहूंगा। दिनभर जानवर की तरह काम करना और फिर भी खानेभर को पर्याप्त पैसे न मिलना गुलामी ही है। अगर शहर के मजदूरों को अपनी मेहनत के लिये काफी पैसा मिलने लगे तो पहली किस्म के गुलाम अपने आप अपने जागीरदारों को छोड़ कर शहर आ जायगे, जिस तरह मैं आ गया था। तब उनको मेरी तरह निराश न होना पड़ेगा। अपने आदमियों को हाथ से निकलते देख शायद जागीरदार लोग उनको आदमी समझने लगें और इन से आदमियों का सा बर्ताव करने लगें। शायद दूसरे गुलाम यहां आ कर स्वर्ग पा जायें (मुझे इसकी आशा नहीं है।) शायद मैं गलती पर होऊं। लेकिन मैं उस गुलामी को पसन्द करता हूं, इस आजादी से जो आजादी नहीं है, बल्कि गुलामी खुद है—अपने सबसे भयानक रूप में। अच्छा नमस्ते।'

वह अपने घर को ओर चला और मैं अपने। मेरे मुंह से दबे शब्दों में निकला—'अच्छाई बुराई दोनों का साथ है। अच्छे से अच्छे आदमी में भी कुछ बुराई जरूर होगी और बुरे से बुरे आदमी में कुछ अच्छाई। अगर हम सिर्फ दूसरों की बुराई ही देखने के बजाय, अच्छाई बुराई दोनों देखने लगें तो दुनिया उतनी भयानक न दिखे जितनी सिर्फ बुराई ही देखने पर दिखती है।

मूर्ख तेली

[सुरेश रस्तोगी भवाना]

मोहन एक गरीब आदमी था, उसने एक बड़ी सुन्दर गाय पाल रक्खी थी। जब उसकी गाय ब्याही तो उसने एक बड़ा सुन्दर बछड़ा दिया उसी के पड़ोस में एक भोंदू नाम का तेली रहता था। उसने उस बछड़े को रात्री में जब सब सो रहे थे चुरा लिया, और सुबह को शोर मचा दिया कि मेरे कोल्हू के बच्चा हुआ है।

बेचारा मोहन बड़ा दुखी हुआ, परन्तु बेचारा क्या करता बड़ा ही गरीब था। अगले दिन वह पंडित जी के पास गया, और सब किस्सा कह सुनाया, और पंडित जी को कहा कि आप मेरा बछड़ा मुझे दिला दीजिये।

पंडित जी बोले — "अच्छा, बछड़ा हम तुम्हें दिलवादेंगे, तुम कल भोंदू से बछड़े के लिये झगड़ना। हम आकर बछड़ा तुम्हें दिला देंगे।

दूसरे दिन पंडित जी हाथी हांकने का अंकुश लिए हुए मोहन के घर आये। देखा कि आपस में खूब लड़ाई हो रही है। हटो हटो, क्यों लड़ रहे हो यह कहते हुए पंडित जी बीच में घुस गये।

भोंदू बोला — जी मेरे कोल्हू के बच्चा हुआ है, और यह उसे छीनना चाहता है।

पंडित जी बोले। अच्छा, सब बैठ जाओ, हम अभी फैसला करते हैं। जब सब लोग जो वहां जमा हो गये और बैठ गये, तो पंडित जी भी बैठ गये और ऊंघने लगे।

'आप फैसला कर रहे हैं, या सो रहे हैं' खड़े होकर भोंदू ने कहा। अरे भाई कुछ न पूछो, रात मेरी स्त्री के हाथी पैदा हुआ है जिसके कारण सारी रात जागता रहा, और देखो यह अंकुश भी उसी के लिए ले जा रहा हूं।

सभी मनुष्य हसने लगे, और बोले— "वाह वाह महाराज कभी स्त्रियों के भी हाथी पैदा हुए हैं।"

तब तो पंडित जी जल्दी से बोले — "अगर कोल्हू के बछड़ा पैदा हो सकता है, तो इस में आश्चर्य की कौन सी बात है कि मेरी स्त्री के हाथी पैदा हुआ।"

यह सुन कर सब लोग मान गये कि कोल्हू के बच्चा नहीं पैदा हो सकता। और यह बच्चा मोहन की गाय का है। इस लिए बछड़ा मोहन को दिलवा दिया गया जिसे लेकर वह खुशी से अपने घर चला गया।

अर्जुन की वर्षगांठ

['जगदीश," नैनीताल,]

यह 'अर्जुन" का नया वर्ष।
आकर देता है हमें हर्ष॥
यह वर्षगाठ इसकी आई।
खुशि है कितनी इस पर छाई॥
कभी चुटकुले यह लाता।
कभी मधुर कविता गाता॥
कभी सुनाता सुन्दर कहानी।
सुन जिसको होती हैरानी॥
लेखक की है यह अभिलाषा।
उसके मन की है यह आशा॥
"अर्जुन" के लेखक सारे।
चिरजीवी हो सब के प्यारे॥

बालबंधुओं से

पिछले कई सप्ताहों से हम आप का पृष्ठ नहीं दे सके, इस का हमें खेद है। अब आप को हम यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि प्रायः प्रत्येक अंक में यह पृष्ठ आया करेगा। अब आप की परीक्षाएं भी समाप्त हो चुकी हैं, इसलिए आपके अभिभावक भी अपनी पढ़ाई छुड़ाकर यह मनोरंजक पृष्ठ पढ़ने से आपको नहीं रोकेंगे।

आशा है, बालबंधु भी अपनी सुन्दर सचित्र मनोरंजक सामग्री यथापूर्व भेजते रहेंगे।

— सम्पादक

गिलासों का खेल

(सरोज)

सुरेश ने अपने सभी मित्रों को गिलासों का खेल दिखाने के लिए अपने घर बुलाया। उन्हें वह एक कमरे में ले गया जहां एक मेज पर शीशे के छः गिलास रखे हुए थे। सुरेश ने तीन गिलासों को आधा आधा पानी से भर दिया और बाकी तीनों को खाली रहने दिया। फिर उसने इन छहों गिलासों को सीधी लाइन में ऊपर दिये चित्र के अनुसार रखा — अर्थात पहले खाली गिलास, फिर आधा भरा, फिर खाली, फिर आधा भरा, फिर खाली और फिर आधा भरा। गिलासों को इस प्रकार रखने के बाद सुरेश ने अपने मित्रों को सम्बोधित करते हुए कहा — क्या तुम में से कोई गिलासों के इस क्रम को इस तरह बदल सकता है कि तीनों आधे भरे गिलास एक साथ एक ओर हो जायें और शेष तीनों खाली गिलास एक साथ एक ओर। शर्त यह है कि केवल एक गिलास को ही अपने स्थान से उठाना पड़े, बाकी पांचों जहां हैं, वहीं पड़े रहें। सभी लड़कों ने गिलासों पर दृष्टि जमाते हुए मन ही मन तरीका सोचना शुरू किया। सुरेश ने काफी समय तक अपने मित्रों की प्रतीक्षा की। सुरेश ने पूछा — 'क्या तुम में से कोई भी क्रम नहीं बदल सकता?'

सबने सिर हिला दिया। सुरेश आगे बढ़ा और बोला — 'तो' मैं क्रम बदल कर दिखाता हूं। शर्त के अनुसार मैं केवल, एक ही गिलास को उठाऊंगा।

उसके सारे मित्र 'वाह वाह' कर उठे जब सुरेश ने शर्त का पालन करते हुए तीनों आधे भरे गिलास एक साथ एक ओर कर दिए और शेष तीनों खाली गिलास एक ओर।

जानते हो, उसने यह कैसे किया?

सुरेश ने गिलास नं० दो को उठा कर उसका पानी गिलास नं० पांच में डाल दिया और उसको फिर वहीं अपने स्थान पर रख दिया।

परीक्षा समाप्त होने पर आप भी अपनी छुट्टियां इस तरह मनाइये।

नन्दगांव की चिट्ठी

[पृष्ठ ८ का शेष]

गोपाल स्वामी भरसक यत्न कर रहे हैं किन्तु जो सवाल शक्ति के भरोसे भारत के कुरुक्षेत्रों में तय होने वाला है, उसके लिए विदेशियों के आगे झोली फैलाना व्यर्थ है। गोपालस्वामी जितना नरम पड़ते पच्छा उतना ही तीखी आवाज में बोलता। मैंने पास बैठे एक ग्वाल-बाल से कहा—'जफरुल्ला तो पिछले जन्म का शिशुपाल लगता है।'

'जी हां, हमारे नेता पिछले सम्बन्ध होने के कारण ही नरमी बरत रहे हैं। सौ अपराध माफ करने की प्रतिज्ञा जो की।'

'ठीक है। पिछली सदियों की बातें जाने दें, तो भी मलाबार, कानपुर, कोहाट, सहारनपुर, मुलतान आदि के अत्याचार और अब पाकिस्तान बनने पर भारत की देवियों का शिशुपाल के साथी दुःशासनों द्वारा जगह जगह घोर अपमान, निर्दोष बच्चों और स्त्री पुरुषों का वध आदि जो जो पिछली जुल्म हुए हैं, उनसे तो पाप का घड़ा कभी का भर जाना चाहिए। या एकाध बूंद की कसर रही होगी। उसके पूरा होते ही किसी भी क्षण हमारे सखा माधव मधुसूदन प्रकट होंगे, तब यही चक्र उनके हाथ में सुदर्शनचक्र हो कर सुशोभित होगा।'

इतना कह मैं वहां से उठ आया। प्यारे नटवर, तुम्हारी लीला भूमि भारत के टुकड़े तुम्हारे देखते हो गये, पर तुम प्रकट नहीं हुए। अगर तुम चाहते तो किसी मीम को इस बरासत से टकरा देते। आखिर फिलस्तीन का पार्टीशन भी अरबों के डट कर खड़े हो जाने से मुश्किल हो गया है। मैंने दानव नगरी में सुना कि अमरीका जैसे महा दानव ने भी उस पार्टीशन से अपना हाथ खींच लिया है। खैर, तुम्हारी कोई बात बिना मतलब नहीं होती। तुम तब नहीं प्रकट हुए, तो अब शीघ्र ही प्रकट होंगे। मैं इसी आशा से फिर यमुनाजी के तीर बाकी ग्वालबालों के बीच गोकुल में आ पहुंचा हूं। तुम शीघ्र आओ, तुम्हारे साथ खेलने को बहुत जी करता है। खेलते तो हम अब भी हैं पर तुम्हारे बिना वह रंग नहीं जमता। देखना भूलना मत।

तुम्हारा सखा—
मधुमंगल

शरणार्थियों की सुध कौन लेगा ?

★

श्री सम्पादक जी,

नमस्ते। अभी दो तीन दिन हुए भारतीय धारा सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल ने कहा है कि उपवास के दिनों में श्री महात्मा गांधी जी को उनका उपवास छुड़ाने के समय दिये गये वचनों का पालन करने के लिए हम बाधित हैं, और उसका सम्मान करते हुए पाकिस्तान से लौट कर आये मुसलमानों का हम स्वागत करते हैं

उस समय यह घोषणा की गयी थी, कि पाकिस्तान से आए सब पीड़ित हिन्दुओं को दस दिन के अंदर रहने के लिए स्थान दे दिया जायगा, तथा इस योजना को कार्यान्वित करने के लिये भारत सरकार के सब मन्त्री तथा उच्च राज कर्मचारियों ने अपनी अपनी कोठियों और घरों में कम से कम एक परिवार को आश्रय देने का निश्चय किया है इस घोषणा को बार बार दोहराया गया।

मैं लाहौर का रहने वाला हूं, मेरे मकान थे, दुकान थी, हजारों रुपया इन्कमटैक्स भरता था। मैं अपने नेताओं के आदेशों का पालन करता हुआ, पाकिस्तान बन जाने पर भी लाहौर में ही टिका रहा। मेरा मकान लूट गया और छुरे घोंपकर घर से निकाला गया। दुकान लूट ली गयी। बहुत अनुनय विनय की पर सब निष्फल। दर्जनों पत्र रजिस्ट्री करा कर प्रधान मन्त्री, डिप्टी कमिश्नर आदि अधिकारियों को भेजे। पर कोई परिणाम न निकला। सर्वस्व लुट जाने पर लाचार होकर अक्टूबर के अन्त में लाहौर से निकला। वहां के लोग पराये बन गये थे उनपर गिला कैसा। समझा था भारत तो अपना है। वहां हमें आश्रय मिलेगा, हमारा स्वागत होगा।

जब मैंने घोषणा सुनी कि सबको स्थान दिया जायगा, मेरा उदास और मुरझाया दिल खिल उठा। मुझे उत्साह हुआ और मैंने अगले दिन ही प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री सरदार पटेल, श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री बलदेवसिंह तथा श्री जगजीवन को पत्र लिखे और प्रार्थना की कि "आपने किसी परिवार को अपने यहां आश्रय देना ही है, मेरे परिवार को स्थान देने की कृपा करें। मेरे परिवार के सब व्यक्ति सुशिक्षित हैं तथा हम सफाई आदि का पूरा ध्यान रखेंगे — आदि।"

उत्तर के लिये मैंने अपने पते के लिफाफे साथ भेज दिये थे। उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा, पर सिवाय श्री जगजीवनराम के किसी भी महानुभाव ने उत्तर देने की कृपा नहीं की। श्री जगजीवनराम ने लिखा कि उनके पास स्थान नहीं है।

जब बहुत दिन बीत जाने पर भी पत्रों के उत्तर प्राप्त न हुए तो मैंने एक रजिस्टर्ड पत्र श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी को लिखा, जिसमें मैंने अपनी करुण कहानी लिखते हुए मकान, और दुकान प्राप्त कराने में सहायता के लिए प्रार्थना की। यथा समय रजिस्टर्ड पत्र की प्राप्ति की रसीद मुझे मिल गयी।

अब फिर सहायता तथा आश्वासन के दो शब्दों के टपकने की प्रतीक्षा चातक की तरह करने लगा। पर कोई उत्तर नहीं मिला।

जब बहुत दिन गुजर जाने पर भी कोई उत्तर न मिला तो मैं स्वयं उनकी कोठी पर पहुंचा। द्वार पर जबरदस्त पहरा था, मैंने चिट लिखकर दी, इस पर मुझे प्रवेश की आज्ञा मिली, और बरामदे में एक कुर्सी पर बैठने को कहा गया। डेढ़ दो बजे दोपहर का समय था, किसी ने बताया कि श्री राजेन्द्र बाबू आराम कर रहे हैं, तीन बजे के बाद मिला करते हैं। तीन बजे, चार बजे पर कोई बुलाने न आया। मैंने पुनः चिट लिखकर प्राइवेट सेक्रेटरी को भिजवाई। और बुलाने की प्रतीक्षा करने लगा। पांच बजे, छः बज गये। उस दिन कांग्रेस कार्य कारिणी का अधिवेशन था। नेताओं की कारें आने लगीं। एक एक करके सर्व श्री जवाहरलाल, पटेल, आजाद आदि सभी नेता पधारे। कुछ पत्र प्रतिनिधि भी आये थे, उनके पास होने से दो तीन घण्टे अनायास बीत गये। रात के साढ़े आठ बज गये थे। सभा समाप्त हुई, एक एक करके सभी नेता तथा पत्र प्रतिनिधि चले गये। मैं अकेला बुलाने की प्रतीक्षा में बैठा रहा। रात के साढ़े दस बज गये, मुझे वहां बैठे आठ नौ घण्टे हो गये थे; साहस कर मैंने प्राइवेट सेक्रेटरी साहब के कमरे में प्रवेश किया और पूछा कि मुझे और कितनी देर प्रतीक्षा करनी होगी। उत्तर मिला कि अब श्री राजेन्द्रबाबू थक गये हैं, मैं फिर दूसरे तीसरे दिन आऊं। मैं पुनः तीन चार बार गया, पर राष्ट्रपति से मिल न पाया, किसी न किसी बहाने से मुझे टाल दिया गया।

मैंने डिप्यूटी कमिश्नर के यहां भी निवास के लिए स्थान देने की प्रार्थना की थी, उसका भी कोई परिणाम नहीं निकला।

सम्पादक जी, आपही बतावें अब हम क्या करें ?

[देवराज प्रवासी]

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन

मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक

* विजय पुस्तक भण्डार

* अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० „
सन् १९४६	१५ „

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—

इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

[illegible]

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की तलवार एक ही साथ हैं। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और प्रचार के योग्य है।

मूल्य २) डाक व्यय ।-)

विविध

बृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।।=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व लड़कियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य ३)

प्रेमदूती

श्री विराज की रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ।।)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

[illegible] भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य २।।) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य २) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौवा नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इस लिये

हिन्दू—संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री अनन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमाञ्चकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में ब्राह्मी विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनमोहक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय ।=।

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत का और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १।।) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तैल विज्ञान

तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तुलसी

तुलसीगण के पौधों का वज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १।।) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ।।)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ।।)

दोनों खण्ड व एक साथ लेने पर मूल्य ।।)

वीर अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १४ वैशाख सम्वत् २००५

अब हम क्या करें ?

भारत के सामने आज जितनी समस्याएं उपस्थित हैं उनमें काश्मीर की समस्या सबसे अधिक प्रमुख है। प्रश्न काश्मीर की भौगोलिक स्थिति के महत्व का ही नहीं है, वह भारत की प्रतिष्ठा और गौरव का प्रश्न भी है। ब्रिटिश घोषणा द्वारा काश्मीर एक स्वतन्त्र राज्य हो गया। उस पर लुटेरों ने, चाहे वे कितने संगठित और संख्या में अधिक क्यों न हो, आक्रमण किया। काश्मीर स्वयं हमलावरों का मुकाबला करने में समर्थ न था। उसने यह भी देखा कि पाकिस्तान बराबर विरोधियों को सहायता दिये जा रहा है। आत्म-रक्षा के लिए अपनी प्रजा की इच्छा को शिर आंखों पर रख कर वह भारत-संघ में सम्मिलित हो गया। अब काश्मीर पर आक्रमण भारत के प्रदेश पर आक्रमण था, लेकिन आक्रान्ता नहीं माने। पाकिस्तान ने सहायता और भी जोरों से देनी शुरू कर दी। इस पर एक ओर भारतसरकार ने काश्मीर की जनता की रक्षा के लिए, जो किसी भी सरकार का प्रथम कर्तव्य है, अपनी सेना काश्मीर भेजी और दूसरी तरफ संयुक्त राष्ट्रसंघ में आक्रान्ताओं को सहायता न देने के लिए पाकिस्तान पर जोर देने का अनुरोध किया। काश्मीर का मोर्चा भी विकट था और संयुक्त राष्ट्रसंघ का मोर्चा भी विविध कारणों से अत्यन्त कठिन और विषम बन गया था। इसी दृष्टि से इन दोनों मोर्चों पर भारत को सफलता या असफलता हुई, इसका अन्यत्र परिचय दिया गया है। पाठक उसे पढ़ेंगे और यह समझेंगे कि ब्रिटेन अमेरिका आदि भारत के विरुद्ध पाकिस्तान का समर्थन कर रहे हैं। जिस प्रस्ताव का उस लेख में सारांश दिया गया है, वह सुरक्षा समिति ने प्रायः सर्व सम्मति से पास कर दिया है। किसी ने विरोध में मत नहीं दिया — रूस व यूक्रेन तटस्थ रहे। स्पष्टतः यह प्रस्ताव भारत के साथ अन्याय है, हमारे न्याय्य पक्ष को अपने स्वार्थों के चक्र में पड़ कर विकृत रूप में देखा गया है।

इस प्रस्ताव का परिणाम यह होगा कि अपने देश में ही हम आक्रान्ताओं को नियंत्रित न कर सकेंगे, हम अपनी इच्छानुसार काश्मीर में जनमत कायम न कर सकेंगे और विदेशी अपना स्वार्थ-साधन कर सकेंगे। यह वस्तुतः जनतन्त्र के साथ अन्याय है, भारत जैसे महान् राष्ट्र के साथ अन्याय है। सुरक्षा समिति ने जो कदम इस समय उठाया है, वह बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। चीन और अबीसीनिया पर जापान व इटली के आक्रमणों के समय पिछले राष्ट्र संघ की मर्यादा नष्ट हो गयी थी। अब यह निश्चय सुरक्षा समिति की प्रतिष्ठा को नष्ट कर देगा। इसका यह भी परिणाम असंभव नहीं है कि भारत संघ की सदस्यता को छोड़ कर अपने पैरों खड़ा होने का प्रयत्न करे। दक्षिणी अफ्रीका के मामले में भी भारत यह अनुभव कर चुका है कि संघ ब्रिटिश अमरीकन गुट का एक खिलौना है। भारत आज शक्तिशाली न हो, किन्तु निकट भविष्य में वह संसार का अत्यन्त शक्ति संपन्न राष्ट्र बनने जा रहा है। राष्ट्र संघ के सम्बन्ध में उसका कटु अनुभव वहां भविष्य पर असाधारण प्रभाव डालेगा, वहां अमेरिका व ब्रिटेन के साथ उसके वर्तमान सम्बन्ध मित्रता-पूर्ण न रहेंगे, यह भी निश्चित है।

लेकिन प्रश्न तो यह है कि आज इस प्रतिकूल परिस्थिति में भारत को क्या करना चाहिए। हमारे राष्ट्र नेता क्या कदम उठावेंगे, यह नहीं कहा जा सकता। वे सुरक्षा समिति के निर्णयों को अमान्य करके समिति के कमीशन से असहयोग करेंगे अथवा सहयोग, यह भी आज कहना कठिन है। लेकिन हमारी यह धारणा है कि हमारी तात्कालिक आवश्यकता काश्मीर को शत्रु-विहीन कर देने की है। सैनिक सफलता जितनी जल्दी हमें मिलेगी, काश्मीर के भारत में रहने की संभावना इतनी अधिक बढ़ेगी। इसलिए आने वाले कुछ सप्ताहों में हमें काश्मीर भारत का ही एक अंग है, यह एक सत्य के रूप में सिद्ध कर लेना चाहिए। शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में काश्मीर की नेशनल कान्फ्रेंस ने सुरक्षा समिति के निर्णय को किसी भी स्थिति में स्वीकार न करने का दृढ़ संकल्प किया है। यदि फिलस्तीन का निर्णय वापस लिया जा सकता है तो हमारा दृढ़ संकल्प और रक्षा की पूर्ण तैयारियां इस निर्णय को भी बदल सकती हैं। तीसरी बात यह है कि हमें जहां एक ओर अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने का दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए, वहां संसार की शक्तियों को यह चेतावनी भी दे देनी चाहिए कि भारत के साथ अमित्रतापूर्ण व्यवहार उनके साथ के सम्बन्ध को बहुत कटु बना देगा। और भारत किसी भी समय उनका साथ छोड़ कर विरोधी के साथ मिल सकता है।

रियासतों के संघ

हमारे देश के स्वतन्त्र होते ही जिन विषम समस्याओं का सामना हमें करना पड़ा है, उनमें रियासतों की समस्या बहुत विषम थी। आज वह सरदार पटेल की व्यवहार-कुशलता और प्रतिभा के कारण लगातार सुलझती जाती है। उदयपुर नरेश का राजस्थान संघ में सम्मिलित होना इसी दिशा में एक प्रशंसनीय कदम है। पंजाब में फुलकिया संघ भी एक बड़ी भारी सफलता है। अभी तक बड़ी बड़ी रियासतों में अपनी स्वतन्त्र सत्ता रखने का मोह नष्ट नहीं हुआ है। उदयपुर के महाराणा ने इस दिशा में नेतृत्व किया है, यह हर्ष का अवसर है। ग्वालियर व इन्दौर के राजाओं ने भी अन्त में एक संघटन का निश्चय करके सचमुच दूरदर्शिता व देशभक्ति का परिचय दिया है। ग्वालियर व इन्दौर दोनों बड़े राज्य हैं और दोनों अपनी स्वतंत्र पृथक् सत्ता रख सकते हैं, शासन प्रबंध में दोनों स्वावलम्बी हैं। लेकिन फिर भी वह दोनों एक मालव संघ बनाने पर सहमत हो गये हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि देशी राजा समय की गति समझ रहे हैं और यह अनुभव कर रहे हैं कि देश की उन्नति में बाधक बनना अपने पैरों कुल्हाड़ी मारना है। लेकिन एक ओर जब ग्वालियर व इन्दौर जैसी प्रधान रियासतें संघ में सम्मलित हो रही हैं, भूपाल का अभी तक स्वतन्त्र अस्तित्व रखने का आग्रह शंका पैदा करता है। हमें विश्वास है कि भूपाल की जनता इस प्रश्न पर देशहित की दिशा में विचार कर मालव संघ में विलय को पसन्द करेगी। यही स्थिति पटियाला की है। उसे भी पंजाब के संघ में सम्मिलित हो जाना चाहिए। ब्रिटिश शासन ने पिछली डेढ़ सदी में हमारी भेद-भावना को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि आज हमें सहस्रबाहु होकर कोने कोने से भेदभावना के भूत को नष्ट करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। यही अनुरोध हम जयपुर, जोधपुर, सिरोही और बीकानेर आदि से भी करना चाहते हैं।

ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध

भारतवर्ष को ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित रहना चाहिए अथवा उससे बाहर हो जाना चाहिए, इस प्रश्न के निश्चय का समय अब बहुत समीप आ गया है। आज भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है, लेकिन उसे विधान परिषद् में शीघ्र ही यह निर्णय कर लेना है कि उसकी स्थिति क्या रहेगी। साधारणतः भारतीय लोकमत स्वतन्त्र राष्ट्र बनाने के पक्ष में है, लेकिन दूसरी ओर भारत सरकार के कानून-सदस्य श्री अम्बेदकर विधान परिषद् में यह संशोधन ला रहे हैं कि भारतवर्ष की वैधानिक स्थिति में 'प्रजातन्त्र' का शब्द हटाकर 'राज्य' कर दिया जाय। इससे भारत को ब्रिटिश साम्राज्य में भी सम्मिलित रह सकने की सुविधा मिल जाती है, यद्यपि ऐसा अनिवार्य नहीं है। हम नहीं जानते, इस संशोधन के मूल में क्या भावना है, किन्तु हम यह कह कर लोकमत को ही प्रकट कर रहे हैं कि भारतीय जनता ब्रिटिश साम्राज्य से सर्वथा सम्बन्ध-विच्छेद चाहती है। वह अब तक ब्रिटेन के बहुत अनुभव प्राप्त कर चुकी है। ब्रिटेन सदा उसका विरोधी रहा है—आज भी काश्मीर और दक्षिण अफ्रीका के प्रश्नों पर ब्रिटेन का रुख शरारतपूर्ण रहा है। उसने भारत को परेशान करने के लिए ही पाकिस्तान की सृष्टि की है। उससे यह कतई आशा नहीं की जा सकती कि वह भारत का मित्र बन कर रहेगा।

इटली के चुनाव

इटली के चुनाव यूरोप की राजनीति में एक विशेष स्थान रखते हैं। वस्तुतः इन चुनावों में इटली की दो पार्टियों की बल परीक्षा नहीं हुई, रूस और एंग्लो-अमरीकी गुट की बल परीक्षा हुई है। यूरोप स्पष्टतः दो गुटों में विभक्त हो चुका है। इटली जिस तरफ होगा, उसका बल बहुत बढ़ जायगा, क्यों कि उसकी भौगोलिक स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसी लिए कम्यूनिस्ट और वर्तमान अधिकारी दोनों अपने अपने समर्थक देशों का पूर्ण सहयोग लेकर चुनाव लड़ रहे थे। इटली का हृदय जीतने के लिए एक ओर रूस उसे नई से नई रियायतें देने के प्रस्ताव पेश कर रहा था, दूसरी ओर इंगलैंड व अमरीका मार्शल योजनान्तर्गत विपुल राशि के साथ ट्रीस्टे का प्रलोभन दे रहे थे। चुनावों के परिणाम ने बताया है कि इटली रूस के सैद्धान्तिक आश्वासन की अपेक्षा नकद सहायता पर अधिक विश्वास करता है। कम्यूनिस्ट पार्टी हार गई और डि गास्पेरी की सरकार जीत गई। इसका परिणाम यह होगा कि इटली कुछ वर्षों के लिए असंदिग्ध रूप से पश्चिमी यूरोप में सम्मिलित हो गया। और यह इंग्लैण्ड व अमेरिका की बहुत बड़ी विजय है तथा जेकोस्लोवेकिया काण्ड का अच्छा उत्तर है। लेकिन इन चुनावों की मतगणना से यह भी स्पष्ट है कि कम्यूनिस्ट बहुत निर्बल नहीं हैं। वे यदि ग्रीस में गृहयुद्ध छेड़ सकते हैं, तो इटली में भी वे ऐसा कर सकते हैं, इस लिए अभी इटली की सरकार की समस्याएं पूर्णतः हल नहीं हुईं।

प्रजातंत्र की बुराई

कांग्रेस से जब सोशलिस्ट पृथक हुए थे, तब उन्होंने यह आश्वासन दिया था कि वे कांग्रेस से अलग हो रहे हैं, किन्तु किसी प्रकार की कटुता और जहर को फैलाने से बचेंगे। उन्हें केवल सिद्धान्त और नीति के मतभेद के कारण

सुरक्षा परिषद् में काश्मीर संबंधी प्रस्ताव स्वीकृत

संयुक्तराष्ट्रों की सुरक्षा परिषद में जो काश्मीर के सम्बन्ध में प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया गया था, भारतीय प्रतिनिधि के विरोध के बावजूद उसकी भूमिका पास होगई है सीरिया ने पाकिस्तान की वकालत करके अपने इस्लामी भ्रातृत्व का प्रदर्शन किया। रूस और यूक्रेन अनुपस्थित रहे।

नेशनल कांफ्रेंस ने सुरक्षा कौंसिल का प्रस्ताव ठुकरा दिया

जम्मू व काश्मीर की नेशनल कान्फ्रेंस की जनरल कौंसिल ने काश्मीर के सम्बन्ध में सुरक्षा परिषद द्वारा रखे गये प्रस्ताव को सर्व सम्मति से ठुकरा दिया है। कौंसिल ने १७ वर्ष के निरन्तर संघर्ष के पश्चात् प्राप्त की हुई अपनी आजादी की रक्षा के लिए जनता का आह्वान किया है।

कांग्रेस का विधान स्वीकृत

कांग्रेस कार्यसमिति ने दो दिन के अधिवेशन में कांग्रेस के आर्थिक कार्यक्रम तथा हैदराबाद व काश्मीर की स्थिति पर विचार किया और कांग्रेस के नये विधान को कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार कर लिया। कार्यसमिति ने कार्यवाही को नागरी लिपि में लिखे जाने की सिफारिश स्वीकार नहीं की।

एक मजदूर उपसमिति का निर्माण किया गया है जिसके अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा मन्त्री श्री शंकरराव देव चुने गये हैं।

ग्वालियर-इन्दौर-मालवा संघ

ग्वालियर इन्दौर तथा मध्य भारत की २० अन्य रियासतों के शासकों के रियासत सचिवालय में संघ निर्माण के संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने के परिणाम स्वरूप ग्वालियर-इन्दौर मालवा संघ के रूप में एक नये राज्य संघ का जन्म हो गया है। इस नये संघ का क्षेत्रफल ४७००० वर्गमील, आबादी ७२ लाख तथा वार्षिक आय ८ करोड़ के लगभग है। इस नये संघ में केवल ग्वालियर और इन्दौर की आबादी क्रमशः ४० लाख तथा १५ लाख है। रियासतों के अब तक बने संघों में यह सब से बड़ा है। ग्वालियर महाराज इस नये संघ के आजीवन राजप्रमुख तथा इन्दौर नरेश उपराजप्रमुख चुने गये हैं।

फुलकियाँ संघ

पूर्वी पंजाब की ३ सिख रियासतों को मिला कर फुलकियाँ संघ नाम से एक यूनियन बनाने की तैयारी हो रही है। कपूरथला के महाराज इस संघ के राजप्रमुख होंगे। इस संघ में कपूरथला, फरीदकोट, नाभा, जींद, मलेरकोटला तथा कलसिया रियासतें शामिल हैं। संघ का क्षेत्रफल ३६६३ वर्गमील है। आबादी १५ लाख है और आमदनी भी लगभग १५ लाख है। पटियाला इस संघ में शामिल नहीं है।

निजामशाही में ५ दिनों के अमानुषिक अत्याचारों का विवरण

हैदराबाद राज्य कांग्रेस के मद्रास स्थित केन्द्रीय दफ्तर से प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार हैदराबाद में रजाकारों, पुलिस और फौज द्वारा जनता पर किये गये केवल पांच ही दिनों के अत्याचारों का विवरण निम्नलिखित है:—

स्थान	जिला	किनके द्वारा	कितनी हानि
डुरमलपल्ली	वरंगल	रजाकार	६ घर जलाये गये।
पडीवाडे	नलगुण्डा	रजाकार	एक मकान की लूट में १० हजार की क्षति।
गौड़ीगुडम	वारंगल	पुलिस	३ हजार की संपत्ति छीनी गई
रामीडिचेला	वारंगल	पुलिस तथा रजाकार	७० लाख की संपत्ति नष्ट की गयी।
कासापुर	नान्देड़	रजाकार	१२ घर जलाये गये।
अठगाव	नान्देड़	रजाकार	लूट और अग्निकांड।
माहेर	परभणी	रजाकार	लूट, अग्निकांड, पशु जिंदा जलाये गये और १० हजार की सम्पत्ति लूटी गई।
किल्ली बड़गाव	परभणी	रजाकार	पटवारी के घर पर हमला, ५ हजार का सामान जलाया गया।
अडा	परभणी	पुलिस और रजाकार	१७ वर्षीय बालिका भगायी गयी और ५०० रुपये तथा गहने लूटे गये।
मुसाखान	बीदर	पुलिस और रजाकार	लूट।
बिडनल	रायचूर	पठान	एक मकान लूटा गया, ५ सौ रुपये छीने गये।
कोपमाल	रायचूर	पुलिस	खादी भंडार पर छापा और १२०० रु० का माल लूटा गया
गंमापेटा	वारंगल	पुलिस और रजाकार	१०० मकान जलाये गये, १ लाख की क्षति।
३ गांव	करीमनगर	पुलिस और रजाकार	५ मकान जलाये गये, सामान लूटा गया और पशु भगाये गये।
भीड	परभणी	सेना	३ हजार की संपत्ति लूटी गयी और लोगों को पीटा गया।

ही पृथक होना पड़ रहा है। हमने उसी समय लिखा था कि चुनावों के अवसर पर यह आश्वासन व्यर्थ जावेंगे और कटुता व विद्वेष का वातावरण अवश्य पैदा होगा। इसकी परीक्षा का अवसर जल्दी ही जिलाबोर्डों के चुनाव के कारण आ गया है। इन चुनावों के सम्बन्ध में जो समाचार मिल रहे हैं, उनसे यह स्पष्ट है कि चुनाव लड़ने के लिए सिद्धान्त या नीति पर आपसी दलबन्दी, छल प्रपंच हावी हो गया है। सोशलिस्ट पार्टी के बहुत से उम्मीदवार जमींदार, राजा या ठाकुर अथवा ऐसे लोग हैं, जिनका सोशलिस्ट सिद्धान्तों से किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रहा। जिसे कांग्रेस पार्टी से टिकट नहीं मिला, वह सोशलिस्ट बन गया। आपसी गाली गलौच और चुनाव की बदमाशी भी जगह जगह रंग ला रही है। इन चुनावों के समाप्त होते होते पारस्परिक कटुता और विद्वेष की वृद्धि बहुत अधिक हो जायगी और भारत का सार्वजनिक जीवन और भी अधिक कलुषित हो जायगा। प्रजातन्त्र की यह आवश्यक बुराई किस तरह रोकी जाय, यह ऐसा गंभीर प्रश्न है, जिस पर देश के विचारकों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

पाकिस्तान की नहरों का पानी

पूर्वी पंजाब की सरकार ने एक अप्रैल से अपरबारी दुआब और दीपालपुर की नहरों का पानी पश्चिमी पंजाब में लाहौर और मिण्टगुमरी जिलों की सिंचाई के लिए देना बन्द कर दिया है और एक अप्रैल से दोनों नहरें सूखी पड़ी हैं। पूर्वी पंजाब की सरकार ने पानी देने की जो शर्तें रखी थीं, उनको पश्चिमी पंजाब की सरकार ने अपमानजनक समझ कर अब तक कोई उत्तर नहीं दिया है।

पाकिस्तान के रेलवे कर्मचारी

अविभक्त भारत की रेलों के जिन १८००० रेलवे कर्मचारियों ने अस्थायी रूप से पाकिस्तान में जाने की इच्छा प्रकट की थी, उन्होंने अब भारत में ही रह कर काम करने का निश्चय किया है। इनमें से १२००० तो अभी भारत में ही काम कर रहे थे, ३००० पाकिस्तान जाने की तैयारी में थे और ३००० पाकिस्तान में नौकरी शुरू कर चुके थे।

युक्तप्रान्त में उद्योगों का विकास

युक्तप्रान्त के विकास व उद्योगमंत्री ने एक पत्रकार सम्मेलन में प्रान्त के उद्योगों की उन्नति का कार्यक्रम बताते हुए कहा है कि सरकार दो करोड़ रुपये की लागत से मिरजापुर जिले में मारकुण्डी के पास एक सीमेंट का कारखाना बनायेगी जिसमें १४०० टन सीमेंट प्रतिदिन बनेगा। इसी प्रकार नकली रेशम, पारदर्शक कागज आदि के भी कारखाने खोलने की योजनायें हैं।

बिहार में जमींदारी प्रथा समाप्त

बिहार की जमींदारी को राज्य के स्वामित्व में लेने का बिल बिहार असेम्बली में स्वीकार कर लिया गया। बिल के स्वीकार होने के समय असेम्बली के १५२ में से केवल ४२ सदस्य उपस्थित थे।

हैदराबाद में राजबंदियों की रिहाई

हैदराबाद के प्रधान मन्त्री मीर लायक अली ने विशाल पैमाने पर राजबन्दियों की रिहाई का आदेश दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप हैदराबाद और सिकन्दराबाद की जेलों से ३०० नजरबन्द रिहा किये जा चुके हैं। स्टेट कांग्रेस के प्रधान श्री रामानन्द तीर्थ की रिहाई के समाचार की अभी पुष्टि नहीं हुई।

इटली का चुनाव

इटली में नये चुनावों का परिणाम घोषित कर दिया गया है। सारे देश की लगभग आधी जनता ने प्रधानमन्त्री अल्सीडो डिगास्पेरी की क्रिश्चियन डेमोक्रेट पार्टी के पक्ष में वोट डाले तथा लगभग एक तिहाई जनता ने कम्यूनिस्ट-सोशलिस्ट पोपुलर फ्रन्ट के पक्ष में।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

★ समाचार चित्रावलि ★

पं० जवाहरलाल नेहरू राजस्थान संघ का उद्घाटन कर रहे हैं। उदयपुर के राजा सभापति पद पर विराजमान हैं।

पं० नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान-संस्था का दिल्ली में शिलान्यास कर रहे हैं।

आपकी सेवाओं के उपलक्ष में आपको संस्कृत पण्डितों द्वारा राजर्षि की पदवी दी गई है।

श्रीमती आंग सान दिल्ली में। श्रीमती मौंटबेटन भी साथ हैं।

नये राजस्थान संघ के प्रधान मंत्री श्री माणिक्यलाल वर्मा

चीन में भारतीय चित्रों की प्रदर्शनी में भारतीय राजदूत श्री मेनन अपनी पत्नी के साथ।

चीन में भारतीय राजदूत श्री मेनन और श्री चागकाईशेक।

काश्मीर-युद्ध के दो मोर्चे—
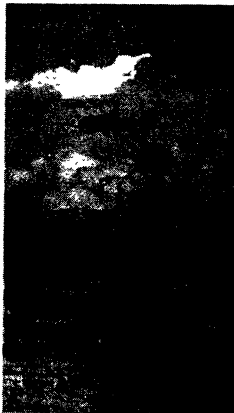
वायुसेना का विमान युद्ध के मोर्चे पर

काश्मीर का युद्ध ऐसा प्रथम युद्ध है, जो स्वतंत्र भारत अपने विदेशी प्रभु के लिए नहीं, अपने लिए लड़ रहा है। पिछली डेढ़ दो सदी में भारत ने जितने युद्ध किये थे, १८५७ का स्वातंत्र्य युद्ध अपवाद है — सभी ब्रिटिश साम्राज्य के लिए लड़े गये थे। काश्मीर पर, जो भारत का एक अंग है, लुटेरों ने आक्रमण किया और पाकिस्तान ने शत्रुवत् व्यवहार करते हुए उनको पूर्ण सहायता दी। इससे हमारी कठिनताएं बढ़ गई हैं। पाकिस्तान ने भारत से युद्ध की घोषणा नहीं की, और न वह लुटेरों को सहायता देना स्वीकार ही करता है, इस लिए उससे लड़ाई की नहीं जा सकती, पर वह हमलावरों को सहायता दिये जा रहा है। पाकिस्तान से प्रत्यक्ष संघर्ष न करते हुए शत्रु को भगाना अत्यन्त कठिन है। दूसरी कठिन समस्या काश्मीर के युद्ध में यह है कि काश्मीर के जो यातायात के मार्ग हैं, वे सब पाकिस्तान में से गुजरते हैं। इस लिए उधर से हमलावरों को यातायात आदि की पूर्ण सुविधाएं थीं। पाकिस्तान सरकार ने मोटरों, लारियों, ट्रकों, मशीन गनों और पेट्रोल की ही भारी सुविधा नहीं दी, बल्कि अपने सैनिक विशेषज्ञों और सैनिकों की भी कम सुविधा न दी। तीसरी कठिनता यह थी कि काश्मीरकी मुस्लिम जनता का काफी बड़ा भाग मुस्लिम लीगी आन्दोलन का शिकार था और उसमें साम्प्रदायिकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। काश्मीर की पहाड़ी घाटी और बरफ़ीली हवाएं भी ऐसी थीं, जो भारतीय सेनाओं के लिए अपरिचित थी। न उनमें रहना सुगम था और न पहाड़ियों की दुर्गमता के कारण छिपे शत्रु को मारना ही सम्भव था। ये सब कठिनताएं थीं, जिन्हें पार करना आसान काम न था। इस लिए प्रारंभिक कार्रवाही बहुत धीरे धीरे हुई। रास्ते बनाने, पुल बनाने, फौजी और हवाई अड्डे बनाने में हमारे सैनिकों को पर्याप्त समय लगा। अब सरदियां बीत गई हैं। कुछ प्रारम्भिक तैयारी भी हो चुकी है और कुछ सैनिक भी रणक्षेत्र की विषमता और व्यूहरचना को समझ गये हैं, इस लिए युद्ध-समाचारों में हम अपने देश के प्रथम विजय के समाचारों को पढ़ने लगे हैं। नौशेरा, राजौरी, चिंगस के इलाकों में भारतीय सेना को पर्याप्त सफलता मिली है। हमारी सरगर्मियां स्थलीय और वायवीय दोनों हो रही हैं। बहुत से आक्रमणकारी मारे गये हैं और बहुत से भाग गये हैं, लेकिन अपनी आशाओं के विपरीत इस तरह पराजित हो कर लुटेरे अत्यन्त नृशंसता और बर्बरता पर उतर आये हैं। वे भागने से पूर्व सैंकड़ों काश्मीरियों को मारते और गढ़ों में भरते तथा गाव के गाव जलाते हुए भाग रहे हैं। जिस प्रगति से भारतीय सेना बढ़ रही है, उससे प्रतीत होता है कि इन गरमियों में जम्मू जेहलम के इलाके आक्रान्ताओं से शून्य हो जावेंगे।

लेकिन दूसरा मोर्चा

एक ओर वास्तविक रणक्षेत्र में हमारे वीर कुशल सैनिक स्वतंत्र भारत का प्रथम युद्ध कर रहे हैं, दूसरी ओर हमारे राजनीतिज्ञ रणक्षेत्र से कई हजार मील दूर काश्मीर के भविष्य का निर्णय कर रहे हैं। रणक्षेत्र की भांति कूटनीतिक युद्ध का यह क्षेत्र भी हमारे लिए अत्यन्त कठिन व दुर्गम है। इस प्रकार के कूटनीतिक युद्धों का भी यह प्रथम अवसर है। इस मंच के खिलाड़ी यद्यपि योग्य हैं, परन्तु अनुभवों का अभाव और मोर्चे की दुर्गमता की उपेक्षा नहीं की जा सकती। पाकिस्तान इंग्लैण्ड की कृति है, वह उसके समर्थन व सहयोग पर ही जीवित रह सकता है। इंग्लैण्ड भी जानता है कि पाकिस्तान उसी की कृति है और उसके संकेत पर खेल सकता है। रूस के विरुद्ध भारत उसके हाथ में नहीं खेलेगा, यह जानते हुए वह रूस की सीमा पर अपने आश्रित पाकिस्तान का सदा समर्थन करता है। इंग्लैंड व अमेरिका का सुरक्षा समिति में प्रभाव अधिक है। यहां न्याय, अन्याय या प्रश्न के गुणाव-गुणों की दृष्टि से नहीं, अपने स्वार्थ के विचार से गुट-बन्दी करके सब प्रश्नों का समर्थन होता है। भारतवर्ष ने यह मामला समिति में पेश किया था। श्री गोपालस्वामी आयंगर के कथनानुसार भारत ने सुरक्षा समिति से अनुरोध किया था कि आक्रांत सेनाएं पाकिस्तान की सीमा से या उसके जरिये मदद पा रही हैं और पाकिस्तान ने आक्रमण को रोकने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की। युद्ध में अनुमानतः २०००० कबीले वाले हैं और करीब इतनी ही संख्या में पाकिस्तान के नागरिक व स्थानीय भगोड़े हैं वे बिना पाकिस्तान की सीमा के या उसके सहयोग के काश्मीर में प्रविष्ट नहीं हो सकते थे। यद्यपि पाकिस्तान ने बाकायदा युद्ध की घोषणा नहीं की है, तथापि उसकी नियमित सेना काश्मीर युद्ध का संचालन कर रही है। सम्पूर्ण सहायता पाकिस्तान से ही पहुंच रही है। काश्मीर भारत का एक अंग है, इसलिए सुरक्षा-समिति का कर्तव्य है कि वह आक्रमण के लिए आक्रमणकारियों की तथा उनकी सहायता के लिए पाकिस्तान की निन्दा करके ऐसा करने से उन्हें रोके।

भारत का प्रश्न बहुत सीधा था। भारत संघ का एक सदस्य है, उस पर आक्रमण किया गया है, उसे रोका जाय लेकिन सुरक्षा समिति में पिछले कई महीनों से न्याय का जो अभिनय हुआ वह सचमुच बहुत अद्भुत है। उसमें पाकिस्तान व भारत को एक समान बना दिया गया है; कितने प्रस्ताव वहां पेश किये गये और कितने ही रद्द किये गये। पिछले मार्च में सुरक्षा समिति के चीनी अध्यक्ष ने एक प्रस्ताव पेश किया था, जो थोड़ा बहुत स्वीकार्य भी था, लेकिन इंग्लैंड व अमेरिका और पाकिस्तान उसे स्वीकार नहीं कर सके। बात बात में मार्च बीत गया। अप्रैल में समिति के नये अध्यक्ष श्री लोपेज बनाये गये। उन्होंने छः राष्ट्रों से — बेलजियम, कनाडा, चीन, कोलम्बिया, ब्रिटेन और अमरीका से मिल कर एक नया प्रस्ताव उपस्थित किया है। इसका आशय यह है!

नया प्रस्ताव

भारत व पाकिस्तान दोनों चाहते हैं कि काश्मीर का भारत व पाकिस्तान में मिलने का निश्चय प्रजातंत्र तरीके से एक स्वतंत्र निष्पक्ष जनमत-संग्रह द्वारा हो। कौंसिल काश्मीर-कमीशन को आदेश देती है कि वह फौरन भारतीय उप-महाद्वीप में जाय और वहां भारत व पाकिस्तान दोनों सरकारों की मध्यस्थता करे, काश्मीर में शांति व व्यवस्था के लिए

उरी के क्षेत्र में ब्रेनगन द्वारा शत्रु पर आक्रमण।

रणभूमि व सुरक्षा समिति

कारों के सहयोग से जनमत-संग्रह कराने की व्यवस्था करे। साथ ही कमीशन अपनी गतिविधियों की सूचना कौंसिल को भेजता रहे।

जनमत-संग्रह के लिए शांति आवश्यक है। पाकिस्तान को इस दिशा में ये कदम उठाने चाहिएं —

वह काश्मीर से कबीले वालों और पाकिस्तानियों को हटा ले। अपने राज्य से ऐसे तत्वों को काश्मीर में न घुसने दे और काश्मीर में लड़ने वाली फौजों को सामान की कोई सहायता नहीं दे। काश्मीर में सबको बिना जाति, धर्म व दल के अपनी सम्मति-प्रकाशन का अधिकार होगा। वे स्वतंत्रापूर्वक किसी भी राज्य में शामिल होने पर अपने वोट डाल सकेंगे। अतः उन्हें शांति व व्यवस्था में सहयोग करना चाहिए।

भारत को यह कदम उठाने चाहिएं:—

राजनीतिक दलों को शामिल करे। भारत-सरकार यह माने कि जनमतसंग्रहके लिये रियासत में एक जनमतसंग्रह शासन स्थापित किया जायगा।

भारत-सरकार यह विश्वास दिलाये कि काश्मीर रियासत स्वतन्त्र जनमतसंग्रह के लिए तत्सम्बन्धी शासन को आवश्यक अधिकार देगी. जिसमें रियासत की सेनाओं और भारत सरकार के बीच वार्ता के बाद तय होगा। पुलिस का निरीक्षण और आदेश भी शामिल हैं।

भारत-सरकार यह माने कि जनमत-संग्रह शासन में मित्रराष्ट्र संघ के सेक्रेटरी जनरल एक सदस्य को नामजद करेंगे।

जनमतसंग्रह-शासक के कार्यकाल का निर्णय मि० रा० सं० के सेक्रेटरी जनरल और भारत-सरकार को यह घोषणा करनी चाहिए कि बिना जाति, धर्म व दल के सब को स्वतन्त्रतापूर्वक मत-दान का अधिकार होगा। समाचार पत्रों, भाषण, सभा, यात्रा, रियासत में प्रविष्ट होने

पुंछ की विजय के बाद फिर रौनक दीखने लगी है।

चले गये हैं; उन्हें बुलाया जायगा, वे स्वतन्त्रतापूर्वक अपने घरों को लौट जायगे और उन्हें वहा के नागरिकों की भांति मत देने का अधिकार होगा। किसी के साथ कोई खराब व्यवहार नहीं किया जायगा। अल्पसंख्यकों को सुरक्षा दी जायगी।

सुरक्षा समिति का यह प्रस्ताव निस्सन्देह शरारत भरा है। इसमें आक्रान्ता पाकिस्तान और आक्रान्त भारत दोनों को एक समान अभियुक्त मान लिया है। काश्मीर भारत का एक अंग है, वहा से वह अपनी सेना क्यों हटाये, वहा की सरकार वह क्यों पाकिस्तान के हवाले करे और वहां पाकिस्तानी सेना को निमन्त्रित क्यों करे? सुरक्षा समिति पाकिस्तान के भयंकर आक्रमण के संबंध में एक भी निन्दात्मक शब्द नहीं कहना चाहती और भारत के साथ ऐसा व्यवहार कर रही है, मानों वह अपराधी हो। भारत इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता।

लेकिन यह भी निश्चित है कि सुरक्षा समिति न्याय अन्याय का विवेक किये बिना इस प्रस्ताव को पास कर देगी। ग्यारह सदस्यों में से छै सदस्य तो प्रस्ताव के साथ हैं और फ्रांस भी बहुत सभवतः इसका समर्थन करेगा। रूस और यूक्रेन शायद पहले की भांति तटस्थ रहेंगे। इस तरह काश्मीर की युद्ध स्थली में हम जीत कर भी कूट-नीतिक युद्ध में जीत न सकेंगे। भारत इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर देगा, तो सुरक्षा समिति क्या करेगी. यह प्रश्न है, जिसका उत्तर आज नहीं दिया जा सकता। इस प्रकार का उदाहरण अभी तक विश्व के इतिहास में नहीं है। भारतवर्ष के नेता अब उलझन में पड़े हैं, ससार के बड़े बड़े राष्ट्र हमारे विरुद्ध सगठित रूप से षड्यन्त्र कर रहे हैं। सुरक्षा समिति का प्रस्ताव सघ और सुरक्षा समिति के सम्मान का प्रश्न है किंतु स्वार्थ के आगे सम्मान की कोई चिन्ता नहीं करता। भारत सघ से अलग हो जायगा, यह सभव है किन्तु इस से काश्मीर की समस्या हल होगी या नहीं, यह कैसे कहा जा सकता है भारतने इस प्रस्ताव के सबधमें अपना निश्चय सुरक्षित रखा है। देखें, भारत अपने साथ होनेवाले इस षड्यन्त्र का क्या प्रतिकार करता है।

जनरल सेनापति मेहरसिंह (बीच में) वायुसेना के टैम्पेस्ट व डाकोटा के सैनिकों को जम्मू में आवश्यक निर्देश दे रहे हैं। श्री मिनू इंजिनीयर व के० एल० भाटिया भी उपस्थित हैं।

जब कमीशन को यह विश्वास हो जाय कि कबीले वाले हट रहे हैं और युद्ध रोकने की कार्यवाहियां सफल हो गई हैं तो भारत कमीशन की सलाह से काश्मीर से अपनी सेनाएं क्रमशः हटाने की योजना तय्यार करे। शांति-स्थापना के लिए थोड़ी सेना रखे।

अपनी सेनाएं हटाने की प्रत्येक बार घोषणा करता रहे। भारतीय सेनाएं सीमा भागों में कम से कम रहें।

प्रत्येक जिले में शांति व व्यवस्था के लिए स्थानीय भर्ती हो, यदि स्थानीय नाकाफी हो तो कमीशन भारत व पाकिस्तान दोनों की सम्मति से किसी की भी सेनाओं को वहां प्रयुक्त कर सकता है।

भारत-सरकार यह विश्वास दिलाये कि काश्मीर की सरकार जनमतसंग्रह की तैयारी और उसके सम्पन्न होते समय शासन संचालन के लिए मुख्यमन्त्रालय में प्रमुख

और जाने की स्वतन्त्रता रहेगी।

भारत सरकार व रियासती सरकार कोशिश करेगी कि रियासत से १५ अगस्त, १९४७ के बाद आये हुए भारतीय नागरिकों को हटाने की व्यवस्था हो।

भारत सरकार को विश्वास दिलाना होगा कि रियासत की सरकार समस्त राजनीतिक बंदियों को रिहा कर देगी और इस सम्बन्ध में कदम उठाये जायेंगे कि जो लोग रियासत से झगड़ों के कारण

भिम्बर-राजौरी मार्ग पर हमारी यांत्रिक सेना।

दिल्ली में महिला सेविका दल की एक रैली।

अपहृत स्त्रियों की गंभीर समस्या

[श्री मृदुलासाराभाई]

'मैं अपनी माता को खोजने जा रहा हूं' — एक आठ वर्ष के बालक ने कहा जब भारत के नवीन सीमान्त रेलवे स्टेशन अटारी पर एक सहायता कार्य करने वाले व्यक्ति ने उससे पूछा। वैयक्तिक आश्वासन देने पर बड़ी कठिनता से उस बालक को पाकिस्तान जाने से रोका जा सका।

पूर्वी पंजाब में भी अपहरणकर्ता के चंगुल से अपनी एकमात्र कन्या की रक्षा याचना के लिए मुस्लिम माता को घर घर भटकना पड़ता है। एक दूसरी मां ने तो यह विश्वास करने ही से इन्कार कर दिया कि उसकी पुत्री का वध हो चुका है। वह अपूर्व लावण्यमयी है। राक्षस के भी हाथ उस पर नहीं उठ सकते—उसने कहा। एक हिन्दू लड़की ने कारागार स्थान से अपने पत्र में लिखा हम वापस तो आना चाहते हैं किन्तु जब तक सफलता का निश्चय न हो। हमारी रक्षा के लिये कोई प्रयत्न असफल हुये तो हमारा जीवन नारकीय हो जायगा। तब तक अच्छा है हमें यहीं रहने दो। सामूहिक निष्क्रमण के प्रारम्भिक दिनों में गैर मुस्लिम और मुस्लिम शरणार्थियों के पैदल आने वाले समुदाय के साथ लड़कियां तथा युवतियां थीं ही नहीं क्योंकि मार्ग में इन पर आक्रमण करके स्त्रियां, पशु तथा अन्य सामान छीन लिये जाने का शिकायतें हुई थीं। मुस्लिम, हिन्दू या सिक्ख सभी के कष्टों का कारण एक ही है। युक्ति से उन्हें सान्त्वना नहीं दी जा सकती।

बचा कर लायी गयी हिन्दू, मुस्लिम या सिख स्त्रियों के शिविरों में उन्होंने जिन लोमहर्षक अनुभवों का वर्णन किया उन सबका भाव एक ही था। एक बार तीनों सम्प्रदायों की स्त्रियों को एक साथ एक ही शिविर में रखा गया। उनकी पारस्परिक बातचीत तथा अनुभव वर्णन बड़ा ही हृदयविदारक था। इन त्रसित, अपमानित, स्तब्ध तथा भयातिरेक से विह्वल स्त्रियों का एक ही प्रश्न था। इसमें हिन्दू, मुस्लिम तथा सिख का भेद-भाव नहीं था। यह तो एक स्त्री का दूसरी स्त्री से सभाषण था।

अपहृत स्त्रियों के विक्रय के समाचार भी प्राप्त हुये हैं। निस्सन्देह दोनों ओर ऐसी घटनायें हो रही हैं।

ऐसे व्यक्ति भी हैं जो युद्ध को उत्तेजित करने वाले हैं और जो यह नहीं चाहते कि जनता में शान्ति रहे। ऐसे व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने के लिये इस मानवीय विपत्ति का उपयोग करना चाहते हैं। यदि स्त्रियां अपने अपने परिवारों को भेज दी जायें तो दोनों डुमीनियनों के बीच [illegible] खिंचाव घट सकता है। और इससे युद्ध की सम्भावना भी कम हो सकती है।

दोनों डुमिनियनों को स्त्रियों को पुनः प्राप्त करने की अत्यधिक उत्सुकता है कि स्त्रियों को खोज निकालने का कार्य बड़ा सुगम है। सरकार, पुलिस तथा सेना की सहायता से स्त्रियों की खोज कर सकती है इसलिये फिर यह विलम्ब क्यों—ऐसा प्रश्न होता है। किन्तु जो इस प्रकार सोचते हैं वे मानव स्वभाव एवं समाज विज्ञान से अनभिज्ञ हैं। केवल जनमति सहयोग तथा प्रेरणात्मक उपायों द्वारा ही इस दिशा में अधिक सफलता हो सकती है।

दोनों डुमिनियनों में स्त्रियां केवल चोर, लुटेरे या बदमाशों के गिरोहों के हाथों में ही नहीं हैं किन्तु ऐसे कट्टर साम्प्रदायिक लोगों के चंगुल में भी फंसी हुई हैं जिन्होंने धर्म के नाम पर उन्हें पकड़ रखा है। अनेक स्त्रियां समाज के श्रीमन्तों के घरों में पड़ी नैतिक पतन का जीवन बिता रही हैं। मानवता के नाम पर व्यक्तिगत रूप से अपील करने से ही इन स्त्रियों का छुटकारा हो सकता है।

कुछ व्यक्तियों ने इन स्त्रियों को बंधकों के रूप रखा हुआ है। बंधक रखने की प्रथा बड़ी प्राचीन है किन्तु बन्धकों के साथ किये जाने वाले बर्ताव को नियन्त्रित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कानून बनाया गया था। आज किसी नागरिक द्वारा बन्धक को रखना न केवल कानून विरोधी है अपितु उसकी अपनी सरकार के भी विरुद्ध है। अपहृत स्त्रियों के उपकारी बन कर जो व्यक्ति यह कहते हैं कि उन्होंने स्त्रियों से बातचीत की है वे वापस जाना नहीं चाहतीं, लौटने

लेखिका

के विचार मात्र से उन्हें घबराहट होती है—ऐसे व्यक्तियों के कथन से बंदी की मनो भावना जानने वाले को कोई आश्चर्य न होगा। एक ओर निराशा—निरन्तर निराशा तथा दूसरी ओर अपहर्ताओं के दुर्व्यवहार के परिणामस्वरूप ये स्त्रियां आत्म रक्षा की भावना से अभिभूत हो कर समर्पण कर बैठी हैं किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि ये अपनी नवीन परिस्थितियों से संतुष्ट हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये स्त्रियां अपने भविष्य के विषय में सशंकित और अनिश्चित हैं। स्वतन्त्र भारत और स्वतंत्र पाकिस्तान में स्त्रियों की स्थिति में हुए परिवर्तन को अनुभव करने का उन्हें अवसर नहीं मिला। उन्हें यह पता नहीं कि उनके सम्बन्धी कितनी उत्सुकता से उनके लौट आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अभी तक उनकी मातृभूमि की पुकार उन तक नहीं पहुंची।

धन्य वीर माता

श्रीमती शुक्लक्ष्मी अम्मल का एक पुत्र काश्मीर के युद्ध में मारा गया है। जब सरदार बलदेवसिंह ने उन्हें समवेदना-पत्र लिखा तो उसका जवाब उन्होंने यह दिया कि मैं अपने भाग्य पर अश्रु बहाने की अपेक्षा गौरव अधिक प्रकट करती हूं, क्योंकि मेरे पुत्र ने अपने प्यारे देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये हैं। मेरे पुत्र का उदाहरण उसके अन्य साथियों में साहस का संचार करे।

अपने पुत्र को पहले उन्होंने लिखा था—हम गुलाम नहीं हैं, अब हम स्वतन्त्र हैं, यदि हमें अपने देश की खातिर लड़ना पड़े, तो हमें इसके लिए प्रसन्न ही होना चाहिए।

इस सप्ताह के कुछ समाचार

२६ फरवरी से ६ अप्रैल तक भारत के साथ शामिल होने वाली रियासतों में १३६१ महिलाओं को बचाया गया। इसमें से ६३३ को पाकिस्तान और २६१ को भारत में पहुंचा दिया गया। शेष रियासती शिविरों में विद्यमान हैं। पाकिस्तान में समाज सेवा का कार्य करने वाली स्त्रियों की कमी है, इसलिए मुस्लिम महिलाओं को प्रेरणा करने में कठिनाई है।

—पिछले दिनों विभिन्न रियासतों के जितने संघ बने हैं, उनमें से किसी संघ में भी कोई महिला मन्त्रिमण्डल में नहीं ली गई।

डा० अम्बेदकर अपनी नवपरिणीता पत्नी के साथ।

—भारत सरकार के [illegible] सदस्य श्री अम्बेदकर ने ५६ वर्ष की अवस्था में ४० वर्षीय [illegible] से [illegible] मेरिज [illegible] के [illegible] विवाह [illegible]

यूरोपियन राजनीति का एक पृष्ठ

युद्ध से पूर्व हिटलर के साथ तीन समझौते

[आई येरमाशेव]

ब्रिटेन, फ्रांस और रूस तीनों देशों ने हिटलर से मित्रता के समझौते किये थे और तीनों का उद्देश्य विभिन्न था। रूसी लेखक अपने देश की नीति को पूर्ण न्याय्य मानता है कैसे? इस लेख में देखिये।

मेरे मन में इस समय तीन पत्र घूम रहे हैं, जिन का दूसरे महा युद्ध के पूर्वकाल से सम्बन्ध है। इन में से पहला पत्र वह एंगलो जर्मन समझौता है जिस पर म्यूनिक में सितम्बर १९३८ में हस्ताक्षर हुए थे, दूसरा फ्रांस जर्मन घोषणा है जिस पर पेरिस में दिसम्बर १९३८ में हस्ताक्षर किए गए थे और तीसरा पत्र सोवियत जर्मन समझौता है, जिस पर मास्को में अगस्त १९३९ में हस्ताक्षर हुए थे।

एंगलो जर्मन और फ्रांस जर्मन घोषणाओं का वास्तविक प्रयोजन क्या था? असल में यह दोनों समझौते परस्पर मित्रता कायम रखने के लिए किये गये थे। इन का दूसरा अर्थ नहीं था। इन समझौतों पर हस्ताक्षर करके चेम्बरलेन और दलेदियर की सरकारों ने जर्मन आक्रमण से बचना चाहा था। परन्तु यह भूल नहीं जाना चाहिये कि ब्रिटेन और फ्रांस को हस्ताक्षर करने के लिए काफी मूल्य चुकाना पड़ा था। उस समय इन्होंने जर्मनी को आस्ट्रिया व चेकोस्लोवाकिया सौंप दिये। यह लोग पोलैंड का बन्दरगाह भी जर्मनी को देने के लिए तैयार थे। उनका हिसाब किताब बहुत सीधा था — योरुप के पश्चिम में अपनी सीमाओं को बचाना और हिटलर के लिए पूर्व में खुला मार्ग छोड़ देना, ताकि वह उस ओर बढ़ सके।

जब यह रहस्योद्घाटन सोवियत समाचार विभाग ने अपनी पुस्तक 'इतिहास को बिगाड़ने वाले' में किया, तब ब्रिटेन, अमरीकी और फ्रांसीसी प्रेस ने जोरों से इस का विरोध किया। विरोध का सार यह था कि म्यूनिक का खेल कभी का समाप्त हो चुका है। फिर भी इसे क्यों महत्व दिया जाता है। इसी तरह हम भी कह सकते हैं कि सोवियत जर्मन समझौता भी तो पुराना हो चुका है और मर चुका है लेकिन सोवियत विरोधी लोग उसका राग अलापे जा रहे हैं। अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस ने जो आन्दोलन चला रखा है वह उसी समझौते से सम्बद्ध जर्मन गुप्त पत्रों के बारे में है, जो अमरीका के स्टेट विभाग ने प्रकाशित किये हैं।

ब्रिटेन अमरीका आदि भरसक प्रयत्न कर रहे हैं कि एंगलो जर्मन और फ्रांस जर्मन घोषणाओं को दुनिया के इतिहास से ही निकाल दिया जाये और सोवियत जर्मन समझौते को खूब याद रखा जाये। इस लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि इन तीनों पत्रों के अर्थ और महत्व को समझा जाए।

श्री हिटलर

एंगलो-जर्मन और फ्रांस जर्मन घोषणाओं पर हस्ताक्षर म्यूनिक समझौते के आधार पर हुए थे। पहले पत्र पर तो हस्ताक्षर म्यूनिक में ही हुए थे। इस के अनुसार चेकोस्लोवाकिया हिटलर के हवाले कर दिया गया था। हिटलर के साथ हस्ताक्षर करते हुए चेम्बरलेन और दलेदियर ने जानबूझ कर इस गरीब देश का बलिदान किया था ताकि हिटलर को पूर्वी योरुप में पूर्ण स्वतन्त्रता मिल जाए। ब्रिटिश और फ्रांसीसी सहायकों का सहयोग पाकर हिटलर ने मध्य योरुप को तलवार के घाट उतारा और पूर्वी योरुप की दिशा में बढ़ने की तैयारी करने लगा। इस समय सोवियत यूनियन को बाकी देशों से अलग कर दिया गया। इंग्लैंड और फ्रांस के साथ होने वाले समझौतों ने हिटलर में अगाध विश्वास और अदम्य उत्साह पैदा कर दिया और उसने समझा कि अब मैदान खाली है।

किन्तु इस नीति से ब्रिटेन और फ्रांस में न तो शान्ति हो सकी और न ही विश्वास कायम रहा। इसके विपरीत चेम्बरलेन और दलेदियर ने अपने देशों को भी खतरे में डाल दिया। वे अपनी पृथक् नीति पर चलते रहे और समस्त यूरोपीय राष्ट्रों के साथ मिल कर यूरोप में शान्ति स्थापित करने से इनकार कर दिया जिससे हिटलर के आक्रमण को रोका जा सकता था। कुछ समय बाद ब्रिटेन और फ्रांस की सरकारों की आंख यह देखकर खुल गई कि हिटलर अपने वचनों पर भी कायम नहीं रहता। लेकिन फिर भी वे आशा करते रहे कि म्यूनिक योजना अन्त में सफल होगी। यही कारण था कि ब्रिटेन और फ्रांस के साथ सोवियत यूनियन की जो बातचीत १९३९ में चली थी, सफल न हो सकी। ब्रिटिश और फ्रांसीसी सरकारें ऐसा समझौता चाहती नहीं थीं। वे केवल हिटलर को डराना चाहती थीं और यह यत्न कर रही थीं कि हिटलर का मुख पश्चिम की बजाय पूर्व की ओर कर दिया जाय।

सोवियत यूनियन ने यह अच्छी तरह समझ लिया कि उसके लिए स्थिति बहुत विषम है और यह पश्चिमी शक्तियों की म्यूनिक नीति का परिणाम है। ब्रिटेन और फ्रांस उसका साथ नहीं देंगे। यह बात भी निश्चित हो गई कि हिटलरी जर्मनी के साथ यह होना अनिवार्य है। इसलिए सोवियत् यूनियन के लिए युद्ध को लटाई में डालना आवश्यक हो गया। जितनी देरी होगी, उतना सोवियत यूनियन को तय्यारी करने का मौका मिलेगा। म्यूनिक के बाद सोवियत यूनियन ने ठीक अनुमान लगाया था कि चेम्बरलेन, दलेदियर और हिटलर का परस्पर समझौता बहुत देर नहीं चलेगा।

यह स्पष्ट है कि म्यूनिकवादी लोगों ने सोवियत यूनियन और पूर्वी योरुप को हिटलर के हाथ बेचना चाहा था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सोवियत यूनियन ने उस समय जो निश्चय किया, वह प्रजातन्त्रवादी देशों के दृष्टिकोण से ठीक था। इस निश्चय से प्रतिक्रियावादी दल को अवसर नहीं मिला कि वह रूस के विरुद्ध अपनी योजना को सफल बना सके। सोवियत यूनियन को समय भी मिल गया कि वह हिटलर का मुकाबला कर सके। यदि ऐसा न होता तो आज म्यूनिकवादियों की विजय होती तथा योरोप की दशा और भी भयंकर होती।

सोवियत नीति ही म्यूनिक नीति का अन्त कर सकती थी और जर्मन आक्रमणकारियों का मुकाबला कर सकती थी। सोवियत यूनियन को मालूम था कि कष्टों का अधिक भाग इसके कन्धों पर आ पड़ेगा। उस समय पश्चिमी शक्तियों से सहायता की कोई आशा नहीं की जा सकती थी। वह सब जानते थे कि उन्होंने अपने लोगों को निहत्था छोड़ दिया है। समय पाना केवल सोवियत यूनियन के लिए जिन्दगी और मौत का सवाल नहीं था बल्कि सारे योरुप के लिये था। यूरोपीय शान्ति के लिए म्यूनिक योजना को तोड़ना आवश्यक था। सोवियत जर्मन समझौते ने यह काम किया और प्रतिक्रियावादियों की योजनाओं को असफल बना दिया।

श्री चेम्बरलेन

श्री मोलोतोव

ये इन्सान, हम हैवान

[श्री शम्भूनाथ सक्सेना]

शहर से बाहर एक मन्दिर है, जिसकी प्राचीन प्राचीरें ढह कर ढेर हो गई हैं। जगह-जगह पर आस-पास के मिट्टी के ढेर शरीर पर-फोड़ों से बन गये हैं। मन्दिर के पास ही कुआ है जिसकी जगह ऊबड़-खाबड़ बिना जुते खेत की भूमि-सी हो गई है। मन्दिर से शहर की बस्ती लगभग एक मील होगी। जिस समय इस मन्दिर का निर्माण किसी व्यक्ति ने धार्मिक भाव से प्रेरित होकर करवाया होगा उस समय निस्संदेह वह जगह बड़ी सुहावनी और बसी हुई होगी। लेकिन आज केवल विगत वैभव के कुछ अवशिष्ट चिन्ह ही देखने को मिलते हैं और वे भी अत्यन्त करुणाजनक स्थिति में। मूर्ति उसमें एक भी नहीं है। लेकिन मन्दिर की निर्माण-कला से प्रतीत होती है कि मध्यकालीन-युग का है — उसमें तेलगू देश की शिखिर तथा स्तूर की आकृति सन्निहित है। पुरातत्व-विज्ञान से यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि मन्दिर विष्णु का है और मध्यकालीन मूर्ति-कला का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

इस निर्जन स्थान में स्थित मन्दिर में कुछ दिनों से भिखमंगों की एक टुकड़ी आ बसी है, जहां सुबह और शाम के समय का छोड़ कर वे चरागाह में बकरियों की तरह पड़े रहती है। सभ्य-संसार के खिलते हुए उपवन में ये घिनौने, अस्पृश्य-रोगों से पीड़ित खाना-बदोश भिखमगे ठीक नाली के किल-बिल किलबिल करते कीटाणुओं से ही प्रतीत होते हैं।

निर्मल ने बायें हाथ की हथेली पर दाहने हाथ का घूंसा मारते हुए आवेश में कहा —'और जनाब, मैं आप से सही कहता हू यह बेगर-प्राब्लम (भिखमंगों की समस्या) देश के लिये एक विषम प्रश्न है। यदि निकट भविष्य में इसका निराकरण नहीं किया तो जिस तरह समय के साथ हमारे देश से जंगल विलीन होते जा रहे हैं, हमारी सदियों से पली सभ्यता इन भिखारियों के बढ़ते करुण-क्रन्दन में चोट खाकर चीत्कार कर उठेगी, मिट जायेगी। साहेब, आप महसूस न करें न करें, लेकिन आपकी सभ्यता, आपकी संस्कृति इस वर्ग के कारण खतरे में है। राष्ट्र प्रगति में एक बहुत बड़ी बाधा उपस्थित हुई है।'

'यार वाकई हम तुम्हारी इस सूझ के कायल हैं।'

उसने अपनी अधजली सिगरेट को ऐश-ट्रे में झाड़ कर एक कश लिया और फिर मुस्कराते हुए कहा—'तो सचमुच हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता और प्रगति खतरे में है?'

हम सबने महसूस किया कि विपिन निर्मल को बना रहा है। मैंने उसे और अधिक बोलने का अवसर न दे कर कहा—

'विपिन, वास्तव में निर्मल ने हमारे सामने एक नई समस्या रखी है। इसे बातों में नहीं टाला जा सकता। हमें इस पर विचार करना होगा और जरूरत यथार्थ अध्ययन की भी होगी।'

इसके बाद विपिन का विनोद उड़ते धुंए के बादलों-सा तिरोहित हो गया। वह एक टक मेरी गम्भीर मुद्रा की ओर देखता रह गया। मैंने कहा—

'निर्मल, लेकिन यह तो तुम्हारे ज्ञान की बात हुई। एक बात बताओ कभी तुम्हें उन लोगों के टच (सम्पर्क) में भी आने का अवसर मिला है, निर्मल ने मेरी ओर सूनी आंखों से देखा। फिर तत्काल साहस कर बोला—

'अनुभव के लिये प्रयास करना होगा। और अभी उसके लिये मेरा ज्ञान शून्य है।'

मैंने इस बार विपिन की ओर इंगित कर कहा—'तुम एफर्टस (प्रयास) करने के लिये तैयार हो?'

विपिन ने दूसरी सिगरेट जलाते हुए मेरी ओर इस भाव से देखा, मानो कह रहा हो—'अभी कहां खामखां के झमेले में पड़ रहे हो।' और फिर एक कश खींच कर कहा—

'यह सब वाहियात है। दुनिया जिस रफ्तार से चल रही है, वैसी ही चलती जायेगी, कोई उसकी प्रगति में बाधा न डाल सकेगा। मैं इन झमेलों में खुद को नहीं डालना चाहता। दूसरों के लिये रास्ता खुला है।'

और वह फिर रुका नहीं, उठ कर चला गया। मैंने निर्मल से कहा—

तो मि० निर्मल कुमार हम दोनों ही मिल कर इस अवहेलित-वर्ग का अध्ययन करेंगे।'

सुबह का समय था। सूर्य की सुनहली किरणें ऊंचे वृक्षों की चोटियों को स्पर्श कर नीचे उतरती आ रही थीं।

मैंने कहा:—

इस नाले के उस तरफ जहां ऊंचा टीला है उसके पीछे ही विष्णु मन्दिर है। इस समय हम वहीं चल रहे हैं। निर्मल कुछ बोला नहीं, डग भरता केवल मेरा अनुसरण करता रहा। मैंने कुछ दूर चल कर पूछा—

'क्या बजा होगा?'

निर्मल ने हाथ की रिस्टवाच को देख कर उत्तर दिया—'इस समय सवा सात बजा है और हमें अधिक से अधिक नौ बजे वापस लौट आना चाहिए।'

मैंने सिर हिला कर सहमति प्रगट की।

थोड़ी देर में हम मन्दिर के सामने आ गये। भिखमंगे टूटे जीर्ण मन्दिर से धूप खाने के लिये मैदान में आ बैठे थे, जो चलने फिरने योग्य थे वे ऊंचे टीलों पर आ बैठे थे। इन अर्धनग्न भिखमंगों की यह टोली दूर से वानर सेना-सी प्रतीत होती थी। निर्मल ने दूर से ही भिखमंगों की ओर देख कर आर्द्र कण्ठ से कहा—

'केदार, जरूरत इस बात की है कि किस प्रकार इन नंगे-भूखे प्राणियों को कल्चर (सभ्यता) का जामा पहनाया जाये?

उसकी आंखों से करुणा रिस पड़ी थी और वह केदार का सहारा लेकर खड़ा हो गया था। केदार ने निर्मल की बांह झकझोरते हुए कहा —

'जनाब, इमोशन (भावुकता) से काम नहीं चलेगा। आगे बढ़िए और इन से सम्पर्क स्थापित कीजिए—इनकी अन्दरूनी बातें जानने की कोशिश कीजिए। आप यह क्यों भूलते हैं, इनके भी अपने विधान हैं—इनकी भी अपनी संस्कृति है। आप उसे मानें या न मानें?'

अब तक हम दोनों भिखमंगों के निकट आ गये थे। भिखमंगों के बच्चे हम दो बाबुओं को अपनी बस्ती में देखकर ठीक उन कुत्तों की तरह चीख-चीख शोर-गुल मचाने लगे थे जो अपनी गली में किसी अपरिचित को देख कर भौंक-भौंक कर एक विशेष वातावरण सूचित कर देते हैं। नब्बा ने कान खुजाते हुए गफूरा से कहा—

'अरे बाबू जी! तो खोल दे अपने घाव की पट्टी और पकड़ मेरा हाथ।'

गफूरा ने तत्काल अपने सर में बंधी पट्टी खोल दी और हथेली के बराबर ईंगुर-सा सुर्ख घाव धूप में चमक उठा। गफूरा को इस तरह बाजी मारता देखकर करीमन ने रफीक को टुनिहाया—'मुंहजला खाने के लिए ठिठोली कर करके खा जायेगा, और मांगने के वक्त बगलें झांकता है।''

रफीक ने करीमन की तरफ कनखियों से तरेरते हुए कहा —

'मां कसम तुम्हारी इन्हीं बातों पर तो हम दिलो-जान से फिदा हैं।'

बुढ़िया फरीदा ने सर से सफेद बालों में चिकुटी पर जुआं नाखून पर रखकर दूसरे नाखून से किया 'चट!' और तभी बाबुओं को अपने सामने देखकर करुणोत्पादक स्वर में चीख-चीख कर आशीष देने लगी —

'अरे अल्लाह वाले कुछ इस बुढ़िया की भी सुने जाओ। खुदा तुम्हारे रोजगार में बरकत दे।'

भला कल्लू इस स्वर्ण अवसर को किस प्रकार हाथ से खोता। अपने पूरे एक दर्जन छोटे-बड़े लड़कों को ले निर्मल के सामने आ खड़ा हुआ —

'अल्लाह तुम्हारा भला करे।'

निर्मलने महसूस किया कि वह साक्षात् नर्क में खड़ा हुआ है। भिखारियों के बदन से उठती कड़ी दुर्गन्धि के कारण

[शेष पृष्ठ ३० पर]

मालव-संघ की समस्या

[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]

मध्य भारत का एक संघ बने या दो—और यदि एक ही बने तो उस संघ की राजधानी क्या हो—ग्वालियर, इन्दौर या उज्जैन? यह प्रश्न आज मध्य भारतीय जनता के सामने ज्वलन्त रूप से उपस्थित है। 'प्रेमी'जी स्वयं ग्वालियर निवासी हैं और एक लोक-प्रिय मन्त्री के भाई भी, फिर भी जिस तरह उन्होंने इस प्रश्न की चर्चा की, वह उनकी निष्पक्षता और विचारशीलता का द्योतक है। —सं०

हिन्दुस्तान की बलिदान-शक्ति से पराजित होकर और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक स्थिति से मजबूर होकर हिन्दुस्तान से जाते-जाते अंग्रेज ने जो जहरीले शूल हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय शरीर और प्राणों में बेध दिए हैं, उनमें एक है पाकिस्तान, दूसरा है राजाओं का दल और तीसरा है स्वत्वधारियों का वर्ग—पूंजीपति, जागीरदार, जमीदार आदि। जब तक ये त्रिशूल हमारे राष्ट्र-अंग में बिंधे हुए हैं तब तक देश का सुख-शांति और उन्नति की ओर अग्रसर होना संभव नहीं है। हिंन्दुस्तान के जन-साधारण जन-नेताओं से आशा करते हैं कि, वे किसी जादू की लकड़ी से एक ही दिन में सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में सुख-सम्पत्ति का भंडार भर देंगे—लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम कि कर्णधारों की सारी शक्ति इन्हीं त्रिशूलों से छुटकारा पाने में लग गई है।

इन त्रिशूलों में से पाकिस्तान के अस्तित्व को सर्वथा नष्ट करना दूर की बात है, परन्तु जब तक हम अपना आंतरिक ऐक्य प्राप्त नहीं करते तब तक पाकिस्तान तो क्या किसी भी बाहरी विरुद्ध शक्ति तथा अपने ही

इन्दौर नरेश

भीतर के स्वत्वधारी देश द्रोहियों से अपना बचाव नहीं कर सकते। इसी बात को ध्यान में रखकर प्रतिक्रियावादी राजाओं की निरंकुश सत्ताओं को समाप्त करने का हमारे राष्ट्र-नेताओं ने निश्चय किया है। हमें व्यक्तिगत मान-अभिमान और स्वार्थों के ऊपर उठकर व्यापक देश-हित का ध्यान में रखकर नेताओं का साथ देना चाहिए।

अनेक रियासतें विभिन्न प्रांतों में सम्मिलित कर ली गई हैं और उन रियासतों के राजाओं की पेन्शनें बांध दी गई हैं। इस स्थिति को भी हम पूर्ण सन्तोषजनक नहीं कह सकते — लेकिन बिना जोर-जबर्दस्ती किए वर्तमान परिस्थितियों में और किया ही क्या जा सकता है? एक दिन आयगा जब मोटी-मोटी कठिनाइयां दूर हो जाएगी और समाज का समता के आदर्श पर निर्माण सम्भव हो जाएगा—तब इन राजाओं से अधिक त्याग तलब किया जायगा।

कुछ रियासतों को प्रांतों में शामिल कर लेने के अतिरिक्त कुछ रियासतों के संघ भी बना दिए गए हैं। दक्षिण की कई छोटी रियासतें एक संघ में शामिल हो गई हैं। सौराष्ट्र की प्रायः सभी रियासतें एक हो चुकी हैं, पूर्वी पंजाब की पहाड़ी रियासतों का संघ बन गया है, राजस्थान की कई रियासतें एक धागे में पिरो दी गई हैं, मत्स्य संघ अभी बना है और बुंदेलखण्ड बघेलखण्ड की रियासतें भी एक होचुकी हैं। इन संघों के बन जाने से राजाओं की व्यक्तिगत शक्ति काफी घट गई है। अब वे देश को हानि पहुंचाकर अपने स्वार्थों की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो सकते। छोटी-छोटी रियासतों को मिला कर संघ बना देने से प्रजातांत्रिक शासन अधिक सहूलियत से चल सकेगा, जन-हित के कार्य एक निश्चित नीति से अधिक आसानी से हो सकेंगे और रियासती जनता भी शेष प्रगतिशील भारत की जनता के समान सुख और अधिकार भोग सकेगी। और एक बड़ी बात यह है कि ईश्वर न करे भारत को किसी शत्रु का सामना करना पड़े तो किसी राजा को शत्रु से मिल जाने या तटस्थ रहने का अवसर नहीं मिलेगा। सम्पूर्ण भारत एक इकाई बनकर, एक झंडे के नीचे रणस्थल में खड़ा होगा।

मध्य भारत की सारी रियासतों को मिलाकर एक प्रांत बनाने की दौड़-धूप एक ओर से चल रही है। ग्वालियर और इन्दौर बड़ी रियासतों के राजाओं ने इस संबंध में अपनी रजामन्दी भी जाहिर कर दी है। उज्जैन में हुए सार्वजनिक अधिवेशन में सम्पूर्ण मध्य भारत की जनता ने एक संघ बनाने की मांग भी कर दी है। ग्वालियर और इंदौर की एसेम्बलियों ने मध्य भारत के संघ में शामिल होने के प्रस्ताव पास कर दिए हैं। छोटी रियासतों के राजाओं और जनता ने इस योजना का समर्थन कर दिया है। फिर भी अभी तक यह योजना कार्यरूप में परिणत नहीं हो सकी है—इसका कारण क्या है?

राजस्थान और मध्य भारत में रियासतों के इस प्रकार के संघ बनाने की जितनी आवश्यकता है उतनी और कहीं नहीं। इलाकों में एक रियासत की सीमाएं दूसरी रियासतों की सीमाओं में घुसी हुई हैं या घिरी हुई हैं और कदम-कदम पर एक रियासत से दूसरी रियासत में आने-जाने में बहुत असुविधा और अपमान का सामना करना पड़ता है। छोटी-छोटी रियासतों में जन-तांत्रिक शासन-सुधार तथा अन्य जन-हित के कार्य किसी भी प्रकार संभव नहीं हैं—इसलिए संघ-निर्माण तो अनिवार्य है। भारत के राष्ट्र नेता, प्रजा परिषद् के कार्यकर्त्ता और भारत सरकार के रियासत विभाग ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है और इसीलिए ये लोग इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। मध्य भारत का एक संघ बनाने का एक प्रकार से पूर्ण निश्चय हो चुका है—लेकिन अचानक ही एक दिन स्टेट सेक्रेटरी श्री मेनन के मुखारविंद से पहली बार मध्य-भारत की जनता ने आश्चर्य के साथ सुना कि मध्य भारत में सम्भव है एक नहीं दो संघ भी स्थापित हो सकते हैं।

दो संघ क्यों?

मध्य भारत की रियासतों के ग्वालियर और इन्दौर की प्रमुखता में दो संघों की योजना का सूत्र-पात कैसे हुआ और क्यों हुआ यह जानने का हक मध्य भारत की जनता को है। मध्य भारत लोक-परिषद् के प्रधान श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय के वक्तव्य के अनुसार इस नवीन योजना का उद्गम ग्वालियर नरेश या मेनन साहब या दोनों के मस्तिष्क से हुआ है। किसी-किसी पत्र ने लिखा है कि महाराज देवास जूनियर की कृपा का यह फल है, ग्वालियर के पोलिटिकिल विभाग के (जनता के नहीं, महाराज द्वारा नियुक्त) मन्त्री बृजनारायण जी का कथन है कि महाराज ग्वालियर ने ऐसा कोई सुझाव पेश नहीं किया, बल्कि स्वयं कुछ जन-नेताओं के विचार में अभी दो संघों का बनाना ही उचित जान पड़ रहा है। मध्य भारत लोक-परिषद के मन्त्री हामिद अली साहब को आशंका है कि शायद इन्दौर के कुछ जन-सेवकों के परोक्ष प्रयत्नों का यह सुफल है और इन्दौर प्रजामण्डल पत्रिका में श्री बैजनाथ महोदय ने (जो लोक-प्रिय नेता भी हैं और राज्य के लोक-प्रिय मन्त्री भी) इस आरोप का विरोध भी किया है और साथ ही यह भी कहा है कि दो संघ भी बनें तो हम उसका विरोध नहीं करेंगे। इस प्रकार की परस्पर विरोधी आवाजें प्रत्येक देश-हितैषी को दुखी करती हैं।

राजा लोग संघ-योजना का विरोध करें तो उनकी इस कमजोरी को अस्वाभाविक नहीं कह सकते और उनकी इस मनोवृत्ति से युद्ध भी किया जा सकता है, किंतु जनता के कार्यकर्ताओं के मुख से तो ऐसी २ बातें शोभा नहीं देतीं। मेरी समझ में नहीं आता कि दो संघ बनाने की योजना को क्यों व्यावहारिक समझा गया। मध्य भारत की रियासतों की सीमाओं का अच्छी तरह अध्ययन करने के बाद दो संघों की योजना एक मुसीबत ही जान पड़ती है। किसी-किसी रियासत का कुछ इलाका अपने शेष भाग से कट कर दूसरी रियासत में जा पड़ा है—किसी रियासत का कुछ इलाका ग्वालियर

ग्वालियर नरेश

से घिरा हुआ है, तो कुछ इंदौर से तो कुछ किसी और से। दो संघ बनाने से शासन-प्रबंध में कितनी दिक्कतें होंगी—यह भी कभी सोचा गया है।

दुर्भाग्य इस बात का है कि हम बाद की चीजों को पहले निबटा लेने का प्रयत्न करते हैं। हमारे किसी किसी रियासत के जन-सेवक मिस्टर जिन्ना की तरह जिद करके रहते हैं कि हमारी रियासत अल्पमत में है और संघ बनने पर बहुमत हावी हो जाएगा और हमारी न्याय-पूर्ण मांग भी पूरी नहीं होगी। किंतु जब सम्पूर्ण मध्य भारत एक बनाया जा रहा है तो हमें अलग-अलग रियासतों की सीमा में बंद रह कर किसी बात को सोचना ही क्यों चाहिए? सम्पूर्ण मध्य भारत के एक हो जाने पर न कोई ग्वालियरी होगा न कोई इंदौरी होगा। सभी मध्य भारतीय होंगे—सभी हिन्दुस्तानी होंगे

राजधानी के लिये तू-तू मैं-मैं

मध्य भारत संघ की राजधानी इंदौर हो या ग्वालियर या उज्जैन इस सम्बन्ध में अभी से तू तू मैं मैं चल पड़ी है—लेकिन अगर हम इस प्रश्न की चट्टान पर संघ-निर्माण की योजना के जहाज को टकरा कर चकनाचूर कर देंगे तो हमारी पीढ़ियां हमें अभिशाप देंगी। तीनों नगरियो में से कोई भी राजधानी बन जाए, शासन-प्रबंध में कोई अड़चन नहीं पड़ेगी। कराची जैसे अलग और दूर अवस्थित नगर को पाकिस्तान की और दिल्ली जैसे दूर बसे हुए शहर को हिन्दुस्तान की राजधानी बनाया जा सकता है तो ग्वालियर या इंदौर के सुदूर उत्तर या दक्षिण में होने में उनकी राजधानी बनने की पात्रता में कमी नहीं आती। ग्वालियर-नरेश और इंदौर नरेश स्वयं ही किसी निर्णय पर पहुंच जाएं—या सरदार पटेल अपना निर्णय दे दें तो जनता को मान लेना चाहिए—और जन-नेताओं को भी इस प्रश्न पर झगड़ा न करना चाहिए।

इंदौर वालों को डर है कि राजधानी का प्रश्न अगर जन-मत पर छोड़ दिया जायगा तो निश्चय ही ग्वालियर ही राजधानी चुना जाएगा। लेकिन उन्हें इंदौरी और ग्वालियरी बन कर नहीं, बल्कि मध्यभारतीय और मध्यभारतीय ही नहीं हिंदुस्तानी बनकर सारी बातों पर विचार करना पड़ेगा, हमें तर्क समझदारी और मनुष्यता की पुकार सुननी चाहिए। यदि मध्यभारत के बहुमत ने ग्वालियर को ही राजधानी बनाने का निश्चय किया तो इसका अर्थ यह नहीं है कि इंदौर से बहुमत की दुश्मनी है। राजधानी न बनने से इंदौर का वैभव और महत्व समाप्त हो जायगा ऐसा क्यों समझना चाहिए? इंदौर एक व्यावसायिक नगर है—वह बिना राजधानी रहे भी अपनी वर्तमान जन-संख्या और प्रगतिशीलता को कायम रख सकता है फिर किस लिए इंदौर वाले डरते हैं कि इंदौर राजधानी न रहा तो वह बर्बाद हो जायगा? बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर जैसे व्यावसायिक नगरों की समृद्धि को कौन रोक सकता है? पंजाब के विभाजन के पहले पंजाब की राजधानी लाहौर था और अमृतसर व्यावसायिक नगर। अमृतसर के वैभव और व्यवसाय को लाहौर ने नष्ट नहीं कर दिया। लेकिन लाहौर की समृद्धि का कारण केवल राजधानी होना ही था—वहां से राजधानी अमृतसर में ले जाने का अर्थ होता लाहौर को नष्ट कर देना। ग्वालियर लाहौर की जैसी स्थिति में है—उसकी जन-संख्या, समृद्धि, उन्नति और शान सिर्फ राजधानी होने से है—वहां राजधानी न रहे तो वहां के हजारों गरीब नागरिकों को घर-बार छोड़कर दूसरी जगह पेट-पालन के लिये जाना पड़ेगा। ग्वालियर केवल एक प्राचीन स्मारक बन कर रह जायगा। हम सभी मध्य भारतीयों को मध्य भारत के प्रत्येक नगर, कस्बों और गांव के हित-अनहित की बात को सोचना पड़ेगा। एक मां के दो बेटे हैं और मां गरीब है और वह सिर्फ एक बेटे के लायक दूध खरीद सकती है तो दूध उसे मिलना चाहिए जो कमजोर है। लेकिन अगर हम दोनों को दूध दे सकें और दोनों के शरीर की रक्षा कर सके तो कितना अच्छा हो।

इंदौर की जन-संख्या, समृद्धि, वैभव और महत्व नष्ट न हो, इसका ध्यान भी हमें (ग्वालियरी लोगों को भी) रखना ही चाहिए। यूनीवर्सिटी, हाई कोर्ट और अन्य बड़े २ शासन-विभाग यहां रखे ही जा सकते हैं। राजधानी का प्रश्न लेकर एक संघ की बजाए दो संघ बनाने की योजना को सामने लाना तो मध्य भारत की सदा के लिए हत्या कर देनी है। अंग्रेज ने हमें जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों, प्रांतों और रियासतों आदि की सीमाओं में बन्द रहकर सोचने का आदी बना दिया है। इस प्रकार की संकुचितताओं के ऊपर उठे बिना हम देश को उन्नत, संगठित और बलवान् कैसे बना सकेंगे?

मेरे उपर्युक्त कथन से सम्भव है लोग समझें कि मैं ग्वालियर को ही राजधानी बनाने की पैरवी कर रहा हूं—लोगों का ऐसा सोचना इस लिए भी स्वाभाविक है कि मैं ग्वालियर का निवासी हूं और मेरे भाई ग्वालियर के एक लोकप्रिय मंत्री हैं। लेकिन मैंने इस संकुचित ममता को अलग रख कर ही ऊपर की पंक्तियां लिखी हैं। अगर मध्य-भारत के जन-सेवक विशेष करके इंदौरी भाई (और अब तो मैं भी इंदौरी हो गया हूं क्यों कि मैं यहीं आ बसा हूं) गंभीरता, सहृदयता और उदारता से इस प्रश्न पर सोचें और अगर नगर की शान रखने के लिए दूसरे को उजाड़ देना जरूरी है तो वे अपना निर्णय दे दें। रीजिनल कौंसिल में अपना मत उपस्थित करें—मध्य भारत की एकता के नाम पर कुर्बानी दें और कुर्बानी लें। जिन्ना साहब की तरह अल्पमत का अड़ंगा न लगा करें। ग्वालियर-नरेश और इंदौर नरेश को हम लोग चाहे अपना न समझें लेकिन ग्वालियर और इंदौर तो हमारे अपने हैं—हमें तो दोनों की रक्षा करनी है—दोनों की उन्नति करनी है।

मध्यभारत का संघ बनाना हिंदुस्तान की व्यापक राजनीति का ही एक अंग है। आंतरिक संगठन के लिए देश की विशृंखलता को दूर करना आवश्यक है। देश के शत्रु चाहते हैं 'राजा-महाराजा भी चाहते हैं-पूंजीपति, जमींदार, भी चाहते हैं, विदेशी साम्राज्यवादी भी चाहते हैं कि हम बंटे रहें, हमारा देश भी बटा रहे। क्या हम उनकी कुत्सित आकांक्षा और चालबाजी के शिकार बने रहेंगे?

'तस्माद् युध्यस्व भारत'

★

आज देश के सामने विरोधी द्वारा बार बार पेश की जाने वाली समस्याओं पर भारत सरकार का जो दृष्टिकोण है, उसकी आलोचना ससार सम्पादक ने अपने पत्र में की है। बहुत सम्भवतः यह विचार जनता के एक भाग की मनोदशा को प्रकट करते हैं। इस लिए यह लेख यहां दिया जाता है —

आज देश में एक विचित्रमिश्रित संयोग का अवसर उपस्थित है। ५ हजार वर्ष पूर्व इसी देश के रणक्षेत्र या कुरुक्षेत्र में वीर अर्जुन को जिस भांति व्यामोह हुआ था ठीक उसी प्रकार अपने मन के व्यामोह को गत शुक्रवार को हमारे स्वतन्त्र्य-संग्राम के साहसी योद्धा या इस युग के अर्जुन नेहरू जी ने प्रकट किया। प्रधान मन्त्री जब कुरुक्षेत्र की ऐतिहासिक एवं पवित्रभूमि पर समवेत सैनिकों नहीं, वरन् पाकिस्तान से आकर हिन्द में शरण लेने वाले हिन्दू सिख शरणार्थियों के समक्ष शुक्रवार को भाषण कर रहे थे तब उनकी वाणी में अर्जुन का भारतीय मानव बोल उठा। कर्तव्याकर्तव्य का निर्धारण करने के मार्ग में आज हमारे सामने जो कठिनाई उत्पन्न हो गयी है, उसी का उल्लेख कर अर्जुन के समकक्ष ही वीर पर उनकी ही भांति विगलितहृदय नेहरू जी ने कहा — 'कभी-कभी मैं भाग जाने और साधु बन जाने की बात सोचने लगता हूं। किन्तु मैंने बापू से और देश से देश सेवा करने का प्रण कर रखा है।' नेहरू जी के उपर्युक्त वाक्य पढ़ कर हमें बरबस अर्जुन के मुख से विनिस्सृत गीता के प्रथम अध्याय का यह श्लोक याद हो आता है, जो इस प्रकार है — 'गाण्डीवं संस्रते हस्तात् त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः॥' इसके साथ ही हमारे हृदयों, संस्कारों और चेतना में सहस्रों वर्ष पुरानी स्मृतियां सजीव एवं सबल करते हुए नरश्रेष्ठ पार्थ के ये शब्द-समूह कानों में गुंजरित होने लगते हैं — 'वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते .... किं नो राज्येन गोविन्द, किं भोगैर्जीवितेन वा .... न कांक्षे विजयं कृष्ण, न च राज्यं सुखानि च।' भाव यह है कि 'मेरा शरीर कम्पित हो रहा है, मुझे रोमांच हो रहा है, हे गोविन्द! मैं राज्य लेकर क्या करूंगा, हे कृष्ण! मुझे सुख, भोग आदि नहीं चाहिये।' गुरु स्वजनों को मारने के संकल्प से विचलित एवं युद्ध-विमुख अर्जुन के इसी निराशावाद के बीच भगवान् कृष्ण ने उसे कर्मवाद एवं कर्तृत्व का सदुपदेश किया था। अर्जुन को गीता का असाधारण युद्ध-संगीत सुना कृष्ण ने उसका व्यामोह दूर कर दिया, और आज हमारे इतिहास में परम वीर तथा सब से अधिक दृढ़ प्रतिज्ञ पुरुष के रूप में अर्जुन का स्मरण किया जाता है। अर्जुन की अमर कीर्ति का गौरवगान करते हुए आज भी हम प्रायः कहा करते हैं — 'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्यं, न पलायनम्।'

स्मरणमात्र से हृदय फटने लगता है कि हमारे स्वातन्त्र्ययुद्ध के प्रमुख योद्धाओं में से आज अर्जुन तो है, पर कृष्ण नहीं है। वह हम से विदा ले चुका है। कब तक के लिए, कहा नहीं जा सकता। कुरुक्षेत्र के बीच जब गत शुक्रवार को नेहरू जी का निराशावाद ध्वनित हुआ तब स्वभावतः कृष्ण के अभाव में उस ऐतिहासिक महत्व की भूमि के कण कण ने मौनवाणी में उन्हें नयी प्रेरणा दी। नेहरू जी को तत्काल दूसरे ही वाक्य में कहना पड़ा, लेकिन मैंने प्रतिज्ञा कर रखी है, प्रण ठान रखा है।' तथापि इधर रह रहकर हमारे प्रधान मन्त्री के स्वर से वैराग्य के जो भाव टपकने लगे हैं वे क्या किसी एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति के द्योतक हैं? सच तो यह है कि इस समय हमें राष्ट्रीय व्यामोह ने ग्रस्त कर लिया है। सभी के मन में संशय है, सभी को संदेह है, प्रायः सभी को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता रह-रहकर घर दबाया करती है और जैसे पग ही आगे नहीं बढ़ पा रहा है। हमें देश में भीतर और बाहर चारों ओर शत्रु ही शत्रु दिखाई देने लगे हैं और प्रायः ऐसे शत्रु जो हमारे ही स्वजन रहे हैं अथवा हैं। यह सच है कि ये दुर्जन और दुष्टजन हो गये हैं। यह भी सत्य है कि इन्हें कल्याण और श्रेय का मार्ग नहीं दिखाई दे रहा है और ये निरंतर विनाश के पथ पर अग्रसर होते जा रहे हैं। इन्होंने ऐसी भ्रान्त धारणा बना रखी है कि हमारे विनाश में ही इनका श्रेय और समृद्धि निहित है। कौरवों की भांति हमारे अहित में ही ये अपना परम हित समझते हैं, यह प्रकट है। हैदराबाद राज्य में शस्त्र परिचालित करने वाले, पूर्वी बंगाल में प्रतिगामी राज्य के सचालक, सैनिक और राज्याधिकारी आदि आज बहुत महत्वाकांक्षी हैं। हम शांति व समझौता चाहते हैं। ये भी हमारे समान अपने राज्यों में सुखी समृद्धिशील और जगत् में कीर्तिध्वजा फहराने वाले बनें, पर ये लड़ने पर तुल गये हैं। लाचविक अर्थ में हमारे रहने और जीने के लिए सुई की नोंक भर भूमि भी नहीं रहने देना चाहते। हमारे वर्तमान राष्ट्रीय व्यामोह का यही प्रकृत स्वरूप है। रिजवी हों या जिना, अथवा नाजिमुद्दीन, सभी डंके की चोट आये दिन यह घोषणा करते फिर रहे हैं कि हम अपने शत्रु हिन्द को नष्ट किये बिना — समूचे हिन्द को पाकिस्तान बनाये बिना चैन न लेंगे!

इस प्रकार हम देखते है कि इतिहास की स्वाभाविक प्रक्रिया ने जहां एक ओर महाभारत के गृह युद्ध के लिए पूरा क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया है वहीं दूसरी ओर, हम घोर व्यामोह में पड़े हुए हैं। आज जब कि हैदराबाद, पूर्वी पाकिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान आदि में हम पर घातक प्रहार करने की तैयारियां हो रही हैं, हम अवसर के सर्वथा अनुपयुक्त, आदर्शों की लम्बी-चौड़ी बातें करते भगवान् कृष्ण के शब्दों में 'पण्डितों' और 'सुधीजनों' की भांति विवेक के प्रतिवाद का प्रदर्शन करते और संशयात्मा बन कर कर्त्तव्याकर्त्तव्य के निर्धारण में अपने को सर्वथा असमर्थ पाते दिखाई दे रहे हैं। पण्डितजनों और सुधीजनों का मार्ग तो वस्तुतः वह है जिसका प्रतिपादन कृष्ण ने गीता में किया है, न कि वह जिसे भ्रांति और व्यामोह में पड़कर अर्जुन ने अपने श्रेय का मार्ग समझ लिया और जिसका आश्रय आज इस राष्ट्र ने ले रखा है। गीता वास्तविक ज्ञानागार के रूप में आज भी हमारे पास है, और सम्भवतः तब तक रहेगी जब तक हम इस जगत से नामशेष न हो जायेंगे। गीता भी है और उसकी प्रेरणा शक्ति भी है, पर उस प्रेरणा को ग्रहण करने की हमारी शक्ति जैसे कुण्ठित हो गई है। वस्तुतः हम आज सब कुछ केवल पश्चिम के हाथ से ही ग्रहण करने के अभ्यस्त बन गये हैं। अपनी भी कोई वस्तु ग्रहण करना चाहते हैं, अथवा करते हैं तो पाश्चात्य जगत के ही हाथों से। हमारी इस मनोदशा का हमारे ही एक दिग्गज विद्वान् ने उस समय बड़ा सुन्दर विश्लेषण कर दिया जब हाल में गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्म स्थान पर अपने भाषण में उक्त मार्क्सवादी महापंडित और साहित्यकार ने बतलाया कि तुलसीकृत रामायण का महत्व उन्हें उस समय ज्ञात हुआ जब रूसी विद्वान श्री बारानिकोव ने 'जन-साहित्य' कहकर रामायण की प्रशंसा की। हम सत्य को न देखने, हवा में उड़ने और अतिवाद के मार्ग पर चलने के अभ्यासी बन गये हैं। अतएव व्यामोह दूर करने का एक मात्र उपाय यही है कि हम भगवान् कृष्ण के उपदेशामृत का पान करें, वर्तमान परिस्थिति में उन्हीं उपदेशों और आदर्शों को व्यवहृत करें और कठोर कर्म के मार्ग का वरण करके, जो ज्ञान मार्ग से कहीं व्यापक और उच्च है, पाकिस्तान तथा उसके समर्थकों की चुनौती सद्यः स्वीकार करें। हम न केवल चुनौती स्वीकार करें, वरन् उनके दांत खट्टे करने के निमित्त भी अग्रसर हो जायें। आज हमारे सम्मुख गम्भीर परिस्थिति है। हमें नष्ट करने के लिए एक व्यापक योजना बनाई तथा कार्यान्वित की जा रही है। सोचा यह गया है कि मुस्लिम शरणार्थियों को वापस भेजकर हिन्द को अधिक से अधिक पंचमागियों से भर दिया जाय। फिर सिंध के लाखों और पूर्वी पाकिस्तान के १॥ करोड़ हिन्दू सिखों को उद्वासित करके तथा उन्हें हिंद भागने के लिए विवश करके उनको पुनः बसाने की समस्या में हिन्द को बुरी तरह उलझा दिया जाय। नेहरू जी ने हाल में बताया ही था कि यह समस्या उत्पन्न हुई तो वह हिंद को धराशायी भी कर दे सकती है। इसके बाद हैदराबाद के निजाम की उत्तरी मद्रास की मांग अपना रंग लाये और फिर रजाकार, नेशनल गार्ड और पाकिस्तान सैनिक सभी मिलकर हिन्द को नेस्तनाबूद कर दें। स्पष्ट है कि जैसे पाण्डवों के लिए कौरवों से लड़ने के सिवा दूसरा मार्ग नहीं रह गया था वही बात हमारे सम्बन्ध में भी आज है। पर साथ ही यह स्पष्ट है कि हम व्यामोह छोड़ दें तो पृथा-पुत्र की भांति हमारी भी विजय ध्रुव है। हिन्द के प्रत्येक नागरिक और इस देश के सब से बड़े तथा सम्मानित नागरिक नेहरू जी से हमारा यही निवेदन और अनुरोध है। आज हमारा एक ही संकल्प होना चाहिये और भगवान् कृष्ण के शब्दों में वह होना चाहिये — 'तस्माद् युध्यस्व भारत।' अर्थात् — 'इसलिए हे अर्जुन, तू युद्ध कर।'

———

धारावाहिक उपन्यास—

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

[गतांक से आगे]

रामनाथ खाना खाकर, हाथ पोंछकर उत्सुकतापूर्वक चम्पा से बोला — "लो! अब ब्राह्मण खा-पीकर बिल्कुल तय्यार हो गया, बताओ, क्या बात है।" चम्पा ने सद्देर में बिल्कुल सीधे ढंग पर विवाह का प्रस्ताव सामने रख दिया। रामनाथ उसे सुनकर मन-ही-मन कितना प्रसन्न हुआ होगा, इसका पाठक अनुमान लगा सकते हैं। परन्तु उसकी तुरत-बुद्धि ने उसके कान में धीरे से कहा कि एकदम प्रसन्नता प्रगट करना ठीक नहीं। इसमें हेठी हो जायेगी। शान जमाने का यही समय है। चेहरे को अत्यन्त गम्भीर बनाकर बोला — "हूं! तो यह बात है। मैंने तो सुना था कि सरला विवाह करना ही नहीं चाहती, क्या उसने अब अपनी राय बदल ली?"

चम्पा ने उत्तर दिया — "हां, अब तो वह मान गयी है।"

अब तक नहीं मानी थी, अब क्यों मान गयी। अब मानने का क्या कारण हुआ। रामनाथ ने पूछा।

चम्पा बोली — "अब तक उसका इन्कार भी ठीक ही था। जब तक कोई योग्य आदमी न मिले, तब तक हम भी तो पूरा जोर नहीं दे सकते। तुम्हें देखकर मेरे दिल में तसल्ली हो गयी कि इस सम्बन्ध से बिटिया को सुख मिलेगा। मैंने पूरा जोर देकर कहा, तो वह मान गयी। अब मैं शुभ-कार्य में देर नहीं करना चाहती। तुम मंजूरी दे दो, तो विवाह की तय्यारी आरम्भ की जाय।"

रामनाथ एक क्षण तक चुप रह कर व्यंगभरी वाणी से बोला — "और यदि मैं स्वीकार न करूं तो"

चम्पा पर मानो वज्र गिरा। उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि रामनाथ सरला से विवाह करना स्वीकार नहीं करेगा। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो पानी में देर तक डुबकियां खा कर, जब अन्त में वह नदी-तट पर झुके हुए वृक्ष की शाखा को पकड़ने में सफल होगयी, तो किसी ने कुल्हाड़े से उस वृक्ष का तना काट दिया। वह स्तब्ध सी रह गयी। तब रामनाथ ताली पीटकर जोर की हंसी हंसता हुआ बोला — बस, इतनी सी हंसी से घबरा गयीं। भला तुम्हारी इच्छा को मैं कैसे टाल सकता हूं, मैं तो देख रहा था, कि मेरे इन्कार करने का तुम पर क्या असर होगा। सचमुच स्त्रियों का दिल बहुत कमजोर होता है।"

"तुमने बात ही ऐसी कही, तिवारी जी। भला कोई ऐसा भी मजाक करता है। अगर तुम्हारी बात बिटिया सुन लेती, तो क्या होता।"

चम्पा को यह मालूम नहीं था कि सरला कमरे के बन्द दरवाजे के पीछे खड़ी हुई सब कुछ सुन रही है। वह रामनाथ की बात सुनकर बे-होश होते होते बची।

चम्पा की बात का रामनाथ ने उत्तर दिया — "और क्या होता, पहिली बात सुनकर रोने लग जाती और दूसरी बात सुनकर हंस पड़ती।"

चम्पा अब कुछ शान्त हो गयी थी। बोली — "तो बात तय हो गयी। मैं सबसे कह दूं।"

रामनाथ ने गम्भीर बनने की चेष्टा करते हुए कहा — "यह तो ठीक ही है।" परन्तु क्या यह भी जरूरी नहीं कि मैं स्वयं सरला से इस विषय में बातचीत कर लूं।"

चम्पा ने कहा — "वह तो सब कुछ मुझ पर छोड़ चुकी है। अब उससे पूछने से क्या लाभ?"

> बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे। सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत हो गया और चम्पा ने जमींदार का काम संभाल लिया।
>
> चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया। बंटवारे से ही सन्तुष्ट न होकर देवकी ने चम्पा और सरला को उड़ाने का षड्यन्त्र किया। बिहार भूकम्प के बाद सेवा के लिए आया हुआ रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत हिल मिल गया था। उसके ठीक समय पर
> वह षड्यंत्र असफल होगया और सरला से रामनाथ के विवाह की बात चलने लगी।

रामनाथ ने जोर देकर कहा — "वाह, भाभी यह भी कोई बात है, क्या सरला कोई पत्थर की मूर्ति है जो अपने विवाह के सम्बन्ध में भी बातचीत नहीं करेगी क्या मैं ही अब ऐसा खतरनाक आदमी हो गया हूं कि वह मेरे सामने आयी तक नहीं। यह तो बहुत ही गवारपन की बात है।"

चम्पा रामनाथ के स्वर की कर्कशता से बहुत घबरा गयी। वह सोचने लगी कि तेज होने की कोई बात तो थी नहीं, फिर रामनाथ इतना क्रुद्ध क्यों हो गया। पहले तो मन में आया कि रामनाथ को कोई सख्त बात कह दे, परन्तु भारत में लड़की वालों के स्वाभाविक दब्बूपन ने उसे दबा दिया। हमारे देश की यह प्रथा है कि विवाह की बातचीत चलते ही 'लड़की वाले को सिर झुक जाना चाहिये, और उसे हर बात में दबना चाहिए। चम्पा भी रामनाथ के कठोर शब्दों को पीकर शान्त-भाव से बोली — "तिवारी जी। ऐसी कोई बात नहीं। सरला किसी काम में लगी होगी, इसलिए नहीं आ सकी। काम-काज से निबट लेगी, तो तुम उससे बातचीत कर लेना, उसने तो बात करने से इन्कार नहीं किया। यह बात तो मैंने अपनी ओर से ही कह दी। तुम तो व्यर्थ ही नाराज हो गये।

रामनाथ ने इस पर जोर से ताली बजाई, और हंसते हुए कहा — "वाह भाभी! इतनी-सी बात से घबरा गयीं। तुम तो मुझे दामाद बनाने जा रही हो। दामादों के तो बहुत बड़े-बड़े नखरे सहने पड़ते हैं। मेरा भी यह नखरा ही था।"

चम्पा इस काण्ड से अप्रतिभ सी हो गयी। केवल इतना ही कह सकी, अच्छा, तिवारीजी अब आप आराम कीजिये। काम-काज से निबटकर सरला तुमसे बातचीत कर लेगी।

[६]

चम्पा और रामनाथ की विवाह-सम्बन्धी बातचीत के पश्चात् बहुत-सी चीजें हुईं। रामनाथ और सरला में प्रस्तुत सम्बन्ध के बारे में बातचीत हुई, सरला ने रामनाथ के अनेक बार और अनेक प्रकार से पूछने पर भी केवल एक ही उत्तर दिया कि जो भाभी की इच्छा है, वही मेरी इच्छा है। जो कुछ भाभी ने कह दिया है, उसके अतिरिक्त मैं कुछ कहना नहीं चाहती। जब रामनाथ ने यह कहा कि 'देखो, खूब सोच समझ लो। मैं बिल्कुल अकेला हूं, क्यों कि कांग्रेस के काम में आ जाने के कारण घर वालों से मेरा सम्बन्ध बिल्कुल टूट गया है। सांसारिक दृष्टि से मैं इस समय सर्वथा निर्धन हूं। यद्यपि अपनी शान के सामने मैं राजाओं की शान को हेच समझता हूं। खूब विचार कर लो, कहीं ऐसे फक्कड़ आदमी से शादी करने से तुम्हें कष्ट न हो।' तो सरला ने उत्तर दिया कि 'मैं यह सब कुछ जानती हूं, मुझे और कुछ नहीं चाहिये। मैं तो भाभी की इच्छानुसार कार्य करना अपना धर्म समझती हूं।'

चम्पा ने सम्बन्ध की सूचना का एक पत्र माधवकृष्ण को भिजवाया, जिसमें उसे बेलूर आने को लिखा था। उत्तर में माधवकृष्ण ने केवल इतना ही लिखा—'इस विषय में मुझे कुछ नहीं कहना है। आप जैसा उचित समझें, करें, मुझे वही मंजूर है।'

इन सब बेढंगी बातों से पहले तो चम्पा बहुत घबरा गयी और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ सी हो गयी। परन्तु अधिक विचार के अनन्तर वह इस परिणाम पर पहुंची कि यह सम्बन्ध हो ही जाना चाहिये। सरला ने बड़ी मुश्किल से विवाह के सम्बन्ध में 'नहीं' कहना छोड़ा है। रामनाथ अच्छा आदमी है और जबर्दस्त भी है। ऐसे दामाद से विरोधियों का सामना करने और जमींदारी को सम्भालनें में भी काफी सहायता मिलेगी। इन सब बातों पर चम्पा और रमा में परस्पर परामर्श हुआ। अन्त में वे इसी परिणाम पर पहुंचे कि रामनाथ से सरला का विवाह शीघ्र से शीघ्र हो जाना चाहिये। इस में देर लगना अच्छा नहीं।

जब यह बात उठी कि रामनाथ अपने पिता और अन्य सम्बन्धियोंसे विवाह के सम्बन्ध में अनुमति ले लें, तब पहले तो रामनाथ इस पर आग्रह करता रहा कि किसी से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु चम्पा और रमा के बहुत बल देने पर उसने घरवालों को विवाह की सूचना निश्चित समाचार के रूप में भेजी। लिखा कि 'मैंने बेलूर की जमींदारिन श्रीमती चम्पादेवी की सुपुत्री सरला देवी से विवाह करने का निश्चय किया है। आप लोग लिखिये कि यहां आने की सुविधा कब होगी। यदि सम्भव हुआ तो उसी के अनुसार विवाह की तारीखें नियत की जायेंगी।' रामनाथ के पिता को पहले तो यह पत्र पाकर बहुत रंज हुआ। शादी तय कर ली और हमसे पूछा भी नहीं। यह बात सभी घर वालों को बुरी लगी। परन्तु करते क्या। रामनाथ सदा से ऐसा ही रहा। अपनी

जेलों में सुधार की ओर पहला कदम

किसी समय भारत के जेलखाने नरक से भी बुरे थे, क्यों कि जेल का उद्देश्य केवल मात्र अपराधी को दण्ड देना था। उसका सुधार करने की कतई इच्छा भी शासकों को न थी। इसका परिणाम यह होता था कि जेल में १०-१२ साल रह कर कैदी में सुधार की तो बात दूर वह और भी घोर अपराधी बन जाता था। जो आदमी जेल के दूषित वातावरण में जितना अधिक समय बिताता था, उतना अधिक वह दुष्ट, अपराधी और क्रूर बनकर निकलता था।

लेकिन अब जेल का उद्देश्य बदला लेने की बजाय अपराधी का सुधार करना है। इसलिए कैदी को पढ़ाया लिखाया जाने लगा है, उसे स्वास्थ्य और सफाई की बातें भी बताई जाने लगी हैं और उसे अच्छा नागरिक बनाने के लिए प्रयत्न किया जाने लगा है। अभी शुरुआत है। यदि इस दिशा में प्रयत्न जारी रहा तो आशा की जा सकती है कि जेल अपराध बढ़ाने में सहायक न होकर सच्चे शिक्षणालय बन जायेंगे। जेलजीवन में सुधार सम्बन्धी कुछ चित्र नीचे दिये जाते हैं:—

कैदियों को डाक्टर शरीर रचना पर व्याख्यान दे रहा है।

साफ रहने वाले कैदियों को नये कपड़े इनाम में दिये जा रहे हैं।

कैदियों को जेल में अक्षराभ्यास कराया जा रहा है।

सफाई और भलमनसाहत से रहने वाले कैदियों को नया जूता इनाम दिया जा रहा है।

मनमानी करता रहा। घर वाले भी उसकी स्वच्छन्दता के आदी हो चुके थे। अन्त में बहुत से विचार-चर्वण के पश्चात् रामनाथ को लिखा गया, कि सम्बन्ध का निर्णय कर लेने से पहिले हम से पूछ लेते तो अच्छा था। अस्तु अब तुमने निश्चय कर ही लिया है, तो तारीख का निश्चय भी अपनी सुविधा से कर लो। और उसकी सूचना भी हमें भेज दो। उस अवसर पर कोई न कोई यहां से पहुंच जायेगा।'

कुल प्रथा के अनुसार सम्बन्ध की सूचना सरजानपुर को भी भेजी गयी। वहां से जो उत्तर मिला, उसका आशय यह था कि रामनाथ तिवारी हमारी जाति का नहीं है, उसकी तरह-तरह की बदनामी भी सुनी गई है। इस कारण हम लोग इस सम्बन्ध से सहमत नहीं हैं। यदि फिर भी यह सम्बन्ध किया गया, तो हम लोग उसमें शामिल नहीं हो सकते।

इस तरह मामला बहुत उलझनदार बन गया। यदि साधारण स्त्री होती तो चम्पा घबरा जाती। परन्तु उसकी कोमल प्रकृति के पर्दे के नीचे जो दृढ़ इच्छा छुपी हुई थी, उसने उसे सहारा दिया, वह अपने निश्चय पर जमी रही। विवाह की बातचीत चलने से तीन महीने पश्चात् वेलूर में विवाह सम्पन्न हो गया।

विवाह में कन्या-पक्ष की ओर से जो कुछ करना आवश्यक था, सामान्य रूप से वह सभी कुछ किया गया। ऊपर की धूमधाम और लेन-देन के सब रिवाज पूरे किये गये। परन्तु यह सभी ने अनुभव किया कि उस समारोह के आवरण में छुपा हुआ एक विशेष सूनापन है। कन्या-पक्ष के अधिकतर निकट सम्बन्धी अनुपस्थित थे। माधवकृष्ण उपस्थित था, परन्तु लगभग दर्शक रूप से। उसके इस रुख को देख कर चम्पा और रमा को भी खेद हुआ। उधर सरजानपुर वालों का तो सक्रिय असहयोग था। न केवल इतना ही, कि वहां से कोई विवाह में सम्मिलित होने के लिये नहीं आया, वहां के एजेन्टों ने चम्पा, रमा और रामनाथ के सम्बंध में तरह-तरह के अपवाद फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन लोगों ने रिश्तेदारी का हक इतनी अच्छी तरह अदा किया कि सरला को भी अछूता नहीं छोड़ा। उसके बारे में भी तरह-तरह की अफवाहें फैलायीं।

रामनाथ के सम्बन्धियों ने अपनी नाराजगी को निष्क्रिय प्रतिरोध तक ही परिमित रक्खा। उनकी ओर से एक वृद्ध महाशय, जो बहुत दूर के रिश्ते में रामनाथ के चचा लगते थे, कुछ थोड़ा सा सामान लेकर विवाह के अवसर पर पहुंच गये थे। उनका आना न आने का सूचक और शायद उससे भी बढ़ कर नाराजगी का सूचक था। इतना जरूर मानना पड़ेगा कि वृद्ध महाशय ने सरजानपुर वालों की तरह यज्ञ में बाधा डालने का प्रयत्न नहीं किया।

माधवकृष्ण विवाह से पूर्व ही आ गया था। वह कार्यों में थोड़ा बहुत सम्मिलित हो कर घर के बुजुर्ग के स्थान की पूर्ति करता रहा, परन्तु रहा कुछ अनमना ही। हम देख चुके हैं कि वह इस सम्बन्ध के पक्ष में नहीं था। जात-पात का तो उसे बहुत ध्यान नहीं था, परन्तु तिवारी की प्रकृति को वह पसन्द नहीं करता था। रामनाथ की प्रकृति जेठ मास के अन्तिम दिनों जैसी थी। उस में आंधी उठने में देर नहीं लगती थी। माधवकृष्ण ऐसा भी अनुभव करता था कि जब रामनाथ किसी काम के करने पर तुल जाता है, तो फिर दूसरे की भावनाओं या भले बुरे की भलाई या बुराई की परवाह नहीं करता। माधवकृष्ण का विचार था कि इस

[शेष पृष्ठ १७ पर]

तोष की हाथी ब्राण्ड

बढ़िया चाय

दार्जिलिंग ऑरेंज पेको

ए० तोष एण्ड सन्स

कलकत्ता।

ठगों से ठगे हुए

कमजोरी, सुस्ती, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष रोगों के रोगी हमारे यहां आकर इलाज करावें और लाभ के बाद हस्त हैसियत दाम दें और जो न आ सके वे अपना हाल बन्द लिफाफे में भेज कर मुफ्त सलाह लें। हम उनको अपने उत्तर के साथ उनके लाभ के लिए अपनी १ पुस्तक "विचित्र गुप्त शास्त्र जिस में बिना दवा खाये ऊपर लिखे रोगों को दूर करने की आसान विधियां लिखी हैं और जो सन् १६ में गवर्नमेण्ट से जब्त होकर अदालत से छूटी है मुफ्त भेज देंगे, परन्तु पत्र के साथ तीन आने के टिकट भेजें।

डा० वी० एल० कश्यप अध्यक्ष रसायनघर १०२ शाहजहांपुर यू० पी०

GOVT. १००) इनाम REGD.

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र

प्राचीन ऋषियों की अद्भुत देन

इसके धारण मात्र से हर कार्य में सिद्धि मिलती है। कठोर से कठोर हृदय वाली स्त्री या पुरुष भी आपके वश में आ जायेगा। इससे भाग्योदय, नौकरी, सन्तान तथा धन की प्राप्ति, मुकदमे और लाटरी में जीत, परीक्षा में पास एवं नवग्रहों की शांति होती है। अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम। मूल्य तांबा २॥) चांदी ३), सोने का स्पेशल ११) रु०।

श्री काशी विश्वनाथ आश्रम

नं० २० पो० कतरी सराय (गया)

१००) इनाम

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र

प्राचीन ऋषियों की अद्भुत देन

इसके धारण मात्र से हर कार्य में सिद्धि मिलती है। कठोर से कठोर हृदय वाली स्त्री या पुरुष भी आपके वश में आ जायेगा। इससे भाग्योदय, नौकरी, सन्तान तथा धन की प्राप्ति, मुकदमे और लाटरी में जीत, परीक्षा में पास एवं नवग्रहों की शांति होती है। अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम। मूल्य तांबा २॥) चांदी ३), सोने का स्पेशल ११) रु०।

पता:— सुधाशक्ति कार्यालय पो० कतरी सराय (गया)

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज ज्ञानचन्द्जी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जाये और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, हौज काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक SexualGuide प्राप्त करें।

"मेहमान आ गये...

ये गप-शप करेंगे और चाय पियेंगे . . . इन्हें गप-शप में तो जरूर मजा आवेगा पर चाय में नहीं। उनकी मेजमान ने ठण्डे और गीले बर्तन में चाय बनाई है। अच्छी चाय के लिये सूखा और गर्म बर्तन चाहिये।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्सन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्सन बोर्ड द्वारा प्रचारित

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति-स्वीकार किया जायगा। — सम्पादक

सोवियत रूस में शिक्षा प्रणाली— सम्पादक सोवियत न्यूज़ ब्यूरो। अनुवादक, श्री वीरेन्द्रकुमार प्रकाशकः बोरा एण्ड कम्पनी, पब्लिशर्स लिमिटेड, ३ राउन्ड बिल्डिंग, कालबा देवी, बम्बई २। मूल्यः १) :

कोई व्यक्ति सोवियत राज्य प्रणाली के मूल-सिद्धान्तों से सहमत हो या न हो, उसे यह तो मानना ही पड़ेगा कि सोवियत राज्य में रूस ने शिक्षा और शिल्प के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति की है। शिक्षा को व्यापी और उपयोगी बनाने में रूस की सोवियत सरकार को अद्भुत सफलता मिली है। शिशु-शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा में नयी स्फूर्ति आ गयी है, जिससे वहां के जनपदों में साक्षरों की संख्या ८५ प्रतिशत तक की पहुंच गयी है और ७१ प्रतिशत से कम तो कहीं भी नहीं। सोवियत रूस के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त क्या हैं और उसका प्रयोग कहां तक सफल हुआ है — इन दो प्रश्नों का संक्षिप्त परन्तु स्पष्ट उत्तर इस पुस्तिका में दिया है। अनुवादक का यह लिखना सर्वथा ठीक है कि 'आज के हर जिम्मेदार और जागृत नागरिक को यह पुस्तिका पढ़नी ही चाहिये। खास कर शिक्षा-संस्थाओं, सांस्कृतिक संस्थाओं और रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिये इसे पढ़ना अनिवार्य हो जाता है।'

— इन्द्र

वरुण की नौका — (द्वितीय भाग) लेखक—श्री प्रियव्रत वेदवाचस्पति। प्रकाशक — गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, जिला सहारनपुर। मूल्य १)

वेद के देवताओं में वरुण देवता का अपना एक स्थान है। विविध वेदों के वरुण-सूक्तों को, जिन समस्त सूक्तों का देवता वरुण है, उनकी व्याख्या करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य पं० प्रियव्रत जी ने यह ग्रन्थ लिखा है। इसका प्रथम भाग कई वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। द्वितीय भाग में ऋग्वेद के तीन और अथर्ववेद के पांच वरुण सूक्तों की विस्तृत व्याख्या है। वरुणसूक्तों में भक्तिधारा का अनन्त स्रोत बहा है, इस लिए इन सूक्तों के मन्त्रों के गम्भीर चिन्तन से आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है। ज्ञान की अपेक्षा भक्ति से आध्यात्मिकता अधिक हृदयंगम होती है। इसी कारण ये सूक्त काव्य की दृष्टि से भी सरस और ऊंचे हो गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक वैदिक साहित्य के विद्वान् हैं। उन्हें इस सम्बन्ध में आत्मविश्वास भी कम नहीं है। अथर्ववेद के ५/१ सूक्त की व्याख्या करते समय अनेक व्याख्याकारों ने सूक्त की अस्पष्टता व दुर्बोधता के कारण अपने को असमर्थ पाया है, परन्तु आचार्य प्रियव्रत जी को यह विश्वास है कि वे ऋषि दयानन्द की प्रदर्शित पद्धति पर चलते हुए इस सूक्त की पर्याप्त सरल और सुबोध व्याख्या करने में समर्थ हो सके हैं। लेखक का दावा है कि वरुण देवता परमात्मा से भिन्न कोई शक्ति नहीं है, वरुण परमात्मा का ही एक नाम है और उसकी नौका उसकी ज्ञानपूर्वक भक्ति है, जिस पर बैठकर मानव इस संसार सागर को तैर सकता है। वैदिक स्वाध्याय प्रेमियों के लिए यह पुस्तक अवश्य संग्रहणीय है।

काली छाया – लेखिका —श्रीमती रामेश्वरी शर्मा। प्रकाशक — चन्द्रकुमार शर्मा, रूरल पब्लिशिंग हाउस, ६५ कटरा प्रयाग। मूल्य १॥=)।

हिन्दी में जिन महिलाओं ने कहानी क्षेत्र में प्रवेश किया है, उनमें श्रीमती रामेश्वरी शर्मा भी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उनकी समय समय पर लिखी १० कहानियों का संग्रह है। आज समाज की विचारधारा, मनोदशा और आदर्शों में बहुत तेजी से अन्तर आ रहा है। और कहानी तो मानव-हृदय का प्रतिबिम्ब है, इसलिए आज की कहानी की विचार-दिशा भी नूतन होती जा रही है। प्रस्तुत पुस्तक की कहानियों पर भी उसकी छाप स्वाभाविक है। प्रेम और विवाह भिन्न-भिन्न वस्तुएं हैं, उसकी सच्चाई से इन्कार न करते हुए भी एक को प्रेम करने और दूसरे से विवाह करने का समर्थन जैसा कि सरोज ने किया है, कहां तक उचित है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। परन्तु प्रायः कहानियां सुन्दर हैं। उनमें भाव-प्रधानता अधिक है, घटना का कौतूहल कम। काली छाया में एक दरिद्र पिता की दयनीय स्थिति और विवश होकर वेश्या को अपनी सुकुमार लड़की बेचने का चित्रण अत्यन्त हृदयग्राही हुआ है। 'नारी' में नीहार के हृदय के संघर्ष का चित्रण अच्छा हुआ है, लालसा और वासना पर अन्त में उसने विजय पा ली है। 'अपमान में' वृद्ध पति के लोभ, सरोज की विवशता और उत्सुकतापूर्वक विनोद की प्रतीक्षा और समय आने पर उसका तिरस्कार तथा प्रभा के विवाह व मातृत्व के प्रति तीव्र विरक्ति और बाद में मातृत्व की दुर्दान्त अभिलाषा आदि मनोरंजन और मनःस्थिति के चित्रण के अच्छे नमूने हैं। अन्य कहानियां भी पठनीय हैं।

— कृष्ण

बापू की बात — लेखक—श्री दामोदरदास खण्डेलवाल। प्रकाशक साहित्य-सदन, चिरगांव (झांसी)। साइज $\frac{२०\times२७}{१६}$ पृष्ठ संख्या १००। मूल्य १ रुपया।

बापू (महात्मा गान्धी) के विषय में जितना साहित्य प्रकाशित हुआ है, वह अधिकतर उनके राजनीतिक अनुयायियों का लिखा हुआ है। सम्भवतः यह प्रथम पुस्तिका है जो उनके एक ऐसे प्रेमी ने लिखी है, जिसकी रुचि राजनीति की अपेक्षा समाज सुधार में अधिक है। लेखक को दो बार अपने घर म० गांधी का आतिथ्य करने का सौभाग्य प्राप्त होने के अतिरिक्त, अन्य भी अनेक बार उनके सम्पर्क में आने का अवसर हुआ था। प्रस्तुत पुस्तिका में उसने ऐसे अवसरों पर स्वयं म० गांधी के जीवन विषय में जो देखा या अनुभव किया, वही सरल भाषा और सरल शैली में लिख दिया है और इसी कारण इस पुस्तिका का प्रत्येक पृष्ठ इतना मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद है कि उसे पढ़ने में कहानी का या प्रत्यक्ष बातचीत सुनाने का सा आनन्द मिलता है। म० गांधी को, उनके जीवन को, उनके विचारों और आदर्शों को समझने में इस पुस्तिका से मूल्यवान सहायता मिल सकती है।

रा० गो०

हमारा भारत—(मासिक पत्र)— संपादक और प्रकाशक—श्री जी० मुकुर्जी गुंजन, १० रतनलाल बिल्डिंग, रामनगर नई दिल्ली। मूल्य १) वार्षिक मूल्य १०)।

दिल्ली से जो पत्र इन दिनों बड़ी शान व बढ़िया गेट अप के साथ निकले हैं, उन में इस पत्र का भी स्थान है। मुख पृष्ठ पर म० गांधी का तिरंगा चित्र है। म० गांधी का बलिदान भारत के इतिहास में अत्यन्त असाधारण घटना है, जिसका दूसरा उदाहरण इस दुनिया के इतिहास में नहीं मिलता। इस लिए प्रत्येक पत्र पत्रिका पर म० गांधी का छा जाना स्वाभाविक है। यह अंक भी म० गांधी के अनेक पुनीत संस्मरणों, सुन्दर चित्रों तथा जीवन परिचय और श्रद्धाञ्जलियों से पूर्ण है। वस्तु के उपस्थित करने में जो नूतनता और मौलिकता है, वह अन्य अधिकांश पत्रों में नहीं पाई जाती। सुन्दर और नवीन दुर्लभ चित्रों के संग्रह में प्रकाशक सफल हुए हैं। दुरंगी छपाई, तथा चित्रों का आकर्षक ढंग पत्रिका को लोकप्रिय बना देंगे, इसमें संदेह नहीं। अपना अपना शौक में टिकटों का संग्रह अच्छा मनोरंजक है। भारत-प्रतियोगिता की सूझ नई है। कहानियां, हासपरिहास, नाटक, कविता, एकांकी आदि पाठ्य सामग्री की दृष्टि से पठनीय हैं। ऐसा सुन्दर पत्र निकालने के लिए श्री गुंजन बधाई के पात्र हैं। लेकिन व्यापारिक दृष्टि से मूल्य की समस्या टेढ़ी है। सरकार द्वारा प्रकाशित 'आजकल' जब इतनी कम कीमत में, जो व्यापार की दृष्टि से हमेशा भारी हानि उठा कर ही रखी जा सकती है — बिकता है, तो कोई निजी पत्र उसके मुकाबले में बाजार में ठहर नहीं सकता। इस ओर विभिन्न पत्र-संचालकों को संगठित रूप से ध्यान देना चाहिए।

— कृष्ण

'हमारा भारत' का गेट अप सुन्दर कागज आर्ट और छपाई अच्छी है।

हमारे राज्य का सही आधार भारतीय संस्कृति — ले० श्री मुरलीधर भजुराम का, प्रकाशक — राष्ट्रीय पुस्तक भण्डार डालमियां दादरी (रियासत जींद), मूल्य चार आना।

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। देश के पतन के कारणों की चर्चा करते हुए निकट भूत के आन्दोलनों की पृष्ठभूमि प्रदर्शित की है और अन्त में राष्ट्रीय एकता का आधार भारतीय संस्कृति को सिद्ध किया गया है।

चक्रचारण

[पृष्ठ १५ का शेष]

सम्बन्ध से परिवार को सुख नहीं मिलेगा। परन्तु चम्पा की इच्छा और रमा के आग्रह के सामने उसने सिर झुका दिया। इस प्रकार ऊपरी धूमधाम, परन्तु आन्तरिक खोखलेपन से ज्योतिषी की बताई हुई शुभ-घड़ी में रामनाथ और सरला का विवाह हो गया।

प्रिय पाठक, अब हम आप से कुछ समय तक छुट्टी चाहते हैं। इस कहानी का अन्तिम परिच्छेद सरला के जीवन का भी अन्तिम परिच्छेद है। उसने विवाह के साथ जीवन के गम्भीर सागर में एक लम्बी छलांग लगाई है, जिस में यह घटनापूर्ण जीवन सन्ध्याकालीन सूर्य की तरह लीन हो जायगा। इस अन्तिम परिच्छेद के लिए आप को कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)

दिल्ली प्रान्त, मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेंट—
रमेश एण्ड कम्पनी चांदनी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेंट-राज स्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्य भारत के सोल एजेंट-वृहद औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।

१००) इनाम

गुप्त वशीकरण मन्त्र के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो, आपके पास चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २) चांदी ३) सोना १५) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

भैरवी चक्र आश्रम नं० ६
पो० कतरी सराय (गया)

१००) इनाम

गुप्त वशीकरण मन्त्र के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, पास चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी धन, की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा २) चांदी ३) सोना १५)। झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

महाशिवी आश्रम (S) पो० अलीगंज (मुंगेर)।

१००) इनाम

सफेद बाल काला

हमारे तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर ६० वर्ष तक काला स्थायी रहेगा। सिर के दर्द व चक्कर आना दूर कर आंखों की ज्योति को बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) एकत्र ३ का ६॥) आधा पका हो तो ३॥) एकत्र ३ का ९) और कुल पका हो तो ५) एकत्र ३ का १२) बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम, जिन्हें विश्वास न हो -)॥ का टिकट भेज कर शर्त लिखा लें।

मासिक धर्म

बन्द मासिक धर्म नारी संजीवनी दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की फर्याद दूर हो जाती है। यह दवा गर्भवती को उपयोग करावें। तुरन्त फायदे के लिये तेज दवाई कीमत रु० ५)।

श्वेतकुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनो! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते यदि इसके ३ दिन के लेप से सफेदी के दाग को पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेज कर शर्त लिखा लें। मूल्य ३)।

वैद्यराज ब्रजकिशोर राम नं० १४० पो० रानीगंज (बर्दवान)

पीकॉक दन्त मंजन

दांतों को मोती सा चमका कर मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। शीशी ॥)

एम्पा ट्रेडिंग कं०

एजेण्टों की जरूरत है—
जमनादास एण्ड कं०, के० डी० जगदीश एण्ड कं० चांदनी चौक, दिल्ली।

मुफ्त नवीन कैलेन्डर, हरप्रकार की सुन्दर, सस्ती और टिकाऊ **FREE**
रबर की सुन्दर वस्तुयें तथा भारत विख्यात इन्डस्ट्रीज़ की अनुभूत गुणकारी-पेटेन्ट औषधियों के वर्णन पत्र और गुप्त रोगों से छुटकारा पाने की साधन नियमावली आज ही पत्र लिखकर बिना मूल्य प्राप्त कीजिये।
पता—आरोग्य कुटीर इन्डस्ट्रीज़ शिवपुरी, C I.

निराश होकर न बैठें!

स्त्री या पुरुष का कोई कैसा ही पुराना, बिगड़ा असाध्य और भयङ्कर रोग हो, किसी इलाज से भी नष्ट न हुआ हो, रोग का पूरा खुलासा हाल लिखकर या हमारे पास आकर हमसे अनुभव-पूर्ण इलाज उचित खर्च में करालें। हमने अपने अनुभव से हजारों निराशों को आशावान किया है।
संतान चाहने वाले प्रश्नपत्र मंगावें
वैद्यराज शीतलप्रसाद जैन, मुजफ्फरनगर (यू० पी०)

फिल्म-स्टार बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। थोड़ा पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है
रंजीत फिल्म-आर्ट कालेज बिरला रोड (V. D.) हरिद्वार यू० पी०।

'सिद्ध चित्रकूट बूटी।

यह बूटी मरमे मास में राजगिरि आये सिद्ध महात्मा ने राजगिरि पर्वत से संग्रह करने की बताई है। पुरानी से पुरानी या नई दमा स्वांस; खांसी शर्तिया किसी पूर्णमा से एक महीने तक सेवन करने से जड़से आरोग्य हो जाता है। एक मास ६० माशा २॥) परहेज कुछ नहीं।

गर्भदाता योग

इस औषध के व्यवहार से निश्चय गर्भधारण हो जाता है। मूल्य ५) पूर्ण विवरण के साथ पत्र लिखें।

मासिक धर्म क औषधि

बन्द मासिक धर्म को बिना कष्ट जारी करता है इस औषधि को व्यवहार करने से कमर, पेड़ू, पेट का दर्द सिर में चक्कर आना आदि को दूर कर मासिक धर्म नियमित रूप से लाता है। इस औषधि का व्यवहार करने से शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। गर्भवती स्त्रियां इसे व्यवहार न करें, क्योंकि गर्भावस्था में इसे व्यवहार करने से गर्भपात हो जाता है। मूल्य २)।

श्री कृष्णचन्द्र (वि० दि०)
पो० सरिया (हजारीबाग)

विविध चित्रावलि

रूमानिया के भूतपूर्व बालक महाराज अपनी प्रियतमा राजकुमारी एनी के साथ अब अमेरिका में बसने की सोच रहे हैं।

ब्रिटेन के इस कारखाने में २००० आस्टिन कारें प्रति सप्ताह तयार होती हैं।

हवाई हमले का रिकार्ड तोड़ने वाले न्हकेल आन सियग ब्रिटेन के लफ्टानेन्ट कमांडर हैं।

ब्रिटेन का सब से बड़ा सेन वाही वायुयान।

बहरों की मौज हो गई। ये छोटे छोटे यन्त्र श्रवण शक्ति की सहायता के लिए बनाये गये हैं।

बन्दरगाह की निगरानी रखने वाला सर्वप्रथम रडार

ये इन्सान, हम हैवान

[पृष्ठ १० का शेष]

उसका दिल उमड़ने लगा था। और वह इस निकृष्ट, गन्दी चीख पुकार से अपने सर भारी बोझ-सा लदा अनुभव कर रहा था, जिसका और अधिक वहन करना उसके लिए असम्भव हो गया था। कल्लू के सबसे छोटे बच्चे ने तुतलाते हुए कहा —

'हमाले बाबू जी.. ...ओ बाबू जी।'

उसने अपना दुबला-पतला हाथ सर के पास ले जाकर सलाम किया —

'एक पैसा सरकार......!'

दूसरे ही क्षण वह अपना हाथ अपने बढ़े हुए पेट के पास ले जाकर बोला —

'इस पापी पेट के लिये...अल्लाह वालो !'

निर्मल ने सोचा, कितनी दयनीय स्थिति है बिचारों की ! भावना उसे अपने में नाग-पाश-सी जकड़ती जा रही थी। मैंने तभी उससे पूछा — 'कुछ फुटकर पैसे भी लेकर चले हो ?'

निर्मल के भावना-बन्धन शिथिल पड़े, तो सचेत हुआ। बोला —

'मेरे पास पैसे नहीं छोटी रेजगी है।'

मैंने कहा — 'यार वही निकाल। चलते समय फुटकर पैसे लेने की याद ही नहीं रही। दर्शन को चले और प्रसाद ही नहीं ले चले।' निर्मल ने कुछ इकन्नियां निकाल कर मेरे हाथ पर रखदीं। और एक इकन्नी कल्लू के लड़के को दे दी। कल्लू के लड़के को एक इकन्नी मिलते ही भिखमंगों का झुण्ड उनकी तरफ बढ़ आया। रफ़ीक ने करीमन के गले में अपनी दाहिनी बांह डाले लंगड़ाते हुए बढ़कर कहा —

'सरकार ! परवर दिगार झूठ न बुलावे, हम दोनों तीन दिन से फाका कर रहे हैं ! अल्लाह कसम ही नहीं करता।'

और उसने चिथड़े-सी कमीज के सामने वाले भाग को ऊपर उठाकर पिचका पेट और रस्सी सी सलवटें लाईं नसें मुझे दिखाईं। करीमन ने भरे गले से कहा —

'सरकार .. माई बाप ! खुदा तुम्हारी रोजी रोजगार में बरकत दे। अल्लाह तुम्हें नन्ही-सी दुलहन और फूल-सा बच्चा गोद में खेलने को दे।'

वे आगे बढ़ ही रहे थे कि कसेरू ने उसे धक्का देकर कहा —

'अरी दूर भी हटेगी या सरकार के सर पर ही चढ़ कर बोलेगी।'

और फिर निर्मल की तरफ आगे बढ़ते हुए कहा — 'यह पेट पापी नहीं मानता।' और बढ़े हुए पेट को ढोल-सा पीट कर जाने बोला — 'परवर दिगार भी गरीबों का साथ नहीं देता।'

फिर आसमान की ओर संकेत करता हुआ कहने लगा —

'...... वह जानता है हुजूर ! अभी पांच दिन हुए नन्हीं-सी जान भूख से तड़प-तड़प कर मर गई।'

अब उसकी आंखों में आंसू थे —

'इन्हीं हाथों से उसे कब्र में सुला आया हूं। और........'

कुर्ते की फटी बांह से आंसू पोंछता हुआ वह कहता गया — और, उसकी मां भी अब घड़ी-पल की हो रही है माई-बाप ! पूरे एक हफ्ते से उसके मुंह में अन्न का दाना नहीं गया है।' कहते-कहते उसने अपनी सूनी आंखें निर्मल की आकृति पर फैला दीं। करीम से यह बरदाश्त नहीं हुआ। दूर से ही चिल्लाया —

'अभी अल्ला वालो, झूठ बोलता है साला। पूरा चार सौ बीस है। कहता है एक हफ्ते से बीबी के हलक के नीचे अन्न का दाना नहीं उतरा है और कल रात साले दोनों चौखट में ताड़ी का चुसकी लेते रहे हैं।' और बिना रुके अपनी बात की ताईद में उसने रफीक की ओर देखा —

'क्यों भय्या, कल रात दोनों ही साले भिन-भिनाते रहे हैं न !'

कसेरू ने पलट कर करीम की तरफ देखा, जैसे एक चित्ता निगल जायेगा। करीम फिर भी बाज नहीं आया —'अबे लाल पीली आंखों से क्या देखता है। क्या हम तेरे दबैल हैं ! अरे मांगता है तो सीधी तरियों मांग। यह क्या कबर और मुर्दा सुलाने लगा और फिर कान से अधजली बीड़ी को जला कर कश लेकर बोला —

भय्या मेरे, सीधी तरियों से मांग !

घूम कर उसने हुसैन की तरफ देखा —

'क्यों बादशाह, ठीक कई न !

सादिक, जिसका सारा शरीर कोढ़ के चितकबरे दागों से भरा हुआ था, कान के पास के ,नासूर से पीब मिश्रित पानी अधिक पके आम के रस-सा टपक रहा था, आंखें कीचड़ में बुरी तरह सनी हुई थीं और एक पांव उसका घुटने के नीचे से गायब था, लंगड़ाता हुआ पास के टीले से लपका —'खुदा का कहर बरसे इन लुच्चों पर ! मांगते हैं या दिन दहाड़े डाका डाल रहे हैं। वो तो यूं कहो बाबू हमारे दरिया दिल हैं।'

और उसने झुक कर अपने हाथ से निर्मल के सामने की मिट्टी उठाकर अपने माथे से लगाई। फिर अपने साथियों की ओर घूमकर तैश के साथ बोला —

'साले हो, ज्यादा धमा-चौकड़ी मचाई तो हथकड़ी भरवा देंगे। देखते नहीं कंट के छोकरे हैं — बड़े साहबों के !' और फिर उसने मैल से पीले बदबूदार दांत केदार की तरफ निपोर दिये। इस के बाद उसने सांप की तरह से करीमन की तरफ पलटा खाया —

'चढ़ती है यहां से या लगाऊं एक लप्पड़।'

और उसने बायां हाथ हवा में ताना, कि रफीक चिल्लाया —

'जबान सम्भाल कर बात कर। बड़ा आया हाथ तानने वाला। हम तो कहते हैं कौन जाने टुकड़े चोर से और आप हजरत हैं कि सिर पर ही चढ़े आ रहे हैं।'

रफीक का सहारा पकड़ करीमन ने हाथ नचा कर कहा —

'अब मरद का बच्चा है तो मुझे मार कर ही देख। मैं भी समझूंगी किसी सूरमा से पाला पड़ा था।'

फिर विगत की स्मृति दिलाती हुई बोली —'कबर में पैर लटकाये हैं फिर भी दिल की जली-भुनी ठण्डी नहीं हुई। यह नापाक मुझ से सगाई करेगा।' और मुंह बिदोर दिया। फिर फटे दुपट्टे को ठीक से ओढ़ती हुई केदार से बोली —'सादिक मुझे रखैल बना कर रखना चाहता था। बताओ मियां के हाथ-पैरों में दम नहीं और मियां दिल मजनूं का लिए फिरते हैं। सादिक ने दांत पीस कर करीमन की तरफ देखा। लेकिन करीमन फिर भी चूकी नहीं —

'इसको जूतियां रसीद करवाऊंगी कि टांट पर एक भी बाल नहीं रहेगा। दिल जला आशिक, साये सा पीछे-पीछे फिरता है — निगोड़ा। ले तू ही बाबू जी से वसूल कर, हम चले।'

और तन कर गर्व से उसने एक बार रफीक की तरफ देखा और आगे बढ़ गई। सादिक ने इस बार निर्मल की तरफ देखते हुए —

देखा बाबूजी, अपने लाली की अकड़ ! सूखी लकड़ी सी ऐंठी जाती है। मैं भला इस कुतिया को मुंह लगाऊंगा, अभी जवानी पर इतराती फिरती है तीन दिन बाद कोई कौड़ी को भी नहीं पूछेगा।'

केदार ने उकता कर निर्मल की ओर देखा। निर्मल ने विवशता से पराजित आंखों से मेरी ओर ! और उसने धीरे से कहा — समय हो गया, अब चलना चाहिए।' चलते समय एक एक इकन्नी दोनों ने हरेक को दी। रफीक और करीमन को भी वे इकन्नियां देना नहीं भूले जो कुछ दूर एक पेड़ के तले बैठे थे और चने नौन की कंकड़ी के साथ चबा रहे थे। निर्मल ने हतोत्साहित स्वर में मुझ से कहा —केदार 'अब क्या इरादा है ?'

मैंने हंसते हुए प्रत्युत्तर दिया —

'पहले तुम अपनी कहो ?'

निर्मल ने तब मन की बात छिपाई नहीं, साफ कह दिया —

'इन लोगों के बारा मेरे बस के बाहर हैं।'

मैंने आत्म निर्णय के स्वर में कहा —

'चित्र की आउट लाइन तुमने खींची यथा विधि रंग मैं भर दूंगा।'

दूसरे दिन केदार फिर भिखमंगों की बस्ती में गया। उसने अब से प्रण किया है जब तक भिखमगों को खोज-बीन कर वह एक पुस्तक नहीं लिख लेगा, उनमें बैठेगा, गप-शप लड़ायेगा, उनमें और यथार्थ को जानने की चेष्टा करेगा।

केदार के मित्र उसकी किताब की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं — विशेष कर विपिन !

हिन्दी संसार

मौ० आजाद और पारिभाषिक शब्द

[श्री बी० के० माथुर एम० ए०]

शिक्षा मन्त्री मौलाना अबुल-कलाम आजाद ने उस दिन विज्ञान कला-भवन दौराला में भाषण देते हुए कहा — "अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत वैज्ञानिक परिभाषाओं के पर्याय वाची शब्द अपनी भाषा में ढूंढने का प्रयत्न करना व्यर्थ है और अपनी शक्ति का अपव्यय है। मिश्र में वैज्ञानिक शब्दों का अरबी में अनुवाद करने के अनेक परिश्रम किये गये परन्तु अन्त में उन्हें यूरोप में प्रचलित परिभाषाएँ ही स्वीकार करनी पड़ीं। ईरान, चीन और जापान में भी अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावलि का ही चलन है। इस लिए हमें भी वैज्ञानिक परिभाषाओं का अपनी भाषा में अनुवाद करने का मोह छोड़ देना चाहिये।"

आजकल अंग्रेजी में जो वैज्ञानिक शब्दावलि प्रचलित है उसको यदि बिना अनुवाद किये ही हम अपनी भाषा में ज्यों का त्यों प्रयुक्त करने लग जायें तो हमारी भाषा का क्या रूप बन जाएगा— यह आसानी से समझा जा सकता है। विज्ञान तो है ही परिभाषामय। विज्ञान की किसी भी पाठ्य पुस्तक में से कहीं से भी कोई छोटा सा सन्दर्भ उठाकर देख लो उसका तीन चौथाई भाग पारिभाषिक शब्दों से भरा होगा।

किसी भारतीय भाषा में अनुवाद करते समय यदि उन शब्दों को ज्यों का त्यों रख दिया जाए तो भाषा एक विचित्र खिचड़ी बन जायगी। उसमें कुछ सामान्य क्रियावाचक और विभक्तिवाचक शब्दों को छोड़ कर सब अंग्रेजी के ही शब्द होंगे। इस प्रकार तो अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का उद्देश्य कभी पूरा न होगा।

मौलाना साहब को एक और भ्रम है। उनका विचार है कि वर्तमान वैज्ञानिक शब्दावली ऐसी है जो विभिन्न राष्ट्रों में प्रचलित है। परन्तु तथ्य यह नहीं है। 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द के द्वारा जिन देशों का निर्देश होता है वे केवल पश्चिमी यूरोप या अमेरिका के ही ऐसे देश हैं जिनका वैज्ञानिक शब्दकोष ग्रीक और लेटिन पर आधारित है। ग्रीक और लेटिन भाषायें उनकी संस्कृति का समान स्रोत हैं। और तो और रूस भी इस मेल से बाहर है, और आधुनिक विज्ञान में रूस की देन किसी से कम नहीं है। फ्रेंच, जर्मन, इंग्लिश और इटलियन भाषायें परस्पर अत्यन्त निकट हैं परन्तु उनमें भी ऐसे सहस्रों पारिभाषिक शब्द हैं जो एक दूसरे से भिन्न हैं।

समान वैज्ञानिक परिभाषाओं के प्रसंग में मौलाना आजाद ने चीन और जापान का भी नाम लिया है। परन्तु यह भी तथ्य से बहुत दूर है। इंग्लिश से चीनी या इंग्लिश से जापानी भाषा का कोई भी शब्दकोष उठा कर देख लीजिए तो आप को निश्चय हो जायगा कि चीन और जापान की अपनी अलग पारिभाषिक शब्दावली है जिसका यूरोप की परिभाषाओं से कोई सम्बंध नहीं है। पश्चिम की यह तथा कथित अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली समग्र रूपेण लेटिन और ग्रीक सभ्यता का परिपाकमात्र है।

हिन्दुस्तान की भी अपनी अत्यन्त प्राचीन सभ्यता और संस्कृति है और प्रत्येक राष्ट्रीय क्रिया-कलाप का आधार वही संस्कृति होनी चाहिये। संस्कृत भाषा ही उस भारतीय सभ्यता का वाहन है, न कि ग्रीक या लेटिन। उसी संस्कृत भाषा के स्रोत से सब पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। मौ० आजाद ने जो ऊपर मिश्र का उदाहरण दिया है और कहा है कि अनेक परीक्षणों की व्यर्थता के पश्चात् मिश्र को भी पाश्चात्य परिभाषाएं अपनानी पड़ीं, तो उससे यही सिद्ध होता है कि उन परीक्षणों में कहीं न कहीं त्रुटी थी, या अरबी भाषा ही योग्य नहीं है कि वर्तमान वैज्ञानिक विचार धारा को व्यक्त कर सके।

गत १६ वर्ष से डा० रघुवीर इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं और उनकी सफलता को देख कर इस विषय में शंका का लेश भी नहीं रहता कि संस्कृत भाषा के आधार पर हम विज्ञान सम्बन्धी विस्तृत पारिभाषिक शब्दावलि तय्यार कर सकते हैं।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय में हिन्दी

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी कोर्ट ने निर्णय किया है कि अब से प्रत्येक श्रेणी में हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाएगी। यूनिवर्सिटी का नाम भी परिवर्तित करने का सुझाव है।

हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की वही रफ्तार

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने अपनी सेवाग्राम की १२.३.४८ की बैठक में निम्न प्रस्ताव पास किया है:—

'विधान-परिषद् के अध्यक्ष को निम्न आशय का पत्र भेजा जाये —

अखबार में यह पढ़ कर आश्चर्य हुआ कि आजाद हिन्द के लिये अम्बेदकर कमेटी ने जो विधान तय्यार किया है, उस में राजभाषा के तौर पर हिन्दी और अंग्रेजी को जगह दी गई है। सन् १९२६ से आज तक कांग्रेस की यही नीति रही है कि राष्ट्रभाषा और राजभाषा की गद्दी से अंग्रेजी को हटाया जाए और उसकी जगह हिन्दुस्तानी को दी जाय। सभा की राय है कि विधान परिषद् हिन्दुस्तानी को ही राजभाषा की जगह दे जिसे उत्तर हिन्दुस्तान के शहरों और गांवों के हिन्दू-मुसलमान वगैरा सब लोग बोलते हैं, समझते हैं और आपस के कारोबार में बरतते हैं और जिसे नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में लिखा-पढ़ा जाता है।

बंगाल हिन्दी मण्डल

हिन्दी में अच्छे महत्वपूर्ण विषयों पर उपयोगी एवं सुरुचिबद्ध मौलिक साहित्य निर्माण कराने के विचार से बंगाल-हिन्दी-मण्डल ने इस वर्ष नीचे-लिखे विषयों पर अपने-अपने विषय के सुलेखकों से, आदरपूर्वक पारितोषिक भेंट करके, ऊंची कोटि की पुस्तकें लिखाने का निश्चय किया है।—

विषय	पारितोषिक
भारतवर्ष का सांस्कृतिक इतिहास (५०० पृष्ठ)	१६००)
[विषयसूची लिखने पर भेजी जायेगी]	
उपन्यास-सामाजिक (३०० पृष्ठ)	५००)
उपन्यास राजनैतिक (३०० पृष्ठ)	५००)
उपन्यास-ऐतिहासिक (३०० पृष्ठ)	५००)

पुस्तकों के भेजने की अवधि ३१ दिसम्बर १९४८ है। ३१ दिसम्बर के बाद आने वाली पुस्तक पर विचार नहीं किया जाएगा'।

संयोजक
बंगाल हिंदी मण्डल, हरिजन-निवास, किंग्सवे, दिल्ली।

राष्ट्रीय-कवि-अभिनन्दन

बंगीय हिन्दी परिषद् ने राष्ट्रवाणी हिन्दी के उन महान् कवियों का अभिनन्दन करने का विचार किया है (१) जिनकी रचनाओं से राष्ट्रीय जागरण को निरन्तर प्रोत्साहन मिला हो, (२) जिनकी रचनाएं राष्ट्रीय मंचों से आजादी की आवाज उठाने में समर्थ हों और (३) जिन्होंने अपनी काव्य-कला के साथ-साथ स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लिया हो। इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिये परिषद् ने समस्त साहित्यिकों, पत्रकारों और हिन्दी भाषाभाषी जनता से सहयोग की प्रार्थना की है।

संयोजक—
श्री बंगीय हिन्दी परिषद (अलबर्ट हाल)
१५, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता १२

दिल्ली यूनिवर्सिटी में हिन्दी

१ मई को दिल्ली यूनिवर्सिटी की सीनेट की जो बैठक हो रही है, उसमें श्री एस० के० गुप्ता ने हिन्दी के सम्बन्ध में दो प्रस्ताव उपस्थित करने की सूचना दी है। पहले प्रस्ताव में पेश किया गया है कि जुलाई में जो नये छात्र प्रविष्ट हों उनके लिये अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बना दिया जाय। दूसरा प्रस्ताव यह है कि नये सत्र से अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बना दिया जाय। एक तीसरे प्रस्ताव में श्री एस० के० गुप्ता ने यह प्रस्ताव रखा है कि यूनिवर्सिटी के कोर्ट की सब कार्रवाई हिन्दी में हुआ करे। केवल वही सरल अंग्रेजी में बोल सकें जो हिन्दी में नहीं बोल सकते।

एक पत्र

श्री सम्पादक जी,

विधान परिषद ने 'मिस्टर,' 'मिसिज' और 'मिस' के स्थान पर श्री, श्रीमती और कुमारी का प्रयोग आरम्भ कर दिया है और पूर्वी पंजाब की सरकार ने भी अपने सब दफ्तरों के लिए, ऐसी ही विज्ञप्ति निकाली है।

भारत सरकार तथा अन्य प्रान्तीय सरकारों को ऐसा करने में देर क्यों करनी चाहिये?

अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करते समय आरम्भ में 'सर' ही लिखा जाता है। परन्तु अब अंग्रेज चले गए हैं और अंग्रेजी भी साथ २ जाने वाली है। यदि 'सर' के स्थान पर 'श्रीमान्' ही प्रयोग किया जाय तो अधिक अच्छा रहेगा और ऐसा करने पर किसी भारतीय का 'अपमान' भी न होगा। इसी प्रकार 'टू' के के स्थान पर 'सेवा में' अधिक उपयुक्त रहेगा।

— रामशरन सलूजा

श्रद्धेय टण्डन जी को अभिनन्दन ग्रन्थ

लखनऊ के 'नवजीवन' पत्र ने अपने अग्रलेख में यह प्रस्ताव पेश किया है कि श्रद्धेय राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की हिन्दी सेवाओं के उपलक्ष्य में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर उन्हें एक शानदार अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जाय।

देखा देखी

एक आदमी के पास एक गदहा और एक कुत्ता था। गदहा घुड़साल में बंधा रहता था और खूब दाना-घास खाता था। पिल्ला (कुत्ता) कभी अपने मालिक के चारों ओर घूमता-फिरता और कभी कभी उनकी गोदी में जा बैठता था। गदहे को काम करना पड़ता था। दिन में तो वह बोझ ढोता और रात में भी कुछ काम करना पड़ता। कुत्ते को कोई काम न करना पड़ता। कुत्ते का सौभाग्य देख-देख कर गदहा कुत्ते से ईर्ष्या करने लगा। उसने सोचा कि अगर मैं भी कुत्ते की नकल करने लगूं तो मालिक मुझे भी प्यार करने लगे। यह सोच कर वह एक दिन रस्सी तोड़ कर मालिक की बैठक में जा घुसा, जहां पर मालिक मेज पर बैठे खाना खा रहे थे। वहां घुस कर वह विचित्र रूप से जोर जोर से नाचने लगा और खूब उछलकूद करने लगा। उसके पैरों से वह मेज उलट गई, जिस पर मालिक बैठे खाना खा रहे थे। उस पर रखे हुए सब शीशे के बर्तन चूर चूर हो गये। गधा सिर ऊंचा करके जोर २ से रेंकने लगा फिर मालिक की गोद में जाने की कोशिश करने लगा। उसके लातों की ठोकर खा कर मालिक बहुत घायल हो गये। इतने में बहुत से नौकर लाठी लेकर कमरे में आ गये और लाठी से उसे खूब मारा। पिटते २ गधा कहता गया "हाय, मैंने अपनी दशा में सन्तुष्ट न रहकर दूसरे की नकल की, नकल करने का फल मुझे यह मिल गया।"

— जगदीश चन्द्र टंडन

डाकिया

(खड़गावत 'मृदुल')

खाकी वर्दी सिर पर पगड़ी
देखो वह नंगे पाव चला।
आंधी आई बिजली चमकी
पर राक सका है कौन भला ?
कर में चिट्ठियों का ढेर लिये
थैला कन्धे पर लटकाये।
वह ठिठक ठिठककर चलता है
मुड़ता जाता दायें बायें॥
वह चुन चुन कर चिट्ठियां देता
फिर अपनी राह पकड़ लेता।
'ड्यूटी' का सिर पर भार लिये
वह निज जीवन नैया खेता॥
जब कागज के लघु टुकड़ों पर
ठप, ठप, ठर, ठर, करता जाता।
वह भूल बैठता अपने को
जब चिट्ठियों में वह खो जाता॥
उन चिट्ठियों की ठप ठप में ही
वह जीवन गीत सुनाता है।
अपने हृदय के दुःखों को
ठप ठप कर मार भगाता है॥

प्रश्न

वैसे तो हम स्नान के पश्चात् प्रति दिन ही सिर पर तेल लगाते हैं और स्नान के समय मुंह, हाथ, पैर यानी समूचे शरीर पर तेल लगाते हैं। किन्तु यहां यह प्रश्न हो जाता है कि जब एक ही तेल सिर और मुंह पर लगता है तब केवल सिर के बाल ही क्यों बढ़ते हैं। पलकों के बाल क्यों के त्यों उतने ही क्यों रहते हैं।

हमारे शरीर के विभिन्न अंगों व अंशों में बहुत से कोष होते हैं। किन्तु विभिन्न अंशों के कोष विभिन्न प्रकार से कार्य करते हैं। हम जो तेल सिर में लगाते हैं वही तेल मुंह पर भी मलते हैं, किन्तु सिर के बाल तो बढ़ते हैं पर पलकों के बालों पर तेल का वह प्रभाव नहीं पड़ता। यह भी कोष की विभिन्नता का कारण है। सिर के बाल जिस अंश में उत्पन्न होते हैं वहां के कोष जो काम करते हैं, ठीक वही काम पलकों के कोष नहीं करते। इसलिए सिर के बाल जिस परिमाण में बढ़ते हैं, पलकों के बाल उस परिमाण में नहीं बढ़ते। साथ ही मैं यह बता देना उचित समझता हूं कि पके हुए बाल सफेद क्यों हो जाते हैं। इसका कारण और कुछ नहीं केवल रंगोत्पादक पदार्थ का अभाव है।

मेरी गाय

[जगदीशलाल, 'प्रेम' नैनीताल]

मैंने एक गय्या पाली,
सीधी साधी भोली भाली।
मीठा दूध पिलाती हम को,
मोटा खूब बनाती हम को॥
दूध मथो मक्खन बन जाये,
आग में रखो घी कहलाये।
देर तलक जब दूध पकाओ,
फिर तो उसको खोया पाओ॥
खोये से बन गई मिठाई,
पेड़ा खाई बरफी खाई।
गय्या मेरी भोली भाली,
कुछ सफेद 'औ' कुछ है काली,
मैंने एक गय्या पाली॥

ईसप् की नीति-कहानियां

सूर्य और हवा

[श्री देवर्षि]

सूरज और हवा दोनों में उठा कभी भारी झगड़ा,
कहती हवा, "बड़ी मैं तुझसे," सूरज कहता, "मैं तगड़ा।"
तभी जा रहा एक पथिक था, डाले निज तन पर कंबल,
सूरज और हवा यों बोले, "अजमा लें इस पर ही बल।
उतरा दे इसका जो कम्बल, हम दोनों में वह बलवान्,
झगड़ा तय करने का यह ही एक रास्ता है आसान।"
पहले हवा बढ़ी आगे को दिखलाने को अपना बल,
बहने लगी बड़े जोरों से सर-सर-सर जंगल-जंगल।
किन्तु पथिक तो गया आढ़ता, अपना कम्बल और संभाल,
क्योंकि हवा के भीषण झोंके जाड़े से करते बेहाल।
आखिर हवा थकी 'औ' हारी, बैठ गई होकर चुपचाप,
सूरज तब चमका जोरों से दिखलाने को अपना ताप।
पहले दूर भगाया कुहरा, दूर किया जाड़े का जोर,
ठण्डे, बर्फीले टुकड़ों को गर्मी ने डाला झकझोर।
किया पथिक पर अपनी चमचम किरणों का फिर सीधा वार,
जिससे हो मजबूर पथिक ने अपना कम्बल दिया उतार।

× × × ×

जोर-जबर्दस्ती से कोई, कभी न कर सकता अधिकार,
जीत हुआ करती मनचाहा देकर के, दिखला के प्यार।

ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तर

प्रश्न —

१. एक मनुष्य के सामने एक शीशा रक्खा हुआ है, जिसमें उसे अपना प्रतिबिम्ब १०० गज दूर दीखता है यदि वह मनुष्य १० गज प्रति मिनिट की गति से चले, तो कितनी देर में शीशे तक पहुंच जायेगा ?

२. एक मनुष्य ५ फुट लम्बा है। उसके आगे किस लम्बाई का शीशा रक्खा जाय कि वह अपने पूरे शरीर को उसमें देख सके।

३. भारतवर्ष में अब तक सबसे महान् नीतिज्ञ कौन हो चुका है ?

उत्तर —

१. (५ मिनिट में) क्यों कि जितना मनुष्य चलता है उतनी ही परछाईं उसकी ओर आती जाती है।

२. (२½ फुट का शीशा चाहिये) क्योंकि शीशे में अपने से दुगुना दीखता है।

३. महात्मा गांधी।

पहेली सं० ३४ की संकेतमाला

बायें से दायें

१. दिल्ली की सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्रिका।
४. स्त्रियों के शृंगार में इसका भी स्थान है।
६. — होना अपने भाग्य की बात है।
७. एक सब्जी, इसका पूर्वी भारत में विशेष प्रचलन है।
१०. एक धार्मिक ग्रन्थ।
११. कुछ लोग इसे ही श्रेष्ठ समझते हैं।
१२. देखिये, चार अक्षरों वाली यह वस्तु आपको इष्ट तो नहीं है।
१४. क्रियाविशेषण और समयसूचक शब्द।
१५. प्रत्येक मुकद्दमेबाज इस के चक्कर में फंसता है।
१६. इसकी कामना करना बुरा नहीं है।
१६. सप्ताह का एक दिन।
२०. आकाश में विचरणशील।
२१. इससे वास्ता पड़ ही जाता है।
२२. — से मनुष्य को यथाशक्ति सहायता करनी चाहिये।

ऊपर से नीचे

१. सुन्दर।
२. इस स्वभाव के मनुष्य की सफलता में सदा संदेह रहता है।
३. वह अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है।
५. जनसंख्या में वृद्धि के साथ इसकी आवश्यकता बढ़ती जाती है।
७. आंधी और तूफान जैसे संकट में श्री — का भरोसा नहीं छोड़ना चाहिये। (चार अक्षर का शब्द)
८. — को अपने कल्याण के लिए बहुत सी वस्तुओं से बचना चाहिए।
६. स्नेह-बोधक संबोधन है।
१३. सभी युगों में सर्वश्रेष्ठ रहा है।
१७. मनुष्यों का स्वामी।
१८. एक ऋतु।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४

ये वर्ग आपके हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३४] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००)   न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के खानों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये हुए। इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम..................

पता..................

ठिकाना.................. उत्तर नं०......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम..................

पता..................

ठिकाना.................. उत्तर नं०......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम..................

पता..................

ठिकाना.................. उत्तर नं०......

इन तीनों वर्गों को पृथक पृथक करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूरा पृष्ठ भेजे या एक ही, दो ही या तीनों ही भेजे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजी तो शेष पर आड़ी लकीर खींच दें।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण इस प्रतियोगिता में सम्मलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और न ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि यथाशी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर ३१ मई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २६ मई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जा गा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेज जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३४, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २१ मई १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २४ देखिये

आपने हल की नकल पृष्ठ २४ पर वर्गों में रख सकते हैं।

वह दिन दूर नहीं जब बंगाल की खाड़ी की लहरें निजाम के पैर धोयेंगी।

— कासिम रिजवी।

मियां साहब, अजमेर शेफ साबुन से ऐसे ही निखार निखार कर धुलवाना जैसे अरब सागर में शाहनवाज भुट्टो ने जूनागढ़ के नवाब के पैर धुलवाये थे।

× × ×

नये सिक्कों के दूसरे दिन ही पाकिस्तान जाली सिक्कों से भर गया।

— एक समाचार

अपने चालबाजों की इस चुस्त-चालाकी को देखकर जिन्ना की तबियत तर हो गई होगी और किसी शरणार्थी मुसलमान की जबान के साथ उसने यही गाया होगा —

ब्रिटेन से अच्छा देश मेरा,
डालर से अच्छा सिक्का जाली।
बेकारी की हट गई बदली,
रहे कोई न अब खाली।
इस पाकिस्तानी नाले में,
मिल गई सब गन्दी नाली।
यह ठनठनपालों की बगिया है,
और जिन्ना है इसका माली।

× × ×

संसार युद्ध की बातों को छोड़कर शांति की बातें करे।

— त्रिग्वेलाई का भाषण।

क्यों जनाब आपकी शांति मण्डली के मेंढकों के संकीर्तन का शांति की बरसात पर कैसा असर पड़ा?

× × ×

निजाम समय देख कर चले।

— मौ० आजाद

मौलाना जब अन्धे की लाठियां ही लगड़े के हाथ में हो तो?

× × ×

जयपुर में कमी की वजह से पोस्ट कार्ड और लिफाफे चोर-बाजार में बिक रहे हैं।

—एक समाचार

अगर जयपुर सरकार छपवाने में असमर्थ है तो उसे चाहिए कि मिश्रा से कुछ चालबाज उधार मगवाले, जो दूसरे ही दिन घर घर न कार्ड और लिफाफे मिलवा दें।

× × ×

लन्दन के एक लेखक को बिना टिकिट पकड़ कर जुर्माना कर दिया गया।

— एक समाचार

जिस तरह हिन्दुस्तान की रेलवे 'केवल अल्प सख्यकों के लिए' प्रत्येक गाड़ी में कुछ डिब्बे जुड़वाता है, इसी तरह क्या एटली सरकार अपने गरीब लेखकों के लिए इस प्रकार का विशेष प्रबन्ध नहीं कर सकती?

× × ×

इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान लौट चलो।

— हिन्द आने वाले मेवों से डिप्टी कमिश्नर लाहौर की प्रार्थना

इस्लाम के नाम पर लाहौर की बजाय अगर इन बलिदान के बकरों को कासिम के नये कबेले हैदराबाद की तरफ हाक देते, तो समस्या अच्छी तरह सुलझ जाती।

(पृष्ठ ४ का शेष)

मुसोलिनी द्वारा इटली की सत्ता ग्रहण करने के बाद से हुए प्रथम आम चुनावों में क्रिश्चियन डेमोक्रेट पार्टी सीनेट और चेम्बर दोनों के चुनावों में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में प्रकट हुई थी। इस चुनाव परिणाम से अमेरिका ब्रिटेन आदि प्रजातन्त्र देशों में सर्वत्र प्रसन्नता प्रकट की जा रही है और इसे अमेरिकन प्रभाव की विजय समझा जा रहा है।

फिलस्तीन संघर्ष

हैफा फिलस्तीन का प्रमुख बन्दरगाह है। मित्रराष्ट्रीय संघ की विभाजन योजना में हैफा यहूदियों को देने की सिफारिश की गई थी। यहूदियों ने २४ घण्टे तक निरन्तर बम और गोलियां बरसाने के बाद तमाम नाकों व अरबों को उखाड़ दिया है और हैफा के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लिया है।

१५ मई को ब्रिटिश प्रभुत्व हट जाने के बाद अरबों की नियमित सेनाएं बड़े पैमाने पर फिलस्तीन पर आक्रमण की योजना बना रही हैं। ईराक के मन्त्री महोदय ने आवश्यकता पड़ने पर फिलस्तीन के अरबों को सैनिक सहायता का आश्वासन दिया है।

चांगकाईशेक चीन के प्रथम राष्ट्रपति

जनरलिस्मिमो चांगकाईशेक २६६ के विरुद्ध २४३० वोटों से चीन के प्रथम वैधानिक राष्ट्रपति चुने गये हैं।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

सरदार पटेल और भारत के गवर्नर जनरल मौंटबे

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २१ वैशाख सम्वत् २००५

सिंहावलोकन

'आज से तीन मास पूर्व की अपेक्षा युद्ध की सम्भावना आज अधिक है' इन शब्दों में अमेरिका के एक सैनिक अधिकारी ओमर ब्रैडले ने आज की स्थिति पर प्रकाश डाला है। वे जब यह शब्द कह रहे थे, तब निस्सन्देह उनके सामने यूरोप में बढ़ती हुई गुटबन्दी तथा रूस की अदम्य महत्वाकांक्षा थी। यही कारण है कि वे अपने वक्तव्य में आगे कहते हैं कि—'यदि हम प्रभावकारी कदम न उठायेंगे और अपनी सेना के संगठन व शिक्षण की चर्चा करते रह जायेंगे, तो हम से वे सब स्थान छिन जायेंगे, जिन पर खड़े होकर हम रूस पर आक्रमण कर सकते हैं, क्योंकि हम केवल रूस की बातें ही करना जानते हैं।' इसमें सन्देह नहीं कि अमेरिका में युद्ध के खतरे की चर्चा जोरों पर है। इसका कोई कारण हो—स्थिति की वास्तविकता हो या वर्तमान अधिकारियों के चुनाव-आन्दोलन का एक अंग, लेकिन यह निश्चित है कि संसार की परिस्थिति लगातार विकट हो रही है और उसे देखते हुए यदि हम सावधान न रहे, तो इसकी क्षति हमें अवश्य उठानी पड़ेगी।

× × ×

यूरोप में स्थिति प्रतिदिन उलझती जा रही है। इटली के चुनावों में एंग्लो-अमरीकी गुट अवश्य सफल हुआ है, किन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि विवाद शान्त हो गई है। जर्मनी, आस्ट्रिया के विवादास्पद प्रश्न अभी तक वैसे ही उलझे विषय हैं। विभक्त जर्मनी प्रतिदिन नई समस्याएं पैदा कर रहा है। प्रायः प्रति दूसरे दिन किसी न किसी संघर्ष का समाचार मिलता रहता है। अमेरिका अपनी आर्थिक सहायता द्वारा तथा रूस अपनी अत्यन्त संगठन योजनाओं तथा प्रचार द्वारा यूरोप में अपनी शक्ति बढ़ा रहे हैं। अभी तक समझौते के जितने प्रयत्न हुए हैं, वे जितने सफल होते हैं, उससे अधिक विषम समस्याएं आकर दोनों के परस्पर वैमनस्य को और भी अधिक गहरा कर देती हैं। चीन में गृहयुद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ और कोरिया में इसके आसार पैदा हो गये हैं।

× × ×

मध्यपूर्व से भी अधिक विकट परिस्थिति आज फिलस्तीन की है। ब्रिटेन ने निश्चय किया है कि १५ मई तक वह अपनी समस्त सेनाएं फिलस्तीन से हटा लेगा और वहां के शासन की जिम्मेवारी से वह मुक्त हो जायगा। १५ मई के बाद वहां कौन शासन करे, इस के लिए अभी से तीव्र संघर्ष शुरू हो गया है। छोटे बड़े अरब राज्यों के शासक इस के लिये विशाल संगठन कर रहे हैं और आने वाले समाचारों से तो यह प्रतीत होता है कि ट्रांसजोर्डन, सीरिया, लेबनान और ईराक की सेनाएं तीन ओर से फिलस्तीन पर आक्रमण कर देंगी। ट्रांसजार्डन के शाह अब्दुल्ला स्वयं सेनाओं का नेतृत्व करेंगे। इसके विरुद्ध यहूदियों की भी युद्ध के लिए पूरी तैयारियां हो रही हैं। जहां तक शस्त्रास्त्र आदि साधनों का प्रश्न है, यहूदी किसी से पीछे नहीं हैं। यद्यपि आज यह कहना दुःसाहस है, तथापि लक्षणों के आधार पर कहा जा सकता है कि रूस की सहानुभूति आज यहूदियों के साथ है और अंग्रेजों की अरबों के साथ। स्थितियों के जानकार इसे अस्वाभाविक नहीं मानते। अमेरिका को मुस्लिम राष्ट्रों से तेल लेना है, इसलिये पुराने निर्णय को रद्द करके भी वह मुस्लिम राष्ट्रों की सहानुभूति प्राप्त कर रहा है। दूसरी तरफ रूस देख रहा है कि ये मुस्लिम राष्ट्र अमेरिका की ओर जा रहे हैं। किसी भी विषम परिस्थिति को देखकर वह फिलस्तीन के मामले में दखल दे सकता है और मुस्लिम राष्ट्रों पर दबाव डाल सकता है।

इधर फिलस्तीन घोर संघर्ष के लिये तैयारी कर रहा है, उधर राष्ट्रसंघ के नेता अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस की योजनाओं पर विचार कर रहे हैं। १५ मई ज्यों ज्यों निकट आती जाती है, त्यों त्यों आने वाले संघर्ष की चिन्ता बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि अरब-यहूदी संघर्ष किसी भी समय अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का रूप धारण कर सकता है।

× × ×

फिलस्तीन का प्रश्न यद्यपि काफी महत्वपूर्ण है, तथापि हमारे लिए उस से भी कठिन और तात्कालिक समस्या हैदराबाद व काश्मीर की है। काश्मीर के संबंध में हम अपने विचार गतांक में लिख चुके हैं। सुरक्षा समिति में गये हुए हमारे प्रतिनिधि श्री आयंगर आदि वापस आ गये हैं। उनसे विचार विनिमय के बाद भारत सरकार अपनी नीति नियत करेगी। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि भारत उस अन्यायपूर्ण स्थिति को स्वीकार नहीं करेगा, जो सुरक्षा समिति के स्वार्थपूर्ण निश्चय के कारण भारत के लिए पैदा कर दी गई है। नेहरू जी ने यह बात बार बार स्पष्ट कर दी है। अब क्या कदम उठाया जायगा, यह कुछ दिनों में सम्भवतः स्पष्ट हो जायगा, आज तो इतना ही कहा जा सकता है कि काश्मीर के युद्धक्षेत्र में सेनाएं ही वास्तविक निर्णय करेंगी।

× × ×

पिछले दिनों में हैदराबाद की उलझन बहुत अधिक उलझ गई है। रजाकार जिस तरह स्थिति को बिगाड़ रहे हैं और जिस तरह वे भारतीय प्रजा व हिन्दू जनता पर बर्बर अत्याचार कर रहे हैं, उसे देखते हुए पं० नेहरू को यह घोषणा करने पर विवश होना पड़ा कि हैदराबाद के पास भारतीय संघ में प्रवेश या युद्ध के सिवा तीसरा मार्ग नहीं है। हैदराबाद के अधिकारियों ने इसका तीव्र प्रतिवाद किया है, किन्तु पिछले दिनों जो स्थिति हैदराबाद व उसके आस पास पैदा हो रही है, उसके कारण भारत सरकार पर कोई कदम शीघ्र ही उठाने का जोर डाला जा रहा है। भारत सरकार इस प्रश्न की ओर अधिक उपेक्षा नहीं कर सकती। लेकिन प्रश्न यह है कि हैदराबाद के विरुद्ध कोई सैनिक कार्रवाई नई उलझनें पैदा न कर दे। हैदराबाद के रजाकार जिस अदूरदर्शिता, उद्दण्डता और बर्बरता से स्थिति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, उसे देखते हुए कोई भी ऐसी नई उलझन पैदा हो सकती है, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते।

× × ×

एक ओर पाकिस्तान व भारत के आन्तरिक समझौतों की कड़ियें चल रही हैं, तो दूसरी ओर हैदराबाद, काश्मीर तथा पूर्वी पश्चिमी पंजाब के विवादास्पद प्रश्न समस्याओं को और अधिक विषम बनाते जा रहे हैं। जब तक यह प्रश्न हल न हो, तब तक दोनों देशखण्डों के सम्बन्ध मधुर नहीं हो सकते और न सहयोगपूर्वक शांति व समृद्धि के पथ पर हम चल सकते हैं। लेकिन इसके साथ ही हमारा यह भी विचार है कि देश के सामने आने वाली प्रायः सभी समस्याएं आज उपस्थित हो चुकी हैं और निकट भविष्य में वे चरमसीमा पर पहुंच सकती हैं। काश्मीर व हैदराबाद तथा अन्य प्रान्तों का शीघ्र ही कोई निर्णय करना होगा, उन्हें अधिक समय तक टाला नहीं जा सकता। इसलिए जो उग्रता व कठिनता देश के सामने उपस्थित होनी है, वह आगामी कुछ मासों में हो जायगी और और फिर समस्याएं समाधान व शांति का रुख लेंगी। इसीलिए यह वर्ष हमारे लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

हमारी मौलिक कमजोरी

युक्तप्रान्त में जिला बोर्डों के चुनाव विशेष महत्व रखते हैं। वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत में इतने व्यापक क्षेत्र में पहले कभी चुनाव नहीं हुए। इसलिए इन चुनावों पर आज हमें विशेष रूप से दृष्टि डाल कर सार्वजनिक जीवन, जनता की राजनैतिक जागृति आदि की समस्याओं को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। इन चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अभी सोशलिस्ट पार्टी के नारों की अपेक्षा कांग्रेस की व्यवहारिक और सामयिक नीति को जनता अधिक पसन्द करती है। लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है। सार्वजनिक बालिग चुनाव के कारण हमारी वे कमजोरियां अत्यन्त नग्न रूप में प्रकट हुईं जिनकी ओर स्वातन्त्र्य प्राप्ति की धुन में हमारा कभी ध्यान नहीं गया, परन्तु जो वस्तुतः हमारे समाज की मौलिक कमजोरी है। सहयोगी 'आज' के सम्पादक ने इस ओर विचारकों का ध्यान विशेषरूप से आकृष्ट किया है। वह लिखता है—"आजमगढ़ व जौनपुर जैसे जिलों में जिलाबोर्ड के चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस और समाजवादियों के विरुद्ध २६ जातियों ने शोषित किसान संघ नाम का एक संगठन बनाया। वस्तुतः इस संघ में अहीरों और कोइरियों का प्राबल्य था और इन्होंने ब्राह्मणों, कायस्थों, भुमिहारों और क्षत्रियों के विरुद्ध एक प्रकार का जेहाद बोल दिया। मुस्लिम लीगी भी इस में शामिल हो गये और खबर है कि इनके किसी नेता ने यहां तक कहा कि ब्राह्मणों और क्षत्रियों के कारण ही पाकिस्तान बना। ये न होते तो पाकिस्तान ही न बनता। २२ अप्रेल से उस जिले में शोषित संघ वालों ने गृहयुद्ध भी छेड़ दिया है। अहीरों ने राजपूतों पर और भूमिहारों पर सामूहिक आक्रमण किये हैं और बहुत से मकान जला डाले। चमारों और ब्राह्मणों में भी मुठभेड़ें हुई हैं। लूट की भी खबरें आयी हैं। बन्दूकें भी इस्तेमाल की गयीं। कई गावों में हड़ताल कर दी गयी है, जिससे खेती का काम रुका हुआ है। यह सब क्या है? क्या प्रान्तीय सरकार के पास ये सब भयानक समाचार पहुंचे हैं? क्या केन्द्रीय सरकार इस में दखल देगी? यह विषवृक्ष है। यह यदि फैला, इसका दाह और इसकी आग यदि फैली तो यह सारे देश को विषाक्त कर देगी। इस नासूर को जहां पैदा हुआ वहीं दफना देना होगा अन्यथा यह सारे राष्ट्रदेह को रोगी बना देगा।" वस्तुतः इन चुनावों में केवल शोषित संघ की ओर से ही नहीं, प्रायः समस्त दलों के उमीदवारों ने संकुचित जातीयता का आश्रय लिया है। विशुद्ध राजनैतिक सिद्धान्तों के आधार पर चुनाव होने चाहिए, प्रान्तीयता या जातीयता के आधार पर नहीं। लेकिन आज जात पात या दूसरी क्षुद्र भावनाएं हमारी सरकार बन गई हैं और यही हिन्दू समाज की मौलिक बीमारी है, जिसके कारण हमारी राजनैतिक व सार्वजनिक चेतना कभी जागृत नहीं हो पाती।

युक्तप्रान्त में कांग्रेस की सफलता

युक्तप्रान्त के छः जिलों—मेरठ, सहारनपुर, कानपुर, प्रतापगढ़ बहराइच, हरदोई और सीतापुर में जिला बोर्डों के चुनावों में समाजवादियों को बुरी तरह मात खानी पड़ी है और कांग्रेस ने वहां शतप्रतिशत सीटों पर अधिकार कर लिया है। चौदह अन्य जिलों में भी कांग्रेस को बहुत अधिक बहुमत प्राप्त हुआ है। ३५ जिलों में समाजवादियों को अब तक कुल मिला कर ६५ सीटें मिली हैं, जब कि कांग्रेस को ११३८ सीटें मिली हैं।

डाक व पार्सल पर अस्थायी समझौता

भारत सरकार का डाक और तार शिष्टमंडल कराची से दिल्ली रवाना हो गया है। भारतीय शिष्टमण्डल तथा पाकिस्तानी शिष्टमण्डल में पोस्टल तथा पार्सल दरों के अस्थायी समझौते पर हस्ताक्षर हो गये हैं। दोनों डोमीनियनों के मध्य डाक व पार्सलों पर दोनों के आन्तरिक दर लागू होंगे। पाकिस्तान सरकार इस अस्थायी समझौते को क्रियान्वित करने के लिये तय्यार है, परन्तु भारत सरकार का कहना है कि डाक और पार्सल के महसूलों का प्रश्न तार के दरों से पूर्णतः सम्बद्ध है, अतः तार के दरों पर समझौता न होने तक उसे डाक व पार्सल समझौता मान्य नहीं होगा। भारत ने देश के बाहर आने और जाने वाले तारों में महसूलों के ज्यादा हिस्से पर दावा किया था, परन्तु पाकिस्तान बराबर-बराबर का हिस्सा चाहता था। नयी दिल्ली में तार के महसूलों पर शीघ्र ही विचार होगा।

दिल्ली प्रांत में होमगार्ड

१ मई से दिल्ली प्रान्त में १००० होमगार्ड बनाने की योजना पेश की जारही है। इस योजना के अनुसार २० से २५ वर्ष की आयु के १००० लोगों की बटालियन १० कम्पनियों में विभाजित होगी, जिस में प्रत्येक में १०० व्यक्ति होंगे। सरकार के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करने वाले पठित व्यक्ति ही भर्ती किये जायेंगे। प्रत्येक सदस्य को मास में कम से कम एक बार रात में गश्ती ड्यूटी देनी होगी।

खाद्य सम्मेलन समाप्त

प्रान्तीय प्रधानमन्त्रियों तथा खाद्य मन्त्रियों का जो सम्मेलन दिल्ली में हो रहा था उसका उद्घाटन करते हुए पं० नेहरू ने घोषणा की कि सरकार देश पर छाये विषम खाद्य संकट को टालने में समर्थ हो गई है। इस बार २० लाख टन अधिक अनाज उत्पन्न होने की आशा है। फिर भी कठिनाइयां अभी शेष हैं। विभिन्न प्रांतों

के प्रतिनिधियों ने वर्तमान यातायात की स्थिति व खाद्य उत्पादन की वृद्धि के लिए आवश्यक सामान सप्लाई पर असन्तोष व्यक्त किया। २६ अप्रैल को खाद्य सम्मेलन समाप्त हो गया है।

सुरक्षा कौंसिल का भारतीय शिष्टमंडल

श्री गोपालस्वामी आयंगर के नेतृत्व में जो भारतीय शिष्टमण्डल काश्मीर के प्रश्न को लेकर संयुक्तराष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल में गया था, वह वापिस भारत आ गया है। श्री आयंगर ने भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू से सुरक्षा कौंसिल के काश्मीर सम्बन्धी संयुक्त प्रस्ताव पर चर्चा की और प्रस्ताव पर अपना तीव्र विरोध भी प्रकट कर दिया। भारत सरकार ने अभी तक अन्तिम रूप से इस विषय में निश्चय नहीं किया है। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की बैठक इस विषय में शीघ्र ही निश्चय करेगी।

कपड़े का मूल्य बेहद बढ़ा

भारत सरकार के उद्योग व रसद सचिवालय को विविध प्रान्तों से जो सूचनायें मिली हैं उनसे प्रकट होता है कि २० जनवरी को कपड़े पर से अंकुश हटाने का परिणाम बड़ा घातक सिद्ध हुआ है। कपड़े के मूल्यों में सर्वत्र ११७ प्रतिशत के अनुपात से वृद्धि हुई है। सरकार अब अंकुश पुनः जारी करनेके प्रश्न पर गम्भीरता से विचार कर रही है।

जमीयत अब केवल धार्मिक संस्था रहेगी

जमीयत उल-उल्माये हिन्द ने अपने १५ वें अधिवेशन में इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है कि जमीयत अब भविष्य में केवल धार्मिक और सांस्कृतिक संस्था के रूप में ही कार्य करेगी। राजभाषा के सम्बन्ध में जमीयत ने भारतीय संघ की सरकार से यह मांग की है कि भारत की राजभाषा हिन्दुस्तानी हो जिसे फारसी और देवनागरी दोनों लिपियों में लिखा जा सके।

महाराज अलवर निर्दोष

भारत सरकार ने अलवर रियासत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की हलचलों तथा संघ का गांधी जी की हत्या में हाथ होने और संघ को रियासती सरकार की मदद होने विषयक आरोपों के बारे में जो जांच कराई थी उसके फलस्वरूप महाराजा अलवर को निर्दोष पाया गया है। अलवर के भूतपूर्व दीवान डा० नारायण भास्कर खरे तथा अन्य रियासती अधिकारियों के बारे में अभी जांच जारी है।

ऊमा को फांसी

बर्मा के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री ऊसा को ८ मई को फांसी पर लटका दिया जाएगा। ऊसा को गत जुलाई में बर्मी प्रधानमन्त्री यू आंगसान तथा अन्य बर्मी मन्त्रियों की हत्या के षड़यन्त्र में गत दिसम्बर में फांसी की सजा दी गई थी। उन्हें ६ अप्रैल को फांसी दी जानी थी किन्तु अपील करने के कारण उसे स्थगित कर दिया गया था। सर्वोच्च अदालत ने अब उनकी अपील भी खारिज कर दी है। ऊसा के अन्य साथियों को भी ८ मई को ही फांसी दी जाएगी।

फिलस्तीन का संघर्ष

फिलस्तीन में जब से अरबों और यहूदियों में लड़ाई प्रारम्भ हुई है तबसे पहली बार ब्रिटेश लड़ाकू वायुयानों ने अरबी बन्दरगाह जाफा पर हमला करने वाले यहूदियों के सदर मुकाम पर जोरदार बमवर्षा की। ब्रिटिश फौजें बाख्तिरबन्द गाड़ियों और तोपों की मदद से ३००० यहूदियों के जमाव पर हमले कर रही हैं ताकि वे जाफा बन्दरगाह पर अधिकार न कर सकें। यहूदियों ने दावा किया है कि ३ दिन की घमासान लड़ाई के बाद जाफा का पतन हो गया है। इस समय जेरूसलम में केवल २० ब्रिटिश नागरिक रह गये हैं।

ट्रांसजर्डन के शाह अब्दुल्ला ने अरब सेनाओं की कमान अपने हाथ में लेली है, जो फिलस्तीन पर ट्रांसजोर्डन, ईराक, सीरिया और लेबनान से चढ़ाई करने वाली है। अरबों ने मित्र राष्ट्रसंघ की फिलस्तीन में शांति पर सहयोग की प्रार्थना ठुकरा दी है।

यहूदी रक्षा संगठन हगाना ने तेल अवीव की समस्त अविवाहित और विवाहित स्त्रियों की राष्ट्रीय सेना के लिए अनिवार्य भर्ती का आदेश दे दिया है। यह आदेश १७ से २५ वर्ष तक की आयु के लिये ही सीमित है। तमाम डाक्टरों तथा द्वितीय युद्ध में ब्रिटिश सेना में कार्य करने वाले तमाम यहूदी अफसरों की भी लामबन्दी की घोषणा की गई है।

अन्तिम समाचार यह है कि जाफा के ब्रिटिश कमाण्डर ने 'युद्ध रोको' आदेश दे दिया है और यहूदियों ने १८ घण्टे की विराम सन्धि मानली है। ब्रिटिश कमाण्डर अरबों व यहूदियों में समझौते की वार्ता कर रहे हैं।

समाचार चित्रावली

हैदराबाद में रजाकारों के विरुद्ध सत्याग्रह करने के लिए दिल्ली से मुसलमानों का पहला जत्था।

हिमाचल प्रदेश में संगठित पहाड़ी राज्यों के शासक श्री एन० सी० मेहता।

सुरक्षासमिति में असफल होकर श्री गोपाल स्वामी आयंगर भारत लौट आये हैं।

सिंध के प्रथम प्रधानमंत्री श्री खुरों को गवर्नर ने बरखास्त कर दिया।

गांधी जी के बाद [illegible] के लिए प्रयत्नशील श्री विनोबा भावे।

अलवर नरेश गांधी जी की हत्या व षड्यंत्र प्रवृत्तियों से निर्दोष घोषित किये गये हैं।

[illegible] अब्दुल्ला यहूदी [illegible] सैन्य को पूर्ण आश्रय दे रहे हैं।

यहूदियों के नेता [illegible] १५ मई के बाद युद्ध की तैयारी में व्यग्र हैं।

[illegible] के नोबल पुरस्कार विजेता सर राबर्ट रॉबिंसन का लन्दन में स्वागत।

भारत का नया विधान और नागरिकों के अधिकार

[श्री भीमसेन विद्यालङ्कार]

भारत के प्रस्तावित राष्ट्रीय विधान को, जहां तक शासन विभाग, न्याय विभाग और नियम-निर्माण का संबंध है, ब्रिटिश और अमेरिकन विधानों का मिश्रण कहा जा सकता है। तीनों विभागों को स्वतन्त्र परस्पराश्रित और लचकीला बनाया गया है। शक्ति तथा कार्य विभाजन में केन्द्रीय शासन को शेष अधिकार दिये गये हैं। सामयिक आवश्यकता तथा देश काल की परिवर्तित अवस्थाओं के अनुसार इन विभागों के परस्पर सम्बन्धों में परिवर्तन होते रहते हैं, परन्तु विधान में घोषित जनता के जन्मसिद्ध अधिकारों में कम से कम परिवर्तन रहने की संभावना होनी चाहिए। यह जन्मसिद्ध अधिकार शासनविधानों की आत्मा होते हैं। शरीर के अंगों के संगठन में परिवर्तन होते रहते हैं, यह अनिवार्य है, परन्तु आत्मा का परिवर्तन क्रान्तिकारी होता है। इसी लिये हम देखते हैं कि जब कभी राष्ट्र में क्रान्तियां होती हैं, तभी जन्मसिद्ध अधिकारों की घोषणा की जाती है। अनेक बार जनता की ओर से जन्मसिद्ध अधिकारों के लिये की गई माग ने राष्ट्र में परिवर्तन तथा राज विप्लव पैदा कर दिये। अमरीकन जनता की 'नो टैक्सेशन विदाउट रिप्रेजेण्टेशन' की माग ने अमरीका में राजक्रान्ति को जन्म दिया। फ्रेंच राज्य-क्रान्ति को जन्म देने वाली त्रिसूत्री स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृभाव थी। इस माग को पुष्ट करने व जनता में इसके लिए प्रबल अभिलाषा पैदा करने के लिये अनेक विद्वानों द्वारा 'मानव के अधिकार, आदि क्रान्तिकारी पुस्तकें भी लिखी गईं। परिणामरूप फ्रांस में क्रान्ति हुई। इंगलैण्ड की जनता की स्वाधीनता का प्रारम्भ भी मैग्नाचार्टा' से शुरु हुआ था। रूस की क्रान्ति का प्रारम्भ 'संसार के मजदूरो, एक हो जाओ' के नारे से प्रारम्भ हुआ था और लेनिन ने शान्ति व रोटी की दुहाई दे कर रूस की राजक्रान्ति को हथियाया। इन क्रान्तिकारी नारों के आधार पर इन को दृष्टि में देख कर इन देशों के राष्ट्रविधानों में जनता के मौलिक जन्मसिद्ध अधिकारों की घोषणा की गई।

भारत के राष्ट्रीय विधान में भी पिछले १५० सालों से प्रचलित आदर्श-वाक्यों ने—वन्देमातरम् 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधि... ...' 'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'जय हिंद' अंगरेजों, ...भारत छोड़ो' ने जनता में स्वतंत्र होने की भावना को पैदा किया और 'अंगरेजों ...को भारतवर्ष छोड़ने पर बाधित होना ...पड़ा। अंगरेजों के भारत छोड़ने पर स्वतंत्र भारत का शासन विधान बनाते समय राष्ट्र के सामने जनता के जन्मसिद्ध अधिकारों की घोषणा करने का प्रश्न भी उपस्थित हुआ। इस संबंध में भारत विधान निर्मात्री असेम्बली की ओर से प्रकाशित विधान में जनता के मौलिक जन्मसिद्ध अधिकारों की तालिका भी प्रकाशित की गई, और उसके आधार पर शासनतंत्र का निर्माण भी किया गया है। यदि हम अन्य राष्ट्रों के मौलिक जन्मसिद्ध अधिकारों की तालिका की भारत के लिये निर्धारित जन्मसिद्ध अधिकारों से तुलना करें तो हमें पता लग सकता है, भारतीय जन्मसिद्ध अधिकारों की तालिका में क्या कमी है और क्या समानता और विशेषता है। समानताओं और विशेषताओं का दिग्दर्शन किसी दूसरे लेख के लिये स्थगित करते हुए; हम इस लेख में कमियों और त्रुटियों की ओर ही निर्देश करेंगे और आशा करेंगे कि विधान निर्मात्री परिषद के सदस्य इस दिशा में विशेष ध्यान देकर आवश्यक परिवर्तन करायेंगे और भावी भारतीय राष्ट्र को यथार्थ में स्वतन्त्र और स्वावलम्बी बनायेंगे।

राष्ट्र का नाम ऐसा नाम होना चाहिए जो साधारण जनता में नाम श्रवण के साथ ही देशभक्ति की भावनाओं को पैदा करे और जिसके साथ राष्ट्र की गौरवमयी परम्पराओं का संबंध प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे। इंडियन यूनियन नाम विदेशियों के आधिपत्य को ही ध्वनित करता है, अधिक से अधिक इस नाम से यह ध्वनित होता है कि सब भारतीयों को यूनियन में संघठित होकर रहना चाहिए। इस नाम के उच्चारण के साथ राष्ट्रविभाजन—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की भावना भी आखों के सामने चित्रित हो जाती है। इस दृष्टि से भारतवर्ष नाम का शासन-विधान में संनिवेश आवश्यक होना चाहिए। इस भारतवर्ष नाम से समस्त भारतीय जनता के आधार पर ही राष्ट्रीयता का निर्माण हो सकता है। भारत राष्ट्र ही भारतीयों के हृदय में देशभक्ति और उसके लिए बलिदान होने की भावनाओं को बल दे सकता है। "भारत माता" हमारा भारत शब्द भारतीय साहित्य और सभ्यता के विशेष भावना सूचक शब्द है। इसके मुकाबले में पाकिस्तान का नाम वहां की जनता में विरोधी भावनाओं को जन्म देता हुआ उन्हें उसके लिए बलिदान करने के लिए सहसा प्रेरित करता है।

यह ठीक है कि भारतीय राष्ट्र का निर्माण किसी धर्म या मजहब को आधार मान कर नहीं होना चाहिए। सब धर्मों और मजहबों को पूर्ण रूप से विकसित करने का अवसर मिलना चाहिए। परन्तु यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यदि हम भारतीय राष्ट्र का आधार भारतीय सभ्यता को स्पष्ट रूप से घोषित नहीं करेंगे, तो समयान्तर में मजहब धर्म तथा अल्प पक्ष की संकीर्ण विचारधाराएं प्रबल होकर, भारत को संगठित राष्ट्र नहीं बनने देंगी। वर्तमान संगठन में भारतीय सभ्यता की सत्ता स्पष्ट रूप से कहीं भी स्वीकार नहीं की गई और न ही भारतीय राष्ट्र और इंडियन यूनियन को मातृभूमि के रूप में कहीं स्वीकार किया गया है।

रूस के सोवियत संगठन में राष्ट्रीय शासन-विधान के प्रति प्रत्येक नागरिक के लिए भक्ति प्रकट करना आवश्यक माना है, विद्यार्थियों के लिए उसका शिक्षणालयों तथा अन्य साधनों द्वारा अध्ययन आवश्यक माना है। उन्होंने अपने शासन-विधान को रूसी सभ्यता का आधार तथा स्वरूप दर्शक माना है। हमारे इस विधान में इस प्रकार की भावनाओं को जगाने वाला कोई उपाय नहीं रखा गया। राष्ट्र को भौतिक बनाया जा सकता है। यहां मजहबों या जाति अल्पपक्ष वालों को इतनी अधिक विशेष महत्ता और स्वतंत्रता दी गई है कि समयान्तर में वह राष्ट्र में विभिन्नता के बीज बोए बिना नहीं रहेगी। अल्पपक्ष वालों को अपनी सभ्यता के विकास का अधिकार देते हुए भी उनके लिये भारतीय सभ्यता तथा भारतीय राष्ट्र विधान के प्रति भक्ति प्रकट करते हुए उसे मातृभूमि या पितृभूमि के रूप में स्वीकार करना कानून विधान द्वारा आवश्यक होना चाहिए।

मैक्सिको जर्मनी आदि के राष्ट्र विधानों में जन्म सिद्ध अधिकारों की परिगणना करते हुए अल्पपक्ष के अधिकारों को गौण रखा गया है। हमारे विधान में धर्म पर आश्रित सम्प्रदायों को सहायता आदि देने की व्यवस्था इस उदारता से की गई है कि समयान्तर में यह साम्प्रदायिक संकीर्णताएं राष्ट्रीयता, भारतीय राष्ट्रीयता के विकास में बाधक सिद्ध होंगी। भारतीय राष्ट्र का आधार भारतीय सभ्यता को स्पष्ट रूप में मानना चाहिये। जर्मनी के विधान में जर्मन सभ्यता को आधार माना गया है। अल्पपक्ष वालों को स्वाधीनता भी दी गई है। धर्म का नामनिर्देश केवलमात्र धार्मिक संस्कारों, कचहरियों तक सीमित किया गया है। भारतीय सभ्यता ही हमारा राष्ट्रीय धर्म होना चाहिए। तभी मुसलमानों तथा अन्य अल्पपक्ष वालों की दूसरे देशों के प्रति विरोधी भक्ति रखने की भावना पर, जिसने भारत में साम्प्रदायिकता को जन्म दिया था, भी नियन्त्रण हो सकेगा।

शस्त्रास्त्र रखने का अधिकार

अंग्रेजों ने भारतीय जनता को निःशस्त्र कर निर्बल परावलम्बी बनाया था। जनता को योद्धा या अयोद्धा जातियों में विभक्त कर राष्ट्रों को आत्म-रक्षा की दृष्टि से पंगु बना दिया था। इस कमी को दूर करने के लिए शासन विधान के मौलिक जन्म सिद्ध अधिकारों में हरेक नागरिक को स्वरूप में शस्त्रास्त्र रखने का अधिकार दिया जाना चाहिए। हां, इसके कारण पैदा होने वाली बुराइयों को दूर करने के लिए विशेष नियम बनाए जा सकते हैं। मैक्सिको रूस जर्मनी तथा अन्य राष्ट्रों के विधानों में हरेक नागरिक को शस्त्रास्त्र रखने का अधिकार दिया गया है। साथ ही इससे पैदा होने वाली बुराइयों को दूर करने के लिए यह नियम बनाया गया है कि कोई व्यक्ति शस्त्रास्त्रबद्ध होकर सभा सोसायटियों में संगठित न हों। इन देशों के पोलीस द्वारा भी इस विषय में समय समय पर नियम बनाए जाते हैं। इस विधान में धर्म के नाम पर सिक्खों को कृपाण रखने का विशेष अधिकार देकर जनता में योद्धा और अयोद्धा जातियों के भेदभाव को इसके रूप में स्वीकार किया गया है, जो कि समयान्तर में राष्ट्र में विषमता पैदा करेगा। यदि हरेक व्यक्ति को शस्त्रास्त्र रखने का अधिकार दिया जायगा, तो सिक्खों को भी कृपाण रखने का अधिकार मिल जायगा। इसमें उनके धार्मिक अधिकार की भी रक्षा हो जायगी और जनता में स्वावलम्बी होकर आत्मरक्षा करने की भावना पैदा हो जायगी।

इन त्रुटियों का दिग्दर्शन कराते हुए भी हमें यह कहने में जरा भी संकोच नहीं कि राष्ट्रीय विधान बनाने वालों ने अन्य स्थलों पर भारतीय राज्य क्रान्ति का श्रीगणेश करने वाले आदर्श वाक्यों की भावनाओं को असली रूप या क्रियात्मक रूप देने की प्रशंसनीय कोशिश की है। विशेष रूप से अस्पृश्यता को समाप्त कर विधान के विशेष रूप में निर्दिष्ट मूलभूत सिद्धांत भ्रातृभाव को मूर्त रूप दिया है।

———

बरार की वापसी का प्रश्न

[श्री नरेन्द्र]

[हिंद संघ की सरकार ने यथापूर्व समझौते के द्वारा बरार पर निजाम का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया है। क्या यह उचित है? लेखक ने इस प्रश्न का मार्मिक विवेचना किया है। स०]

जिस समय अंग्रेज और फ्रांसीसी हिन्दुस्तान में राजनैतिक प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए परस्पर संघर्ष कर रहे थे उस समय अंग्रेजों ने देशी नरेशों को अपना मित्र बनाने में ही अपनी भलाई समझी। बरतानवी साम्राज्य और निजाम की मैत्री की नींव भी तभी पड़ी।

फ्रांसीसियों से तंग आई हुई निजाम सरकार ने अंग्रेजों से एक संधि कर ली जिसके अनुसार उन्होंने मछली पट्टम और श्रीरंग पट्टम तथा कुलावेरू आदि ग्राम ईस्टइंडिया कम्पनी को सौंप दिये। उन्होंने यह वादा किया कि रियासत हैदराबाद से फ्रांसीसी सेनाओं को निकाल दिया जायगा।

इसके पश्चात् नवम्बर मास सन् १७६६ ई० में अंग्रेजों के साथ एक नवीन सन्धि हुई, जिसके आधार पर पूर्वी राज्य अंग्रेजों के आधीन कर दिये गये और इसके साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि अंग्रेज इन राज्यों की आय से अपनी देख-रेख में एक सहयोगी सेना बनायें। वास्तविकता तो यह है कि अंग्रेजों ने इस संधि से कुछ समय पूर्व ही सन् १७६५ ई० में निजाम राज्य के अधिपति दिल्ली सम्राट् से पूर्वी राज्यों का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया था। यह जो कुछ भी हुआ वह केवल बरतानवी राजनीति की एक चाल मात्र ही थी। बरार निजाम के हाथ से निकल गया।

बरार की वापसी का प्रश्न प्रथम बार

बरार की वापसी का प्रश्न १८५७ के गदर के उपरान्त नवाब सालारजंग बहादुर ने उठाया। उनका विचार था कि गदर में दक्षिण निजाम ने जो अंग्रेजों की सहायता की थी, उसका ध्यान अंग्रेज अवश्य रखेंगे और परिणामतः बरार वापिस मिल जायगा। पत्र व्यवहार का कोई संतोष जनक परिणाम न निकल सका, और नवाब सालारजंग को अपने प्रयत्नों में असफल होना पड़ा। सन् १८७६ ई० के दिसम्बर मास में वह विलायत की यात्रा से वापिस लौटे। आते ही उन्होंने पुनः बरार के प्रश्न को उठाना चाहा। उन्होंने हैदराबाद के रेजिडेंट के पास एक पत्र भेजा। उसे रेजिडेंट ने वायसराय के पास तक पहुँचाना तो दूर रहा, ग्रहण करने से भी अस्वीकार कर दिया। इसके पश्चात् जनवरी सन् १८७७ ई० में देहली दरबार हुआ। इस दरबार में नवाब मीरमहबूब अलीखां बहादुर के साथ नवाब सालारजंग को भी सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर कलकत्ते के विदेश विभाग के कार्यालय से नवाब सालारजंग को यह आज्ञा मिली कि "जब तक सालारजंग उनमुख उसमय हैदराबाद सरकार पर बरतानवी साम्राज्य के आधिपत्य को मानते हुए एक प्रार्थना पत्र न लिख दें तब तक इन्हें दरबार में सम्मिलित होने का अवसर न दिया जाय। और इन से यह भी मांग की गई कि दोनों सरकारों के बीच विवादस्पद समस्याओं में भारत मन्त्री के निर्णय को ही अन्तिम और निश्चित मानें।" इन दोनों शर्तों को उस समय सालारजंग ने स्वीकार कर लिया था। नवाब सालारजंग ने इसके पश्चात् फिर एक बार बरार के सम्बन्ध में रेजिडेंट के पास पत्र भेजा जिसे वापिस करते हुए रेजिडेंट ने लिखा कि —

'इस प्रकार का बार २ का आग्रह व्यक्तिगत और सामाजिक सबंधों में भी एक क्षण के लिये सहन नहीं किया जा सकता। राजकीय कार्यों में इस से कुछ उचित परिणाम निकल ही नहीं सकता।'

पत्र साफ है कि अंग्रेज सरकार एक तयशुदा मामले को बार बार उठाना नहीं चाहती। यही बात लार्ड सालस्बरी के उस उत्तर से स्पष्ट होती है जो कि उन्होंने १७ जुलाई सन् १८७२ को दिया था। वह लिखते है —

'न ही बरार प्रांत वापिस किया जायगा और न ही कन्टोनमेंट के लिये कोई आर्थिक योजना ही स्वीकार की जायगी।'

इसके पश्चात् फिर २६ सितम्बर सन् १८७४ ई० को नवाब सालारजंग ने एक दूसरा पत्र रेजिडेन्ट के पास भेजा जिसमें इस विषय पर निम्न लिखित आलोचना की गई —

'इस उत्तर का यह अर्थ है कि मुझ से इस विषय में वादविवाद करने से ही अस्वीकार किया जा रहा है कि हमारी मांग उचित है या अनुचित, इसके सत्य या असत्य होने की परीक्षा किये बिना ही इसको बलात् दबाने का प्रयत्न किया जा रहा है। भारत मन्त्री का निर्णय जिसको कि अन्तिम निर्णय कहा जा रहा है, हमारी उचित मांगों और उदाहरणों को देखे बिना ही प्रदान किया गया है।'

उपरोक्त पत्र को वापिस लौटते हुए रेजिडेंट ने २ अक्टूबर को नवाब को लिखा था कि —

'वायसराय ने मुझे स्पष्टतया यह आदेश दिया है कि अब मैं इस संबन्ध में उन्हें कोई पत्र न भेजूं।'

इस से पूर्व लार्ड डलहौजी ने भी २२ फरवरी सन् १८५३ ई० में यह स्पष्ट लिख दिया था '—एक सन्धि के अनुसार जो सन् १८५३ ई० में की गई हिज हायनेस के अन्य ग्राम आनरेबल ईस्टइंडिया कम्पनी के राज्य के स्थायी रूप से आधीन कर दिये थे, जिससे हैदराबाद कन्टोनमेंट स्थायी रूप से रक्खी जा सके।'

डलहौजी ने अपने पत्र में स्पष्टतया स्थायी शब्द का प्रयोग किया है। इस प्रकार से ऐतिहासिक प्रमाण और पिछले निर्णयों के रहते हुये कोई भी न्यायालय बरार की वापिसी की मांग को स्वीकार न कर सकेगा।

लार्ड कर्जन का युग और बरार की समस्या

बरार की वापसी के सम्बन्ध में सन् १९०२ ई० में लार्ड कर्जन और मीर महबूब अली खां के बीच एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बातचीत हुई, उस बातचीत के खुले भावों को सन्मुख रख कर दोनों पक्षों ने जिस मेमो का निर्माण किया था, हम उसके कुछ भागों को अपने कथन की पुष्टि के लिये प्रस्तुत करते हैं।

लार्ड कर्जन का पत्र

'मैंने जब सुना कि ऐसी प्रत्यक्ष लाभदायक शर्तें हिज हायनेस को ठीक नहीं लगीं तो मुझे निराशा हुई। यदि इन शर्तों को अस्वीकार कर दिया गया तो भारत सरकार फिर अपनी वर्तमान स्थिति की ओर प्रवेश करेगी जिसके लिये कोई अवधि निश्चित नहीं होगी। इसके अतिरिक्त एक और भी कारण है जिसके आधार पर मुझे वर्तमान योजना के असफल होने में खेद है। यदि इनको रोक दिया गया तो यह अत्यन्त ही असम्भव सा प्रतीत होता है। कि मेरे पश्चात आनेवाला कोई वायसराय इस प्रश्न को दुबारा उठायेगा या बरतानिया की कोई सरकार अपनी बात को दुबारा अस्वीकार करना उचित समझेगी। इस से हिज हायनेस को भली प्रकार समझ लेना चाहिये कि निर्णय का जो अवसर अब उनको प्रदान किया जा रहा है, पुनः इसके प्राप्त होने की कोई सम्भावना नहीं हो सकती और ऐसी अवस्था में वर्तमान स्थिति ही स्थायी रूप धारण करेगी।

'आपने यह जानने की चेष्टा की है कि क्या नवीन निर्णय में इन्हें यह स्वतंत्रता रहेगी कि भविष्य में किसी समय भी वह बरार की वापसी की मांग करें?

इसका उत्तर मैंने यह दिया कि यदि बरार स्थायी रूप से ब्रिटिश सरकार को दे दिया गया तो हिजहाइनेस के लिये ऐसी कि प्रार्थना करने का अवसर न रहेगा, क्यों कि प्रात के भाग्य का निर्णय पहले ही पट्टे के द्वारा हो चुका है। बरतानियां सरकार के लिये प्रस्तुत शर्तों का अभिप्राय इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है कि वह इस स्थायी आधिपत्य पर दृढ़ रहे जो पूर्व ही से पट्टे के आधार पर इसको प्राप्त है।"

इसके उत्तर में हिज हाइनेस ने कहा कि 'मैं यह समझता हूं कि मुझे बरार वापिस मिलने की कोई आशा नहीं है। अतः वर्तमान स्थायी पट्टा लिख देने में कोई विलंब नहीं, क्यों कि वह रियासत के हित के लिये अधिक लाभदायक है। अब तक मैं इस को केवल इस लिये अस्वीकार करता रहा था कि मैं यह नहीं समझता था कि भविष्य में मुझे बरार के वापस मिलने की कोई संभावना नहीं है।'

नवाब मीर महबूबअली का नोट

"वायसराय ने मुझ से बार बार कहा कि बरार कभी वापिस नहीं किया जा सकता। हिज एक्सेलेन्सी ने कहा कि मैं युवरहाइनेस को किसी अनुचित आशा में नहीं रखना चाहता। मैं बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि, विशेष कर मेरी ही नहीं, बल्कि तमाम वायसरायों की, जो कि मेरे पश्चात् आयेंगे यही नीति रहेगी, कि बरार वापिस न किया जायगा। वायसराय की बातों से तो यह ज्ञात हो रहा है कि, बीते हुए २५ वर्ष के भीतर बरार की वापसी के संबंध में कोई बात ही नहीं की गयी, इस लिए अब हमारे लिए असम्भव है कि हम पुनः बरार को वापस प्राप्त कर सकें और अब हमें इस की वापसी की भी कोई आशा नहीं करनी चाहिए। जब बरार को वापस करना असम्भव है तो, वर्तमान परिस्थिति को ज्यू का त्यू रखना बुद्धि से परे की बात है। इस लिए इस को पट्टे पर दे दिया जाय, और उसके प्रतिफलस्वरूप प्रति वर्ष रुपये ले लिए जायें। यह पिछली भूलों का ही परिणाम है कि आज हमें इस बरार प्रांत से हाथ धोना पड़ रहा है। इस समय मैं यह कहने पर बाधित हो गया हूं कि यदि यही स्थिति है तो इसे पट्टे पर दे दे।"

उपरोक्त नोट की समालोचना करने से पूर्व हम सन् १९०२ ई० के संधिपत्र

(शेष पृष्ठ २४ पर)

आधी दुनिया

रूस की नारी क्या-क्या करती है ?

★

सोवियत यूनियन में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का कोई भाग नहीं, जहां पर स्त्रियों का श्रम काम में न लाया गया हो। पुरुषों के बराबर उनका स्थान है। पुरुषों से कम उनकी कल्पना नहीं है। सोवियत यूनियन में दो लाख पचास हजार स्त्रिए इनजीनियरी और मिस्त्री का काम करती है। यह संख्या पुराने रूस की संख्या से चार सौ गुना है। देश में एक लाख से अधिक स्त्री डाक्टर हैं — पुराने रूस में दो हजार से अधिक डाक्टर नहीं थी। शिक्षा विभाग में अठारह लाख औरतें काम करती हैं। पैंतीस हजार औरतें विज्ञान की संस्थाओं और अनुसंधानालयों में काम पर लगी हुई हैं। विशेषज्ञ स्त्रियों की संख्या देश में कुल संख्या की ४२.३ प्रतिशत है।

लाखों काम करने वाली औरतें कारखानों और बसों में अच्छी तरह काम कर रही हैं। उन को वह सारा काम आ गया है जो कि एक आधुनिक औद्योगिक श्रमजीवी के लिए आवश्यक है। हजारों औरतें कारखानों में अध्यक्ष का काम करती हैं। सोवियत देहात में हजारों स्त्रिएं साझी खेतियों के प्रधान का काम कर रहा हैं — दो लाख पचीस हजार औरतें ट्रैक्टर हलों की कप्तान हैं। तीन लाख पचास हजार स्त्रियों का काम पशुओं की देखभाल करना है। स्त्रियों का यह क्रियात्मक श्रम देश को धनी और शक्तिशाली बनाता है। सोवियत सामाजिक विधान की जड़ों को दृढ़ करता है।

सोवियत राज लेनिन की आज्ञाओं का पालन करते हुए अधिक से अधिक स्त्रियों को काम में लगा रहा है। राज काज की बड़ी सोवियत और बाकी प्रजा राजों की सोवियत में १७०० स्त्रिएं प्रतिनिधियों का काम करती हैं। पांच लाख स्त्रिएं स्थानीय सोवियतों की सभासद हैं। सुप्रीम कोर्ट की १४ स्त्रिएं सभासद हैं। मन्त्रियों का काम तो उनके लिए एक साधारण बात है। स्त्रियों को काम करने के अवसर देने के लिए बच्चों की देख भाल करना आवश्यक था। यह प्रबंध सरकार की ओर से होना चाहिये। जब तक बच्चों की रक्षा और देख भाल के लिए सरकारी संस्थाएं नहीं होंगी स्त्रियों को काम करने की स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। खाने पीने के साझे हाल, नरसरी स्कूल, किंडरगार्टन ही स्त्रियों को स्वतंत्रता दे सकते है। लेनिन ने कहा कि इन उपयोगों से स्त्रियों को सामाजिक काम करने का अवकाश और अवसर मिल सकता है।

सोवियत यूनियन में सरकार औरतों और बच्चों की रक्षा और उन्नति का विशेष ध्यान रखती है। नरसरियों और किंडरगार्टन संस्थाओं का जाल बिछा हुआ है। इनकी सहायता से स्त्रियों को सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में काम करने का अवसर मिलता है। सोवियत स्त्री की स्वतंत्रता की यह आधार शिला है। सोवियत यूनियन के १९४७ के बजट में करोड़ों रूबल की सहायता उन माताओं को दी गई जिनके बड़े २ परिवार थे या उन अविवाहित माताओं को दी गई जिनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं था। चालीस करोड़ रूबल औरतों की उन्नति के लिए खर्च किया गया है। सोवियत राज में औरतें पत्नी और माता के कार्य निबाहते हुए सामाजिक उत्पादन के काम में भाग ले सकती हैं।

स्त्रियों का असली शत्रु ?

इंग्लैण्ड में एक वृद्ध एथनी लुडोविचि पिछले १५ वर्षों से नारी के समान अधिकार-आन्दोलन के विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं। वे जानते हैं कि इस आन्दोलन में वे बिलकुल अकेले हैं— कोई साथ नहीं और शायद उनकी पत्नी भी नहीं। उसकी इस समय उम्र ६६ है। १९२० में उसने एलसी बकले से विवाह किया था। उस समय उसकी आयु ४० के करीब थी। उसके कोई संतान नहीं है। वह १६ वीं सदी के बने हुए एक मकान में रहता है।' वह या तो अपना समय अधिकांश पढ़ने में व्यतीत करता है और शेष समय अपनी बकरियों व मुर्गियों की देखभाल व २ एकड़ खेती के कार्य में।

व्यवहारतः वह शाकाहारी है। वह प्रायः स्वावलम्बी है। वह कहता है कि मुझे तभी छुट्टी मिलती है, जब कि मेरी बकरिया दूध देना बन्द कर देती हैं।

उसने एक पुस्तक लिखी है—स्त्रियों के शत्रु। उसका कहना है कि नारी सामरस्य के नाम पर जो लोग स्त्रियों को पुरुष समान बनाने का प्रयत्न करते हैं, वे ही स्त्रियों के शत्रु हैं। जिस ढंग से आज की कन्याओं को शिक्षित किया जाता है, जिन खेलों को वह खेलती है, जिस बड़ी उम्र में वह शादी करने लगी है और जैसी लम्बी टांगों का वह प्रदर्शन करती है, उन सब से उसे तीव्र घृणा है। सहचर का चुनाव (दी चौयस आफ ए मेट) नामक पुस्तक में उसने इन सब का उल्लेख किया है।

र सर महाराजसिंह अपनी पत्नी के साथ।

उसका यह विश्वास है कि लड़कियों के अधिकांश स्कूल उनकी आवश्यकताओं की उपेक्षा करके पुरुषों के गुणों का विकास मात्र करते हैं। बहादुरी व साहस के खेलों के कारण युवती में पुंस्त्व का पुरुष की ही तरह विकास होने लगता है, जो पीछे से दूर नहीं हो सकता। स्त्रीत्व के विकास की अपेक्षा पुंस्त्व का विकास उन्हें नारीत्व व मातृत्व के अयोग्य कर देता है। उसने अनेक वैज्ञानिकों की सम्मति उद्धृत की है कि स्त्री के लिए संतान प्रजननको सर्वोत्तम आयु १८ से २३ वर्ष है। उन्हें १८ वर्ष से पूर्वही विवाह करना चहिए और अधिक से अधिक २५ वर्ष तक उन्हें अवश्य विवाह कर लेना चाहिए। इसी तरह एक या दो तीन संतान काफी हैं, इस विचार का भी वह विरोधी है। संतान का प्रजनन और पालन तो नारी का स्वाभाविक जीवन है, इस लिए इस पर कोई पाबंदी नहीं लगाई जानी चाहिए।

एंग्लो सेक्सन पुरुष लम्बी टाग वाली स्त्रियों को पसन्द करते हैं, यह विचार भी उसे क्रुद्ध व क्षुब्ध कर देता है। प्राचीन ग्रीक विचारक मानव सौंदर्य के लिए लम्बी पतली टागें व विशाल वक्षःस्थल आदि पसंद करते थे, पर वे तो युवा बालक को भी अपना प्रेमपात्र मानते थे और उसके लिए वे इन गुणों को आवश्यक मानते थे। इस लिए सौंदर्य के सम्बन्ध में उसी ग्रीक परम्परा का अनुकरण बिल्कुल वाहियात है

इस सप्ताह के समाचार

— सेक्रामेंटो (केलीफोर्निया) की आम सड़क पर एक नंगी स्त्री मोटर चलाती हुई जा रही थी, जिसे नंगे होने के अभियोग में अदालत में लाया गया।

उक्त स्त्री ने जज से कहा— 'मैं बाहर निकलना चाहती थी। लेकिन मेरा पति बाहर नहीं निकलने देता था। उसने मुझे बिना वस्त्र पहने बाहर निकलने की चुनौती दी। अतः बाहर चली आयी। जज ने स्त्री को ६० दिन की सजा या उसके बदले जुर्माने का दंड दिया। स्त्री ने जुर्माना अदा कर दिया।

— कनाडा के एक डाक्टर ने ब्रिटिश चिकित्सा के इतिहास में प्रथम बार एक २५ वर्षीया महिला को बेहोश करके ७ पौण्ड का बच्चा पैदा किया इसमें उसे कतई भी कष्ट अनुभव नहीं हुआ। डाक्टर ने उस महिला को दवा दी तो महिला को कुछ कुछ नींद आने लगी। जब तक महिला को अच्छी तरह नींद न आ गई, तब तक डाक्टर उससे धीरे धीरे बात करता रहा। डाक्टर ने उसे आश्वासन दिया था कि कुछ

[शेष पृष्ठ २१ पर]

क्या आपको पति से कोई शिकायत है ?

साधारणतः अधिकाश स्त्रियों को अपने पतियों से कोई न कोई शिकायत अवश्य रहती है। लेकिन उन्हें ज्ञात रहना चाहिए कि बहुत सी शिकायतें इस कारण रहती हैं कि पतियों को यह मालूम नहीं होता कि वह कई ऐसा कार्य कर रहे हैं। यदि उन्हें यह मालूम हो कि ऐसा करना पत्नी को दुःख देगा तो वे शायद स्वयं बहुत सी शिकायतों का अवसर न दें। इस लिए बहनों से अनुरोध है कि वे अति संक्षेप से उन शिकायतों का वर्णन करें, जो उन्हें अपने पतियों से है। जो बहन अपना पता न देना चाहे, न दें, लेकिन शिकायत और उसकी घटना में अत्युक्ति न हो। अखबार में नाम आदि बिलकुल प्रकाशित न किये जायेंगे। आशा है, इससे उन्हें लाभ होगा।

—सम्पादक

दक्षिणी अमेरिका की उलझनभरी पहेली

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा कोलम्बिया, अमेरिका]

क्रांतियों का देश

पिछले सप्ताह अचानक एक दिन दक्षिण अमेरिका के कोलम्बिया देश की राजधानी बोगोटा में भयंकर विप्लव हो गया। चौबीस घण्टे में ही प्रायः ३०० व्यक्ति मारे गये और अग्निकांड से करोड़ों की सम्पत्ति की हानि हुई। दो दिन बाद उपद्रव शांत हो गया और सारा का सारा अपराध कम्युनिस्टों के मत्थे मढ़ दिया गया।

यों तो दक्षिण अमेरिका के देश अपने विप्लवों के लिए परिचित हैं। आए दिन वहां क्रांतियां होती रहती हैं, सरकारें बदला करती हैं और नए नए विधान बनते हैं। इन सब का कारण समझने के लिए इतना कहना ही पर्याप्त नहीं है कि सारा दोष दुष्ट कम्युनिस्टों का है, क्योंकि दक्षिण अमेरिका में पिछली दो सदियों से यही दशा रही है जिसका कारण कभी शोषण, भूख, दरिद्रता और निराश्रितता बतलाया जाता था उसी का सामूहिक नाम अब 'कम्युनिज्म' बतलाया जाने लगा है।

बोगोटा में यह विप्लव उस समय हुआ, जब कि वहां २१ अमेरिकन देशों का नवां अधिवेशन हो रहा था और अमेरिकन सैनिक और आर्थिक एकता के राग अलापे जा रहे थे। बोगोटा के विप्लव के समझने के लिए हमें संयुक्त-राज्य और दक्षिण अमेरिका के देशों के सम्बन्ध पर दृष्टिपात करना होगा।

यदि इस सम्बन्ध के इतिहास पर दृष्टि डाली जाय तो यह देखकर आश्चर्य होता है कि संयुक्त राज्य ने दक्षिण अमेरिकन देशों के साथ वैसा ही व्यवहार किया है कि जैसा कि ब्रिटेन, फ्रांस, और इंग्लैंड ने समूचे एशिया में पिछली दो सदियों में किया। दक्षिण अमेरिकन देशों के नागरिकों में संयुक्त राज्य के प्रति उतनी ही शंका, अविश्वास और अमित्रता की भावना पायी जाती है जितना एशियायी व्यक्तियों में श्वेत युरोपियनों के प्रति। भारत की भांति ही दक्षिण अमेरिका भी साम्राज्यवादी पूंजीवाद से शोषित है। वहां भी निर्धनता, भुखमरी, निरक्षरता और राष्ट्रीय हीनता का अत्यधिक प्रसार है। काफी और रबर के जंगलों में काम करने वाले मजदूरों को कोको की पत्ती चबा कर अपना स्वास्थ्य नष्ट करने के लिए उसी प्रकार विवश किया गया है जिस प्रकार पश्चिमी राष्ट्रों ने चीन को अफीम खिला खिला कर अपना अधिकार स्थापित करने पर विवश किया था।

चुनाव के समय युद्धपोत

अनेकों बार दक्षिण अमेरिकन देशों में ठीक चुनाव के समय संयुक्त राज्य के युद्धपोत पहुंच जाया करते हैं और अपनी इच्छा के मुताबिक चुनाव हो जाने पर लौट आते हैं। पनामा, निकारगुआ, कोस्टारिका, मैक्सिको आदि में कई बार ऐसा हुआ। यहां तक कि अर्जेन्टाइना में वर्तमान अधिनायक पेरों को भी शासनारूढ़ करने का पूरा उत्तरदायित्व संयुक्तराज्य के सर है। पिछले महायुद्ध में मलाया पर जापान के अधिकार हो जाने पर ब्राजील के रबर के जंगलों में

काम करने के लिए संयुक्त राज्य ने ५०००० मजदूरों की भर्ती की थी। वे भयंकर जंगलों में काम करने के लिए भेजे गये थे। अचानक युद्ध की समाप्ति पर काम रोक दिया गया परन्तु वे मजदूर कहां गये इसका आज तक किसी को पता नहीं है।

ऐसी सहस्रों घटनाओं के कारण दक्षिण अमेरिकन देशों में संयुक्त राज्य प्रति सदा से ही अपार घृणा और अविश्वास रहा है। मैं संयुक्त राज्य के निवासियों में भी दक्षिण अमेरिकनों के प्रति घृणा और हीनता के विचारों का अभाव नहीं पाता। जिस प्रकार भारत के शोषण से ब्रिटेन, हिन्द एशिया के शोषण से हालेण्ड और हिन्द चीन तथा उत्तरी अफ्रीका के शोषण से फ्रांस वैभवशाली बने हैं, उसी प्रकार मुख्य रूप से दक्षिण अमेरिका के शोषण से संयुक्त राज्य वैभवशाली बना है। परन्तु संयुक्त राज्य का यह कुकर्म इसलिए छिपा रहा है कि उसने युरोपीय देशों के भांति दक्षिण अमेरिका पर राजनीतिक तथा सैनिक शासन करने की चेष्टा नहीं की — गो अप्रत्यक्ष रूप से होता यही रहा।

कम्यूनिज्म का हौआ

दासता, शोषण, भुखमंगी, निरक्षरता और अज्ञानता में ही कम्युनिज्म पनपता है। इन्हीं के कारण शोषित जनता को कम्युनिज्म के बहकावे में लाया जा सकता है। वह न रूस को जानती है न कार्ल मार्क्स से उसे कुछ वास्ता है। किसान चाहता है धरती पर उसे अधिकार हो। मजदूर चाहता है उसकी मजदूरी बढ़े, उसे इन्सान की तरह जीने और मरने के मौका मिले। ये सब कारण केवल पांच प्रतिशत शक्तिसंपन्न और धनसंपन्न व्यक्तियों के हाथ में हैं जो अधिकांशतः संयुक्तराज्य के पूंजीपतिवर्ग के हाथ की कठपुतली हैं।

क्यूबा, वेनजुएला तथा चीली में तो कम्युनिज्म का इतना प्रभाव बढ़ा कि मंत्रिमंडल में कम्युनिस्ट जा पहुंचे। यह स्थिति देख कर संयुक्तराज्य चौकन्ना हुआ। संयुक्तराज्य को यह कभी भी अभिलषित नहीं कि उसके पड़ोसी देशों में साम्यवाद का प्रभाव बढ़े। अतः पिछले कुछ वर्षों से संयुक्तराज्य ने 'पड़ोसियों से मित्रता बढ़ाने' की नीति अपनायी है, जिसका यथार्थ स्वरूप यह था कि दक्षिण अमेरिकन शासकों को संयुक्तराज्य की शक्ति और सहायता का आश्वासन देकर और शक्तिशाली बना दिया जाय तथा उदारदलों तथा मजदूर वर्ग को कुचल दिया जाय। यही हुआ। अर्जेन्टाइना, ब्राजील, चीली आदि में समाजवादी दलों को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया और ब्राजील, चीली, तथा कोलम्बिया में जनता के असंतोषस्वरूप प्रकट विप्लव को बहाना बना कर रूस से सम्बन्ध विच्छेद करने को विवश किया गया। इतना ही नहीं, अर्जेन्टाइना के अधिनायक पेरों जो युद्धकाल में संयुक्तराज्य के कोपभाजन थे, और जहां आज भी सहस्रों नाजी छिपे पड़े हैं, अचानक 'प्रजातन्त्रवादी' शासक बन गये और उन्हीं के जरिए अप्रत्यक्ष रूप से संयुक्त राष्ट्रसंघ की इच्छा के विरुद्ध संयुक्तराज्य फ्रांको स्पेन से सम्बन्ध बनाए हुए है।

एक ओर तो साम्यवाद के खतरे के कारण संयुक्तराज्य को दक्षिणी अमेरिका की मित्रता की चाह हुई तथा दूसरी ओर युद्धकाल में और सब स्थानों से कच्चा माल मिलने की कठिनता तथा दक्षिण अमेरिका में उनके बाहुल्य के कारण भी यह आवश्यक हुआ कि दक्षिण अमेरिका से मैत्री बढ़ायी जाय। ब्राजील की काफी और रबर, अर्जेन्टाइना का गेहूं और मांस, चीली का नाइट्रोजन, पनामा की नहर का रास्ता, ये सब संयुक्त राज्य की सुरक्षा के आवश्यक अंग हैं। पर्ल हार्बर की घटना ने यह प्रमाणित कर दिया कि सीधे अमेरिकन महाद्वीप पर आक्रमण करना कठिन नहीं है।

सं० रा० अमेरिका की नीति

इन सब दृष्टियों पर विचार करते हुए संयुक्तराज्य इस चेष्टा में संलग्न हुआ कि सब अमेरिकन देशों में एक ऐसी सैनिक संधि हो, ताकि किसी भी अमेरिकन देश पर बाहरी आक्रमण होने पर वह आक्रमण सब पर हुआ समझा जाय तथा सब एक साथ मिलकर उस आक्रमण का सामना करें। इसके बदले संयुक्तराज्य अपने खर्चे से सब अमेरिकन देशों को सैनिक दृष्टि से सुसज्जित करने को तैयार हो गया। युद्धकाल में सैन्य संचालन की सुविधा, सुगमता और शीघ्र सफलता के लिए यह आवश्यक है कि सबके पास एक सा सामान हो, एक से हथियार हों, सिपाहियों को एक सी सैनिक शिक्षा मिली हो तथा सबकी एक सी पोशाक हो तथा सब एक ही कमान के अन्तर्गत काम करें। इस सैनिक

'एकता' को लाने का उत्तरदायित्व संयुक्त-राज्य ने स्वयं लिया।

इतने बड़े 'त्याग' के बाद संयुक्त-राज्य यह आशा करता है कि युद्धकाल में सब देशों के कच्चे माल के उपयोग पर उसे स्वतन्त्रता होगी। बहुतेरी चेष्टा करने के पश्चात् २ सितम्बर १९४७ को ब्राजील की राजधानी राय दी जीनीरो में २१ अमेरिकन राष्ट्रों में एक सैनिक संधि हुई। यह संधि ११ वर्ष की निरंतर चेष्टा और वादविवाद का परिणाम था। सन् १९३६ में अर्जेन्टाइना की राजधानी ब्युनस आयर्स में 'अखिल अमेरिकन लीग' की स्थापना की गयी थी, जिसकी स्मृति में आज (१५ अप्रेल) को प्रतिवर्ष अखिल अमेरिकन दिवस मनाया जाता है। सन् १९३८ में पेरू की राजधानी लीमा में अमेरिकन देशों के परराष्ट्र-मंत्रियों की बैठक हुई थी। सन् १९४० में क्यूबा की राजधानी हवाना में इस बात का निश्चय किया गया कि किसी अमेरिकन देश पर आक्रमण सारे महाद्वीप पर आक्रमण समझा जायगा, परन्तु इसके बावजूद भी अंतिम क्षण तक अर्जेन्टाइना जर्मनी और जापान के विरुद्ध युद्धघोषणा करने पर एतराज करता रहा। अंत में बहुत जोर देने पर १९४४ में उसने युद्धघोषणा की। सन् १९४५ में मैक्सिको नगर में एक संधि द्वारा यह निश्चय किया गया कि यदि एक अमेरिकन देश अपने किसी पड़ोसी पर आक्रमण करेगा तो सब मिल कर उसका सामना करेंगे। राय दी जीनीरो की सैनिक संधि में हवाना और मैक्सिको के निर्णयों को एक में मिला कर वृहद रूप रेखा बनायी गयी।

परन्तु मित्रता बढ़ाने की इतनी चेष्टा के बावजूद भी दक्षिण अमेरिकन देशों में संयुक्तराज्य के प्रति कितना अविश्वास है, यह इस बात से भी प्रमाणित होता है कि उपर्युक्त संधि के दो महीने बाद ही पनामा देश ने अपने देश में अमेरिका को युद्धकाल में बनाए हवाई अड्डों का पुनः ठेका देना नामंजूर कर दिया और २३ दिसम्बर १९४७ को पनामा स्थित १४ संयुक्तराज्य के हवाई अड्डों से २००० अमेरिकन सेना को तुरन्त हट जाने की आज्ञा दे दी।

पनामा देश एक समय कोलम्बिया का एक प्रान्त था। सन् १९०३ में अमेरिका ने पनामा नहर बनाने के लिए इस प्रान्त के कुछ बागियों को भड़काया और सैनिक सहायता देकर कोलम्बिया से पृथक् हो जाने पर विवश किया। बागियों द्वारा प्रान्त के स्वतंत्र देश घोषित करने के ६ दिन बाद ही संयुक्त-राज्य ने नई सरकार स्वीकृत कर ली (हिन्दएशिया की दो वर्ष से की गई स्वतंत्रता की घोषणा तो संयुक्तराज्य ने स्वीकृत नहीं की)। बागियों ने संयुक्त-राज्य को नहर बनाने का ठेका दे दिया।

कोलम्बिया में इस कारण भी सदा से संयुक्तराज्य के विरुद्ध विद्वेष रहा है।

रायदीजीनीरो की सैनिक संधि के बाद संयुक्त राज्य इस चेष्टा में लगा कि किसी प्रकार दक्षिण अमेरिकन देशों को आर्थिक दृष्टि से अपने वश में कर लिया जाय। इसी उद्देश्य से कोलम्बिया की राजधानी बोगोटा में १७ मार्च से नया अखिल अमेरिकन सम्मेलन हो रहा है। दक्षिण अमेरिका। अर्जेन्टाइना संयुक्तराज्य की प्रतिद्वन्दिता करता है और चाहता है कि सबसे अधिक धनी और शक्तिशाली होने के नाते वह दक्षिण अमेरिका का नेतृत्व करे। इस सम्मेलन में भी संयुक्तराज्य ने अपने स्वार्थों के कारण ही जाते ही निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किये —

(१) सब अमेरिकन देश साम्यवादी दलों को गैरकानूनी घोषित कर दें।

(२) स्वतंत्र व्यापार, एक अमेरिकन देश को दूसरे अमेरिकन देश में पूंजी लगाने, व्यापार करने आदि की बिना रोकटोक इजाजत हो।

दूसरे प्रस्ताव का विशेषकर अर्जेन्टाइना ने तीव्र विरोध किया, क्योंकि इस प्रकार अमेरिकन पूंजीपति धड़ाधड़ दक्षिण देशों में आ धमकेंगे। इन प्रस्तावों के उत्तर में दक्षिण अमेरिकन देशों ने सम्मेलन में उपस्थित मार्शल से कहा कि युरोप में कम्युनिज्म को कुचलने तथा आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए तो अरबों डालर दिये जा रहे हैं क्यों नहीं दक्षिण अमेरिका में कम्युनिज्म का सामना करने तथा आर्थिक सुधार करने के लिए एक नई मार्शल योजना बनायी जाती। जार्ज मार्शल ने तुरंत कहा कि युरोप की आवश्यकता दक्षिण अमेरिका से अधिक है। सीधी बात यह है कि युरोप पर कम्युनिज्म का इतना प्रभाव हो चुका है कि इसे टैंक तथा डालर द्वारा कुचलने की जरूरत पड़ गई है परन्तु दक्षिण अमेरिका को संयुक्तराज्य केवल फुसला कर अपने वश में कर लेना चाहता है।

मार्शल के इस उत्तर से दक्षिण अमेरिकन सदस्यों में असंतोष बढ़ गया। यह देख कर मार्शल ने ट्रूमन को तार दी कि शीघ्र ही दक्षिण अमेरिका को थोड़े बहुत डालर दिये जायं। ट्रूमन ने उसी दिन— ६ अप्रेल को — अमेरिकन कांग्रेस से "दक्षिण अमेरिका की औद्योगिक उन्नति तथा जिन खनिज पदार्थों की संयुक्तराज्य को कमी हो गई है उनकी खोज के लिए ५० करोड़ डालर की सहायता देने की मांग की।" राष्ट्रपति की उपर्युक्त सहायता का संदेश स्पेनिश भाषा में विशेषरूप से तैयार कर बोगोटा में चालू सम्मेलन में सुनाया गया। परिणाम — "समाचार सुन कर सबने नाक सिकोड़ ली और सारे हाल में एक भी ताली नहीं बजी!"

ठीक ऐसे ही समय बोगोटा में रक्तपात प्रारम्भ होगया। इस का स्पष्ट उद्देश्य कोलम्बिया-सरकार के विरुद्ध इतना नहीं था जितना इस अखिल अमेरिकन सम्मेलन को नष्ट करने के प्रति था — उस सम्मेलन के, जिसे दक्षिण अमेरिका संयुक्तराज्य के स्वार्थों की प्राप्ति का साधन मात्र समझते हैं। संयुक्तराज्य उनसे सैनिक चाहता है, कच्चा माल चाहता है, उनके देशों में अपनी पूंजी लगा कर व्यापार करना चाहता है परन्तु शोषितों और भूखों के लिए एक कड़ी भी खर्च करना नहीं चाहता। १५—४—४८

खरंजे की ईंट

[श्री राजेन्द्र शर्मा]

ननद का ब्याह, बहू की मुसीबत। बुराई भाग्य के सिर। दो लड़कियां क्या हो गईं थीं, जान का स्यापा हो गया। बुआ की दो बेटियां, वह निःसंतान; चाची दस साल की पुरानी बहू हो गई, वह निःसंतान। यहां साल भर बाद ही दूसरी बेटी हो गई तो अपने पराये हो गए। ससुर के इस प्रौढ़ावस्था में छठी बेटी और हो गई। अच्छा होती, तो श्रोठ पर अंगुली आ सकती। पर बेटे की सन्तान से प्यारी, आप की संतान बन गई — बेटा क्योंकि चार मास पहले अलग हो चुका था। और अब बुलावे से बहन के ब्याह में क्या आया, सबकी आंखों का कांटा बन गया — जो चुभता है, पर निकाला नहीं जा सकता।

सर्दी के दिन और छोटी छोरियों का साथ। बहू काम करे तो अच्छी है ही; पर थानी बच्चियों का रोना, भूखे बिलखना ब्याह के घर में कौन सुनता। जब बहू-बेटे की भूख, नींद, आराम — उपस्थिति, अनुपस्थिति की ही कोई गिनती न थी, तब उन छोरियों की तो क्या चलाई!

उस रात बहू को बराबर के होती रहीं। कल के फेरे होने वाले हैं, एक फिक्र हो गया। बुआ बोली — "दिल्ली से इस वायदे में क्या लाए, जान को मुसीबत हो गई। रातों नींद, न दिन को चैन।"

और बराबर के कमरे में पड़ा माधव यह सुनकर सोचता रहा कि आखिर इनकी नींद किसने छीन ली? बड़े कमरे में गद्दे की गरमाई और लिहाफ के आलस्य में मुंह छुपाये यह स्वार्थभरी सोकबाप की कराह कैसी? नीचे बहू उल्टियां कर रही है, तो इन्हें यहां ऊपर मजबूरी ने क्यों घेर लिया है? माधव ने पास सो रही बड़ी लड़की की ओर एक बार विवशता से देखा; वह सो रही थी। एक हाथ को कलेजे से लगा बाप ने फिर झपकी लेनी चाही। पर नीचे से आवाज आई कराहने की, बेबसी की पुकार। माधव का हृदय भर आया। नेत्र भीग गये सोचा — कोई पानी भी न जाने देगा या नहीं!

तहसील के घंटे के बारह सुन पड़े और रात्रि के सन्नाटे में माधव ने अपनी कोठरी का दीपक जरा तेज कर दिया। बेचैनी भी दिए की लौ की तरह बढ़ी। क्या आखिर इन उल्टियों में 'उसके' उसके कलेजे को नीचे वालों में से कोई नहीं थाम रहा? पास तीन ननदें सो रही हैं। बराबर के कमरे में सास भी अपनी नवजात कन्या को लिए शयन कर रही है। सास की बहन भी है और उनकी सेविका भी। पास लेट रहे सभी बन सुप क्या हो रहे हैं, क्या बहू की पीड़ा ने सबको गहरी नींद का वरदान दे दिया है? ऊपर बुआ, दादी, दादी की बहू, बुआ की दो ब्याही-थ्याही बेटियां और मासी-भाभी, सब सो गए? विक्षिप्त और क्रोध की ज्वाला से कुछ कुछ झुलसता माधव सोचता रहा। और बीच-बीच में बुआ का स्वर — "सदा की बीमार है, कितनी उल्टियां हो रही हैं" — उसके दिमाग पर पागलपन का पर्दा ढक रहा था।

नीचे बरामदे में बाबा, फूफा, चाचा-सभी तो सो रहे हैं और माधव की बेबसी उसके पैरों की जंजीर बन गई है। नीचे बहू के पास जाकर उसकी पीड़ा को समझे या कलेजे को थाम वह बेहयाई करे तो कैसे करे?

कि नीचे से मामा जी की आवाज आई — "अरे, भई! छोटे को बुलाओ, जरा पूछे तो, बहू के दर्द कहां हो रहा है?!" कान लगाकर 'छोटे' ने भी सुना। आवाज उसे नीचे खेंच रही थी। इतने में फूफा ने भी मामा का कथन दोहराया — सहानुभूति दिखाकर भी तो माधव की सहानुभूति न पा सके। नीचे उतरते-उतरते माधव का मन मामा के प्रति कृतज्ञता से भर आया। वह डाक्टरी करते थे। बोले — "पूछ भई, क्या तकलीफ है? फिर चल, दवा ले आएं।" सामने के कमरे से धर्मशाला का चौकीदार बेचारा नत्था मासी भी आ गया बाहर। बहू ने इसे में एक के और की। नत्था बोला — "बाबू जी! मेरी लालटेन ले आइए, जरा देखो तो निकल क्या रहा है?" तब माधव ने मशीनवत् लालटेन उठाई और देखा। बहू को पानी दिया और दिया सहारा। उसने घबराहट भरा एक धीमा स्वर सुना — "मेरा कलेजा उड़ा जा रहा है!" बहू लेटी — जमीन पर बिस्तरा था। अंधेरा घुप्प। सब दिये बुझा कर सोये थे। नत्था की आवाज माधव ने सुनी। मामा जी से वह कह रहा था— "पंडित जी! मेरे पास कपूर का अर्क है, इन्हें बताशे में दे दो।" माधव को सांत्वना-सी मिली। बहू के पेट पर से हाथ हटा कर मा के कमरे से मोमबत्ती उठा लाया। जला कर मा के पास ही आले में रखी और बोला — "यह बेचारी रो रही है, इसे दूध पिला दो।" मां ने उनकी नवजात बहन को दूध पिलाने के लिए करवट ले ली, झुंझला कर बोली — "अंधेरे के मारे पड़ी हूं। कैसे दूध पिलाऊं!" माधव का हृदय विदीर्ण हो गया। यह मा अब कैसी हो गई जो पास के कमरे से उठकर दर्द से तड़पती बहू के पास आप न बैठी तो न सही, दीवा भी जला कर न रख सकी।

नत्था कपूर का अर्क ले आया। माधव क्या जागा, दो क्षण को सभी जैसे जागे हो गये। मामा जी बोले— "पुराना है, बिगड़ तो नहीं गया?" नत्था ने कहा — "देख लो, जो है यही है।" माधव जैसे एक बार फिर निराश हो गया। पर मामा जी निराशा से घिरने वाले होते तो करवे के लोकप्रिय 'डाक्टर' कैसे बनते? अर्क चख कर वह बोले — "ठीक है, बताशा लाओ।" और माधव तो बताशा लिए खड़ा ही था। लालटेन उठा कर मामा जी के हाथ तक प्रकाश पहुंचाया और उन्होंने सावधानी से दो बूंद डाल दीं। बहू को बताशा देकर माधव बैठ गया। नत्था ने फिर कहा — "बाबू जी, भट्टी में आंच है, इनका पेट सेक दो।" और नत्था स्वयं ही आग निकालने लगा। माधव भी अंधेरा टटोलते हुए उसके पास तक गया, आंच ले आया। अधजले, राख के कोयले, माधव ने सोचा— इस पीड़ा में संबंधियों की तरह यह कोयले ही क्या सगे होंगे?

बच्ची की गद्दी में से रुई नोंच वह बहू का पेट सेकने लगा। कराहट कम थी, नींद जैसी सबकी गहरी हो चली। बहू कहने लगी — "आप सो जाइये। सर्दी में तबीयत खराब हो गई आपकी तो छोरियों की और भी मिट्टी खराब होगी।" पर सेकता रहा माधव। थोड़ी देर में बहू फिर उठी। चित्त ने फिर बाहर आकर जैसे संबंधियों की किनारे कशी पर लानत छेड़ दी। बहू को पानी देते देते माधव सोचता रहा — सारा पकवान खिलवा कर 'नौकरानी' को मिला क्या — बासी पूड़ियां! मन में आया — अभी पास बहती गंगा को पार कर — असीम दुनिया में कहीं विलीन हो जाय।

पेट सेकते सेकते माधव ने देखा, बहू को नींद आने लगी। बरामदे से मामा जी ने पुकारा — "बबू! एक बताशा और दे दो।" और बहू बताशा खाकर कुछ सोने-सी लगी। माधव का टुकड़े टुकड़े दिल जैसे एक हो जाना चाहने लगा। बड़ी बच्ची का ध्यान आया और वह बहू को सोता छोड़ कर ऊपर आ गया। पास के कमरे से सुन पड़ा — सारी रात हो गई, आज तो छोटे की बहू की उल्टियों ने सोने नहीं दिया।" इस बार माधव के मन में बुआ के प्रति ग्लानि भर आई। और और मासी ने पूछा थोड़ी देर बाद ही— "अब कैसा जी है, तेरी बहू का!" तो माधव ने शुष्क उत्तर दे दिया — "ठीक है!" और वहां दिल्ली में पड़ोस में रहने वाली मासी ने कहा — "उल्टिया तो इसे चाहे जब होती रहवें हैं।" मानो माधव का घाव हरा हो गया। दादी के कमरे के आगे से तभी वह लघुशंका के लिए गुजरा तो सुन पड़ा — "खावे क्या कम है! निरा बासी ठूंसा है अदा के मारे।" तो हरे

[शेष पृष्ठ १८ पर]

रूस के 'प्रेमचन्द' गोर्की का घर

[श्री लियो निकोलिन]

वह भाव भूलने असम्भव हैं, जिन को लेकर हम सोवियत लेखक गोर्की के घर जाया करते थे, जब आप जीवित थे। बारह वर्ष हो गए, जब वे हमें छोड़ कर चले गए। जब हम उस बड़े कमरे में प्रवेश करते हैं जिस में केवल एक खिड़की है, हमारे हृदय में एक गहरे और गम्भीर भावों की लहर दौड़ जाती है। यह गोर्की अपने अतिथियों का स्वागत किया करता था। अब हमें शोक के साथ याद आते हैं कि अब कभी वह लम्बा और झुका शरीर दहलीज पर नहीं आयगा। अब कभी भी हम उसकी परिचित धीमी आवाज नहीं सुन सकेंगे।

कलाकारों ने उसे हमारे लिए जीवित रखा है गोर्की की बोलती तस्वीर बनायी गई थी, लेकिन जिन्हें उसके निकट-सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उसके हलके हलके कदमों की आवाज को वे ही याद रख सकते हैं, वे ही उनके हाथों की कोमल गति को जब वह उन से कोई किताब उठाता था, उसकी आंखों की चमक को 'जब वह देशद्रोहियों या पापी जन का जिक्र करता था, याद कर सकते हैं।

इस बड़े कमरे में गोर्की विद्वानों राजनीतिज्ञों, मजदूरों, लेखकों, हवाबाजों और अन्य लोगों से बातचीत किया करता था। इसी कमरे में नये प्रकाशनों की योजनाएं बना करती थीं। यहां 'गृह-युद्ध का इतिहास पर बहस हुई थी। इसी कमरे में सोवियत साहित्य की आलोचना के लिए संस्था बनाई गई थी।

हम अगले कमरे में प्रवेश करते हैं। यह पुस्तकालय है, जहां असंख्य किताबें शीशे की अलमारियों में सजी पड़ी हैं। पुस्तकें सब विषयों पर हैं। लेखक जब चाहता था, इनको उठा सकता था। उस का ज्ञान गम्भीर और महान था। उसमें संसार की वे उत्कृष्ट बातें आ जाती थी, जो उस समय तक ज्ञात थीं। कभी कभी उसे विद्वान मिलने आते थे, जिनका क्षेत्र इतिहास, पृथ्वी इतिहास, वनस्पति ज्ञान होता था। जब वे गोर्की से अपने विषय पर बात चीत करते थे तो वे जानते थे कि वे उस से बातचीत कर रहे हैं, जो उनके विषय को भली भांति जानता है।

यहां दर्शन पर अधिकतर बातचीत हुआ करती थी। गोर्की ज्ञान का स्रोत था। उसे दर्शन कण्ठस्थ थे। वह उनकी टीका कर सकता था। गोर्की पक्का भौतिकवादी था। इस दृष्टि से वह विरोधियों को आड़े हाथों लेता था। इस लेखक के भाषण और इसकी प्रतिभा उनके लिए विशेष महत्व रखती थी, जो उससे मिलने अथवा बातचीत करने आते थे।

प्रायः गोर्की के कमरे में ही कोई नया लेखक अपनी कृति भेंट करने आता था। शायद वह उस की पहली किताब या लेख होता था। समय मिलने पर गोर्की उसे ध्यान से पढ़ता था, अपने हाथ से उसकी टीका करता था। सम्पादन में उसकी प्रतिभा अनोखी थी।

गोर्की के घर पर हमने शामको कुछ ऐसे दिन बिताए हैं, जिनको भूलना असम्भव है। जो लोग कमरे में एकत्रित होते थे वे लेखक, वैज्ञानिक, कलाकार थे। बहस गरमागरम होती थी। बीच में गोर्की होता था जो बहस को सीधे मार्ग पर चलाया करता था। उसका अनुभव विशाल था। उस में संगठन शक्ति अनथक थी। वह जानता था कि ठीक विचार को किस तरह पकड़ना है। यह बैठकें हमारे मन को उत्साह देती थीं और उसे गम्भीर बनाती थीं।

अपने कमरे में गोर्की ने अनेक लेखकों का अध्ययन किया। यह उसके समकालीन और आने वाले लोगों के लिए महत्व की बात है। जब आप गोर्की के कमरे में प्रवेश करते हैं तो आप परिचित वस्तुओं को डेस्क पर पड़ा देख सकते हैं। इस पर ऐनक और रंग बिरंगी पैन्सलें मिलेंगी। आप विचार करें कि एक किताब लिखनी आरम्भ की गई है। लिखाई लेखक के व्यक्तित्व को प्रकट करती है। गोर्की लायब्रेरी में है। आप उसके कदमों की हलकी आहट को और उसकी आवाज को सुनेंगे। इसी डेस्क पर क्रोध से लेख लिखे गए और यह अमर पंक्ति भी यहीं लिखी गई 'यदि शत्रु हथियार न डाले तो उसे नष्ट कर दो।'

उसकी अपनी शान थी — प्रभावशाली रूप था। साथ ही गोर्की सीधा और दयावान था। वह बिलकुल सादा था। उसे इस बात की कोई इच्छा नहीं थी कि लोग उसे जाने। अपनी प्रसिद्धि पर उसे लज्जा आती थी, लेकिन उसका स्वागत शान से होता था, चाहे वह बोलशोई थियेटर में हो और चाहे ट्रेड यूनियन हाउस में हो। उसकी आंखों में और उसके चेहरे पर एक शक्ति की झलक थी, जिसका विशेष महत्व था।

गोर्की जब अपने देहाती घर के बरामदे पर खड़ा होकर प्रकृति को निहारा करता था, तब [विशेषकर प्रभावित करता था। केन्द्रीय रूस की भूमि उसे बहुत प्यारी थी। मास्कावा नदी, हरे हरे खेत, बसन्त की हरयाली उसे बहुत सुन्दर लगती थी। इसी बरामदे पर खड़े होकर स्तालिन और गोर्की बातचीत किया करते थे। चित्रकार गेरेसी मोव ने इस दृश्य को खूब चित्रित किया है।

गोर्की का नाम आने वाली सन्तति के लिए अमर रहेगा। हम देश के उन भागों के लिए सदा स्नेह का भाव रखेंगे, जो गोर्की को प्रभावित करते रहे और उसे खुशी देते रहे। वह घर हमें प्यारा है, जो वोल्गा शहर में है और जिसका आधुनिक नाम गोर्की है। इस घर में लेखक ने कष्ट का बचपन गुजारा था। हमें मलेया में वह घर भी याद है जहां पर गोर्की ने जीवन की अन्तिम घड़ियां बिताई थीं। गहरे शोक और अतीव गर्व के साथ उस महान समकालीन लेखक के देहाती घर में हम प्रवेश करते हैं। वह हमारा मित्र था। इस घर में एक पवित्र और प्रतिभाशाली जीवन का अवसान हुआ था।
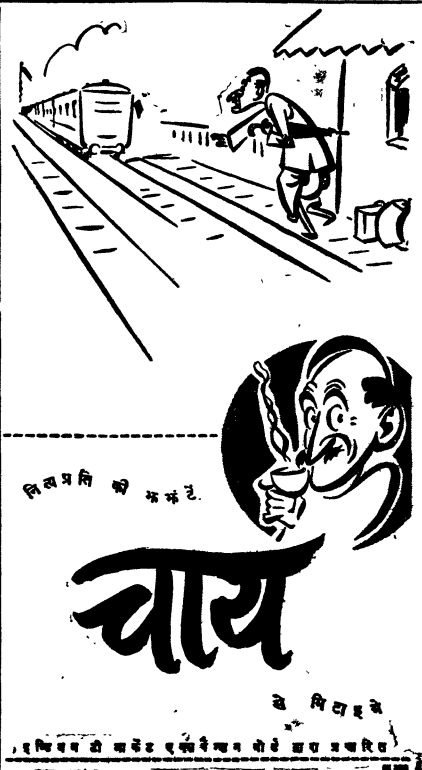
क्या आप जानते हैं ?

फलों व फूलों को पेटेंट कराइये

अमेरिका में कलम लगा कर अथवा स्थानान्तरित करके नये नये फल या फूल पैदा करने की प्रथा है और विभिन्न कृषिविशेषज्ञ ऐसे फलों व फूलों को अपने नाम से पेटेंट कराते आये हैं। कुहसाना के एक बाग में सेब का एक पौदा बोया गया कुछ समय बाद उसके मालिक ने उसे तोड़कर फेंक दिया। कुछ वर्ष बाद उस मालिक ने देखा कि वहां एक नये किस्म के बढ़िया सेबों का दरख्त उग आया है। उसने उस किस्म के सेब को पैदा करने का अधिकार समस्त अमरीका में पेटेन्ट करा लिया। आज वह वहां के मालदार आदमियों में है।

लेकिन पेटेंट की ऐसी दरख्वास्त एक बढ़िया कागज पर फल फूल के रंग और पत्ते आदि के पूर्ण वास्तविक चित्रण के साथ जानी चाहिए। उपर्युक्त चित्र में चित्रकार महिला पेटेंट के लिए अंगूरों के एक गुच्छे का चित्र बना रही है।

बमवर्षक जमीन पर

बी—२६ बमवर्षक वायुयान को जमीन पर उतरते समय सहारा देने के लिए आठ पहिए आवश्यक होते हैं। एक बमवर्षक वायुयान का भार ६५ टन होता है। आठ पहियों के कारण वायुयान ऐसे स्थानों पर भी ठहर सकता है जहां अधिक बोझ के कारण २४ पहियों वाला धंस जाता है।

टर्की मुर्गों की वृद्धि

अमेरिका में टर्की मुर्गों की पैदावार पिछले दस सालों में करीब दुगनी हो गई है। इंग्लैण्ड व अमरीका में बड़े दिनों की पार्टियों में इस पक्षी का मांस बहुत पसन्द किया जाता है। इस वर्ष ३ करोड़ ८० लाख टर्की मुर्गे ज्यादा पैदा किये गये। यह वृद्धि इस लिए हो सकी कि जो काम मनुष्य इसके पालन पोषण के लिए करता था अब वह बिजली की मशीनें से होने लगा है।

१८ वीं सदी में चेचक का टीका

यदि चेचक की बीमारी किसी शहर में फैली है तो प्रायः सभी टीका करा लेते हैं अन्यथा इस बीमारी से लाखों आदमी मर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर १८ वीं सदी में यूरोप में चेचक से साढ़े चार करोड़ आदमी मर गये और जब यह बीमारी १७०७ में आइसलैण्ड में पहुंची, तो वहां की एक तिहाई आबादी ही इसका शिकार हो कर नष्ट हो गई।

उपर्युक्त चित्र में प्राचीन काल का एक दृश्य दिखाया गया है जब कि लोगों को टीका करने के लिए डाक्टर बछड़ों को उनके घर ले जाते थे ताकि शरीर से द्रव निकाल कर आदमियों को टीका कर सकें।

१७ अरब डालर !!!

प्रश्न का वस्तुतः क्या अर्थ है? आपका उत्तर होगा कि दस हजार लाख। लेकिन क्या आपने कभी ख्याल भी किया कि एक अरब कितनी विशाल राशि होगी।

यदि हम एक अरब मिनट पीछे जावें तो हम १२ वि० सं० (४५ ई० पू०) में पहुंच जावेंगे। यदि आप १ डालर के एक अरब नोट लेकर एक दूसरे के साथ लगाते जावें तो नोटों की यह पंक्ति पृथ्वी की चार बार प्रदक्षिणा कर लेगी।

तब आप सोचिये कि १७ अरब डालर—मार्शल योजना के १७ अरब डालर—कितनी कल्पनातीत राशि होगी।

ऊपर के एक चित्र में एक डालर का सिक्का है। यदि १७ अरब डालर एक के बाद एक बिछाये जावें तो वह पंक्ति चन्द्रलोक तक जाकर वापस पृथ्वी पर लौट आवेगी और तब भी वह डालर पंक्ति समाप्त न होगी।

खानों की जहरीली गैसें

यह खानों के ऊपर का वायु कितनी जहरीली गैसों से पूर्ण हो जाता है।

उदाहरण के लिए एक बड़ी अमेरिकन खान की जो प्रतिदिन १०००० टन कच्ची धातु निकलती है चिमनी प्रति २४ घन्टों में निम्न लिखित जहरीली गैस निकाल कर वायु में मिला देती है—

सखिया की गैस — २७ टन
एण्टमनी गैस — २ टन
सिलिकियस गैस — ४५ टन
गंधक की या अन्य
जहरीली गैस— २३ टन

कभी प्रतिकूल परिस्थितियों में ये गैस और भी ज्यादा मात्रा में निकल कर मनुष्य या अन्य प्राणियों को मार तक देती हैं। उपर्युक्त चित्र में इसी तरह दूषित वातावरण का एक दृश्य दिखाया गया है।

ये भारतीय संस्कृति के विरोधी !

[डा० रघुवीर एम० ए०, ओल्ड असेम्बली, नागपुर]

भारत में भारतीय शब्दावली का विरोध करने वाले सज्जन विद्यमान हों यह अंग्रेजी राज्य की देन है। अंग्रेजी शिक्षा को आरम्भ करते समय १८२८ ई० में लार्ड मेकाले ने भविष्य-वाणी की थी कि अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा हम ऐसे भारतीयों का सर्जन करेंगे जो रंगरूप में तो काले पीले होंगे किन्तु जिनका मस्तिष्क और दृष्टिकोण सर्वथा अंग्रेजी होगा। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अंग्रेजी शासन ने अपनी सम्पूर्णशक्ति भारतीयों को अभारतीय बनाने में लगा दी।

जो भारतीय देशी शब्दावली के विरोधी हैं उनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

(१) स्कूलों और कालेजों के अध्यापकों ने बाल्यकाल से अंग्रेजी का परिशीलन किया है और उनकी स्थिति अब यह है कि उनको अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में लिखना और बोलना कठिन लगता है। इन लोगों को भारतीय शब्दावली सीखना बड़ा कठिन कार्य प्रतीत होता है। इन में से अधिकांश लोगों का यह प्रयत्न होगा कि अंग्रेजी शब्दावली ज्यों की त्यों बनी रहे। ये लोग देश के भविष्य निर्माण के शत्रु हैं। दो-चार मास के परिश्रम से बचने के लिए भारतवर्ष को सदा के लिए ये लोग अंग्रेजों तथा अंग्रेजी का दास रखना चाहते हैं, क्योंकि यह तो निश्चित है कि यदि हम ने आज अंग्रेजी के शब्द लिये तो भविष्य में भी शब्दों के लिए हमें इंगलैंड जाना पड़ेगा।

मान लीजिये, हम ने अपना मौलिक शब्द 'भास्वर' न लेकर अंग्रेजी का शब्द 'फास्फोरस' लिया तो उसके साथ सम्बद्ध फास्फारिक, फास्फेट, फास्फिल, फास्फोरिक आदि सैकड़ों शब्द लेने अनिवार्य हो जायेंगे। इतना ही नहीं, इन अध्यापकों के अनुसार हम सोना, चांदी, तांबा आदि प्रचलित शब्दों का प्रयोग तो कर लेंगे किन्तु इनसे बने हुए नाम—विशेष हमें अंग्रेजी के ही रखने होंगे। सोने या सुवर्ण का विशेषण सुवर्णीय न होकर 'औरिक औरेट' आदि होगा। इसी प्रकार एक, दो, तीन आदि संख्या वाचक शब्दों को भी हम अपनी भाषा में प्रयुक्त न कर सकेंगे। इन के स्थान में मोनो, डाई, ट्राई, टेट्रा आदि शब्दों का प्रयोग करना होगा। मनुष्य के जीवन का कोई भी अंग नहीं जिसमें हम अपने पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग कर सके। हमारी लिपि का प्रयोग भी वैज्ञानिक सूत्रों के लिए न हो सकेगा, ऐसा हमारे वर्तमान शिक्षा-शास्त्रियों का विचार है। जब कभी पारिभाषिक शब्दों के प्रतीक का व्यवहार करना होगा तो उनके प्रतीक भी रोमन और ग्रीक से लिए जायेंगे।

क्या हम लोग जंगली हैं, असभ्य हैं ? क्या हमारी अपनी संस्कृति में यह क्षमता नहीं जो अपनी भाषा के अन्दर अपने शब्दों, सूत्रों और प्रतीकों का निर्माण कर सकें ? मैं और मेरे मित्र वैज्ञानिक विद्वान् जिनकी संख्या १०० से अधिक है, भिन्न भिन्न विषयों की शब्द रचना पर श्रम करते रहे हैं। और हमारा अनुभव है कि संसार का कोई विचार अथवा वस्तु नहीं है जिसके लिए हम अपना नाम न रख सकें। अभी तक हम लोगों ने रसायन, पदार्थ विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, प्राणिशास्त्र, रोग जीवाणुशास्त्र, पाश्चात्यभैषजशास्त्र, गणितशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि अनेक विषयों के १ लाख से अधिक शब्दों का संचय और निर्माण किया है। भारतीय संस्कृति के प्रेमियों में जो निराशा आज से ५ वर्ष पहले थी उस के लिए आज स्थान नहीं। प्रत्येक क्षेत्र के लिए भारतीय-शब्द विद्यमान हैं। जिस किसी को आवश्यकता हो वह निस्संकोच हम से मंगा सकता है।

(२) अध्यापकों के पश्चात् बड़े बड़े राजनैतिक नेता लोग हैं जो अंग्रेजी के मोह जाल में उलझे हैं। इनके पास इतना समय नहीं कि ये भारतीय शब्दों का अभ्यास करें और अंग्रेजी के शब्दों को सर्वथा भुला दें। अंग्रेजी को भुलाना अपने शब्दों को सीखने की अपेक्षा अधिक कठिन है। किन्तु जब तक राजनैतिक नेता इस बात का महत्व अनुभव न करेंगे और समय न निकालेंगे तब तक भारतवर्ष की दासता का अन्त न होगा।

उत्तर भारत में रहने वाले दक्षिणी लोग हिन्दी का नाम सुन कर घबड़ा उठते हैं। यद्यपि दक्षिण में प्रत्येक नगर में सैकड़ों नरनारी मिल जायगे जिन्होंने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से हिन्दी का अभ्यास किया है, किन्तु उत्तरी भारत में जो दक्षिणी लोग बसे हुए हैं और ऊंचे पदों पर नियुक्त हैं वे हिन्दी को कुछ अच्छी दृष्टि से नहीं देखते, और उनमें हाहाकार मचा हुआ है कि यदि हिन्दी राष्ट्र भाषा बन गई तो हमारा क्या बनेगा। कुछ पारसी और कुछ मुसल-मान भी इनके साथ मिल गये हैं।

भारतीय शब्दावली का मूल स्रोत एक मात्र संस्कृत है। दस वर्ष के निरंतर श्रम के पश्चात् तथा भारतवर्ष की उत्तरी और दक्षिणी भाषाओं के शब्द कोषों का अध्ययन करने के पश्चात् यह परिणाम निकाला गया है कि भारत-वर्ष को एक बनाने वाली लगभग ६०० धातु हैं। इनका प्रयोग किसी न किसी रूप में भारत की प्रत्येक भाषा में होता है। इसी प्रकार २० उपसर्ग हैं और लगभग ८० प्रत्यय हैं। इनका भी प्रयोग सर्वत्र होता है। जो भी पारिभाषिक शब्द इनके आधार पर बनाये जायेंगे वे भारतवर्ष की समस्त भाषाओं के लिए स्वीकार्य होंगे। इस उपसर्गों, प्रत्यये और धातुओं को वश में रखने वाले भगवान् पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि हमारे पथ प्रदर्शक हैं। इनके पद चिन्हों पर चलते हुए हम निर्भय रूपेण वैज्ञानिक शब्दावली के क्षेत्र में प्रगति कर सकते हैं।

पूर्वोक्त बातों से स्पष्ट है कि भारतीय शब्दावली के लेने से विभिन्न प्रांतों में एक नयी एकता की शृंखला बन जायगी। इस शृंखला पर आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक हलचलों का प्रभाव न पड़ेगा। इस शब्दावली द्वारा भारतवर्ष के भूत, वर्तमान और भविष्य एक लड़ी में पिरोए जाएंगे।

सांस्कृतिक क्षेत्र में भारत अकेला नहीं है। भारतवर्ष के पीछे चलने वाले लंका, बर्मा और श्याम आदि देश हैं। इन देशों में अब भी संस्कृत के पारि-भाषिक शब्दों का प्रयोग होता है। जब कभी नये शब्दों की आवश्यकता होती है तभी ये लोग संस्कृत का आश्रय लेते हैं। इस सम्बन्ध में मैं एक एक विषय को लेकर अलग अलग लेख दूंगा, अतः यहा पर अधिक विवरण की आवश्यकता नहीं है।

अन्त में हमारा आदर्श इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है कि हम राजनैतिक स्वतन्त्रता को ही पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं मानते। हमारे लिए सांस्कृतिक स्वतन्त्रता नितान्त आवश्यक है तथा सांस्कृतिक स्वतन्त्रता में अपनी भाषा की स्वतन्त्रता का विशेष स्थान है। हम आगे बढ़ना चाहते हैं और इस प्रगति में हमको अपनी प्राचीन निधि से जो कुछ रत्न उपलब्ध हैं उनको हम साथ लेकर आगे चलेंगे, जिससे कि हमारी प्रगति अधिक से अधिक हो। हम अंग्रेजों का राज्य जाने के पश्चात् उनकी भाषा की दासता से कभी भी अपना मस्तिष्क निगडित न रहने देंगे। भगवान्, मैं यह शक्ति दो कि हम इन शृंखलाओं को तोड़ कर परे फेंक दें और हमारे देशवासियों को सुबुद्धि दो कि वे आलस्य और प्रमादवश अपनी माता हिन्दी और अपनी मातामही संस्कृत से घृणा न करें। किन्तु उनके चरणों की शरण लें। क्योंकि जिस किसी ने भी अपने मातृजन का निरादर किया उसका संसार में कहीं भी आदर न हुआ।

अंग्रेजी शब्दावली के रखने से हिन्दी का क्या स्वरूप बनेगा, हिन्दी कैसी भौंडी, नकली और पंगु होकर अंग्रेजी दासता की बेड़ियों के भार में दबकर भूमि पर गिर जायगी और उसके लिए सांस लेना किस तरह दुर्लभ हो जायगा, इसको हम अन्य लेख ४ में स्पष्ट करेंगे।

जहां द्वितीय विश्व युद्ध की योजना बनाई गई थी। इंग्लैण्ड के युद्ध मन्त्रालय के इसी कमरे में युद्ध की गुप्त योजनाएं बनती था दीवारों पर लगे मानचित्र युद्ध स्थिति के निश्चय में सहायक होते थे। युद्ध के दिनों में मि० चर्चिल ने अपना शयनकक्ष भी यहां बनाया था।

इस घटनाचक्र को किस दृष्टि से देखता है?

ब्रुसेल्स, पेरिस और वाशिंगटन

[एम० यूस]

तीन महत्वपूर्ण घटनाएं अभी अभी हुई हैं। १६ देशों की पेरिस कान्फ्रेंस, पश्चिमी यूरोप के पांच देशों का सैनिक समझौते पर हस्ताक्षर और ट्रूमैन का कांग्रेस की विशेष सभा में भाषण। इनसे मालूम होता है कि अमेरिका दुनिया में फैलने वाली नीति का अनुकरण कर रहा है। इसके लिए वह बहुत अधिक शक्ति लगा रहा है। यह तीन घटनाएं ब्रिटेन की विदेशी नीति पर भी प्रकाश डालती हैं, भले ही यह घटनाएं अमरीका के आदेशानुसार हुई हैं।

पेरिस कान्फ्रेंस में वाशिंगटन से आज्ञा पाकर बेविन ने प्रस्ताव पेश किया कि पश्चिमी जर्मनी को मार्शल-योजना में शामिल किया जाए। यह इस सभा का मुख्य परिणाम था। सभा को बिजली की तेजी से चलाया गया। यह एक पुरानी योजना के परिणामस्वरूप है जिसके अनुसार पश्चिमी जर्मनी को पश्चिमी योरुप का आर्थिक आधार बनाया गया। इस को इस तरह संगठित किया जा रहा है जिससे अमरीका की सैनिक आवश्यकताएं पूरी हो जाएं। पिछली गर्मियों में जब मार्शल योजना की घोषणा की गई तो सोवियत सरकार में कहा गया था कि इसका आशय पश्चिमी योरुप को सैनिक और आर्थिक पुल बना कर अमरीका अपना उल्लू सीधा करना चाहता है। जर्मनी के भारी उद्योगों को युद्ध के लिए वह प्रयोग करना चाहता है। उस समय मार्शल योजना के वकीलों ने इसे अस्वीकार किया था। देखना यह है कि अब ये क्या कहेंगे।

इसके बारे में ब्रिटिश नीति ने ब्रुसल्स में उत्तर दे दिया है रूर के भारी उद्योगों को हाथ में लेने के एक दिन बाद बेविन ने सैनिक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। यदि हमें यह ज्ञात हो कि इस समझौते में क्या लिखा है, तो भविष्यवाणी की जा सकती है कि जर्मनी फिर जबरदस्ती करेगा। ब्रिटिश नीति को समझने के लिए ब्रुसल्स समझौते के असली आशय को पाना होगा। इसका असली अर्थ यह है कि पच्छमी योरुप को ब्रिटेन समेत एक फौजी अड्डे में बदला जाए, ताकि अमरीका इसमें कूद कर आ सके।

ब्रिटेन की पुरानी नीति सदा यही रही है कि वह किसी एक शक्ति की फौजी ताकत पच्छिमी योरुप में न बढ़ने दे। आज कल उसका प्रयत्न यही है कि अमरीका की सहायता करके सैनिक दल बना कर पच्छमी योरुप पर अपना अधिकार जमाए रखे और नये युद्ध की तैयारी शुरू कर दे।

जर्मनी की समस्या पर लंडन में सभा हुई थी, इनमें जर्मनी को मार्शल योजना में सम्मिलित करने की मांग को स्वीकार किया गया। इस निर्णय का एक भाग तो पेरिस में कार्य में परिणत भी हो गया। पर्दे के पीछे ब्रिटिश नीतिज्ञों ने

ब्रुसेल्स में पांच पश्चिमी यूरोपियन राष्ट्रों के समझौते पर इंगलैंड के परराष्ट्रमंत्री बेविन हस्ताक्षर कर रहे हैं।

पूरा यत्न किया कि स्वीडन आदि भी पच्छमी दल में शामिल हो जाएं। ग्रीस, टर्की, और इटली को भी फंसाने का पूरा प्रयत्न किया गया ताकि इन सब देशों को मिला कर योरुप में एक अमरीकी यूनियन खड़ा किया जाय।

इस यूनियन का रूप और उद्देश्य अमरीकी प्रधान ट्रूमैन ने अपने भाषण में प्रकट कर दिया था। आप ने कहा था कि 'समझौते का आशय शब्दों से अधिक है।' सोवियत यूनियन का विरोध करना इसका आशय है। अमरीकी पूंजीपति आर्थिक संकट का हल नये युद्ध में ढूंढ रहे हैं। अमरीकी साहूकार आने वाली आर्थिक आंधी से परिचित हैं। वे इसे रोक तो सकते नहीं, लेकिन कुछ काल के लिए स्थगित कर सकते हैं। इसके लिए वे उपाय सोच रहे हैं एक उपाय अन्तर्राष्ट्रीय खिंचाव को बढ़ाना है। जब तक खतरे की स्थिति पैदा नहीं की जायगी, तब तक आर्थिक दशा नहीं सुधर सकती। ट्रूमैन का भाषण इस खिंचाव को बढ़ाता है, युद्ध का ज्वर चढ़ाता है। इससे दो काम सिद्ध होंगे। एक तो ग्रीस और चीन में असफलता से लोगों की दृष्टि हट जायगी और दूसरे आर्थिक संकट की चिन्ता से थोड़ी देर के लिए छुटकारा मिलेगा।

योरुप में अमरीकी साहूकार और सैनिक नेता अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी को बढ़ा रहे हैं ताकि ब्रिटिश नीति का कठिन काम शीघ्र सफल हो और सोवियतविरोधी दल खड़ा हो सके। ब्रिटेन अमरीका की कठपुतली बन रहा है। ब्रिटेन की भूमि अमरीका का हवाई अड्डा होगा। उसकी शक्ति का अमरीका प्रयोग करेगा। उस के आर्थिक साधन नयी लड़ाई में भस्म हो जाएंगे और अमरीका के पूंजीपति आर्थिक धन बटोर सकेंगे।

रेडियो व ?००) से १०००) मासिक

घर बैठे मुफ्त

गलत सिद्ध करने पर १०,०००) इनाम। विश्वास रखिये यह असम्भव नहीं। लिटरेचर व नियम भी मुफ्त मगाइये।

दि हिन्द स्टोर्ज, चावड़ी बाजार दिल्ली।

कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियां

किसी औषधि को वेफायदा साबित करने पर १०० रुपया इनाम! जिन्हें विश्वास न हो, डेढ़ आना का टिकट भेज कर शर्तें लिखा ले।

सफेद बाल काला

इस तेल से बाल का पकना रुक कर पका बाल जड़ से काला पैदा होता है। यदि स्थायी काला न रहे तो दूना मूल्य वापस की शर्त। सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी सत्यता प्रमाणित है। यह तेल सर के दर्द व सर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी को बढ़ाता है। चौथाई बाल पका के लिए २॥); उस से ज्यादा के लिए ३॥); व कुल पका बाल के लिए ५) का तेल मगा लें।

बहरापन नाशक

यह कर्ण रोग की अद्भुत दवा बहरापन नया व पुराना, कान की कम आवाज, पीब बहना सदा के लिए आरोग्य करता है। बहरा आदमी साफ साफ सुनने लगता है। मूल्य २)

श्वेत कुष्ट की वनौषधि

महात्माप्रदत्त इस सफेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आरोग्य होवे। मूल्य २॥)

सन्तति-निग्रह

सन्तान निग्रह की अचूक दवा है। दवा का व्यवहार बन्द कर दें, गर्भ धारण हो जायगा। प्रतिमास दवा तीन दिन व्यवहार करना पड़ता है। वर्ष भर की दवा का मूल्य २॥) दूसरी दवा जो जीवन भर के लिए बन्ध्या बनाती है,—मूल्य २॥) दोनों दवा के व्यवहार से स्वास्थ्य में किसी तरह की हानि नहीं होती।

वैद्यराज कपिलदेव किशोर राम नं० १७ पो० औ० सुगिया, जिला—हजारी बाग

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

'सिद्ध चित्रकूट बूटी।

यह बूटी मरमे मास में राजगिरि आये सिद्ध महात्मा ने राजगिरि पर्वत से संग्रह करने की बताई है। पुरानी से पुरानी या नई दमा खांसी; खासी शर्तिया किसी पूर्णमा से एक महीने तक सेवन करने से जड़ से आरोग्य हो जाता है। एक माव ६० मात्रा २॥) परहेज कुछ नहीं।

गर्भदाता योग

इस औषध के व्यवहार से निश्चय गर्भधारण हो जाता है। मूल्य ५) पूर्ण विवरण के साथ पत्र लिखें।

मासिक धर्म का औषधि

बन्द मासिक धर्म को बिना कष्ट जारी करता है इस औषधि को व्यवहार करने से कमर, पेडू, पेट का दर्द सिर में चक्कर आना आदि को दूर कर मासिक धर्म नियमित रूप से लाता है। इस औषधि को व्यवहार करने से शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। गर्भवती स्त्रियां इसे व्यवहार न करें, क्योंकि गर्भावस्था में इसे व्यवहार करने से गर्भपात हो जाता है। मूल्य २)।

श्री कृष्णचन्द्र (वि० दि०)
पो० सरिया (हजारीबाग)

ठगों से ठगे हुए

कमजोरी, सुस्ती, शुक्र पतन व स्वप्नदोष रोगों के रोगी हमारे यहां आकर इलाज करावें और लाभ के बाद हस्व हैसियत दाम दें और जो न आ सकें वे अपना हाल बन्द लिफाफे में भेज कर मुफ्त सलाह लें। हम उनको अपने उत्तर के साथ उनके लाभ के लिए अपनी १ पुस्तक "विचित्र गुप्त शास्त्र जिस में बिना दवा खाये ऊपर लिखे रोगों को दूर करने की आसान विधियां लिखी हैं और जो सन् १६ में गवर्नमेंट से जब्त होकर अदालत से छूटी है मुफ्त भेज देंगे, परन्तुपत्र के साथ तीन आने के टिकट भेजें।

डा० बी० एल० कश्यप अध्यक्ष रसायनघर १०२ शाहजहांपुर यू० पी०

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की फर्याद समय पर होती है। यह दवा गर्भवती को प्रयोग न करावे की० रु० ४), तुरंत फायदे के लिए तेज दवाई की० रु० ६) पोस्टेज अलावा। गर्भा कुश — दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, गर्भनिरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है। की०४)पो० अलावा पता:—दुग्धानुपान फार्मेसी जामनगर ५, देहली एजेंट—जमनादास क० चांदनी चौक अजमेर—मेहता ब्रदर्स नया बाजार।

T.B. टी बी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ोंका हो या अंतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर, खांसी	ज्वर, खांसीकी अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर खांसी की भयंकरता	सब ही बातोंकी भयंकरता शरीरपर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगीकी मौत और भयंकर कर्मोंका इधर उधर फैलना

जबरी———(JABRI)———(जबरी)———(JABRI)

T. B. टी. बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियों! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टरगुरु मुंडुगावा, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं— मैं अनेक दिनों से ज्वर खांसी से बीमार था। बलगम आदि की परीक्षा पर 'तपेदिक" (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबरा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरत आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाको विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीरका रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आप की औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है "जबरी" के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके कर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर यही कहावत होगी कि—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गयी खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और बार बार आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI-JAGADHRI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०) रु० जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० बी० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (३) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब) E. P.

कोमल चमड़ीके ... निकालनेके लीये

बादशाही

स्नान पावडर ...

---

१००) इनाम
(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)। श्री कामरूप कामाख्या आश्रम ३२ पो० कतरीसराय (गया)

आर्यसामाजिक जगत

आर्यवीर दल साम्प्रदायिक नहीं

★

किसी किसी प्रान्त में अन्य साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ भ्रम-वश आर्यवीर दल पर भी पाबन्दी लग गई थी। अब वह हट गई है। इस विषय पर श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने दैनिक 'वीर अर्जुन' के एक अग्रलेख में समुचित प्रकाश डाला है। उसका आवश्यक अंश नीचे दिया जा रहा है। —सं०

अन्य अनेक स्वयंसेवक संस्थाओं के साथ आर्य वीरदल पर किसी-किसी प्रांत में प्रतिबन्ध लगाये गये। प्रतिबन्ध लगाये जा रहे थे साम्प्रदायिक संस्थाओं पर, और आर्यवीर दल साम्प्रदायिक संस्था नहीं है तो भी दमन की आंधी के चक्कर में आर्यवीर दल केवल इसलिए आ गया कि वह स्वयंसेवक दल था, अन्यथा यह तो सर्वविदित बात थी कि आर्यवीर दल आर्यसमाज की एक सम्बद्ध संस्था है और आर्यसमाज एक धार्मिक समाज है जो धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार का कार्य करता है। फलतः आर्यवीर दल का कार्यक्रम भी धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक ही है। उसका राजनीति से केवल उतना ही सम्बन्ध है, जितना प्रत्येक सामाजिक संस्था का सिद्धान्तरूप से होता है। प्रचलित राजनीति से आर्यसमाज तथा आर्यवीर दल का कोई लगाव नहीं है। ऐसी दशा में उसे किसी दृष्टि से भी साम्प्रदायिक संस्था नहीं कहा जा सकता।

जब बम्बई तथा बिहार के किन्हीं जिलों में आर्यवीर दल पर प्रतिबन्ध लगाने के समाचार पहुंचे तब सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा तथा प्रान्तिक सभाओं की ओर से सरकार के पास प्रतिवाद के पत्र भेजे गये, जिन में दल के वास्तविक रूप का स्पष्टीकरण किया गया और सरकार से मांग की गई कि वह दल पर लगाये गये प्रतिबन्धों को उठा दे। हर्ष की बात यह है कि प्रान्तीय सरकारों ने उस प्रतिवाद को सुन कर दल पर लगाये गये प्रतिबन्धों को हटा लेने की आज्ञा दे दी है। बम्बई सरकार ने इस आशय की आज्ञा प्रचारित कर दी है कि आर्यवीर दलों को सभा तथा सम्मेलन करने का अधिकार है, और बिहार की धारा सभा में प्रश्नों का उत्तर देते हुए गृह-मन्त्री ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की है कि आर्यवीर दल साम्प्रदायिक संस्था नहीं है, इस कारण उस पर लगाये गये प्रतिबन्ध उठा लिए गये हैं; जिस जिला-अधिकारी ने प्रतिबन्ध आज्ञा प्रचारित की थी, उसके कार्य को बिहार सरकार ने निन्दनीय समझा है।

उत्तेजना के समय कुछ स्थानीय अधिकारियों से जो चूक हो गई थी

श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति,

आप सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के नये प्रधान निर्वाचित हुए हैं।
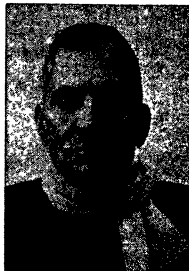
उसके मार्जन पर सरकार बधाई की पात्र है अब आर्यवीर दल अपना कार्य विधिपूर्वक कर सकते हैं; यह बात तो स्पष्ट ही है कि दलों को उन सब आज्ञाओं और पाबन्दियों को स्वीकार करना होगा जो सार्वजनिक हित के लिए, सरकार द्वारा सामान्य-रूप से लगाई गई हैं या लगाई जायेंगी। उन्हें छोड़कर शेष कार्यक्रम में कोई रुकावट नहीं पड़नी चाहिये। आर्यवीर दलों को चाहिये कि अब निःशङ्क होकर बौद्धिक शिविर लगायें, सेवा का कार्य करें, सरकार की ओर से सैनिक शिक्षण की जो योजना बन रही है उसमें भाग लें; और स्थानीय तथा प्रांतीय प्रबन्धक कार्यों में यथा सम्भव अधिकारियों का आवश्यकतानुसार सहयोग दें। इन सामयिक कार्यों के अतिरिक्त आर्य संस्कृति, आर्यभाषा और आर्य धर्म के शिक्षण और चरित्र निर्माण का कार्य तो यथावत् चलता ही रहना चाहिये।

इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि कोई ऐसा कार्य न होने पाये जिसमें व्यर्थ की आशंका या संघर्ष उत्पन्न हो। दल का कोई कार्य शान्ति रक्षा में बाधक न होना चाहिये। यदि समझदारी और तत्परता से दल के कार्य को चलाया जायगा तो इस संकट-मय काल में आर्यवीर दल आर्यावर्त और आर्यजाति के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकेगा।

अन्त में मैं आर्यवीर दलों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि उन्हें पंजाब से आये हुए पीड़ित भाइयों की समस्याओं के हल करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। इस समय की सब से बड़ी समस्या यही है और सबकी सेवा भी यही है। प्रत्येक नगर और ग्राम के आर्यवीर दल को अपने-अपने स्थान पर आये हुए पंजाबी भाइयों की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में में पूरी जानकारी प्राप्त करनी चाहिये और सरकार तथा अन्य संस्थाओं से सहयोग करते हुए उन्हें पूरा करने का उद्योग करना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा का नया निर्वाचन

२४ अप्रैल को सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये :—

प्रधान — श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, दिल्ली।

उपप्रधान — श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट, आगरा.

श्री घनश्यामसिंह गुप्त अध्यक्ष सी० पी० असेम्बली, नागपुर।

श्री मेहरचन्द्र धामान, कलकत्ता।

मंत्री—श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय।

कोषाध्यक्ष — श्री ला० नारायणदत्त।

वाद-विवाद के पश्चात् राजनीति में भाग लेने के लिये 'राजार्य-सभा' बनाने का निश्चय किया गया।

दयानन्द सेवा संघ

आर्य समाज बेयर्ड रोड नई देहली, आर्य समाज सीताराम बाजार देहली तथा आर्य समाज हनुमान रोड नई देहली ने "शरणार्थियों की सेवा का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। तीनों आर्य समाजों ने अपनी २ समाज की ओर से सौ २ रुपये मासिक उसके निमित्त देने स्वीकार किये हैं तीनों समाजों के प्रतिनिधियों की एक सम्मिलित समिति बन गई है, जिस का नाम "दयानन्द सेवा संघ देहली" रखा गया है।

१— शरणार्थी बहन भाइयों को राष्ट्र भाषा (हिन्दी) सिखाना।

२— शरणार्थियों को सरकारी सहायता सम्बन्धी योजनाओं के विषय में परिचित कराना तथा उस सहायता प्राप्ति में उन्हें सहयोग देना।

३— शरणार्थियों में ईश्वर परायणता, सदाचार, नैतिकता, परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति के भाव बढ़ाना।

४— निर्धन, असहाय तथा आश्रय हीन विधवाओं और वयो वृद्ध शरणार्थियों में वस्त्र, खाद्य सामग्री, साबुन, तेल आदि वितरण करना।

५— शरणार्थी शिविरों में शरणार्थियों के सांस्कृतिक जीवन की उन्नति के लिए राष्ट्रीय, आचार निर्माण सम्बन्धी तथा धार्मिक पुस्तकें, देश भक्तों व धर्मात्माओं की जीवनियां पुस्तकालयों में रखवाने तथा मासिक व साप्ताहिक पत्र वाचनालयों में पहुंचवाने की व्यवस्था करना।

६— शरणार्थी बहन भाइयों को स्वावलम्बी बनाने में सहायता करना आदि।

आर्य्यसमाज का भावी कार्य्यक्रम

सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासि-वानप्रस्थ मण्डल (हरिद्वार) ने अपने वार्षिक यज्ञ की समाप्ति पर निम्नलिखित कार्य्यक्रम की घोषणा की है —

जनगणना समीप आ रही है अतः प्रत्येक आर्य्यसमाज तथा आर्य्य समाजी को यत्न करना चाहिए कि आगामी जनगणना में सभी सम्प्रदायों के आर्य्य अपनी जाति 'आर्य्य' लिखाएं।

छुआछूत को हटाने के लिए आर्य्यसमाज ने सबसे पहले यत्न किया। अब जब कि अछूतपन को राजनियम से अवैध घोषित किया जा चुका है, आर्य्यसमाज का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह जनमन में परिवर्त्तन उत्पन्न करने का पूर्ण प्रयत्न करे।

हमारी जातीय भूलों एवं प्रमादों के कारण जो भाई हमारी जाति से पृथक् होकर हमारे राष्ट्र के उत्थान में बाधक होते रहे हैं, भारतीय राष्ट्र की एकता की रक्षा के लिए उन्हें अपना अङ्ग बनाने के लिए यत्न करना।

इस समय दुर्भाग्य से देश में मांसाहार का प्रचार पूर्वापेक्षया बहुत बढ़ गया है। मदिरा, भंग आदि मादकद्रव्यों का सेवन भी बढ़ रहा है। आर्य्यसमाज को इन व्यसनों के नाश के लिये घोर प्रयत्न करना चाहिए।

साम्प्रदायिक दूषित मनोवृत्ति के कारण भारत का अङ्ग-भंग हुआ। अब पुनः कुछ लोग उसी प्रकार की मनोवृत्ति के वशीभूत होकर पूर्वीय पंजाब के विभाजन पर बल दे रहे हैं। आर्य्यसमाज को आगे आकर विभाजन के दोष बता कर राजा-प्रजा सबको सावधान करना चाहिये।

राज्य बदल जाने पर भी, दुर्भाग्य से, राज कर्मचारियों की मनोवृत्ति अभी तक दूषित है। रिश्वत पहले से भी अधिक बढ़ गई है। इससे भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारें भी चिन्तित हैं। आर्य्यसमाज को चाहिये कि जोखिम लेकर भी ऐसे अनाचारी राजकर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही करने में सरकार का पूरा सहयोग दे।

खंजरे की ईंटें

[पृष्ठ ११ का शेष]

घाव परजैसे नमक बुरक दिया गया।

माघव ने सोचा — यह दादी है, यह चाची है, मा है, मासी, बुआ बहनें, फूफा — सब हैं। क्या किसी के हृदय में 'घर की लक्ष्मी' के लिए दया नहीं! करुणा नहीं! है तो घृणा, हिकारत — तब उसने सबका मोह स्वार्थ त्याग कर बुरा नहीं किया। चारों ओर का अंधेरा जैसे घूम रहा था। दो घण्टे भी अभी सोते न हुए थे कि बहू-दर्द से कराहती हुई ऊपर आई। सोने वाले सोते रहे, पर नत्था की बहू आंगन में आ चिल्लाई — 'अरे, सब सो गए! बहू ऊपर अकेली दर्द में टट्टी गई है। कितनी सर्दी है!' माघव नहीं जानता, किसी ने करवट ली या नहीं। पर मामा जी ने कहा — 'क्यों हल्ला मचा रही है। ऊपर उसका मर्द है।' तब बड़बड़ाती हुई वह चुप हो गई।

और शौच से आकर बहू जब माघव वाली कोठरी में आ लेटी तो बुआ ने बड़ी दया बता कर पूछा — 'अब कैसा जी है री, तेरा!' माघव को बिस्तर में पड़े-पड़े जबान हिलाने-वालों की बुद्धि, कुशलता और व्यवहार पर दया हो आई। धीरे से बहू से बोला — 'कह दो, अब तो आपकी कृपा से ठीक है, आराम कीजिए।' पर बहू कुछ न बोली। तीसरे पहर में रात और भी स्तब्ध होती चली गई। बहू के पेट पर हाथ रख माघव ने झपकती आंखों को जैसे पूरी तरह खोल लेना चाहा। बहू सो गई। उसका अपना शरीर भी आराम चाहने लगा, पर दिमाग को आराम कहां था! कानों ने उसे न सोने दिया। दिमाग को शक्ति देकर जो स्वयं अब सुपुत, शांत थे।

सवेरा हुआ और रात भर जागने की चर्चा में चिड़ियों का सुहाना गीत जैसे छुप गया। मामा जी बोले — 'यहां आंगन में सबके से अच्छी तरह सुल-जाया!' और माघव ने तब एकटक उनकी घृणा से विकृत मुखाकृति को देख आंगन के उस खरंजे पर आंखें ठहरा दीं जहां आंगन की नाली के किनारे बहू ने दस को 'घृणा' बरसाई थी। उसने देखा — खरंजे की ईंटों को जोड़ने वाली सीमेंट जहां-तहां से बुरी तरह टूट चुकी है — ठीक उसी तरह जैसे उसके सम्बन्ध के धागे।

विविध चित्रावलि

लंदन और बर्मिंघम में आयोजित प्रदर्शनी के लिये आधुनिक मिट्टी के बर्तन बनाये जा रहे हैं।

मक्सिको की केन्द्रीय असेम्बली की सहायक कमिटी के चेयरमैन डा० स्यूल पेडिल्ला बैडी।

लंदन में चौदहवीं ओलम्पिक प्रदर्शनी के लिये इस प्रकार के हजारों पदक तैयार किये जा रहे हैं।
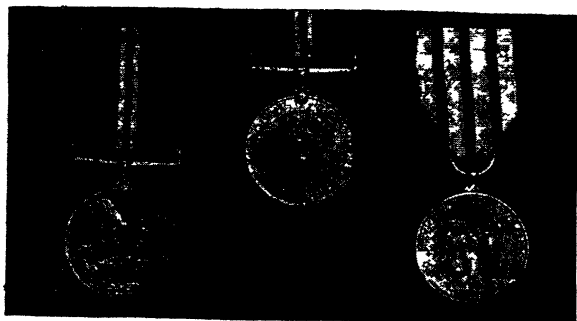
ब्रिटिश नरेश जार्ज छठे ने सैनिकों को उत्साहित करने के लिये तीन नये पदकों की घोषणा की है। एक पदक में विजयी सिंह अजगर को मार कर ऊपर खड़ा है तो दूसरे चित्र में विजेता सैनिक को एक महिला पेय पदार्थ दे रही है।
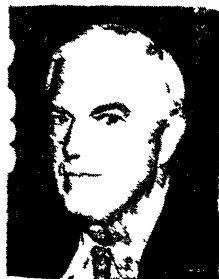
अमेरिका के भूतपूर्व सहायक विदेश सचिव क्लेटन विलियम सम्भवत मार्शल प्रदेशों में अमेरिका के प्रतिनिधि होंगे।

उड़ीसा का पुनर्निर्माण : महानदी का बांध

केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत प्रथम बहुमुखी योजना का कार्य १२ अप्रैल को प्रारम्भ हो गया। उस दिन भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने हीराकुद बांध के निर्माण स्थान पर कंकरीट बिछायी। यह बांध उड़ीसा में सम्बलपुर के पास महानदी पर बनेगा। आशा की जाती है कि यह समारोह उड़ीसा की सर्वांगीण उन्नति का सूत्रपात करेगा।

उड़ीसा का क्षेत्रफल प्राय: ५०,००० वर्गमील तथा जन संख्या प्राय: १,२०,००,००० है। प्रान्त कृषि योग्य भूमि तथा जंगलों से भरा पड़ा है। महानदी, ब्राह्मी तथा वैतरणी ये तीन नदियां प्रान्त के आर पार बहती हैं तथा कोयला, लोहा, बाक्साइट, मैंगनीज, ग्रेफाइट, अबरक और चूने के पत्थर आदि के विशाल भंडार यहां की भूमि में है। फिर भी यह सम्भवत: भारत का सबसे अधिक पिछड़ा प्रांत है। इसकी आर्थिक शक्तियों को अभी विकसित नहीं किया जा सका है। आशा की जाती है कि हीराकुद योजना इसके विकास का सूत्रपात करने वाली सिद्ध होगी।

योजना से लाभ

अपने नाम के अनुसार महानदी वास्तव में एक बड़ी भारी नदी है। इसके प्रवाह के जल का वार्षिक परिमाण नील और टेनेसी नदियों के जल से बहुत अधिक है। विशेषज्ञों का विचार है कि यदि इसके अधिकांश जल को संचित कर के काम में लाया जा सके तो प्राय: ५१,००० वर्गमील में इसके सम्पूर्ण प्रवाह क्षेत्र की सिंचाई की जा सकेगी। इसके अतिरिक्त ४० या ५० लाख किलोवाट बिजली पैदा की जा सकेगी, यह नदी प्राय: ३५० मील तक नौका संचालन के योग्य हो जायगी।

इस योजना के अनुसार महानदी तथा उसकी सहायक नदियों पर विभिन्न स्थानों पर कई बांध बनाये जायेंगे। महानदी पर बांध बनाने के लिए हीराकुद, टिकरपारा और नराज ये तीन स्थान चुने गये हैं। इस योजना को कई स्वतन्त्र भागों में विभक्त करके कार्यान्वित किया जा रहा है क्योंकि सारी योजना इतनी महा विशाल है और उस पर इतना अधिक व्यय होगा कि एक सम्पूर्ण प्रकार पर कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सकता। सम्बलपुर जिले में सिंचाई की व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता अनुभव करके तथा महा बिजली पैदा करने और नौका संचालन सम्बन्धी सुविधाओं के दृष्टि में रख कर सबसे पहले हीराकुद बांध पर कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है।

हीराकुद बांध

सम्बलपुर से चढ़ाव की ओर ९ मील आगे हीराकुद में महानदी पर बांध बनेगा। यह १५० फीट ऊंचा और ३ मील लम्बा होगा। इस बांध से सिंचाई के लिए ६ नहरें निकाली जायेंगी जो प्रतिवर्ष ११ लाख एकड़ भूमि को सींचेंगी। जल विद्युत् उत्पादन के लिए एक तो बांध पर और दूसरे नदी के उतार की ओर १२ मील आगे व्यवस्था की जायगी।

हीराकुद तालाब का विस्तार १,३५,००० एकड़ भूमि क्षेत्र में होगा। इसमें से प्राय: ७०,००० एकड़ कृषि भूमि होगी। बांध निर्माण का कार्यक्रम इस प्रकार होगा कि यह सारी भूमि धीरे धीरे प्राय ८ वर्षों में तालाब के जल से भरेगी। लोगों को उचित क्षतिपूर्ति दी जायगी और वहां के निवासियों को बसाने के लिए नये गांव बसाये जायेंगे। इन गांवों के बसाने में लोगों की सुविधा का पूरा ध्यान रखा जायगा।

४७ करोड़ रु० से अधिक व्यय

हीराकुद बांध पर कुल ४७ करोड़ ८१ लाख रुपये व्यय होने का अनुमान किया गया है। कुछ वर्षों के बाद लागत पर ४ प्रतिशत से अधिक आय होने लगेगी। कई अप्रत्यक्ष लाभ भी होंगे। जैसे खाद्य उत्पादन में वृद्धि जिसकी इस समय देश को बड़ी आवश्यकता है, उद्योगधंधों की उन्नति, बाढ़ नियंत्रण तथा हजारों गांवों में घरेलू प्रयोग के लिए शुद्ध पानी की व्यवस्था आदि।

योजना की प्रगति

केन्द्रीय जल विद्युत् सिंचाई और नौका संचालन कमीशन के एक विवरण में बताया गया है कि मई १९४५ में कमीशन के अध्यक्ष ने इस बांध की योजना का सुझाव उपस्थित किया था। १९४६ में उड़ीसा, बिहार तथा पास की रियासतों और भारत सरकार में इसके निर्माण के लिए आपसी समझौता हुआ। १९४७ में उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई और १९४८ में कार्य प्रारम्भ हो रहा है। आशा है कि निर्माण कार्य १९५३ में समाप्त हो जायगा। इस प्रकार इस योजना को उदय होने के बाद से पूर्ण समाप्ति तक केवल ८ वर्ष लगेंगे। सक्खर बांध की योजना का सूत्रपात १८९० में हुआ था और यह १९३१ में समाप्त हुआ। पंजाब के भाखरा बांध की योजना १९१० में बनी थी, १९४८ में इस पर काम प्रारम्भ होगा और सम्भवतः १९५५ में वह समाप्त होगी। संयुक्तप्रांत में शारदा नहर की योजना का सूत्रपात १८७० में हुआ था। इसके स्वीकृत होने में इतनी देर लगी कि १९२० में काम प्रारम्भ हो सका और १९२९ में समाप्त हुआ। मद्रास के मेसूर बांध की योजना १९०१ में बनी। १९२५ में कार्य प्रारम्भ हुआ और १९३४ में पूरा हुआ। पंजाब की थल योजना का सूत्रपात १८७० में हुआ था, १९३९ में कार्य प्रारम्भ हुआ और अभी चल रहा है।

नास्तिक

प्रयाग राज इलाहाबाद को तीर्थ राज भी कहा जाता है। यहां यात्रियों की भीड़ हमेशा ही लगी रहती है। कुम्भ के मौके पर तो मानो आदमियों का सागर उमड़ पड़ता है।

पचास साल पहले की बात है। संगम में अथाह पानी हो गया था। गंगा, यमुना का चढ़ाव बढ़ गया था। संगम में पहुंचना खतरनाक हो गया था।

मेला कमेटी ने बहुत सोच विचार के बाद, तै किया कि उस साल, संगम स्नान रोक दिया जाय। कारण, लाखों की भीड़ में दो चार सौ आने चली जाना मामूली बात थी कमेटी ने अपने फैसले का ऐलान कर दिया।

लड़ाई का जमाना तो था नहीं। रेलों में भीड़ का नाम नहीं होता था। न झगड़े थे, न दंगे। इससे यात्री अधिक से अधिक संख्या में जमा हो चुके थे।

'संगम में कोई स्नान नहीं कर सकेगा' यह खबर यात्रियों के लिये बिजली का झटका सा मालूम हुआ। खबर बात की बात में सारे सूबे में फैल गई। धार्मिक हिन्दू समाज तिलमिला उठा।

एक अजीब सन्नाटा था। सब दुखी थे, परेशान थे, घुंघिल साप और घायल शेर की हालत में थे, ताव में थे। पर थे सब लाचार।

स्नान का समय आया। लोगों की बेचैनी बढ़ी। 'अब क्या होगा'? का प्रश्न भूत बनकर सबके सरों पर नाचने लगा। पर!

समय किसी की बाट जोहता नहीं। कभी किसी के लिये रुकता नहीं। लोगों की आस्तिकता विह्वल हो उठी।

यकायक एक गोरा सा नौजवान संगम में नहाता दीख पड़ा। ऐं! वह देखो, के क्षणिक अभिनय के साथ, पलक मारते न मारते, संगम यात्रियों से भर गया। लाखों यात्रियों ने स्नान किया। और भगवान की माया, एक भी दुर्घटना नहीं हुई।

लोग उस गोरे से युवक की धार्मिकता का अन्दाज नहीं लगा पा रहे थे। "वह कोई बहुत ही आस्तिक और धार्मिक युवक होना चाहिये, वरना —' की चारों तरफ चर्चा थी, विश्वास था। इसके सिवा कोई कुछ सोच ही नहीं सकता था।

पर आगे चलकर मालूम हुआ वह युवक, हमारे देश की आन, पं० जवाहर लाल नेहरू थे। जिनका न कोई धर्म है न शायद ईश्वर!

उनके तई कायरता ही सबसे बड़ा अधर्म है। और बहादुरी सबसे बड़ा धर्म।

'—गत्र की बात' से

समय का मूल्य

बड़ी देर तक बेंजमिन फ्रेंकलिन की दुकान के सामने घूमनेवाले एक आदमी ने अन्त में पूछा —

"इस किताब की क्या कीमत है?"

क्लर्क ने उत्तर दिया — 'एक डालर।'

'एक डालर! इससे कम नहीं?'

"नहीं।"

खरीदने वाले ने थोड़ी देर इधर उधर देखने के बाद उससे पूछा —

"क्या मि० फ्रेंकलिन भीतर हैं?"

"हां अभी काम में लगे हुए हैं।"

"मैं जरा उनसे मिलना चाहता हूं।"

मालिक बुलाये गये और खरीददार ने पूछा — "मि० फ्रेंकलिन, आप इस पुस्तक की कम से कम क्या कीमत लेंगे?'

"सवा डालर।"

"सवा डालर! अभी तो आपका क्लर्क एक डालर कहता था?"

"ठीक है पर अपना काम छोड़कर आने में मेरा समय भी तो खर्च हुआ है न?"

खरीददार आश्चर्य में पड़ गया और अपनी बातचीत को खत्म करने के विचार से उसने फिर पूछा — "अच्छा, अब इसकी कम-से कम कीमत बता दीजिये तो मैं ले लूं।"

"डेढ़ डालर।"

"डेढ़ डालर! वाह, अभी तो आप सवा डालर ही कह रहे थे।"

"हां, मैंने वह कीमत उस समय कही थी। पर अब तो डेढ़ डालर होगी। और ज्यों-ज्यों आप देर करते जायेंगे, किताब की कीमत बढ़ती जायगी।"

ग्राहक ने जेब से पैसे निकाल कर दे दिये और किताब लेकर घर का रास्ता लिया। उसे आज समय को धन अथवा विद्या में परिवर्तित कर देने वाले स्वामी से एक उत्तम शिक्षा मिल गई थी।

चुटकुले

कल्लू — सेठ जी श्यामू कहां है? मैं उसका पिता हूं और उससे मिलना चाहता हूं।

सेठ जी - अरे, वाह भाई वाह कल तुम्हारी मौत की बात कहकर वह मुझ से छुट्टी लेकर घर गया है।

— जगदीशचन्द्र टंडन

× × ×

भारतवर्ष के किसी रईस ने एक विलायत के तमाशा करने वाले को भारत में तमाशा करने के लिये बुलाया। जब रईस ने उसकी तनख्वाह पूछी तो उसने इतनी बताई जिससे वह रईस घबड़ा गया।

रईस ने कहा कि आप तो लाट साहिब से भी अधिक तनख्वाह मांगते हैं। तमाशा करने वाले ने कहा तो फिर आप लाट साहब से ही तमाशा करवा लीजिये।

— वसन्तकुमार

रामलीला आकाशों में मिन्न दमे वा आनन्द रैटन की झुपुनी।

आत्म परिचय

(शशिकांत)

मैं डांट डपट भी मार लिये फिरता हूं,
मैं पिटने का अधिकार लिये फिरता हूं।
मेरे हाथों पर नील नहीं वह भाइया!
मैं बेंतों का उपहार लिए फिरता हूं।

मैं रोज पाठशाला में पिटता रहता,
मैं घर वालों की रोज झिड़कियां सहता,
साथी कह 'मूरखराज' चिढ़ाते मुझको,
मैं जीवन की यह हार लिये फिरता हूं।

मैं इस क्लास में फेल सदा हूं होता,
मैं नहीं मनाता दुख, कभी ना रोता,
कह लो जो मी सरकार, मगर सच यह है —
मैं इस क्लास का प्यार लिये फिरता हूं।

इक दिन मैं भी हो पास बनूंगा मास्टर,
बैठूंगा लेकर बेंत इसी कुर्सी पर,
ज्यों मैं पिटता त्यों पटूंगा लड़कों को,
— यह सपनों का संसार लिये फिरता हूं!

'मनोरंजन' से

पहेलियां ?

[जगदीशलाल, 'प्रेम' नैनीताली]

घेरे दार है लहंगा उसका,
एक टांग से रहे खड़ी।
सब करते हैं चाह उसी की,
जब बरसा की लगे झड़ी॥
[छाता]

छोटी सी डिबिया डबडब करे।
मानक मोती झर-झर झरे॥
[आंख]

लम्बा रात में तम्बू एक।
जिसमें लटके दिये अनेक॥
[आसमान]

एक चिड़िया चमकदार।
जिसके बच्चे नौ हजार॥
[आग की चिनगारी]

सूचना

मेरे पास अमरीका तथा लंका की करीब २०० तरह की टिकटें हैं जो भाई मुझसे टिकट अन्य देशों के टिकटों से बदलना चाहें तो सूचित करें।

महेशचन्द्र सेक्रेटरी, बाल सभा हापुड़

(पृष्ठ ८ का शेष)

वह चेतना शून्य हो जायगी और फिर चेतना प्राप्त करेगी तब तक बच्चा पैदा हो चुकेगा। उस अर्द्ध चेतनावस्था में उक्त महिला ने नर्स को बुलाया। जब नर्स उसके पास पहुंची तब भी वह चेतनाशून्य थी। जब वह फिर सचेत हुई तो उसके बच्चा पैदा हो चुका था और उसे कोई तकलीफ न हुई थी।

सूर्य-जयंती की तिथि

[श्री गपालप्रसाद व्यास]

हिन्दी साहित्य-जगत का इस से अधिक दुर्भाग्य और क्या होगा कि जो हमारे साहित्य गगन के सूर्य हैं और जिनके बारे में यह प्रसिद्ध है कि —

किधौं सूर को सर लग्यौ,
किधौं सूर की पीर ?
किधौं सूर कौ पद लग्यौ,
तन-मन धुनत शरीर ?

उन पुण्यश्लोक विरल महाकवि के जन्म, जाति, कुल और कार्यों के सम्बन्ध में भी हमें ठीक से कुछ भी ज्ञात नहीं ।

अ० भा० ब्रज साहित्य मण्डल द्वारा आगामी १३ मई को सूरदास जी की जयन्ती मनाने का देश व्यापी आयोजन किया गया है ।

कुछ लोगों के मन में यह शंका उठ सकती है कि १३ मई की प्रामाणिकता क्या है ? इस सम्बन्ध में निवेदन यह है कि हमने यह तिथि वल्लभ सम्प्रदाय के आधार पर निश्चित की है । इससे बढ़कर आज कोई दूसरा प्रमाण उपलब्ध है भी नहीं । सूरदास जी के सम्बन्ध में अगर कोई बात निर्विवाद है तो वह केवल एक ही है कि वे वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे । इसी वल्लभ सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'निजवार्ता' में लिखा है कि —

'सो श्री सूरदासजी जब श्री आचार्य महाप्रभु (वल्लभाचार्य) को प्राकट्य भयो है, तब इनको जन्म भयो है। सो श्री आचार्य जी सों ये दस दिन छोटे हते ।'

श्री वल्लभाचार्य की जन्मतिथि वैशाख कृष्णा ११ संवत् १५३५ है। इस प्रकार यदि देखा जाय तो सूरदास जी की जन्मतिथि वैशाख शुक्ला ५ संवत् १५३५ निश्चित होती है। इस दिन वल्लभ सम्प्रदाय के सैकड़ों मन्दिरों और हवेलियों में सूर जयन्ती नाम से एक उत्सव भी मनाया जाता है और कुछ पद भी ब्रज साहित्य-मंडल की इस तिथि की साक्षी के प्रस्तुत हुए हैं। जैसे —

प्रगटे भक्त शिरोमनिराय ।
माधव शुक्ला पचमी
ऊपर छट्ट अधिक सुखदाय ।
संवत् पन्द्रह, पैंतीस वर्षे
'कृष्ण-सखा' प्रगटाय ।
करि हैं लीला, फेरि अधिक
सुख मन मनोरथ भाय ।
श्री वल्लभ, श्री विट्ठल,
श्री जी, रूप एक दरसाय ।
'रसिकदास' मन आस पूरन
श्री सूरदास सुख भाय ।

ब्रिटेन में श्रमजीवियों की समस्या

[डक्टर आर्ज ग्रेटन]

एक प्रसिद्ध स्विस संगीतज्ञ ने, जो इंग्लैंड का भ्रमण करने आये थे, मुझ से पूछा कि ब्रिटेन ने प्रत्येक श्रमजीवी को उसके उद्योग में सुरक्षा प्रदान करने के विषय में क्या किया है? इस प्रश्न का पूर्ण उत्तर उन्हें १९४८ की आर्थिक जांच में मिल जायगा जिसे सरकार ने हाल में प्रकाशित किया है।

इस प्रकाशन से यह स्पष्ट है कि समस्त श्रमजीवियों को रोजगार में सुरक्षा देने के लिए यह आवश्यक है कि कुछ श्रमजीवी ऐसे हों जिन्हें समय समय पर एक काम से दूसरे में भेजा जाय।

देश में बेरोजगारी का पूर्णरूप से अंत करना — यह सिद्धांत ब्रिटेन की लम्बी अवधि की अर्थ योजना का आधार है। ब्रिटेन की सामाजिक अर्थ-व्यवस्था का लक्ष्य देश के पांच करोड़ प्राणियों को व्यक्तिगत रूप से सुखी और सम्पन्न बनाना है। आर्थिक जांच में इस लक्ष्य की प्राप्ति के साधनों का स्पष्टरूप से उल्लेख किया गया है।

श्रमजीवियों की व्यवस्था

यह तो सर्वविदित है कि ब्रिटेन में उत्पादन का विकास आज किस स्थिति तक पहुंच गया है। कोयले का उत्पादन पर्याप्त और विशेषरूप से संतोषजनक है: कोयले के विषय में इतना कहना पर्याप्त है कि २१,१०,००,००० टन लक्ष्य की प्राप्ति अब अपेक्षाकृत अधिक निकट दीखती है और इस्पात की उत्पत्ति इस वर्ष १,४०,००,००० टन तक होने की आशा है। स्मरण रहे कि १९४७ में इस्पात की उत्पत्ति १,२७,५०,००० टन थी और यह भी कि १९४७ और १९४८ की ये संख्याएं इस्पात के लिए उत्पत्ति की उच्चतम संख्याएं हैं।

१९४८ की योजना के अनुसार श्रमजीवियों के रोजगारों में परिवर्तन किया जाना आवश्यक है क्योंकि इस विधि से से ब्रिटेन जैसे महान और विकसित देश में, जिस में दो करोड़ व्यक्ति उद्योगों में नियुक्त हैं, बेकारी का पूर्णस्वरूप से अंत किया जा सकता है।

युद्ध के बाद ब्रिटेन को अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ा था किंतु कोई अकेली समस्या इतनी गम्भीर नहीं थी जितनी कि श्रमजीवियों की व्यवस्था नये ढंग से करने का प्रश्न। शांति के प्रथम वर्ष में १,२०,००,००० रोजगारों से श्रमजीवियों की अदल बदल हुई किंतु इस अवधि से किसी भी समय एक प्रतिशत से अधिक श्रमजीवी बेकार न थे। अब स्थिति बदल गई है और, आर्थिक जांच के शब्दों में, "देश के आर्थिक कार्यक्रम में अब श्रमजीवियों की समस्या द्वारा रुकावट नहीं पड़ सकती और न १९४८ में ही ऐसा होने की सम्भावना है।" अब रुकावट पड़ सकती है जनसाधारण के उपयोग की वस्तुओं द्वारा और इस कारण रोजगारों में श्रमजीवियों की अदल-बदल फिर करनी होगी — यद्यपि पहले की तुलना में छोटी मात्रा पर।

छोटे और बड़े परिवर्तन

कोयला, बिजली तथा खाद्यपदार्थों की आवश्यकतानुसार प्राप्ति तथा यातायात की स्थिति को सुधारने के लिए आधारभूत उद्योगों में १,२०,००० अतिरिक्त श्रमिकों की आवश्यकता होगी। कपड़े के उद्योग में १,२०,००० अधिक श्रमिक रक्खे जायेंगे। एक ओर ये छोटे-मोटे परिवर्तन होंगे जिनका प्रभाव लगभग ३ लाख श्रमिकों पर पड़ेगा; दूसरी ओर, एक लाख से अधिक स्त्रियां विभिन्न कारणों से कारखानों का काम छोड़ देंगी और सैनिक समुदाय से लगभग ३,८०,००० व्यक्ति उद्योगों में सम्मिलित होंगे। यह पूछा जा सकता है कि यह सब उथल-पुथल बिना विघ्न के किस प्रकार सम्पादित की जा सकती है?

एक विधि से नहीं पर अनेकों युक्तियों के सम्मिश्रण से। उदाहरणार्थ, कपड़े का उद्योग। नियुक्ति नियन्त्रण नियम के अनुसार सरकार को यह कानूनी अधिकार है कि, यदि कोई श्रमजीवी बेकार है तो उसे किसी भी उद्योग में सम्मिलित होने पर बाध्य किया जाय। यदि आवश्यकता अनिवार्य हो तो इस अधिकार का आश्रय लिया जा सकता है, पर उपयोग इसका अब तक बहुत कम किया गया है और न ही दुरुपयोग। दूसरी युक्ति प्रोत्साहन देने की है। आधारभूत उद्योगों के श्रमिकों की सुविधा का प्रश्न मुख्य प्रश्न माना गया है, विशेषतः उन्हें अच्छे घरों में बसाने का। इन सुविधाओं की प्राप्ति अन्य उद्योगों को भी आवश्यकतानुसार होगी।

आकर्षक वातावरण

यद्यपि ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने पारिश्रमिक को न बढ़ाने की व्यापक नीति स्वीकार कर ली है, पर कुछ रोजगारों को अधिक आकर्षक बनाने के लिए यह नियम स्थगित भी किया जा सकता है।

कपड़े के उद्योग में नीरस वातावरण एक बड़ी त्रुटि थी जिसे दूर करने में काफी प्रयत्न किए जा चुके हैं। ब्रिटेन की आर्थिक विचार धारा में श्रमजीवियों के काम करने के स्थान का उनके रोजगार के उपयुक्त होना एक मुख्य सिद्धांत है और सचमुच आज जिन भावी मिलों की रूपरेखा खींची जा रही है वे पुरानी मिलों की तुलना में बिल्कुल भिन्न होंगी।

दो वर्ष पूर्व मैंने उस समय बनाई जाने वाली एक फैक्टरी देखी थी जिसके प्रकाश और वायु के प्रबन्ध की तुलना किसी आधुनिक निवास स्थान में प्राप्त सुविधाओं से की जा सकती है। उसमें विश्राम स्थान और भोजनालय इत्यादि भी थे। आंतरिक सजावट का प्रबन्ध एक विशेषज्ञ के हाथ में था; कार्यालय की सजधज के कारण वातावरण बहुत ही आकर्षक बन गया था। आगामी वर्षों में कपड़े की कई मिलों की रचना इसी ढंग पर की जायगी।

आवश्यक सिद्धांत

आर्थिक जांच में कहा गया है, "हमारे व्यापार के ढंग में और हम में से अनेकों व्यक्तियों के जीवन में कई परिवर्तन हो चुके हैं और कई होंगे।" और विभिन्न उद्योगों के मध्य में श्रमजीवियों के अदल-बदल की उपर्युक्त विधियां इस कथन की पृष्ठभूमि हैं।

अधिकांश व्यक्ति अपने पुराने उद्योगों में लगे रहना चाहते हैं चाहे परिवर्तन द्वारा उन्हें लाभ भले ही हो। पर आवश्यक यह है कि हम अन्तिम परिणामों पर ध्यान दें। यदि व्यापारिक संकट के इस युग में किसी उद्यम में कच्चे माल की कमी के कारण उसके सब श्रमिकों के लिए स्थान नहीं है तो उन्हें बेकारी से बचाने का उपाय यही है कि वे अन्य रोजगारों में नियुक्त किये जायं।

बेकारी का न होना किसी महान् औद्योगिक देश की महानता का आधार है और ब्रिटेन को आशा है कि अपने आर्थिक झगड़ों को सुलझाने में वह इस आवश्यक सिद्धांत का पालन कर सकेगा।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३३ का शुद्ध उत्तर

बरार की वापसी का प्रश्न

(पृष्ठ ७ का शेष)

की कुछ विशेष धाराओं को पाठकों के ज्ञान के लिए उद्धृत कर देना आवश्यक अनुभव करते हैं जिससे निजाम सरकार के प्रभुत्व की वास्तविकता का पता चल जाय।

धारा (१) हिजहाइनेस निजाम के अधीनस्थ बरार पर नवीन रूप से अधिकार स्वीकार किया जाय वे इन जिलों को स्थायी रूप से पट्टे पर ब्रिटिश सरकार के आधीन करते हैं, जिसके प्रतिस्वरूप ब्रिटिश सरकार २५ लाख रुपये वार्षिक दिया करेगी।

धारा (२) ब्रिटिश सरकार अधीनस्थ जिलों में पूर्ण (बिना किसी साझीदारी आधिपत्य के) अधिकार को स्थिर रखते हुए, जो इसे सन् १८५६ ई० और १८६० ई० की संधि के आधार पर प्राप्त है, आधीन जिलों की इस प्रकार से व्यवस्था करेगी जिसे कि वह उचित समझती है और यह भी कि सेना में, जो हैदराबाद की कन्टोनमेंट के नाम से विद्यमान है, जिस प्रकार' भी उचित समझे नवीन रूप से विभाजन करे, घटाये या बढ़ावे।

लार्ड कर्जन और नवाब मीर-महबूबअली खां बहादुर के नोट से ज्ञात होता है कि दोनों के उद्देश्य और इच्छा में किसी प्रकार का भी विरोध नहीं है। लार्ड कर्जन ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि 'विशेष मैं ही नहीं बल्कि मेरे पश्चात् जो भी वायसराय आयेंगे उन तमाम वायसरायों की यही नीति होगी। नवाब मीरमहबूब अलीखां ने अपने नोट में यह भी लिखा है कि 'जब बरार को वापिस करना असम्भव है तो वर्तमान रिवाज को प्रचलित रखना बुद्धि से परे की बात है। यह हमारी पिछली भूलों ही का परिणाम है कि आज हम को इस प्रान्त से हाथ धोना पड़ रहा है।'

यह खुली वास्तविकता है कि नवाब मीर महबूबअलीखां बहादुर ने विशेष विचार विनिमय के पश्चात् ही यह निर्णय प्रगट किया। इस विषय में सन् १८५३ ई० और १८६० ई० की सन्धियां बाधक नहीं हो सकेंगी।

लार्डरीडिंग और हैदराबाद

सन् १९२३ ई० में आलाहजरत उस्मानअली ने बरार को वापस करने के प्रश्न को पुनः उठाया। आरम्भ में एक स्मृति पत्र बरतानवी सरकार के पास भेजा गया। इस स्मृति पत्र में मन्त्रियों के कार्यों पर आक्षेप करते हुये इन्हें अपराधी ठहराया गया। एक आक्षेप यह किया कि स्वर्गीय शासक को, लार्ड कर्जन ने विचार करने का अवसर नहीं दिया और उसने बिना किसी विचार विनिमय के बरार को स्थायी पट्टे पर दे दिया।

उपरोक्त आक्षेपों का उत्तर लार्ड रीडिंग ने २७ मार्च १९२६ ई० को इस प्रकार दिया कि 'मैं युवर एक्जाल्टेड हाइनेस की पैरवी में, इस कथानक के ऐतिहासिक विवरणों पर वाद विवाद करना नहीं चाहता। आपके प्रस्तुत विषयों की पूर्णतया विचार पूर्वक जांच पड़ताल की गई और अब आप जो कुछ कहते हैं, इसमें कोई ऐसी बात प्रतीत नहीं होती, जो मेरी सरकार और भारत मन्त्री के निकाले हुये परिणामों पर प्रभाव डालती हो।'

इस पत्र में लार्ड रीडिंग ने इस बात को भी दोहराया था कि ब्रिटिश साम्राज्य की सरदारी हैदराबाद पर भी इसी प्रकार से कायम है जैसी की अन्य रियासतों में। इसलिये यदि हैदराबाद और ब्रिटिश साम्राज्य के बीच कोई विवादग्रस्त प्रश्न हो तो उस का निर्णय साम्राज्य सत्ता का अधिकारी एकाकी तौर पर कर सकता है। लार्ड रीडिंग के इस उत्तर पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने से हमें यह स्पष्टतया ज्ञात होता है कि बरतानवी साम्राज्य और हैदराबाद सरकार के राजनैतिक सम्बन्धों का वास्तविक चित्र क्या था। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट है कि १९०२ ई० की सन्धि ने बरार के स्वामित्व का निर्णय प्रदान कर ही दिया है, उसके अनुसार बरार सी० पी० प्रान्त का अंग बन चुका है। यही वह खुली वास्तविकता थी जिसको अनुभव करते हुए लार्ड लुई मौंटबेटन ने बरार के प्रतिनिधियों को यह आदेश दिया था कि 'हिन्दुस्तानी विधान परिषद् में सी० पी० सरकार के प्रतिनिधियों के साथ सम्मिलित हों।' ऐसी स्थिति में बरार को वापिस करने का आग्रह बिल्कुल व्यर्थ है।

क्या शहद भी आदमी की जान ले सकता है?

[श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार]

विषैला मधु

इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं प्रतीत होता कि कुछ प्रकार के शहदों में या कुछ फूलों से पुष्परस इकट्ठा करके बनाये हुए शहदों में कम या अधिक ज़हरीलापन होता है। इन शहदों को जब मनुष्य खाते हैं तो बहुत कष्टदायक लक्षण पैदा हो जाते हैं। लगभग दो हज़ार साल पहले चरक, सुश्रुत आदि के विवरणों से हमें विषैले शहदों की ओर संकेत मिलता है। १३७४ में मदनपाल ने लिखा था कि विषैले फूलों से जब विषैली मक्खियां जब शहद इकट्ठा करती हैं तब वह स्वभाव से ही विषैला होता है। उसके बाद भावमिश्र और कैयदेव ने भी इसका समर्थन किया था।

पागल बना देने वाला शहद

डियाडोरस, डियोस्कोराइड्स, स्ट्रैबो, इलियन और प्लाकोनियस, ये सब अपनी रचनाओं में विषैले शहद का उल्लेख करते हैं। प्लाजी ने रोडोडेण्ड्रन के फूलों से प्राप्त किये गये काली देश के पागल कर देने वाले मधु का वर्णन किया है। कोर्सिका निवासी एक जहरीले मधु से परिचित हैं जिसका उद्गम र्होडोडेण्ड्रन पोन्टिकम है। प्लीनी और डियोस्कोराइड्स की कृतियों में इसका बयान है। एरिस्टाटल एक शहद का ज़िक्र करता है जिसने लोगों को पागल बना दिया था पर बाद में वे उपचार से ठीक हो गये थे।

सिपाही बेहोश हो गये थे

ट्रेबिजन्द के विषैले मधु की कहानी बहुत प्रसिद्ध हुई है। जेनोफोन लिखते हैं कि ट्रेबिजन्द के समीप एक स्थान पर बहुत से छत्ते लगे हुए थे। सिपाहियों ने तोड़ कर उनमें से रस चूस लिया। परिणामतः उन पर नशा चढ़ गया और वे उलटियां तथा दस्त करने लगे। उनमें से बहुतों पर तो ऐसा बुरा असर हुआ कि वे खड़े होने में भी असमर्थ हो गये और लड़खड़ा कर गिरने लगे। उनके शरीर भूमि पर ऐसे बिछ गये कि इसकी तुलना लड़ाई के बाद के रणक्षेत्र से की जा सकती थी। यद्यपि कोई सिपाही मरा तो नहीं परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वे भयंकर दस्तों से अचानक निर्बल बना दिये गये हों। चौबीस घण्टे तक तो उन्हें होश नहीं आया और तीन चार दिन तक वे ऐसी हालत में रहे जैसे कि उनके अन्दर से शक्ति छीन ली गई हो।

वानर सेना भी प्रलाप-ग्रस्त

वाल्मीकि ने मधुवन के कुछ इस प्रकार के शहदों का वर्णन किया है जिस के खाने से वानर सेना के सिपाहियों में प्रलाप की सी अवस्था पैदा हो गई थी। यद्यपि कुमार ने बलवान् आदि बूढ़े वानरों को उनकी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त मात्रा में ही प्रकृति में पैदा हुए शहद दिए थे। उन शहदों को खा कर वे सब अत्यन्त प्रसन्न हो गये। हर्षोन्माद में वे नाचने गाने लगे और इधर उधर कूदने फांदने लगे। उन में से कुछ तो बेतहाशा हंसते जाते थे। कुछ पढ़ने और व्याख्यान झाड़ने लगे। कुछ तैरने लगे। कुछ आपस में लम्बे वादविवाद में लग गये। कुछ बहुत अधिक बोलते थे, जैसे कि बेहोश रहने पर प्रलाप में व्यक्ति बोलता है। कुछ वानर एक वृक्ष से दूसरे पर छलांग मारने लगे। एक दूसरे को खुशी में कभी हंसते और कभी रोते देख कर वे आपस में हंसते और रोते थे। वाल्मीकि लिखते हैं कि उन में कोई भी वानर ऐसा नहीं था जो मस्तिया न गया हो और आपे से बाहर न हो गया हो। जिन छत्तों को निचोड़ कर उन्होंने शहद पिया था उस की मोम को वे उच्छृंखल वानर आपस में गालियां निकालते हुए एक दूसरे को मारते थे। बहुत अधिक मस्त हुए हुए कुछ बन्दर तो वृक्षों के नीचे ही पत्तों को फैला कर या वैसे ही सो गये। कई बन्दरों ने तो इतना अधिक शहद पी लिया था कि उन के पेशाब में भी शहद आने लगा था।

विषैला शहद धतूरे का नहीं

बहुत समय तक यह समझा जाता था कि विषैला मधु धतूरे के फूलों से संचित किये गये रस से बनता है। बाद में यह गलत सिद्ध हुआ और पता किया गया कि अजेलिया पान्टिका के फूलों का शहद ज़हरीला होता है। 'युनाइटेड स्टेटस डिस्पेन्सेटरी' (उन्नीसवां संस्करण, पृष्ठ ७७१) जैसे प्रामाणिक ग्रन्थों में भी लिखा है कि धतूरे से इकट्ठा किया गया शहद ज़हरीला होता है। हेनरी हीन ने १९११ की ब्रिटिश फार्मास्युटिकल कान्फ्रेंस में इस विषय पर एक निबन्ध पढ़ा था जिस में बताया था कि 'यह बात कई बार साबित की जा चुकी है कि मधु मक्खियां इस पौधे के फूल से रस ले ही नहीं सकतीं, और ट्रेबिजोन्द के विषैले मधु का स्रोत अजेलिया पोन्टिका था।'

अमेरिका में मौतें

अमेरिका के कुछ प्रान्तों का शहद हानिकारक कहा जाता है। 'अमेरिकन फिलोसाफिकल ट्रांजेक्शन्स' में डाक्टर बार्टन बताते हैं कि १७९० की पतझड़ और सर्दियों में फिलेडेल्फिया के पास पड़ोस में इकट्ठे किये गये शहद ने बहुतों की जान ले ली थी। अमेरिकन सरकार के अनुसन्धान ने खोज निकाला कि यह मारक शहद काल्मिया लेटिफोलिया के फूलों से निकाला गया था।

दो मेओरी मौत का शिकार

न्यूज़ीलैण्ड की वनस्पतियों में दो पौधे ऐसे हैं जिनके मकरन्दों से मक्खियां जो शहद बनाती हैं वह मनुष्यों के लिए निश्चित रूप से विषैला सिद्ध किया जा चुका है। इन पौधों के नाम हैं — ब्रेकिग्लाटिस रिपण्डा और रनकुलस रिवुलेरिस। न्यूज़ीलैण्ड से हमें यह वर्णन मिलता है — '१८८९ की पतझड़ में तीन जवान मेओरी लोग मटाटा के समीप सूअर का शिकार कर रहे थे। रौहिरो वृक्ष में उन्होंने जंगली मक्खियों के एक घोंसले का पता किया। उसमें से उन्होंने छत्तों को तोड़ लिया और तीनों ने करीब एक एक पाव शहद खा लिया। प्रायः दो घण्टे बाद विष के लक्षण प्रकट होने लगे। पहले सिर में चक्कर, और उलटियां आईं। फिर प्रलाप की अवस्था आई और अन्त में शरीर की मांसपेशियां ऐंठी जाने लगीं। अचानक बीमार पड़ जाने पर जलधाराओं का पानी पीने लगने की पुरानी प्रथा के अनुसार वे एक धारा की ओर लपके। एक तो रास्ते में ही बेहोश होकर गिर पड़ा और शेष दो धारा में मरे हुए पाये गये। रास्ते में जो गिर पड़ा था वह अगले दिन तड़के ही होश में आ गया।

पांच और मरे

१९०२ का ज़िक्र है। आठ सांहसी मेओरी लोगों ने शहद खाया। वे झट बीमार हो गये क्योंकि शहद ज़हरीले वृक्षों के फूलों का था। आठ में से पांच तो मर गये। भयंकर कष्ट पाने के बाद तीन राज़ी हो गये। आक्षेपों के कारण एक की जीभ बुरी तरह कट गई थी।

हेम्प्शेल (१९३७) ने एक बार केन्ट में लार्ड डार्नले के ग्राउण्ड में उगे हुए र्होडोडेण्ड्रन के फूलों से एक शहद प्राप्त किया था। इस शहद का केवल एक चाय का चम्मच भर ही खाने वाले प्रत्येक आदमी का करीब पन्द्रह मिनिट तक तबियत खराब रही थी।

२००१) मनोहर पहेली नं० १ पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १००१)

न्यूनतम अशुद्धियों पर १०००)

१ रा	म	■	१	ह	र
■	२	न	का	ह	४
५ ी	च	६	मु	ना	ह
न	न	■	७ ता		ता
■	■	८ ा	न	र	९ ा
१० स	न	-	ग	■	ल

बायें से दायें

१ सीतापति। २. इसमें पानी रहता है। ३. वन में रहना। ६ उत्तर भारत की एक मशहूर नदी (तीन अक्षर) ७. गर्मी (दो अक्षर) ८. कपि (बन्दर) १०. चार युगों में से १ युग।

ऊपर से नीचे

२ साक्षी कथन। ४. ताश का एक पत्ता। ५. एक संख्या। ९. अगर यह ठीक न हो तो खाना अच्छा नहीं लगता।

१ नियम — एक नाम की एक पूर्ति की फीस १) रु० है इसके पश्चात् ॥) प्रत्येक पूर्ति की होगी जो मनीआर्डर द्वारा आना चाहिए — मनीआर्डर रसीद पहेली के साथ अवश्य भेजी जावे — पूर्तियां सादे कागज पर स्याही से साफ साफ लिखें — फटे, छिले, अस्पष्ट संदिग्ध रूप में लिखे हुए प्रतियोगिता में शामिल नहीं किये जायेंगे और न प्रवेश शुल्क ही लौटाया जावेगा — उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही लिखें — पहेली के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर नहीं होगी — पूर्तियों के पहुंचने की अन्तिम तारीख १५-६-४८ है — इसके बाद में आने वाली प्रतियोगिता में शामिल नहीं होंगी —

२. पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशी घटाई बढ़ाई जा सकती है — पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

३. पहेली का ठीक उत्तर तारीख ५—७—४८ के साप्ताहिक वीर अर्जुन में प्रकाशित कर दिया जावेगा — उसी अंक में पुरस्कारों की लिस्ट भी प्रकाशित करदी जावेगी — पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच कराना हो तो १० योम के अन्दर १) रु० मनीआर्डर भेज कर जांच करा सकते हैं। इस के बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा और पुरस्कार तक सीम कर दिये जावेंगे —

४. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जावेगा —

५. मैनेजर का निर्णय अन्तिम व कानूनन मान्य होगा —

६. निर्णय सीलबन्द लिफाफे के वास्तविक उत्तर के आधार पर होगा —

७. पूर्तियां व शुल्क भेजने का पता —

सी० एम० गुप्त मैनेजर, मनोहर पहेली बाग (कोटा राजपूताना)

पहेली सं० ३४ की संकेतमाला

बायें से दायें

१. दिल्ली की सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्रिका।

४. स्त्रियों के शृंगार में इसका भी स्थान है।

६. — होना अपने भाग्य की बात है।

७. एक सब्जी, इसका पूर्वी भारत में विशेष प्रचलन है।

१०. एक धार्मिक ग्रन्थ।

११. कुछ लोग इसे ही श्रेष्ठ समझते हैं।

१२. देखिये, चार अक्षरों वाली यह वस्तु आपको इष्ट तो नहीं है।

१४. क्रियाविशेषण और सम्बन्धसूचक शब्द।

१५. प्रत्येक मुकद्दमेबाज इस के चक्कर में फंसता है।

१६. इसकी कामना करना बुरा नहीं है।

१६ सप्ताह का एक दिन।

२०. आकाश में विचरणशील।

२१. इसका वास्ता पड़ ही जाता है।

२२. — से मनुष्य को यथाशक्ति सहायता करनी चाहिये।

ऊपर से नीचे

१ सुन्दर।

२. इस स्वभाव के मनुष्य की सफलता में सदा सन्देह रहता है।

३. वह कर्म जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है।

५. जनसंख्या में वृद्धि के साथ इसकी आवश्यकता बढ़ती जाती है।

७. आंधी और तूफान जैसे संकट में भी — का भरोसा नहीं छोड़ना चाहिये। (चार अक्षर का शब्द)

८. — को अपने कल्याण के लिए बहुत सी वस्तुओं से बचना चाहिए।

६. स्नेह बोधक सम्बोधन है।

१३. सभी युगों में सर्वश्रेष्ठ रहा है।

१७. मनुष्यों का स्वामी।

१८. एक ऋतु।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४

ये वर्ग आपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं हैं।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

दिल्ली, सोमवार २८ वैशाख
सम्वत् २००५

10th; May 1948.

वर्ष १५
संख्या ५

मारत के नये नियुक्त
गवर्नर जनरल

श्री राजगोपालाचार्य

हिन्दी के महान् अमर कलाकार कविवर सूरदास (प्रामाणिक चित्र)

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २८ वैशाख सम्वत् २००५

पूंजी व श्रम में समन्वय

आज जब समस्त देश का ध्यान काश्मीर के युद्ध में, सुरक्षा समिति की बहस, हैदराबाद में रजाकारों के नृशंस अत्याचार और पाकिस्तान के षडयंत्र की ओर लगा हुआ है, भारत सरकार के दफ्तरों में एक ऐसा कार्य किया जा रहा है, जिसकी ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है, किन्तु महत्व की दृष्टि से वह किसी भी तरह उपेक्षणीय नहीं है। राजनीति का व्यापक आधार किसी समय जाति या धर्म रहा होगा, किन्तु आज वह कुछ एक क्षेत्रों में सीमित हो गया है और संसार में उसका स्थान अर्थनीति ने ले लिया है। देशों में राजनैतिक दलों का संगठन राजनीतिक मतभेद के कारण इतना अधिक नहीं होता, जितना आर्थिक कार्यक्रम में विभिन्न विचारों के कारण। भारतवर्ष ने जब तक स्वराज्य प्राप्त नहीं किया था, यह स्वाभाविक था कि राजनीतिक दलों का मूलभूत आधार केवल स्वराज्यप्राप्ति होता, किन्तु स्वतन्त्र हो जाने के बाद विभिन्न दलों का संगठन आर्थिक कार्यक्रम के सम्बन्ध में मतभेद के आधार पर होने लगा है।

आर्थिक कार्यक्रम की दृष्टि से आज भारत में ही नहीं, संसार के विभिन्न देशों में जो दल संगठित हो रहे हैं, उन में से चार प्रमुख हैं। एक दल निजी उद्योग पर विश्वास करता है। बड़े बड़े उद्योगपति और सम्पन्न व्यक्ति इस दल के नेता हैं। पूंजीवादी, सरमायेदार, अनुदार आदि कितने ही नामों से लोग इसे स्मरण करते हैं। दूसरा दल इसकी प्रतिक्रियास्वरूप संगठित हुआ है। रूस में इसका जन्म हुआ है। निजी उद्योग पर इसका विश्वास बिलकुल नहीं है। यह दल उत्पादन के सब बड़े साधनों को राष्ट्र की सम्पत्ति बना लेना चाहता है। यह दल देश के मुख्य शासक और स्वामी के रूप में किसान और मजदूर को ही स्वीकार करता है। इसकी दृष्टि में देश के व्यावसायिक विकास में पूंजी का महत्व अत्यन्त हीन और श्रम का महत्व असाधारण है। यह दल समाजवादियों या साम्यवादियों का है, यद्यपि इनमें भी परस्पर कई भेद हैं।

पूंजीवाद के विरुद्ध पिछले कुछ वर्षों में जो दुष्प्रचार हुआ है, किसी को यह मानने में संकोच न होगा कि उसकी पृष्ठभूमि पूंजीपतियों के स्वयं अपने अत्याचारों के कारण काफी दृढ़ हो चुकी थी। जनता का शोषण किया गया और पूरी शक्ति के साथ। इस लिए पूंजीवाद के विरुद्ध वातावरण आज केवल रूस में ही नहीं, अमेरिका जैसे पूंजीपति प्रधान देश में भी कम उग्र नहीं है। आज भारतवर्ष में भी यह भावना उग्र रूपेण विद्यमान है और लगातार बढ़ती जा रही है। लेकिन दूसरी ओर यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत जैसे देश में यदि व्यावसायिक उन्नति का किसी को सब से अधिक श्रेय दिया जा सकता है, तो वह देश के उद्योगपति हैं जिन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय औद्योगिक विकास में सैकड़ों बाधाएँ डालने के बावजूद अपनी कार्यकुशलता व व्यापारिक दक्षता के कारण आज देश को संसार के प्रथम आठ औद्योगिक देशों की पंक्ति में ला बिठाया है। आज औद्योगिक विकास की भारत को बहुत सख्त जरूरत है और पहले से भी अधिक उग्रता के साथ। इस लिए उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती किन्तु इसके साथ साथ उन्हें शोषण की वह छूट भी नहीं दी जा सकती जिसके कारण देश का अधिकांश दरिद्र हो जावे। उनपर कड़ा नियन्त्रण रखना आज की अनिवार्य आवश्यकता है।

इस नये दृष्टिकोण से संगठित एक तीसरा दल है, जो उद्योगपति व श्रम का समन्वय करने के पक्ष में हैं। ब्रिटेन की एटली सरकार इसी मार्ग पर चल रही है और भारत की नेहरू सरकार भी इसी मार्ग की एक पथिक है। उद्योगपतियों की व्यवहार कुशलता और मजदूर का श्रम, दोनों को उचित आदर की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों में वर्ग संघर्ष को इतना अधिक महत्व मिल गया है कि अमीर हो या गरीब, प्रत्येक देशहित पर अपने स्वार्थ को तरजीह देने लगा है। न उद्योगपति को देश की चिन्ता है और न मजदूर या किसान को। इन दोनों में परस्पर सहयोग और समन्वय अनिवार्य है। इसी दिशा में भारत सरकार के प्रयत्न जारी हैं। वह कुछ धन्धों को राष्ट्र की सम्पत्ति बनाना चाहती है, तो कुछ धन्धों में पूंजी व श्रम का समन्वय। त्रिवर्षीय औद्योगिक सन्धि इसी दिशा में प्रथम कदम था। अब श्रममन्त्रियों के सम्मेलन ने एक नई समिति नियुक्त करने का निश्चय किया है, जो यह सलाह देगी कि किसी उद्योग के लाभ को किस अनुपात में पूंजी व श्रम में विभक्त किया जाय। यह प्रश्न बहुत विवादग्रस्त है, परन्तु इसके सिद्धान्त से सभी सहमत होंगे कि लाभ के विभाजन के लिए एक नियम बन जाना चाहिए। विभिन्न धन्धों में वर्क्स कमेटियां, न्यूनतम वेतन, आदि के अन्य नियम भी समन्वय की दिशा में ही उठाये गये कदम हैं। आर्थिक दृष्टि से चौथा वर्ग गांधीवादी विचारधारा को समर्थकों का है किन्तु वह इस निकट भविष्य में कोई महत्व पा सकेगा, इसमें अभी सन्देह है। तब समन्वय की दिशा में ही भारत का आर्थिक लक्ष्य प्राप्त हो सकता है और उसी दिशा पर भारत सरकार जा रही है। इसलिए हम उसका समर्थन करते हैं।

रियासतों के संघ

महाराजा पटियाला भी पंजाब की रियासतों के संघ में सम्मिलित हो गये और इस तरह रियासतों के संघ बनने की जो शृंखला दिसम्बर १९४७ में प्रारम्भ की गई थी, वह अब करीब पूर्ण हो गई है। हैदराबाद को छोड़कर अब कोई रियासत न संघ से बाहर रहा है और न भोपाल या जयपुर, जोधपुर आदि चार पांच रियासतों को छोड़कर उत्तर भारत में कोई रियासत किसी रियासती संघ से बाहर रही है। इसके कारण ६०० रियासतों का अस्तित्व, जो भारत की प्रगति में बाधा डाल सकता था, करीब करीब प्रभावहीन हो गया है इस दिशा में एक बड़ा और कदम उठाया जाने लगा है जो बहुत प्रशंसनीय है। केवल भिन्न भिन्न प्रान्तों या रियासत संघों को केन्द्रीय संघ में सम्मिलित होना ही आवश्यक नहीं है देश के हित की दृष्टि से यह भी जरूरी है कि शासन की प्रमुख सत्ता केन्द्र में रहे। विकेन्द्रीकरण अपने आप में अच्छी चीज है किन्तु संकट के समय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति देखते हुए आज असाधारण संकटकाल ही है, सत्ता का केन्द्रीभूत होना और भी आवश्यक है। इसी लिए विभिन्न रियासत संघों के प्रमुखों का जो सम्मेलन संघ में प्रवेश की शर्तों पर पुनर्विचार के लिए हो रहा है, वह बहुत आवश्यक है। आर्थिक दृष्टि से समस्त भारत में एक नीति चलनी चाहिए। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य की सफलता के लिए राष्ट्र के सब अंगों का सहयोग आवश्यक है और इसी लिए यह आवश्यक है कि रियासत संघ अपने अनेक विभाग संघ को सौंप दें। ऐसा करने के दो लाभ होंगे। एक तो यह कि देश का आर्थिक व राजनैतिक पुनर्निर्माण अधिक सुगमता व प्रभावकारिता से हो सकेगा और दूसरे यह कि देश में भेदभावना, जो ब्रिटिश शासन में जानबूझ कर बहुत अधिक पाली पोसी गई है, समाप्त हो जायगी और आज तो भेद भाव को लगातार कम करने के लिए जो भी उपाय किये जाय, वे करने चाहिए।

सूरजयन्ती

विदेशी शासन में यह स्वाभाविक था कि देश की समस्त शक्ति उस से मुक्त होने के प्रयत्न में लग जाती। इस लिये हम अपनी सांस्कृतिक तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों की ओर बहुत कम ध्यान दे सके। हिन्दी भाषा की तो घोर उपेक्षा हुई। राज्य की ओर से न केवल हिन्दी को कोई प्रश्रय नहीं मिला परन्तु उसका तिरस्कार किया गया। हिन्दी के महान् कलाकारों के सम्बन्ध में कभी शोध का कोई गम्भीर प्रयत्न सरकार की ओर से नहीं किया गया। हिन्दी के सम्बन्ध में जो भी शोध किया गया है, वह सब प्रायः गैरसरकारी सीमित साधनों से हुआ है। इसी कारण अब तक प्राचीन हिन्दी कवियों के सम्बन्ध में बहुत कम सामग्री उपलब्ध हुई है। यह हर्ष की बात है कि हिन्दी के महान् कलाकार सूरदास की जन्म तिथि का पता लग गया है और मथुरा में ब्रज साहित्यमण्डल की ओर से १३ मई को समारोह के साथ उसे मनाया जा रहा है। हिन्दी हमारी अपनी भाषा है, इसके राष्ट्र भाषा रूप को स्थिर रखने में मध्यकालीन हिन्दी कवियों का विशेष स्थान रहा है। सूरदास ऐसे ही उत्कृष्ट कवियों में से एक थे। उनकी कविता का हिन्दी साहित्य में असाधारण स्थान है। सूर सूर तुलसी ससि की उक्ति उनके महत्व को प्रकट करती है। वात्सल्य रस के प्रतिपादन में कोई कवि उनका स्थान नहीं ले सका। राजनीतिज्ञ किसी देश के न शरीर का निर्माण करते हैं, साहित्यिक उसकी आत्मा का संस्कार करते हैं। इस लिए साहित्यकों का किसी भी देश में असाधारण महत्व होता है। इसी दृष्टि से हम ब्रजसाहित्य मंडल के इस प्रयत्न का स्वागत करते हैं।

धर्म और राजनीति

ट्रावनकोर के प्रधानमन्त्री ने आजाद काश्मीर सरकार के अध्यक्ष को एक तार भेजकर शाह अब्दुल्ला की गहरी सहानुभूति व सहायता का आश्वासन दिया है। इसमें यह भी कहा गया है कि काश्मीर के मुसलमानों को मुक्ति और स्वाधीनता की लड़ाई में मुस्लिम बन्धुओं की पूर्ण सहायता प्राप्त होगी। इस तार के शब्द वस्तुतः उससे कहीं अधिक गम्भीर अर्थ रखते हैं जो इन शब्दों से प्रकट होता है। संसार की भावी राजनीति में धर्म या सम्प्रदाय का स्थान शायद उससे बहुत अधिक होगा, जिसकी हम विशुद्ध राष्ट्रीयतावादी कल्पना किया करते हैं। शायद हम इसकी चिन्ता भी न करते, यदि पाकिस्तान के नेताओं ने हमारे देश में साम्प्रदायिक धर्मान्धता का जहरीला

पटियाला व पूर्वी पंजाब की रियासतों का संघ

कुछ दिनों से पूर्वी पंजाब की रियासतों को मिलाकर जो फुलकिया संघ बनाने की योजना हो रही थी उसमें पटियाला के सम्मिलत हो जाने से अब योजना पूरी हो गई है, परन्तु अब उसका नाम फुलकिया संघ नहीं रहेगा। नाम के विषय में अन्तिम निश्चय संघ की विधान परिषद् करेगी। राजधानी का भी निश्चय तभी होगा।

संघ बनाने के सन्धिपत्र पर पटियाला, कपूरथला, फरीदकोट, झींद, नाभा, कलसिया, नालागढ़ तथा मलेरकोटला के शासकों ने हस्ताक्षर किये हैं। इस संघ का उद्घाटन १५ जुलाई को होगा और २० अगस्त तक सब रियासतों का शासन संघ के आधीन हो जायगा। इस नये राज्य का क्षेत्रफल १०००० वर्गमील, आबादी ३५ लाख तथा आय ५ करोड़ रुपये होगी। महाराजा पटियाला इस संघ के आजीवन राजप्रमुख और महाराजा कपूर्थला उपराजप्रमुख नियत किये गये हैं।

कच्छ का शासन केन्द्रीय सरकार के हाथ में

कच्छ सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य है। १ जून से उसका शासन भारत सरकार सम्भाल रही है। कच्छ प्रजामण्डल के नेताओं और कच्छ के महाराव के साथ वार्तालाप करने के बाद यह निश्चय किया गया है। इस राज्य को चीफ कमिश्नर का एक प्रान्त बना दिया जाएगा।

वस्त्र-निर्माताओं का अतिरिक्त लाभ राजकोष में

टैरिफ बोर्ड द्वारा निर्धारित उचित एक्समिल मूल्य से ऊपर जो अतिरिक्त धन निर्माताओं ने लिया होगा वह सब राजकोष में ले लिया जाएगा। इससे न केवल राज्य को अप्रत्याशित आय होगी बल्कि निर्माताओं को अधिक मूल्य लेने में भी निरुत्साह पैदा होगा।

वातावरण पैदा न कर दिया होता। आज भी भारतीयसंघ के मुसलमानों में ऐसी संख्या कम न होगी, जो राष्ट्रीयता की अपेक्षा इस्लाम के नाम पर जल्दी संगठित हो सकते हैं। मध्यपूर्व में संगठित मुस्लिम राज्यों के कारण इस भावना को और अधिक बल मिलता है। ट्रांसजर्डन का उपर्युक्त तार भारतीय नेताओं को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की नयी दिशा की ओर, जहां आदर्श व यथार्थ में पर्याप्त भेद रहता है, भी सोचने को प्रेरित करेगा।

नहर के पानी पर समझौता

अपर बारी दोआब नहर तथा फीरोजपुर हैडवर्क्स के पानी के बटवारे के सम्बन्ध में भारत और पाकिस्तान में अस्थायी समझौता हो गया है। इसके अनुसार पूर्वी पंजाब सरकार पश्चिमी पंजाब को पानी देती रहेगी और उसकी अदायगी रिजर्व बैंक में जमा होती रहेगी।

पश्चिमी बंगाल का नया मन्त्रिमण्डल

पश्चिमी बंगाल के गवर्नर द्वारा निमन्त्रित किये जाने पर डा० विधानचन्द्र राय ने दस मन्त्रियों का नया मन्त्रिमण्डल बनाया है। नये मन्त्रियों के नाम निम्न हैं —

डा० विधानचन्द्र राय (प्रधानमन्त्री), श्री नलिनीरंजन सरकार (अर्थ मन्त्री), श्री किरणशंकर राय (गृहमन्त्री), श्री रायहरेन्द्रनाथ चौधरी (शिक्षा मन्त्री), श्री प्रफुल्ल चन्द्र सेन (रसद मन्त्री), श्री यादवेन्द्र नाथ पंजा (कृषि मन्त्री), श्री विमलचन्द्र सिन्हा (सिंचाई मन्त्री), श्री निकुंज बिहारी मैत्र (शरणार्थी मन्त्री), श्री नीहारेन्दुदत्त मजूमदार (कानून मन्त्री) और श्री कालिपद मुखर्जी (श्रममन्त्री)।

इस नये मन्त्रिमण्डल में पुराने तीन मन्त्रियों को शामिल न करने के अलावा और कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

निज़ाम व कम्यूनिस्टों का गठबन्धन

हैदराबाद रियासत में ५ वर्षों से कम्यूनिस्ट पार्टी पर पाबन्दी लगी हुई थी। अभी कुछ दिन पहले निज़ाम की ओर से यह पाबन्दी उठा ली गई है। कम्यूनिस्ट पार्टी ने आठ पृष्ठ का पैम्फलेट प्रकाशित किया है, जिस से इस रहस्य का उद्घाटन होता है। कम्यूनिस्ट पार्टी ने हैदराबाद की स्वतन्त्रता का समर्थन किया है और भारतीय सरकार को खरीखोटी सुनाई है। इस प्रकार निज़ाम ने स्टेट कांग्रेस के आन्दोलन को समाप्त करने के लिए रज़ाकारों के अलावा यह एक नया मोर्चा खोला है।

श्री राजगोपालाचार्य भारत के गवर्नर जनरल

२१ जून को लार्ड माउण्टबेटन के भारत के गवर्नर जनरल के पद से पृथक् हो जाने के पश्चात् पश्चिमी बंगाल के वर्तमान गवर्नर श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भारत के गवर्नर जनरल बनेंगे। ब्रिटेन के राजा ने भी इसकी स्वीकृति प्रदान कर दी है। स्वतन्त्र भारत के वे प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल बनेंगे।

फिलस्तीन संघर्ष

दमिश्क रेडियो ने अरबलीग की ओर से सीरिया स्थित १८ से ५० वर्ष तक की आयु के सब अरब पुरुषों को ३ दिन के भीतर पुलिस थाने में अपने नाम दर्ज करवाने की हिदायत दी है। इन्हें फौजी शिक्षा दी जायगी और फिलस्तीन मुक्ति सेना तैयार की जाएगी।

बगदाद के विदेशी पत्रकारों को चेतावनी दी गई है कि वे अरब सेनाओं की गतिविधि के विषय में लगाये गये सेन्सर के नियमों का उल्लंघन करेंगे तो उन्हें कठोर दण्ड दिया जाएगा।

ब्रिटिश विदेशमन्त्री अर्नेस्ट बेविन ने अरबलीग के देशों को कठोर चेतावनी दी है कि यदि उन्होंने फिलस्तीन पर हमला किया तो ब्रिटेन से संघर्ष करना पड़ेगा।

ब्रिटेन ने अमरीका की फिलस्तीन में १५ मई के पश्चात् दस दिन के लिए शासनादेश बढ़ाने की अपील को सर्वथा ठुकरा दिया है।

ट्रांसजोर्डन के शाह अब्दुल्ला ने कहा है कि अरब लोग चाहे विराम सन्धि को मानलें, पर मैं १६ मई को फिलस्तीन पर आक्रमण कर ही दूंगा।

चीन में कम्यूनिस्टों की प्रगति

केन्द्रीय चीन में लगभग एक लाख कम्यूनिस्टों ने आक्रमण किया है। इससे पहले इतनी बड़ी संख्या में आक्रमण नहीं हुआ था। दक्षिण पश्चिम होनान में बढ़ते हुए कम्यूनिस्ट सैन्य ने चेनमैंग और नेइहसियांग पर कब्जा कर लिया है।

दक्षिण में दो और बड़े शहरों पर भी कम्यूनिस्टों ने घेरा डाल दिया है। नानयांग में भीषण संग्राम हो रहा है। उत्तरी शान्तुंग में सरकारी सेनायें तेज़ी से पीछे हटती जा रही हैं। यदि अविलम्ब कुमुक न भेजी गई तो सरकारी कब्जे के पतन की आशंका है।

दिल्ली की सड़कों पर भीड़ का एक दृश्य ।

महाराजा पटियाला संघ में सम्मिलित होने के पत्र पर हस्ताक्षर कर रहे हैं।

काश्मीर युद्ध के एक यशस्वी सेनापति श्री बक्शीसिंह ।

बङ्गाल के प्रधानमंत्री डा० विधानचन्द्रराय ने अपनी डूबती नैया संभाल ली ।

महात्मा सूरदास

[श्री गणेश शास्त्री]

निर्विवादरूप से स्वीकार कर लिया गया है कि न केवल ब्रजसाहित्य में अपितु सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में सूर के जोड़ का अन्य कोई कवि नहीं। हिन्दी में कृष्णकाव्य के प्रसारक सूर का महत्वपूर्ण स्थान है। आज तक हिन्दी साहित्य बहुत मन्दगति से चलता रहा है। अपने प्राचीन साहित्यिकों का सम्मान करना हमने नहीं सीखा। सुनी-सुनाई बातों के आधार पर तारीफ करते हुए दो चार पृष्ठ लिख देने में ही हमने अपने कर्तव्य की इति श्री समझ ली। अब आशा है, यह गहरी नींद टूटेगी। गहरी छान बीन होगी और तब किसी भी विवादास्पद विषय पर अधिकारपूर्ण निर्णय हो सकेंगे। महात्मा सूर के जीवन के सम्बन्ध में अनेकों विद्वानों ने लिखा है, परन्तु भिन्न भिन्न लेखकों की सम्मतियां परस्पर इतनी भिन्न हैं कि उनके आधार पर व्यक्ति किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच सकता। अब तक जो सामग्री उपलब्ध हो सकी है उसके आधार पर सूर का जन्म वैशाख कृष्णा ११,१५३५ विक्रमी माना जाता है। इनके कुल और जन्मस्थान के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ आलोचक इनको ब्राह्मण मानते हैं और कुछ के अनुसार ये चन्द्र के वंशज ब्रह्मभट्ट थे। दूसरे पक्षवाले अपने मत की पुष्टि के लिए 'साहित्यलहरी' का एक पद उपस्थित करते हैं, परन्तु अधिकतर विद्वान् इस पद को अप्रामाणिक मानते हैं। दूसरी ओर सूर के ब्राह्मण-वंशीय होने के अधिक प्रमाण मिलते हैं अतः इनको ब्राह्मण ही माना जाता है। कोई सीही (देहली के समीप) गांव को इनकी जन्मभूमि मानते हैं और दूसरे रुनकता (आगरा के निकट) गाव को। इनके पिता के नाम के सम्बन्ध में भी अभी तक विद्वानों की एकमति नहीं। बहुमत इनके पिता का नाम रामचन्द्र या रामदास मानता है।

सूरदास के जीवन के वृत्त के सम्बन्ध में सब से बड़ा विवादास्पद विषय उनके अन्धे होने के सम्बन्ध में है। यह निश्चित है कि सूर अन्धे थे। सूर ने स्वयं कहा है—"सूर कहा कहि दुविध आंधरो" इन्हीं के अन्धे होने के कारण आज 'सूरदास' शब्द अन्धे के लिये रूढ़ हो गया है। परन्तु विवाद तो यह है कि क्या सूर जन्म से ही अंधे थे अथवा बाद में किसी कारण आखें चली गईं थीं? कुछ विद्वान् उन्हें जन्मान्ध स्वीकार करते हैं, परन्तु बहुमत उसका पक्षपाती नहीं। उनके काव्य में वर्णित प्राकृतिक वर्णनों, रंगों के चित्रणों आदि को देखने से यह बात स्वभावतः सिद्ध हो जाती है कि सूर जन्मान्ध नहीं थे। चौरासी वैष्णवों की वार्ता में वल्लभाचार्य और सूर के प्रथम मिलन के अवसर पर सूर के चक्षुहीन न होने का वर्णन है, (······तब सूरदासजी श्री आचार्य श्री महाप्रभून ने दर्शन करिकै आगे आप बैठे।) जबकि अकबर से भेंट के अवसर पर वार्ता में सूर की चक्षुहीनता का उल्लेख है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सूर जन्मान्ध नहीं थे। बाद में सूर की आखें कैसे फूटीं, यह विषय भी अनेकों भ्रान्तियों और किंवदन्तियों को लिये हुए है।

सूर का देहावसान १६४० के आस-पास पारसोली नामक गाव में हुआ था, जहां उनकी कुटी अब तक बनी हुई है। इनकी मृत्यु ठीक कब हुई, इस सम्बन्ध में किसी ने भी प्रकाश नहीं डाला।

सूर के ग्रन्थ

यों सूर के तीन ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं—सूर सागर, सूर सारावली और साहित्य-लहरी, परन्तु काशी नागरी प्रचारिणी सभा की खोज-रिपोर्ट में इनके १६ ग्रन्थों की सूची दी गई है। श्री द्वारिकादास परिख ने सूर के ग्रन्थों की संख्या १६ बताई है। इन में कई पुस्तकें उपलब्ध हो चुकी हैं, जिनको देखने से विदित होता है, कुछ तो स्वतन्त्र पुस्तकें नहीं हैं, केवल सूर-सागर से किये गए कुछ पदों के संग्रह मात्र हैं और कुछ की भाषा शैली भावनाएं कुछ ऐसी हैं कि उन्हें महात्मा सूरदास द्वारा लिखित नहीं माना जा सकता। हो सकता है, कोई और सूरदास हुआ हो और उसी की वे अन्य पुस्तकें हों।

सूर सागर महात्मा सूरदास की सर्वोत्तम और प्रामाणिक रचना है। इसका निर्माण सूर ने अपने गुरू श्री वल्लभाचार्य की आज्ञा से किया था। इसमें श्री मद्-भागवत की कथा गेय पदों में वर्णित है। कहा जाता है कि सूर सागर में सवा लाख पद थे, परन्तु खेद का विषय है कि आज उसमें केवल ५ या ६ हजार पद ही उपलब्ध होते हैं। 'साहित्य लहरी' सूर के दृष्टि कूट पदों का संग्रह है, जिसमें रस, अलङ्कार और नायिकाभेद का भी वर्णन है। साहित्यिक दृष्टि से इस ग्रन्थ का कोई महत्व नहीं, फिर भी इसके एक पद में उसका रचनात्मक और एक में सूर की वंशावली दी गई है, इसीलिए सभी समालोचकों ने उसका उल्लेख किया है, अन्यथा शायद उसका नाम भी

[शेष पृष्ठ २५ पर]

पाकिस्तान पर मैं कैसे लिखूं ?

[श्री० अब्दुलगनी]

सोमान्त गांधी खां अब्दुलगफ्फार खां के पुत्र श्री अब्दुलगनी ने पाकिस्तान पर लेख लिखने में असमर्थता प्रकट करते हुए जो पत्र 'इण्डिया' के सम्पादक को भेजा है, उसका एक मनोरंजक अंश नीचे दिया जा रहा है।

ब्राच फैएडी हाउस, बम्बई

प्रिय कुसुम,

आप ने मुझे लिखने का जो 'आफर' दिया है, उसके लिए हृदय से धन्यवाद, किन्तु पाकिस्तान पर लेखमाला भेजना मैं नहीं चाहता। आप अच्छी तरह जानती हैं कि मैं यदि ऐसा करूंगा, तो मेरी स्थिति कितनी हास्यास्पद हो जायगी। दोनों डामीनियनों के बीच आपसी कटुता उग्रतर ही होती जा रही है। मेरी स्थिति अभी उस आदमी की स्थिति जैसी है जिसके एक पत्नी है और एक 'मिस्ट्रेस'—पत्नी जिसके साथ उसे किसी कदर जिन्दगी गुजारनी ही है। पाकिस्तान के सम्बन्ध में हिन्दुस्तान के पाठकों को कुछ बताना अथवा लिखना वैसा ही होगा जैसा किसी की 'मिस्ट्रेस' (रखेल)से उसकी पत्नी के सम्बन्ध में बातचीत करना। 'मिस्ट्रेस' को खुश रखने का एक ही तरीका हो सकता है कि पत्नी की निन्दा की जाय और मैं ऐसा करने को तैयार नहीं।

गांव के उस बदनाम नौजवान की कहानी तो आपने सुनी ही होगी? वह अपनी विधवा माता के पास हर शाम को गन्दे बदन और चीथड़े कपड़े पहन कर आया करता था!

एक दिन शाम को उसकी मां ने उससे पूछा — 'गांव वाले तुम से इतना क्यों जलते हैं?'

'क्योंकि मैं सच बोलता हूं', पुत्र ने जवाब दिया।

मां ने कहा — 'आखिर सच बोलने से ये निर्दयी क्रूरतापूर्वक तुम्हें पीटते क्यों हैं?"

लड़के ने फौरन जवाब दिया — 'मां, मेरा तो ऐसा ख्याल है कि यदि मैं सच कहूं, तो शायद तू भी मार बैठेगी।'

'ऐसा तुम कैसे कह सकते हो?' मां झुंझला उठी, 'क्या मैं बराबर तुम से यह नहीं कहती रही हूं कि सच बोला करो?'

'ठीक है। मां, पिताजी को मरे दो साल हो गये—फिर भी तुम अपने होठों को रंगती क्यों हो और गालों पर 'रूज' क्यों मलती हो?'

'शैतान, बदतमीज' मां गुस्से से बोल उठी और उसे घर के बाहर खदेड़ दिया।

कुसुम, मैं बम्बई से बाहर खदेड़ा

लेखक

जाना पसन्द नहीं करता। जब समुद्र में लहर आती है तो उसका गर्जन मुझे बहुत ही प्रिय लगता है। बरामदे में बैठ कर यूरोपियनों के नहाने का तरीका देखना मुझे अच्छा लगता है। खासी अच्छी सिगरेट पीते हुए सोचता हूं कि तीसरे महायुद्ध के बाद इस दुनिया की शक्ल सूरत कैसी होगी।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के 'भाग्य निर्माताओं' के सम्बन्ध में मैं कैसे कुछ लिख सकता हूं। क्या आपने 'फ्रांटियर क्राइम्स रेगुलेशन' की ४०वीं धारा के सम्बन्ध में कुछ नहीं सुना? साथ ही हमारे काश्मीरी प्रधान मन्त्री एक पुराने 'कांग्रेसमैन' हैं जिनके पास अब हास्य नाम की कोई चीज नहीं रह पायी है। क्या आपने उनकी किताब 'गन्स एण्ड गोल्ड आन दि पठान फ्रांटियर' पढ़ी है? वह एक अत्यन्त साधारण किताब है लेकिन एक असदिग्ध नौकरी की तलाश करने वाले व्यक्ति के मनोविज्ञान का अच्छा अध्ययन है। 'चाहे जैसे हो, बढ़ने जाओ' वह चिल्लाता है और मैं उनके इस 'प्रोग्राम' में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित करना नहीं चाहता। इसलिए मैं यह लेखमाला लिखने मे लाचार हूं। अन्यथा मैं आपको ऐसी-ऐसी बातें बताता जिन्हें पढ़कर मन में यह भावना उठती कि इससे तो अंग्रेजों की गुलामी कहीं अच्छी थी, स्वग के तमाम श्री बनिस्बत इस आजादी के, जिसके लिए हम लड़ते रहे और पचास साल से कुर्बानियां करते रहे।

ध्यान रहे, मैं एक लेख में यह अच्छी तरह नहीं लिख सकता कि राजा बनकर सभी अपनी नीली पगड़ी में कितने भद्दे दीखते हैं।

भारत के नये गवर्नर जनरल

श्री राजगोपालाचार्य

बकिंघम प्रासाद से सरकारी तौर पर घोषणा की गई है कि ब्रिटेन के राजा ने भारत सरकार की सिफारिश पर पश्चिमी बंगाल के वर्त्तमान गवर्नर श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य को अर्ल माउण्टबेटन के स्थान पर जो कि २१ जून को अपना पद त्याग कर रहे हैं, भारत का गवर्नर जनरल नियुक्त करने के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी है।

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य का जन्म १८७९ में मद्रास प्रांत में सलेम जिले के होसूर नामक ग्राम में हुआ था। सेंट्रल कालेज बंगलौर तथा ला कालिज मद्रास में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने १९०० में वकालत आरम्भ की। आप सलेम म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य चुने गये और कुछ समय के लिए उसके प्रधान भी रहे।

१९१९ में आपने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और १९२० तक आप सविनय अवज्ञा आंदोलन के दृढ़ समर्थक बन गये। जब सत्याग्रह आंदोलन के संबंध में गांधीजी को जेल भेज दिया गया तो आपने 'यंग इण्डिया' के सम्पादन का भार सम्भाला। १९२१-२२ में आप कांग्रेस के प्रधानमंत्री चुने गये और सत्याग्रह आंदोलन के दिनों में बराबर कार्यकारिणी के सदस्य रहे।

१९२३ में जब श्री पं० मोतीलाल नेहरू ने स्वराज्य पार्टी का संगठन किया तब अपरिवर्तनवादियों का नेतृत्व श्री राजगोपालाचार्य ने किया था। गया कांग्रेस के बाद श्री चित्तरंजनदास को उन्हीं के प्रबल विरोध के कारण कांग्रेस के अध्यक्ष पद से स्तीफा देना पड़ा था। १९३२ में आप स्थानापन्न राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

श्री राजगोपालाचार्य मद्रास प्रथम लोकप्रिय प्रधानमंत्री थे। द्वितीय विश्व-युद्ध आरम्भ होने के बाद कांग्रेस के आदेशानुसार आपने भी प्रधानमंत्री के पद से त्याग-पत्र दे दिया। उसके बाद सत्याग्रह आंदोलन में फिर आपको जेल जाना पड़ा। १९४२ में कांग्रेस की नीति से मतभेद रखने के कारण आपने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। १९४४ में आपने गांधी जिन्ना वार्ता में आपने महत्वपूर्ण भाग लिया। इन्हीं दिनों में आपने केन्द्रीय सरकार में मुस्लिमलीग से समझौते का प्रस्ताव पेश किया। इस की देश भर में तीव्र आलोचना हुई, किन्तु राजा जी अपने मंतव्य पर दृढ़ रहे। १९४६ में जब पं० जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रपति निर्वाचित हुए तो आपको फिर कार्यकारिणी का सदस्य बनाया गया और अन्तःकालीन सरकार में आप रसद तथा उद्योग मंत्री नियुक्त किये गये।

१५ अगस्त १९४७ से आप पश्चिमी बंगाल के गवर्नर हैं। गत नवम्बर में लार्ड माउण्टबेटन की अनुपस्थिति में आपने गवर्नर जनरल के पद को भी सुशोभित किया।

राजाजी एक उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता हैं। आप अखिल भारतीय चर्खा संघ की कार्यकारिणी के सदस्य तथा दक्षिण-भारतीय हिन्दी प्रचार सभा के संचालक हैं। आप मद्य निषेध के जोरदार समर्थक हैं और उन्हीं के मंत्रीमंडल ने इस ओर सबसे पहले कदम उठाया था। आप हरिजन सेवक संघ के सदस्य भी रह चुके हैं।

सात्विक जीवन और उच्च चिंतन में राजा जी विश्वास करते हैं। जब तक कि कार्यभार के कारण यह असंभव नहीं हो गया आप प्रधानमंत्री होते हुए भी अपने कपड़े स्वयं धोते रहे। आप पटुवक्ता और तामिल के लोकप्रिय लेखक हैं। आपने महाभारत का तामिल में अनुवाद किया है। आप दस से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं। जिनमें गीता, उपनिषद तथा कई कहानियों के समह शामिल हैं। आपकी 'जेल डायरी' का अनुवाद कई प्रांतीय भाषाओं में हुआ है।

आप म० गांधी के समर्थी हैं और आपकी पुत्री का विवाह महात्मा गांधी जी के पुत्र श्री देवदास गांधी हुआ है।

'नीला रंग'—यामिनी राय ने मुझसे कहा था,—'क्रूरता का प्रतीक है।' मेरे कहने पर वह चंगेज खां के चित्र चित्रित कर रहे थे। उन्होंने लम्बा नीला मस्तक — जिस पर चीनी मसमुच्छा और लम्बी दाढ़ियां लेटी रही थीं — चित्रित किया था। मेरे यह कहने पर कि इस चित्र के

(शेष पृष्ठ २४ पर)

विश्व के राजनीतिक रंगमंच पर आज संयुक्तराष्ट्र अमेरिका और रूस अपनी अपनी पैंतरेबाजी दिखा रहे हैं। इससे आम तौर पर लोगों का यह ख्याल हो गया है कि अब तृतीय विश्व युद्ध की रणभेरी शीघ्र ही बजकर रहेगी। इस प्रकार की धारणा निश्चय ही भय और चिन्ता को जन्म देगी। चूंकि यह मानसिक उद्विग्नता विश्वव्यापी स्वरूप ग्रहण करेगी, इसलिए यह आवश्यक है कि हम उक्त धारणा की पृष्ठभूमि की तह तक जायें, और यह अंदाज लगायें कि क्या भय और चिन्ता को आश्रय देना वास्तव में युक्तिसङ्गत होगा।

द्वितीय महासमर की परिसमाप्ति के बाद ही विश्व ने यह देख लिया कि पूंजीवाद और साम्यवाद का गठबंधन दो में से किसी के लिये भी सुखदायक नहीं सिद्ध हो सकता। बिस्मार्क राजनीतिक कुशलता के लिए यूरोप में प्रसिद्ध थे। उनका कहना था कि खुद खतरा उठा कर किसी चीज का परीक्षण करने वाला मूर्ख है। इसके विपरीत जो दूसरों के परीक्षणों से अपना कर्तव्य निर्धारित करता है, वह सयाना है। प्रथम महासमर के दर्मियान अस्तित्व में आई हुई रूस की बोलशेविक सरकार पर किस प्रकार पूंजीवादी-साम्राज्यवादी राष्ट्रों की वक्र दृष्टि पड़ी थी, वे किस प्रकार नोंच खाने के लिए उस पर टूट पड़े थे, यह इतिहास के गम्भीर विद्यार्थियों से छिपा नहीं है। इसके बाद भी सोवियत रूस के खिलाफ उनके षड्यन्त्र जारी ही रहे। सत्ता हाथ में आने के बाद स्टेलिन ने विश्वक्रान्ति के सिद्धान्त का परित्याग कर एक देश में समाजवाद की नीति अपनायी और पूंजीवादी, साम्राज्यवादी राष्ट्रों से हाथ मिलाने के परीक्षण में जुट गये। यह परीक्षण ही उन्हें ले बहा—जिस नाजी जर्मनी को उन्होंने अपना मित्रराष्ट्र समझा था, उसी ने अनाक्रमणात्मक संधि के ठीक १८ महीने बाद सोवियत रूस पर चढ़ाई कर दी और नये मित्रराष्ट्र — अमेरिका और ब्रिटेन विपत्ति की इस घड़ी में खड़े तमाशा देखते रहे।

साम्राज्यवादी ब्रिटेन-अमेरिका के अनुमान के विपरीत रूस द्वितीय महासमर से विजयी और प्रभावशाली होकर निकला। ब्रिटेन पर "चौबे जी गये थे छब्बे बनने पर लौटे दुबे" वाली कहावत चरितार्थ होती है। वह द्वितीय महासमर में बुरी तरह छटपटा गया और तृतीय श्रेणी का राष्ट्र रह गया। अब प्रतिस्पर्धा की परिधि में आने वाले—दो ही राष्ट्र रह गये — अमेरिका और रूस। राजनीतिक आदर्शों और सिद्धान्तों की दृष्टि से — दोनों में जमीन आसमान का अन्तर है।

अमेरिका का गर्जन तर्जन

सिर्फ स्टालिन को पालतू बनाने के लिए

[श्री प्रद्युम्नकुमार बी० एस० सी०]

तनातनी और संघर्ष

द्वितीय महासमर की समाप्ति के बाद से ही अमेरिका और रूस के बीच तनातनी और दावपेंच का सूत्रपात होता है। अमेरिका विश्व का अधिपति बनने के अपने स्वप्न को मूर्तरूप देने के लिये अग्रसर हुआ। यूरोप का सोवियत रूस के नियंत्रण और प्रभाव में रहना अमेरिका को बुरी तरह खटका, पर इस शक्ति संतुलन को नष्ट करना उसकी ताकत के बाहर की बात थी। अस्तु। उसने मध्य और पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों का जबर्दस्त गुट बनाया, पुनरुद्धार और पुनर्निर्माण के नाम पर उनको आर्थिक सहायता देना आरम्भ किया। यही नहीं अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने इन देशों की प्रतिक्रियावादी ताकतों में हाथ सुदृढ़ कर क्रांति की लहर को रोकने के लिये उनको अनुप्राणित किया। फलस्वरूप इन देशों में प्रगतिशील ताकतों का निर्दयतापूर्वक दमन हुआ। और प्रच्छन्न रूप से फासिज्म अपना काम कर रहा है। प्रतिक्रिया की लहर और पूंजीवाद साम्राज्यवाद की किलेबंदी ने स्टेलिन को प्रकम्पित कर दिया। उसे रूस की सुरक्षा के लिये खतरा अनुभव हुआ। अमेरिका से उन्होंने मैत्री करनी चाही, पर शक्ति और सत्ता के मद में चूर अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने उनके प्रस्ताव ठुकरा दिये। तब नैराश्यग्रस्त हो उन्होंने पैंतरेबाजी शुरु की।

स्टेलिन का 'इन्फार्मेशन ब्यूरो'

स्टेलिन ने पहला पैतरा—बेलग्रेड यूगोस्लाविया में कम्यूनिस्ट इन्फार्मेशन ब्यूरो की स्थापना करवा कर प्रदर्शित किया। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि तथा विश्व भर के पूंजीवादी पत्रों ने इस ब्यूरो को लेकर हायतोबा मचाया। उन्होंने कहा—यह ब्यूरो दूसरे इंटर नेशनल का अवतार है और यह लेनिन—ट्राटस्की के क्रान्तिकारी समाजवादी कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप देने के लिये कायम किया गया है। यही नहीं, स्टेलिन के इस कार्य को राजनीतिक युद्ध की घोषणा तक कहा गया और युद्ध की तरह का बदला लेना आवश्यक बताया गया। अमेरिका के नेतृत्व में किये जाने वाले इस प्रचार का मुख्य उद्देश्य वाल स्ट्रीट की प्रतिक्रियावादी परराष्ट्र नीति के पक्ष में लोकमत को लाना है।

सत्य बात तो यह है कि स्टेलिन क्रांति का पथिक ही नहीं। वह एक दशाब्दि पूर्व के पूंजीवाद समर्थक संयुक्त मोर्चे फिर से बना रहे हैं। तब वे हिटलर और जर्मन साम्राज्यवाद के विरुद्ध बनाये जा रहे थे और अब ट्रूमैन और अमेरिकन साम्राज्यवाद के विरुद्ध बनाये जा रहे हैं। स्टेलिन कहीं पर भी क्रांतिकारी ढंग से पूंजीवाद का उच्छेदन नहीं करना चाहते। उन्होंने कभी क्रांति का नेतृत्व नहीं किया। अलबत्ता चीन, जर्मनी, स्पेन प्रभृति देशों की श्रमिक क्रांतियों को विफल किया। उन्होंने बोलशेविक पार्टी को ध्वंस किया, कमिण्टर्न को दफनाया, झूठे और नकली मामले चलाये, जो मास्को केस के नाम से प्रसिद्ध हैं। क्रांति का प्रतिपादन करने के एकमात्र अपराध पर ट्राट्स्की को कत्ल करवाया और वह अत्याचारी डिक्टेटर है। सोवियट यूनियन में क्रांति विरोधी जो कुछ है, उस सब के वह प्रतीक हैं। इस प्रकार के क्रांतिविरोधी-स्वेच्छाचारी स्टेलिन क्रान्ति के पथिक नहीं हैं।

'मैं समझौता चाहता हूं'—स्टेलिन

स्टेलिन वाल स्ट्रीट के साथ समझौता करना और युद्ध कालीन साझेदारी को कायम रखना चाहते हैं। एक एक अनाक्रमणात्मक समझौते और ऋण के बदले वह विश्व भर में श्रमिक आन्दोलनों को ध्वंस करने के लिये अपने एजेन्टों की सेवाएं समर्पित करने को प्रस्तुत हैं। इन्फार्मेशन ब्यूरो के गठन की घोषणा के बाद उन्होंने ब्रिटिश पार्लमेंट के ८ सदस्यों से, जो उससे मिले थे, अमेरिका और ब्रिटेन से शुरूआत कर समस्त देशों के साथ समझौता करने और फौरन आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्धों में सुधार करने की इच्छा व्यक्त की थी।

अमेरिका क्यों न अकड़े ?

द्वितीय महा समर की समाप्ति के बाद क्रान्ति की जो प्रथम लहर उठी थी, उसके दर्मियान मजदूरों और किसानों की सरकारों की स्थापना करने से जन साधारण को रोकने में स्टेलिन की क्रान्तिविरोधी सेवाओं को वाल स्ट्रीट ने स्वीकार किया था। अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने अपने डालरों से यूरोप को भर दिया। इन डालरों ने मरणासन्न यूरोपियन पूंजीवाद के अन्दर वही काम किया, जो सिर में नये खून का प्रवेश करता है। पूंजीपति संभल गये और अमेरिका की तानेदार सरकारों ने अपनी मांस पेशियों को उभारा। रूस विरोधी पूंजीवाद राष्ट्रों का एक पश्चिमी ब्लाक बन कर तैयार हो गया। तब वालस्ट्रीट को स्टेलिन की सेवाओं की कोई आवश्यकता न रही, और विभिन्न देशों की सरकारों से उनके (स्टेलिन के) एजेंट निकाल बाहर किये गये। अमेरिकन साम्राज्यवाद ने यूरोप और सुदूर पूर्व में रूस के विरुद्ध मोर्चेबन्दिया शुरू कीं। वह सारी दुनियां पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है और रूस भी उसकी इस योजना के अन्दर ही है। पर रूस से भिड़ने के के बजाय वह अपने आर्थिक साधनों और परमाणु बमों के बल पर उस पर अपनी शर्तें लादना चाहता है और उसे दबा कर रखना चाहता है। वस्तुतः समझौते का मूल्य ही स्टेलिन के मार्ग में अभी बाधक है।

रूस पर दबाव डालने की चाल

प्रेसीडेंट ट्रूमेन ने अमेरिकन कांग्रेस के संयुक्त ऐतिहासिक अधिवेशन में उस दिन तीसरे महा समर का डर दिखाते हुए कहा कि यूरोप की हालत विशेष तौर से खतरनाक है। अमेरिका अब दृढ़ निश्चय कर ले कि उसके ऊपर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की भारी जिम्मेदारी है और वह शक्ति से उस जिम्मेदारी को पूरा करेगा। वह हर देश के साथ सहयोग करेगा, जो सच्चे हृदय से विश्वशान्ति के मार्ग की बाधाओं को दूर करना चाहते हैं। इसमें रूस भी शामिल है। रूस के साथ मित्रतापूर्ण सहयोग का मार्ग खुला था और खुला रहेगा, बशर्ते रूस कार्य करने में सहयोग दे। आपने यूरोप की हालत के खतरनाक बनने का दोष रूस के गले मढ़ा और इस हालत का मुकाबला करने के लिए त्रिसूत्री योजना भी पेश की: (१) जबरन फौजी भर्ती (२) हर अमेरिकन नागरिक को फौजी शिक्षा (३) यूरोप के आर्थिक पुनः निर्माण के लिए पूरी मदद।

स्पष्ट है कि प्रेसीडेन्ट ट्रूमेन तृतीय महासमर की अपनी तैयारियों का पिस्तौल तान कर स्टेलिन से कहते हैं — 'हमारे कामों में सहयोग करो और हम जो कहें उसी के अनुसार चलो।'

यह बात दूसरी है कि सर्वत्र श्रमिक क्रान्तियों की हत्या करने के कारण, स्टेलिन को यह भरोसा न हो कि अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग ऐसे सकट के समय रूस की सहायता करेगा। पर उनके विश्वासघात और सकुचित स्वार्थ पूर्ण राष्ट्रीयता वादी नीति के बावजूद ससार के श्रमजीवी

(शेष पृष्ठ २४ पर)

बम्बई की एक महिला सभा में पं० नेहरू ।

पश्चिमी या पूर्वीय आदर्श

[श्री सुरेशचन्द्र]

★

स्वतन्त्रता के इस युग में अब परवशता का जीवन व्यतीत करने के लिए कोई भी तैयार नहीं है, भारतीय नारी की स्वतन्त्रता की समस्या एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में हमारे सामने है ।

देश के स्वतन्त्र हो जाने पर भी आज हम पश्चिम की ओर ललचाई आंखों से देख रहे हैं और सभी सामाजिक तथा राजनैतिक गुत्थियां पाश्चात्य आदर्शों के आधार पर ही सुलझाना चाहते हैं ।

किन्तु स्वतन्त्रता के मोहजाल में फंसकर पाश्चात्य नारी का कितना नैतिक पतन हुआ है उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते । पाश्चात्य समाज की प्रायः आधी स्त्रियां भ्रूण हत्या करने को बाध्य होती हैं । डा० मेरी स्टोप्स अपनी (सन्तति निरोध) नामक पुस्तक में लिखती हैं कि न्यूयार्क शहर में प्रतिवर्ष १० हजार से भी अधिक गर्भवती स्त्रिया भ्रूण हत्यायें करती हैं । हाल में ही इंग्लैण्ड की पार्लमेंट में मि० लेज ने बताया कि इंग्लैण्ड में बीस वर्ष की आयु वाली कुमारियों में से ५० प्रतिशत विवाह से पहिले ही गर्भवती पाई जाती हैं और विवाहित स्त्रियों की प्रथम संतानें लगभग २५ प्रतिशत व्यभिचार जन्य होती हैं । व्यक्तिगत तथा आर्थिक स्वतन्त्रता के नाम पर पाश्चात्य नारी व्यभिचार की ओर अग्रसर हो रही है । क्योंकि उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ प्रतियोगिता में आना पड़ता है और जीविकोपार्जन की खोज में नये नये मालिकों का दरवाजा खटखटाना पड़ता है । आज पाश्चात्य नारी एक खिलौना मात्र है । जिसके जीवन का ध्येय पुरुष की वासना शान्त करना ही है । स्वतन्त्रता तथा समानाधिकार की लालसा ने पश्चिम के पारिवारिक जीवन को नष्ट कर दिया है अतः कलह, अशांति विवाह विच्छेद वहां के नित्य प्रति के कार्य हैं ।

किन्तु इसके विपरीत पारिवारिक जीवन भारतीय नारी का विकास क्षेत्र है । मातृत्व उसका जीवन है तथा प्रेम और सहयोग उसका आदर्श है । वह घर की साम्राज्ञी है, मानवता की नित्य माता है, वह भीष्म, अर्जुन, शंकर, रामानुज जैसी विभूतियों को जन्म देने वाली स्नेहमयी जननी है । वह अपने इस नैसर्गिक अधिकार को नहीं छोड़ सकती । पुरुष तथा नारी की स्वतन्त्रता के क्षेत्र विभिन्न हैं, अतः नारी को भी अपने ही मार्ग पर चलकर स्वतन्त्रता प्राप्त करना इष्ट है । वह पुरुष के बहुक्षेत्रव्यापी जीवन का निर्माण करने के लिए एक विशिष्ट क्षेत्र में रहकर ही जगत की सेवा करती है । अतः पारिवारिक जीवन को सुखप्रद तथा सन्तोषजनक बनाना ही भारतीय नारी की स्वतन्त्रता की समस्या का हल है । स्त्री पुरुष के पारस्परिक सहयोग से ही पारस्परिक जीवन सुखमय बनाया जा सकता है । प्रेम, सहयोग, समानता तथा सामंजस्य ही पारिवारिक जीवन का प्राण है

भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी को आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त रखा गया है और इसी में उसका कल्याण भी है । यदि हमारी मातायें अपने जीवन निर्वाह के लिए दर दर ठोकरें खाती फिरें, तो वे अपने नैसर्गिक दायित्व का कैसे पालन कर सकती हैं और कैसे वे अपनी सन्तानों को आदर्श बना सकती हैं । मेरे विचार से एक अर्थसम्पन्न प्रतिष्ठित परिवार की महिला यदि आर्थिक स्वतन्त्रता के नाम पर इधर उधर भटके तो इससे अधिक लज्जा की बात ही कौन सी है । कभी कभी ऐसा भी होता है जब किसी परिवार की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक नहीं होती और पुरुष की आय इतनी नहीं होती कि जिससे वह अपने स्त्री बच्चों के पालन पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा की समुचित व्यवस्था कर सके, तब नारी को अपने परिवार की उन्नति के लिये आर्थिक सहयोग देने की आवश्यकता होती है । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह पाश्चात्य नारी की तरह मिल, फैक्टरियों में कार्य करने लगे या सेना में भरती हो जाये । भारतीय नारी तो अपने पारिवारिक क्षेत्र में ही पुरुष को आर्थिक सहायता दे सकती है । नाना प्रकार के घरेलू धन्धे हैं जिनसे वह परिवार में रहकर भी परिवार की आर्थिक उन्नति में सहायक हो सकती हैं । दूसरे स्त्रियों की आर्थिक स्वतन्त्रता के क्षेत्र भी इतने सीमित हैं और दोषपूर्ण हैं कि कोई भी आदर्श भारतीय नारी उस क्षेत्र में कार्य करने के लिये तैयार नहीं होगी । आर्थिक स्वतन्त्रता के आधुनिक क्षेत्रों से नारी के नैतिक-पतन की अधिक सम्भावना है ।

वास्तव में भारतीय नारी अपने क्षेत्र में पूर्णतया स्वतन्त्र है पारिवारिक जीवन में कटुता आ जाने के कारण तथा पाश्चात्यों का अन्धानुकरण करने की प्रवृत्ति के कारण ही यह समस्या उपस्थित होती है । पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने मात्र से ही यह समस्या हल हो सकती है ।

इस सप्ताह के समाचार

—'मोहन ने मुझको नहीं, मैंने मोहन को भगाया है' यह उत्तर लखनऊ के सिटी मजिस्ट्रेट श्री एम० बी कौल को गायत्रीदेवी नामक एक सुन्दरी युवती ने दिया, जब उसके प्रेमी श्री चन्द्रमोहन पर उसके भगाने का अभियोग लगाया गया । गायत्रीदेवी गोरखपुर के एक प्रतिष्ठित एवं धनी परिवार की अति सुन्दरी युवती है और चन्द्रमोहन के साथ उसका प्रेम था । दोनों लखनऊ आये और स्थानीय नगर में पति-पत्नी की भांति रहने लगे यहां से हजरतगंज पुलिस ने चन्द्रमोहन को गायत्रीदेवी को अपहृत करने के अभियोग में गिरफ्तार किया । गायत्री ने कहा कि वह पूर्णतया बालिग है और चन्द्रमोहन से विवाह कर चुकी है । अदालत ने गायत्री को उसकी आयु निर्धारित हो चुकने तक के लिए एक स्थानीय आश्रम में रख दिया है और चन्द्रमोहन अभी भी हवालात में है ।

— दिल्ली के कई भागों में सोने के नाम पर पीतल बेचने के अपराध में कई स्त्रियां गिरफ्तार हुई हैं । वे अपने को विभिन्न शरणार्थी बता कर कठोर आवश्यकता के कारण विवश होकर अपना जेवर बेचने की बातें करती है और लोग उनके इस झांसे में आ जाते हैं ।

---

७० लाख पति चाहिये

जर्मनी की स्त्रियों को

डा० राबर्ट स्ट्राम होप ने विश्व के संयुक्त राष्ट्रों को लिखा है कि जर्मनी में कम से कम ७० लाख पति चाहिये अन्यथा बच्चा पैदा करने की उम्रवाली लगभग आधी स्त्रियां अविवाहित रह जायेंगी अथवा एक पुरुष पर दो स्त्रियां रहेंगी ।

— अंजुमन शरियत उल इस्लामा के ५० वर्षीय मौलवी इस्मुद्दीन लाहौर में कैंची लेकर इसलिए निकले थे कि जिस लड़की को बिना बुर्का ओढ़े पायें उसके बाल काट दें और इस प्रकार पाकिस्तान में शरियत का प्रचार करें, पर मौलवी को ही औरतों को छेड़ने के इल्जाम में पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया ।

—बनारस मारवाड़ी अस्पताल में एक महिला के एक साथ चार बच्चे पैदा हुए हैं । २ बच्चे उसे २१ अप्रेल को घर पर ही हो गये थे । लेकिन दो बच्चे २१ अप्रेल को अस्पताल में पैदा कराये गये । प्रसव के समय बच्चे स्वस्थ थे । उनका वजन ७॥ पौंड था । इनमें तीन लड़के और एक लड़की है । बच्चों की माता का नाम कलुई तथा पिता का नाम कालू है । स्त्री की उम्र ३८ साल है । इसके पहले इसके ८ बच्चे और पैदा हो चुके हैं ।

आज कल गांव-गांव में आपको यह दृश्य देखने को मिलेंगे

१. किसान अनाज की फसल काट कर ला रहा है।

२. अनाजे के पूले ढेर बना कर रखे गये हैं।

३. बैल अनाज के पूलों को गाह रहे हैं।

४. किसान महिला अनाज की उड़ाई कर रही है।

प्रचण्ड शक्ति की स्रोत

कास्मिक किरणें

[श्री शिवनारायण बी० एस० सी०]

जब से हिरोशिमा में परमाणु बम फटा है, तब से प्रत्येक व्यक्ति को यह ज्ञान हो गया है कि परमाणु में कितनी महान् शक्ति छिपी है। वैज्ञानिकों में भी तब से परमाणु को और अधिक विस्तार के समझने की उत्सुकता बढ़ रही है। अमेरिका ने परमाणु बम के भेद को इतनी कुशलता से छिपाये रखा कि इसके हिरोशिमा में गिरने तक शायद किसी और देश को इसकी विराट शक्ति का ज्ञान नहीं था। परन्तु इस 'दुर्घटना' के शीघ्र ही पश्चात् सब देशों ने अणु शक्ति के अध्ययन तथा अन्वेषण का यत्न प्रारम्भ कर दिया। आज कल इसी परमाणु शक्ति को समझने के लिए ही वैज्ञानिक लोग बड़े बड़े पेचीदे और बहुमूल्य यन्त्रों को प्रयोग में ला रहे हैं। परन्तु हम में से शायद बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि प्रति दिन प्रकृति भी अपनी महान् शक्ति लगा कर इन परमाणुओं से क्या २ काम लेती है। परमाणु में जो प्रचण्ड शक्ति है, उसका संचार केवल उसके विस्फोट से ही होता है और इस कार्य के लिए प्रकृति जिस वस्तु को प्रयोग में लाती है, उसका नाम है, कासमिक किरण।

इस अद्‌भुत शक्ति अथवा कासमिक किरण के कार्य को समझने के लिए यह आवश्यक होगा कि पहले हम परमाणु की बनावट के सम्बंध में कुछ जान लें। परमाणु होता तो इतना सूक्ष्म है कि इस को हमारे यह नेत्र किसी भी सूक्ष्म दर्शक यन्त्र से भी देख नहीं सकते, परन्तु पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि इसमें एक पूर्ण सूर्य मण्डल का रूप होता है। जिस प्रकार सूर्य के चारों ओर ग्रह और नक्षत्र घूमते हैं, इसी प्रकार परमाणु में सूर्य के स्थान पर एक केन्द्र होता है? जिसको 'न्यूक्लियस' कहते हैं। सूर्य की तरह इसके चारों ओर भी ऋण बिजली वाले छोटे २ अणु घूमते हैं, जिनको इलेक्ट्रान कहते हैं। न्यूक्लियस भी दो प्रकार के अणुओं से बनी होती है, जिनको 'प्रोटान' और न्यूट्रान' कहते हैं। 'प्रोटन' में धन विद्युत होती हैं परन्तु न्यूट्रान में बिजली नहीं होती। 'इलेक्ट्रान' और प्रोटान के पारस्परिक आकर्षण के कारण ही परमाणु बम संगठित रहता है, टूटता नहीं। उसकी विराट शक्ति का संचार इसी सगठन को भंग करने से ही होता है।

आधुनिक वैज्ञानिक इसी कार्य को करने के लिए अमित शक्ति लगा रहे हैं और बहुत अधिक कीमती मशीनें भी इसके लिए प्रयोग में ला रहे हैं। अमेरिका के प्रोफेसर एम० एल० ओलीफेंट ने इस सम्बन्ध में एक यंत्र बनवाया है, जिसका मूल्य लगभग १२५,००० पौण्ड पड़ा है। परन्तु जैसे कि हम पहले कह चुके हैं, प्रकृति इन बहुमूल्य यन्त्रों के स्थान पर परमाणु को तोड़ने फोड़ने के लिए कासमिक किरण का ही प्रयोग करती है, इससे हम यह अनुमान कर सकते है कि कासमिक किरण कितनी प्रचण्ड शक्तिशाली होगी। यह किरणें निरन्तर भूमि पर बरसती रहती है। यह दो प्रकार की होती हैं — तीव्र और मध्यम। मध्यम किरणें तो पृथ्वी पर पड़ते ही समाप्त हो जाती हैं, परन्तु तीव्र किरणों में असाधारण प्रवेश शक्ति होती है। वह भूमि के नीचे ३००० फीट तक खानों में पाई गई है। तीव्र किरणों की यह असाधारण शक्ति वायुमण्डल से गुजरते समय परमाणु की न्यूक्लियस से टकराने से उत्पन्न हो जाती है। इसी रीति को विस्तारपूर्वक समझने और प्रयोग में लाने के लिए आज बहुत से वैज्ञानिक दिन रात एक कर रहे हैं। यह हर्ष की बात है कि इन वैज्ञानिकों में कुछ भारतीय भी हैं। कासमिक किरणों की खोज में सब से अग्रसर भारतीय शायद डाक्टर पी० एस गिल हैं, जो कि थोड़े ही दिन पहले टाटा की ओर से अमेरिका भेजे गये हैं। वह पहले भी इस विषय पर पर्याप्त खोज कर चुके हैं और इस में उन्हें कुछ सफलता भी हुई है।

पहले पहल कासमिक किरणों का ज्ञान फ्रांस के एक वैज्ञानिक हैनरी बैकरल को अकस्मात् ही हो गया था। उसने अपनी मेज की दराज में कुछ फोटोग्राफी की प्लेटें रखी थीं। कुछ समय पश्चात् वे काली पाई गईं। इसको पहले तो रेडियम का प्रभाव समझा गया, क्यों कि उस दराज में यूरेनियम भी पड़ा हुआ था, जो रेडियम का केन्द्र माना जाता है। परन्तु और अधिक अनुभव करने पर यह ज्ञात हुआ कि यह रेडियम का प्रभाव नहीं था, क्यों कि रेडियम का प्रभाव डालने वाली सब वस्तुओं को हटाने पर भी प्लेटें काली पाई गईं। वैज्ञानिकों ने इसको एक नई प्रकार की शक्ति का आविष्कार समझा जो कि शायद वायुमण्डल से आती है, परन्तु जब गुब्बारों में बैठ कर यही परीक्षण फिर किया गया, तो मालूम हुआ कि इस शक्ति का संचार चारों ओर के वायुमंडल से एक जैसा ही होता है।

इस नये आविष्कार का संसार में क्या उपयोग होगा, इसका हम अभी अनुमान नहीं लगा सकते और न ही इस को कोई जानता है, परन्तु यह निश्चय से कहा जा सकता है कि इस के परिणाम अवश्य महत्वपूर्ण व क्रान्तिकारी होंगे। कई वैज्ञानिकों का यह विचार है कि कासमिक किरणों में मनुष्यों और पशुओं के शरीरों में असाधारण परिवर्तन उत्पन्न करने की शक्ति है और कुछ का विश्वास तो यह भी है कि कैन्सर (नासूर) के रोग पर भी इसका प्रभाव महत्वपूर्ण होगा।

———

सफर का आरम्भ

[श्री श्रीराम शर्मा 'राम']

कहानी

रायबहादुर बाबू राधिकाचरण को उन व्यक्तियों में गिना जाय जिनको जीवन से प्रेम हो और मृत्यु से भय; तो अनुचित नहीं कहा जा सकता। बहुत पहिले से उनका खानदान अमरों में शुमार होता आया था। उस घर में जन्म लेना ही इस बात का सबूत था कि भाग्यवान् है वह... पूर्व जन्मों का पुण्य संचित कर लाया है, वह व्यक्ति! निदान, इस बंधे-बंधाये सूत्र के अनुसार चलते हुए जब बाबू राधिकाचरण ने अपनी ताल्लुकदारी का काम सम्भाला तो यह कहा जा सकता था कि अब उनमें न तो बालपन रहा, न अल्हड़ स्वभाव। अपितु, दुनिया की दयानतदारी और समझदारी का एक बोझ उनके दिमाग पर पड़ गया था। सम्भवतः यही कारण था कि उन्होंने बरबस ही अपना पिछला जीवन भुला दिया। उन साथियों की स्मृतियों को भी अपने मस्तिष्क से उतार दिया कि जिनके साथ खेल में, स्कूल में उनका समय बीता था। उस अवस्था में उनके वे साथी सभी तो भाग्यवान् और धनिक परिवारों के नहीं थे, उनमें सभी कोटि के थे, अनेक निर्धन, अनेक मध्यम वर्ग वाले।

परन्तु यह कैसी विवशता थी बाबू राधिकाचरण की कि जब कभी वह ताल्लुकदारी की किसी बोझिल समस्या में उलझते और उससे छुटकारा न पाकर कुछ खिन्न बन जाते, तो जीवन के उन क्षणों में उन्हें अपना वह रंग-महल, वे नौकर-चाकर और वह चारों ओर से घेरे खड़ी हुई खुशामदियों और कुछ चाहने वालों की भीड़ को देख, वह मानो चुएगा बन जाते। उस समय, जैसे उस जीवन से ऊब ही जाते, वे बाबू साहब! उनकी वह सुन्दर और मधुर पत्नी, वे कोमल और सलोने बच्चे मानो फूल नहीं, कांटे बने हुए दिखायी देते। लेकिन ऐसे क्षणों में आने का अर्थ यह था कि बाबू राधिकाचरण का दम घुट-घुट जाता। मानो उन्हें एक ऐसे स्थान पर बन्द कर दिया जाता कि जहां न वायु का प्रवेश था, न प्रकाश का। उनके शरीर में समाया हुआ वह प्राणपुंज मानो बरबस ही उनकी आंखों के द्वार पर आ-आकर निकल जाना चाहता। हाय! तब उन्हें कितनी वेदना मिलती! कितनी पीड़ा! कितनी व्यथा! मानो सभी कुछ लिप-पुत कर एकाकार हो जाता!

लेकिन ऐसा जीवन तो राधिकाचरण को पसन्द नहीं था। सम्भवतः अपने मस्तिष्क की इस कमजोरी को दूर करने के लिये ही उन्होंने शराब पीना आरम्भ किया। लगता यह कि जितने नशे थे, सभी उनके लिये ग्राह्य थे। पैसा था, यश था, समाज में सन्मान था, इसलिये वे उस शुभ अवसर से लाभ उठाना अपने उस जीवन के तईं इतना ही आवश्यक मानते, जितनी कि भूख के लिये रोटी।

यही कारण था कि वह नशीला और विलासमय जीवन पाकर राधिकाचरण का मिजाज दिन-दिन चिड़चिड़ा और भयानक बनता गया। उसका सबसे अधिक प्रभाव नौकरों पर पड़ा। कभी अपने काश्तकारों पर। जिसका फल यह हुआ कि बाबू राधिकाचरण का वह क्रूर और दम्भी स्वभाव सर्व विदित हो गया। भले ही उन्होंने कोई खून नहीं किया, परन्तु समाज उन्हें खूनी और जल्लाद भी कहने लगा। चूंकि समाज विवशता का दास था,— उनकी रैयत। इसलिये किसी में इतना तो हौसला हुआ नहीं कि उनके मुंह पर कुछ कहे, परन्तु मन में सबके यही था कि यह मर जाये, राधिकाचरण.... उठ जाये, इस जहान से!

जैसा कि आम ताल्लुकदारों ने अपना रिवाज बना लिया है कि उनकी शान और शौकत के प्रदर्शन का एक यह भी अवसर था कि सरकारी अफसरों को दावत दें, इसलिए, अपने पूर्वजों की इस परम्परा को राधिकाबाबू ने भी खूब निबाहा। आये दिन, उनके रंग महल में कभी गवर्नर को दावत दी जाती, कभी कलक्टर को। इसका फल यह हुआ कि उन्हें 'रायबहादुरी' का खिताब मिल गया। परन्तु उन दावतों का बोझ भले ही, ऊपर से देखने में राधिकाबाबू की तिजोरी पर पड़ता, लेकिन सचाई यह थी कि वह कठोर आघात बेचारे किसानों के पेटों पर पड़ रहा था। उस आघात की पीड़ा से वे कराहते, तड़पते और अपनी आंखों का खारी पानी बहाकर मौन रह जाते! वे बोलते, तो पिटते। उनके घर छिनते। जमीन से बेदखल कर दिये जाते। शायद यह भी एक कारण था कि उस ताल्लुकदारी के जितने नौकर थे, वे सभी जीवन-यापन की दृष्टि से सन्तुष्ट और सुखी थे। मालिक की क्रूरता, बर्बरता और अहम्मन्यता का वे पूरा-पूरा फायदा उठाते।

इत्तिफाक की बात थी कि बाबू राधिकाचरण का बड़ा लड़का कुछ दिन बीमार रहा और मर गया। उसकी बीमारी के उपचार में बाबू साहब ने सभी-कुछ किया। अच्छे २ डाक्टरों को दिखाया। पूजा-पाठ कराये। परन्तु किसी का फल सन्तोषप्रद नहीं निकला। क्योंकि लड़का आरम्भ से विलासी बन गया था। उसके कमजोर और कोमल हृदय पर शराब और ऐय्याशी का जो जबरदस्त घूंसा पड़ा, तो वह उसे नहीं सहार सका।

लेकिन लड़का तो मर गया, परन्तु बाबू राधिकाचरण को अकेला और एकाकी बना गया। उसके प्रति जो उन में ममता की भावना थी, वह नहीं मरी। वह जीवित ही बनी रही। जिसका परिणाम यह हुआ कि राधिकाचरण का जीवन एकरस और नीरस हो गया। उन्हें अपना रंग-महल, वह ताल्लुकदारी और वह नौकर-चाकरों का मेला मानो स्वयं उनका ही शत्रु बना हुआ दिखाई दिया। इस पर आश्चर्य यह कि उनकी पत्नी ने एक दिन रोते हुए स्पष्ट कह दिया—'मेरा लड़का तुमने मारा है ... तुम्हारे पापों ने!' — वह बोली, 'ताल्लुकदारी के जितने किसान हैं, वह सताये जाते हैं... उनके घर जलाये जाते हैं। उन्हीं के श्रापों ने मेरा लड़का डस लिया है ......'

निश्चय ही, किसी और समय बाबू राधिकाचरण इस बात का जवाब देते। सम्भवतः पत्नी को फटकार देते। परन्तु उस समय तो उनका मानस पुत्र-शोक से प्लावित था। उन्हें यह भी पता था कि उनकी पत्नी ने कई दिन से अन्न-जल भी नहीं लिया। रात दिन उसे अपना पुत्र ही याद आ रहा था। इसलिए दुखिया मां की ओर देख, उन्होंने बरबस ही, अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उन्होंने मान लिया कि कसूर उनका है। उन्होंने जरूर ही अपने किसानों को सताया है।

परिणाम स्वरूप, जब नये वर्ष पर जमीन की उगाही आरम्भ हुई, तो ताल्लुकदार की ओर से आदेश दिया गया कि आधी रकम छोड़ दी जाय। किसानों ने इतना सुना तो चकित भाव में हर्ष प्रकट किया। उन्होंने शंका की कि इसमें कौनसा रहस्य है... कैसा षड्यंत्र!

परन्तु किसानों की वह आशंका निराधार थी। उन्हें जल्दी ही इस बात का पता चल गया कि ताल्लुकदार की मनोवृत्ति बदल गयी। उसके मन में किसानों के शोषण की जो धारणा समाविष्ट थी, वह मिट गयी। अपितु, उन्होंने देखा कि बाबू राधिकाचरण ने उनकी उन्नति के लिए नयी-नयी स्कीमें बना डालीं। उनके लिए पानी, खाद और नये बीजों की व्यवस्था स्वयं अपने व्यय से की। जिन गांवों में राधिकाचरण की कभी सूरत नहीं दिखायी दी, वहां आये दिन उनकी आमद होने लगी। रंग-महल में दावत और शराब पीनी बन्द हो गई, रायबहादुर की उपाधि भी उनके नाम के साथ लगानी बन्द करदी गयी। देश में जितनी प्रगतिशील संस्थाएं थीं उनको राधिकाचरण द्वारा प्रदत्त बड़ी राशियां भेंट होने लगीं, इसका परिणाम यह हुआ कि जो जनता उनसे दूर थी, उनके पास आती हुई डरती, वह अब उनके रंग-महल में निःसंकोच आती। अपने कष्ट सुनाती और वहां से किसी न किसी प्रकार का समाधान पाकर लौटती। लगता यह था कि जिन राधिका बाबू को जनता ने एक दिन भी अपना नहीं समझा, अब उन्हीं को अपना देखती। अपना ही क्या, — अपने ही दुःख-दर्दों का साथी।

[शेष पृष्ठ २० पर]

नय विधान में राष्ट्रपति को निरंकुश अधिकार

[प्रो॰ श्रीनारायण अग्रवाल]

भारतवर्ष के इतिहास में १५ अगस्त १९४७ की तिथि अत्यन्त महत्वपूर्ण गिनी जावेगी। क्यों कि इस तिथि को भारत सदियों की गुलामी की शृंखलाओं को तोड़कर स्वतन्त्र हो गया। बड़े हर्ष की बात है कि विधान परिषद् द्वारा निर्वाचित विधान-निर्मात्री सभा ने जिसके डा॰ अम्बेडकर प्रधान थे २५ फरवरी १९४८ को स्वतन्त्र भारत का प्रस्तावित विधान प्रकाशित कर दिया और अब यह जनता के सम्मुख है। यह विधान अभी तक विधान परिषद के विचाराधीन है और विधान परिषद् के स्वीकार कर लेने पर ही यह कानून बन सकेगा। विधान परिषद कुछ धाराओं पर विचार कर चुकी है। अभी कुछ धाराओं पर वाद-विवाद होना बाकी है। हम इस लेख में इस प्रस्तावित विधान की कुछ धाराओं पर विचार कर यह देखने का प्रयत्न करेंगे कि स्वतन्त्र भारत का यह विधान आम जनता को कहां तक लाभ पहुंचाता है तथा यह प्रजातन्त्र और समाजवादी विचारों से कहां तक मेल खाता है।

प्रस्तावित विधान के १८ भाग हैं तथा उसमें ३५० धारायें हैं। साथ में ८ सूचियां भी हैं। मूल प्रस्तावना में भारत को 'राज्यसत्ता प्राप्त प्रजातन्त्र' कहा गया है 'राज्यसत्ता प्राप्त जनतन्त्र' नहीं। इससे यह साफ स्पष्ट हो जाता है कि भारत वासों को अब भी यह सम्भावना दीख पड़ती है कि भारतवर्ष ब्रिटिश कामनवेल्थ का एक सदस्य बन कर रह सकता है जैसे कि कनेडा आस्ट्रेलिया आदि हैं और वह अपने को पूर्णतया स्वतन्त्र नहीं घोषित करेगा। यह दुर्भाग्य की बात है विशेषतः जब कि कांग्रेस इसी 'जनतन्त्र' शब्द के लिए सन् ३० से लड़ती तथा प्रतिज्ञा लेती चली आई है। स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही इतनी बड़ी भूल क्षम्य नहीं हो सकती। फिर सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक न्याय स्थापित करने की बात जब विधान के भाग ४ में डाल दी गई है, जिससे इन्हें कानून द्वारा लागू न किया जा सकेगा। इससे जनता के मूल अधिकारों पर जो कुठाराघात होगा, उसका अनुमान अभी न लगाया जा सकेगा। बड़े बड़े राजा महाराजाओं - ... ...न के लिये इस विधान में जनता का गला घोंटा जा रहा है और उनके सम्पूर्ण सत्ता प्राप्त करने की बात को इसी प्रकार हटा दिया गया है। धारा १ के अनुसार राजाओं को अप्रत्यक्ष रूप से रियासतों का स्वामी मान लिया गया है। यही नहीं, उनको आंतरिक मामलों में स्वेच्छापूर्ण फौजों को प्रयोग में लाने का अधिकार भी दे दिया गया है। मूल प्रस्तावना को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि नवम्बर ४६ के मेरठ कांग्रेस द्वारा स्वीकृत 'समाजवादी जनतन्त्र' के सिद्धान्तों को तो भुला ही दिया गया है।

मूल अधिकारों की तरफ ध्यान देने से ज्ञात होता है कि बहुत से अधिकार जिनका होना अत्यन्त आवश्यक है, गिनाये नहीं गये हैं। हमने यह स्वीकार नहीं किया है कि राज्य किसी भी धर्म को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन न देगा। धार्मिक स्वतन्त्रता होने से ही काम पूरा नहीं हो जाता। दूसरे देशवासियों को शस्त्र रखने की आम आज्ञा नहीं दी गई है। किसी सभ्य तथा स्वतन्त्र देश में शस्त्र रखने पर रुकावट नहीं है। इससे जनता पर बड़ा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इस समय के गन्दे साम्प्रदायिक वातावरण को देख कर कुछ मनुष्य यह कह सकते हैं कि इस समय शस्त्र रखने की आज्ञा देना ठीक नहीं है। पर विधान किसी विशेष समय के लिए नहीं बनाये जाते और न उस में आसानी से परिवर्तन ही किये जा सकते हैं। इस कमी को दूर करना अत्यन्त आवश्यक है।

विधान द्वारा यह स्पष्ट स्वीकार किया जाना चाहिये था कि यदि कभी भी फौजी कानून हो तो धारासभा को शीघ्र ही बुलाकर विचार करने का अवसर दिया जायगा। जनता की स्वतन्त्रता का रक्षक विधान ही होता है और जनता को उसी से प्रेरणा मिलती है। यदि विधान में इन बातों का ध्यान नहीं रखा गया तो जनता की स्वतंत्रता पैरों तले रोंद दी जायगी, जैसा कि हम सभी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अन्तर्गत देख लिया है।

सब से अनोखी बात यह है कि जितने भी मूल आधार अधिकार हैं, वह केवल स्वीकारात्मक हैं, उनका उपयोग करना जनता के ऊपर है। हमारे देश में कानून तथा मुकदमा करना जितना खर्चीला है उतना संसार में कहीं भी नहीं है। इग्लेण्ड में कोर्ट फीस बहुत ही कम है— वह सिर्फ नाम मात्र को ही है। सरकार की ओर से वकीलों को फीस मिलती है तथा उनको जनता के सब मुकदमे बिना फीस लिए करने पड़ते हैं। हमारी स्वतन्त्र सरकार को यह दोष अवश्य दूर करना चाहिए। या तो सरकार यह घोषणा कर दे कि राज्य की ओर से वकील बिना फीस मुकदमा करेंगे या कोर्ट फीस और अन्य व्यय कम कर दे। भारत वर्ष की निर्धन जनता को मूल अधिकार तब तक प्राप्त नहीं हो सकता जब तक कि उन्हें मुफ्त मुकदमे की सहायता नहीं है।

संघ की शासन-व्यवस्था देखने से ज्ञात होता है कि राष्ट्रपति को आवश्यकता से अधिक अधिकार दे दिये हैं। अगर वह उन अधिकारों का प्रयोग प्रारम्भ करे तो इस में तनिक भी सन्देह नहीं कि वह थोड़े से ही समय में डिक्टेटर हो जायगा। राष्ट्रपति धारा १०२ के अन्तर्गत अपनी इच्छानुसार, जब कि धारासभा का अधिवेशन न हो रहा हो और उसकी राय में आवश्यकता आ खड़ी हुई हो, एक आर्डीनेन्स जारी कर सकेगा। यह आर्डीनेन्स अन्य कानूनों की तरह ही लागू होगा। जब धारा सभा का पुनः अधिवेशन होगा, उस समय इसके सन्मुख यह रख दिया जायगा यदि इसी बीच में धारासभा उसे स्वयं स्वीकृत नहीं कर देती। कहने की आवश्यकता नहीं कि धारासभा का बुलाना राष्ट्रपति के ऊपर ही निर्भर है तथा वह जब चाहे धारासभा की बैठक भी समाप्त कर सकता है। इन सब धाराओं का समावेश इस नये विधान में सन् ३५ के भारतीय विधान से किया गया है। जब १९३५ का विधान हमारे देश में लागू हुआ था, उस समय सभी व्यक्तियों ने इन धाराओं की घोर निन्दा की थी। सन् १९३९ में जब कांग्रेस मन्त्रीमण्डल प्रान्तों में बनने की बात हुई, उस समय कांग्रेस ने इन्हीं धाराओं के प्रति नाराजगी प्रगट की और अन्त में एक समझौते के अनुसार जिसे "जेन्टिलमेन एग्रीमेन्ट" कहते हैं यह तय हुआ था कि प्रान्त में गवर्नर मन्त्रियों के कार्य में अधिकार होते हुए भी प्रतिदिन हस्तक्षेप नहीं करेंगे। इन धाराओं के केन्द्र में तथा प्रान्तों में होने से वही समस्या पुन उठ खड़ी होगी। फिर राष्ट्रपति या गवर्नर को आर्डीनेन्स जारी करने का अधिकार देना तो प्रजातन्त्र का गला घोंटना है। राष्ट्रपति पर सिर्फ एक ही प्रतिबन्ध है — विधान का भंग करने के अपराध में धारासभा द्वारा मुकदमा। पर यह प्रथा इतनी कठिन है कि आसानी से काम में नहीं लाई जा सकती।

राष्ट्रपति को केन्द्र में ही नहीं प्रांतों में भी काफी अधिकार दे दिये गये हैं। धारा १३१ के अनुसार गवर्नर नियुक्त करने का जो सुझाव रखा गया है उससे तो राष्ट्रपति की ओर भी बन जाती है। हो सकता है वह एक ऐसा गवर्नर रख ले या जो उसके हाथ का कठपुतला हो और फिर उसके स्वेच्छानुसार काम करे। प्रांतों में धारा १३९, १४४, १४४ (४) १४६, १५३ सभी बहुत ही गलत हैं तथा उनका बदल लेना अत्यन्त ही आवश्यक है। धारा १८८ तो बहुत ही

विधान-समिति के अध्यक्ष डा॰ अम्बेडकर

बुरी है। उसका प्रजातंत्र के किसी पहलू से समर्थन नहीं किया जा सकता। श्री हृदयनाथ कुंजरू ने भी विधान सभा में इस धारा पर विचार करते समय साफ २ शब्दों में कहा था कि "इसके द्वारा ९३ वीं धारा को पुनः रखा जा रहा है।"

विधान में कुछ धाराएं हैं, जिनके अनुसार राष्ट्रपति किसी स्थिति विशेष के समय में, 'संकटकाल की स्थिति की घोषणा" कर सकेगा। यह घोषणा धारासभा के सन्मुख रखनी पड़ेगी और और उसके न मानने पर भी छै माह तक लागू रह सकेगी। इस स्थिति में धारा २७७ के अन्तर्गत राष्ट्रपति को यह अधिकार होगा कि वह २४९ से, लेकर २५९ धाराओं को जिस तरह चाहे बदल दे। वह प्रांत की किसी भी सत्ता को अपने हाथों में ले सकता है। वह यह भी कर सकता है कि प्रान्तीय धारा सभा के सारे अधिकार पालियामेंट को दे दे। धारा २७९ तथा २८० के अन्तर्गत यह भी कह दिया गया है कि यदि राष्ट्रपति चाहे तो धारा १३ में वर्णित मूल अधिकारों को जिस तरह चाहे सीमित कर दे। और उस समय उन अधिकारों की रक्षा के वैधानिक उपाय भी लागू न होंगे। राष्ट्रपति क्या वह तो हिटलर से भी बढ़ कर शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी हो गया है। इस 'संकट काल" में तो वह सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी के स्वेच्छाचारी राजाओं से भी मुकाबला कर सकते हैं और राष्ट्रपति को देख कर इन राजाओं को भी ईर्षा हो उठेगी। यह तो राष्ट्रपति को तानाशाह बन जाने की खुली छूट है। यह है हमारे स्वतंत्र भारत का नया विधान, जिसको 'समाजवादी-जनतंत्र' के नाम से बनाया जा रहा है और जिसको पाने के लिए करोड़ों भूखों नंगों ने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है।

विधान में इसी तरह की बहुत सी धाराएं हैं। यह संभव नहीं कि इस छोटे से लेख में इन सभी का विवेचन किया जा सके। फिर भी इन धाराओं

एक दैवज्ञ की दृष्टि में
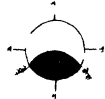
सूर्य-ग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य सोलन (शिमला)]

★

सं० २००५ वैशाख कृष्ण अमावस रविवार ता० ९ मई १९४८ ई० को भारत में खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। यह ग्रहण अरब और फिलस्तीन के अतिरिक्त सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप, उत्तरी प्रशान्त महासागर और उत्तरी के कुछ भागों में दिखाई देगा। जापान में यह ग्रहण खग्रास दिखाई देगा, तथा मलाया स्याम और कोरिया के कुछ भागों में कङ्कणाकृति दिखाई देगा। उज्जैन, इन्दौर, उदयपुर मेवाड़, रतलाम, अहमदाबाद, बड़ोदा, जोधपुर, समस्त सिन्ध, बम्बई और मद्रास प्रान्त, महाराष्ट्र, निजाम स्टेट और पश्चिमी मध्यप्रान्त विदर्भ में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा अर्थात् ग्रहण लगा हुआ सूर्य उदय होगा। काश्मीर, पूर्वी पश्चिमी पञ्जाब, दिल्ली, अजमेर, जयपुर, युक्तप्रान्त, बंगाल, बिहार, आसाम, उड़ीसा, पूर्वी राजपूताना और पूर्वी मध्यप्रान्त में सूर्योदय के अनन्तर ग्रहण स्पर्श होगा। कुरुक्षेत्र और दिल्ली में ग्रहण मध्यकाल के समय ६ ५१ पर सूर्य बिम्ब का दक्षिण की ओर आधे से कुछ ही न्यून भाग काला (ग्रस्त) हुआ दिखाई देगा। बम्बई में आधे से अधिक और मद्रास मे सूर्य बिम्ब का पौना भाग ग्रसित हुआ स्पष्ट दिखाई देगा।

भारत व कुछ प्रधान नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श मोक्ष काल स्टेण्डर्ड टाइम के अनुसार निम्न है—

स्टेण्डर्ड टाइम

नगर	स्पर्श घं० मि०	मोक्ष घं० मि०
कुरुक्षेत्र	६-०	७ ४३
दिल्ली	५-५७	७ ५१
सोलन शिमला	६ ०	७-४५
पटियाला	६ ३	७ ४८
अमृतसर	६ २	७-४१
जयपुर	५-५६	७-३८
बड़ोदा	×	७-३२
लखनऊ	५ ५४	७ ४४
कलकत्ता	५ ४३	७ ४४
बम्बई	×	७-२९
काशी	५ ४८	७-४५
नागपुर	५ ४३	७ ४७
हैदराबाद दक्षिण	×	७ ३०
उज्जैन	×	७ ३४
ग्वालियर	५ ५५	७ ४०
आगरा	५ ५४	७-३९
मथुरा	५ ५४	७ ४०
कानपुर	५ ५५	७ ४५
पटना	५ ४८	७-४५
बीकानेर	६ १	७ ३५
जोधपुर	×	७ ३६
अहमदाबाद	×	७ ३१

जिन नगरों के सामने स्पर्श काल के घन्टा मिनटों के नीचे कुछ भी न लिख कर × ऐसा चिह्न दिया है, उन नगरों में ग्रस्तोदय होगा, अर्थात् सूर्योदय से पहले रात्रि मे ग्रहण स्पर्श हो जायेगा, इस लिए केवल मोक्ष काल ही दिया है।

उपरिलिखित स्पर्श मोक्ष का सूक्ष्म शुद्ध गणितागत समय मिलाने के लिए पहले अपनी घड़ी को स्थानीय पोस्ट आफिस रेलवे, या रेडियो से पहले दिन रात्रि को मिला रखें। स्पर्शकाल से पूर्व दूरवीक्षणयन्त्र (टेलिस्कोप) पर काला वस्त्र या काला कांच लगा कर सूर्य बिम्ब को देखिये, क्योंकि अच्छे नेत्रों से भी स्पर्श के कुछ मिनिट अनन्तर ही प्रायः ग्रास दिखाई देता है और मोक्ष के कुछ मिनिट पहले ही सूर्य बिम्ब का ग्रस्त भाग दीखना बन्द हो जाता है।

सूर्य ग्रहण का सर्वाधिक महत्व कुरुक्षेत्र का है ही, पर जो सज्जन वहां न पहुंच सकें वे समीप के किसी भी पुण्य नदी, सरोवर या स्थानीय कूपोदक से स्नानादि क्रिया करके पुण्योपार्जन कर सकते हैं।

सूर्यग्रहण का संसार पर प्रभाव

यह सूर्य ग्रहण मेष के राहु में हो रहा है, अतः संसार दुर्भिक्ष, रोग और अनेक प्रकार के उपद्रवों से पीड़ित रहेगा यथा —

मेषराशौ यदा राहुः संस्थितः सूर्यचन्द्रयोः
देवाद् ग्रहणं समायाति दुर्भिक्षं भवति ध्रुवम्॥

लेखक

ब्राह्मण, पुरोहित, सज्जन, साधु-पुरुष और साध्वी स्त्रियां, कलिंग, काश्मीर, पाञ्चाल, शूरसेन, कम्बोज, मध्यदेश, म्लेच्छ, यवनदेश और ईशानकोण पर इस ग्रहण का बुरा प्रभाव पड़ेगा। कपास, रुई, सूत, वस्त्र, तिल, तेल, गुड़, उड़द, गेहूं, चावल, सोना, चांदी, प्रवाल, मोती सुगन्धित पदार्थ और सभी काले रंग की वस्तुओं का भाव आगामी ६ मास के अन्दर पर्याप्त तेज होगा। जीवनोपयोगी वस्तुएं सुलभ न होंगी।

भविष्य का दुर्भिक्ष, उत्पादन या निष्पत्ति की न्यूनता के कारण नहीं, अपितु अव्यवस्था, साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक मतभेद, यातायात साधनों की कमी, व्यापारियों की अनुचित मुनाफाखोरी और अधिकारी वर्ग की धांधली के कारण ही होगा। संसार में रोग, पारस्परिक युद्ध, दुर्भिक्ष, उत्पात आदि से जन धन का बहुत विनाश होगा। गुरु किसी न्यायप्रिय भारतीय महापुरुष को घोर आपत्ति में फंसाने वाला है। तीन प्रमुख राजपुरुषों पर सङ्क्रामक आपत्ति आयेगी। किसी एक विशिष्ट पुरुष की मृत्यु हो जाना भी सम्भव है। सर्व साधारण जनता की स्थिति अच्छी न रहेगी। अधिकारारूढ़-पक्ष के सामने विषम समस्या उत्पन्न होगी। सामाजिक आर्थिक समस्या बिगड़ेगी। वर्षा, वायु और अग्नि-प्रकोप से कई प्रान्त त्रस्त होंगे। रक्तप्रकोप, शिशु-रोग, नेत्रविकार और महामारी आदि सङ्क्रामक रोग फैलेंगे। सरकार, पूंजीपति और मजदूरों का वैमनस्य बढ़ेगा। यातायात में कठिनाई और कई स्थानों में दुर्घटनाएं भी होंगी। बंगाल, दक्षिण भारत, निजाम राज्य, मध्यदेश और पाकिस्तान में अत्यधिक जीवन हानि होगी। साम्प्रदायिक वैमनस्य के कारण दूसरे प्रान्तों से अन्न सुगमता से न हो सकेगा। बेकारी बढ़ेगी। सिन्ध, सीमाप्रान्त, पञ्जाब, काश्मीर, हैदराबाद और बिलोचिस्तान में रक्तपात होते रहेंगे। दिल्ली मद्रास और बंगाल में भी साम्प्रदायिक मतभेद से अशान्ति रहेगी। वृषभ राशि में ग्रहण होने के कारण दिल्ली की केन्द्रीय सरकार के सामने आगामी ६ मास अग्नि परीक्षा के होंगे, अतः उसे बहुत सतर्क रहना चाहिए। शनि दृष्टि और सूर्य चन्द्र राहु के १२वें होने से यह ग्रहण अत्यन्त भयानक संहारकारक बन रहा था, परन्तु गुरुदेव की मित्र दृष्टि ने इसके अशुभफल को अधिकांश में न्यून कर दिया है, अतः अभी निकट भविष्य में तीसरा विश्वयुद्ध प्रारम्भ नहीं होगा। वाग्युद्ध, छीनाझपटी और छोटी मोटी टक्कर चाहे भले ही हो जावे। गुरु अभी संसार को विनाश की ओर जाने से बचाने में सहायक है।

यथा —

जीवो यदा पश्यति सूर्यमिन्दुं —
ग्रस्तं तथा सर्व खगेऽप्यबाधत्।
फलत्वनिष्टं गदितं निरस्यात् —
सर्वत्र लोकेष्वपि सौख्यकृत्यात्॥

यह पढ़ने मात्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत का नया विधान राष्ट्रपति के स्वेच्छाचारी हो जाने पर कोई भी प्रतिबन्ध नहीं लगाता। वरन् उसको ऐसे ऐसे अधिकार देता है, जिनको प्रयोग में लाकर वह कभी भी मन्त्रिमण्डल पालियामेंट तथा आम जनता की जनतन्त्र की मांग को कुचल कर निरंकुश शासन करने लगे। हम को चाहिए कि इस समय विधान परिषद से कहें कि इस गलती को दूर करने का शीघ्र ही उपाय करें।

कम्यूनिस्ट किस तरह देश में अपना जाल बिछा रहा है ?

[श्री अशोक मेहता]

★

कम्यूनिस्ट इस समय देश में सब से अधिक प्रतिगामी संस्था है, यह घोषणा पं० जवाहरलाल नेहरू ने की है। लेकिन कम्यूनिस्ट किस तरह देश के कोने कोने में अपना जाल कितने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपों से फैला रहा है इसका ज्ञान बहुत कम लोगों को है। श्री अशोक मेहता के एक लेख का उत्तरार्ध इसी रहस्य का उद्घाटन करता है। लेखक देश को सावधान करता है कि हमारी सुरक्षा व उन्नति को कम्यूनिस्ट पार्टी के ८०००० सदस्यों से नहीं, पर निर्दोष जान पड़ने वाली विभिन्न संस्थाओं के अज्ञात अलिखित सदस्यों से है।

प्रत्येक निर्वाचन परिणाम से यह स्पष्ट हो गया है कि जनता पर कम्युनिस्टों का प्रभाव नगण्य है। बम्बई म्युनिसिपल कारपोरेशन के सबसे हाल के निर्वाचन में उन्हें सारे मतदान का केवल ३॥ प्रतिशत मत मिला। मजदूरों पर उनका कितना प्रभाव है, यह उनकी उस उदासीनता से स्पष्ट है जो उन्होंने हाल में कम्युनिस्टों की गिरफ्तारियों के समय दिखाई है।

लोकतान्त्रिक ढंग से काम करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी कोई बड़ी चुनौती नहीं हो सकती, किन्तु उसकी संगठन सम्बन्धी योग्यता, मनोवैज्ञानिक बल्कि कुशलता समझाने और जासूसी करने की शक्ति राष्ट्र की स्थायी उन्नति में बाधक है। वे लोक शक्ति के रूप में अपनी कमजोरी जानते हैं, किन्तु कम्युनिस्ट जिस वस्तु को सीधे से प्राप्त नहीं कर सके हैं, उसे वे घुमा फिरा कर पाना चाहते हैं। लोकप्रियता के अभाव को वे जनता में बीसियों छिद्रों द्वारा घुस कर पूरा करना चाहते हैं।

नेताओं के घरों में

यह उल्लेखनीय है कि कम्युनिस्टों ने राजनीतिक और सामाजिक नेताओं के पुत्र पुत्रियों को अपने दल में सम्मिलित करने की विशेष चेष्टा की है। श्रीमती नायडू के पुत्र और पुत्री, डाक्टर कुमारमंगलम के बच्चे; डाक्टर सच्चन के पुत्र और पुत्रवधू, डाक्टर सैयद महमूद के पुत्र और पंजाब के प्रमुख जमींदार परिवार के बच्चे विशेष रूप से पार्टी में सम्मिलित किये गये हैं। उनसे पार्टी को उचित सामाजिक सम्पर्क और आवश्यक, अदृश्य किन्तु महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति प्राप्त होता है।

साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाएं

कम्युनिस्टों ने अपने संगठन के विभिन्न मोर्चे बनाने पर विशेष रूप से विचार किया और शक्ति लगायी है। 'फ्रेंड्स आफ दी सोवियट यूनियन' से लेकर प्रगतिशील लेखक संघ और जननाट्य-समिति को सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में घुसने के लिए और ऐसे स्थानों पर पैर जमाने के लिए संगठित किया गया है, जहां राजनीतिक आन्दोलन की प्रतिध्वनि भी न पहुंच सके। ये संस्थाएं अपने चतुर नेताओं से युक्त, कम्युनिस्टों के लिए सम्पर्क बनाने और सूचना प्राप्त करने के साधन हैं। छिप कर काम करने में ये संस्थाएं विशेष उपयोगी होंगी।

नई युवतियां

आधुनिकाओं (समाज में मुक्त विचरण करने वाली युवतियों) को चतुरता के साथ दल में सम्मिलित किया गया है। किसी का नाम लेना उचित न होगा, पर कम्युनिस्ट नीति के नवीनतम रूप में ये आधुनिकाएं कार्यकर्ताओं की अपेक्षा अधिक कार्य कर सकती हैं।

भेदियों का विस्तृत जाल

पिछले वर्षों में जान बूझ कर अज्ञात सदस्यों को सरकारी एवं सैनिक नौकरियों में भेजा गया है। कमिनटर्न (अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संघ) की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कम्युनिस्ट पार्टी ने भेदियों का विस्तृत जाल फैला रखा है, जो आगे चल कर विध्वंस कार्य करने में सहायक हों। उदाहरणतः मध्यप्रान्त में, जबलपुर में कम्युनिस्ट पार्टी के अच्छे से अच्छे लोग एकत्र किये गये हैं और वे भी शस्त्रास्त्र के कारखाने और सैनिक विभाग में। उपद्रवकारी कम्युनिस्ट, श्रमजीवियों की बस्ती अथवा फैक्टरियों में नहीं हैं वरन् वे शासकों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों में छिपे हुए हैं और वे अत्याधिक खतरनाक हैं।

हाल में कम्युनिस्ट दल के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। मामलैंकोने अपने भीतरी ज्ञान के आधार पर हमें बताया है कि 'यहां (कनाडा में) रहने वाले अनेक रूसियों को यह ज्ञान है कि लोकतन्त्रात्मक देशों में कम्युनिस्ट पार्टी ने बहुत दिन हुए सभी राजनीतिक रूप से बदल कर सोवियट सरकारी एजेंसी का रूप-धारण कर लिया है, जो युद्ध के समय इन देशों में पंचमांगी का काम करेगी। यह सोवियट सरकार के हाथ में कृत्रिम असन्तोष व उत्तेजना फैलाने का साधन है—इत्यादि, इत्यादि।'

हमारे देश की सुरक्षा और उन्नति को खतरा भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के ८० हजार से कुछ अधिक सदस्यों अथवा, तीन चार लाख संघटित कार्यकर्ता अथवा किसानों से उतना नहीं है, जितना कि निर्दोष जान पड़ने वाली विभिन्न संस्थाओं के अज्ञात अलिखित सदस्यों से है।

मास्को में फाइलें

प्रत्येक कम्युनिस्ट के सम्बन्ध में मास्कोस्थित कुमिनटर्न में एक फाइल है। वहीं से उन्हें प्रेरणा मिलती रहती है। सर्वश्री क्रिविट्स्की, लुई बुदेंज, रयुबेंको एवं अन्य लोगों के लेखों और भाषणों से उनके नियन्त्रण साधन पर प्रकाश पड़ता है। संसार का प्रत्येक कम्युनिस्ट मास्को को अपना शासक समझता है। कनाडा में कम्यूनिस्टों के भेदियों के कार्य का जो भण्डाफोड़ हुआ है उससे उनके विस्तार का पता चलता है। सोवियत कर्मचारी गजोटिन की डायरी से पता चलता है कि कनाडा की पार्लमेंट के गुप्त निर्णयों को 'रूस' ने बताया था, जो वहां के एक मात्र सदस्य फ्रेड रोज के अतिरिक्त दूसरा कोई न था। जो रोज ने किया, क्या हमारे या ज्योति बसु करने में क्या हिचकेंगे? भविष्य बतायेगा कि 'नहीं'।

कम्यूनिस्टों की प्रेरणा व स्फूर्ति का एकमात्र स्रोत

रूस को गुप्त भेद

यह याद रखना चाहिये कि भूत में भी कम्यूनिस्ट बहुत सी गुप्त सूचनायें प्राप्त करते रहे हैं। आज भी उनकी कतारों में सरकारी कर्मचारी मौजूद हैं। यही 'छिद्र भारत के लिए असली खतरा पैदा कर रहा है। इस प्रकार का छिद्र आज भारत के सभी वर्ग के शासन प्रबन्धकों, सैनिकों, सामरिक महत्व के कारखानों में मौजूद है। इस छिद्र को बन्द करना ही उन लोगों के लिये असली कार्य है जो अपने देश की सुरक्षा और सम्मान को बनाये रखना चाहते हैं।

कम्यूनिस्टों की शक्ति वृद्धि के उपाय

★ सार्वजनिक नेताओं के पुत्र पुत्रियों द्वारा।

★ विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक संघों के साहित्यिक और अराजनीतिक प्रकाशनों द्वारा।

★ समाज में मुक्त विचरण करने वाली युवतियों द्वारा।

★ सरकारी एवं सैनिक नौकरियों में गुप्त प्रवेश द्वारा।

★ सामरिक व अन्य अनिवार्य कारखानों में गुप्त कम्यूनिस्ट कारीगरों द्वारा।

★ शासकों, वैज्ञानिकों और शिक्षकों के रूप में छद्मवेशी कम्यूनिस्टों द्वारा।

मजदूरों और किसानों में उन लोगों पर अब विशेष ध्यान रखा जा रहा है, जो महत्व के पद पर हैं। यथा बम्बई में सूती मिलों के मजदूरों में कम्यूनिस्ट ज्ञान भरने वालों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। उनका विध्वंस कार्य मुख्यतः रेलों के उन भागों में होगा, जिनके टूटने से कार्य रुक जाय। रेल में विभिन्न बहानों से हड़ताल की भावना फैलाई जायेगी। प्रत्येक शिकायत को बढ़ाया जायेगा और असन्तोष उत्पन्न करने का कोई प्रयत्न छोड़ा न जायेगा।

कम्यूनिस्टों की शक्ति उनकी संख्या में या कार्यक्रम में नहीं है, वह उस सुविधा में है, जो उन्हें रूस के निकट सम्पर्क से प्राप्त है।

कम्यूनिस्टों का खतरा दमन से दूर न होगा। उसके रोकने का उपाय भी कुछ मनोवैज्ञानिक और कुछ संघटनात्मक ही हो सकता है। और इसके लिए साम्यवाद के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। केवल जागरूक व्यक्ति जो अपने अधिकार और स्वतन्त्रता के प्रति सतर्क हों, कम्यूनिस्टों के खतरे को प्रकाश में ला सकते हैं। —म० कुमार

सोवियत रूस में एक पार्टी ही क्यों ?

[जे० ग्रांडेन बरगस्की]

रूस के विधान पर सबसे बड़ा आक्षेप यह किया जाता है कि प्रजातंत्र के आधारभूत विभिन्न दलों के सिद्धान्त को वहां स्वीकार नहीं किया जाता। इसी आक्षेप को दूर करने का यत्न इस लेख में किया गया है।

सोवियत यूनियन में एक राजनीतिक दल क्यों है ? इसकी चर्चा पूंजीवादी प्रेस में काफी हो रही है, विशेष कर अंग्रेजी अखबारों में। किसी देश में एक से अधिक राजनीतिक दलों का होना और उनका आपसी संघर्ष प्रजातन्त्रवादी का महत्वपूर्ण आधार समझा जाता है। सोवियत यूनियन में इनके अभाव को सच्चे प्रजातन्त्र की हीनता या कमजोरी समझा जाता है।

किन्तु प्रजातन्त्र का असली रूप पार्टियों की अनेकता से नहीं, राजनीतिक संस्थाओं के रूप से जाना जाता है, सरकार की बनावट और उसकी घरेलू अथवा विदेशीय नीति से परखा जाता है। प्रजातन्त्र का आशय यह है कि वह लोगों की सरकार हो, जिससे जनता के हितों का रक्षा हो सके। अन्त में प्रजातन्त्रवाद और समाज में उसका स्थान आर्थिक संस्थाओं से, जिनका जनता के हित के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, जाना जाता है।

यह तो सब जानते हैं कि सोवियत प्रजातन्त्र का विकास पूंजीवादी संस्थाओं के विनाश से हुआ। यह समाजवादी वर्गहीन समाज को खड़ा करने के लिये राजनीतिक आधार है। यह समझना कठिन नहीं कि समाजवाद को सफल बनाने के लिए एक नये और बेहतर प्रजातन्त्र को स्थापित करने की आवश्यकता है। जब तक लोकतन्त्र नहीं होता, तब तक समाजवाद को नहीं लाया जा सकता।

सोवियत प्रजातन्त्र और पूंजीवादी प्रजातन्त्र में क्या भेद है ? सोवियत यूनियन में जनता का अपना राज्य है। वह अपने जीवन को स्वयं बनाती है। यह असली प्रजा है, इसलिए लेनिन को यह कहने का अवसर मिला कि लोकतन्त्र पूंजीवादी प्रजातन्त्र से लाखों दर्जे अच्छा है। पूंजीवादी प्रजातन्त्र अमीरों के लिए स्वर्ग है और लोगों के लिए जाल व धोखा है, जिसमें वे फंस कर वे शोषित होते रहें।

आधुनिक एंग्लो-अमरीकी प्रजातन्त्रवाद मजदूरों के आंदोलन को दबा रहा है और बाकी देशों में प्रतिक्रियावादी शक्तियों की सहायता कर रहा है। यह बात टेफटहार्टले मजदूर विरोधी कानून से, अमरीकी मजदूर संस्थाओं को दबाने में और साम्यवादियों को पीड़ित करने से ज्ञात होती है। इसका प्रमाण ब्रिटेन की उस नीति से भी मिल जाता है, जिसके अनुसार ब्रिटिश मजदूर नेताओं ने मौसले और उसके साथियों को छोड़कर फासिस्ट दलों को काम करने को उत्साहित किया है। अमरीका में अधिकारों और स्वतन्त्रता की बहुत चर्चा होती रहती है, लेकिन यह अधिकार और स्वतन्त्रता अमीरों के लिए है या उन संस्थाओं के लिए है, जिनको पूंजीपतियों की सहायता मिलती रहती है।

जहां तक अमरीका और ब्रिटेन की विदेशीय नीति का सम्बन्ध है, इसका चित्र तीस साल पहिले लेनिन ने खींच दिया था। आपने लिखा था कि एंग्लो-अमरीकन साम्राज्यवाद, जो संसार में प्रतिगामिता को स्थापित कर रहा है, प्रजातन्त्र की संस्था का प्रयोग करके छोटे और कमजोर देशों का गला घोटेगा।

ब्रिटेन में आजकल दो प्रमुख राजनीतिक दल हैं मजदूर और अनुदार मजदूर पार्टी के अनेक सभासद मानते हैं कि इन दोनों दलों में कोई विशेष भेद नहीं है। ब्रिटेन जहां राजसत्ता मजदूर पार्टी के हाथ में है, पराधीन देशों में स्वतन्त्रता के आन्दोलनों को उसी तरह दबा रहा है जिस तरह अनुदार सरकार पहिले दबाया करती थी। मजदूर सरकार ग्रीस, पच्छमी जर्मनी, आस्ट्रिया और योरुप के अन्य देशों में प्रतिक्रियावादियों की सहायता कर रही है। वस्तुतः यह पता लगाना कठिन है कि बेविन और चर्चिल की नीति में कहां और क्या भेद है।

जहां तक अमरीकी राजनैतिक दलों का संबंध है, वे लेनिन की विशेषताओं की कसौटी पर पूरी उतरती हैं। लेनिन ने कहा था कि जनता की दृष्टि से डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टियों में कोई भेद नहीं। लोगों को केवल धोखा दिया जाता है ताकि उनका ध्यान असली समस्याओं की ओर से हट कर इन दो दलों की आपसी मुठभेड़ की ओर लग जाये। गृह और विदेशी नीतियों के क्षेत्र में इन दो दलों में कोई मतभेद नहीं रहा। जहां तक यू० एन० ओ० का सम्बन्ध है, रिपब्लिकन वेंडनबर्ग और डेमोक्रेटिक ट्रूमेन में कोई भेद नहीं। इनके विचार जर्मन समस्या पर, सोवियत यूनियन पर, संसार की समस्या पर एक जैसे हैं। दोनों दल पूंजीपतियों के सहयोग पर निर्भर करते हैं।

सोवियत विधान के आलोचक बार बार यही कहते हैं कि समाज में अनेक राजनीतिक दल होने चाहिएं। वे यह गलत सिद्धान्त मानकर चलते हैं कि वर्गमय समाज अटल और अमर है। इसलिये वे अनेक दलों के सिद्धान्त को मानते हैं। पूंजीवादी प्रजातन्त्र के रक्षक भूल जाते हैं कि अनेक राजनीतिक दलों का होना पूंजीवादी समाज में ही अनिवार्य है, जहां वर्गों में परस्पर विरोध स्वभावतः होता है।

सोवियत यूनियन में परस्पर विरोधी वर्ग नहीं हैं। सोवियत समाज में, जो वर्ग विरोधों से मुक्त है, राजनीतिक दलों की आवश्यकता ही नहीं। अनेक दल वहां पर हो सकते हैं, जहां वर्गों का आपस में विरोध हो। उदाहरणार्थ पूंजीपति, मजदूर, भूमिपति और किसान। सोवियत यूनियन में केवल दो श्रेणियां हैं — मजदूर और किसान। इनमें परस्पर कोई विरोध नहीं। इनमें मित्रता का नाता है क्योंकि इनका उद्देश्य एक है — एक नये समाज की स्थापना करना। इस लिए सोवियत यूनियन में उस पार्टी की कोई आवश्यकता नहीं जो विभिन्न वर्गों के हितों की रक्षा करे। यह तो सारे समाज के हितों की रक्षा करने वाली जमात बन जाती है। जनता में नैतिक और राजनैतिक एकता है। साम्यवादिक पार्टी पर सोवियत जनता का पूरा विश्वास है।

मार्क्सवाद के अमनिरोध सिद्धान्त को ले कर यह पार्टी सदा लोगों के हितों की रक्षा करती रही है। जनता की आवाज को ध्यानपूर्वक सुनते हुए इस दल ने देश का नेतृत्व किया है। सोवियत समाजवादी राष्ट्र में केवल एक दल की आवश्यकता रह जाती है, जिस की नीति लोगों को अधिक सम्पन्न बनाना और साम्यवाद के मार्ग पर बराबर चलाना है।

वैशाली : भारतीय इतिहास का गौरवमय पृष्ठ

[श्री राहुल सांकृत्यायन]

लेखक

आज २४२८ वर्ष हुए, जब वैशाली के गणतंत्र, जनता के पंचायती राज्य की ध्वजा अवनत हुई और तब निरंकुश राजसत्ता पचीस सौ वर्षों तक स्वतंत्रता की भूमि पर मनमानी करती रही। दूसरों की तो बात क्या, खुद वैशालीवासी भी भूल गये कि एक समय था, जब उनकी इस गंगा और मही (गण्डक) द्वारा सिंचित वज्जी भूमि में किसी राजा का शासन नहीं था, जनता के ७७७७ प्रतिनिधि सारा राजकाज चलाते थे और न्याय का इतना ध्यान था कि अपने समय को सबसे बड़े अद्वितीय महामानव बुद्ध ने अपने मुख से उनकी प्रशंसा की थी। गंगापार का राजा अजात शत्रु वज्जी की समृद्ध-भूमि को देख कर जीभ से पानी टपका रहा था और उसने एक दो बार कोशिश भी की, किन्तु मुंह की खानी पड़ी। इसके बारे में दीर्घ-निकाय की अट्ठकथा में भी लिखा है। बुद्ध का गणसंस्था के प्रति अगाध प्रेम था और वैशाली के साथ और भी अधिक। इसी से ४८३ ईसा पूर्व वैशाख मास में जब उन्होंने अन्तिम बार वैशाली को छोड़ा तब एक बार फिर उस तथागतने अपने सारे शरीर को घुमा कर (नागावलोकन कर) वैशाली को आंख भर कर देख अपने प्रिय शिष्य से कहा — 'आनन्द ! तथागत [बुद्ध] यह अन्तिम बार वैशाली का दर्शन कर रहा है।' इस वैशाली के प्रति उस दयामूर्ति के हृदयोद्गार थे — 'आनन्द ! रमणीय है वैशाली, रमणीय है उसका उदयन चैत्य, गोतमक चैत्य, सप्ताम्रक-चैत्य, बहुपुत्रक चैत्य, सारंदद चैत्य।' ये चारों चैत्य वैशाली नगरद्वार के बाहर क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशाओं में देवस्थान तथा जलपुष्करिणी-सहित रमणीय भूभाग में थे। वैशाली वासी लिच्छवि भगवान् के दर्शन के लिए वैशाली नगरी से कुछ दूर दक्षिण में अवस्थित अम्बपाली वन में पहुंचे। उन्हें देख कर बुद्ध ने कहा था — 'देखो भिक्षुओ ! लिच्छवियों की परिषद् को देखो भिक्षुओ ! लिच्छवियों की परिषद् को। भिक्षुओ ! इस लिच्छवि परिषद को त्रयस्त्रिंश [देवताओं] की परिषद् समझो।' त्रयस्त्रिंश इन्द्रलोक के देवता हैं। बुद्ध ने वैशाली वासियों की उपमा उनसे दी थी, यह प्रकट करता है कि बुद्ध के भाव इस भूमि के निवासियों के प्रति कैसे थे। वर्षकार को अजातशत्रु ने बुद्ध के पास भेजा था कि उन से कोई ऐसा उपाय मालूम करे, जिस से वज्जियों को आसानी से हराया जा सके। बुद्ध को कितना क्षुद्ध लगा होगा यह प्रश्न और इसीलिए उन्होंने वर्षकार को सीधे जवाब न दे पीछे खड़े हो पंखा झलते आनन्द से कहा था।

वैशालीवासियों के सात गुण

इसी तरह बुद्ध ने वज्जियों की समृद्धि और स्वतन्त्रता की कुंजी सात बातों को एक एक कर दोहराया। वैशाली के प्रजातन्त्र [१] सभा में बहुमत से निश्चय करके किसी काम को करते थे, [२] वह एक राय से काम करते, उठते बैठते थे, [३] अवैधानिक, वज्जिधम-[वज्जी के कानून] विरुद्ध कोई काम नहीं करते थे, [४] अपने वृद्धों का सम्मान सत्कार करते, उनकी बात पर ध्यान देते थे, [५] स्त्रियों, कन्याओं पर अत्याचार और जबर्दस्ती नहीं करते थे, [६] नगर के भीतर और बाहर के चैत्यों [देवस्थानों] का सत्कार-सम्मान करते और उनके लिए प्रदत्त सम्पत्ति और धार्मिक बलि को छीनते नहीं थे [७] धर्माचार्यों [अर्हतों] की रक्षा करते और इस बात का ध्यान रखते थे कि वे देश में सुख से विचरें। वैशाली-वासियों के ये सात गुण बुद्ध को बहुत पसन्द आये थे। इनमें पहले तीन तो जनतान्त्रिक व्यवस्था के मूल मन्त्र हैं। वृद्धों और स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव उनकी उच्च संस्कृति का द्योतक है। अन्तिम दो बातें धर्म के प्रति वज्जियों की उदारता को बताती हैं। बुद्ध ने इसी वैशाली के बाहर सारंदद चैत्य में वैशाली-वासियों को उनकी इन सात बातों पर अटल रहने का आदेश दिया था। अजातशत्रु के महामन्त्री वर्षकार को उसकी बात का जवाब देते मगध की तत्कालीन राजधानी राजगृह में बुद्ध ने कहा था—'ब्राह्मण ! एक समय मैं वैशाली के सारंदद चैत्य में ठहरा हुआ था वहां मैंने वज्जियों को यह सात पतन-विरोधी बातें बतलायी थीं। जब तक ये सात वज्जियों में रहेंगी, ··· तब तक वज्जियों की उन्नति ही होगी, हानि नहीं।

प्रजातन्त्र की न्याय व्यवस्था

वैशाली प्रजातन्त्र की न्याय व्यवस्था कितनी सुन्दर थी, इसकी कुछ झलक हमें दीघनिकाय अट्ठकथा में मिलती है। परम्परा से चला आया वज्जि-धर्म यह था कि वज्जि के शासक 'यह चोर है, अपराधी है' न कह आदमी को विनिश्चय महामात्य [न्यायाधीश] के हाथ में दे देते। वह विचार करता, अपराधी न होने पर छोड़ देता, अपराधी होने पर अपने आप कुछ न कह व्यावहारिक [न्यायाध्यक्ष] को दे देता। ··· वह भी अपराधी जानने पर सूत्रधार को दे देता ··· वह भी विचार कर निरपराध होने पर छोड़ देता, अपराधी होने पर अष्टकुलिक को दे देता। वह भी वैसा ही करके सेनापति को, सेनापति उपराज [उपाध्यक्ष] को और उपराज राजा [गणपति] को दे देता। राजा विचार कर यदि अपराधी न होता तो छोड़ देता और अपराधी होने पर प्रवेणी-पुस्तक [दण्डविधान] बचवाता। प्रवेणी-पुस्तक में लिखा रहता कि अमुक अपराध का अमुक दण्ड है। अपराध को उससे मिला कर दण्ड दिया जाता। अपराधी के अपराध के सम्बन्ध में न्याय करने के लिए कितना ध्यान रखा जाता, यह इस उद्धरण से मालूम होता है। इससे यह भी मालूम होता है कि वैशाली प्रजातन्त्र की अपनी प्रवेणी पुस्तक या दण्डविधान भी था, जिसका बड़ी कड़ाई से अनुसरण किया जाता था।

> यह दिन दूर नहीं है जब हमारे बालकों के लिए इतिहास की पुस्तकों में वैशाली प्रजातन्त्र के लिए एक विशेष स्थान रखना पड़ेगा। हां, अभी भी देश के बड़े नेता इस महत्व को नहीं समझते और न समझने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारा भारतीय प्रजातन्त्र को अपने वैशाली और यौधेय प्रजातन्त्रों से कितनी प्रेरणा मिलेगी।

कूटनीति का खेल

वर्षकार बुद्ध के मुख से वज्जियों के बारे में अपने अनुकूल कोई बात नहीं सुन सका। उसने लौट कर अजातशत्रु से कहा — श्रमण गौतम [बुद्ध] के कथन से तो वज्जी को किसी प्रकार लिया नहीं जा सकता। अच्छा तो उपलापन [घूस रिश्वत] और आपस में फूट पैदा करने से काम बनाया जाय। अजातशत्रु और उसके कुटिल मन्त्री वर्षकार ने भेद [फूट] नीति को ही पसन्द किया। वर्षकार ने सलाह दी — महाराज ! परिषद् में वज्जियों की बात उठाओ। मैं कहूंगा उनसे क्या लेना है, रहने दो, वज्जी के शासक अपनी खेती और वाणिज्य से जीयें। राजा और मन्त्री ने षड्यन्त्र किया, दोनों की मिली-भगत रही। वर्षकार वज्जियों का पक्षपाती बनकर राजसभा से निकल गया। उसकी ओर से वज्जियों के पास भेजी जाती चीज पकड़ी गयी। राजा ने उसे इस अपराध में बन्धन ताड़न न करा सिर मुंडा नगर से निकाल दिया। वर्षकार गंगा पार हो वज्जी भूमि में जाने लगा तो कुछ वज्जियों ने कहा — 'ब्राह्मण बड़ा मायावी है, गंगा पार न उतरने दो।' लेकिन लिच्छवि वर्षकार के जाल में फंस गये और उसे अपने यहां शरण ही नहीं दी बल्कि अपना विनिश्चय महामात्य [न्यायाधीश] बना दिया। वर्षकारने तीन वर्ष तक वैशाली का नमक खाया और उसका प्रतिशोध उसने अपने विश्वासघात द्वारा किया। तीन वर्ष के भीतर उसने वैशालीवालों में ऐसी फूट डलवा दी कि दो आदमी एक साथ नहीं चल सकते थे। वर्षकार ने अपने मालिक को सूचना दी और फूट के कारण निर्बल वज्जी लोगों को अजातशत्रु मगधराज ने दास बना लिया।

पतन की ओर

वैशाली के पतन का यह समय बौद्ध परम्परा के अनुसार बुद्ध निर्वाण [४८३ ईसा पूर्व] से तीन साल बाद है। वैशाली इतने दिनों तक अनाथ रही किन्तु इसी के विस्मृत इतिहास ने पहले-पहल भारतीयों को बतलाया कि हम सदा निरंकुश राजाओं के जूओं को ही नहीं ढोते रहे बल्कि हमारे यहां भी अपने प्रजातन्त्र थे। वैशाली प्रजातन्त्र बहुत शक्तिशाली था। बुद्ध के समय के भारत के सबसे बड़े राज्य कोसल — जो गण्डक, गंगा और हिमालय की सीमाओं से घिरा था — का राजा प्रसेनजित् एक बार बहुत घबड़ाया हुआ था। उसे देख कर बुद्ध ने पूछा — क्या महाराज ! तुम पर राजा मागध, श्रेणिक बिम्बिसार या वैशालिक लिच्छवि तो नहीं बिगड़े। लिच्छवियों के कोपसे कोसल राज्य का होश-हवास बिगड़ सकता था, यह लिच्छवियों की शक्ति का परिचय देता है। वैशाली गण के सीमान्त पर दो ही प्रबल राजशक्तियां थीं — दक्षिण और पूर्व में मगध और पश्चिम में कोसल। पश्चिमी सीमा पर मही [आधुनिक गण्डक] बहती थी, इसके लिए साक्षात् प्रमाण नहीं मिलता, लेकिन वज्जी के पश्चिम मल्लों का संघ राज्य था, जो

कोशल राज्य के आधिपत्य को स्वीकार करते हुए भी अपनी संघप्रणाली को किसी न किसी तरह सुरक्षित रखे हुए था। मल्ल और लिच्छवि दोनों पड़ोसी जातियों की सीमा गण्डक ही रही होगी, लेकिन उस समय गण्डक [मही] की धारा वही नहीं थी, जहां कि वह आज है। सोनपुर, शीतलपुर, मगोढ़ होती जो नदी आजकल छपरा जिले में बहती है, उसकी निचली धारा आज भी मही के नाम से प्रसिद्ध है। हम कह सकते हैं, कि वज्जी की प्राचीन भूमि वही थी, जिसकी सीमाएं आजकल की भोजपुरी, मगही और अंगिका [मुंगेर की छिकाछिकी] भाषा से सीमित थी, इतने अपवाद के साथ कि वर्तमान चम्पारन भी प्राचीन वज्जीगण के भीतर पड़ता था।

परम्परा पर अभिमान

वर्तमान भारत के लिए यह भूमि अत्यन्त पुनीत है। ढाई हजार वर्ष बाद भारत फिर संघ राज्य स्थापित करने जा रहा है। उसे अपने यशस्वी वैशाली गण और उसकी परम्परा का अभिमान होना आवश्यक है। वस्तुतः हमारे ऊपर निरंकुश राजशासन की कालरात्रि में वैशाली और यौधेय दो ही जनतन्त्र के प्रकाशस्तम्भ थे, जो यह भी सिद्ध करते रहे हैं कि प्रजातन्त्र-शासन-प्रणाली हमारे लिए बिलकुल नयी चीज नहीं है। सहस्रों वर्षों से देशी और विदेशी निरंकुश शासक बराबर यही प्रयत्न करते रहे कि हम अपनी प्रजातान्त्रिक परम्परा को भूल जायं। वह बहुत हद तक अपने इस कार्य में सफल भी हुए, किन्तु पुरातत्त्व-वेत्ताओं और इतिहासज्ञों की खोजों ने उनके प्रयत्नों को सफल नहीं होने दिया और अब तो देश की आवश्यकता और मांग है कि विदेशी शासन के हटने के भारत प्रजातन्त्र-राज्य घोषित किया जाय।

हम जानते हैं कि वह समय दूर नहीं है जब हमारे बालकों के लिये इतिहास की पुस्तकों में वैशाली प्रजातन्त्र के लिए एक विशेष स्थान रखना पड़ेगा। हां, अभी भी देश के बड़े नेता इस महत्व को नहीं समझते और न समझने की कोशिश कर रहे हैं कि भावी भारतीय प्रजातन्त्र को अपने वैशाली और यौधेय प्रजातन्त्रों से कितनी प्रेरणा मिलेगी। यौधेय वही भूमि है, जिसमें राजधानी दिल्ली अवस्थित है, लेकिन दिल्ली के आधुनिक प्रभुओं को इसका ख्याल नहीं है कि एक समय यौधेय के कट्टर शत्रु ने उनके लिए 'यौधेयानां जयमन्त्रधारिणाम्' लिखा था। जनतन्त्रता से ही बहुजनहित हो सकता है, हमारे देश का गौरवपूर्ण भविष्य इसी बात पर निर्भर करता है कि यहां जनतन्त्रता का एकच्छत्र राज्य हो और इस जनतान्त्रिक भावना के सार्वजनीन प्रचार के लिये हमारे प्राचीन प्रजातन्त्रों का इतिहास बहुत सहायक हो सकता है।

दक्षिण का पाकिस्तान

[सुशीलादेवी शर्मा 'प्रभाकर']

पाकिस्तान-निर्माताओं ने पाकिस्तान के निर्माण के लिये जिन २ क्रूर योजनाओं और कार्यक्रम को कार्यान्वित किया था आज हम देख रहे हैं निजाम राज्य भी उन ही पद चिन्हों पर चल रहा है और 'दक्षिण का पाकिस्तान' बनने जा रहा है। क्यों नहीं ? निजाम राज्य तो जिन्ना साहब की हुकूमत का एक टुकड़ा है हो ! यहां सरों की गिनती का सवाल पैदा हो ही नहीं सकता जैसा कि उन्होंने अपने हैदराबाद-आगमन पर सिकन्दराबाद के करबला मैदान में फर्माया था। अब्दुल कयूम खां प्रधान मंत्री पश्चिमोत्तर प्रान्त ने तो स्पष्ट ही कहा था कि हैदराबाद 'दक्षिण का पाकिस्तान' है। अन्तर इतना ही है कि पाकिस्तान के क्रूर और अमानुषिक अत्याचार खुल्लमखुल्ला प्रकाश्य रूप से हो रहे हैं और 'दक्षिण का पाकिस्तान' उन ही दुष्कांडों का प्रत्यावर्तन छिपे २ कर रहा है। उन भीषण अत्याचारों को राजशक्ति की ओर से वक्तव्य दे कर झूठा प्रमाणित किया जा रहा है। निजाम-सत्ता के बुद्धि कौशल और दूरदर्शिता का ज्वलन्त उदाहरण है 'कहना और करके मुकरना।' माचरपल्ली और इकनूर आदि की अमानुषिक घटनाओं से लेकर आज तक की निजाम राज्य की क्रूरता और नृशंस अत्याचारों को लेखनी बद्ध किया जावे तो इतिहास का एक बड़ा ग्रन्थ तैयार हो सकता है। परन्तु वाहवाही देखिये और निजामसत्ता की प्रशंसा कीजिये कि जनता की प्रत्येक सच्ची आवाज के विरुद्ध निजाम सत्ता का वक्तव्य अपनी निर्दोषिता प्रदर्शित करता हुआ मिलेगा, जिस में नख से लेकर शिख तक जनता ही दोषी ठहराई जावेगी। स्थानीय बहुमत पर अत्याचार करना और करवाना तदुपरान्त अत्याचार रंजित काले हाथ भी बहुमत पर ही पोंछना! वाह रे! निजाम-सत्ता तेरा चमत्कार।

प्रधान मंत्री मीर लायक अली साहिब ने अपनी भावी नीति पर एक वक्तव्य दिया था। जिसके पढ़ने से उनके कार्यक्रम का अनुमान हुआ था। आपने कहा था कि राजसत्ता अपनी पूर्ण शक्ति के साथ 'सबवरसिव' कार्य क्रम का दमन करेगी इस 'सबवरसिव' नीति शास्त्र का यथार्थ में सदुपयोग किया जावे तो इसके तीर का लक्ष्य सबसे पूर्व 'इत्तहादुल मुसलमीन' और उसका कार्यक्रम ही बनना चाहिये, क्यों ? इसी संस्था के नाजीवादी, कार्यक्रम से निजाम राज्य में अशान्ति का साम्राज्य स्थापित हुआ है और प्रत्येक राजकीय कार्यों में हस्तक्षेप भी इस ही संस्था ने किया और कर रही है। नवाब छतारी को अपने मन्त्रित्व में मार खानी और मूंछें उखड़वानी पड़ीं, सर मिरजा इस्माईल को त्याग पत्र देना पड़ा। नवाब छतारी साहिब को अपने पुनः मंत्रित्व में अविश्वास की थपेड़ खानी पड़ी। हिन्द उपनिवेश से समझौते की बातचीत के लिये जिस प्रतिनिधि मंडल की नियुक्ति हुई उस पर अविश्वास प्रकट करना और मनोनीत प्रतिनिधि मंडल का चुनाव करना आदि यह सब काम किस की ओर से हुआ ? इसका छोटा सा उत्तर यही है कि इत्तहादुल मुसलमीन की ओर से। मैं यह दृढ़ता के साथ निश्चय पूर्वक लिख रही हूं कि प्रधान मंत्री की यह चेतावनी अल्पमत को नहीं है अपितु यह चेतावनी बहुमत को है। अतः स्थानीय बहुमत इस तन्द्रा में न रहे कि उसने और उसकी संस्थाओं ने कई कार्य वैधानिक राजसत्ता के विरुद्ध नहीं किया, उसके किसी कार्य में हस्तक्षेप नहीं किया। बहुमत अपनी निर्दोषिता के भ्रम में भ्रमित हो कर सन्तोष से मुंह पर हाथ फेरता न बैठा रहे। यह निजाम राज्य है, 'दक्षिण का पाकिस्तान' है, अन्धेर नगरी है। यहां 'करेगा कोई और भरेगा कोई'—वाला सौदा है।

पत्रकार संघ के सन्मुख भी प्रधान मंत्री ने कहा था कि जनता के बाहर चले जाने के कुछ कारण सत्य हैं, जिनके विषय में राजसत्ता प्रबन्ध कर रही है। कुछ कपोल कल्पित हैं, जिनका कोई भी राजसत्ता प्रबन्ध नहीं कर सकती। मैं भी उनके विचारों का स्वागत करती हूं। जनता के बाहर चले जाने के सत्य कारणों और कपोल कल्पित भय का स्पष्टीकरण प्रधान मंत्री ने क्यों नहीं किया ? आज तक 'इत्तहादुल मुसलमीन' के रंगमंच से जो भाषण एवं कार्यक्रम जनता के समक्ष रखे गये हैं, उनका अध्ययन कीजिये। स्थानीय बहुमत के विरुद्ध जो विद्रोहाग्नि भड़काई गई और बहुमत को नष्ट प्रायः करने की जो योजनायें बना कर कार्यान्वित की गईं उनका परिशीलन कीजिये। 'इत्तिहादुल मुसलमीन के समर्थक स्थानीय पत्रकारों की पाकिस्तानी चालें देखिये। ज्ञात हो सकेगा बहुमत का भय कल्पित नहीं निश्चय पूर्वक होने वाले दानवी अत्याचारों से सशंकित हो कर गया है। वर्तमान में यहां रहने वाले बहुमत के साथ जो क्रूर व्यवहार किया जा रहा है क्या उसके बारे में प्रधान मंत्री मीर लायक अली साहिब ने सोचने का कष्ट किया ? क्या उन अत्याचारियों के अमानुषिक कार्यों पर कोई प्रतिबन्ध लगाया ? स्थानीय रेडियो तक ने पाकिस्तानी प्रचार की दुंदुभि बजाई और इसी राजकीय रेडियो से डाक्टर लतीफ सईद की प्रजा परिवर्तन की घोषणा की गई। बम दुर्घटना के प्रकार पर कासिम रजवी साहिब ने इसी राजकीय रेडियो से जो भाषण 'ब्राडकास्ट' किया था क्या वह हिन्दुओं के विरुद्ध कुछ कम आवेश उत्पन्न करने वाला था ? मुसलिम विद्यार्थियों को कालेज स्कूलों के बहिष्कार का मार्ग बताना और सैन्य शिक्षा देना क्या अर्थ रखता है ? इन मुसलिम विद्यार्थियों के लिए शिक्षा विभाग का 'रिक्विजेशन' हवा के पड़े पर उड़ गया। बहुमत के विद्यार्थियों ने 'कालेज छोड़ो' की योजना को अपनाया तो स्थानीय शिक्षा-विभाग ने अपनी पूर्ण शक्ति और अधिकारों का उनके विरुद्ध प्रयोग किया।

हिन्द उपनिवेश के विरुद्ध निराधार प्रचार करना स्थानीय पत्रों ने तो अपना लक्ष्य ही नहीं व्यापार बना रखा है। वह भारतीय नेताओं को गद्दार कह सकते हैं। सरदार वल्लभ भाई पटेल को हिटलर और मुसोलिनी स्पष्ट शब्दों में लिख सकते हैं। उनको पूर्ण स्वतन्त्रता है। भारतीय पत्र न्याय-अन्याय, विधान-अविधान, आदि पर कुछ भी प्रकाश डालें और आलोचना करें तो राजसत्ता उनका प्रबन्ध करने जा रही है। क्या किसी समय देश की राजसत्ता किसी देश के राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक हितों को समक्ष रख कर पत्रकारों को इस प्रकार का अनैतिक प्रचार करने की स्वतन्त्रता दे सकती है ?

प्रजा को विश्वास नहीं

स्थानीय बहुमत को स्थानीय राजसत्ता और प्रधान मन्त्री दोनों में से एक पर भी विश्वास नहीं है। क्योंकि स्थानीय राजसत्ता की नीति दुरंगी ही नहीं बहुरंगी है। सुरक्षा परिषद में जो पाकिस्तान की ओर से प्रतिनिधि मण्डल गया था प्रधान मन्त्री भी उस प्रतिनिधि मण्डल के एक विशेष प्रतिनिधि थे और आप पाकिस्तान के शुभचिन्तकों में से हैं। ऐसी स्थिति में स्थानीय बहुमत का उन पर कोई विश्वास नहीं है। कराची की बन्दरगाह योजना में भी आप का प्रमुख सहयोग है। निरीह भोली भाली जनता इन पाकिस्तान के शुभचिन्तकों द्वारा सताई जा रही है। राजसत्ता की नीति स्पष्ट है। वह निजाम राज्य को दक्षिण का पाकिस्तान बनाने की नीति पर आरूढ़ है। वह बहुमत को नष्ट करके निजाम राज्य को सुदृढ़ पाकिस्तान का स्वरूप देना चाहते हैं। डाक्टर लतीफ सईद ने अपने पत्र 'क्लेरियन' में लिखा था कि हैदराबाद की हकूमत को चाहिये कि समीपवर्ती प्रान्तों से बातचीत करके स्थानीय हिन्दू बहुमत को वहां भेजदे और मुसलिम अल्पमत को यहां बुला लेना चाहिये जिसके फलस्वरूप लाखों की संख्या में

हैदराबाद में हिन्दुओं के ह्रास का कच्चा चिट्ठा

हैदराबाद में किस प्रकार हिन्दुओं की संख्या लगातार घटाने का प्रयत्न किया गया है यह सन् १८८१ से लेकर सन् १९४१ तक की जनगणना की निम्न तालिका से स्पष्ट है —

सन्	हिन्दू	ब्राह्मण	मुसलमान
१८८१	८८६३१११	२६१२२०	६२५६२६
१८९१	१०३१५२४६	२७०४३२	११३८६६६
१९०१	६८७०८३६	३५६८५८	१५५५७५०
१९११	११६२६३७५	२६११२४	१३८०६६०
१९२१	१०६५६४५३	२४७१२६	१२९८२७७
१९३१	१२१७६७०५	३७६४५८	१५३४६६६
१९४१	१३२९८७५३	३६३२९९	२०९७४७५

ध्यान देने की बात यह है कि ब्राह्मणों को हिन्दुओं से अलग रखा गया है। सन् ४१ की जनगणना में तो ब्राह्मण, ब्राह्मणेतर, हिन्दू, हरिजन, वीरशैव (लिंगायत) और आर्य — इस प्रकार छह भेद किये गये हैं। और मुसलमानों की शिया, सुन्नी, शेख, सय्यद, पठान आदि सब उपजातियाँ हटाकर सबको मुसलमान ही अंकित किया गया है। इस तालिका से स्पष्ट है कि गत ६० वर्षों में वहां हिन्दुओं की आबादी केवल डेढ़ गुनी बढ़ी है, वहां मुसलमानों की संख्या दुगने से भी अधिक बढ़ गई है। इस समय (सन् ४८ में) हैदराबाद में मुसलमानों की संख्या ३५ लाख कूती जा रही है — लगभग १० लाख हिन्दू आतंक के कारण रियासत छोड़कर चले गये हैं, और १५ लाख के लगभग मुसलमान शरणार्थी के रूप में रियासत में आ चुके हैं। निजाम ने बहुमत को अल्पमत में परिणत करने की जो आयोजना की है, उसका यह कच्चा चिट्ठा है।

मुस्लिम 'शरणार्थी' बना कर वहां बुलाया गया। ग्राम २ में आप देखिये मुसलिम शरणार्थी पहुंचे हुए हैं। सब व्यापारों पर अपना आधिपत्य जमा लिया है। बहुमत को किस प्रकार अल्पमत का रूप देने का प्रयत्न किया जा रहा है! बहुमत की संख्या में अछूतों को सम्मिलित नहीं किया गया। प्रत्येक दृष्टि से राजसत्ता स्थानीय बहुमत को क्षीण और अल्पमत का उत्थान करते हुए आगे बढ़ रही है।

इस दक्षिण के पाकिस्तान में मुसलिम लीग का प्रतिरूप 'इत्तिहादुल मुसलमीन' संस्था है, पाकिस्तान का प्रतिरूप निजाम राज्य और कायदे आजम मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना का प्रतिरूप कासिम रिजवी साहिब हैं। जिन्ना साहिब ने पाकिस्तान का आविष्कार करके ही चैन लिया। अब हिन्द उपनिवेश को विजय करने की कैसी महती लालसा है! ठीक इसी प्रकार निजाम राज्य के कायदे आजम रिजवी साहिब सौगन्ध खाये बैठे निजाम राज्य को 'दक्षिण का पाकिस्तान, घोषित किये बिना न मानेंगे। सिदीक-ए-दकन कासिम रिजवी साहिब ने एक सभा में भाषण देते हुए कहा भी था कि राजसत्ता का झंडा ही 'इत्तिहादुल मुसलमीन' का झंडा है अतः उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करना ही हमारा सिद्धान्त है। सहृदय पाठकों को यह ज्ञात होना चाहिए कि स्वतंत्रता की रक्षा हेतु ही उन्होंने एक लाख से ऊपर 'जांबाज-वालिंटियर्स' की फौज तैयार की है। यह इत्तिहादुल मुसलमीन के रजाकार देहातों में जाकर गरीब बहुमत का भक्षण कर रहे हैं। निजामाबाद जेल, बीबीनगर, खम्मम और वरंगल आदि स्थानों पर जाकर अपनी आंखों से देखिए इस जांबाज फौज ने क्या आतंक फैला रखा है। उसके काले कारनामे, उसके अत्याचारों की कथा ग्रामीणों से पूछिये वह आपके सामने रक्त के आंसू बहा २ कर सुनायेंगे। वे अपने दुःखी हृदय, खंडित हृदय के टुकड़े निकाल कर आप के सामने रख देंगे।

कोष का उपयोग

विश्व-व्यापी युद्ध के उपरान्त की समस्त योजना स्थगित करके निजाम सत्ता अपनी पूर्ण शक्ति पुलिस और सेना पर लगा रही है। निजाम सत्ता ने अपने कोषागार का मुंह पुलिस और सेना के व्यय के लिये खोल दिया है। मुस्लिम शरणार्थी पुलिस और सेना में भरती किये गये हैं और पुलिस एवं सेना दोनों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ाई जा रही है। एक प्रकार से निजाम राज्य महायुद्ध की तैयारी कर रहा है। उधर रजवी की जांबाज फौज उनके रजाकार आक्रमण के कार्यक्रम को कार्यान्वित भी कर रहे हैं।

निजाम सरकार के प्रत्येक विभाग की खोज की जाय तो यह स्पष्टतया प्रमाणित हो जायगा कि अधिकतर कर-दाता बहुमत में से ही हैं। परन्तु पाठकगण अनुमान करें कि उनका कितना रुपया पाकिस्तान को ऋण का रूप देकर दिया जा चुका है। दूर नहीं हैदराबाद शहर का ही भ्रमण कीजिये। बहुमत की बस्तियों में पानी तक का प्रबन्ध नहीं है। प्रकाश और सफाई का प्रबन्ध तो दूर। बहुमत के बारम्बार आग्रह करने पर भी निजाम ने कोषागार की विवशता प्रकट की। इधर बहुमत का जन-समुदाय पानी के संकटाभाव में प्यासा तड़पता है उधर पाकिस्तान को रुपया दिया जा चुका है। जिसके सम्बन्ध में नवाब मुईन नवाब जंग बहादुर ने फर्माया है कि प्रत्येक राजसत्ता किसी न किसी राजसत्ता की सिक्योरीटीज ले सकती है। हमने पाकिस्तान को कोई ऋण नहीं दिया अपितु 'सिक्योरीटीज' खरीदने के लिये पाकिस्तान को रुपया दिया गया है। ब्रिटिश राजसत्ता के समय में निजाम राजसत्ता को कोई ऐसा अधिकार नहीं था कि वह ब्रिटिश गवर्नमेंट या भारतीय राजसत्ता के अतिरिक्त किसी अन्य राजसत्ता की 'सिक्योरीटीज' खरीद सके।

यह भ्रम !

महात्मा गांधी के निधन पर एक शोक सभा की आयोजना सर्वसम्मतियों और दलों की ओर से निजाम कालिज में की गई। उस शोक सभा के मंच से सिदीक-ए-दकन कासिम रजवी साहिब ने फर्माया कि हिन्द उपनिवेश निजाम राज्य के पैंतीस लाख मुसलमानों को मारने की तैयारी कर रहा है। लेकिन मुसलमान भी सामना करने के लिये तैयार हैं। राष्ट्रपिता के निधन पर जनता शोक से अश्रु प्रवाहित कर रही थी और रजवी साहिब अपने दिल के वलवले निकाल रहे थे। भारतीय उपनिवेश निजाम-सत्ता की ओर से कल्पित धारणा बनाये बैठा है तो यह उसका निराधार भ्रम है। हैदराबाद राज्य में जब प्रत्यक्ष रूप से बहुमत पर अत्याचार होने प्रारम्भ हो जायेंगे तो इसके अर्थ यह होंगे कि भारत के कोने कोने में पारस्परिक युद्ध की ज्वाला पुनः भभक उठेगी और भारतवर्ष गृह-युद्ध में ही अपनी समस्त शक्ति का अन्त कर देगा।

समाचार चित्रावलि

कालन के मेयर डा० हेरमन पन्डर जो एंग्लोअमेरिकन कमीशन के चेयरमैन निर्वाचित हुए हैं।

विज्ञान का नवीन आविष्कार। मशीन द्वारा आलू खोदे और इकट्ठे किये जाते हैं।

मलाया संघ के भूतकालीन गवर्नर सर एडवर्ड गैन्ट जो नये विधान के अनुसार हाई कमिश्नर नियुक्त हुए हैं

अमरिका में नियुक्त ब्रिटेन के नये राजदूत सर आलीवर फ्रैंक्स

ब्रिटिश सेना के प्रधान एडमिरल लार्ड व० ए० फ्रेजर

लन्दन के एक अस्पताल में पेनिक के चार हजार गियों को एक्सरे द्वारा ठीक करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सफर का आरम्भ

(पृष्ठ १० का शेष)

इसका परिणाम यह हुआ कि बाबू राधिकाचरण का जीवन इतना व्यस्त और बहु धन्धी बन गया कि महीने में कठिनाई से कुछ ही दिन उन्हें घर पर रहने की फुरसत मिलती। भाषण देने, सुधार-कार्यों में लगे रहने, अपनी जनता के कष्टों को देखते रहने के कारण उनकी मति इतनी बदली कि स्वभाव बदल गया, रहन सहन बदल गया, खान-पान बदल गया और सब से बड़ी बात यह थी कि उसके मानस में जो धन-संचय करने और हीन आत्म-भावना का समावेश था, वह मिट गया। उसके स्थान पर इस धारणा का बाहुल्य हुआ कि वे हीन हैं, जनता बड़ी। जिस सेवा, त्याग और सद्‌भावना की कहानी उन्होंने अपने जीवन में एक बार भी नहीं पढ़ी, अब समझा उन्होंने कि पाठ असली यही है, — जीवन का एक अभूतपूर्व लक्ष। यही पवित्र ! यही निर्मल !

निदान, अपने उस अनभ्यस्त जीवन में अथक परिश्रम करने का परिणाम यह हुआ कि राधिका बाबू बीमार पड़ गये। लगभग महीना भर हो गया कि वे शैया से नहीं उठे। एक दिन के प्रातः जब वह कुछ अधिक रोग-ग्रस्त दिखायी दिये, तो उनकी पत्नी ने, अन्य अभिभावकों ने सोचा कि अब जायेंगे ··· चले ही जायेंगे इनके प्राण ! यही कारण था कि वे सब खिन्न और उदास थे। किन्तु उसी समय, जब बाबू साहब ने आंखें खोलीं, तो उनकी पत्नी ने कहा 'बाहर जनता खड़ी है ··· वह रो रही है ···· वह तुम्हारे जीवन की भीख मांग रही है ···'

बाबू राधिकाचरण ने इतना सुना, तो जैसे, उनके मानस के बुझते हुए दीप-दान में और तेल पड़ गया। उसकी बाती को भी उभार दिया गया। सुनते ही, बाबू राधिकाचरण ने जैसे चौंक कर, नव-स्फूर्ति से प्रेरित होकर आंखों से आंसू बहाते हुए कहा — 'क्या जनता मेरे किसान !'

पत्नी ने कहा — 'हां तुम्हारे किसान ! तुम्हारे ही —

'तुम मुझे बाहर ले चलो। उन्हीं के सामने।'

पत्नी ने इतना मान लिया। उसने तुरन्त ही अपने पति की रोग-शैया को बाहर उठाया। उसे उन हजारों व्यक्तियों के सामने रखवा दिया। उसी समय किसानों ने चिल्लाया — 'हमारे मालिक की जय हो ···चिरायु हों, हमारे साथी —

उसी समय, मानो हृदय थाम कर, गहरे उल्लास से भर, राधिका बाबू ने रोते हुए, पत्नी से कहा — 'क्या मैं मरूंगा ···· मैं नहीं मरूंगा, जनकी। मैं इस भावना और सद्‌भावना के बल पर ही जीवित रहूंगा !'

× × ×

निदान स्वस्थ हुए। जीवन के उस तीसरे पहर में उन्होंने जो प्रथम काम किया, वह यह था कि अपना रंग-महल जनता को दे दिया। किसानों को ही जमीन का मालिक बना दिया।

सम्बन्धियों ने कहा — 'ऐसा मत करो।'

परन्तु राधिका बाबू ने कहा — 'मुझे मत रोको। जिसकी वस्तु है, उसी को सौंपने दो। मैंने अभी तो पाया है जीवन, — अभी तो है सफर का आरम्भ— मुझे आगे बढ़ने दो।

हिन्दी की प्रगति

★

लंका में हिन्दी

लंका में हिन्दी प्रचार का कार्य बड़े उत्साह के साथ प्रारम्भ है। वहा से श्री सुशीलकुमार ने जो कुछ लिखा है उससे ज्ञात होता है कि लंका की सरकार ने हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में स्वीकार कर लिया है। यहा की 'प्राचीन' परीक्षा जिसकी आखिरी उपाधि है 'पण्डित,' में विद्यार्थी सिंहल, पाली, हिन्दी लेकर बैठ सकते हैं। सारे द्वीप में अब हिन्दी पढ़ाई जायगी।

विद्यालंकार परिवेण बौद्धों का सब से बड़ा केन्द्र है। पहले पहल हिन्दी वहीं से शुरू की गई। वहा के आचार्य हिन्दी की प्रगति में रस ले रहे हैं।

*

जयपुर में हिन्दी-गजट

जयपुर सरकार ने इस आशय की घोषणा की है कि अब से जयपुर गजट का हिन्दी संस्करण छपेगा और जयपुर-गजट का नाम 'राज्य पत्र' के नाम में परिवर्तित कर दिया जायगा।

*

अजमेर-मेरवाड़ा में हिन्दी

अजमेर-मारवाड़ा प्रान्तीय सरकार ने अपने प्रांत की सड़कों, बगीचों तथा सार्वजनिक इमारतों पर हिन्दी में बोर्ड लगवाने का निर्णय किया है।

*

दिल्ली और आगरा विश्वविद्यालय में हिन्दी

दिल्ली विश्वविद्यालय के कोर्ट ने हिन्दी मे शिक्षा देने विषयक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

आगरा विश्वविद्यालय के एकेडेमिक बोर्ड ने हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने के विषय पर विचार किया और प्रस्ताव को शीघ्र ही अमल में लाने के लिए एक उपसमिति बनाई जो नवम्बर के मध्य तक अपनी रिपोर्ट देगी। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों का कार्य हिन्दी में करने का निश्चय किया गया।

*

चिकित्सा की पुस्तकें हिन्दी में

हिन्दू सरकार ने कर्नल सर आर० एन० चोपड़ा की अध्यक्षता में देशी औषधियों की जाच के लिए जो समिति स्थापित की है। उस के सामने अब तक गवाहिया जो पेश हुई हैं उनसे इस विचार का समर्थन हो रहा है कि देशी औषधियों के अनुसंधान के लिए एक अनुसंधानशाला बनायी जाय। इसका नाम अ० भा० चिकित्सा परिषद् रखा जाय और इसके दो विभाग किए जायें। पहले विभाग का काम आधुनिक प्रणाली पर निर्भर हो और दूसरे विभाग का काम देशी प्रणाली से सचालित हो।

दक्षिण भारत इस पक्ष में है कि चिकित्सा-अनुसन्धान की पुस्तकें मूलतः हिन्दी में लिखी जाय, और बाद में अन्य भाषाओं में अनूदित की जाय।

*

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सहायता

भारत सरकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन को हिन्दी साहित्य के प्रसार के निमित्त ४० हजार रुपया वार्षिक की सहायता देगी। सम्मेलन का विचार दिल्ली जैसे केन्द्रीय स्थान में १० लाख के व्यय से अपना नया भवन बनवाने का है। इस भवन में उसका कार्यालय तथा विभिन्न साहित्यिक एवं शोध कार्यालय रहेंगे। सम्भवतः भवन-निर्माण के लिए भी केन्द्रीय सरकार पाच लाख की सहायता देगी।

*

एक पत्र

सिक्कों पर फ़ारसी और रोमन लिपि क्यों ?

भारत सघ की लिपि फारसी नहीं है। भारत सघ के किसी प्रांत (तक) की लिपि भी फारसी नहीं है। अतः न्याय का तकाजा है कि फारसी लिपि सरकारी सिक्कों पर न रहे। दुवन्नी जैसे सिक्के पर पाच लिपिया हैं जिनमें फारसी और रोमन लिपि भी शामिल हैं।

गांधी जी ने भी खुद २१.१-१९४८ के हिन्दी "हरिजन" में तीनों लिपियों— देवनागरी, फारसी और रोमन — का आपस में मुकाबला करते हुए कहा है "नागरी लिपि सबसे आला लिपि है, तथा रोमन लिपि हिन्दुस्तान में चल नहीं सकती, तथा फारसी और देवनागरी लिपि के मुकाबले में जीत आखिर देवनागरी लिपि की ही होगी।"

सिक्कों पर केवल एक देवनागरी लिपि ही होनी चाहिये। क्योंकि एक लिपि की नीति साम्प्रदायिकता और प्रांतीयता की भावनाओं को स्वभावतः बहुत अंशों में कुचल देगी। फारसी और रोमन लिपियों का तो कहना ही क्या, ये विदेशी हैं, भारत की प्रांतीय लिपिया भी (जैसे बंगाली, गुजराती, मराठी तामिल भी) इस दृष्टि से सिक्कों पर न रहें।

—देवदत्त, भिवानी

हिन्दुस्तानी नहीं, हिन्दी

हिन्दुस्तानी के लिए ठीक शब्द हिंदी होगा, चाहे मुल्क के लिए, चाहे सस्कृति के लिए और चाहे अपनी भिन्न परम्पराओं के ऐतिहासिक सिलसिले के लिये प्रयोग करें। यह शब्द हिन्दी से बना है जो कि हिन्दुस्तान का छोटा रूप है। अब भी हिन्दुस्तान के लिए हिंद शब्द का आम तौर पर प्रयोग होता है। पश्चिमी एशिया के मुल्कों में, ईरान और टर्की में, ईराक, अफगानिस्तान, मिस्र और दूसरी जगहों में हिंदुस्तान के लिए बराबर हिन्द शब्द का इस्तेमाल किया जाता है और इन सभी जगहों में हिंदुस्तानी को हिंदी कहते हैं। 'हिन्दी' का मजहब से कोई सम्बन्ध नहीं और हिंदुस्तानी मुसलमान और ईसाई उसी तरह से हिंदी हैं जिस तरह कि एक हिंदू मत का मानने वाला। अमेरिका के लोग जो सभी हिंदुस्तानियों को हिंदू कहते हैं, बहुत गलती नहीं करते। अगर हिन्दी शब्द का प्रयोग करे तो उनका प्रयोग बिलकुल ठीक होगा।

दुर्भाग्य (?) से हिन्दी शब्द का हिन्दुस्तान में एक खास लिपि के लिये प्रयोग होने लगा है — सस्कृत की देवनागरी लिपि के लिये — इसलिये इसका व्यापक स्वाभाविक अर्थ में प्रयोग करना कठिन हो गया है। शायद जब आज कल के मुगालते खत्म हो लें तो हम फिर उस शब्द का इस्तेमाल उसके मौलिक अर्थ में कर सकें और वह ज्यादा सतोषजनक होगा। आज हिन्दुस्तान के रहने वालों के लिए हिंदुस्तानी शब्द इस्तेमाल किया जाता है और जाहिर है कि वह हिन्दुस्तान से बनाया गया है, लेकिन बोलने में यह बड़ा है और इसके साथ वह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक खयाल नहीं जुड़े हैं जो कि 'हिंदी' के साथ जुड़े हैं। निश्चय ही प्राचीन काल की सस्कृति के लिए हिंदुस्तानी लफ्ज का इस्तेमाल अटपटा जानपड़ेगा।

—प० जवाहरलाल नेहरू

हिन्दी परीक्षा की मान्यता

निखिल भारतवर्षीय राष्ट्रिय विद्यापीठ, बम्बई के व्यवस्था मन्त्री सूचित करते हैं कि मध्य प्रान्तीय हाईस्कूल एज्यूकेशन बोर्ड के सेक्रेटरी ने शिक्षा-विभाग के डायरेक्टर को आदेश दिया है कि हिन्दी के विशारद और सस्कृत के शास्त्री उपाधिधारी बी० ए० और एम० ए० के समान समझे जायें और 'ग्रेजुएट' के समान उन्हें तरक्किया और नौकरिया दी जायं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पुरस्कार

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रधानमन्त्री सूचित करते हैं कि इस वर्ष पुरस्कार के लिए विचारार्थ पुस्तकें स्वीकार किये जाने की अन्तिम तिथि सौर वैशाख ३१, स० २००५ [तारीख १४ मई सन् १९४८] है। पुरस्कारों का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

मंगलाप्रसाद पारितोषिक १२००) का उक्त पारितोषिक इस वर्ष साहित्य के दर्शन विषय पर दिया जायगा।

सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार १५००) रु० का उक्त पुरस्कार इस वर्ष गणित विषय की वैज्ञानिक मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। गणित के अन्तर्गत गणित, ज्योतिष, भौतिक वास्तुकला, शिल्प और यन्त्र विज्ञान सम्बन्धी साहित्य की गणना की जायगी।

सेकसरिया महिला पारितोषिक ५००) रु० का उक्त महिला पारितोषिक किसी महिला लेखिका को उनकी स्वरचित हिन्दी की मौलिक रचना के सम्मानार्थ।

मुरारका पारितोषिक ५००) का उक्त पारितोषिक बंगाली, उड़िया या या आसामी भाषा भाषी लेखक या लेखिका द्वारा लिखी गई हिन्दी की किसी रचना के सम्मानार्थ।

रत्नकुमारी पुरस्कार २५० रु० का उक्त पुरस्कार हिन्दी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ।

श्री नेमीचन्द पुरस्कार ५ ०) का उक्त पुरस्कार वीर रस पूर्ण बाल साहित्य विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ।

नारंग पुरस्कार १००) का उक्त पुरस्कार पजाब निवासी किसी हिन्दी कवि या कवयित्री को भारतीय सस्कृति विषय पर उसकी रचित उच्चकोटि की कविता के सम्मानार्थ।

*

हिन्दी का बृहद् शब्द कोष

भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से उसके सभापति महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के निरीक्षण में पारिभाषिक शब्दों का बृहद् कोष तैयार किया जा रहा है। इस बृहद् शब्द कोष के शब्दों का संग्रह करने वाले सब विषयों के विद्वानों को पुरस्कार दिया जायगा। राहुल जी इस बृहद् कोष का सम्पादन पूरा करने के लिए सम्मेलन के भवन 'सत्यनारायण कुटीर' में ठहरे हुए हैं। हिन्दी में सब विषयों की उच्च शिक्षा प्रचलित करने के लिए इस बृहद् कोष के शीघ्र प्रकाशन की आवश्यकता समझी जा रही है।

अफीम

की आदत छूट जायगी। ऐसी ताकत अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कल्प कारी" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स पांच रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरिद्वार।

T.B. टी. बी. तपेदिक रोग के हताश रोगियो—

जबरी (Jabri) का नाम नोट कर लो; यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली शक्तिशाली औषधि है एक बार परीक्षा करके देख लो परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचायें। तार का पता—(JABRI JAGADHRI) काफी है।

पताः—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड संस रईस (३) जगाधरी (E.P.)

अपने भाग्य की परीक्षा एक बार अवश्य करें, अवश्य ही विजयी होंगे

३०००) रुपया इनाम अवश्य लीजिये

"प्रभात" प्रतियोगिता नं० ३

पूर्तियां भेजने की अन्तिम ता० २७—५—४८ ई०, खुलने की ता० १-६-४८ ई०

जोड़ २१० हर कोने से जोड़ने से २१० आना चाहिए, १८० का हल

	७०	

एक संख्या दो बार या खाली शून्य इस्तेमाल नहीं होना चाहिये, इसका सीलबन्द उत्तर स्थानीय भारत बैंक में जमा है। इनाम—१४००) रु० सर्व शुद्ध हल पर, ५००) ऊपर की दो पंक्ति या नीचे की दो पंक्ति मिलने पर, २००) कोई भी एक पंक्ति

१७	६४	६६
११२	६०	८
५१	२६	१०३

मिलने पर, ५००) सीलबन्द की पूरी संख्यायें किसी भी प्रकार से मिलने पर, ३००) रु० ७ संख्यायें किसी भी प्रकार मिलने पर, १००) सब से अधिक भेजने वाले को दिये जायेंगे। फीस १ पूर्ति का १), चार पूर्ति का ३), अधिक के लिए ॥) प्रति पूर्ति अधिक जैसे ५ का ३॥), १० का ६), पूर्तियां एक ही सादे कागज पर, पोस्ट कार्ड पर, मनीआर्डर के कूपन के नीचे भरकर भेज सकते हैं, मनीआर्डर कूपन के पीछे और पूर्तियों के नीचे नाम व पूरा पता साफ लिखा आना चाहिये, फीस नकद भी जमा की जाती है, परिणाम फल हर शामिल होने वालों के पास ता० १०-६-४८ तक पहुंच जायगा, उत्तर के लिये टिकट आना चाहिये, पत्र का हवाला अवश्य दें, धनराशि कम आने से इनामों में भी उसी अनुपात से कमी की जा सकती है, मैनेजर का निर्णय कानूनन मान्य होगा, हर जगह हमारी पूर्तियां भरवाकर भेजने वाले एजेन्टों की आवश्यकता है।

पता—"प्रभात" ट्रेडिंग कम्पनी [प० वि० ८] सेवका बाजार, आगरा।

१२५००) जीतिये

		३१
	३०	
२६		

दिनांक बन्द १२-७-४८

दिनांक उत्तर २०-७-४८

खाली स्थान इस प्रकार भरो कि हर तरफ से जोड़ ९० हो जाय, दिये हुए अङ्क अपने स्थान पर तथा कोई अङ्क दुबारा प्रयोग न हो।

हमारे सील्ड हल के अनुसार भेजने पर ५०००), प्रथम पंक्ति में एक त्रुटि होने पर ३०००), प्रथम पंक्ति में दो त्रुटि होने पर २०००), पचास हल भेजने वाले को १५००), एक से अधिक सही हल भेजने वाले को १०००) मिलेगा। १२५००) से कम रु० आने पर रु० इसी अनुपात से कम हो जायगा।

प्रवेश शुल्क—एक हल २), पांच हल ७), दस या दस से अधिक वाले को १) प्रति हल भेजना चाहिये। मनीआर्डर रसीद हल के साथ भेजना आवश्यक है। उत्तर के लिये -)॥ की टिकिट भेजना चाहिये।

पता—तपेश्वरीप्रसाद बनवारीलाल

५७/३४ ठठेरी बाज़ार, कानपुर।

एजेंसी के नियम तथा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें

सफेद बाल काला

भारत काला तेल बालों का पकना रोककर सफेद बाल जड़ से काला, लम्बे का कुल कर दिमागी ताकत व आंखों में रोशनी देती है। बराबर काला न रहे तो दूना मूल्य वापस। मू० २॥) आधा पका ३॥) कुल पका ५)। पं० श्री विजयकुमार गुप्ता नं० ५ पो० टेहटा (गया)।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद-बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमागी ताकत और आंखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न होवे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २।) बाल आधा पका हो ३।), और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

महाशक्ति कार्यालय (V. R.)

पो० जगदल (२४ परगना)।

५००) नकद इनाम

वर्यामर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट करता है। मूल्य ३॥) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।

श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

बन्द मासिक धर्म के लिए

रजदोष सुधारक चूर्ण के सेवन करने से मासिक धर्म चालू रहता है। इसे लाखों स्त्रियां आवश्यकता होने पर और सन्तति निरोध के लिये सेवन करती है। मूल्य ५) चेतावनी — गर्भवती स्त्री इस का सेवन न करें क्योंकि गर्भपात होकर मासिक धर्म फिर जारी हो जाता है।

संकट मोचन कार्यालय (V)

पो० जगदल (२४ परगना)।

आवश्यकता है

सिनेमा क्षेत्र का उच्च-कोटि का मासिक "रंगमंच" बेचने के लिए एजेंटों की हर शहर में। इच्छुक सज्जन तुरंत आवेदन करें। नमूने की प्रति ॥) आने पर ही भेजी जायेगी। मैनेजर—'रंगमंच' गोलछा, अहमद मंजिल, नागपुर सिटी

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १२) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम गारंटी पत्र साथ भेजा जाता है पताः— आजाद एन्ड कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

एजेण्टों की जरूरत है—

जमनादास एण्ड कं०, के० डी० जगदीश ए० कं० चांदनी चौक, दिल्ली।

मुफ्त नवीन कैलेन्डर, हरप्रकार की सुन्दर, सस्ती और टिकाऊ **FREE**

रबर की सुरें तथा भारत विख्यात इन्डस्ट्रीज की अचूक गुणकारी-पेटेन्ट औषधियों के वर्णन पत्र और गुप्त रोगों से छुटकारा पाने की साधन नियमावली आज ही पत्र लिखकर बिना मूल्य प्राप्त कीजिये।

पता—आरोग्य कुटीर इन्डस्ट्रीज शिवपुरी, C. I.

निराश होकर न बैठें।

स्त्री या पुरुष का कोई कैसा ही पुराना, बिगड़ा, असाध्य और भयङ्कर रोग हो, किसी इलाज से भी नष्ट न हुआ हो, रोग का पूरा खुलासा हाल लिखकर या हमारे पास आकर हमसे अनुभवपूर्ण इलाज उचित खर्च में करालें। हमने अपने अनुभव से हजारों निराशों को आशावान किया है। संतान चाहने वाले प्रश्नपत्र मंगावें

वैद्यराज शीतलप्रसाद जैन, मुजफ्फरनगर

तीन नाम

तीन लड़कों को उनके गुरु ने आपस में समभाग में बांट लेने के लिए एक मुद्रा दी। उन्होंने रुपये से कोई चीज खरीदने का निश्चय किया। उनमें से एक लड़का अंग्रेज, एक हिन्दू और तीसरा ईरानी था। उनमें से कोई भी एक दूसरे की भाषा भलीभांति नहीं समझता था। इसलिए उन्हें यह निश्चय करने में कुछ कठिनता पड़ी कि कौन सी वस्तु मोल ली जाय। अंग्रेज बालक ने वाटर मेलन खरीदने की इच्छा प्रकट की। हिन्दू लड़के ने तरबूज लेना चाहा और ईरानी लड़के ने हिन्दवाना लेना चाहा। वे निश्चय नहीं कर सके कि कौन सी वस्तु खरीदी जाय। जिसको जो वस्तु पसन्द थी, उसने वही मोललेने पर जोर दिया। दूसरों की इच्छा की हर-एक ने उपेक्षा की। उनमें अच्छा खासा झगड़ा उठ खड़ा हुआ। वे सड़क पर चलते चलते झगड़ते जाते थे। वे एक ऐसे मनुष्य के पास से होकर निकले, जो तीनों की भाषाओं को समझता था। इस मनुष्य को इस झगड़े में बड़ा मजा आया। उसने उनसे कहा कि मैं तुम्हारा झगड़ा निपटा सकता हूं। तीनों ने उसे अपना अभियोग सुनाया और उसका फैसला मानने को राजी हुए। इस मनुष्य ने उनसे मुद्रा ले ली और एक स्थान पर ठहरने को कहा। वह स्वयं एक खटिक की दुकान पर गया और एक बड़ा सा तरबूज मोल लिया। उसने इसे लड़कों से छिपा रक्खा और एक एक करके तीनों को बुलाया और दूसरों से छिपाकर तरबूज को तीन सम भागों में बांटकर एक टुकड़ा अंग्रेज बालक को देकर बोला — "यही तुम चाहते थे?" लड़का बहुत खुश हुआ। प्रसन्नता और कृतज्ञता से स्वीकार कर कूदता, नाचता और यह कहता हुआ चल दिया कि यही वस्तु मैं चाहता था। इसके बाद उसने ईरानी लड़के को बुलाया और उसको एक हिस्सा देकर बोला — "यही तुम चाहते थे?" ईरानी लड़का बहुत खुश हुआ और वह भी उसी प्रकार प्रसन्नता से अपना हिन्दवाना लेकर चला आया। इसके बाद उसने हिन्दू लड़के को बुलाया और वह भी अपना तरबूज प्रसन्नता से लेकर चला।

तीनों अपने अपने घर प्रसन्नता से चले गए। — उर्मिला भटनागर

जरा हंसिये तो सही

एक आदमी गरीबों की सहायता करने के लिये चन्दा जमा कर रहा था। चलते चलते वह जुगलकिशोर सेठ की दुकान पर पहुंचा और उसने सेठ से चन्दा मांगा। जुगल किशोर ने जवाब दिया :— मैं गरीब आदमी, भला क्या चन्दा दूं।

आदमी ने कहा :— अच्छा तो आप ही मुझसे कुछ ले लीजिए, क्योंकि यह चन्दा गरीबों के लिए ही तो है।

× × ×

जज :— मैं तुम्हें दो बरस की सजा देता हूं। क्या तुम कुछ घर पर कहला-भेजना चाहते हो?

रामचन्द्र शर्मा :— जी हां! घर पर कहलवा दीजिए कि आज शाम को मैं खाना नहीं खाऊंगा।

× × ×

हलवाई — अरे भाई, आज का दूध पतला क्यों है?

ग्वाला — कल सब गायें पानी में भीग गईं थीं।

— राजेश भटनागर कोटा

बाल रचनालय

बाल बन्धुओं की रचनाओं को अधिक रोचक व उपयोगी बनाने के उद्देश्य से 'बाल-रचनालय' की स्थापना की गई है। हर मास बालक, बालिकाओं की रचनाओं को पुरस्कृत किया जायगा तथा बाल कवियों की रचनाओं की त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न किया जायगा।

१- अठारह वर्ष तक की आयु वाले बालक, बालिकायें अपनी रचनायें भेज सकते हैं।

२- केवल अप्रकाशित रचनायें ही भेजी जायें।

३- कविता, कहानी, चुटकुले, गद्य काव्य आदि प्रत्येक प्रकार की रचनायें प्रतियोगिता में सम्मिलित की जाती हैं।

४- सर्वश्रेष्ठ रचना पर 'रत्न-पारितोषिक' प्रदान किया जायगा तथा अन्य चार पुरस्कार और दिये जायेंगे।

५- प्रत्येक मास की २० तारीख तक रचनायें आ जानी चाहिये।

'बाल-रचनालय'
मारफत सरस्वती प्रिन्टिंग वर्क्स,
हाथी भाटा,
अजमेर (राजपूताना)

बापू की याद

[सुशीला 'सेविका']

पूर्ण पुरुष थे प्यारे बापू,
पूर्ण सत्यता के अवतार,
विश्व शांति के संचालक थे,
विश्व एकता के आधार।

जीवन-सिद्ध अहिंसक तुम थे,
तुम थे मानवता के प्राण,
सब धर्मों के रक्षक तुम थे,
सब के पालन हार।

मानवता का हर पहलू,
जीवन में तुमने घटित किया,
अपनी मीठी वाणी से,
विश्व हृदय पर राज्य किया।

आजादी की जोत जला कर,
भारत में आलोक किया,
भूले भटकों को एकत्रित कर,
एक डोर से बांध दिया।

इस प्रगति-शील युग में,
बापू अटल खड़ा था,
आत्मिक बल की शान जमाने,
बापू ने कदम उठाया था।

राष्ट्र पिता भारत के तुम थे,
तुम थे इसके निर्माता,
बापू अब बल दो इसको,
रहे तुम्हारा गुण गाता।

हिन्दू मुस्लिम भाई भाई,
यह था संदेश तुम्हारा,
एक साथ सब मिल कर गायें,
भारत देश हमारा।

बापू आज तुम्हारी स्मृति,
रह रह कर यों तड़पाती है,
ज्यों धड़ से सिर पृथक हुआ,
और तड़पन रह जाती है।

बापू तेरी गोदी में,
नेहरू जो पल कर बड़ा हुआ,
नहीं रुकता उसका आंसू,
दिल में दर्द भरा हुआ।

तेरे ही बूते पर भारत की,
बागडोर थामी थी उसने,
तेरे ही बल से बापू,
शक्ति बटोरी थी उसने।

तुम उसके एक सहारा थे,
तुम्हीं सच्चे बन्धु थे,
तुम्हीं उसके मन्त्री थे,
तुम ही उसके बापू थे।

जीवन बाजी आज लगा कर,
मोल चुकाया आजादी का,
क्या मालूम था इतना महंगा,
सौदा होगा आजादी का।

विश्व-वन्द्य बापू हमको,
देना एक यही वरदान,
सन्मार्ग सदा हम ग्रहण करें।
और हो जायें बलिदान।

अपने घर में फल उगाओ

[राजेश नारायण भटनागर]

तीन चार सप्ताह का छोटा पौधा जड़ बचा कर उखाड़ लो। उसकी जड़ में इतनी मिट्टी लगी रहती है कि जिसकी नमी से वह किसी बाहरी सहारे के बिना भी कुछ दिन तक जीवित रह सके। उसे अपनी जाति के किसी दो तीन वर्ष के पुराने पौधे में लगा दो। वह पुराना पौधा नये पौधे से कई गुना बड़ा होगा। पुराने पौधे के एक फुट ऊपर की छाल पहले छील डालो। नये पौधों के छिले हुए भाग एक दूसरे से मिला कर मुलायम कपड़े से बांध दो। नये पौधे की जड़ मिट्टी भी पुराने पौधे से बांध दो। दो तीन सप्ताह बाद नया पौधा पुराने में लग जायगा। तब वह उसी से पोषक-रस पाने लगता है और उसी का एक अङ्ग बन जाता है। कुछ दिनों बाद कपड़ा और मिट्टी भी उससे अलग कर दो, और उसकी जड़ को पुराने पौधे से लटकती रहती हैं, काट दो। जब पुराने में नया पौधा अच्छी तरह लग जाता है, तब उसकी सारी शाखाएं काट दी जाती हैं। पुराने पौधे का पोषक रस, जो सारी शाखाओं में बंट जाता था, अब केवल नये पौधे ही को मिलने लगता है। फल यह होता है कि पौधा बहुत बलिष्ठ हो जाता है और समय से पहिले ही कहीं अच्छे और विशेष स्वादिष्ट फल देने लगता है।

सूचना

अभिनन्दन विद्यार्थी मंडल की ओर से 'अभिनन्दन' नामक बालोपयोगी हस्त-लिखित मासिक पत्र हर माह निकाला जाता है। बालबन्धुओं से निवेदन है कि वे अपनी लिखी हुई रचनायें भेजें। उत्तम रचनाओं पर हर माह इनाम भी दिया जाता है। संपादक—अभिनन्दन
मारफत अभिनन्दन विद्यार्थी मंडल,
इतवारी, नागपुर, सी० पी०।

पाकिस्तान पर मैं कैसे लिखूं

(पृष्ठ ६ का शेष)

क्रूरता नहीं इन्सानियत झलक रही है, उन्होंने नीले रंग की ओर इशारा किया और कहा — 'नीला रंग क्रूरता का प्रतीक है।' मेरे दिमाग में लाखों 'कृष्ण' की तस्वीरें खिच गयीं जो और कुछ हो सकते थे मगर क्रूर कतई नहीं। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि यामिनीराय बूढ़े हैं और एक ऊंचे दर्जे के कलाकार हैं। कलाकारों को अपने मनसे काम करने देना चाहिए वरना वे काम करने से इन्कार कर देंगे।

लेकिन जब पाकिस्तानी विधान परिषद में बूढ़े गजनफर अली खां को मैंने देखा तो मुझे उस बक्त यामिनी राय की याद आ गयी और याद गयी ११ वर्ष पहले की बात जो मुझे आमिनी राय ने कही थी।

एक पंजाब ही ऐसा प्रांत है, जिसमें अच्छे नेता नहीं। बदकिस्मत सिक्खों ने तारासिंह को पैदा किया जो आज इतिहास की इन मुसीबत भरी घड़ियों से किसी कदर उन्हें आगे बढ़ाते चले आ रहे हैं। मुसलमानों ने गजनफर और उनके अनुयायियों को पैदा किया, जिनके चलते पाकिस्तान में पंजाबी मुसलमान आज सबसे अधिक घृणित समझे जाते हैं। लेकिन हां, आपके साप्ताहिक पत्र में, किसी लेख में, मैं ऐसी बातें नहीं लिख सकता।

गजनफर पंजाबियों के प्रतीक हैं उनकी, उद्दण्डता के, उनके पौरुष के और उनकी धृष्टता के। समूचे पाकिस्तान में पंजाबियों में सेक्स की भावना अत्यधिक प्रबल रहती है, पोशाक पहनने का शौक हद से ज्यादा। बंगाली इन से चिढ़ते हैं और सिन्धी डर से थर-थर कांपते हैं। वे पंजाबियों से ठीक इसी कदर डरते हैं, जिस तरह लीगी मुसलमान हिन्दुओं से डरते थे। "हम घिरे हुए हैं, हम डूबे हुए हैं" सिन्ध और बङ्गाल जोर-जोर से चिल्लाकर कहता है और गजनफर की नीली पगड़ी और धृष्ट उद्दण्डता इस बात को और भी प्रमाणित कर देती है कि खतरा कितना वास्तविक है। और, ऐसे लेख में मैं ये बातें कैसे लिख सकता हूं ? क्योंकि आखिर मुझे पाकिस्तान में ही तो रहना है, जहां गजनफर मन्त्री हैं और मैं एक विनीत प्रजा। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री के सम्बन्ध में मैं अपना मुंह कैसे खोल सकता हूं। नवाबजादा केन्द्रीय असेम्बली के एक सदस्य थे। वहां वह शांत और मौन रहते थे। यह सत्य है कि वह चालाक थे और यद्यपि उनकी 'स्पीचें' कभी शानदार न होती थीं, फिर भी, जिस विषय पर वे बोलते थे साफ और दुरुस्त बोलते थे लेकिन अनियन्त्रित एवं अपरिमित अधिकार प्राप्त हो जाने पर इतने कम समय में उनमें इतने अधिक परिवर्तन नजर आयेंगे, मुझे इसकी कतई उम्मीद न थी।

रुपये की भांति ताकत भी आदमी को इस काबिल तो बना ही देती है कि वह अपनी बुराइयां या अच्छाइयां कम या अधिक कर सके। जैसे अच्छा 'टेकनिक' कलाकार को यह मौका देता है कि वह अपनी आत्मा का गम्भीर चिन्तन या छिछलापन व्यक्त कर सके।

इसलिए धन्यवाद, पाकिस्तान पर लिखने के आपके 'आफर' को मैं नामंजूर करता हूं। मैं सीरिया के उस दूसरे महापुरुष—खलील जिब्रान (पहले महापुरुष ईसा थे) की कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहता हूं—

"तुम्हारी आत्मा संग्राम क्षेत्र है, जिस पर तुम्हारे तर्क और न्याय तुम्हारी लालसा और पिपासा के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। यदि मैं तुम्हारी आत्मा का शांति स्थापक होता तो मनोमालिन्य और प्रतिस्पर्धा को एकता और स्वर की मधुरता में बदल देता।"

और जब वह दिन आ जायेगा, मैं आपका 'आफर' मंजूर कर लूंगा। अभी मैं पाकिस्तान पर लिखना मंजूर नहीं कर सकता। 'मिस्ट्रेस' के सामने पत्नी की तौहीनी मुझे पसन्द नहीं। आप ऐसा नहीं चाहेंगी कि मैं विधवा का पुत्र होऊं और मैं दुराचारी होना घृणित समझता हूं।

(न० हि०)

सिर्फ स्टालिन को पालतू बनाने के लिए

(पृष्ठ ७ का शेष)

नवम्बर क्रान्ति के चिन्ह सोवियत यूनियन की प्रत्येक प्रकार से रक्षा करेंगे। वस्तुतः ऐसा कोई खतरा नहीं है, क्योंकि ट्रूमेन जानते हैं कि यदि उन्होंने रूस पर हमला किया, तो न केवल अमेरिका में बल्कि यूरोप में जहां जहां अमेरिकन साम्राज्यवाद का सिक्का जमा है गृह युद्ध छिड़ जायगा। आज अमेरिका का श्रमिक वर्ग हुकूमत का जितना सख्त विरोधी है, उतना पहले कभी नहीं था, क्योंकि — उसके अधिकारों पर ट्रूमेन सरकार ने कुठाराघात किया है और उस की नाना प्रकार की समस्याएं हल करने में असफल हो गयी है। अस्तु ट्रूमेन के तर्जन गर्जन का एक मात्र उद्देश्य स्टेलिन को पालतू बना कर उसे निस्तब्ध दर्शक के रूप में परिवर्तन करना है।

महात्मा सूरदास

[पृष्ठ ५ का शेष]

शुप्त हो गया होता। 'सूर सारावली' को सूरसागर की अनुक्रमणिका मात्र माना जाता है। कहा जाता है कि इसकी रचना होली के वृहत् गान के रूप में की गई थी, इसकी शैली सूरसागर से भिन्न है। केवल एक ही छन्द में इसका निर्माण किया गया है, परिणाम यह हुआ कि इसमें वह रोचकता नहीं आने पाई जो सूरसागर में है। हमारा तो विचार है कि 'सूरसारावली' सूरसागर के बाद में लिखी हुई अनुक्रमणिका नहीं, अपितु सूरसागर से पहले लिखी गई वह अनुक्रमणिका है, जिसमें लेखक ने अपने लिए वर्णनीय विषयों की एक सूची तय्यार की है।

सूर की भक्ति

सूर वल्लभ सम्प्रदाय के हैं, अत' उनकी भक्ति में इसी सम्प्रदाय के सिद्धांतों का समावेश है। इस सम्प्रदाय को 'पुष्टि-मार्ग' कहते हैं। 'पुष्टि' परमात्मा की कृपा को कहते हैं, इसके बिना जीव का मोक्ष नहीं हो सकता। सूर का प्रभु कृपा पर दृढ विश्वास है। इस सम्प्रदाय में 'बाल-कृष्ण' की पूजा होती है, अत सूर ने कृष्ण के बाल रूप के ही गीत गाये हैं।

सूर एकान्तत भक्त हैं, कृष्ण भक्त। निराकार पर उनकी आस्था नहीं "

"रूप, रेख, गुन जाति जुगति बिनु
निरालम्ब मन धावे।
सब बिध अगम बिचारहि तावे,
सूर सगुण पद गावे ॥

वे कृष्ण के अतिरिक्त किसी और देव पर विश्वास नही करते

"और देव सब रङ्क भिखारी
त्यागे बहुत अनेरे।"

इतनी दृढ और अनन्य भक्ति अन्यत्र दुर्लभ है।

सूरदास की भक्ति सख्यभाव की है। इसीलिए उसमें तुलसी की भाति दैन्य नहीं और न ही मीरा की भाति आत्म-विस र्जन। सूर त कृष्ण के साथ निडर होकर बात करते हैं। उसके लिए किसी का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं समझते, वे कभी कभी अपने मित्रों को खरी खोटी भी सुना देते हैं, कभी उस पर अभियोग भी लगा देते और कभी ललकार भी देते हैं। कहीं कहीं सूर की भक्ति में अक्खड़पन भी आ जाता है। वे मर्यादा को भी तोड़ बैठते हैं, इसका कारण यही है कि वे कृष्ण को अपने से दूर अपने से बड़ा मानते ही नहीं। वे कृष्ण के मुह लगे हुए हैं, इसी लिए कह उठते हैं —

आजु हौं। एक-एक करि टरि हौं।
के हम ही, के तुम ही, माधव।
अपुनि भरोसे लरि हौं ॥

कभी कभी सूर की भक्ति में अत्यन्त कोमलता के भी दर्शन होते हैं वे कृष्ण के सामने गिड़गिड़ाते से लगते हैं —

हौ पतितन को टको।

फिर भी सूर की भक्ति सख्य भाव की है। ऐसे स्थल, जहा उन्होंने मर्यादा का उलङ्घन किया है, या जहा वे अत्यन्त कृपण हैं बहुत थोड़े हैं।

सूर का वर्ण्य विषय

सूर पुष्टिमार्गी थे, इसलिए उनके वर्णन का विषय एक ही रहा — बाल कृष्ण। इसी को लेकर सूर ने वात्सल्य और शृङ्गार से पूर्ण रचनाए कीं। उनका क्षेत्र सीमित रहा, परन्तु भावनाए सकीर्ण नहीं रहीं। विषय की एकता होते हुए भी उसमें अरोचकता नहीं आई। सूर की शैली कुछ ऐसी रोचक मधुर और प्रभावोत्पादक है कि एक ही बात को बार बार पढते हुए भी जी ऊबता नहीं है। भक्ति की धारा मे बहते हुए सूर ने जो गीत गाये हैं, उनका विषय चाहे एक है परन्तु वे आज भी भक्तों और सहृदयों के लिए सम्मान और सग्रह की वस्तु हैं।

इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सूर ने जिस विषय को लिया है, उसको विकास की चरम सीमा पर पहुचा दिया है। जहा तक सूर जा सके हैं वहा तक किसी और की पहुच नहीं। वात्सल्य और शृङ्गार का इतना हृदयग्राही चित्रण सम्भवत और कोई कवि न कर सका है और न कर सकेगा। सूर के सामने दूसरे कवियों की उक्तिया झूठी सी प्रतीत होती हैं। इसीलिए किसी आलोचक को बरबस कहना पड़ा होगा —

"तत्व तत्व सूरा कही"

जो तत्व था, वर्णनीय था, वह सब सूर ने कह दिया। वात्सल्य और शृङ्गार के उदाहरण उपस्थित करने का अवसर नहीं। इतना ही नहीं कह देना चाहिए कि सूर के वात्सल्य वर्णन को पढ़ कर सहृदय निस्सन्देह इस निर्णय पर पहुच जाता है कि 'यदि सूर को ही वात्सल्य कह दें और वात्सल्य को ही सूर' तो अत्युक्ति नहीं होगी। सूर की वर्णन शक्ति थी कि उसके बाद 'वत्सल' को एक नया रस स्वीकार कर लिया गया।

वात्सल्य और शृङ्गार के दो पहलू होते हैं — सयोग और वियोग सूर ने दोनों के दोनों पक्षों का वर्णन किया है, परन्तु जो मार्मिकता उनके वियोग पक्ष में आ सकी है वह सयोग में नहीं। वियोग पक्ष का चित्रण करते हुए तो सूर ने कमाल ही कर दिया। सही मानो में देखा जाय तो ऐसा होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि सूर स्वय कृष्ण के विरही थे, विरह के दुख का अनुभव रखते थे। अत भुक्तभोगी होने के कारण वे विरह का चित्रण कर सके और उन्होंने अनुभव के बल पर विरह का वर्णन किया और सयोग का वर्णन किया कल्पना के बल पर। तब कल्पना और अनुभव में अनुभव की उत्कृष्टता स्वाभाविक ही हो जाता है।

सूर का स्थान

हिन्दी साहित्य और हिन्दू जाति में सूर का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने सौन्दर्य और माधुर्य के द्वारा पदाक्रान्त हिन्दू जनता को भक्ति की ओर आकृष्ट किया। उस समय, जब हिन्दू अपना मन खो बैठे थे हिन्दुओं के लिए सूक्ष्म ब्रह्म ज्ञान ग्राह्य नहीं था दर्शनशास्त्री का गूढ़ समस्याओं का विक्षिप्त जनता नहीं समझ सकती थी। जनता अपने हिन्दुत्व को भूली जा रही थी। उस समय सूर ने भक्ति भावना द्वारा सौन्दर्य का अमृत पिला कर मरती हुई जाति को जीवित किया। उनके अन्दर साहस का सचार हुआ और वे अपने धर्म की रक्षा करने में सफल हो सके।

हमें हर्ष है कि जनता आज अपने इस कवि की जयन्ती मनाने की तय्यारिया कर रही है। आशा करनी चाहिए कि अब स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की सभी महान् विभूतियों का सम्मान होगा।

पहेली सं० ३४ की संकेतमाला

बायें से दायें

१. दिल्ली की सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्रिका ।
४. स्त्रियों के शृंगार में इसका भी स्थान है।
६ — होना अपने भाग्य की बात है ।
७. एक सब्जी, इसका पूर्वी भारत में विशेष प्रचलन है।
१०. एक धार्मिक ग्रन्थ ।
११. कुछ लोग इसे ही श्रेष्ठ समझते हैं।
१२. देखिये, चार अक्षरों वाला यह वस्तु आपका इष्ट तो नहीं है ।
१४. क्रियाविशेषण और समयसूचक शब्द।
१५. प्रत्येक मुकद्दमेबाज इस के चक्कर में फंसता है ।
१६. इसका कामना करना बुरा नहीं है ।
१९. सप्ताह का एक दिन ।
२०. आकाश में विचरणशील ।
२१. इसस वास्ता पड़ ही जाता है ।
२२. — से मनुष्य को यथाशक्ति सहायता करना चाहिये ।

ऊपर से नीचे

१ सुन्दर ।
२. इस स्वभाव के मनुष्य की सफलता में सदा संदेह रहता है ।
३. वह वर्ग जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है ।
५. जनसंख्या में वृद्धि के साथ इसकी आवश्यकता बढ़ती जाती है ।
७ आंधी और तूफान जैसे संकट में भी — का भरोसा नहीं छोड़ना चाहिये । (चार अक्षर का शब्द)
८. — को अपने कल्याण के लिए बहुत सी वस्तुओं से बचना चाहिए ।
९. स्नेह बोधक संबोधन है ।
१३. सभी युगों में सर्वश्रेष्ठ रहा है ।
१७. मनुष्यों का स्वामी ।
१८. एक ऋतु ।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३४

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं ।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३४] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) **न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)**

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

इन तीनों वर्गों को पृथकन करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे आसकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २१ मई १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा सदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहा मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहा वह पहेली मे दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर ३१ मई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २६ मई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जा गा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली स० ३४, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धिया होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

श्री पं० पूर्णप्रकाश शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने अर्जुनप्रेस लिमिटेड लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

...ली, सोमवार ५ ज्येष्ठ
सम्वत् २००५

D...I. 17th. May 1948.

काश्मीर की जनता को आक्रान्ताओं के आक्रमणों से प्रधानमंत्री प० नेहरू ने आश्वासन दिया है।

क्या आप जानते हैं ?

—कि रेडियो की भाषा में हिन्दी के शब्दों के विरुद्ध फिर प्रहार प्रारंभ कर दिया गया है ?

—कि पंजाब में सिख साम्प्रदायिकता हिन्दी को नष्ट करने पर तुल गई है ?

—कि दिल्ली में मृत होती हुई उर्दू को पंजाब से आये हुए उर्दू समाचारपत्रों ने पुन जीवन दान दे दिया है ?

—कि यूनिवर्सिटियों मे हिंदी के प्रचार को रोकने के लिए स्वतंत्र देश में भी पांच साल तक अंग्रेजी माध्यम जारी रखने का निश्चय किया गया है ?

—कि बम्बई सरकार हिंदुस्तानी के नाम पर विशुद्ध क्लिष्ट उर्दू के प्रचार का प्रयत्न कर रही है ?

—कि दिल्ली सरकार ने मोटरों पर नागरी-अंक लिखने का निषेध कर दिया है ?

—कि विधानपरिषद में कहीं हिंदी राष्ट्रभाषा स्वीकृत न होजाय इस के लिए अंदर ही अंदर संगठित षड्यंत्र किया जा रहा है।

आंतरिक शत्रुओं द्वारा हिंदी के विरुद्ध संगठित षड्यंत्र से रक्षा का आश्वासन कौन देगा ?

हैदराबाद के रज़ाकारों के अत्याचारों के विरुद्ध रक्षामंत्री स० बलदेवसिंह ने आश्वासन दिया है।

वर्ष १५
संख्या ६

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ३ जेष्ठ सम्वत् २००५

दो खतरे

काश्मीर की समस्या हैदराबाद की उलझन और पाकिस्तान की ओर से नित नये खड़े होने वाले झगड़ों की ओर आज समस्त देश का ध्यान खिंचा हुआ है। इस में सन्देह नहीं कि ये सभी प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और इनका देश के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। यही कारण है कि हमारे राजनीतिज्ञ इन प्रश्नों की ओर सतर्क और जागरूक दृष्टि रखते हैं। किन्तु देश को आज जहां इन बाहरी शत्रुओं—काश्मीर पर आक्रान्ताओं, रजाकारों तथा साम्प्रदायिक मुस्लिमलीगियों के आक्रमणों से खतरा है, वहां कुछ ऐसे भी शत्रु हैं, जो अन्दर ही अन्दर रह कर देश के लिए खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं। इन आन्तरिक शत्रुओं को हम दो श्रेणियों में बांट सकते हैं — एक कम्यूनिस्ट और दूसरे साम्प्रदायिक।

कम्यूनिस्टों और साम्प्रदायिक लोगों में कितना ही अन्तर क्यों न हो, एक समानता अवश्य है और वह यह कि राष्ट्रीयता से बढ़ कर किसी दूसरी वस्तु के प्रति इनकी आस्था अधिक होती है। साम्प्रदायिकवाद अपने देश से बढ़ कर अपने सम्प्रदाय का हित देखता है, तो कम्यूनिस्ट भी अपने देश से बढ़ कर अपने प्रेरणा केन्द्र रूस में अधिक आस्था रखता है और यही कारण है कि किसी भी देश के लिए ये दोनों खतरनाक होते हैं। और यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहां भी ये दोनों तत्व विद्यमान हैं।

कम्यूनिस्टों का संगठन अन्तर्राष्ट्रीय और बहुत दृढ़ भित्ति पर स्थित है। इन को रूस से प्रत्येक प्रकार की सुविधा प्राप्त होती है। साधनों की दृष्टि से यह संगठन अत्यन्त सम्पन्न है। अनुशासन और संगठन इन का आदर्श है और इन कारणों से कम्यूनिस्टों की कार्यक्षमता भी अधिक है। पूर्वी यूरोप पर ही आकर कम्यूनिस्ट सन्तुष्ट नहीं हैं। रूस की महत्वाकांक्षा बहुत ऊंची है और देश-देश में संगठित कम्यूनिस्ट पार्टियां रूस की इस महत्वाकांक्षा की पूर्ति में सहायक सिद्ध हो रही हैं। पिछले कुछ समय से एशिया में कम्यूनिस्टों की प्रवृत्तियां बहुत बढ़ रही हैं। चीन में अमेरिका द्वारा पर्याप्त सहायता प्राप्त करने पर भी यदि च्यांगकाई शेक को कम्यूनिस्टों के मुकाबले में सफलता प्राप्त नहीं हो रही, तो इसके कारण की कल्पना की जा सकती है। चीन का एक बहुत बड़ा भाग कम्यूनिस्टों के हाथ में है। चीन के दक्षिण में बरमा पर भी पिछले दो तीन वर्षों से कम्यूनिस्ट छा जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। बरमा में नित नये लूट मार और उपद्रव बढ़ रहे हैं। कई जिलों में तो उनकी विध्वंसात्मक प्रवृत्तियां इतनी बढ़ गईं हैं कि बरमा सरकार को सेना और विमानों की सहायता लेने को विवश होना पड़ा है। शस्त्र एकत्र कर वस्तुतः कम्यूनिस्ट बरमा की सरकार को उलट देना चाहते हैं और इसमें सन्देह नहीं कि सचमुच बरमा सरकार के लिए कम्यूनिस्ट एक खतरा बन गये हैं।

बरमा में कम्यूनिस्ट जो कुछ कर रहे हैं, उसी की पुनरावृत्ति भारत में भी हो रही है। कम्यूनिस्टों का उद्देश्य यहां भी लगातार असंतोष पैदा करना है। बंगाल में शस्त्रास्त्र संग्रह, लूटमार और डाकेजनी आदि के कारण ही इस पार्टी को गैरकानूनी घोषित करना पड़ा। शस्त्रास्त्रों के कारखानों, रेलों तथा कपड़े की मिलों में कम्यूनिस्ट घुस घुस कर इन्हें अव्यवस्थित कर देना चाहते हैं। दक्षिण भारत में तो कुछ महीनों से इनकी सरगर्मियां परम सीमा पर पहुंच गई हैं मकानों पर बलात् कब्जा, रेलगाड़ियों पर हमला, लूट और सरकारी कर्मचारियों की हत्या तथा डाके की घटनाएं वहां साधारण बात हो गई है। एक स्थान पर तीन पुल ध्वस्त कर दिये गये। शस्त्रास्त्रों के भण्डारों तथा पुलिस पर हमले करके कम्यूनिस्ट समस्त जनता में आतंक व अराजकता फैला देना चाहते हैं।

पिछले दिनों हैदराबाद से जो समाचार मिले हैं, वे और भी खतरनाक हैं। वहां की सरकार ने कम्यूनिस्टों पर पाबन्दी लगाई हुई थी, अब भारत सरकार के विरुद्ध मोर्चा लेने के लिए निजाम ने कम्यूनिस्ट पार्टी पर से पाबंदी उठाली है। इस पार्टी ने एक वक्तव्य में इस आरोप का प्रतिवाद अवश्य किया है किन्तु उसके एक लम्बे वक्तव्य से असली स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। आज जब नेहरू सरकार निजाम के विरुद्ध मोर्चा लेने के लिए कटिबद्ध हो रही है, तब कम्यूनिस्ट पार्टी ने आठ पृष्ठों की पुस्तिका में घोषणा की है कि हैदराबाद को भारतीय संघ में सम्मिलित न होकर स्वतन्त्र राज्य ही रहना चाहिए, क्योंकि इससे पूंजीवादियों को लाभ कमाने का मौका मिल जायगा। अभी हाल ही में रजाकारों के निरकुंश सरदार रिजवी ने भी यही बात दुहराई है कि निजाम राजप्रमुखों की श्रेणी में नहीं बैठेंगे। क्रान्तिकारी कम्यूनिस्ट और प्रतिगामी रिजवी में क्या अन्तर है, यह पाठक समझेंगे।

कम्यूनिस्टों की गतिविधि देखते हुए एक बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि जब जब कांग्रेस ने कोई बड़ा कदम उठाया है कम्यूनिस्ट १९४२ से उसका विरोध करते आये हैं। लीग की पाकिस्तान की मांग का समर्थन उन्होंने ही किया था, सुभाष बाबू को गद्दार कहने वाले वे ही थे। सब रियासतों को संगठित करने की मांग करने वाले कम्यूनिस्ट आज हैदराबाद को स्वतन्त्र रहने पर जोर दे रहे हैं। इस समय उनका उद्देश्य केवल देश में किसी भी संगठित सरकार और व्यवस्था को छिन्न भिन्न करना है ताकि चीन की तरह यहां भी कम्यूनिस्टों को गृह युद्ध छेड़ने का मौका मिल जाय। कम्यूनिस्टों के सम्बन्ध में जो समाचार अन्य देशों से प्राप्त हुए हैं, उनके अनुसार कम्यूनिस्ट कभी भी देशद्रोह कर सकते हैं। इसलिए आवश्यकता यह है कि हम कम्यूनिस्टों से सावधान रहें यह ऐसा खतरा है जो कभी भी विकट रूप धारण कर सकता है।

कम्यूनिस्टों की भांति साम्प्रदायिक व्यक्ति भी देश के लिए एक बड़ा खतरा है। भारतवर्ष के विधानशास्त्रियों ने भारत को किसी भी सम्प्रदाय-विशेष का राष्ट्र स्वीकार नहीं किया। बिना किसी धर्म के भेदभाव के भारतवर्ष प्रत्येक भारतीय का है। इसलिए यहां किसी सम्प्रदाय की राजनैतिक रूप से सत्ता स्वीकार नहीं की जानी चाहिए। हम ऐसा करके समस्त भारतवर्ष को खण्डित कर चुके हैं, कल्पनातीत रोमहर्षक रक्तपात का दृश्य अपनी आंखों देख चुके हैं। लेकिन आज भी हम साम्प्रदायिकता के भूत को उतार नहीं सके हैं। केवल एक सम्प्रदाय की सन्तुष्टि के लिए उर्दू को प्रश्रय देने की चेष्टा की जा रही है, यद्यपि भारत संघ के वर्तमान प्रान्तों में से किसी एक में भी उर्दू का प्रचार नहीं है। विधान में किसी सम्प्रदाय को विशेष संरक्षण देने का सीधा सादा अर्थ यह है कि हम राजनैतिक दृष्टि से सम्प्रदायों को स्वीकार करते हैं। साम्प्रदायिकता एक पाप है और उसके साथ समझौता करके भारत की राष्ट्रीयता निम्न धरातल पर गिरती गई है। इतने कटु अनुभव उठाने के बाद भी हम उससे बच नहीं रहे, यह दुर्भाग्य की बात है। मुस्लिम साम्प्रदायिकता को सहन करने का परिणाम यह हुआ है कि पूर्वीय पंजाब में सिक्ख साम्प्रदायिकता सिर उठाने लगी है पंजाब में केवल गुरुमुखी को राजभाषा बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है; मन्त्रिमण्डल को भी सिक्ख हिन्दू के नाते विभक्त करने तथा विशेष पद सिक्खों को देने की मांग की जा रही है। कुछ एक स्थानों में जबर्दस्ती सिक्ख बनाने के भी उदाहरण मिले हैं फुलकियां रियासत का आधार भी आज सिक्ख साम्प्रदायिकता है। सिक्ख साम्प्रदायिकता की आवाज इतनी जोरदार अवश्य हो चुकी है कि कुछ क्षेत्रों में पंजाब के सिक्ख और हिन्दू पंजाब में विभक्त करने की सम्भावना प्रकट की जाने लगी है। सिक्खों में उठती हुई इस साम्प्रदायिकता को हम निकट भविष्य का एक खतरा समझ रहे हैं। किन्तु इसे दूर करने के लिए यह जरूरी है कि हम किसी भी रूप में साम्प्रदायिकता को स्वीकार न करें। मुसलमान, ईसाई और सिक्ख तथा हरिजन आदि किसी भी सम्प्रदाय या जाति को विशेष अधिकार या संरक्षण न दें। भारतवर्ष के विधान में भारत का प्रत्येक निवासी नागरिक और उसकी एक समान स्थिति होनी चाहिए।

कम्यूनिस्ट और साम्प्रदायिक दोनों व्यक्ति भारत के प्रति अनन्य निष्ठा नहीं रखते। वे देश की अपेक्षा किसी अन्य संस्था के प्रति अधिक श्रद्धा रखते हैं और ऐसा व्यक्ति किसी भी समय देश के लिए खतरनाक हो सकता है। इसलिए हम देश के अधिकारियों, नेताओं और जनता को इन दोनों खतरों से सावधान करना चाहते हैं।

तीनों मोर्चे

आन्तरिक खतरों पर इतना जोर देने का यह अर्थ कभी नहीं है कि हम हैदराबाद, काश्मीर और पाकिस्तान की समस्याओं के महत्व को कुछ कम करके दिखाना चाहते हैं। यथार्थ यह है कि तीनों समस्याएं आज भी उग्र हो रही हैं। हैदराबाद में रजाकार युद्ध की स्थिति पैदा कर रहे हैं, जनता पर उनके अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं, निजाम ने भारत के गवर्नर जनरल का निमन्त्रण तक ठुकरा दिया है। काश्मीर में भी आक्रमणकारी फिर नये आक्रमण कर रहे हैं। पाकिस्तान की सरकार एक ओर भारत संघ से समझौते कर रही है और दूसरी ओर वहां स्थित कम्पनियों के भारतीय हिस्सेदारों को डिविडेण्ड देने पर पाबन्दी लगा रही है। इससे प्रतीत होता है कि इन तीनों मोर्चों पर विरोधियों के हौसले अभी तक बढ़ रहे हैं। भारत सरकार दृढ़ता से सब का मुकाबला करने को उत्सुक है और काश्मीर के मोर्चे पर हमारी सेनाएं आगे बढ़ भी रही हैं। किन्तु हैदराबाद से आने वाले समाचारों से जनता का धैर्य टूट रहा है। इस लिए यह आवश्यक है कि इधर जल्दी प्रभावकारी कदम उठाया जाय और पाकिस्तान को भी सख्त कदम उठा कर उसका दिमाग ठिकाने किया जाय।

काश्मीर में स्वातंत्र्य-समारोह

इस सप्ताह जम्मू व काश्मीर में उत्तरदायी शासन स्थापित हो जाने की खुशी में जो स्वातन्त्र्य-समारोह मनाया गया, उसकी काफी धूम रही। भारत सरकार के अनेक मन्त्री भी इस समारोह में भाग लेने को नगर पहुँचे थे। परन्तु एक भीषण तूफान के कारण काश्मीर का हवाई अड्डा जलमग्न हो गया जिससे पं० नेहरू वहां यथा समय नहीं पहुंच सके। पीछे पहुंचने पर नेहरू जी का शानदार जलूस निकाला गया। डा० राजेन्द्रप्रसाद ने अपने सन्देश में कहा कि काश्मीर का प्रश्न भारत का प्रश्न है। नेहरू जी ने अपने श्रीनगर के भाषण में कहा है कि काश्मीर की समस्या केवल भारत की नहीं है, अपितु विश्व की है और इसके गलत हल से विश्व-शांति को खतरा उत्पन्न हो सकता है।

काश्मीर पर हमला करने वालों में फूट

'सिविल मिलिटरी गजट' के संवाददाता के अनुसार उड़ी क्षेत्र की ओर आक्रान्ताओं में बड़े पैमाने पर विद्रोह हो गया है। २०० आक्रान्ताओं ने सीमा पार करके भारतीय सेनाओं को आत्मसमर्पण कर दिया है। हाल में भारतीय सेनाओं ने जो विजय प्राप्त की है उससे आक्रान्ताओं की हिम्मत टूट गई है और इस समय वे सामान्यतया अपनी जान बचाते हुए अपने घरों को भाग रहे हैं।

पूर्वी पाकिस्तान में नई कांग्रेस

महासमिति के पाकिस्तान में कांग्रेस को भंग करने के निर्णय के परिणाम स्वरूप पूर्वी बंगाल में नई कांग्रेस संस्था बनाई जाएगी, जिसका नया झण्डा होगा, नई नीति, नया कार्यक्रम, एवं वह पाकिस्तान के प्रति वफादारी रखेगा।

पाकिस्तान का शाही बैंक

पाकिस्तान के गवर्नर जनरल मि० जिन्ना ने पाकिस्तान के शाही बैंक के निर्माण विषयक आदेश पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। यह बैंक १ जुलाई से कार्य प्रारम्भ कर देगा। इसकी अधिकृत पूंजी ३ करोड़ रु० है। यह सारी पूंजी शेयरों के रूप में जारी कर दी जाएगी। एक शेयर १००) का होगा, और कोई व्यक्ति ५०० से अधिक शेयर नहीं खरीद सकेगा ५१ फीसदी शेयर पाकिस्तान की सरकार खरीदेगी, शेष ४९ फीसदी बाजार में बेचे जायेंगे।

हैदराबाद युद्ध के पथ पर

हैदराबाद से प्राप्त नवीन समाचारों के अनुसार यह स्पष्ट हो गया है कि रियासत ने अब युद्ध-पथ पर अग्रसर होने के लिये अपना संगठन कर लिया है। भारत सरकार के उच्च अधिकारियों

की एक बैठक में रियासत की गम्भीर परिस्थिति पर विचार किया जा रहा है क्यों कि इससे भारत की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया है।

बीदर जिले के चोरटा और मुचालम नामक गांवों से समाचार मिला है कि रजाकारों ने २०० व्यक्तियों को कत्ल कर दिया है। उनकी लाशों को गिद्ध खा रहे हैं। आतंकित जनता बहुत बड़ी संख्या में भाग कर शोलापुर जिले में आ रही है।

पाकिस्तान का राष्ट्र गीत

पाकिस्तान के राष्ट्रगीत की रचना करने वाले व्यक्ति को पुरस्कार देने के लिये पाकिस्तान प्रधानमन्त्री को १० हजार रु० की राशि दी गई है।

कुमारी अमतुस्सलाम का अनशन त्याग

महात्मा गांधी की शिष्या कुमारी अमतुस्सलाम ने अपना अनशन १२ मई को त्याग दिया है। बहावलपुर के प्रधानमन्त्री ने आश्वासन दिया है कि रियासती अधिकारी अपहृत महिलाओं को छुड़ाने के कार्य में उनको पूरी मदद देंगे। कुमारी सलाम गत ३ मई से डेरा नवाबशाह में अनशन कर रही थीं।

भारत सरकार द्वारा उपराजधानी के निर्माण पर विचार

दिल्ली में अत्यधिक भीड़ को कम करने के उद्देश्य से एक उपराजधानी बनाने की बात भारत सरकार सोच रही है जिससे कि केन्द्रीय सरकार के कुछ भाग वहां भेजे जा सकें। इस कार्य के लिये बम्बई व मध्य भारत में ६ स्थान चुने गये हैं जिनकी भौगोलिक स्थिति का अध्ययन किया जा रहा है। साथ ही यह भी देखा जा रहा है कि वहां इमारतें, बिजली और पानी आदि की भी सुविधा है या नहीं।

निजाम के दिन लद गये !!!

१२ अप्रैल का दिन। गुलबर्गा जिले का एक गांव—आलन्द। उसमें इत्तिहादियों का नृशंस ताण्डव। परिणाम—पांच दिन तक सारा बाजार जलता रहा, १०० मकान आग की भेंट, २० आदमी मौत के शिकार, आभूषण व नकदी की हानि २४१००० रु० इसके अतिरिक्त हानि लगभग २० लाख।

—क्या यह केवल एक दिन की घटना है? निजामशाही में प्रत्येक सूर्योदय के साथ इसी घटना चक्र की पुनरावृत्ति होती है।

अत्याचार अत्याचारी को ही समाप्त कर देता है। लगता है कि अब निजाम के भी दिन लद गये हैं। 'एक्सप्रेस न्यूज' के संवाददाता ने खबर दी है कि भारत सरकार के अल्टीमेटम से निजाम इतना घबरा गया है कि भारत को छोड़कर चले जाने का निश्चय कर लिया है। ५ करोड़ पौण्ड (लगभग ७० करोड़ रुपये) के मूल्य के हीरे जवाहरात पहले ही विदेशों में छिपवाये जा चुके हैं। सर आगा खां के परामर्श से ५० लाख पौंड की विदेशी सिक्युरिटियां (सरकारी कागज) भी खरीद ली गई हैं। इस प्रकार धनराशि के बल पर विदेशों में रहकर निजाम एक बार फिर खिलाफत आन्दोलन चलाकर संसार भर के मुसलमानों का खलीफा बनने का अपना चिर-पोषित स्वप्न पूर्ण करने का प्रयत्न करेंगे—ऐसी सम्भावना है। यह स्मरणीय है कि मुसलमानों के अन्तिम खलीफा टर्की के भूतपूर्व सुलतान अब्दुर्रहमान की पुत्री शाहजादी नीलोफर से अपने युवराज का विवाह करके निजाम खलीफाओं के वंश से सम्बन्धित हो गये हैं।

भागने की पूरी तय्यारी कर ली गई है। अवशिष्ट बहुमूल्य सामान लोहे के बड़े बड़े सन्दूकों में बन्द कर तय्यार है। निजाम अपनी दो सौ बीबियों को भी अपने साथ ले जायेंगे।

शायद इसी तय्यारी में व्यस्त रहने के कारण निजाम ने गवर्नर-जनरल माउण्टबेटन का दिल्ली आने का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया।

चन्द्रनगर में सत्याग्रह आरम्भ

चन्द्रनगर से फारवर्ड ब्लाक के अध्यक्ष श्री राजेन घोष को, जिन्हें वहां से निर्वासित कर दिया गया था, सरकारी आदेश का उल्लंघन करके सत्याग्रह करने के परिणाम स्वरूप गिरफ्तार कर लिया गया है। श्री घोष ने गिरफ्तार होने से पहले घोषणा की थी कि यदि मुझे तीन दिन के अन्दर रिहा न किया गया तो मैं भूख हड़ताल कर दूंगा।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

★ समाचार चित्रावलि ★

सीमान्त गांधी ने पाकिस्तान में जनता पार्टी का पुन संगठन किया है।

हालैण्ड की रानी विलहेल्मिना सितम्बर में राजगद्दी छोड़ देंगी।

काश्मीर के स्वातन्त्र्य उत्सव में पं० नेहरू का भाषण।

फिलस्तीन से १५ मई को हटने को तैयार

ब्रिटेन के दो सेनापति—सर बाकर व मैकमिलन।

ब्रिटिश सेनाओं के हटते ही यहूदी राज्य की स्थापना की घोषणा करने वाले डा० गुरियन ।

अमेरिका से भारतीय राजदूत श्री० आसफअली अब भारत लौट आये।

अखिल भारतीय हाकी टूर्नामैंट में विजयी गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का दल।

आग-सान की हत्या के अपराध में ऊ सा को फांसी दे दी गई।

पूर्वी पंजाब की चिट्ठी

मंत्रिमण्डल की परेशानियां

★

× जून का जनता में आतंक
× सिख नेताओं की साम्प्रदायिकता
× प्रतिगामी फुलकियां संघ
× प्रांतीय लिपि व भाषा की समस्या
× अब भी उर्दू जारी

जून का जिन

इन दिनों पूर्वी पंजाब में जून का भूत जनता के दिमाग पर छाया हुआ है। जून में अंग्रेज जा रहे हैं, मोंटबेटन जा रहे हैं, १५ अगस्त ४७ को जाते हुए अंग्रेज हाकिमों ने पंजाब के बड़े २ नगरों में तबाही बरबादी पैदा कराई थी, अब जून ४८ को सदा के लिये जाते हुए पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में जंग करा कर जायेंगे। इस आशंका से सीमाप्रान्त के बटाला, अमृतसर शहर फिर से खाली हो रहे हैं। लोग सामान बाल बच्चे और औरतों को बाहर भेज रहे हैं। विशेषतया इस बार बटाला में भी भय छाया हुआ है। जालंधर में कारोबारी आदमी काम शुरू करने में संकोच करते हैं। पिछले महीनों में कई बार और इस बार जून ४८ में लड़ाई की संभावना ने जनता को भयभीत और अशिक्षित देहातियों को लूट मार के लिये दिलेर कर दिया है। खास कर गुरदासपुर के देहातों में बहुत ज्यादा अशान्ति है।

हमारी राय में इस का एक उपाय यह है कि सरकार इन जिलों में देहातों में पुलीस और फौज का विशेष प्रबन्ध करे। सरकार ने पूर्वी पंजाब की राजधानी मैदान के शहरों जालंधर, अमृतसर और लुधियाना में से किसी एक को न बना कर भारी गलती की है और साधारण जनता में स्थिर आतंक और भय को पैदा करने वाला वातावरण पैदा कर दिया है और पूर्वी पंजाब के कारोबार तथा सार्वजनिक जीवन को भारी धक्का पहुंचाया है। भारतीय सरकार तथा पूर्वी पंजाब सरकार आए दिन पैदा होने वाले इस भय को दूर करना चाहते हैं तो उन्हें पूर्वी पंजाब की राजधानी पहाड़ों में न बना कर पंजाब के मैदानों के किसी शहर में बनानी चाहिये। जून ४८ में अंग्रेजों के बाद फिर उथल पुथल होने की सम्भावना को कम करने के लिये पूर्वी पंजाब के मंत्रिमंडल को इन महीनों में शिमला के शीतल वातावरण को छोड़ कर गुरदासपुर, फिरोजपुर, अमृतसर, अबोहर आदि के दौरे करने चाहिएं। देखें, मंत्रिमंडल ऐश आराम की मनोवृत्ति को प्रधानता देता है, या लोक सेवा को।

पूर्वी पंजाब का मंत्रिमंडल

पश्चिमी बंगाल और सिंध के मंत्रिमंडल की भांति ही पूर्वी पंजाब का मंत्रिमंडल दलबन्दी की कीचड़ में उलझा हुआ है प्रधान मंत्री डा० गोपीचन्द भार्गव का अधिकांश समय इन गुत्थियों को सुलझाने में लगता है। प्रान्त के प्रबन्ध की ओर ध्यान देने की फुर्सत नहीं मिलती। हरेक पार्टी केबिनेट में अपनी प्रधानता लाने की कोशिश में है। भीमसेन सच्चर कांग्रेस पार्टी के होते हुए भी इस समय कांग्रेसी प्राइमिनिस्टर के रास्ते में अड़चनें पैदा करने में कोई कसर नहीं कर रहे। इसी प्रकार से सिक्ख मन्त्रियों के खिलाफ

मास्टर ताराशिंह और उनकी अकाली पत्रिका आंदोलन करके कांग्रेस के मंत्रिमंडल को कमजोर कर रहे हैं। प्रान्त के हित की दृष्टि से मंत्रिमंडल के मन्त्रियों की संख्या पर्याप्त है परन्तु सब पार्टियों को खुश करने के लिये मन्त्रिमंडल की संख्या ११-१२ तक करने की अफवाह है। १३ जिलों के लिये ११-१२ मंत्रियों का होना जनता के साथ मजाक है। मंत्रिमंडल को चाहिए कि वह साधारण जनता के साथ प्रत्यक्ष संपर्क बढ़ाने के लिये पंजाब के देहातों का दौरा करें। तभी वह अपने प्रतिस्पर्धी दलों के विरोध को शान्त कर सकेंगे। अखबारों में स्टेटमेन्ट छपवाने से या आए दिन

पंजाब के प्रधान मन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव

दिल्ली में कांग्रेस के हाई कमाण्ड की शरण लेने से पूर्वी पंजाब में देर तक काम नहीं हो सकता। इस समय पंजाब के देहातों, कस्बों तथा शहरों में पुराने ढर्रे के अफसर पुरानी चाल को ही चालू कर रहे हैं। उनकी मनोवृत्ति को बदले बिना मन्त्रिमंडल कांग्रेस के कार्यक्रम को कामयाब नहीं कर सकता। इसके लिये मन्त्रिमंडल को चाहिए कि गैर सरकारी गैर कांग्रेसी लोगों का भी सहयोग ले।

पूर्वी पंजाब की रियासतें

पूर्वी पंजाब की पहाड़ी रियासतें सदियों से पृथक् रूप में हैं। उनका संगठन हिमाचल प्रदेश के रूप में किया गया है। इससे पंजाब के पहाड़ी सीमाप्रान्त संगठित हो कर पूर्वी पंजाब को विदेशियों के आक्रमण से बचाने में काफी सहायक होंगे परन्तु फुलकियां रियासतों का संगठन पूर्वी पंजाब में नई समस्याएं पैदा करेगा। प्रथम तो इस संगठन का आधार सिक्ख साम्प्रदायिकता है। दूसरा यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह वह रियासतें हैं जिनके राजा महा-

विरोधी दल के नेता श्री भीमसेन सच्चर

राजाओं ने अंग्रेजों के साथ मिल कर अपनी सत्ता को कायम रखने के लिये महाराजा रणजीतसिंह का बल कम करने में विदेशियों को सहयोग दिया है। कपूर्थला के महाराजा को छोड़ कर शेष रियासतें ऐतिहासिक दृष्टि से अंग्रेजों के मित्र और पंजाबी महाराजा के शत्रु थे। यही नहीं, इन रियासतों के राजा महाराजाओं ने सन् ५७ के स्वतन्त्रता युद्ध में अंग्रेजों के साथ मिल कर देश द्रोह किया था। इन रियासतों के महाराजा राजा १५०,२०० साल में ही बने थे। पंजाब का भला इसी में था कि इन रियासतों को पूर्वी पंजाब में मिला दिया जाता तो सिक्ख साम्प्रदायिकता का बोझ कम हो जाता। जहां तक हमें दिखाई देता है, यह फुलकियां रियासतों का यूनियन पंजाब के लिये हानिकर है। विशेषकर इसे सिक्ख रियासतों का रूप देना खालसा पाकिस्तान को जन्म देने की भूमिका है। इस बुराई को रोकने का उपाय यह है कि इन रियासतों में कांग्रेस कमेटियों और प्रजामण्डल के संगठन को फैलाया जाय और दृढ़ किया जाय।

पंजाब की प्रान्तीय लिपि और प्रान्तीय भाषा

महाराजा रणजीतसिंह का पंजाब...

में स्वराज्य स्थापित करने के बाद पंजाबी लिपि और पंजाबी भाषा को पंजाब की सरकारी भाषा बनाने का अवसर नहीं मिला। परिणामतः पंजाब उर्दू फारसी की गुलामी से मुक्त नहीं हो सका। आज भी पूर्वी पंजाब सरकार वही गलती कर रही है। अभी तक इस दिशा में पंजाब की जनता और सरकार उर्दू को ही अपना रही है। जनता के प्रतिनिधि 'मिलाप' 'प्रताप' 'वीर भारत' 'जय हिन्द' 'हिन्द समाचार' उर्दू में प्रकाशित हो कर उर्दू को पंजाब की प्रान्तीय भाषा घोषित कर रहे हैं। सरकारी दफ्तरों और कचहरियों में भी अभी तक हिन्दी का प्रवेश नहीं हुआ। पंजाब की आर्य समाजों, सनातनधर्म सभाओं हिन्दू सभाओं और सिंह सभाओं को चाहिए कि पूर्वी पंजाब से उर्दू भाषा के बहिष्कार का आंदोलन उठाएं और हिन्दी गुरुमुखी पंजाबी को उचित स्थान दिलाएं।

हैजे से बचिये

बीमारी की पहचान

(१) पेट में दर्द होना, पतले दस्त और दस्त का रंग चावल के मांड समान होना। (३) प्यास ज्यादा लगना। (४) पेट और पैरों में एंठन होना। (५) पेशाब बन्द हो जाना।

बीमारी फैलने का तरीका

(१) मेला या और किसी जगह से जहां हैजा हो वहां से। (२) दूषित (गन्दा) पानी पीने से या कूओं के पास नहाने और कपड़ा धोने से। (३) गन्दा भोजन या मिठाई जिस पर मक्खी बैठी हो या गर्दा पड़ा हो उसके खाने से। (४) हर किस्म की गन्दगी से।

बीमारी से बचने का उपाय

(१) गली व घरों को साफ सुथरा रखिये। जब तक आप गन्दगी दूर नहीं करेंगे बीमारी आपका पीछा नहीं छोड़ेगी। (२) खाने पीने की चीजों को मक्खी और धूल से बचा कर रखिये। (३) बाजार की खुली हुई मिठाई और सड़े गले फल न खाइये। (४) शीघ्र से शीघ्र आप लोग हैजे का टीका लगवाएं। बीमारी के समय अपने को बचाने का यह एक मात्र प्रधान उपाय है।

बीमारी की चिकित्सा व सफाई

(१) मरीज को अपने से अलग रखिये। अगर हो सके तो छूतछात हस्पताल में भेज दीजिये। (२) किसी बर्तन में चूना या राख रख कर उसी में दस्त या कै कराइये। (३) दस्त या कै को जला देना या जमीन में गाड़ देना चाहिये। (४) बीमारी के कमरे में चूना छिड़कवाइये। (५) बीमार को 'कालरा-मिक्श्चर' या कालरा की सफेद गोलियां उचित तरीके से खिलाइये।

कुछ विचारणीय प्रश्न

[श्रद्धेय भगवानदास जी]

श्रद्धेय भगवानदास जी भारत के प्रमुख विचारकों में हैं। वर्तमान समस्याओं पर एक लेख में उन्होंने कुछ क्रान्तिकारी और कुछ उग्र विचार प्रकट किए हैं। उन पर पाठक विचार कर सकें, इसलिए उनके कुछ अंश 'संसार' से उद्धृत करके यहां दिये जाते हैं। इन विचारों से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

लेखक

आजके दिन समाचार पत्रों में कई-कई महीनों से देख पड़ता है कि केन्द्र के या अमुक प्रान्त के अमुक मंत्री ने यों पुकारा और यों ललकारा कि दो, नहीं तो तीन, नहीं तो छः महीने में तो निश्चयेन जमींदारी प्रथा का अन्त और समस्त जमींदारों का सफाया कर दिया जायगा। एक बेर संयुक्त प्रान्त की धारा व्यवस्थापक सभा में एक जमींदार सदस्य ने जमींदारों को मिटाने वाले मंत्री महोदय का आह्वान किया—'क्यों, महोदय! जमींदार पर ही बहादुरी खर्च करोगे, पूंजीपतियों पर कुछ भी नहीं?', तब उन्होंने श्रौघट में पड़कर विवश होकर कह तो दिया—'हां, हां, जमींदारों के बाद उनकी भी बारी आवेगी,' पर उधर फिर ध्यान भी नहीं दिया। जमींदारी के बारे में भी मन्त्री महोदयों ने धमकियां तो बहुत दीं, पर करते कुछ बना नहीं। इन धमकियों का भी विशेष कारण यह है कि न केन्द्र के, न संयुक्तप्रान्त के किसी मंत्री सज्जन के पास एक चप्पा, एक बालिश्त भर भी जमीन है। बिहार की कथा दूसरी है। वहां सभी मन्त्रियों के पास कम या बेश जमींदारी है और सुनने में आया है कि इधर जब जमींदारी पर आक्रमण होने की तैयारी के कारण उसका भाव गिर गया तो इन सज्जनों ने जल्दी जल्दी बहुत सी और जमींदारी खरीद भी ली है और यह खरीदना सर्वथा वैध, कानूनन बिल्कुल जायज है। अस्तु

× × ×

भारत में इस समय सैकड़ों ऐसे विश्व-युद्धोत्पादित बहुकोटिपति ('वार-मल्टिमिलियोनर्स') हैं जिन्होंने पशुओं की भांति मुर्दों और मरतों का भी मांस नोच-नोचकर अपना उदर भरा है, ब्रिटिश सरकार को भी ठगा है, अन्तरात्मा को भी, और अपने देशी भाई-बहिन बच्चों का खून भी चूसा है। ये दयालु करुणा-वरुणालय सज्जन गवर्नमेंट को प्रतिकोटि सात पर सिफ्ले साठ 'इंकमटैक्स'— साथ कर देते हैं, अपने लिए केवल सात लाख बचा पाते हैं—ऐसा कई सज्जनों ने मेरे घर पर मुझ से स्वयं अङ्गीकार किया। जब मैंने उनसे पूछा कि 'तब आप लोग अपने हजारों कमकरों और उनके अफसरों पर ही इस तिरानवे लाख में से पचास-साठ नहीं तो पचीस तीस लाख क्यों नहीं खर्च डालते? उनकी तनख्वाहें क्यों नहीं दूनी चौगुनी कर देते? वे भी आपको दुआ देंगे और बड़ी प्रसन्नता से दूनी मेहनत से दूना काम करेंगे, दूना माल पैदा करेंगे और आपके 'टैक्स' की मात्रा भी कम हो जायगी।'

× × ×

गवर्नमेंटी मन्त्रियों व अफसरों का जारी काम यह है कि बदनामी पूंजी-पतियों की होती है, अक्सर दिन मिलों में हड़ताल होती है, मन्त्री सज्जनों के हुक्म से हड़तालियों पर लाठी भी और गोली भी बरसाई जाती है और तिरानवे लाख इन्हीं मन्त्रियों और अफसरों में बट जाता है—रोज नये सीगे और नये सरकारी नौकर बढ़ाये जाते हैं, और उनकी तनख्वाहें भी रोज बढ़ाई जाती हैं। मन्त्री महोदय चार चार, पांच पांच-दो दो हजार तनख्वाह पाते हैं, महलों में रहते हैं, हर साल नयी मोटरें, दस दस पन्द्रह पन्द्रह बीस बीस हजार रुपये दाम की खरीदी जाती हैं, उमदा से उमदा कालीन मेज, कांच, कुरसी, पर्दों से अपने महल आरास्ता करते हैं—गवर्नर साहब को इससे भी अधिक वेतन और भोग-विलास की सामग्री, एवं आला अफसर साहबान, कमिश्नरान व कलक्टरान व पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टान—और इस पर तुर्रा यह कि जिस भले आदमी का मकान उनको अच्छा अपने रहने काबिल जंचता है, उसमें से उसके मालिक को, 'डी० आई० आर०' के बहाने, सरकारी अशुद्ध जरूरत बतलाकर उसके बहू बच्चों समेत बाहर निकाल फेंकते हैं, खुद उसमें जा बैठते हैं।

× × ×

काश्तकारों की हालत सुनिये। समझे थे कि जमींदार कम्बख्त मरें, और हमारा रिश्ता सरकार बहादुर से साक्षात् हो जाय तो हम मौज करें। होता क्या है?—जमींदार तो बकाया लगान के लिए काश्तकार को या उसके हल-बैल छानी छप्पर आसामी मूसर को छू नहीं सकता। यामो अदालत में वकील मुख्तार साहब और उनके मुहर्रिर साहब और कचहरी के हाकिम साहब और उनके सरिश्तेदार साहब और दीगर उम्माल साहब और चपरासी साहब की खुशामद भी करो, बक्न-न-बक्न द०-बीस रुपये रिश्वत के भी दो, घर द्वार का रोजगारी काम सब छोड़ कर, उसका कसीर नुकसान उठाकर रोज सतुआ बांध कर जाड़ा-गर्मी बरसात में कचहरी में हाजिर हो, हाकिम साहब दौरे पर हों तो उनके कम्पू की खोज में गांव गांव भटकते फिरो, इक्का गाड़ी का चौगुना भाड़ा और वकील मुख्तार साहब का चौगुना मेहनताना दो, और तिस पर यह कि आज इस पड़ाव पर मुकदमा पेश नहीं हो सकता, दूसरे पड़ाव पर दूसरे दिन आओ!

× × ×

अब सरकार और काश्तकार के साक्षात् सम्बन्ध की कथा सुनिये—तहसील का चपरासी वहां खेतिहर के पास पहुंचा, लगान वसूल करने को, और खेतिहर साहब ने जरा भी चीं-चपड़ की, वहीं मार उसकी हड्डी पसली सीधी कर दी, घर में जो कुछ मिला गल्ला, गुड़, नकद, जोरू के जिस्म पर के गहने, यह सब उठा ले गये, कुछ आप रख लिया, कुछ तहसील भेज दिया और इसके ऊपर उसी खेतिहर के माथे हलुआ पूरी भी कम से कम एक दिन तो खाया, नहीं तो दो तीन दिन; उसके पास कुछ नहीं बचा था तो गांव के बनिये हलवाई से कर्ज दिलवाकर!

जिन सूबों मे जमींदारी नहीं है, जैसे बम्बई और मद्रास, वहां के किसानों की हालत जमींदार वाले प्रांतों से बहुत बदतर है — यह मेरी आंखों देखी बात है — बीस पचीस वर्ष पहले मैं बम्बई और मद्रास प्रान्तों में घूमा हूं, वहां के काश्तकारों से बातचीत की है — सबसे यही सिद्ध हुआ जो ऊपर कहा। इधर बीस पचीस वर्ष में हाल बदला हो तो मैं नहीं जानता हूं, पर जहां तक सुनता हूं नहीं ही बदला।

× × ×

आज कल सभी लोग, कांग्रेसी भी, सोशलिस्ट भी, कम्युनिस्ट भी, जनता भी, 'डेमोक्रेसी', 'जन तन्त्र', 'जनतन्त्र' चिल्ला रही है, पर यह नहीं देखती कि यह रीति शासन की, पुरानी एक राजा और कई मन्त्री अथवा एक गवर्नर और चार पांच मन्त्री के प्रकार से सौगुना अधिक खर्चीली है। एक एक प्रांत में दस-दस पन्द्रह पन्द्रह मन्त्री उनके निजी और सरकारी उप मन्त्री और एक एक के साथ पचास पचास लेखक (क्लर्क) प्रत्येक दिन की प्रत्येक प्रांत की धर्म-परिषद् की बैठक का दस दस पन्द्रह पन्द्रह सहस्र रुपयों का व्यय, प्रत्येक प्रांत की धर्म परिषदों के लिए प्रतिनिधियों के चुनाव के लिए पन्द्रह-पन्द्रह बीस बीस लाख का व्यय, निर्वाचकों के समय पैसे, शराब का तथा उम्मीदवारों का महा अपव्यय, घूसखोरी, मार-पीट, शलाकाओं (वोटों) की मंजूषाओं का उठा ले जाना, उम्मीदवारों तथा वोट दहिन्दों की हत्या तक हो जाना प्रभृति — यह सब 'डेमोक्रेसी' की देन है। पर यह भी है कि राजाओं उनके मन्त्रियों तथा सरकारी अफसरों, विशेषकर पुलिस वालों ने, ब्रिटिश गवर्नरी राज्य में महा उपद्रव और प्रजा का घोर उत्पीड़न मचा रखा था। 'न यों चैन, न त्यों चैन'। परमात्मा की प्रकृति माया ही ऐसी है।

अब भारतीय महिलाएं अबला नहीं, वीरांगना का रूप धारण कर रही हैं। अमृतसर के एक समारोह का चित्र।

क्या मुझ से विवाह करोगी ?

[रामकुमार अग्रवाल]

किसी महिला से यह कहना 'क्या तुम मुझ से विवाह करोगी ?' कोई सरल कार्य नहीं है। और फिर भी यह कहने के अनेक तरीके हैं। आपने भिन्न भिन्न सिनेमाओं में देखा होगा कि किस प्रकार नायक अपनी नायिका चुनने के लिये विचित्र विचित्र उपाय रचता है। कभी वह अपनी मन चहेती महिला से रास्ता चलते हुये टकरा जाता है और 'क्षमा कीजिए' कह कर जान पहचान बढ़ाता है। कभी भूले से दुकानदार के यहां से अपने माल के बदले अपनी नायिका का माल उठा लाता है और फिर उस माल को उनके घर देने जाता है। इस प्रकार उसे उनकी गली के चक्कर लगाने का सुन्दर अवसर मिल जाता है। इसी प्रकार कहानियों के कथानक अनेक उदाहरणों से भरे पड़े हैं। पर मैं आपको यह बताने नहीं जा रहा हूं कि आप किस प्रकार अपनी भावी पत्नी के पाने के उपाय कीजिए—यदि आप अभी क्वारे हों, मैं तो आपको यह बताऊंगा कि किस प्रकार दो ऐतिहासिक प्रसिद्ध महापुरुषों ने अपनी मन चहेती महिलाओं से यह कहने का साहस किया 'क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ?'

मार्क ट्वेन अंग्रेजी का प्रसिद्ध उपन्यासकार हो गया है। एक बार जब मार्क ट्वेन फिलिस्तीन गया हुआ था तो वहां एक लैंगडान नामक युवक से उसकी भेंट हो गयी। जब वह उसके घर गया तो उसकी दृष्टि टंगे हुये एक चित्र पर पड़ी। चित्र सुन्दर महिला का था, जिसका नाम ओलीविया लैंगडान था। आंख मिलते प्रेम होते तो बहुत देखा गया है। लेकिन यहां तो चित्र पर दृष्टि पड़ते ही प्रेम हो गया। फिर क्या था। अमरीका लौटने के बाद मार्क ट्वेन ने अपने जीवन का एक ध्येय बना लिया कि वह किसी प्रकार ओलीविया से विवाह अवश्य करेगा। लेकिन वह केवल एक गरीब सम्वाददाता था। फिर वह यह कैसे साहस करता कि वह ओलीविया से कहे—'क्या तुम मुझ से विवाह करोगी ?'

किसी प्रकार उसने ऐसा जाल रचा कि उसे धनी लैंगडान परिवार के आलीशान भवन से एक निमन्त्रण आ गया कि वह वहां आकर एक सप्ताह रह सकता है। यहां आकर उसने ओलीविया को उससे कहीं अधिक सुन्दर पाया जैसा कि उसने अपने स्वप्निल संसार में सोच रक्खा था। एक सप्ताह भी बीत गया, लेकिन मार्क ट्वेन को कोई उपाय न सूझा। आखीरी दिन उसने एक तरकीब सोच निकाली। उसने गाड़ीवान को कुछ लालच दे कर यह तय कर लिया कि वह गाड़ी की गद्दी इस तरह से लगाये कि घोड़े के चलने से वह गद्दी पर से उछल कर सड़क पर गिर पड़े। यह कह कर उसने अपना सामान बांधा और लैंगडान परिवार से सहर्ष विदा ली। गाड़ी पर चढ़ते ही कोचवान ने घोड़े के दो चाबुक लगाये जिससे वे इतने उछले कूदे कि मार्क ट्वेन सड़क पर नजर आये और उनका कराहना प्रारम्भ हो गया। निस्सन्देह मिस्टर लैंगडान ने इस बात पर जोर दिया कि ट्वेन को घर वापस ले चला जाय। फिर क्या था। शीघ्र ही डाक्टर आया लेकिन देखने पर पता चला कि इनके कोई विशेष चोट नहीं लगी है। फिर भी मार्क ट्वेन को पन्द्रह दिन रहने का अच्छा अवसर मिल गया और उसकी थोड़ी बहुत चोट की अच्छी तरह देखभाल की जाने लगी—किसके द्वारा ? ओलीविया द्वारा

जब चोट का बहाना अधिक न चल सका तो मार्क ट्वेन ने थोड़ा बहुत चलने की इच्छा प्रकट की। उसने ओलीविया को बुलाया और प्रार्थना की कि वह उसे जूता पहनाने में सहायता करे। ज्यों ही ओलीविया डोरी की दूसरी गांठ बांध रही थी, ट्वेन ने मुस्करा कर बड़ा धीरे से कहा—'ओलीविया, मुझ से विवाह करोगी ?'

और आप ही सोचिये कि उत्तर में क्या मिला—

एक मीठा सा 'हां।'

जर्मन वैज्ञानिक डा० हेनरिच ने व्यापार में काफी धन एकत्र कर लिया था, लेकिन फिर भी ४६ वर्ष की अवस्था तक उसने विवाह नहीं किया। व्यापार में काफी धन एकत्र करने के बाद उसे इतिहास की प्राचीन वस्तुओं से बड़ा प्रेम हो गया। उसकी सबसे अधिक रुचि महान् कवि होमर की ओर थी। इसी कारण उसने होमर के काव्य में लिखे हुए सभी प्राचीन ऐतिहासिक शहरों का पारायण किया। ट्राय के खण्डहरों की खोज के कारण संसार में डा० हेनरिच की विख्याति हो गई।

इस प्रकार जब वह अपनी प्रसिद्धि की चरम सीमा पर था तो एक दिन वह "यंग लेडीज एकेडमी" ऐथेन्स गया। इतने बड़े महा पुरुष को देख कर प्रिंसिपल के हर्ष का पारावार न रहा और स्वागत हेतु उसने पूछा "मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं।"

डा० हेनरिच ने उत्तर दिया कि मैं आपके कालेज की उस महिला से विवाह करना चाहता हूं जो होमर के महान् काव्य "ओडीसी" को सबसे पहले कंठस्थ करके सुना सके। यद्यपि कार्य बहुत ही कठिन था फिर भी कालेज की काफी महिलाओं ने प्रतियोगिता में भाग लेना निश्चय किया। होने लगी होमर के महान् काव्य की बड़ी जोर से पढ़ाई और केवल चार दिन में ही एक महिला ने घोषणा की कि महाकाव्य सुन लिया जाय। पूरे दो घंटे में उसने काव्य की एक एक पंक्ति सुना दी और उसका विवाह डा० हेनरिच से हो गया।

वह दिन भी देखना है जब कोई हिन्दी साहित्यप्रेमी भी रामायण कंठस्थ सुनने के उपरान्त विवाह करना निश्चित करे।

इस सप्ताह के समाचार

—जम्मू में जिन स्त्रियों के शरणार्थी कैम्प में जुंओं की समस्या जब असह्य हो गई तब डी डी टी को साबुन के घोल में डाल कर ६०० स्त्रियों के सिर धोये गये। इससे आशातीत परिणाम निकले। अब ६०० और स्त्रियों पर भी यही परीक्षण किया जायगा।

—लीड्स (यार्कशायर) की अदालत ने एक मुसलमान ग्रेजुएट को ब्रिटेन में एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने के अभियोग में एक साल की सजा दे दी। उसने अदालत में यह सफाई दी कि इस्लाम में एक साथ चार विवाह जायज हैं।

—भारत सरकार के मन्त्री श्री गाडगिल ने, जिनकी पत्नी का देहान्त एक मास पूर्व हुआ था, ४४ वर्षीय एक डाक्टरनी से विवाह कर लिया है।

—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की पुत्री और श्री प्रेमचन्द्र की पुत्रवधू सुधाकुमारी मध्य प्रान्तीय असेम्बली की सदस्या चुनी गई है। वे अपनी माता के निधन से रिक्त स्थान पर खड़ी हुई थीं।

—महात्मा गांधी की शिष्या कुमारी अमतुस्सलाम बहावलपुर में पिछले १० दिनों से अनशन कर रही हैं। इसका कारण यह है कि वहां के अधिकारी अपहृत हिन्दू व सिख महिलाओं को वापस लाने में सहयोग देने की बजाय लगातार बाधाएं उपस्थित कर रहे हैं।

—दिल्ली में १००० शरणार्थी महिलाओं को विभिन्न केन्द्रों में कढ़ाई, सिलाई आदि का काम मिल गया है।

—न्यूयार्क के एक समाचार के अनुसार ५२ वर्षीय श्रीमती स्वायर १२ वर्ष तक लगातार सोने के बाद उठी हैं। उनकी एक नींद में दुनियां का कायापलट हो गया है।

—ब्रिटेन में लार्डसभा के विधान में संशोधन हो जाने के कारण अब स्त्रियों को भी लार्ड बनाया जा सकेगा।

चरम सीमा पर मत जाइये

[श्री सत्यभक्त]

किसी भी कार्य को करने के लिए जिन कारणों की आवश्यकता है उसकी एक मर्यादा होती है जिससे कार्य ठीक ढंग से होता है। वृक्षों को पानी भी चाहिये और गर्मी भी चाहिए। पानी अधिक होगा तो वृक्ष सड़ जायंगे; और गर्मी अधिक होगी तो जल जायंगे या सूख जायंगे। रोटी अधिक आग से जल जायगी, कम से कच्ची रहेगी। जरूरत से अधिक खाने से आदमी बीमार होगा जरूरत से कम खाने से निर्बल होगा। अतिसाम्य अथवा अतिवैषम्य दोनों ही घातक हैं। अधिक स्वतंत्रता उच्छृंखलता बनकर नाशक होजाती है, अधिक बंधन जड़ता का रूप धारण कर समाज की मौत कर देते हैं या विस्फोट से सर्वनाश कर देते हैं।

किसी को अति कहना और किसीको कम कहना इसका कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता। एक मात्र एक के लिए अति हो सकती है दूसरे के लिए अति नहीं हो सकती, एक समय अति हो सकती है, दूसरे समय नहीं हो सकती, इसलिए निरतिवाद में हमें फल, अफल, सम्भव असम्भव का विवेक रहना आवश्यक है। यह विवेक न हो तो अच्छे से अच्छे सिद्धांत भी घातक सिद्ध हो सकते हैं। मध्यमार्ग समन्वय या निरतिवाद की आवश्यकता आजकल सभी क्षेत्रों और विशेषतया आर्थिक क्षेत्र में है।

आर्थिक क्षेत्र में आजकल दो वाद हैं — एक समाजवाद और दूसरा पूंजीवाद। समाजवाद में सम्पत्ति मूलरूप में समाज की होती है, व्यक्ति को अपने परिश्रम के अनुसार धन मिलता है। वह धन के बल पर धन पैदा नहीं कर सकता। पूंजीवाद में मनुष्य पूंजी लगा कर ब्याज और नफा के नाम पर बिना परिश्रम के ही काफी अर्थोपार्जन कर सकता है। इस में सन्देह नहीं कि समाजवाद ही न्यायोचित है। मनुष्य की आदम अवस्था में एक तरह का समाजवाद ही था। पर ज्यों ज्यों समाज का विकास होता गया त्यों त्यों समाज की आर्थिक व्यवस्था भी जटिल होती गयी। इस अवस्था में पूंजीवाद का रोकना असम्भव था। धर्मों ने परिग्रह को पाप बता कर तथा दान की महिमा दिखाकर इस का विषापहरण करना चाहा, पर इस मार्ग से सफलता इतनी कम मिली कि वह आज पर्याप्त नहीं कही जा सकती। अब पूंजीवाद अपनी चरम सीमा पर आ गया है और समाज में जो अव्यवस्था फैली है, उसका उपाय अब केवल दान आदि से नहीं हो सकता। इसलिए अब तो समाज की नई व्यवस्था करके ही लाखों के साथ न्याय किया जा सकता है।

आज जिनके पास पूंजी है और जो उससे कमाई करते हैं, उनको गाली देने की या उन्हें विशेष पापी मानने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि यह दोष सभी में पाया जाता है। गरीब आदमी पूंजीपति भले ही न हो, पर पूंजी वादी वह भी है। अवसर मिलते ही अपनी छोटी सी पूंजी से शोषण करना चाहता है। इसलिए पूंजीवाद के लिए किसी को दोषी मानना ठीक नहीं। हमें उस व्यवस्था में ही सुधार करना चाहिए, जिस से पूंजी- और गरीब का भेद इतना न बढ़े कि एक अति संग्रह से पतित हो जाय और दूसरा भूखों मर जाय या कंगालियत से मनुष्यता खो बैठे।

अब मशीनों के आने से पूंजीवाद बहुत व्यापक हो गया है इसलिए विषमता भी खूब व्यापक हो गई है और उसकी मात्रा भी खूब बढ़ गई है। इस लिए कुछ लोग यह सोचते हैं कि अगर इन मशीनों को हटा दिया जाय, कम से कम बड़ी बड़ी मशीनों को हटा दिया जाय तो पूंजीवाद का पाप हट सकता है या काफी घट सकता है। पर न्याय की दृष्टि से न तो यह उचित है न मानव स्वभाव की दृष्टि से यह संभव है।

न्याय यह है कि किसी चीज के दुरुपयोग को रोकने के लिए जितने संभव उपाय हैं, वे पहले कर लिए जायें, फिर भी अगर उसका दुरुपयोग न रुके तब उसे नष्ट किया जाय। मिलमशीनों के दुरुपयोग को रोकने के लिए महात्मा कार्लमार्क्स ने समाजवाद का उपाय व्यवस्थित रूप में वैज्ञानिक तरीके से खोज निकाला है। जिसका सफल प्रयोग भी हो चुका है, पहले उसकी आजमाइश किए बिना मिलमशीनों को मृत्युदण्ड देना ठीक नहीं। पशुओं के मस्तिष्क से मनुष्य के मस्तिष्क अधिक उन्नत हैं इसलिए उसमें चालाकी बदमाशी आदि भी पशुओं की अपेक्षा अधिक है। आज कल जो भयंकर युद्ध मनुष्य करता है पशु कभी नहीं कर सकते, तब क्या इसलिए मनुष्य को मिटा देना चाहिए? या मनुष्य के मस्तिष्क को पशुओं के समान बना देना चाहिए। यदि शान्ति के लिए मनुष्य के मस्तिष्क को पशुओं के समान बनाना अन्याय है तो, मिलमशीनों की जगह चर्खा भी अन्याय है, वैज्ञानिक युग को आदम युग में परिणत करना भी अन्याय है।

यह बात मानवस्वभाव के भी विपरीत है। मानव को जो ऋद्धियां सिद्धियां मिली हैं, वह मानव अपने वश कभी न छूटेगा। वह छापेखानों को बन्द कर हस्तलिखित पुस्तकें और अखबार निकालने लगे, मिल का कपड़ा बन्द कर हाथ का काम में लेने लगे। लोहे और पीतल की कलमें व फाउण्टेनपेन छोड़ कर बरू से लिखने लगे, मशीन की घड़ियें छोड़ कर रेत घड़ी, जल घड़ी धूप घड़ी आदि का प्रयोग करने लगे यह नहीं हो सकता।

अगर किसी ने अपने व्यक्तित्व की या सन्तपन की कुछ छाप मान कर, या लोगों के दिल में घुसे हुए पुराणपंथ या कालमोह को उभाड़ कर थोड़ी देर के लिए यह सब कर भी लिया, तब भी वह एक तरह के व्यर्थ धर्माडम्बर का रूप तो ले लेगा, पर आर्थिक क्षेत्र में कोई जगह न बना सकेगा और अगर किसी देश ने आर्थिक क्षेत्र में भी ऐसा मशीनों का बहिष्कार कर दिया तो इसका अर्थ यही होगा कि इस देश ने अपनी लाश पूंजीवादी व समाजवादी देशों के सामने चींथने को छोड़ दी है। आर्थिक दृष्टि से वह देश गुलाम कंगाल या दूसरों का शिकार हो जायगा।

मिलमशीनों आदि से पैदा होने वाली आर्थिक विषमता बेकारी आदि का एक इलाज समाजवाद या साम्यवाद है। साम्यवाद तो समाज की वह आदर्श अवस्था है, जिसे हम दुनियां का बैकुण्ठ कह सकते हैं। साम्यवाद में सारा समाज एक कुटुंब बन जाता है। हर एक आदमी अपनी योग्यता के अनुसार काम करता है और आवश्यकता के अनुसार लेता है, जैसा कि एक अविभक्त कुटुंब में होता है। इतना बड़ा मानवसमाज या कोई एक राष्ट्र एवं अविभक्त कुटुम्ब की तरह हो जाय, वह मनुष्यता के विकास की चरमसीमा होगी।

उस योग्यता को पाये बिना अगर हमने साम्यवाद की योजना अपनाई तो हमारी दशा और भी खराब हो जायगी। एक कुटुम्ब में जब अनेक दम्पती हो जाते हैं तब उनका मिल कर रहना मुश्किल हो जाता है। सब अपनी अपनी कमाई का विशेष फल चखना चाहते हैं और घर का काम एक दूसरे पर टालते हैं तब राष्ट्र के लाखों दम्पती अपने अपने स्वार्थों को गौण कर दें, कम से कम लेकर अधिक से अधिक साधुता बताने लगें, यह असंभव नहीं तो असंभव के समान अवश्य है। हां! पूर्ण रूप से इस ध्येय को हम भले ही न पा सकें पर जितने रूप में इस तरफ बढ़ेंगे उतनी सुखशान्ति हम अधिक पा सकेंगे। इस लिए हमें भावनाओं को उदार बनाना चाहिए, मन पर जन्म से ही ऐसी उदारता का संस्कार डालना चाहिए, और जितनी उदारता आती जाय उतने अंश में साम्यवाद अपनाना चाहिए। इस प्रकार साम्यवाद को आज हम काफी मात्रा में अपना नहीं सकते किन्तु उसे आदर्श मान कर प्रणाम अवश्य कर सकते हैं, उस तरफ बढ़ने की कोशिश अवश्य कर सकते हैं।

समाजवाद कसौटी पर

समाजवाद साम्यवाद से नीची अवस्था है जिसका व्यापक प्रयोग रूस में हो रहा है और धीरे धीरे दूसरे देशों

में भी फैल रहा है। समाजवाद में मनुष्य को अपनी योग्यता और सेवा का मूल्य मिलता है, हां वह पूंजी से लाभ नहीं उठा सकता। पूंजी राष्ट्र की हो जाती है। मनुष्य तो राष्ट्र को अपना श्रम देकर उसके बदले में गुजर बसर के लायक पाता है। इस व्यवस्था का परिणाम यह होता है कि देश में कोई बेकार नहीं होता, कोई भूखों नहीं मरता या उतना ही भूखों मरता है जितना साधारणतः सब को भूखा मरना पड़ता है। विषमता नियत सीमा के भीतर ही रहती है। पूंजीवाद का विष दूर करने के लिए यही उपाय आज सफलता के साथ काम में लाया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि पूंजीवाद और समाजवाद में से अगर किसी एक का चुनाव करना हो तो समाजवाद का ही चुनाव करना पड़ेगा, फिर भी समाजवाद के बारे में निम्नलिखित आशंकायें खड़ी की जाती हैं।

(१) समाजवाद में आर्थिक पराधीनता अनिवार्य है क्यों कि हर एक मनुष्य राज्य का नौकर होगा। पूंजीवादी राष्ट्रों में नौकर अपनी नौकरी छोड़ कर स्वतन्त्र व्यवसाय कर सकता है, दूसरी जगह नौकरी कर सकता है, पर समाजवादी राष्ट्र में इतनी स्वतन्त्रता नहीं रह सकती।

(२) अपनी तरक्की उच्च अधिकारियों के हाथ में रहती है। जैसे पूंजीवादी राष्ट्रों में सरकारी नौकर अपनी तरक्की के लिए अफसरों को खुश रखने की चेष्टा करते हैं, उसी तरह समाजवादी राष्ट्रों में सब को करनी पड़ेगी।

(३) मालिक अपना काम रुचि से करता है, इसलिए अधिक काम भी बोझ नहीं मालूम होता। नौकर अरुचि से काम करता है इस लिए थोड़ा काम भी बोझ मालूम होता है। काम एक तरह की बेगार हो जाता है। समाजवादी राष्ट्रों में यह बेगार सभी को करनी पड़ेगी।

(४) राजनैतिक स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है जैसी कि रूस में कोई दूसरी राजनैतिक पार्टी नहीं है। यहां तक कि एक स्थान के लिए दो उम्मेदवार भी नहीं खड़े हो पाते। विचारों की यह पराधीनता भी जीवन का एक बड़ा बंधन है।

(५) समाजवाद में मनुष्य जीविका से बिलकुल निश्चिन्त हो जायगा इस लिए जीविका के लिए उसे विशेष बुद्धि लगाने की, उपाय ढूंढने की कोशिश न करना पड़ेगा। इसलिए उसका विकास रुक जायगा साथ ही अर्थोपार्जन के स्वावलंबन की क्षमता नष्ट हो जायगी। इस तरह से वह एक मशीन का पुर्जा हो जायगा।

(६) अकस्मात् आर्थिक संकट में दूसरा हमारे काम आयगा, अधिकांश में मनुष्य इस दृष्टि से परस्पर में शिष्टता का व्यवहार करता है, सहायता भी करता है। जब मनुष्य की जीविका सरकार के हाथों में रहेगी तब मनुष्य, मनुष्य के बारे में बेगरज हो कर उदासीन हो जायगा। इस से एक तरह सामाजिकता को धक्का लगेगा।

(७) समाजवाद में रह कर मनुष्य की जीविका भी सरकार के हाथों में होगी-इस लिए जब सरकार में विकृति आयगी तब सुधार करने के लिए उसका सामना करना असंभवप्राय होगा। पूंजीवादी सरकारें जब नालायक हो जाती हैं तब उन्हें बदलना जितना कठिन है उससे हजार गुना कठिन समाजवादी सरकार को बदलना होगा। पेट की रोटी भी सरकार के हाथों में होने से सरकार के विरुद्ध किस दम पर लड़ा जायगा?

(८) समाजवाद में भी एक न एक दिन वैयक्तिक सम्पत्ति का सूत्रपात होगा ही, क्यों कि वहां भी श्रम के मूल्य के अनुसार किसी को पांच सौ रूबल मिलते हैं तो किसी को पांच हजार रूबल। अधिक आमदनी वाला अधिक खर्च करके भी अधिक बचत कर सकेगा और वह अपनी संतान को दे सकेगा। इस तरह कुछ पीढ़ियों में वहां भी अमीर गरीब का भेद पैदा हो ही जायगा।

(९) भारतवर्ष जैसे देश में समाजवाद का आना बहुत मुश्किल है। क्योंकि यहां पूर्वजन्म, पुण्य पाप आदि की व्यवस्था पर अटूट विश्वास है। लोग यह समझते हैं कि गरीब अमीर अपने पुराने पुण्य पाप का फल है यह तो भोगना ही पड़ेगा। ईश्वर की या प्रकृति की इस व्यवस्था में कौन हस्तक्षेप कर सकता है। यहां इन धार्मिक विचारों का उखाड़ना बहुत कठिन है। रूस में मजहब राजा के हाथ में था, धर्मगुरु भी राज्य के नौकर होते थे, इस लिए बादशाही के खत्म होते ही उसकी धार्मिक व्यवस्था भी उखड़ गई। यहां धर्म राज्याश्रय नहीं है इसलिए उसे उखाड़ना मुश्किल है।

१०— रूस में राज्यक्रान्ति कम्युनिष्ट पार्टी की विजय से हुई। सत्ता हाथ में आते ही उस पार्टी ने अपने सिद्धांतों के अनुसार सख्ती से काम करना शुरू किया और बहुत कुछ सफलता मिल गई। पर भारतवर्ष में ऐसी बात नहीं है। यहां सत्ता किसी पार्टी के हाथ में नहीं प्रजातन्त्र है प्रजातन्त्र में सत्ता उसी के हाथ रहती है जिसे प्रजा का बहुमत पसन्द करता है। इस देश में बहुमत समाजवादी नहीं है न होने की सम्भावना है, क्योंकि मजदूर वर्ग यहां प्रभावशाली नहीं है और जो प्रभावशाली है भी जैसे मिल मजूर वर्ग है, वह संख्या में बहुत थोड़ा है। बाकी कर किसानवर्ग यहां बहुत बड़ी संख्या में है और छोटे से छोटे जमीन के टुकड़े के मोह में ऐसा फंसा है कि अपनी जमीन को राज्य या पंचायत को सौंपने की बात भी वह आज नहीं सुन सकता। रूस के किसान ने भी क्रांति के प्रारम्भ में अपने बैल इसलिए मार खाये थे कि ये बैल राज्य को न मिल पायें। यहां का धर्मभीरू किसान बैलों को मार कर भले ही न खावे, पर वह अपनी जमीन आदि को छोड़ने के लिए सहज ही राजी न होगा। कम से कम वह उन्हें वोट न देगा जो समाजवादी योजना अमल में लाना चाहते हैं। आज भी यहां का किसान अधपेट रहना पसंद करता है, पर नौकरी या मजदूरी करना पसंद नहीं करता।

समाजवाद के ऊपर जो इस प्रकार के आक्षेप किए जाते हैं उनमें बहुत कुछ सचाई हो सकती है, फिर भी पूंजीवाद के दोषों के सामने वे सब मिल कर भी बहुत कम महत्व के रहते हैं। पूंजीवाद ने देश में सम्पत्ति रहते हुए भी जनता के बहुभाग को कंगाल बना रखा है। काम पड़ा है, काम की सामग्री पड़ी है, काम करने वाले पड़े हैं, फिर भी बेकारी है, गरीबी है क्योंकि पूंजीपति को अपने नफे का रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है। सामूहिकरूप में पूंजीवादी जगत की अपेक्षा अधिक दुखी है।

इस लिए यह विचार उठता है कि क्या कोई ऐसी योजना नहीं जिसमें पूंजीवाद और समाजवाद का समन्वय कर दोनों के गुण ले लिए जायें और दोनों के दोष दूर कर दिये जायें. पूंजीवाद को मर्यादित कर दिया जाये और समाजवाद का बढ़ा २ रूप ले लिया जाय। इसी समन्वित रूप का नाम निरति वाद है।

निरतिवाद की एक विशेषता यह भी है कि यथाशक्य प्रत्येक व्यक्ति धीरे धीरे बदली हुई परिस्थिति के अनुकूल बनाया जाय। एक लखपति समाजवाद के होते ही साधारण मजदूर सा हो जाय तो उसके तन और मन के लिए वह अत्यन्त असह्य होगा। इस असह्य परिस्थिति को जितना कम किया जा सके करना चाहिए। श्रीमानों के शोषण कार्य को जो अब तक कानूनी था, उसे गैर कानूनी बना कर समाज का हित करना है पर श्रीमान् होने के ही कारण किसी को पापी या निन्दनीय नहीं मानना है, क्योंकि श्रीमान् तो सभी होना चाहते थे, यह तो अवसर योग्यता या अकस्मात् की बात है कि कोई श्रीमान् बन गया, कोई नहीं बन पाया। इस प्रकार सब के हित की भावना रखते हुए ऐसी व्यवस्था बनाना है, जिसमें व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता को यथाशक्य सुरक्षित रख सके, परिवर्तन के कारण वह एक दम असह्य परिस्थिति के चक्कर में न पड़ जाय, साथ ही एक व्यक्ति जो पूंजी के बल पर दूसरों का शोषण करता है, वह बन्द हो जाय। यही आर्थिक दृष्टि से निरतिवाद है। इसी दृष्टिकोण से हमें जीवन की अन्य समस्याओं को भी हल करना है।

(भा० हिं०)

धुम्म! धम्म!! एक के बाद दूसरी, तीसरी……इस प्रकार चमचमाती पांच ईंटें उसके सामने आ कर पड़ीं।

आकाश से विमान बम बरसा रहे थे और पृथ्वी पर तोपें आग उगल रही थीं। बर्लिन नगर का कोना-कोना कांप-कांप कर जल रहा था। पति पत्नियों तथा बाप बेटों तक को सहा-सहा छोड़कर अपने प्राण बचाने को भाग खड़े हुए। किन्तु वह कैसे भाग सकता था? दुर्भाग्यवश वह जन्म से ही एक टांग का लंगड़ा था।

विजयोन्मत्त रूसी सैनिक राइख बैंक की अंधाधुन्ध लूट मार कर रहे थे। वह ईंटें उधर से ही आकर इस लंगड़े नाई के सामने पड़ीं। वह उन पर छाती के बल लेट गया और कुछ घण्टों बाद, जब उधर सन्नाटा छा गया तो वह उन्हें धीरे-धीरे घर लुढ़का लाया।

उसके पड़ोसी सुनार ने इन ईंटों को पहचान लिया। वह प्लेटीनम की थीं। इनका वजन पूरा १६० पौंड (लगभग ८० सेर) था। किन्तु चतुर नाई ने उन्हें बेचने से इन्कार कर दिया।

बर्लिन नगर पर चार बड़ी शक्तियों का अधिकार हो गया और हाट-बाजार फिर पूर्ववत् खुलने लगे। नाई ने अपनी ईंटें जौहरी को बेच दीं जिससे उसे भारी धनराशि मिली।…… ……

इस धन से उसने भवन-निर्माण और सजावट की सामग्री मोल ली। उसने बर्लिन के चारों अधिकृत क्षेत्रों में एक-एक सुन्दर सैलून बनवाया। महिलाओं के केश सजाव के लिए विविध सामग्री जुटाई गयी। आजकल इन सैलूनों में मित्रराष्ट्रीय अफसरों की पत्नियों की भीड़ लगी रहती है, और इस नाई की दैनिक आय चार अंकों की गिनती में कूती जा रही है।

× × ×

लाल सेना से पद-दलित बर्लिन में आबाल-वृद्ध भूख से तड़फड़ा रहे थे। किन्तु अनेक दुःसाहसी लुटेरे रेडियो, घड़ियां, जवाहरात, आदि बहुमूल्य वस्तुएं बटोरने में व्यस्त थे। कुछ और भी लोग थे जो दोनों हाथों धन बटोर रहे थे; किन्तु सब से चतुर वह व्यवसायी थे जिनकी आंखें कल पुर्जों और उच्चकोटि के मापकयंत्रों को खोज रही थीं।

एक चल चित्र निर्माता कूड़े-करकट से ढके उस स्थान पर अधिकार जमा कर बैठ गया जहां युद्ध के अन्तिम दिनों जर्मन वेहरमाक्ट (स्थल सेना) ने अपनी कैमरा-सामग्री छिपा दी थी। राह-गीर उस समय इस व्यक्ति को सुनसान में पड़ा देख पागल समझते थे। आज उसके पास चल-चित्रों और छाया-चित्रों का विशाल भण्डार देख बुद्धि चकित हो जाती है।

× × ×

बर्लिन में कौन कैसे धनी बना !

★

एक मोटर-मिस्त्री ने आजकल बर्लिन के एक पूरे मुहल्ले पर कब्जा कर रखा है। इसका बाप जर्मन स्थलसेना में सार्जेंट था। युद्ध के अन्तिम दिनों वह मोर्चे से भाग गया, और एक मुंहजली घोड़ा और गाड़ी अपने साथ ले आया।

इस मोटर-मिस्त्री और उसके पांच नौजवान लड़कों ने इस घोड़ा-गाड़ी की सहायता से ट्रकों और मोटरकारों के टूटे फूटे कल-पुर्जे जमा कर लिए और उनको एक जगह छिपा दिया। छः महीने तक वह चुपचाप बैठा रहा। उसने एक भी पुर्जा न बेचा। उसने मोटर के कल-पुर्जे जोड़ने की कार्यशालाएं और गैरिजें बनवाईं। जिनमें ३५ कारें और ट्रकें बन कर खड़ी हो गयीं। उसने २० कारें और ट्रकें विदेशी सैनिक अधिकारियों को बेच दीं तथा शेष १० ट्रकों और ५ यात्रीकारों से वह अपना व्यवसाय चलाने लगा।

उसकी वह ट्रकें आजकल नगर के वैध यातायात का मुख्य साधन है। किन्तु कारों का प्रयोग चोर-बाजार में हो रहा है। जो जर्मन सोवियत क्षेत्र से भाग निकलना चाहते हैं उनकी सहायता के लिए यह कारें उपस्थित रहती हैं। सोवियत क्षेत्र से खाद्य और कपड़ा भी इनके द्वारा उभाड़ कर पश्चिमी क्षेत्रों में लाया जा रहा है। इन कारों पर धोखा देने के लिए कोयला इंजिन लगा रखे हैं, किन्तु वास्तव में उनका सचालन पेट्रोल के प्रयोग से होता है। जब कभी इन कारों को चोर-बाजार का शिकार नहीं मिलता तो वह अमेरिकन यात्रियों को ही सैर सपाटा कराने लगती हैं। इससे भी प्रत्येक कार को प्रतिदिन १००० मार्क की आय हो जाती है।

× × ×

इन सब से अधिक धन बर्लिन के एक बिसाती ने कमाया है। इस बिसाती के ग्राहक बर्लिन के बड़े-बड़े धनवान् व्यक्ति थे। शान्ति-काल में, वह उनके घर पर सौदा देने जाया करता था और उसे मालूम हो गया था कि किसके घर कौन सी वस्तु कहां रखी है। जब रूसी तोपों की गड़गड़ाहट बर्लिन से सुनायी देने लगी तो वह अपने ग्राहकों के घर गया। जो लोग घर छोड़कर पहले ही भाग गये थे उनकी बहुमूल्य सम्पत्ति वह बेधड़क अपने घर उठा लाया, किन्तु जो लोग अभी नहीं गये थे उनसे उसने कहा — 'आप लूट मार के शिकार हो जायंगे, अतः आप अपना माल मेरी गुप्त कोठरियों में रखवा दीजिये। जब शान्ति हो जाय तब आप उसे वापस ले लें। यदि आप चाहेंगे तो कमीशन काटकर बाद में उसका मूल्य भी आपको चुकाया जा सकेगा।'

बस; उसके यहां फर्नीचर, कालीनों, घड़ियों, रेडियो, आदि के ढेर लग गये। जिन लोगों ने उसके यहां अपना माल जमा किया था उनमें ६० प्रतिशत व्यक्ति आज तक वापस नहीं आये। वह भाग गये या गिरफ्तार कर लिए गये।

इस बिसाती के यहां आजकल कंचन बरस रहा है। सोवियत, ब्रिटिश, अमेरिकन अफसरों तथा स्त्रियों की फरमाइशों का तांता लगा रहता है। वह खुले-आम चोर बाजार अब भी पसन्द नहीं करता !!

असाधारण परिस्थिति में दुःसाहस, युक्ति व भाग्य ही काम देता है, उसके यह दो-चार उदाहरण हैं।

—

गांधीजी के निर्वाण पर हिन्दी के कवियों से

[श्री बच्चन]

ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्रनंद, मैथिलीशरण,
हो गया राष्ट्र के पुण्य पिता का महामरण,
होकर अनाथ यह आर्त जाति मांगती शरण,
कुछ कहो देवता, दैन्य, शोक, संताप हरण !

तुम कहां छिपे हो युग-प्रवर्तक सूर्यकान्त,
युग पुरुष लुप्त हो गया तिमिर छाया नितान्त,
सम्पूर्ण देश हो रहा आज दिग्भ्रान्त-क्लान्त,
बिखराओ अपने प्रखर स्वरों की दीप्त कान्ति !

मत रहो मौन यों बहन महादेवी बोलो,
कुछ तो रहस्य उस दुर्घट घटना का खोलो,
ओ नीर भरी बदली, क्यों उमड़ नहीं आती,
क्या रक्त सनी रह जाएगी मा की छाती ?

उठ दिनकर, भारत का दिनकर हो गया अस्त,
श्रृङ्गार देश का क्षार-धूम्र में ग्रस्त ध्वस्त,
वाणी के उदयाचल से ऐसी छेड़ तान,
तम का मशान हो नई रोशनी का निशान !

तुम से मेरी प्रार्थना, सुमित्रानन्दन पन्त,
सन्तों में सुमधुर कवि, कवियों में सौम्य सन्त,
आ पड़ी देश पर, बन्धु, आपदा यह दुरन्त,
टूटे सत्यं, शिव, सुन्दरता के तन्तु तन्तु;

मन में क्या है जो हुआ देश पर यह अनर्थ,
बोलो वाणी के पुत्रों में सब से समर्थ !

वंदित वीणा पर गाकर अपना ज्ञान-गान
सुस्थिर कर दो भारत माता के विकल प्राण,
हे करामलकवत् भूत, भविष्यत्, वर्तमान
ओ कविर्मनीषी, करो विश्व का समाधान !

['खादी के फूल' से]

ब्रिटिश न्याय

[श्री विराज]

'ब्रिटिश न्याय और हिन्दुस्तानी वीरता इनकी कहानी तुमने सुननी हो तो मुझ से सुनो' क्षोभ से जलते हुए फ़ूजीमारा ने कहा।

दूसरा व्यक्ति जो हिन्दुस्तानी सेनाओं की वीरता की प्रशंसा कर रहा था, अकचका कर रुक गया और प्रश्न भरी दृष्टि से फ़ूजीमारा की ओर देखने लगा। घृणा के मारे फ़ूजीमारा के होठ सिकुड़ उठे; क्षोभ से माथे पर सलवटें पड़ गईं, थूक कर वह बोला 'पता नहीं, ये लोग अपने देश में कैसे रहते हैं, परन्तु परमाणु बम द्वारा पैशाचिक विजय पाने के बाद इस निपन भूमि में इन्होंने जो अपना रूप दिखाया है, उससे सूअर अच्छे हैं, सूअर !' इतना कह कर उसने फिर थूक दिया।

'कहीं सारे जापान में एक भी आदमी अंग्रेजों को न्यायप्रिय और हिन्दुस्तानियों को बहादुर न समझ बैठे, इस लिये तुम्हें एक सच्ची कहानी सुनाता हूं। इसे तुम जापान के प्रत्येक बच्चे को सुना देना' कहते कहते फ़ूजीमारा का स्वर कुछ शान्त हो चला।

'जानते हो इमाना ने हराकिरी क्यों की थी ?' उसने कहानी प्रारंभ करते हुये पूछा, पर उसका श्रोता कुछ भी नहीं जानता है, यह देख कर वह स्वयं ही कहने लगा 'तुम परदेशी हो, इसी लिये नहीं जानते। इमाना इस गांव की सबसे सुन्दर लड़की थी। इस निपन देश के मिट्टी-पानी में जितने फूल खिलते हैं, वह उन सबसे सुन्दर थी।' कहते फ़ूजीमारा इमाना के सौन्दर्य की कल्पना मे मग्न हो गया। उसकी वाणी सजीव हो उठी। 'मैंने उसे देखा था। वह हंसती थी तो चांदनी सी बखेर देती थी। जहां से गुज़र जाती थी, वहीं बिजली सी चमक जाती थी। इमाना को जो देख लेता था, वह फिर बस उसी का हो रहता था।

'परन्तु उसे जैसे अपने सौन्दर्य का ज्ञान ही नहीं था। उपवनों और पहाड़ियों में फ़िरने वाले मलयवायु की भांति वह स्वच्छन्द थी। वह सबसे हंस कर मिलती थी और प्रेम से बात करती थी। उसकी बातें जिसने भी सुनी हैं, वह जानता है कि कैसा अमृत उसके मुख से झरता था। इच्छा होती थी कि वह बोलती रहें और हम तन्मय भाव से सुनते रहें। ऐसी लड़की थी इमाना।

जैसे गोकुल के वनों में कृष्ण की मुरली गूंजा करती थी, उसी तरह यहां के वन उपवनों में, पहाड़ियों और नदी तीर पर इमाना के मधुर गीत गूंजा करते थे और जो उन गीतों को सुन लेता था, वही इमाना का उपासक बन जाता था। परन्तु इमाना किसी की नहीं थी।

वह सब जगह निर्भय फिरती। निपन में लड़कियों को वैसे ही कहीं भी भय नहीं है और फिर इमाना ! उसके इशारे पर प्राण न दे डाले, ऐसा युवक ही आस पास कोई न था। फिर उसे भय किस बात का हो सकता था।

परन्तु निर्भीकता विपत्ति की जननी है। जो डरता है, वह विपत्ति से बच सकता है, पर जो डरता नहीं, विपत्ति सदा उसके साथ चलती है। इमाना की निर्भीकता इमाना को ले डूबी।

गांव के दक्खिन की ओर बड़ा जङ्गल फैला हुआ है। लड़ाई के दिनों में मोटरों के यातायात के लिए एक कच्ची सड़क उस जंगल के बीच में से बनाई गई थी। वह सड़क जहां उस छोटी सी झील के पास से गुजरती है जिसके तट पर कोई प्रेतों के भय के मारे दिन में भी नहीं जाते, वहीं एक दिन इमाना बेतून के फूल चुन रही थी।

हवा से उस के बाल और कपड़े उड़ रहे थे। फूल चुन २ कर वह एक डलिया में इकट्ठे कर रही थी। उस समय, सोचता हूं, अवश्य ही वनदेवियां भी उसे देख कर लज्जित हो रही होंगी।

फूल चुनते २ उसने मोटर की आवाज सुनी और चौंक कर सिर घुमा कर देखा। कच्ची सड़क पर धूल उड़ाती एक फौजी मोटर आ रही थी।

अच्छी तेज हवा चल रही थी। इमाना के बाल उड़ रहे थे। तेजी से आती हुई मोटर को देख कर एक क्षण के लिए इमाना का मन भी मोटर में बैठने को ही आया। वह मोटर की ओर देखने लगी। जहां सड़क और झील का अन्तर बिलकुल कम हो गया था, वहां पहुंच कर मोटर रुक गई।

इमाना फूल चुनना छोड़कर उत्सुकतापूर्वक मोटर की ओर देखती रही। मोटर में से तीन हिन्दुस्तानी सिपाही उतरे। दो पंजाबी मुसलमान थे और एक पठान। उन्होंने इमाना को देख लिया था।

वे इमाना की ओर बढ़े और संकेत से उसे अपने पास बुलाया। चाहत मुर्गी की भांति निःशंक इमाना उनके पास पहुंच गई। तब तक वे हरी घास पर बैठ चुके थे और जेबों से चाकलेट निकाल कर खा रहे थे।

'लो, तुम भी खाओ', इमाना की ओर चाकलेट बढ़ाते हुए पठान सिपाही ने कहा।

'तुम यहां क्या कर रही थीं ?' एक पंजाबी मुसलमान बोला।

इमाना ने चाकलेट ले लिया और मुस्कराते हुए कहा -बेतून के फूल चुन रही थी।

इमाना बिना हंसे, बिना मुस्कराये रह ही नहीं सकती थी। उसे मालूम नहीं था कि संसार में ऐसे घृणित प्राणी भी हैं; जिनके सामने मुस्कराना, हंस कर मधुरता से बोलना अपराध है। उसकी हंसी फूलों की हंसी के समान निर्मल और स्वाभाविक थी। यदि वह चाहती भी तो उसे छोड़ थोड़े ही सकती थी।

उसकी मुस्कराहट और उसके मधुर स्वर ने उन तीनों पशुओं को उन्मत्त कर दिया।

'तुम्हारा नाम क्या है ?' उनमें से एक बोला।

'इमाना !'

'अच्छा इमाना, मोटर की सैर करोगी ?'

'मोटर पर बैठने में मुझे बड़ा आनंद आता है।' उस आनंद की कल्पना से ही उसके नेत्र उज्ज्वल हो उठे।

इमाना मानों सर्वनाश की मोटर पर चढ़ गई। मोटर और भी घने जंगल में जाकर एक ओर रुक गई। और जैसे कोई सूअर कमल को चबा डाले, इस प्रकार उन तीनों नराधमों ने इमाना से बलात्कार किया। अपने ऊपर कल्पनातीत आक्रमण होता देख कर इमाना चिल्लाई, रोई, दांतों और नाखूनों से काटा और नोंचा भी; परन्तु भगवान ने मनुष्य के दांत और नाखून बहुत ही कमज़ोर बनाये हैं।

इमाना के पवित्र शरीर पर अपनी पशुता के हस्ताक्षर करके उसे बेहोशी की दशा में वहीं छोड़कर वे तीनों कुत्सित पशु भाग निकले।

× × ×

यह तो हुई हिन्दुस्तानियों की वीरता की कहानी।

उसके बाद निःशस्त्र जनता, जो कुछ कर सकती है, वह किया गया। इमाना

(शेष पृष्ठ २० पर)

दूसरी और तीसरी मजदूर सरकार

[कुमारी स्वर्णलता एम० ए०]

आज से करीब २० वर्ष पूर्व इङ्गलैंड में मजदूर सरकार कायम हुई थी और आज भी मजदूर सरकार वहां सत्तारूढ़ है। दोनों की संक्षिप्त आलोचनात्मक तुलना इस लेख में की गई है।

ब्रिटेन में वर्तमान श्रमिक सरकार को कायम हुये दो वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हो गया है। मजदूर पार्टी के आन्तरिक विकास, वर्तमान सरकार के प्रति स्वयं श्रमिक वर्ग की आस्था आदि का विशद ज्ञान प्राप्त करने के लिये द्वितीय और तृतीय श्रमिक सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन करना अत्यावश्यक होगा।

द्वितीय श्रमिक सरकार ने जिस स्थिति में देश का शासन सूत्र सम्भाला था, वह एक ऐसा काल था जब कि चारों ओर बेकारी का जोर था और पूंजीपति वर्ग श्रमिक वर्ग के जीवन स्तर को निम्न कोटि का बना देने के लिये आगे आ रहा था। ऐसी दशा में लेबर पार्टी के अन्तर्गत वामपन्थी विचारधारा का प्रवाहित होना स्वाभाविक था। किन्तु जिस समय तृतीय श्रमिक सरकार का आविर्भाव हुआ उस समय देश की स्थिति पहले से सर्वथा प्रतिकूल थी। ब्रिटेन आर्थिक पुनर्निर्माण के द्वार पर खड़ा था। देश में बेकारी का कहीं नाम न था और पूंजीवादी वर्ग श्रमिक प्रहारों से बच सकने का मार्ग खोज निकालने के लिये आकुल था। देश की इसी स्थिति ने अबकी बार लेबर पार्टी के अन्दर वामपन्थी विचारधारा को बढ़ने से रोका।

द्वितीय श्रमिक सरकार की आर्थिक पृष्ठभूमि

द्वितीय श्रमिक सरकार के प्रति श्रमिक वर्ग के रवैये और उनकी गति विधियों की माप तो देशव्यापी बेकारी और आर्थिक विशृंखलता से ही की जा सकती है। लार्ड लैंसबरी ने १९२९ के चुनाव प्रचार के अन्तर्गत साफ शब्दों में कहा था कि 'हम बेकारी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, और 'वचन देते हैं कि जो कोई भी बेकार होगा, उसकी रक्षा का भार सरकार पर होगा।' अर्थ सचिव जे० एच० टामस ने घोषणा की थी कि बेकारी दूर करने के लिये सरकार २५००००० पौंड रेलों पर और ४३०००००० पौ० सड़कों आदि के विकास में व्यय करेगी।

लेबर पार्लमेण्ट के प्रारंभिक अधिवेशन में हुये बादशाह के भाषण का अपूर्व प्रसन्नता से स्वागत करते हुए मि० चर्चिल ने कहा था कि अर्थसचिव ने जिस ढंग से देश पर स्वर्ग-सुधाएं बहाने की बात कही है, उसमें सन्देह नहीं कि वह ऐसा कर सकेंगे किन्तु तभी जब, कर्णाधिकारियों—बैंक आफ इंगलैण्ड और लन्दन के उच्च अर्थ अधिकारियों द्वारा उनको ऐसा करने की अनुमति प्राप्त होगी।' मि० चर्चिल ने इस बात की भी धमकी दी थी कि ज्यों ही श्रमिक सरकार 'समाजवादी प्रयोगों (अर्थात् सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करना) को हाथ में लेगी, उसके विरोधी उसे कुर्सी से उठा फेंकेंगे।

चर्चिल द्वारा आरम्भ से ही धमकाये जाने के कारण — श्रमिक सरकार और भी दब्बू बन गई। और फिर उसने 'राष्ट्रीयकरण' की बात भी करना छोड़ दिया। बेकारी को निराकरण करने की दिशा में अपनी नूतन योजना की घोषणा करते मि० टामस ने श्रमिकों को उपनिवेशों तथा साम्राज्य के अन्य भागों मे भेजे जाने का प्रस्ताव रखा। मि० टामस द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव की टीका करते हुए लायड जार्ज ने कहा था कि भूतपूर्व 'चांसलर आफ दि एक्सचेकर (मि० चर्चिल) इस प्रस्ताव के पूर्ण समर्थक हैं और कंजरवेटिव पार्टी द्वारा इसका समर्थन कराने के लिए वह उत्सुक हैं। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास नहीं है कि बेकार लोग भी समान रूप से प्रसन्न होंगे। खानों के बौद्धिक संयमन और हाट व्यवस्था के प्रस्तावों पर व्यंग कसते हुए लायड जार्ज ने कहा था:—

मैं यह नहीं कहता कि वे (श्रमिक मंत्री) खानों में काम करने वाले मजदूरों के साथ विश्वासघात कर रहे हैं, क्योंकि वे राष्ट्रीयकरण को मूर्त रूप नहीं दे सकते। वे वही करने जा रहे हैं जिसकी उनमें क्षमता है और इसे मैं ठीक समझता हूं। लेकिन मैं यह कहने के लिए बाध्य हूं कि वे अब यह करने का विचार कर रहे हैं जिसको कि सन् १९१९ में वे अस्वीकृत कर चुके हैं।

श्रमिक सरकार के कार्यक्रम की आलोचना करते हुए रेडियो ने खुले आम यह घोषणा की थी कि श्रमिक सरकार का काम पूंजीवाद को ज्यों का त्यों कायम रखना है। 'वह आर्थिक ढांचे में रद्दोबदल नहीं कर सकती — बल्कि उसको सुरक्षित रख कर ही उससे जो बन पड़े कर सकती है।'

यद्यपि श्रमिक निर्वाचन में विजयी हुए फिर भी टोरियो और लिबरलों को अपने वर्ग पर और श्रमिक वर्ग को विशेष रूप से उनके नेताओं को मन माने ढंग से चलाने की अपनी योग्यता का जबरदस्त विश्वास था। १९२९ की श्रमिक सरकार का कार्यक्रम कट्टर पूंजीवादी लाइनों पर था। वह इस ढंग पर कार्यक्रम था कि चेतना सम्पन्न मजदूरों की श्रेणी को किंचित् भी संतोष नहीं दे सकता था। इसके अतिरिक्त श्रमिक सरकार ऐसे समय में सत्तारूढ़ हुई, जबकि समस्त विश्व आर्थिक संकट में फंसा था और उसके कार्यकाल में वह संकट घनीभूत ही हुआ। उसके सत्ता हाथ में लेने के बाद खनिज पदार्थों का उत्पादन घट गया। रेलों में सफर करने वालों की संख्या और माल के आवागमन में जबर्दस्त कमी हुई और बेकारों की संख्या बेहद बढ़ गई।

मजदूरों पर भीषण प्रहार

अन्न वस्त्र आदि के उत्पादन में भी कमी हुई। विश्वव्यापी संकट और सस्तेपन की परिस्थितियों में पूंजीपतियों ने श्रमिक वर्ग के रहन सहन का स्टैण्डर्ड गिराने के लिए भयंकर बेकारी से लाभ उठाना चाहा। श्रमिक सरकार के कार्यकाल में पूंजीपतियों ने मजदूरी कम करने पर खूब जोर दिया। प्रत्येक उद्योग के मजदूरों की मजदूरी मे कटौती की गई। ज्यों ज्यों बेकारी की संख्या बढ़ती गई, त्यों त्यों मजदूरों पर मालिकों के प्रहार भी भीषण रूप पकड़ने लगे। तब आज की तरह श्रमिक सरकार ने अधिक उत्पादन करो आन्दोलन का सूत्रपात किया किन्तु कम वेतन पर और ऐसे समय जबकि जागरूक मजदूर यह भलीभांति समझ चुके थे कि पूंजीवाद उत्पादन आधिक्य के भंवर में फंस गया है। सरकार मजदूरों से "कुर्बानियों" की मांग कर रही थी। उस समय वह मजदूरों और मालिकों की कान्फ्रेंसें करने में संलग्न थी जिनमें मजदूरों की कुर्बानियों की ही मांग की जाती थी। उक्त आन्दोलन उस समय चलाया जा रहा था, जबकि ब्रिटेन के ९०,००० सुपर टैक्स देने वाले पूंजीपति मजदूरों का शोषण कर साल में ५५ करोड़ पौंड की आय कर रहे थे।

पूंजीपतियों के आगे सरकार झुकी

ऐसी परिस्थिति में देश के श्रमिक आन्दोलन में वामपन्थी विचारधारा प्रबल हुई और श्रमिक सरकार की तीक्ष्ण आलोचना आरम्भ हो गयी। श्रमिकों में निराशा और सरकार के प्रति विरक्ति की लहर उठी, जिसका परिणाम यह हुआ कि श्रमिक निर्वाचन क्षेत्रों में ही लेबर पार्टी के वोट कम हो गये और

ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री [illegible]

टोरियों एवं लिबरलों को १९२९ की तुलना में अधिक वोट मिले। म्यूनिसिपल निर्वाचनों में भी ऐसा ही हुआ। १९३१ के संकट के दौरान में पूंजीपतियों ने श्रमिक सरकार के खिलाफ अति विकराल आक्रमण आरम्भ किया। उन्होंने सरकारी नौकरों के वेतन घटाने तथा बेकार लोगों के स्टैंडर्ड में और भी ह्रास करने की मांग की। लेबरपार्टी ने संयुक्त सरकार के लिए मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से पूंजीपति वर्ग के साथ मिलकर षड्यन्त्र किया। श्रमिक संस्थाओं ने सरकार के षड्यन्त्र का तीव्र विरोध किया फिर भी कोई फल न निकला। इस प्रकार श्रमिक वर्ग ने अनुभव किया कि श्रमिक सरकार किस प्रकार ब्रिटेन के पूंजीपतियों के इशारे पर नाच रही है।

तीसरी श्रमिक सरकार के दो वर्ष

तीसरी श्रमिक सरकार की आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि द्वितीय श्रमिक सरकार की तुलना में सर्वथा भिन्न है। फलस्वरूप क्रम विकास की गति बहुत ही धीमी है ४-५ दशाब्दियों से जिस ब्रिटिश साम्राज्यवाद की सारी दुनिया में तूती बोलती थी, और जिसके राज्य में सूर्य कभी नहीं डूबता था, वह भयंकर अधःपतन को प्राप्त हुआ। आज ब्रिटेन द्वितीय श्रेणी का राष्ट्र रह गया है। उसका औद्योगिक प्रभुत्व भी हतप्रभ है। दो महासमरों विशेषतः पिछले महासमर के दर्मियान साम्राज्य पर उसका आधिपत्य क्षीण हो गया है। पिछली शताब्दियों में जो विराट-धन-राशि ब्रिटेन ने इकट्ठा करके रखी थी, वह युद्ध भट्टी की भेंट हो चुकी है कर्ज स्वरूप उसका निर्यात व्यापार चौपट हो गया है। व्यापार के भुगतान की रकमें बाकी पड़ी हैं और पड़ी रहेंगी, इनवेस्टमेन्टस (पूंजी का विनियोग) और ऋण, कमीशन और इन्श्योरेन्स से होने वाली आय अमेरिका के हाथ में चली गयी है। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यवाद पतनोन्मुख है और उसे किस प्रकार बचाने की समस्या पेश है।

विश्वव्यापी अपनी मर्यादा के नष्ट हो जाने से १९४५ के — ब्रिटिश पूंजीपति घबड़ाये हुये थे और उन्हें अपने वर्ग के सुदिन लौटने की आशा नहीं दिखाई पड़ रही थी । पूंजीवादी व्यवस्था के अधःपतन और कठोर कार्यवाही की आवश्यकता ने लेबरपार्टी के टटपुंजिये नेतृत्व को प्रोत्साहित किया । उधर जनसाधारण में वामपन्थी विचार हिलोरें ले रहे थे । ऐसी दशा में श्रमिक नेताओं का आत्म विश्वास और भी दृढ़ हो गया । उनके पास एक योजना थी — बुनियादी उद्योगों के आधुनिककरण के लिए, जिनको कि पूंजीपतियों और ट्रस्टों ने बिल्कुल बरबाद कर डाला था । उन्होंने पूंजीवादी स्टेट के नियन्त्रण में राष्ट्रीयकरण को ब्रिटिश साम्राज्य के रुग्ण बुनियादी उद्योगों के लिए रामबाण औषधि समझा । ब्रिटिश पूंजीवाद को पुनर्गठित करने और ध्वस्त होने से उसे बचाने के अपने प्रोग्राम को सोशलिज्म कह कर उन्होंने देश के सामने रखा ।

पूंजीवादी स्टेट के नियन्त्रण में जब राष्ट्रीयकरण की योजना कार्यान्वित होने लगी तो पूंजीपतियों ने कोई रुकावट नहीं खड़ी की । राष्ट्रीयकरण विषयक बिलों में उनके प्रवक्ताओं ने यत्र तत्र परिवर्तन अवश्य करायें और राजा ने आंख मूंद कर हस्ताक्षर कर दिये । यदि कहीं द्वितीय श्रमिक सरकार यह सब कुछ करती तो पूंजीपति तूफान खड़ा कर देते और ठोकर मार कर उसे निकाल बाहर कर देते । पर अब तो ब्रिटिश पूंजीपति राष्ट्रीयकरण योजनाओं का स्वागत कर रहे हैं और उनके प्रवक्ता टोरियों ने यह ऐलान कर दिया है कि यदि भविष्य में हमारे हाथ सत्ता आयेगी तो भी हम श्रमिक सरकार द्वारा किये गये राष्ट्रीयकरण को मिटायेंगे नहीं । अब तक किये गये राष्ट्रीयकरण से पूंजीवादी वर्ग को ही लाभ पहुंचेगा । इसी कारण टोरी उनको स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत हैं ।

सरकार के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

तीसरी श्रमिक सरकार ऐसे समय में सत्तारूढ़ हुई जब कि देश आर्थिक पुनरुत्थान के लिये आगे बढ़ने ही वाला था । युद्ध द्वारा अनुष्ठित ध्वंस लीला और माल के विश्वव्यापी अकाल ने ब्रिटेन के लिए निर्यात व्यवसाय का पथ प्रशस्त कर दिया । आज अमेरिका भी मांग के अनुसार माल सप्लाई करने में असमर्थ है । ब्रिटिश उद्योग की वस्तुओं के लिए सर्वत्र बाजार खाली पड़े हैं । अमेरिका से प्राप्त ऋण ने श्रमिक सरकार को ब्रिटिश अर्थ तन्त्र के चकनाचूर होने से बचाने में बड़ी सहायता पहुंचाई और मजदूरों के रहन सहन के स्टैंडर्ड में कोई कमी करने की नौबत ही नहीं आने दी । इस ऋण ही की बदौलत सरकार मजदूरों के रहन सहन के स्टैंडर्ड में सुधार कर सकी । फलतः मजदूरों की सहानुभूति उसे सहज ही प्राप्त हो गयी और वे औद्योगिक हड़तालें और संघर्ष शुरू करने के बजाय "प्रतीक्षा करो और देखो" की नीति का अनुसरण कर रहे हैं ।

वर्तमान सरकार के प्रथम दो वर्षों में उत्पादन भी युद्ध से पूर्व की तुलना में दस से बीस फीसदी तक बढ़ गया है । सामूहिक बेकारी की समस्या उसके सामने आई ही नहीं, उल्टे मजदूरों की जबर्दस्त कमी है । १९४७ में बेकारों की संख्या तीन लाख थी, जो अतीत की संख्या की तुलना में नगण्य है । इससे मजदूर समर्थकों के मस्तिष्क में यह भ्रान्ति सुदृढ़ हो गई है कि मजदूर नेता बेकारी के प्रश्न का गम्भीरता पूर्वक सामना कर रहे हैं । देश के आर्थिक पुनरुत्थान का क्रम जारी रहने से पूंजीपतियों को मजदूरों की मजदूरी बढ़ाने में कोई उज्र नहीं हो रहा है । प्रथम दो वर्षों में एक करोड़ से अधिक मजदूरों की मजदूरी में औसतन १ पौंड प्रति सप्ताह की वृद्धि हुई है और सात लाख मजदूरों के घण्टे कम किये गये हैं— इस कमी की औसत सप्ताह में तीन घण्टे पड़ती है । उल्लेखनीय बात यह है मजदूरी में कोई कमी नहीं आई । इन सब बातों का अधिकतर मजदूरों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है और उन्हें विश्वास हो गया है कि उनके नेता निर्वाचन के समय घोषित कार्यक्रम के अनुसार ही चल रहे हैं । सरकार के प्रति श्रमिक संगठनों का रुख अभी सहानुभूतिपूर्ण है ।

लेकिन अमेरिका से मिला हुआ ऋण बड़ी तेजी से साफ हो गया है । श्रमिक सरकार ने सोचा था कि उससे सन् १९५० तक काम चल जायगा । दो वर्ष तक सुधार और अर्द्ध सुधार करने के बाद अब वह विरोधी सुधार जारी कर रही है । तत्काल अमेरिकन सहायता प्राप्त होने की आशा न रहने और मार्शल योजना कार्यान्वित होने में कुछ विलम्ब दिखने के कारण सरकार ने जनसाधारण के उपभोग की वस्तुओं के परिमाण में कमी करना आरम्भ कर दिया है । पेट्रोल के राशन में कमी की गई है और विदेश यात्रा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है । मांस के राशन में १४ प्रतिशत की कमी की गई है । कपड़े घरेलू चीजों तथा उपभोग की अन्य चीजों में भी कटौती की गई है । अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने यह धारणा बना ली है कि ब्रिटेन के मजदूर बहुत सन्तोषी हैं और कष्ट का जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य किये जाने पर भी जल्दी कोई उत्पात नहीं खड़ा करेंगे । इसी से उन्होंने पहले इटली और फ्रांस को तुरन्त सहायता देने का निश्चय किया है । ब्रिटेन को यूरोप में सब से अधिक ऋण इस लिए दिया गया था कि वह अमेरिका का सब से अधिक महत्वपूर्ण अड्डा है । अमेरिकन साम्राज्यवादी यह मानते हैं कि ब्रिटेन के मजदूर अपनी सरकार के विरुद्ध बगावत नहीं करेंगे ।

ब्रिटिश श्रमिक वर्ग में सुधारवाद ने अपना अड्डा जमा रखा है और तृतीय श्रमिक सरकार के प्रति मजदूरों का भ्रम तभी हटेगा, जब कि पूंजीवाद विश्वव्यापी मन्दी के भंवर में फंसेगा और उनको सूर्य के प्रकाश के भांति यह स्पष्ट हो जायगा कि वह (श्रमिक सरकार) न तो समाज को बदल सकती है और न स्थायी आर्थिक परिस्थितियां ही पैदा कर सकती है ।

———

सोवियत यूनियन की राष्ट्रीय आय

[आई० दिमशित]

पूंजीवादी देशों में राष्ट्रीय आय का ५० व ६० प्रतिशत से अधिक भाग शोषक वर्ग के लोग संभाल लेते हैं। इनकी जनसंख्या सारी आबादी का बहुत साधारण अंश होती है। उधर काम करने वालों का भाग कुल आमदनी का आधा भी नहीं है। काम करने वाले ही राष्ट्रीय आय को पैदा करने वाले हैं। क्रांति से पहले रूस में पूंजीपति और भूमिपति राष्ट्रीय आय का तीन चौथाई भाग खा जाते थे. यद्यपि इनकी संख्या आबादी का १६ प्रतिशत भाग थी। इस क्रूर उत्पीड़न के साथ साथ जनता के रहन सहन का ढंग बिगड़ता जाता था और देश के उत्पादक साधनों का रूस और विदेशी पूंजीपति नाश कर रहे थे।

स्टालिन ने कहा है कि पूंजीवाद का अर्थ यह है कि देश की आमदनी श्रमजीवियों की दशा को सुधारने के लिए नहीं बांटी जाती, बल्कि पूंजीपतियों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए बांटी जाती है। सोवियत यूनियन में एक दूसरे का शोषण नहीं कर सकता। शोषक वर्गों का भी देश में अन्त हो चुका है। सारी आय सामाजिक स्वास्थ्य और लोगों को सम्पन्न बनाने के लिए खर्च की जाती है यही समाजवाद की संस्थाओं का लाभ है। आय बढ़ती जाती है और इसे जनता के भले के लिए खर्च किया जाता है।

इस राष्ट्रीय आय से सामाजिक मांगों और आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। हर साल यह आय बढ़ती जा रही है। उत्पादन शक्ति भी साथ-साथ बढ़ रही है। सोवियत यूनियन में १९२८ व १९४० के बीच उत्पादन शक्ति ३.५ गुना बढ़ गई। पंचवर्षीय योजना के अनुसार उद्योग विभाग में उत्पादन शक्ति ३६ प्रतिशत बढ़ जायगी, मकानों के बनाने में बढ़ोती ४० प्रतिशत हो जायगी। देश की आय को पैदा करने वाले श्रम करने वाले लोग हैं जो शोषण से मुक्त हैं। वे पूंजीपतियों, जागीरदारों और हरामखोरों के लिए परिश्रम नहीं करते, परन्तु अपने लिए अथवा सोवियत राष्ट्र के लिए करते हैं। इस आय से सब लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। लोग स्वयं चाहते हैं कि प्रतिवर्ष आय को बढ़ाया जाए, देश को अधिक सम्पन्न किया जाए। समाजवादी देश में उत्पादन की रफ्तार बढ़ जाती है। ऐसे देश में वे आर्थिक संकट नहीं आते, जो कि पूंजीवादी देशों में अनिवार्य हैं। समाजवाद के आधीन उत्पादन योजना के अनुसार होता है। इसलिए उत्पादन और खर्च में गड़बड़ का होने भय नहीं रहता। दूसरे उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है।

क्रांति से पूर्व रूस में उत्पादन का वार्षिक विकास २.५ प्रतिशत रहा। उन्हीं दिनों यह विकास पूंजीवादी देशों में ५ अथवा ६ था, दो महायुद्धों के बीच के काल में पूंजीवादी देशों की आय काफी गिर गई। कुछ देशों में तो यह पहले महायुद्ध काल से भी कम हो गई। सोवियत यूनियन में आय की उन्नति पहली पंच वर्षीय योजना (१९२८-१९३२) में १९.२ प्रतिशत हुई और दूसरी पंचवर्षीय योजना (१९३३-१९३७) में १७.१ प्रतिशत यह आय बढ़ गई राष्ट्रीय आय के बढ़ने से देश का रूप बदल गया है। स्टालिन योजना के सफल होने से, उद्योगों की उन्नति से और खेती बाड़ी के पंचायती बनने से सोवियत यूनियन अब एक महान् शक्ति बन गया है, जो शांति स्थापित करने में और युद्ध भड़काने वालों से मुकाबला करने में प्रयत्नशील हैं।

राष्ट्रीय आय का एक भाग शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक बीमे पर खर्च किया जाता है — जनता की सांझी मांगों को पूरा करने पर यह धन व्यय होता है। इस धन का बाकी भाग लोगों में बांटा जाता है। यह समाजवादी सिद्धांत के अनुसार बांटा जाता है — जिस का जितना और जैसा परिश्रम हो, उसे उतना धन मिलता है।

समाजवाद के अनुसार परिश्रम शक्ति को वस्तु नहीं समझा जाता, जैसा कि पूंजीवादी देशों में विचार किया जाता है। सोवियत यूनियन में जितनी राष्ट्रीय आय बढ़ती जाती है, उतनी लोगों की मजदूरी भी बढ़ती जाती है। इसलिए उत्पादन शक्ति के विकास के साथ-साथ श्रमजीवियों की सम्पन्नता में विकास होता जाता है। पूंजीवाद के आधीन उत्पादन शक्ति के बढ़ने पर मजदूरी का मूल्य गिरता जाता है और जनता की सम्पन्नता कम होती जाती है। पिछले साल सोवियत यूनियन में प्रयोग की वस्तुएं भारी संख्या में तैयार की गईं। मकानों की गिनती काफी बढ़ गई। आधुनिक पंचवर्षीय योजना के अनुसार ५९०० छोटे बड़े उद्योग चालू किए गए। २०००० मील से अधिक नई रेलवे लाईन बिछाई गई। ७२०००० नये ट्रैक्टर बनाए गए।

पूंजीवादी देशों में उत्पादन शक्ति कम हो रही है। इस के साथ पूंजीपति राष्ट्रीय आय का काफी भाग लूट रहे हैं। मजदूरों की सम्पन्नता कम हो रही है। अमरीका से केवल युद्ध का माल ही नहीं दूसरे माल भी कम बनने लगा है। इस का यह मतलब नहीं कि पूंजीपतियों को लाभ कम हुआ। लाभ तो उन का पहले से बढ़ गया। अमरीकी अर्थशास्त्रज्ञों के अनुसार १९४७ में अमरीकी पूंजीपतियों के लाभ की संख्या १७०० करोड़ डालर तक पहुंच गई। यह संख्या ७०० करोड़ डालर के हिसाब से युद्धकालीन लाभ से अधिक थी। राष्ट्रीय आय में मजदूरों का भाग कम होता जा रहा है। चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। मजदूरों का मूल्य इसी हिसाब से कम होता जा रहा है। पूंजीवादी संसार को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। इस के कारण उत्पादन शक्ति पर प्रहार होगा। मजदूरों की दशा और भी बुरी होगी।

सरकारी बजट सोवियत यूनियन में आय को बांटने और दोबारा बांटने में महत्वपूर्ण भाग लेता है। समाजवादी राष्ट्र का बजट सामाजिक और व्यक्तिगत हितों को मिलाने का उपाय है। सामाजिक कामों को उन्नति देना इस का उद्देश्य है। १९४७ में आय २७५०० करोड़ रूबल थी। यह सारी आय का ८० प्रतिशत भाग है। इस में से एक तिहाई धन बड़े बड़े कामों पर खर्च किया गया। काफी धन लोगों की माली हालत सुधारने और संस्कृति के विकास करने पर खर्च हुआ। बजट का २८ प्रतिशत भाग शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक बीमा, कला और विज्ञान की उन्नति पर लगाया गया। सोवियत यूनियन में युद्ध के बाद खर्च कम किया गया। १९४७ में आय का १८ प्रतिशत भाग सेना पर खर्च हुआ। यह संख्या १९४६ की संख्या से ६०० करोड़ डालर कम है। हर साल फौज पर खर्च कम करने का अभिप्राय यह है कि सोवियत यूनियन शांतिप्रिय देश है। साम्राज्यवाद इस की नीति नहीं है। इस के विपरीत पूंजीवादी देशों में युद्ध के बाद इस हिसाब से सेना पर खर्च कम नहीं किया गया। सेना पर देश में कम खर्च करने से युद्धकर हटा दिया गया है। लोगों की व्यक्तिगत आमदनी को बढ़ा दिया गया है।

दुमदार दोहे

'गुस्ताख'

रिजवी मियां करि रहे, बढ़ि बढ़ि चोटें वार।
चींटीं के हू पंख ह्वै, निकलैं मरती बार॥
कजा मंडरा रही।

'जिन्ना साहब' ने किया, 'खुर्री' का बेताज।
'पीर इलाही बक्स' कूं मिल्यो मुफ्त में राज॥
भाग्य की बात है।

अब पश्चिम पंजाब के, बनें प्रीमियर 'नून'।
'कायदे आजम' पर भयो, यार, सवार जनून॥
बदल सब कूं रहे।

'जिन्ना की सरकार में, होइ परिवर्तन यार।
खबर सुनी, दम खुश्क भो,'मंडल' का इस बार॥
बिचारो का करे।

लौटे पाकिस्तान से, हलुआ पूरी खाय।
एक इंच हू जगह अब, इन कूं ना दी जाय॥
भार्गव कहि गये।

संघी भइया, यार अब, फिर पकड़ेंगे जोर।
सम्पादक जी! सुनत ही, एकदम उठो मरोर॥
परवानो आइ गयो।

जन गणना का राष्ट्रीय महत्व

[श्री यीट्स अध्यक्ष जनगणना विभाग]

जन गणना के सम्बन्ध में लोगों का दृष्टिकोण ठीक नहीं है। प्राय: यह समझा जाता है कि यह कुछ वर्षों के बाद सिर पर पड़ने वाली बेगार सी है और इसी दृष्टि से इसे पूरा करके लोग भूल जाते हैं। वास्तव में शासन प्रबन्ध की दृष्टि से जन गणना का बड़ा महत्व है। प्रत्येक देश के आर्थिक तथा अन्य संगठनों का मूल आधार यही है कि उसे यह मालूम हो कि उसे किस किस आयु के कितने लोगों के लिये भोजन की व्यवस्था करनी है, कितनों को पढ़ाना है, कितनों का इलाज करना है, कितनों के लिये यातायात व्यवस्था करनी है तथा अन्य प्रकार से कितनों की देखभाल आदि करनी है। देश की जनसंख्या के आधार पर ही सरकार यह निश्चय कर सकती है कि किस प्रकार का कितना माल बाहर से मंगवाना आवश्यक है और कितना माल बाहर भेजा जा सकता है। वस्तुतः यह कहा जा सकता है कि देश में कितने लोग हैं और भविष्य में उनकी संख्या क्या हो सकती है, इसकी जानकारी प्रत्येक प्रकार की शासन व्यवस्था का आधार है।

इस दृष्टि से हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि जनसंख्या के आंकड़े प्राप्त करना प्रत्येक सरकार का आधारभूत कार्य होना चाहिये। जन गणना की वर्तमान प्रणाली इन आंकड़ों को प्राप्त करने का एक तरीका है। वास्तव में इसकी उचित और वैज्ञानिक रीति यह है कि पहले हम यह निश्चित रूप से निर्धारित करें कि हमारी आवश्यकताएं क्या हैं। फिर यह विचार करें कि उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये सबसे अच्छी और क्रियात्मक प्रणाली कौन सी है। यह समझना ठीक नहीं है कि १० वर्ष बाद जन गणना की वर्तमान प्रणाली बिलकुल ठीक सिद्ध होगी और उसमें किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। पहले यह विचार दृढ़ हो गया था कि एक रात में सारी गणना करना आवश्यक है। लेकिन १९४१ में मैंने इस पद्धति का अन्त कर दिया था। यह समझना भी ठीक नहीं है कि देश भर में समस्त लोगों की गिनती करके ही हम जनसंख्या के आंकड़े प्राप्त कर सकते हैं। सम्भव है कि इस समय यह प्रणाली सर्वोत्तम हो लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि भविष्य में भी यही प्रणाली सब से अधिक उपयोगी बनी रहेगी।

आयु के लेखे का महत्व

देश के निवासियों की आयु के लेखे का महत्व भी कम नहीं है, परन्तु जिस देश की आबादी में शीघ्रता के साथ परिवर्तन हो रहा हो, उसके लिए तो इस प्रकार के लेखे का और भी विशेष महत्व है। इससे सरकारें यह तो जान ही सकती हैं कि वर्तमान में या अगले दस पांच वर्षों में स्कूल जाने योग्य कितने बच्चे होंगे। साथ ही इससे भी अधिक महत्व की बात यह है कि सरकारें यह जान सकती हैं कि दस बीस या तीस वर्ष बाद देश की आबादी का क्या रूप होगा।

इस प्रकार के लेखे को तैयार करने के लिए देश भर में एक साथ कार्रवाई करनी पड़ती है। वस्तुतः लोगों की गिनती के बाद जनगणना की सब से महत्व की बात आयु का लेखा तैयार करना ही है। इस समय इस लेखे का महत्व और भी ज्यादा इसलिए होगा क्योंकि १९४१ में ब्रिटिश भारत में आयु सम्बन्धी आंकड़े संकलित नहीं किये गये थे। रियासतों ने उस समय की जनगणना के सिलसिले में आयु-सम्बन्धी आंकड़े संकलित किये थे।

दूसरी महत्वपूर्ण बात लोगों की आजीविका के आंकड़ों की है अर्थात् लोग किन व्यवसायों द्वारा रोटी कमाते हैं। आगे चल कर इस प्रकार के आंकड़े कारखानों और मिलों आदि से संकलित हो सकते हैं, परन्तु इस समय तो यह कार्य भी जनगणना का एक अंग है।

मकानों की नियमित गिनती की आवश्यकता

जनगणना ठीक ढंग से हो सके, इसके लिए सबसे पहले इस बात की व्यवस्था करनी चाहिए कि लोगों के रहने के प्रत्येक मकान में गणना करने वाला व्यक्ति जाये और किसी भी मकान में एक से अधिक ऐसे व्यक्ति न जा सकें। केवल इतना ही काफी नहीं है कि कुछ लोगों को गिनती के लिए नियुक्त करके गणना कर ली जाय। हमें भिन्न भिन्न क्षेत्रों के मकानों की सूची तैयार करनी चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई मकान एक से अधिक सूचियों में न हो। इस प्रकार की मकानों की सूची प्रत्येक देश में जनगणना का मूल आधार होती है। अभी तक ऐसा होता है कि जनगणना के समय मकानों के नम्बर पड़ते हैं, सूची तैयार होती है और फिर लोग उसे भूल जाते हैं। इससे हर दसवें वर्ष बार बार वही काम करना पड़ता है। हमें मकानों की स्थायी सूची तैयार करनी चाहिए। इससे अन्य बहुत प्रकार की जानकारियां प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलेगी।

मैं इस समय इसी कार्य में लगा हूं। प्रान्तों व रियासतों के सहयोग से प्रत्येक मकान पर नियमित रूप से संख्या डालने का कार्य हो रहा है और यह व्यवस्था की जा रही है कि मकानों के ये नम्बर स्थायी रूप से रखे जायें। यह कार्य प्रान्तीय और रियासती सरकारों को करना पड़ेगा, क्योंकि जनगणना केन्द्रीय विषय नहीं है।

आर्य सामाजिक जगत

स्वतंत्र भारत में आर्यसमाज का विशाल कार्यक्रम

भारतवर्ष के स्वतन्त्र हो जाने के कारण आर्य समाज के कार्य का क्षेत्र और कार्य करने का अवसर दोनों में ऐसी असाधारण वृद्धि हो गई है कि जब तक हम अन्तर्मुख होकर उस पर विचार न करें हमारे लिए परिस्थिति के पूरे महत्व को समझना कठिन है।

भारत वासियों ने परतंत्रता के अभिशाप को उठा कर समुद्र में फेंक दिया तो संसार ने जाना और माना कि भारत में भी मनुष्य बसते हैं। स्वतन्त्रता ने भारतवर्ष, भारतवासी और भारतीय संस्कृति तीनों का आदर संसार में बढ़ा दिया है। आज आर्य धर्म के प्रचारक को संसार में लजाते हुए जाने की आवश्यकता नहीं है। वह सिर उठा कर संसार में जा सकता है और स्वतंत्र राष्ट्र का नागरिक होने के कारण निश्शंक भाव से आर्य धर्म का सन्देश सुना सकता है।

यह तो हुई विदेशों में प्रचार की बात। अपने देश में देखें तो गत दस मास के परिवर्तनों ने आर्य समाज की परिस्थिति को बिल्कुल बदल दिया है। यदि गम्भीरता से विचार कर देखा जाय तो वर्तमान समय में आर्य समाज भारतवासियों के धार्मिक और सांस्कृतिक स्वराज्य का प्रतीक है। आर्य समाज संसार को जो शिक्षा देना चाहता है वह मानव का प्राचीनतम आदेश है। उसकी आधारशिला वैदिक संस्कृति है। सुन्दरता यह है कि वह संदेश इतना प्राचीन होता हुआ भी उन्नतिशील है। सुधार हो उसके प्राण हैं। मूलरूप से सबसे प्राचीन और व्यवहार में निरन्तर प्रगतिशील यह आर्य समाज का असली रूप है। यदि आर्यसमाज के सदस्य और अन्य भारतवासी भी आर्यसमाज के इस रूप को पहचान लें तो उन्हें यह मानने में कोई संकोच न होगा कि स्वतंत्र भारत को जिस सांस्कृतिक और धार्मिक विचार धारा की आवश्यकता है, वह आर्य समाज के पास है। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का जो वार्षिक अधिवेशन अप्रैल १९४८ की २४ और २५ तारीखों में दिल्ली में हुआ उसमें देश भर से आये हुवे प्रतिनिधियों ने इसी दृष्टिकोण से आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर विचार किया। विधान सम्बन्धी विविध प्रश्नों पर विचार करके शीघ्र से शीघ्र रिपोर्ट करने के लिए लगभग डेढ़ दर्जन उपसमितियां बनायी गई हैं। इनके लिये जो काम लगाये गये हैं उनका विस्तार और महत्व निम्नलिखित कुछ समितियों की सूची से विदित होगा।

(१) आर्य समाज के उपनियमों की संशोधन समिति।

(२) आर्य वीरदल उपसमिति।

(३) विश्व में सभा उप-समिति।

(४) प्रचार प्रणाली में परिवर्तन करने विषयक उपसमिति।

(५) पञ्जाब सहायता कार्य उपसमिति।

(६) आर्य नगर (गाजियाबाद) निर्माण उपसमिति।

(७) सार्वभौम सभा उपसमिति।

तीन मास के अन्दर सभी उपसमितियों के निश्चय प्रधान के पास पहुंच जायेंगे और तब सभी की अन्तरंग-सभा योजनाओं को कार्य रूप में परिणत करने का उद्योग तत्काल आरम्भ कर देगी।

सभा के दो निश्चय विशेष रूप से महत्वपूर्ण हुए हैं। एक तो यह कि अखिल भारतीय सम्मेलन भारत के किसी न किसी भाग में प्रति वर्ष हुआ करे। प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं से पत्र व्यवहार हो रहा है। यह अधिवेशन कहां और कितने दिनों में होगा; इसका निश्चय शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा। दूसरा निश्चय यह है कि हर पांचवे वर्ष संसार के किसी न किसी भाग में सार्वभौम आर्य सम्मेलन हुआ करे।

मेरा विश्वास है कि स्वतंत्र भारत का धर्म आर्य धर्म ही होगा। लौकिक राज्य की चर्चा से घबराने की कोई बात नहीं, क्योंकि राज्य तो वस्तु ही लौकिक है परन्तु राज्य के लौकिक होने का यह अर्थ नहीं कि राष्ट्र का कोई मुख्य धर्म ही नहीं होगा। कोई चाहे या न चाहे भारतीय राष्ट्र का धर्म आर्य धर्म ही होगा। आर्य धर्म को प्रचार और परिष्कार द्वारा उस उच्च पद तक पहुँचाना आर्य समाज का कर्तव्य है।

—इन्द्र विद्यावाचस्पति

आर्यवीर हैदराबाद जाने को तय्यार

सार्वदेशिक सभा ने अपने वार्षिक अधिवेशन में निश्चय किया है कि इस समय निजाम हैदराबाद में उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिए जो संघर्ष चल रहा है और रजाकारों तथा अन्य प्रतिगामी शक्तियों द्वारा उसे कुचला जा रहा है उसमें जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए और शांति स्थापना में सहयोग देने के लिए ५००० आर्यवीर केन्द्रीय सरकार का आदेश पाते ही तुरन्त भेज दिये जाएं।

कल्याणी देवी और वेद

लगभग तीन वर्ष पूर्व धर्मशास्त्र विभाग के पण्डितों ने ब्राह्मण न होने के कारण कल्याणी देवी को वेद कक्षा में प्रविष्ट करने से इन्कार कर दिया था। इसके कारण काफी आन्दोलन भी चला, परन्तु विश्वविद्यालय के अधिकारी टस से मस न हुए। परन्तु हिन्दू विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने अब अपना निर्णय बदल दिया है और कल्याणी देवी को वेद कक्षा में प्रविष्ट करना स्वीकार कर लिया है।

१०००० वर्ष पुरानी आर्य संस्कृति पर प्रकाश

मद्रास प्रांत के बेलारी क्षेत्र के संगनकल्लु गांव में पुरातत्व सबंधी एक महत्वपूर्ण खोज हुई है जिससे भारत के सांस्कृतिक इतिहास में ईसा के ८ हजार वर्ष पूर्व के समय पर काफी प्रकाश पड़ता है। यह खोज पूना के डेक्कन कालेज एण्ड पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट के श्री सुब्बाराव द्वारा की गई है खुदाई करने पर आप को कुछ पत्थर के छोटे पाषाण शस्त्र मिले जो ६ हजार वर्ष पुराने बताए जाते हैं।

भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा ब्रह्मगिरी में (बेलारी के लगभग ४० मील दूर) खुदाई करने पर कुछ महत्वपूर्ण चीजें बरामद होने पर श्री सुब्बाराव ने उक्त स्थान पर लगभग १०० फुट ऊंची एक पहाड़ी की एक एकड़ भूमि अपने काम के लिए चुनी। गत दिसम्बर में आपने कार्य आरम्भ किया और दो फुट गहराई तक खुदाई न हुई होगी कि पत्थर की पालिश की हुई कुल्हाड़िया तथा अन्य औजार बनाने का एक आठ हजार वर्ष पुराना कारखाना बरामद हुआ।

सब से अधिक महत्व की चीज उन्हें दस फुट की गहराई में जाने पर प्राप्त हुई। उनमें कुछ ऐसी कूट यन्त्र की ढंग सभी वस्तें और छिद्रण प्राप्त हुए जो पाषाण अस्त्र निर्माण के काम में आते थे। साधारण परीक्षण के अनन्तर इन सब वस्तुओं को केम्ब्रिज विश्व विद्यालय के पुरातत्व ज्ञाताओं के पास जांच-पड़ताल के लिए भेज देना निश्चित हुआ।

११ सौ वर्ष पुराना संस्कृत लेख

हिन्देशिया की राजधानी बटावा (जोगजाकार्टा) के निकट परमबनम मन्दिर के ध्वंसावशेष में एक ११ सौ वर्ष पुराना स्वर्णपत्र मिला है जिसमें संस्कृत का लेख है। फलतः हिन्देशिया के शिक्षा और सांस्कृतिक विभाग की ओर से भारतीय पुरातत्व विशारदों को निरीक्षण के लिए आमंत्रित किया गया है।

हिन्देशिया में प्राचीन मंदिरों की शिल्पकारी पर हिन्दू संस्कृति की बहुत अधिक छाप है। हिन्दू संस्कृति का जावा तथा अन्य द्वीपों में प्रचार अर्वाचीन भारतीय इतिहास की प्रमुख घटना है। जावा द्वीप का सबसे प्रथम उल्लेख रामायण में 'यवद्वीप' के नाम से मिलता है। यह उन स्थानों में से एक है जहां सीता की खोज के लिए दूत भी गये थे। विभिन्न सूत्रों से प्राप्त हुए समाचारों से मालूम हुआ है कि हिन्दू तथा हिन्दुत्व से प्रभावित रियासतें जावा में पांचवी शताब्दी में स्थापित हुई जो भारतीय प्रवासियों के कारण बनी थीं।

आठवीं शताब्दी में जावा में ऐसे शासकों का सूत्रपात हुआ, जो शैव मतानुयायी थे। उनके शिलालेखों की भाषा संस्कृत है तथा लिपि 'कवि' है जो दक्षिण भारतीय लिपि से निकली है।

आठवीं सदी में मध्य जावा पर सुमात्रा की राजधानी श्री विजय के शैलेन्द्र शासक का अधिकार हुआ—ये लोग महायान बौद्ध थे। इनमें से एक श्री बालपुत्र देव ने नालंद में नवीं शताब्दी में एक बौद्ध विहार बनाया।

इसके बाद जावा के ब्राह्मण शासकों ने परमबनम में आठ मन्दिर बनवाये। इनमें चार मन्दिर ब्रह्मा, शिव विष्णु तथा नन्दी के हैं। मन्दिरों के चारों ओर रामायण के दृश्य अंकित हैं।

दसवीं शताब्दी में जावा की स्थानीय भाषा में रामायण तथा महाभारत के अनुवाद किये गये।

पन्द्रहवीं सदी में वहां इस्लाम ने प्रवेश किया और उसने अन्य सब मतों को स्थानान्तरित कर दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त का वार्षिक वृहद् अधिवेशन चामपुर जिला बिजनौर में आगामी ६ व ७ जून को हो रहा है। यह पहला अवसर है कि सभा का अधिवेशन कार्यालय के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर हो रहा है।

प्रतिनिधियों का एक दृश्य।

झण्डा समारोह।

जलूस का एक दृश्य।

स्वयंसेवकों का प्रदर्शन।

प्रमुख कार्यकर्ता।

ब्रिटिश न्याय

(पृष्ठ १२ का शेष)

के अपमान को प्रत्येक ग्रामीण ने अपना अपमान समझा। मामले की सूचना थाने में दी गई और थाने वालों ने मामला सैनिक अधिकारियों को सौंप दिया।

हिन्दुस्तानी अफसर बहुत कठोर होते हैं, यह बात तो माननी पड़ेगी। उन दिनों वहां की हिन्दुस्तानी टुकड़ी का अध्यक्ष कर्नल राजेन्द्रसिंह होता था। मामला उसी के पास पहुंचा।

कर्नल और सिपाहियों की नैतिकता के स्तर में जमीन आसमान का फर्क था। कर्नल ने बड़ी सख्ती से मामले की पड़ताल की और सब सिपाहियों को समझा दिया कि जो भी इस अपराध का अपराधी पाया जायगा उसे कोर्ट मार्शल करके गोली से उड़ा दिया जायगा।

पुलिस की ओर से लेडी डाक्टर ने इमाना की परीक्षा की और अपनी रिपोर्ट में बताया कि इमाना जो कहती है, वह सत्य है। उसके ऊपर अवश्य ही अमानुषिक अत्याचार किया गया है।

कर्नल ने अपने सब सिपाहियों को अपराधी की पहिचान-परेड के लिये खड़ा कर दिया। इमाना से कहा गया कि वह अपराधियों को पहिचान ले।

इमाना ने सब सिपाहियों को देखा और उसने मुस्कराते हुए उन तीनों सिपाहियों की ओर इशारा कर दिया, जिन्हें वह अपने जीवन भर न भूल सकती थी। इस दुरवस्था में भी इमाना की स्वाभाविक मुस्कराहट गई नहीं।

× × ×

अपराधियों के पहचानने के बाद इमाना घर लौट गई।

कर्नल सिपाहियों की नाड़ी पहिचानता था और सिपाही भी अपने कर्नल को पहचानते थे। थोड़ी ही देर में तीनों अपराधियों ने सारी घटना अपने ही मुंह से स्वीकार कर ली।

कर्नल ने पहले तो उन्हें खूब फटकारा और उसके बाद मामला अंग्रेज ब्रिगेडियर के सामने पेश कर दिया।

ब्रिगेडियर जोन्स साधारण अंग्रेजों से कुछ अधिक खराब न था, पर एशियावासियों के प्रति यूरोपियनों के मन में जो स्वाभाविक तिरस्कार होता है, उसकी उसमें कमी न थी। किसी एशियावासी पुरुष के जीवन और किसी एशियावासी नारी के सतीत्व का मूल्य आंकना अभी यूरोपियनों ने नहीं सीखा है।

'देखो कर्नल, अपनी सेना पर कलंक आये, ऐसी कोई बात हमें नहीं करनी चाहिए।' सब कुछ सुन कर ब्रिगेडियर बोला।

'जी ठीक है!' कर्नल ने सहमति प्रदर्शित करते हुए कहा।

'तो जो हो चुका, वह तो हो ही चुका। अब कोर्ट मार्शल करके उसका शोर मचाने से क्या लाभ है? सिवा तुम्हारी सेना की बदनामी के और क्या हाथ आवेगा?'

कर्नल अवाक् रह गया। कलंक न आने देने का यह उपाय उसके मन में नहीं था।

'पर तीनों सिपाही तो अपना अपराध स्वीकार कर रहे हैं?'

'यह उनकी सज्जनता है। मैं डाक्टर द्वारा अभी उनकी शरीर-परीक्षा करवा देखता हूं?'

उसने घंटी बजाई। एक सैनिक ने आकर अभिवादन किया। 'देखो, डाक्टर यामीन खां को मेरे पास भेज दो।' ब्रिगेडियर आदेश देते हुए कुर्सी पर से उठ कर खड़ा हो गया। कर्नल भी किंकर्तव्य-विमूढ़ सा अभिवादन करके बाहर निकल गया।

× × ×

उसके बाद की घटना बहुत संक्षिप्त है। डाक्टर यामीन खां ने तीनों व्यक्तियों के शरीर की परीक्षा करके कर्नल को रिपोर्ट दी कि तीनों अभियुक्तों के शरीर पर कोई भी ऐसा चिह्न नहीं है, जिससे उन पर लगाया गया अभियोग प्रमाणित हो सके।

'परन्तु डाक्टर, तीनों अभियुक्त कहते हैं कि अपराध उन्होंने किया है।' कर्नल ने रिपोर्ट को पढ़ कर कहा।

'देखो कर्नल, डाक्टर मैं हूं या तुम?'

'डाक्टर तो तुम्हीं हो।'

'हां तो मेरी रिपोर्ट है कि तीनों अभियुक्त बिलकुल निर्दोष हैं। उनके विषय में कोई डाक्टरी प्रमाण मुझे नहीं मिला।'

इस डाक्टरी रिपोर्ट के बाद कोर्ट मार्शल हुआ। तीनों अभियुक्त निरपराध कह कर छोड़ दिये गये।

'यह है ब्रिटिश न्याय की कहानी।' कहते कहते फूलीमारा का स्वर रुद्ध हो उठा।

क्षण भर के लिए वह रुक गया। और उसके बाद एक लम्बा सांस छोड़ कर बोला 'परन्तु इस हिन्दुस्तानी वीरता और इस ब्रिटिश न्याय का उपहास करते हुए अगले ही दिन सुन्दरी इमाना ने हाराकिरी कर ली। हम निपन वासियों के पास हाराकिरी ही एक ऐसा पारस मणि है जो बड़े से बड़े अपमान को सम्मान में रूपान्तरित कर देता है।

घरेलू उद्योग से ही समस्या हल होगी

[श्री रामचन्द्र तिवारी बी० एस० सी०]

देश के सम्मुख समस्या पुनर्निर्माण की नहीं, प्रारम्भिक निर्माण की है। देश में वस्त्र, लोहा, चीनी और रेलवे ही विशाल और उन्नत उद्योग है और उनका क्षेत्र भी पर्याप्त उन्नत और व्यापक नहीं है। देश के प्रति व्यक्ति की औसत आय अमरीका की १४०० और कनाडा तथा ब्रिटेन का १००० के मुकाबले में १०० के लगभग है। कुछ व्यक्तियों के स्वच्छ वस्त्र तथा आयात निर्यात के आकड़े देख कर अर्थशास्त्री निश्चय कर लेते हैं कि देश का जीवन स्तर ऊंचा उठ गया है। पर वास्तविकता यह है कि जब कि १८८० में व्यक्ति का औसत भोजन १२ छटांक था आज वह छः छटांक के निकट है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि देश की तिहाई जन संख्या अधभूखी रहती है, और अपर्याप्त खाद्य से उत्पन्न रोगों ने देश में घर बना लिया है। पूंजीवादी, साम्यवादी अथवा गांधीवादी सभी विचारक एक मत हैं कि देश की दरिद्रता की यह समस्या उद्योग धंधों, जिन में कृषि भी सम्मिलित है, का उत्पादन बढ़ाने से ही हल हो सकेगी। १८७२ में देश की ५६ प्रतिशत जनता खेती पर निर्वाह करती थी। पर १८८० में बढ़कर यह ८७ प्रतिशत हो गई। इन आठ वर्षों में देश के उद्योग का घोर विनाश हुआ। आज योरोप में ३६.६, अमरीका में १८.१, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में २५ प्रतिशत व्यक्ति कृषि से जीविका कमाते हैं जबकि भारत में ७३ प्रतिशत जन संख्या कृषि पर निर्भर करती है। यदि भारतीय संघ की जन संख्या को ३३ करोड़ समझलें तो स्पष्ट है कि २५ करोड़ जन कृषि से जीविका कमाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था संतुलित करने के लिए आवश्यक है कि आठ करोड़ व्यक्तियों को उद्योग धंधों में लगा दिया जाये। यदि पांच जनों का एक परिवार मान लिया जाय और प्रति परिवार में दो स्वस्थ व्यक्ति काम करने वाले हों तो हमें ३ करोड़ २० लाख जनों को काम देना होगा। हम जानते हैं कि देश के बड़े उद्योगों में जितने व्यक्ति काम करते हैं उनकी संख्या ३० लाख है। स्पष्ट है कि सवा तीन करोड़ व्यक्तियों को केन्द्रित बड़े उद्योगों में शताब्दियों कार्य नहीं दिया जा सकेगा।

तब क्या किया जावे? जलविद्युत् के उत्पादन के लिए रुका जावे। पर उसमें पचास वर्ष लगेंगे और यह शक्ति भी समस्त देश के लिए अपर्याप्त ही रहेगी, उतने समय के लिए अकर्मण्य बैठना पाप ही होगा। फिर क्या किया जावे? सवा तीन के स्थान पर पांच करोड़ व्यक्तियों को ऐसा काम दें जो वे अपने वर्तमान प्रमुख व्यवसाय कृषि आदि के साथ २ कर सकें। ऐसे घरेलू उद्योगों में निम्न लिखित गिनाये जा सकते हैं—कपड़ा, बिजली का छोटा सामान, हुक, पिन, बटन, लकड़ी के खिलोने, तैयार वस्त्र, विशेष प्रकार के कागज, चूड़ियां, वस्त्रों की छपाई, साबुन, शृंगार की वस्तुयें, दरी, गलीचे, आचन, नीबू का सत, शहद, अचार, मुरब्बे, फलों के रस, और ऐसे कितने ही उद्योग जिन के लिए देहात में कच्चा माल उपस्थित है और जो बेकार जा रहा है। प्रांतीय घरेलू उद्योग विभाग इस कार्य को तुरन्त हाथ में ले सकते हैं। पर इस संगठन में सफलता प्राप्त करने के लिए दो क्षेत्रों में कार्य करना आवश्यक होगा। इस विभाग को सब तैयार माल उत्पादकों से खरीद लेना होगा और उसे बेचने के लिए अखिल भारतीय क्षेत्र में प्रबन्ध करना होगा। पर यह माल बिकने योग्य तैयार हो इसलिए उन्हें इस विभाग को उन चतुर कारीगरों और वैज्ञानिकों के हाथ में सौंपना होगा जो प्रत्येक उद्योग की कठिनाइयों को शाब्दिक शिक्षा द्वारा नहीं, उद्योगी के यहां वास्तविक रूप में दर्शा कर हल करने की क्षमता रखते हों; जो बजार के योग्य वस्तुयें तैयार करवा सकें। घरेलू उद्योगों की परम्परा को पुनः भली भांति स्थापित करने के लिए इन लोगों में प्रचारक उत्साह और उद्योग के चरम कौशल की आवश्यकता है। इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए १०,००० व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। और यह आवश्यकता योजना के विस्तार के साथ बढ़ती जावेगी। इन उद्योग कुशल व्यक्तियों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक स्कूल में किसी न किसी उद्योग की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जावे। शिक्षा का माध्यम तुरन्त स्थानीय भाषा को बना दिया जाय। विज्ञान में विशेषज्ञता की शिक्षा बी० एस-सी० से प्रारम्भ कर दी जावे। देहाती स्कूलों में स्थानीय उद्योगों की शिक्षा अनिवार्य कर दी जावे। इस प्रकार जो उद्योग कुशल व्यक्ति प्राप्त हों उनका वेतन इतना होना चाहिए कि सरकारी बाबू बनने की अभिलाषा ही उनके मन से निकल जाये। जब तक इस प्रकार छोटे उद्योग बड़े उद्योगों के उत्पादन को उपयोग में लाने के लिए नहीं बन जाते, बड़े उद्योग स्वयं पैरों पर खड़े न हो सकेंगे। इस विषय में सोचते समय हमें अपनी दृष्टि शास्त्र विशेष के सिद्धांतों पर नहीं, चिर-अधभूखे मनुष्यों पर रखनी होगी। समाधान का सब से बड़ा महत्व इसमें है कि उसका उपयोग यथा सम्भव तत्कालिक हो और लाभ अधिकाधिक व्यापक हो।

DADMAR
JEPIKA CHEMICAL
मशहूर दवा
दादमार
दाद खुजली छाजन के लिये

भुसावली केले

[श्री द्वारकाप्रसाद अवस्थी]

दोपहर का समय था। चाचा जी आंगन में एक मोढ़े पर बैठे हुक्का गुड़-गुड़ा रहे थे। चाची पड़ोसिन के यहां गई थीं। रम्मू और मुन्नी स्कूल में क्रिकेट-मैच के लिये बुलाये गये थे। घर में अकेले चाचा और उनका 'जी हुजूर' लछमनिया मौजूद था।

चाचा ने जो जरा एकान्त पाया तो इतमीनान से, हुक्के की एक गहरी कश खींचते हुए मूढ़े पर बैठ गये। लछमनिया बड़ी देर से एक थाली साफ कर रहा था। चाचा भी काफी देर से उसे देख रहे थे। जब उनका गुस्सा रोके न रुका तो उबल ही पड़े—'अबे, लछमनिया घर से इमली लाकर उसमें रगड़, रेत के पुरखों से कभी थाली साफ हुई है ?'

लछमनिया उठा और इमली लाकर थाली रगड़ने लगा। इसी समय बाहर दरवाजे पर फल बेचने वाले ने 'भुसावली केले' की आवाज लगाई। चाचा ने मन में सोचा—'ये भुसावली केले कुछ आगे दर्शन मिलते हैं क्यों न खाये जायें। तुरन्त लछमनिया से बोले—'जा केले का भाव पूछ आ—अगर तीन आने दर्जन दे तो ठहरा लेना, वर्ना……।'

थोड़ी देर में लछमनिया आ गया कि बेचने वाला तीन आने दर्जन पर राजी हो गया—वह केले भी लेता आया।

नौकर ने केले रख दिये और थाली की सफाई में जुट गया। इधर चाचा ने सोचा—'अच्छा तो एक दर्जन केले यानी बारह केले हैं और खाने वाले कितने, हम, रम्मू की अम्मा, रम्मू और मुन्नी, बस चार ही हुए। चाचा ने अपनी

… थाली खरीदो। हूं। ठीक है, अच्छा अब नौ केले बच रहे और खाने वाले तीन हैं, अर्थात् तीन तिगुने ६। हर एक को तीन-तीन मिलेंगे। लेकिन एक दूसरी समस्या हमारे दिमाग में आ रही है। बच्चों में दूसरे चाहे हजार ऐब हों लेकिन वे हम को छोड़कर केले कभी नहीं खायेंगे। रम्मू की अम्मा तो केलों की तरफ आंख उठाकर भी न देखेगी। फिर खाने को कौन कहे ? हमको भी सब खाने के लिये कहेंगे, तो सब का दिल तोड़ना ठीक न होगा, हम को भी सबके साथ खाना पड़ेगा। तब तो मजा होगा … नौ केले और खाने वाले चार ? प्रत्येक को दो दो केले आजायेंगे बाकी था एक बच रहा ! उसे मैं अभी खत्म कर डालूं हां … "तो मेरे भाई लछमन, उठो जरा एक केला हम को ला दो।"……

लछमन ने एक केला निकाल कर चाचा के हवाले किया — उसे छीलते हुए चाचा बड़बड़ाने लगे —

'बेवकूफ कहीं का, अब इमली लेकर उस लोटे को और कमण्डल को रगड़…।'

हां, तो अब कितने केले बच रहे ? आठ केले और खाने वाले चार हैं। हर एक के हिस्से में दो दो पड़े। लेकिन भाई हम तो अपना हिस्सा अभी खाये डालते हैं। कहा भी है जब मन हो तभी खाना भी अच्छा लगता है। यही भुसावली केले हमने सैकड़ों बार दुकानों पर रखे देखे, पर हम ने कभी आंख उठाकर भी नहीं देखा और आज जो मन हुआ तो खाने बैठ गये — क्या पता अभी खाने को मन है पीछे न रहे ! और हमारी मर्जी, किसी के साथ न खावें तो क्या होगा। आकर अपना अपना हि… रहेंगे। … हां तो लछमन उठो और मेरे हिस्से के … बाकी … …

मिलेगी और रम्मू की अम्मा खूब ढूंढ ढूंढ कर खायेगी तो हमारे इन केलों को कौन पूछता है। इसी तरह रम्मू और मुन्नी क्रिकेट में गये हैं। वहां मेचवालों ने सब विद्यार्थियों को खूब बढ़िया २ तर माल खिलाया होगा। बच्चे हैं, कहीं इतना अधिक न खा गये हों कि मुझे फीस देकर डाक्टर को बुलाना पड़े। घर आयेंगे तो उस बढ़िया माल के आगे हमारे इन केलों की बिसात क्या है …… इससे तो अच्छा है मैं ही उन्हें पेट के हवाले करूं। उठ तो लल्लू सब केले यहीं ले आ ……

लल्लू ने छः केले लाकर चाचा जी के सामने रख दिये। चाचा जी सब को नमस्कार पेट के हवाले करने लगे और बड़बड़ाने लगे।

'अगर मैं जानता कि वहां तो बढ़िया-बढ़िया तर माल खाने को मिलेगा, मेरे इन केलों को कौन पूछेगा तो मैं केले लेता ही नहीं, नाहक में यहां की व्यर्थ में चार आने पैसे खर्च किये, तिस पर भी कुछ स्वाद न मिला।'

दूसरे दिन चाचा जी को सरदी हो गई थी और वे केले वाले के भुसावली ससुर को ताबड़ तोड़ गालियां दे रहे थे।

बना-रस

बहुत दिनों की बात है कि काशी में एक हलवाई रहता था, उसकी दूकान काशी के एक कोने में थी। हलवाई का नाम था भोला। भोला सिर्फ रस-गुल्ले ही बनाता था और रसगुल्ले के लिए वह दूर दूर तक प्रसिद्ध था।

एक दिन की बात है कि एक अंग्रेज उस दूकान पर आ… से भोला —" दिल सि… नाम… …

… एकत्र करके एक कपड़े में बांध लेता था और जब वह चमकते थे, तब उनके प्रकाश से पढ़ लेता था। लोगों ने उससे कहा कि तुम यह क्या भद्दी चेष्टा करते हो, ऐसा परिश्रम किस लिए करते हो ? क्या बादशाह के वजीर तुम ही बनना चाहते हो ? हा हा हा ! उसने क्या उत्तर दिया, जिसको सुन कर सब का चित्त प्रसन्न हो गया। कहता है, मेरे हृदय में ऐसी उमंगें उठती हैं जिससे आशा बंधती है कि मैं वजीर बनूंगा। अन्त में वह लड़का चीन का वजीर हो हो गया।

बन्धुओ ! परिश्रम ही दुनियां की सबसे बड़ी चीज है।

— प्रमीला भटनागर

'प्रश्न पहेली'

१ – चून चून कर मुझको लाओ !
अथ कटोरा दूध नहाओ ॥
लाला ! झट से नाम बताओ !
या "हूं मूर्ख" मान जाओ ॥

२ – पांच अक्षर का नाम सुहाता !
पहले दो, से 'राजा'
के सिर चढ़ जाता ॥
शेष तीन से 'महल' बन जाता !
हूं मैं, 'उत्कृष्ट' कहलाता ॥

३ – वकील, मुनीम, मजदूर !
सबके काम में आता !
मस्तक कटे,—'क' बन जाता ॥

४ – अति, ऊंचा, पर तीन
अक्षर का मम नाम !
सिर काटो तो हूं लेखों का काम !

उत्तर — १. आम, २. ताजमहल, ३. डंक ४. महल,

— देवेन्द्र सक्सेना

'००) इनाम

है तो केवल ऑमलेट —

परन्तु डालडा में बनाने से कितना स्वादिष्ट !

अन्डे की सफेदी को अन्डे के पीले भाग से पृथक करें और सफेदी को गाढ़ा होने तक फेंटिये, फिर अन्डे के पीले भाग को इस में मिलाकर ५ मिनिट तक फेंटिये। इस में कतरे हुए प्याज, कम कुचले हुए मटर अथवा टमाटर के बारीक बारीक टुकड़े, नमक और काली मिर्च स्वादिष्ट बनाने के लिये डालिये। एक तवे पर डालडा को गरम कीजिये और इस में यह मिलाव उँडेलिये। एक तरफ कुछ लाल होने तक तलिये फिर दोहरा कर के पलट दीजिये। दूसरी ओर भी पहिली तरह लाल कीजिये और गरम गरम परोसिये। आप इसे स्वादिष्ट पायेंगे।

अफीम की आदत छूट जायगी। अब अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कल्प बटी" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स पांच रुपया डाक खर्च पृथक। **शिवालय कैमीकल फार्मेसी हरिद्वार।**

कोमल चमड़ीके दाग निकालनेके लीये बादशाही साबुन पावडर लोशन

राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाइये और उसकी उन्नति में हाथ बटाइये

२००१) दिनेश पहेली नं० १५ में प्राप्त कीजिये।

१०००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, ८५०) न्यूनतम १ अशुद्धियों तक। विशेष पुरस्कार—२५), १५), और १०) क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियां भेजने वालों को और १०१) सर्व प्रथम प्राप्त विद्यार्थी के शुद्ध उत्तर पर अधिक दिये जावेंगे।

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख १ जून १९४८ ई०।

१ रा	२ म	३ ग	ज्य	■	४	न
	न	क	■	५ का		क
दू	ा		६ उ	प	ो	ग
त	बा	स	■	७ वि	ा	न
■	■	■	८ वि	९	रो	मा
१०	न	■	ा	■	११ ा	ई
१२ क	ा	का	र	■	१३	ता

संकेत बायें से दायें

१. यह भारतवर्ष के शासन का आदर्श है। ४. इसको वश में रखना साधारण व्यक्ति का कार्य नहीं है। ५. महात्मा जी के "......" का भेद अभी तक भी पूर्ण रीति से ज्ञात न हो सका। ६. विलासिता की सामग्री का "......" आजकल बहुत किया जाता है। ७. "..." जितना सुन्दर बनेगा उतनी बड़ाई पायेगा। ९. शत्रु का "..." कभी नहीं करना चाहिए। १०. एक प्रकार की सभा। ११. कभी कभी इसके न मिलने पर भी लोग कठिनाई में पड़ जाते हैं। १२. पढ़े लिखे लोग अच्छे "..." का बड़ा आदर करते हैं। १३. चालाक मनुष्य अपना "...." किसी को नहीं बताता।

संकेत ऊपर से नीचे:—१. जनता में इनका भी बड़ा मान है। २. मनोनुकूल। ३. पहले बहुत मिलते थे आजकल कम पाये जाते हैं। ८. यह भी मनुष्य जीवन में बड़ा परिवर्तन कर देता है।

नियमावली:—एक नाम से एक पूर्ति का शुल्क १।।), इसके पश्चात् प्रत्येक पूर्ति का ।।) जो मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर (बिना क्रास) द्वारा भेजा जाये। म. आ. की रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। सादे कागज पर पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। पूर्तियों के अन्त में और मनीआर्डर कूपन पर पता हिन्दी में अवश्य लिखें। जो व्यक्ति एजेण्टों की प्रेरणा से ...यों के नीचे प्रेरक के नाम का उल्लेख अवश्य कर दें। प...

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३४] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) **न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)**

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस [illegible] भाग के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम..........

पता..........

ठिकाना.......... उत्तर नं०..........

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम..........

पता..........

ठिकाना.......... उत्तर नं०..........

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम..........

पता..........

ठिकाना.......... उत्तर नं०..........

तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ण चाहे एक की, दो की या तीनों की भरे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जासकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रि[illegible] कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है [illegible] कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर ३१ मई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २६ मई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के [illegible] न के बाद यदि कि[illegible]

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २१ मई १९[illegible]

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ दे[illegible]

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों [illegible]

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थ

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन

मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❋ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४ १० प्रतिशत
सन् १९४५ १० „
सन् १९४६ १५ „

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १२ जेठ सम्वत् २००५

शरणार्थियों की विकट समस्या

पिछले दो चार महीनों में भारत व पंजाब सरकार के शरणार्थी विभागों की ओर से समय समय पर जो योजनाएं, विज्ञप्तियां और वक्तव्य निकलते रहे हैं, उन्हें पढ़ कर कोई भी यह जान सकता है कि शरणार्थियों की समस्या कितनी विकट और दुरूह है। इन सरकारी विज्ञप्तियों से यह भी ज्ञात हो सकता है कि सरकारी कर्मचारियों का एक बहुत बड़ा भाग शरणार्थियों को सुविधा पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहा है। उन पर व्यय होने वाली रकम भी लाखों और करोड़ों तक पहुंचती है। लेकिन वस्तुस्थिति इस से भिन्न है। पश्चिमी पंजाब, सीमाप्रान्त और सिंध आदि से हजारों लाखों हिन्दू शरणार्थियों को आये करीब आठ दस मास होने आये, किन्तु आज भी शरणार्थियों की समस्या वैसी ही विकट है। जब ये लोग पाकिस्तानी गुंडों से किसी तरह अपने प्राणों की रक्षा करके भारत आये थे, उस समय उनके सामने केवल एक ही लक्ष्य था किसी तरह अपने और अपने परिवार की जीवन व सम्मान की रक्षा। इस में संदेह नहीं कि भारत सरकार ने उस समय असाधारण तत्परता से काम किया और सैंकड़ों बाधाओं को पार करके ४० लाख पीड़ित और त्रस्त लोगों को अत्यन्त कुशलतापूर्वक भारत पहुंचा दिया। यही तात्कालिक उद्देश्य था और इसमें सफल होने पर लाखों हिन्दू सिक्खों ने भारत सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। वस्तुतः भारत संघ में प्रवेश करने के बाद वे कम से कम अपने प्राणों और अपने परिवार की प्रतिष्ठा के विषय में निश्चिन्त हो गये और उनकी प्रसन्नता के लिए यह पर्याप्त था।

इस के ठीक बाद ही समस्या का दूसरा रूप यह आया कि उन्हें अस्थायी तौर पर कहीं न कोई निवास के लिए स्थान दिया जाय। स्थान स्थान पर बड़े बड़े शिविर लगाये गये। इस काम में भी भारत व पंजाब सरकार के करोड़ों व्यय हुए। यह काम और भी कठिन था। पर इसे भी पूर्ण करने का प्रयत्न किया गया। सर्दियां सिर पर थीं और लोगों को आसमान में सोने नहीं दिया जा सकता था। इस लिए स्थान स्थान पर हजारों तम्बू लगाये गये, शरणार्थियों को मुफ्त राशन दिया गया, लाखों रजाइयां और कम्बल आदि बांटे गये, हस्पताल खोले गये। लेकिन इन सब प्रयत्नों के बावजूद यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसमें सफलता बहुत कम मिली। इसके दो मुख्य कारण थे। एक यह कि साधनों का अभाव था और दूसरा यह कि अनेक स्थानों पर कार्यकर्त्ता अधिकारी बहुत परिश्रमी व समझदार न थे।

सर्दियां भी बीत गईं और उसके साथ ही समस्या का तीसरा रूप सामने आया कि न इस तरह सरकार ही अनन्त काल तक लोगों के निवास और भोजन का प्रबन्ध कर सकती है और न शरणार्थी ही इस तरह अपना जीवन बिता सकते हैं। उन्हें निश्चित स्थान देने की आवश्यकता है, जहां वे अपना साधारण जीवन क्रम फिर से स्थापित कर सकें। पंजाब से बाहर रहने वाले यह नहीं जानते कि पश्चिमी पंजाब का निवासी हिन्दू मध्य श्रेणी का था, वह छोटा बड़ा व्यापार करता था, जमींदारी करता था या सरकारी नौकरी करता था। दो-एक सिक्खों को छोड़ कर मजदूर व किसान वहां अधिकांश मुसलमान थे। अधिकांश के पास अपने छोटे या बड़े घर थे। इन लोगों को बसाने के लिए यह आवश्यक था कि उन्हें जमीन दी जावे, मकान दिये जायं और कारोबार चलाने के लिए रुपया दिया जाय। समस्या का यही सब से कठिन रूप था और यहीं सरकार बुरी तरह फेल हो गई।

ब्रिटिश सरकार का दफ्तरी शासन चक्र अभी तक नहीं बदला है। एक के बाद एक अफसर और एक के बाद कमेटी की घोषणा तो बहुत हुई, किन्तु आज यह कटु सत्य है कि परनाला वहीं पर है। अभी तक पंजाब सरकार नई राजधानी का काम शुरू नहीं कर पाई, दिल्ली के आस पास जो उपनगर बनने जा रहे थे, अभी तक उनमें से किसी एक योजना पर भी अमल नहीं हुआ। छोटे से छोटे प्रश्न की फाइलों का अम्बार लग जाता है, किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकलता। अब तक पंजाब सरकार यह भी तय नहीं कर पाई कि किस जिले व तहसील को कहां बसाया जाय। सरकारी दफ्तरों की इस अंधेर गर्दी और अधिकारियों की किंकर्त्तव्य विमूढ़ता से लाखों शरणार्थी परेशान हैं। जो कुछ चतुर थे, वे तो नियम अनियम की परवा किये बिना कहीं न कहीं बस गये हैं, किन्तु साधारण भोली भाली जनता अपने साथ जो कुछ थोड़ा बहुत धन लाई थी, उसी को समाप्त कर रही है।

शरणार्थियों को जमीन मकान मिलने में सब से बड़ी कठिनता यह है कि हमारी सरकार के नेता अभी तक स्थिति को यथार्थ रूप में नहीं देख पाते हैं। वे आदर्शवाद के आवरण से बंधे हुए हैं और इसी लिए स्थिति का सामना नहीं कर पा रहे हैं। शरणार्थियों को बसाने का सब से सीधा और सरल उपाय यह था कि यहां से पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों की सम्पत्ति का विभाजन उनमें किया जाता। किन्तु हमारी सरकार आज भी यह आशा लगा रही है कि भारत व पाकिस्तान में समझौता होगा और सब अपने अपने स्थानों को वापस जायेंगे। यह हो जाय, फिर सभी भाई अपने-अपने घर लौट जावें, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है, किन्तु हमारी सदिच्छाएं पूर्ण नहीं होतीं। पाकिस्तान सरकार आज भी हिंदू नागरिकों के साथ अत्याचार कर रही है, इस कारण यहां से कोई भी पश्चिमी पंजाब जाने को तैयार नहीं होता और इसके विपरीत भारत सरकार की उदार नीति और जनता की शान्ति व सहिष्णुता के कारण पाकिस्तान जाकर तीन लाख के करीब मुसलमान भारत वापस लौट आये हैं। इस कारण यहां शरणार्थियों की समस्या और भी विकट हो गई है। मुसलमानों की ही जायदाद उन्हें बांटी जानी थी और वे यहां वापस पहुंच रहे हैं। अब लाखों शरणार्थियों को कैसे बसाया जाय?

इस समस्या के दो ही उपाय हैं। एक तो यह कि मुसलमानों को यहां वापस न आने दिया जाय और दूसरा यह कि पाकिस्तान पर दबाव डाल कर इस काम के लिए उसे विवश किया जाय कि वह यहां आने वाले शरणार्थियों को वापस बुलाने के लिए उचित वातावरण व परिस्थिति पैदा करे। हर्ष की बात है कि भारत सरकार ने इनमें से प्रथम मार्ग को स्वीकार कर लिया है और मुसलमानों के भारत लौटने पर पाबन्दी लगा दी है। पर हम यह कहना अवश्य चाहते हैं कि इस नये निश्चय का पालन दृढ़ता से करना होगा, तभी अभीष्ट फल होगा। हम तो यहां तक कहना चाहते हैं कि पाकिस्तान सरकार पर इस बात के लिए दबाव डालना चाहिए कि या तो वह हिन्दू सिख नागरिकों को वापस बुलावे, अथवा उनकी छोड़ी गई जायदाद का मुआवजा पश्चिमी पंजाब के क्षेत्र से दिया जाय। बिना दृढ़ता दिखाये शरणार्थियों की समस्या का सन्तोषजनक समाधान नहीं किया जा सकता।

समझौते की विफल चेष्टा

अमेरिका व रूस इन दोनों प्रमुख शक्तियों पर आज विश्व की शान्ति या अशान्ति निर्भर करती है, यह आज ध्रुव सत्य है। इसी लिए जब दोनों में समझौते की बातचीत चलने की चर्चा निकली, तब स्वभावतः युद्ध और विभिन्न संकटों से ग्रस्त साधारण जनता आशा की किरण देखने लगी। किन्तु यह आशा सत्य सिद्ध नहीं हुई। इस सम्बन्ध में विस्तृत समाचार पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे। समझौते की इस बातचीत के असफल होने के कारण समस्या और विषम हो गई है तथा साधारण जनता भावी युद्ध की आशंका से, भले ही वह अत्यन्त निकट न हो, सशंक होने लगी है। वह यह देख कर आश्चर्यित जरूर होती है कि आखिर रूस व अमरीका समझौते की बातचीत भी क्यों नहीं शुरू करते। इस सम्बन्ध में वक्तव्य प्रति वक्तव्य आदि को पढ़ने से कुछ उन समस्याओं की जानकारी अवश्य हो जाती है, जिनके कारण रूस और अमेरिका एक दूसरे का मुख देखना भी पसन्द नहीं करते। लेकिन इसके साथ ही यह भी आभास हो जाता है कि दोनों ही पक्ष अपराधी हैं। अनेक प्रश्नों पर रूस गतिरोध कर रहा है तो अनेक प्रश्नों पर अमेरिका सुरक्षा समिति में, संयुक्तराष्ट्र संघ अथवा बर्लिन या जापान नियन्त्रण समिति में अपने बहुमत का लाभ उठा लेना चाहता है। रूस सम्भवतः इसी कारण उनमें अविश्वास करता है, किन्तु विश्व के बहुमत के आगे सिर झुकाये बिना शान्ति भी तो नहीं हो सकता। केवल वीटो का दुराग्रह शान्ति स्थापित करने में सहायक नहीं हो सकता। इससे तो समस्याएं अधिक विकट होती हैं। दूसरी ओर अमरीका ने बातचीत के प्रस्ताव को ही अस्वीकृत करके शायद मार्शल योजना के क्रिया में परिणत होने व उसके परिणाम की प्रतीक्षा करने का विचार किया है। रूस शायद इटली व कोरिया के चुनावों में अपनी असफलता से चिन्तित है। इसी लिए वह सन्धि के सब प्रयत्नों में बाधक बन कर भी आज हेनरी वालेस के प्रस्तावों को बातचीत का आधार मान गया है। देखना यह है कि अमेरिका सन्धि चर्चा के इस अवसर को खोकर लाभ उठाता है या क्षति? इसका उत्तर मार्शल योजना की सफलता पर निर्भर करता है।

आज भी

पाकिस्तान के विदेशमन्त्री सर जफरुल्ला ने एक वक्तव्य में बताया है कि पाकिस्तान की ओर से विदेशों में जो १२ दूत रखे गये हैं, उनमें से आठ गैर-पाकिस्तानी हैं। गैर पाकिस्तानी का अर्थ यहां ईरान व अफगानिस्तान से नहीं है, केवल भारतीय संघ के मुसलमानों से है। पिछले दिनों आगरा में दो मुसलमान पाकिस्तान के गुप्तचर के रूप में पकड़े गये हैं। लखनऊ में कुछ मुसलमान हाल ही में बम आदि रखने के अपराध में गिरफ्तार किये गये हैं। इसी तरह अन्य भी समाचार समय समय पर मिलते रहते

फिलस्तीन में रणभेरी

इस सप्ताह फिलस्तीन ने समस्त संसार का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। २५ साल तक शासन करने के बाद ब्रिटेन ने १४ मई को अपनी सेनाएं वापस बुला लीं और यहूदियों ने इसरायल राष्ट्र की घोषणा कर दी। इस के साथ ही अरबों ने यहूदियों पर आक्रमण कर दिया।

यह सब सम्भावित था, किन्तु तुरन्त अमरीका द्वारा इजरायल को स्वीकार कर लेना आश्चर्यजनक घटना थी। रूस व उसके साथी राष्ट्रों ने भी उसे स्वीकार कर एक नया आश्चर्य पैदा कर दिया। ब्रिटेन का इस प्रश्न पर अमरीका से विरोध तीसरा आश्चर्य था। पाठक इस सम्बन्ध में एक विस्तृत लेख पृष्ठ ७ पर पढ़ेंगे। उससे उन्हें इसकी आवश्यक जानकारी मिल जायगी।

चीन में

फिलस्तीन का युद्ध तो अभी प्रारम्भ हुआ है, किन्तु चीन का गृह युद्ध तो दीर्घकाल से चल रहा है। नये समाचारों से ज्ञात होता है कि चीन में लाल सेनाओं का जोर बढ़ रहा है। दक्षिणी जेहोल प्रान्त के पतन की सम्भावना किसी भी दिन की जा रही है। इधर चांगकाईशेक ने प्रथम वैधानिक राष्ट्रपति के रूप में २० मई को शपथ ली है।

काश्मीर में

विदेशी रणक्षेत्र की बात छोड़ कर अपने देश में आयें तो काश्मीर के मोर्चे पर भारतीय सेनाएं सफलता प्राप्त कर रही हैं। आक्रमणकारी स्वयं कुछ भी करने में असमर्थ होकर पाकिस्तान से सहायता मांग रहे हैं। सुरक्षासमिति ने जनमत-संग्रह के लिए जो कमीशन भेजना था, उसके सदस्यों की घोषणा हो चुकी है, किन्तु भारत सरकार ने मत-

ग्रहण के प्रबन्ध के लिए सुरक्षासमिति द्वारा नियुक्त किसी भी शासक के प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया है। इसलिए इस शासक के अधिकारों के संबंध में भी कोई चर्चा करना व्यर्थ समझा है। अब देखें सुरक्षासमिति क्या निर्णय करती है।

पाकिस्तान से भारत लौटने वाले मुसलमानों पर रोक

भारत में फिर से बसने के लिये दल के दल बांध कर पाकिस्तान से आने वाले मुसलमानों के कारण सरकार की पुनर्निवास की समस्या और भी कठिन हो गई है। इस पर गम्भीर विचार के पश्चात् भारत सरकार ने एक प्रेस विज्ञप्ति में घोषणा की है कि उसने इस प्रकार से एकत्रित हो कर आने वाले मुसलमानों पर पाबन्दी लगा दी है।

विज्ञप्ति में यह भी कहा गया है कि सरकार मुसलमानों द्वारा छोड़ी गई उस सम्पत्ति को लौटाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लेगी जिसे गैर मुस्लिम शरणार्थियों की पुनर्निवास योजना के लिये चुन लिया गया है हालांकि सरकार उन व्यक्तियों का स्वागत करेगी जो किसी सरकारी कार्य या थोड़े समय के लिये आना चाहते हैं।

पाकिस्तान सरकार को सूचना दे दी गई है कि सरकार के लिए यह सम्भव नहीं कि वह केवल पाकिस्तान से लौटने वाले व्यक्तियों को ही भारत में बसाती रहे। ज्ञात हुआ है कि इस विषय में शीघ्र ही दोनों उपनिवेशों की एक बैठक में विचार विनिमय किया जायगा। इस बैठक में यह भी विचार किया जायगा कि दोनों उपनिवेशों में शरणार्थी किस प्रकार अपने अपने घरों को लौट सकते हैं।

सरकार की ऐसे शरणार्थियों को रोकने की इच्छा नहीं है जो पाकिस्तान से किसी कार्य वश या थोड़े समय के लिए भारत आना चाहते हैं। परन्तु वह रेल, मोटर या अन्य प्रकार से आये हुए उन मुसलमानों को रोकेगी जो दल के दल बना कर भारत लौट रहे हैं। सरकार ऐसे शरणार्थियों के विषय में भी विचार कर रही है जो दगों के समय भारत के दूसरे भागों में चले गये थे और अब अपने घरों को लौटने की इच्छा प्रगट कर रहे हैं। यह निर्णय कर लिया गया है कि ऐसे व्यक्तियों की सम्पत्ति उन्हें लौटा दी जायगी क्योंकि यह सम्पत्ति लौटा देना उचित है। शरणार्थियों की सम्पत्ति के कस्टोडियनों को इस निर्णय की सूचना दे दी गई है। प्रान्तों तथा भारत में शामिल हो जाने वाली रियासतों से भी यह आग्रह किया गया है कि वे भी इसी नीति पर चलें।

निजाम से नई सन्धिवार्ता

लार्ड माउण्टबेटन द्वारा प्रेषित दिल्ली के आने का निमन्त्रण निजाम द्वारा अस्वीकृत कर दिये जाने के बाद श्री केम्पबेल लार्ड माउण्टबेटन का एक पत्र लेकर निजाम के पास हैदराबाद गये थे। वे जवाब लेकर दिल्ली वापिस लौट आये हैं, परन्तु यह जवाब लिखित रूप में न होकर मौखिक रूप में ही है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस बार भी निजाम ने दिल्ली आने का निमंत्रण अस्वीकृत कर दिया है। सम्भवतः किसी नई सन्धिवार्ता की चर्चा चल रही है। परन्तु इस प्रकार की अप्रकट बात चीत से जनता के दिल में अंग्रेजों के प्रति —फिर वह चाहे लार्ड माउण्टबेटन हो या केम्पबेल या निजाम के सलाहकार सर वाल्टर माकटन–अविश्वास की भावना बढ़ पकड़ती जाती है।

लेकिन दूसरी ओर रजाकारों के अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। इसी कारण भारत सरकार इस मामले को अधिक टाल नहीं सकती। बहुत सम्भवतः २४ अप्रैल को मसूरी में सरदार पटेल जो सम्मेलन बुला रहे हैं, उसमें इस प्रश्न का अन्तिम निर्णय कर दिया जायगा।

बड़ौदा का प्रजामण्डल विजयी

बड़ौदा के महाराजा श्री जीवराज मेहता को बड़ौदा का प्रथम लोकप्रिय प्रधानमन्त्री बनाने पर राजी हो गये हैं। डा० जीवराज मेहता बड़ौदा पहुंच कर ही अपने मन्त्रिमण्डल के मन्त्रियों का चुनाव करेंगे।

धनबाद में ट्रेन दुर्घटना

ईस्ट इण्डियन रेलवे की देहरादून एक्सप्रेस पटरी से उतर गई। १५ व्यक्ति मर गये और ८० घायल हो गये। इनमें से १२ की हालत नाजुक है।

जिन्ना का नया स्वप्न

प्रमुख ईरानी पत्र 'केहान' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार पाकिस्तान के गवर्नर जनरल श्री मोहम्मद अली जिन्ना ने ईरानी प्रेस प्रतिनिधि मण्डल एक शिष्टमंडल से कराची में कहा कि इस्लामी दुनिया में पाकिस्तान तथा ईरान को एक प्रमुख ईकाई के रूप में रहना चाहिए।

'भारत में ६ करोड़ नर नारियों का एक नया राज्य कायम हुआ है। ईरानी जाति तथा धर्म के इस राष्ट्र को विदेशियों ने मातृभूमि से अलग कर दिया। अब समय आ गया है कि हम एक हो जायें, हमारी आजादी आपकी आजादी का एक अंग है। दो मुसलमान देशों को जिनके बीच सभी बातें समान हैं तथा जो अपनी स्वतन्त्रता के अनन्य प्रेमी भी हैं, इस्लामी दुनिया में एक प्रभावशाली इकाई (यूनिट) बन जाना चाहिए।

ब्रिटेन का नया षडयंत्र

ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल में रहने या न रहने के सम्बन्ध में भारत सरकार शीघ्र ही निर्णय करने वाली है।

ब्रिटिश क्षेत्रों में अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्य के अतर्गत भारत रहने को तैयार नहीं है। अगर विभिन्न राष्ट्रों का एक ऐसा संघ बनाया जाय जिस में किसी की सर्वोच्च सत्ता न छीनी जाय, तो भारत एक संघ में रहने के लिए तैयार हो सकता है। इस नयी योजना में 'उपनिवेश' और 'ब्रिटिश' शब्द हटा लिए जायेंगे और केवल 'स्वतन्त्र देशों का संघ' शब्द रखा जायेगा। इसी विषय में विचार करने के लिए लन्दन में उपनिवेश मन्त्रियों की बैठक बुलाई गई है।

है। ये समाचार इक्के दुक्के कह कर उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखे जा सकते। हमें कासिम रजवी के वे शब्द नहीं भूलने चाहिये, जिनमें उन्होंने भारत के हिन्दुओं को कहा था कि वे मुसलमान की धार्मिक बन्धुभावना को समझ ही नहीं सकते। पाकिस्तान की आधार भित्ति ही मुसलमानों की गहरी साम्प्रदायिकता है और दुःख की बात यह है कि इसे नष्ट करने की बजाय आज भी भारत के राष्ट्रीय नेता उसके साथ भाषा, नौकरी व संरक्षण आदि के द्वारा समझौता करना चाहते हैं। आज सब से बड़ी आवश्यकता यह है कि हम अपने यहां ऐसी कोई व्यवस्था न रखें, जिससे कि मुसलमान, सिख या हिन्दू भावना को जीवित रहने का मौका मिले। बिना संरक्षण के सम्मिलित चुनाव ही यही इसका सर्वोत्तम उपाय है।

श्री जार्ज मार्शल   श्री स्टालिन   श्री हेनरी वालेस

अमेरिका व रूस में परस्पर सन्धिवार्ता के प्रश्न के कारण आप तीनों इस सप्ताह समाचारों में प्रमुख आकर्षण रहे।

राजेन्द्र बाबू से गांधीजी की तरह दैनिक प्रार्थना आरम्भ करने की प्रार्थना की जा रही है।

हाल ही में नव-स्थापित इज़रायल राज्य के डा० वीजमैन अध्यक्ष नियत किये गये हैं।

हैदराबाद का सरदर्द
कासिम रेजवी

भारत के प्रधान मन्त्री व उपप्रधान मन्त्री निकट भविष्य में ही हैदराबाद समस्या को हल करने के लिये चिन्तित हैं।

भारत सरकार ने ब्रिटेन से ऐसे २० नये आधुनिक वायुसेना के लिए खरीदे हैं।

दिल्ली में पानी की कमी का एक दृश्य।

रूस अमेरिका में समझौते का प्रयत्न विफल

★

आज यह निर्विवाद है कि रूस व अमरीका ही विश्व में शान्ति स्थापित कर सकते हैं या विश्वव्यापी नर-संहार का युद्ध प्रारम्भ कर सकते हैं। परन्तु दुर्भाग्य से यही दोनों राष्ट्र हैं, जो युद्ध के लिए आज सबसे अधिक तत्पर हैं और इन्हीं की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाओं के कारण विश्व शांति खतरे में पड़ गई है। ये दोनों राष्ट्र इस बात को समझते हैं कि यदि वे शान्ति पूर्वक समस्याओं को सुलझा लें तो संसार की समस्याएं हल हो जावें। इसी कारण विभिन्न क्षेत्रों से अमरीका व रूस में परस्पर समझौते की वार्ता के लिए काफी जोर डाला गया। दोनों देशों में बातचीत की संभावना मई के दूसरे सप्ताह के प्रारम्भ में बहुत बढ़ भी गई थी, किन्तु १२ मई को अमेरिका के परराष्ट्र सचिव जार्ज मार्शल ने रूसी प्रस्ताव को अस्वीकृत करके शांति की आशाओं पर तुषारापात कर दिया।

मार्शल का वक्तव्य

रूसी स्थित अमरीकी राजदूत म श्री मोलोतोव से मिले थे। इसी से समझौते की बातचीत की संभावना बढ गई थी, किन्तु श्री मार्शल ने बताया कि उसका उद्देश्य समझौते की बातचीत नहीं था। उस का उद्देश्य रूसी सरकार को अमरीकी नीति स्पष्ट करने का था। श्री स्मिथ ने मोलोटोव से जो गुप्त मुलाकात की थी उसका उद्देश्य भी स्पष्ट है, क्योंकि अमरीका में रूस के प्रति हमारे रुख के सम्बन्ध में गलत प्रचार किया जा रहा है। राजनीतिक आन्दोलन के तेज होने पर इस प्रकार के प्रचार में तीव्रता आ सकती है। अत रूस सरकार को अमेरिका की निश्चित नीति बताने और उक्त प्रचारों से अवगत करने के लिए ही उक्त मुलाकात आयोजित की गई। जनरल स्मिथ ने किसी बातचीत के लिए कोई प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया।

ऐसे प्रयासों के सम्बन्ध में हमारा पुराना तथा कटु अनुभव है। रूसी- सरकार जिन झगड़ों को बातचीत के द्वारा सुलझाना चाहती है उन्हें उस संस्था द्वारा सुलझाया जाना चाहिए, जिस पर उसका दायित्व है। हमें इस समय जिन कार्यों की आवश्यकता है, उन्हें करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में सुरक्षा परिषद तथा संयुक्त राष्ट्रीय संघ की अन्य संस्थाओं के सम्मुख प्रस्तुत गतिरोध और कठिनाइयां उल्लेखनीय हैं। यह एक दुर्भाग्य की बात होगी कि बातचीत के लिए एक सम्मेलन आयोजित किया जाय और फिर वह सफल न होने पावे। उसकी विफलता के परिणाम स्वरूप झगड़ों को जन्म मिलेगा। उससे विश्व को खतरा होगा। हम लगातार इस प्रकार की विफलताएं बर्दाश्त करने में असमर्थ हैं। आवश्यकता है सफल कार्य की।

इस समय एम० मोलोटोव से इस सम्बन्ध में आगे बातचीत करने का मेरा कोई विचार नहीं है। हमारे सामने अधिक निश्चित प्रस्ताव होने जरूरी हैं, उन पर आम बहस नहीं। इन बातचीतों में सफलता की सम्भावना होनी चाहिये। इस सम्बन्ध में अब पहल करना रूस सरकार पर निर्भर है।

परराष्ट्र विभाग ने गैर रस्मी तौर पर इन बातों के लिए जोर डाला है। मास्को-स्थित अमरीकी राजदूत श्री स्मिथ ने चार मई को एम० मोलोटोव को पत्र लिखने में जो पहल की उसे किसी प्रकार भी दोनों सम्मेलन के सुझाव का अर्थ नहीं लगाया जा सकता तथा मोलोटोव का उत्तर अमरीकी दृष्टिकोण के अनुसार इतना उपयुक्त नहीं है जिससे कि इस प्रकार का सम्मेलन आयोजित किया जा सके।

वालेस के प्रस्ताव

श्री मार्शल ने निश्चित प्रस्तावों के आधार पर बातचीत चलाने का सुझाव रखा था। इस कारण श्री हेनरी वालेस ने जो तीसरी पार्टी की ओर से प्रेसिडेन्ट पद के लिए उम्मीदवार हैं, मार्शल स्टालिन के नाम एक खुले पत्र में कुछ निश्चित प्रस्ताव भी उपस्थित कर दिये। उन्होंने लिखा कि—एक रूस और अमरीका के पत्र विनिमय से समस्त विश्व को प्रसन्नता हुई। श्री वालेस ने युद्ध स्थिति को समाप्त करने के लिए अविलम्ब ही कार्रवाई करने तथा शांति स्थापित रखने के लिए एक खुला सम्मेलन करने के लिए जोर डाला। हेनरी वालेस ने अपने पत्र में विश्व के दो महान देशों से युद्ध स्थिति की समाप्ति के लिए निम्न कार्रवाई करने की अपील की—

(१) शस्त्रास्त्रों में आम तौर पर कमी की जाय, तथा सामूहिक विध्वंस के समस्त तरीकों को गैर कानूनी घोषित किया जाय (२) एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को हथियारों का निर्यात रोका जाय; (३) दोनों देशों में युद्ध सामग्री के अलावा अन्य सामग्रियों का व्यापार मुक्त हो, (४) नागरिकों विद्यार्थियों, पत्रकारों के आवागमन पर कोई प्रतिबन्ध न हो, (५) दोनों देशों में वैज्ञानिक सूचना का स्वतन्त्र रूप से विनिमय हो, (६) अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के वितरण के लिए संयुक्त राष्ट्रीय संस्था का पुनर्निर्माण किया जाय आदि।

स्टालिन ने स्वीकार कर लिया

स्टालिन ने अमरीकन राजनीतिज्ञों की आशाओं के विपरीत हेनरी वालेस के प्रस्तावों का बहुत अधिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हाल के राजनीतिक कागजात में, जिनका उद्देश्य शांति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग स्थापित करने तथा प्रजातन्त्र की रक्षा करने का था, अमरीका के राष्ट्रपति पद के लिए तीसरे दल के उम्मीदवार, श्री हेनरी वालेस का खुला पत्र सब से अधिक महत्वपूर्ण है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने, रूस तथा ब्रिटेन के मतभेदों को दूर करने तथा ऐसे आपसी समझौते के लिए मार्ग खोजने की आवश्यकता के सम्बन्ध में श्री वालेस का पत्र केवल एक साधारण वक्तव्य नहीं माना जा सकता।

श्री वालेस के खुले पत्र का महत्व पूर्ण अर्थ इस तथ्य में निहित है कि इस पत्र में केवल घोषणा ही नहीं की गई है बल्कि उसमें आगे बढ़ कर रूस और अमरीका के मतभेदों को दूर करने के लिए निश्चित योजना भी सुझाई गई है।

यह नहीं कहा जा सकता कि श्री वालेस के पत्र में समस्त मतभेदों के प्रश्नों का उल्लेख किया गया है और न ही यह कहा जा सकता है कि खुले पत्र में जो सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं, उनमें सुधार की आवश्यकता नहीं है, पर इस समय यह बात महत्व देने की नहीं है।

मुख्य बात यह है कि श्री वालेस ने अपने खुले पत्रों में शांतिपूर्ण समझौते के लिए निश्चित कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया। ये निश्चित प्रस्ताव रूस तथा अमरीका के मतभेदों के समस्त आधारभूत प्रश्नों से सम्बन्धित हैं।

मुझे पता नहीं कि अमरीकी सरकार ने वालेस के सुझाव को अमरीका और रूस के समझौते के लिए आधार स्वीकार किया है या नहीं। परन्तु जहां तक रूसी सरकार का सम्बन्ध है, उसका मत है कि श्री वालेस का प्रस्ताव ऐसे समझौते तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए सफल आधार हो सकता है, क्यों कि रूसी सरकार का मत है कि अमरीका और रूस की अर्थ व्यवस्था तथा सिद्धान्तों में मतभेद के बावजूद दोनों देशों के मतभेदों का शांतिपूर्ण समझौता केवल सम्भव ही नहीं है, बल्कि विश्व शांति के लिए यह आवश्यक है। जो राजनीतिज्ञ वालेस के प्रस्ताव की उपेक्षा कर सकते हैं वे शांति और सहयोग की पुकार नहीं कर सकते, क्यों कि वालेस के प्रस्ताव में शांति स्थापना के लिए जनसाधारण की आशा प्रकट होती है। निःसन्देह करोड़ों जन साधारण का सहयोग इसे प्राप्त होगा।

किन्तु

मा० स्टालिन के इस आकस्मिक उत्तर से अमरीकी राजनीतिज्ञ सकपका गये हैं। वे इस घोषणा को पूर्णतः आयोजित मान कर फिर अपनी दोनों बातों पर जोर दे रहे हैं। पहली तो यह कि प्रस्ताव और निश्चित रूप में आने चाहिए और दूसरे यह कि समझौता किसी नई बातचीत के द्वारा नहीं, परन्तु मित्रराष्ट्रसंघ का सुरक्षा समिति और शक्ति निर्णायक समिति आदि के द्वारा ही तय होना चाहिए? इन सभी संस्थाओं में ब्रिटेन व अमरीका आदि का बहुमत है इस लिए स्वभावतः रूस इन संस्थाओं द्वारा बातचीत नहीं करना चाहता।

अमरीकन विदेश विभाग के अधिकारियों ने निम्न प्रकार से प्रधानमन्त्री स्टालिन के मुद्दों का उत्तर दिया है (१) शस्त्रास्त्रों में कमी। १९४६ से अब तक सुरक्षा कौंसिल का एक कमीशन उस पर विचार कर रहा है। (२) परमाणुशक्ति। परमाणु शक्ति के नियन्त्रण पर उपयोगपूर्ण समझौता होने में सोवियत संघ, पोलैण्ड और यूक्रेन ने ने बाधा डाली। मि० रा० स० में अब भी इस पर विचार हो रहा है और अमरीका परमाणु शक्ति के वस्तुतः प्रभावपूर्ण नियन्त्रण में भाग लेने को तैयार है। (३) जर्मनशांति सन्धि। अमरीका ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा पेश किए गये प्रत्येक प्रस्ताव का रूस द्वारा विरोध किये जाने के कारण इस प्रश्न पर कोई प्रगति न हो सकी। (४) जापानी शांति सन्धि। अमरीका ने यह प्रस्ताव रखा था कि इस कार्य के लिए ११ देशों का शांति सम्मेलन जो दो तिहाई मत से अपने निर्णय करे। रूस का कहना था कि इस विषय पर विदेश मन्त्रियों के सम्मेलन में विचार हो। (५) चीन से सेनाओं की निकासी। इस समय चीन में अमरीका के १४९६ के सैनिक तथा ४११५ जल सैनिक तथा नाविक हैं। (६) कोरिया। रूस ने मित्रराष्ट्रीय कमीशन को कोरिया उत्तरी क्षेत्र में प्रवेश नहीं करने दिया। (७) राष्ट्रीय सर्वोच्चता (सावरेन्टी) का सम्मान और घरेलू मामलों में हस्तक्षेप। इस विषय का इतिहास स्वयं दोनों सरकारों की स्थिति स्पष्ट कर देगा। अमरीका इस के सब समझौतों को मित्रराष्ट्रीय संघ के कार्यालय में दर्ज कराता है।

साथ ही यह चीज मनोरंजक है कि सुरक्षा कौंसिल में अमेरिका के इस प्रस्ताव को कि सुरक्षा कौंसिल के आधीन कार्य करने वाली सेनाओं को गुजरने तथा

[शेष पृष्ठ ११ पर]

क्या फिलस्तीन दूसरा स्पेन बनेगा ?

[श्री हरिश्चन्द्र]

★

हम भारतवासी जब फिलस्तीन के वर्तमान 'युद्ध' के समाचार सुनते हैं, तब हमें १५ अगस्त १९४७ का वह दिन सहसा स्मरण हो आता है, जब कि भारत विदेशियों के चंगुल से मुक्त तो हुआ, किन्तु इस देशवासियों पर कष्ट-आपदाओं का एक पहाड़-सा टूट पड़ा। ब्रिटिश कामनवेल्थ का सदस्य बनने के मुहूर्त से पहले और पीछे इस भूमि पर जो-जो बीभत्स काण्ड हुए, जो जो अमानवीय अत्याचार किये गये और हिंसा व प्रतिहिंसा का जो भयानक चक्र चला, उस सब का दायित्व मूलतः अंग्रेज पर था। इसी प्रकार फिलस्तीन में आज जो कुछ हो रहा है, यहूदी अरब के खून से और अरब यहूदी के खून से जिस प्रकार होली खेल रहा है, उसका दायित्व भी ब्रिटेन अमेरिका और मुख्यतः मित्रराष्ट्र संघ पर है, जिसमें सम्मिलित होकर संसार के ५८ राष्ट्र लेकसक्सेस के मंच पर 'विश्वशांति' का नाटक किया करते हैं।

यदि ब्रिटेन, अमेरिका और मित्रराष्ट्र-संघ हृदय से चाहते, तो फिलस्तीन की समस्या शान्तिमय ढंग से सुलझायी जा सकती थी—फिलस्तीन पर ब्रिटेन के आदेशप्राप्त शासन की समाप्ति पर सत्ता हस्तान्तरण की कोई ऐसी व्यवस्था की जा सकती थी, जिस पर अरब और यहूदी दोनों सहमत होते और यदि वे दोनों किसी सर्वसम्मत समझौते पर पहुंचने में नितान्त असफल रहते, तो शान्ति बनाये रखने के हेतु मित्रराष्ट्र संघ की मार्फत प्रभाव डाल कर इन दोनों जातियों को किसी एक निश्चय को मानने के लिए बाधित किया जा सकता था। किन्तु इस चीज की चिन्ता न ब्रिटेन ने की, न अमेरिका ने और मित्रराष्ट्र-संघ तो उन देशों की हां में हां मिलाने का कार्य करता ही रहा, जो विश्व शान्ति के नाम पर संघ की स्थापना करके भी वस्तुतः उसे अपनी 'पावर पालिटिक्स' का अखाड़ा बनाये हुए हैं। ब्रिटेन को आज अपने साम्राज्य से जो 'वैराग्य' हो उठा है, उसने फिलस्तीन के अरबों और यहूदियों को समय-समय पर दिये गये उसके परस्पर विरोधी आश्वासनों को तो भुला ही दिया है, मध्यपूर्व की शान्ति के प्रति भी उसे उदासीन बना डाला है। पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य की प्रायः समाप्ति हो जाने पर आज फिलस्तीन का ब्रिटेन के लिए पहले-सा महत्व नहीं रहा और तेल के कारण उसकी फिलस्तीन में जो कुछ रुचि है भी, उसे वह अरब पक्ष में से किसी को भी अपना शत्रु न बना कर पूरा कर लेना चाहता है।

किन्तु, अमेरिका ने इस सम्बन्ध में जो नीति अपनायी है, वह इतनी अस्पष्ट और ढिलमिल है कि उससे किसी भी पक्ष को कभी सन्तोष नहीं हुआ। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रूमेन ने पहले तो यहूदियों का पक्ष ग्रहण किया और मित्रराष्ट्र संघ में फिलस्तीन के विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार करा लिया, किन्तु जब अरबों ने उसका विरोध किया और तरह तरह की धमकियां देना आरम्भ कीं, तो तुरन्त अपना विचार बदल डाला और मित्रराष्ट्र-संघ के समक्ष फिलस्तीन की समस्या को सुलझाने के लिए कोई दूसरा विकल्प ढूंढ निकालने का सुझाव उपस्थित किया। पन्द्रह मई निकट थी और ब्रिटेन अपने पूर्व निश्चयानुसार उस दिन फिलस्तीन पर से अपना आदेशप्राप्त शासन उठा लेने के लिए कृतसंकल्प था। फलतः ब्रिटेन का शासन हटते ही जब यहूदियों ने फिलस्तीन के यहूदी प्रदेशों के लिए 'इजराइल' नाम से एक नये राज्य की स्थापना की घोषणा की, तो अमेरिका ने अरबों के विरोध की चिन्ता न करके उसे तुरन्त स्वीकार कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ है कि अरब देश अमेरिका के इस व्यवहार से अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठे हैं और सम्भवतः यहूदी भी हृदय से यह अनुभव करते हैं कि अमेरिका की इस स्वीकृति के पीछे उसका एक स्वार्थ निहित है।

अमेरिका ने ऐसा क्यों किया? फिलस्तीन की समस्या के बारे में वह अपना विचार बार बार क्यों बदलता रहा? इसके कई कारण हैं। तेल के कारण वह अरबों को नाराज करना नहीं चाहता, किन्तु वह इस बात के लिए भी तैयार नहीं कि फिलस्तीन की वर्तमान स्थिति का लाभ उठा कर रूसी लोग वहां पहुंच जायें और उसे अपना प्रभाव क्षेत्र बना लें। सुरक्षा कौंसिल में रूस शुरू से यहूदियों के पक्ष का समर्थन करता रहा है और जब अमेरिका ने फिलस्तीन के विभाजन के निश्चय को उठा रखने का प्रस्ताव किया तब भी रूस ने यह सम्मति व्यक्त की कि फिलस्तीन को यहूदियों और अरबों में बांट कर ही इस समस्या को न्यायसंगत ढंग से सुलझाया जा सकता है। जब ब्रिटेन ने फिलस्तीन में कुछ दिन और डटे रहने की अमेरिकन प्रार्थना को स्वीकार न किया और यहूदियों ने 'इजराइल' राज्य की स्थापना की घोषणा कर दी, तो अमेरिका को यह आशंका होने लगी कि फिलस्तीन में लड़ाई आरंभ होने पर कहीं रूस यहूदियों की मदद पर न पहुंच जाए। यदि ऐसा हुआ तो रूस को फिलस्तीन में अपने पांव जमाने का अवसर मिल जायगा और इस प्रकार मध्यपूर्व में भी रूस का प्रभाव फैल जायगा। इसके अतिरिक्त अमेरिका के लिए एक और भी समस्या थी। युद्ध से पूर्व अमेरिका में ४४,००,००० यहूदी बसते थे और हिटलर के यहूदियों के विरुद्ध जिहाद के कारण युद्ध के दिनों में यह संख्या और भी बढ़ गयी। इन लोगों में बहुत से बड़े-बड़े व्यापारी, वैज्ञानिक और उच्च पदाधिकारी हैं। निकट भविष्य में ही अमेरिका के राष्ट्रपति पद का चुनाव होने के कारण राष्ट्रपति ट्रूमेन को इन लोगों की सहायता अपेक्षित थी। फलतः श्री ट्रूमेन ने रूस के प्रभाव को रोकने और अमेरिका के यहूदियों को अपने साथ रखने के लिए फिलस्तीन के मामले में अरबों के विरोध को सहन करना स्वीकार कर लिया।

किन्तु अमेरिका ने अपनी घोषणा में 'इजराइल' राज्य के अस्तित्व को ही स्वीकार किया है, कांग्रेस के अनेक सदस्यों और पत्रों के अनुरोध पर भी अभी अरबों से अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए उसे किसी प्रकार का सहायता देने का निश्चय नहीं किया है। ऐसी अवस्था में यदि अरब सेनाएं फिलस्तीन में यहूदियों के नवजात राज्य को समाप्त कर देने में सफल हो जाएं तो अमेरिका अपने स्वार्थों के कारण अपनी नीति में पुनः परिवर्तन कर ले, तो किसी को आश्चर्य न होगा।

फिलस्तीन पर अरब देशों द्वारा किये गये आक्रमण और उसके परिणामों पर विचार करने से पूर्व यह बतला देना आवश्यक होगा कि यह समस्या उठी कैसे है।

यहूदी अपने को फिलस्तीन का आदि वासी बतलाते हैं और इतिहास के पन्ने उलटने पर उनके इस कथन की पुष्टि होती है। अत्यन्त महत्वाकांक्षी और बनिया जाति होने के कारण बहुत से यहूदियों को परिस्थिति वश फिलस्तीन को छोड़कर इधर उधर चले जाना पड़ा और वहां यहूदियों की संख्या इतनी नगण्य होती चली गयी कि १९१८ में यह संख्या कुल १०,००० रह गयी जब कि अन्य देशों में रहने वाले यहूदियों की संख्या लगभग १,५०,००,००० थी। बीसवीं सदी आरम्भ होने पर उनमें यह भावना जाग्रत हुई कि उनका भी अपना कोई घर (होम लैंड) होना चाहिये। यह विचार आते ही उनकी दृष्टि स्वभावतः फिलस्तीन पर गयी, जहां कालान्तर से अरबों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक हो गयी थी। प्रथम महायुद्ध के समय जब फिलस्तीन को तुर्कों के हाथ से छीन कर अंग्रेजों के शासन में दिया गया, तो १९१७ के बेलफोर घोषणा पत्र में यह वायदा किया गया कि फिलस्तीन में यहूदियों के लिए एक राष्ट्रीय प्रदेश स्थापित किया जाएगा। यद्यपि अरबों ने इसका विरोध किया और अनेक बार विद्रोह करने का भी प्रयत्न किया किन्तु अंग्रेजों की सहायता से यहूदियों का फिलस्तीन में आकर बसना जारी रहा। शुरू शुरू में फिलस्तीन में आगत यहूदियों की संख्या बहुत कम रही किन्तु धीरे-धीरे उसमें वृद्धि होने लगी और अकेले १९३५ ही में ६१८५४ यहूदी फिलस्तीन

[शेष पृष्ठ २६ पर]

बिंदी वाला भू भाग फिलस्तीन का वह प्रदेश है, जिसे मित्रराष्ट्र संघ के फिलस्तीन कमीशन ने विभाजन योजना के अन्तर्गत यहूदी राज्य के लिए निर्धारित किया था।

नारी और पुरुष

[श्री श्रीनिवास गुप्त एम॰ ए॰ साहित्य रत्न]

★

उस पुरातन पुरुष ने जब इस सृष्टि के खेल को रचने की धारणा की तो उसने नारी और पुरुष ये दो प्रतिमाएं बनाईं। सृष्टि को सुगमता से चलाने के लिए उसने इन दोनों के सामंजस्य को अनिवार्य समझा। ऐसा एक सम्बन्ध उसने दोनों में स्थापित किया कि पुरुष के बिना नारी अपूर्ण थी और नारी के बिना पुरुष। दोनों को अपना-अपना एक सीमित पर विस्तृत स्थल मिला। दोनों उसमें बढ़ चले और उस मानव समाज का उदय हुआ। पुरुष को अपने पौरुष और बल के कारण रक्षा का भार मिला। स्त्री ने अपने कोमल स्वभाव तथा सुन्दरता को लेकर पुरुष को स्फूर्ति और शक्ति दी। समाज बढ़ता गया। चक्र अविरत रूप से चल पड़ा।

परिस्थितियां बदलीं। समाज में परिवर्तन आए। पुरुष सबल था उसने नारी के अधिकारों को दबाया, खसोटा। निर्बल स्त्री भी अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकी। वह दब गई।

पुरुष ने उसे कुचलने का प्रयत्न किया। फिर नारी चीत्कार कर उठी। विद्रोह का स्वर गूंज उठा। पुरुष भयभीत हो गए और समाज की लौह शृंखला को खड़खड़ा कर कानों पर उंगली रख कर चिल्ला उठे—'पाप! पाप!' नारी ने सुना। क्रोध और घृणा से वह दांत रगड़ कर रह गई और बेबस उस लौह शृंखला में वह बन्धती गई, किन्तु भीतर ही भीतर द्वेष और घृणा की आग सुलगती गई। अपने सम्पूर्ण अधिकारों को पा लेने की इच्छा फैलती गई। संघर्ष सा जाग उठा। पुरुष अपने सद्विचारों से हट चुका था। नारी भी पश्चिमी लहर के कारण अपने सद्व्यवहार को छोड़ रही थी। समाज अस्त व्यस्त हो गया।

परन्तु नारी जिस नवीन पथ की ओर दौड़ रही थी, वह थी केवल मृगमरीचिका। दूर से वह पथ बहुत सुहाना दीख पड़ता था—पर वह था निराधार विदेशी सभ्यता में पूर्णतः रंग कर अपनी संस्कृति आचार विचार को ठुकरा कर जिस समाज में वह स्वच्छन्दता से विचरने लगी थी वहां क्या था? प्रदर्शन निर्लज्जता! इसे ही अपनी स्वतन्त्रता कह कर पुकारा! अपने खोसे अधिकारों को पा लेने का अभिमान समझा। समानाधिकार की संतुष्टि प्राप्त की। इस समान अधिकार की झूठी तिलस्मि ने नारी को सत्य पथ से और भी दूर हटा दिया। कुछ अनुसन्धानी पुरुषों ने नारी के इस नए समाज के प्रसार में अपने नीच स्वार्थ की सिद्धि पाई और उनकी संस्थाओं का नेतृत्व करके उन्हें प्रोत्साहन दिया। फल हुआ नूतनता और स्वतंत्रता के नाम पर दुराचार का प्रसार।

एक लम्बा चौड़ा अन्तर पुरातन व नवीन नारी के दो समाजों में हो गया था। लेखक उपदेशकों के विचार दो सीमाओं पर लटक रहे थे। एक ओर गूंज थी नवीन युग की — जिसमें नारी भी पुरुष की तरह स्वच्छन्दता से विचर सकती थी, पुरुष के कामों को करने का अधिकार उसे था। दफ्तरों में काम करने, फौज में भरती होने इत्यादि पुरुष के काम करने में वह स्वाभिमान समझती थी और समान अधिकार पा जाने की संतुष्टि पाती थी। दूसरी विचार धारा थी कि 'स्त्री पुरुष की सम्पत्ति है'....उसी प्रकार की सम्पत्ति जिस प्रकार की सम्पत्ति हम गुलाम को, कुत्तों को अथवा अन्य जानवरों को दे सकते हैं।'

सौभाग्य से आज इन दोनों भिन्न विचार धाराओं का अन्तर कम हो रहा है। आशा है कि एक दिन उनका एक ही बिन्दु पर सामंजस्य हो जायगा। पुरुष को उदार होना पड़ेगा और नारी को झूठे अधिकारों पर फिसलने से बचना होगा। आखिर नारी के अधिकार क्या हैं और पुरुष के क्या? प्रत्येक मनुष्य के अधिकार हैं उसका उत्तरदायित्व! सृष्टि के प्रसार में पुरुष और नारी का अपना-अपना उत्तरदायित्व है। दोनों का अपना-अपना सीमित कार्य स्थल है और उसी के अनुसार उनके अधिकार हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। एक को दूसरे की आवश्यकता है। किन्तु उनके इस सामंजस्य में दोनों प्रतिस्पर्धी प्रतिनिधियों का सामंजस्य नहीं हो सकता। कोई भी सम्बन्ध समता की नींव पर नहीं बनता। पुरुष नारी में कुछ देखता है और वह उसकी ओर दौड़ता है। नारी पुरुष में कुछ देखती है और वह उसे पा लेना चाहती है, इसी में दोनों को संतोष मिलता है। नारी आत्मसमर्पण करती है, पुरुष उसे ग्रहण करता है और इसी में दोनों आत्मसुख पाते हैं। इसके विपरीत यदि कहीं पुरुष आत्मसमर्पण करता है तो स्त्री को उस पुरुष के प्रति घृणा से रोमांच हो उठता है। वह सोचती है वह पौरुषहीन है। बस ऐसी एक विषमता नारी और पुरुष में है। नारी पुरुष के पौरुष को पाकर आत्माह्लाद से भर जाती है और पुरुष नारी के सौंदर्य में ईश्वरीय आनन्द पाता है। यही नारी और पुरुष के सामंजस्य का अटल सत्य है।

प्रेजीडैण्ट कोई महिला हो

अमेरिकन स्त्रियों की नयी मांग

★

श्रीमती रूजवेल्ट

श्रीमती विंडसर

'मैडम प्रेसिडेण्टस पार्टी' के नाम से अमेरिका में स्त्रियों ने एक नई संस्था संगठित की है। एक करोड़ स्त्रियां इसकी सदस्य हैं और कहते हैं कि ५ करोड़ तक सदस्याएं बनाई जायंगी। इसका उद्देश्य अमेरिका में पुरुष की बजाय किसी स्त्री को प्रेसिडेण्ट बनाना है।

इस संस्था की ओर से प्रकाशित अपील में कहा गया है कि नारियों, उठो! आज नारी उत्कृष्ट संसार की रचना करने लगी है।

इस संस्था की ओर से जनमत भी लिया गया था। उसके अनुसार श्रीमती रूजवेल्ट, श्रीमती विंडसर (सिम्पसन) श्रीमती बूथ और श्रीमती लूस इस पद के लिए योग्य हैं।

कलकत्ते में बदमाशों के अड्डे

कलकत्ता खुफिया पुलिस ने कलकत्ते के वक्षस्थल पर खुले आम चल रहे स्त्रियों के अवैध व्यापार के विरुद्ध जबर्दस्त अभियान शुरू कर दिया है। गत कुछ दिनों से बहूबाजार, मोचीपाड़ा और तालतला क्षेत्रों में पचासों स्थानों की तलाशी ली गयी। 'चिकित्सा, मालिश और स्नानागार' के बोर्ड लगाये बड़ी मुख्य सड़कों पर दिनदहाड़े शरणार्थी बंगाली लड़कियों का व्यापार करते हुए चार दर्जन व्यक्ति पुलिस के हवालात में हैं। पचास ऐंग्लो इण्डियन और यहूदी, कुछ मुस्लिम, आसामी और अधिकतर 'भद्र परिवार' की शरणार्थी बंगाली लड़कियां हैं, जिन्हें नर्स का काम देने के बहाने रखा गया था। मध्य कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर श्री सत्येन्द्र मुखर्जी के समक्ष इन लोगों का दल का दल उपस्थित किया गया और पूछताछ हुई। अधिकतर लड़कियां कम उम्र की हैं तथा अच्छे घरानों की हैं। प्रायः शरणार्थी बालिकायें इस कुकर्म में नयी प्रवृत्त हुई हैं। इन सबों को जमानत पर छोड़ा गया और उनसे सलाह अपने चाल-चलन का अच्छा सबूत पेश करने को कहा गया है।

आधी आधी रात को पुलिस ने जगमग मकानों पर धावा कर पाप का भण्डाफोड़ किया। कई डाक्टर और कम्पाउण्डर महाशय भी पकड़े गये, जो बाहर से चिकित्सागृह का स्वांग रचे बैठे थे। तलाशी लेने पर कई पत्र, रबर की गर्भनिरोधक वस्तुयें आदि मिलीं। इस अभियान से बड़ी सनसनी है।

---

१५ अगस्त को पर्दा खतम

माननीय श्रीयुत ईश्वरदास जी जालान, अध्यक्ष पश्चिमी बंगीय धारा-सभा, ने पर्दा बहिष्कार आन्दोलन के सिलसिले में करायी जाने वाली प्रतिज्ञा पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये हैं। उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि मैं पर्दा प्रथा को स्त्री जाति के विकास में बाधक समझता हूं और मेरा यह विश्वास है कि समाज की उन्नति और प्रगति के लिये स्त्रीसमाज से पर्दा प्रथा को दूर करना अत्यन्त आवश्यक है।

मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि मेरी पत्नी पर्दा नहीं रखेगी और मैं उस विवाह में सम्मिलित नहीं होऊंगा, जिसमें वधू द्वारा पर्दा प्रथा का पालन किया जायेगा।

आपने प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करते वक्त कहा कि अब पर्दे के आन्दोलन को अधिक समय नहीं लगना चाहिये। १५ अगस्त के पहले पहल हमें इस आन्दोलन को सफल बना देना है।

नवीन औद्योगिक नीति और ग्रामीण उद्योगधंधे

[प्रो॰ दयाशंकर नाग एम॰ ए॰ बी॰ काम]

भारत सरकार द्वारा घोषित औद्योगिक नीति में भारत के आगामी दस वर्षों का औद्योगिक चित्र स्पष्ट दिखाई देता है। इस नीति की घोषणा कांग्रेस सरकार ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् की है, अतः इसके पीछे अधिक वास्तविकता और व्यावहारिकता है। ब्रिटिश भारत की अन्य योजनाओं के समान यह कोई कागजी योजना नहीं। उसको कार्यान्वित करने के लिए उसके पीछे सरकार का तथा देश की सबसे शक्तिशाली राजनैतिक संस्था कांग्रेस का दृढ़ निश्चय है। भारत के भविष्य पर उसका गहरा प्रभाव पड़ेगा यह अवश्यम्भावी है। औद्योगिक उत्पादन, जीवन स्तर एवं आर्थिक कल्याण बहुत कुछ इस नीति पर निर्भर रहेगा। प्रस्तुत लेख में हम इस बात का विश्लेषण करने का प्रयत्न करेंगे कि (१) सरकार द्वारा इस नीति में ग्रामीण उद्योग धन्धों को कितनी महत्ता दी गई है। (२) क्या यह ग्रामीण पुनः संगठन की दृष्टि से संतोष जनक है। (३) कांग्रेस के आर्थिक सिद्धान्तों से उसका किस तरह से सामंजस्य है (४) और उसमें क्या परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन आवश्यक है।

ग्रामीण उद्योग धन्धों की महत्ता को स्वीकार करते हुए औद्योगिक नीति वाले प्रस्ताव में कहा गया है। 'व्यक्ति, संघ, सहकारी समिति एवं संस्थाओं की दृष्टि से छोटे छोटे उद्योग धन्धों का राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। स्थानीय आर्थिक साधनों के प्रयोगिक उपयोग तथा खाद्य-पदार्थ, कपड़ा एवं कृषि की आवश्यकताओं में स्थानीय स्वावलम्बन की दृष्टि से ग्रामीण उद्योग धन्धों का विशेष स्थान है। सरकार ने यह भी स्वीकार किया है कि इनकी उन्नति के लिए कच्चे माल, सस्ती शक्ति, औजार आदि तथा औद्योगिक शिक्षण बड़े उद्योग धन्धों की प्रति स्पर्द्धा से संरक्षण तथा निर्धारित माल को बेचने का प्रबन्ध करना आवश्यक है। इन सब समस्याओं को हल करने तथा छोटे उद्योग धन्धों को बड़े उद्योग धन्धों से सम्बन्धित करने के लिए सरकार एक केन्द्रीय घरेलू उद्योग धन्धों का एक बोर्ड बनाने जा रही है। इन उद्योग धन्धों को अधिक से अधिक सहकारिता के सिद्धान्त पर संगठित किया जावेगा। सरकार का दृढ़ विश्वास है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक परिस्थिति को देखते हुए विदेशों से मशीन और कल पुर्जे मंगाना कठिन होगा। ऐसी अवस्था में नित्य की आवश्यकताओं की वस्तुओं का उत्पादन अधिकतर छोटे उद्योगों द्वारा ही करना होगा। सरकार ने अपनी औद्योगिक नीति में ग्रामीण उद्योग धन्धों को महत्व दिया है उसके लिए वह निस्संदेह बधाई की पात्र है। वास्तव में सरकार ने कभी इस ओर क्रियात्मक रूप से सोचा ही नहीं। १५ अप्रैल १९४५ को केन्द्रीय सरकार ने इसी प्रकार अपनी औद्योगिक नीति की घोषणा की थी। वह सर आर्देशर दलाल के अन्तर्गत गठित प्लेनिंग और डेवलपमेंट विभाग द्वारा निश्चित की गई थी। इसमें ग्रामीण उद्योग धन्धों की कहीं चर्चा भी नहीं है। इस दृष्टि से जैसा कि 'ईस्टर्न इकानामिस्ट' देहली ने अपने ६ अप्रैल वाले अंक में लिखा है। नवीन औद्योगिक नीति सन् १९४५ वाली नीति से कहीं अच्छी है। कम से कम इस सरकार ने प्रथम बार छोटे उद्योगों के महत्व को स्वीकार किया है तथा उन्हें प्रोत्साहन और संरक्षण देने एवं संगठित करने की जिम्मेदारी सम्भाली है। संतोष जनक एवं सम्पूर्ण न होने पर भी उसने एक नवीन दिशा दिखाई है और सम्भवतः सरकार जब अपनी सम्पूर्ण नीति को कार्यान्वित करने के लिए ठोस काम उठाये तो ग्रामीण उद्योग धन्धों को और भी अधिक महत्व देना स्वीकार कर ले। इतनी आशा रखते हुए भी हम ऐसा अनुभव करते हैं कि सरकार ने उद्योग धन्धों के प्रति जो सद्भावना प्रगट की है, उसे व्यावहारिक रूप देने में असमर्थ सिद्ध होगी। नीति के अन्य पहलू सरकार को छोटे उद्योगों को संरक्षण देने से रोकेंगे।

नीति में घरेलू उद्योग धन्धों के संरक्षण का अभाव

सरकार ने यद्यपि अपनी घोषणा में आश्वासन दिया है कि वह छोटे उद्योग धन्धों को बड़े उद्योगों की प्रति स्पर्द्धा से रक्षा करेगी। परन्तु दूसरी ओर बड़े उद्योग धन्धों को केवल सैनिक वस्तुएं अणु शक्ति और रेल को छोड़ कर सरकार ने दस वर्ष के लिये खुला मैदान दिया है। नियन्त्रण, अंकुश एवं आयोजन का यहां नीति में जिकर है परन्तु यह कहीं भी स्पष्ट नहीं किया गया कि इनका क्या उद्देश्य होगा, क्या रूप होगा और कितनी शीघ्रता तथा दृढ़ता से उन्हें लागू किया जावेगा। आज तो सरकार समस्त नियन्त्रणों को तोड़ने में लगी हुई है। ऐसी अवस्था में उपभोक्ता की वस्तुएं पैदा करने वाले बड़े उद्योग धन्धों पर वह कैसा नियन्त्रण रखना चाहती है, यह हमारे सामने स्पष्ट नहीं है। उदाहरणार्थ कपड़े की मिलों को लीजिए। यह स्वतः सिद्ध है कि जब तक कपड़े की मिलें कुछ इने गिने व्यक्तियों के स्थित है, स्थानीय वस्त्र स्वावलम्बन केवल स्वप्न ही रहेगा और न आर्थिक साधनों का उपयोग होगा। ग्रामीण जनता को रोजगार भी नहीं मिल सकेगा। सरकार की औद्योगिक नीति का उद्देश्य ग्रामीण जनता के लिये उद्योग धन्धे बढ़ा कर उसका जीवन स्तर ऊंचा उठाना है। यह तभी सम्भव है, जब कि कमसे कम उपभोक्ता की वस्तुओं को विकेन्द्रित उद्योगों द्वारा पैदा किया जावे। प्रश्न उठता है कि क्या सरकार आज के केन्द्रित बड़े उद्योग धन्धों को विकेन्द्रित करने के लिये उद्यत है? उसके फल स्वरूप उद्योग पति जो तूफान उठावेंगे, उसका मुकाबिला करने के लिये सरकार किसी न किसी रूप में बड़े उद्योगपतियों के हितों को ठेस पहुंचावेगी। उद्योगपति उत्पादन रोकने की चेष्टा कि वे सदा करते आये हैं धमकी दें। क्या सरकार इसके लिये तैयार है? इसका उत्तर सरकार स्वयं कई बार दे चुकी है कि वह आज के औद्योगिक ढाचे को किसी प्रकार का नुकसान नही पहुंचाना चाहती। स्वयं पंडित नेहरू तथा डा॰ श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने प्रस्ताव पर बोलते हुये कहा कि सरकार कोई ऐसा काम करने के लिये तैयार नहीं है जिससे वर्तमान औद्योगिक ढाचे को हानि पहुंचे हमें यह बतलाने की जरूरत नहीं है कि किस प्रकार वर्तमान औद्योगिक ढाचे ने हमारे ग्रामीण उद्योगों को मृतप्रायः कर दिया है और किस प्रकार उन की प्रतिस्पर्द्धा के कारण वे (छुटे धन्धे) बढ़ते जा रहे हैं। हमारी सरकार इस व्यवस्था में परिवर्तन नहीं करना चाहती। ऐसी अवस्था में वह ग्रामीण उद्योगों को संरक्षण और प्रोत्साहन नहीं दे सकती। उसकी ग्रामीण उद्योगों के प्रति सद्भावना केवल कागज पर ही रह जावेगी। एक ओर सरकार इन उद्योगो को उन्नत करना चाहती है, दूसरी ओर उस औद्योगिक व्यवस्था को समाप्त करने को तैयार नहीं जिसके कारण वे मृतप्राय होते जा रहे हैं। आखिर सरकार इस भूल भुलैयां में कैसे पड़ गयी। इसका एक ही कारण है और पूज्य बापू ने आज तीस वर्ष पूर्व बता दिया था। मशीन मनुष्य के लिये बनायी गयी है न कि मनुष्य मशीन के लिये। अर्थात् जब तक मशीन मनुष्य का सामाजिक कल्याण कार्य में सहायक सिद्ध होती है हमें उसका स्वागत करना चाहिये। परन्तु जब मशीन कल्याण के स्थान पर मनुष्य के शोषण का साधन बन जावे तो हमें उसका बेधड़क विरोध करना चाहिये। वर्तमान परिस्थिति में भारत के सामने एक दुरुह समस्या है कि उसकी बढ़ती हुई जन संख्या को किस प्रकार उद्योग धन्धों में लगाया जावे। इस अपार जनशक्ति को उचित वेतन पर काम देना ही मूल प्रश्न है। औद्योगीकरण की सारी योजनाएं इसी सत्य पर आधारित होनी चाहिये। दुर्भाग्य से सरकार की नवीन औद्योगिक नीति में गौण स्थान दिया गया है। इस नीति में यह कहीं नहीं लिखा गया है कि बड़े उद्योगों को उसी हद तक प्रोत्साहन और सहायता दी जावेगी जहा तक वे छोटे उद्योगों को हानि न पहुंचावें। वरन बड़े-बड़े मूल उद्योगों को दस वर्ष के लिये और उपभोक्ता की वस्तुओं से संबंधित अन्य उद्योगों को सदा के लिये व्यक्तिगत व्यवसाय के हाथों में छोड़ दिया गया है। ऐसी अवस्था में वे मन माने रूप से छोटे उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा करेंगे।

सरकार ने अपनी नीति में जो कुछ छोटे उद्योगों को महत्ता दी भी है वह अस्थायी कारणों की वजह से दी है उसमें हमें किसी प्रकार का स्थायित्व दिखाई नहीं देता है। उदाहरणार्थ नीति में लिखा है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक परिस्थिति के कारण विदेशों से मशीन इत्यादि मंगाना सम्भव नहीं है और इस लिये बड़े उद्योग धन्धे बड़े पैमाने पर चालू नहीं किये जा सकते। अतः उपभोक्ता की वस्तुओं का उत्पादन छोटे उद्योगों द्वारा ही करना होगा। इस से स्पष्ट है कि सरकार ने छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन किसी आदर्श से प्रेरित होकर देना स्वीकार नहीं किया है, वरन् मशीन इत्यादि के आयात के कठिनाइयों से विवश होकर किया है। इसका अर्थ यह हुआ कि छोटे उद्योग उन्हीं क्षेत्रों में उन्नति कर सकेंगे जिन में बाहर से मशीनें ही नहीं मगायी जा सकतीं और ज्यों ही देश को बाहर से मशीनरी मंगाने की सुविधा प्राप्त हुई, छोटे उद्योगों के स्थान पर बड़े उद्योग खड़े होने दिये जावेंगे। इस अस्थायित्व के वातावरण में वे किस हद तक पनप सकेंगे यह स्पष्ट है। और यदि पनपे भी तो क्या उनमें अधिक उत्पादन कुशलता नहीं आ सकेगी।

कांग्रेस के आदर्शों की अवहेलना

देश के सारे प्रान्तों, देशी रियासतों और केन्द्र में हमारी सरकार शासन कर रही है। यद्यपि केन्द्र में और रियासत में मिश्रित सरकार है, फिर भी उनमें कांग्रेस का बहुमत है और कांग्रेस जन अपनी नीति को व्यावहारिक रूप देने की सामर्थ्य रखते हैं। अतः यह देखना आवश्यक है कि नवीन औद्योगिक नीति में कांग्रेस ने ग्रामीण उद्योगों के प्रति अपने आदर्शों का कहां तक पालन किया है। कांग्रेस के आर्थिक आदर्शों पर बापू के सिद्धांतों की

[शेष पृष्ठ २० पर]

पाकिस्तान से वापिसी पर

[श्री गोविंददास 'विनीत']

'आइ ऐम कमिंग बाई फर्स्ट ट्रेन टूडे—सिद्दीक।

कंचन बाबू की आंखें उक्त तार को पढ़ कर सजल हो उठीं। दो तीन बार पढ़ कर नौकर के लिए घण्टी कर दी। प्रसादी सुरती रगड़ता हुआ सामने आ खड़ा हुआ। 'क्या है ? बाबू जी।' उसने फंकी लगाते हुए पूछा।

'अरे भाई। जरा 'कार' को देख लो। स्टेशन चले जाओ। सिद्दीक भाई आ रहे हैं अब।'

'सिद्दीक भाई ? और पाकिस्तान ? वह तो ...' प्रसादी ने कुछ आश्चर्य मगर व्यंग के साथ पूछा।

'अरे, हो चुका पाकिस्तान। सही सलामत लौट रहे हैं। यही बहुत समझो। समझाया था—'न जाओ।' न माने। बीबी बच्चे खोये, ढाई तीन लाख की जायदाद बरबाद कर दी, अब लौट रहे हैं फटे हाल। जो कुछ हो, अपने तो वही हैं। हमें अपना कर्तव्य देखना है।' कंचन ने फिर तार का परचा हाथ में ले लिया। 'देर न करो'—उन्होंने फिर कहा।

× × ×

'आदाबर्ज, मिस्टर कंचन !'—आगन्तुक ने बेतकल्लुफ़ कमरे में प्रवेश करके कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

'आप ?' ....अहाबर्ज ....आप ....' कंचन बाबूने हिचकिचा कर पूछ डाला। वाटी पर चलता हुआ सेफ्टिरेजर आप ही बन्द हो गया।

'सिद्दीक, क्या आपने पहिचाना नहीं'—आगन्तुक ने कुछ टोपी को इधर-उधर सरकाते हुए अपने मैले और टूटे दांतों से प्रमाण देने की कोशिश की।

'ओ हो ! सिद्दीक भाई ! तीन ही माह में भकमूंजे बन गये। अरे, वह मिरजाशाही सूट न सही मगर तुम तो दुलिया भी पाकिस्तान की नजर कर आये मैं आपका बिलकुल ही नहीं पहिचान सका। और मैं क्या ? शायद कोई भी तुम्हारा आशना तुम्हें न पहिचानेगा।' कंचन बाबू ने कहते हुए सिद्दीक से उठ कर हाथ मिलाया और—'कहिये कैसा गुजरा ?' मुस्करा कर पूछा।

मियां सिद्दीक अपने खयालात की किश्ती में बैठे हुए सोच रहे थे—क्या यही किनारा है ?' मुसीबत का दरिया पार हो चुका क्या ? क्या यही मेरा होटल है ? नहीं—था। और अब ....वह कंचन के प्रश्न पर बोले—'जी ! इसी ट्रेन से,' आपको मेरा तार तो मिला होगा।

'जी, मिला था। क्या आपको कार स्टेशन पर लेने नहीं पहुंची ? प्रसादी बड़ा सुस्त हो चला है।'—कंचन बाबू समझ गये कि सी छोकरे ने उनकी बात सुनी ही नहीं। 'अरे, छुदामी, उन्होंने आवाज लगाई।'

'जी, बाबू जी !'—छुदामी ने आते आते कह डाला।

'अरे भाई ! कुछ नाश्ता और चाय लेता आ।' छुदामी लौट पड़ा।

'कार तो मुझे गेट के सामने नजर आई। परसादी भी वहीं खड़ा हुआ किसी की इन्तजारी सी कर रहा था। मैं नहीं समझा कि उसका मतलब मुझी से है। खैर, मैं आ पहुंचा। न सही कार, बेकारों को क्या कार ?'

'घर आपका है, कैसी बातें करते हैं ? आप। संभालिये अपना होटल, मुझे खुद फ़ुरसत नहीं मिल रही है। मेरे निजी काम तक रुक रहे हैं। अच्छा हुआ, आप आ गये।'

'मगर आपका रुपया ?'

'मुझे सूद नहीं चाहिए। जब गुंजाइश हो, असल दे देना। काम तो चालू है ही।' कंचन बाबू फिर से शेविंग में लग गये।

छुदामी ने चाय और नाश्ता लाकर एक छोटी सी मेज पर रख दिया और सिद्दीक मियां कुरसी सरका कर आ बैठे वहीं। एक निवाला और एक घूंट चाय। आंखों में कुछ कुछ चमक सी आ गई। "हदुल्लिल्लाह" उनके मुंह से निकला।

कंचन बाबू और सिद्दीक मियां बचपन के लंगटिया यार, हम सबक और एक ही अखाड़े के पट्ठे तो थे ही; पर जवानी में भी उन दोनों ने साथ न छोड़ा। शिराकत में अढ़त का काम करके लाखों रुपया कमाया। पाकिस्तान जाने से पूर्व सिद्दीक का 'सिद्दीक होटल' और कंचन बाबू का 'कंचन शुगर मिल' अलग-अलग चल रहे थे। सिद्दीक मियां अपना सब कुछ बेच बाच कर पाकिस्तान में हज करने गये थे। वहां पहुंचते-पहुंचते वे सचे हाजी या यों कहिये कि फकीर बन चुके थे। यह सारे हालात उन्होंने एक हफ्ते पहले पत्र में लिख कर कंचन बाबू के पास भेजे थे और उन्हीं के प्रेरणा पत्र पर वह फिर से कानपुर लौटे थे।

'कंचन होटल' प[illegible] से 'सिद्दीक होटल' का साइन बोर्ड [illegible]आ, तभी से हिन्दू गाहकों का आना जाना बन्द होकर वह सीधा 'मुस्लिम होटल' रह गया। ऐसा पहले न था। 'सिद्दीक होटल' में हिन्दू और मुसलमानों के भोजनों का अलग-अलग उनकी इच्छानुसार पद्धतियों पर उसका प्रबन्ध चलता था। प्रबन्धक और कर्मचारी भी दोनों प्रकार के थे। होटल के एक भाग पर लिखा हुआ था—'शुद्ध हिन्दू भोजनालय' और दूसरे पर 'मुस्लिम होटल' वह दोनों तख्तियां अब भी टंगी हुई थीं, परन्तु हवा तो हवा ही है। बदल गयी, तो बदल गयी। हजार उपाय करने पर भी फिर वह 'हिन्दू भोजनालय' न कहला सका। सिनेमा और अखबारों में हिन्दू उसका विज्ञापन देखते हुए भी न देखते थे। कुछ लोग तो कंचन बाबू से भी इसी बात पर कुछ रूठ से रहने लगे।

× × ×

'यह लीजिये पैंतालीस रुपये—' एक मुस्लिम ने नोट बढ़ाते हुए सिद्दीक से कहा।

'बस ठीक है, रोज-रोज का हिसाब छूटा। पन्द्रह रुपये की किफायत भी हो गयी। महाने भर ठाठ से खाना खाइये।' सिद्दीक ने रजिस्टर हाथ में लेते हुए कहा और—'आपका इस्मशरीफ ?'—पूछा।

'लिखिये अफ़ज़ल ठेकेदार लकड़ी कोंह अगा। हाल कानपुर।'

'फ़ुरसत हुई।'

'पाकिस्तान में भी यही बहार होगी ?' अफ़ज़ल ने सिगरेट केस सिद्दीक के आगे बढ़ा दिया।

'पाकिस्तान के मजे न पूछिये साहब ?' जन्नत बन रहा है, बिलकुल पाकिस्तान। खुदा जिन्ना साहब की उम्र दराज करे, उन्होंने इस्लाम की हस्ती इतने काफ़िरों में भी कयामत तक के लिये कायम कर दिखलायी और अगर अल्लाह पाक को मंजूर है तो कुछ दिनों में ही अफ़ग़ानिस्तान पाकिस्तान बन के रहेगा।'

(शेष पृष्ठ २२ पर)

नारी-जागरण का एक पृष्ठ

[श्रीमती सन्त निहालसिंह]

★

मुझे आश्चर्य है कि आज से ४०-५० वर्ष पूर्व भारतीय लड़कियों के लिए चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त कर सकना कितना कठिन था। १८८०-९० के सालों में एक बंगाली लड़की ने डाक्टर बनने का निश्चय किया। उसे कलकत्ते की किसी संस्था में प्रविष्ट नहीं किया गया। वह लड़की बड़े दृढ़ निश्चय की थी। उसने मद्रास जाकर वहां के मेडीकल कालेज में शिक्षा ग्रहण की। उसकी एक सहेली ने मुझे बताया कि उसके मार्ग में कितनी कठिनाइयां आईं और उन पर उसने किस प्रकार विजय प्राप्त की। यह केवल ६० वर्ष पहले की बात है। वह देवी अभी तक जीवित है। उसका नाम अबला बसु है और वह संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बसु की धर्मपत्नी है। जो लोग परिचित हैं वे जानते हैं कि उसने स्त्रियों के लिए विभिन्न द्वार खोलने में कितना अधिक परिश्रम किया है। वह मार्गरेट नोबल को, जो बहिन निवेदिता के नाम से प्रसिद्ध है अपने घर ले गई। दोनों ने मिल कर एक विद्यालय खोला। इस विद्यालय का उद्देश्य लड़कियों के मस्तिष्क को आधुनिकतम ज्ञान से आलोकित करना था। परन्तु प्राचीन भारतीय ज्ञान से भी उन्हें वंचित नहीं रखा जाता था। इस कारण वे लड़कियां पश्चिम की बात सोच कर अधिक अच्छी भारतीय बनेंगी। यह कार्य प्रारम्भ होने के थोड़े समय पश्चात् ही निवेदिता की मृत्यु हो गई परन्तु अबला बसु ने उस काम को जारी रखा और यह संस्था अब तक चल रही है। इसके द्वारा भारत माता के उस भाग के नर नारियों की आंखों को खोलने का बड़ा सुन्दर काम हुआ।

४० वर्ष पहले स्त्रियों की शिक्षा के सम्बन्ध में जो प्रतिबन्ध मैंने भारत में देखे थे, वे भारत की ही खास वस्तु नहीं थे। अन्यत्र भी स्त्रियों को उस प्रकार की बाधाओं को सहना पड़ रहा था। स्त्री का जगत् उन दिनों दूसरे देशों और द्वीपों में भी अत्यन्त संकुचित था। प्रत्युत अन्यत्र स्त्रियों विषयक विचार और भी अधिक संकुचित थे।

मैं अपना ही उदाहरण देती हूं। मैंने पत्रकार बनने का निश्चय किया। जब मैंने अपने पिता से जिक्र किया तो वे क्रुद्ध हुए, उन्होंने कहा कि तुम किसी अखबार के कार्यालय में जाओ, इसकी अपेक्षा तो वह अधिक अच्छा होगा कि [illegible] जाओ। पत्रकार का पेशा [illegible] के लिए अच्छा नहीं है। [illegible] की दृष्टि से [illegible] तुम अध्यापिका बन सकती हो। पत्रकार का पेशा स्त्रियों के योग्य नहीं है। मैं तुम्हें अखबार के दफ्तर में नहीं जाने दूंगा।

मेरे पिता अपने समय के एक बहुत शिक्षित व्यक्ति थे। वे बड़ा सुन्दर भाषण करते थे और स्वतन्त्रता पर ध्यान दिया करते थे। परन्तु जब उनकी अपनी लड़की के लिए स्वतन्त्र रूप से कोई काम चुनने का प्रश्न सामने आया तो वे बहुत क्रुधित हुए क्यों कि इस विषय में उनके विचार अपने समय के विचारों से अधिक उन्नत नहीं थे। परन्तु मैं अपने विश्वास पर दृढ़ रही। मैंने अध्यापिका आदि बनने से सर्वथा इन्कार कर दिया। भाग्य की मुझ पर कृपा रही। मैं अपने पेशे में सुखी रही हूं, और इसके द्वारा मैं दूसरों की भी सेवा कर सकी हूं। यह अमेरिका का हाल था। मेरे अनेक साथियों को बड़ा कष्ट सहना पड़ा है मेरी एक मित्र बेटवा लोकवुड थी। वह वकील बनना चाहती थी। उसको कानून की शिक्षा लेने में भारी कठिनाइयां आईं, परन्तु वह घबराई नहीं, आखिर वह नेशनल यूनिवर्सिटी ला कालेज में प्रविष्ट हो सकी और १८७३ में उसने वहां से उपाधि प्राप्त की। उसका कानून का ज्ञान असाधारण था। वह निर्भय होकर कचहरी में जाकर खड़ी हो गई, जब जज की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसने उससे पूछा कि कचहरी में किस लिए आई है। उसने उत्तर दिया कि मैं अपने मवक्किल की ओर से यहां खड़ी हूं। इस पर जज ने कहा कि यह काम पुरुषों का है। यह कह कर वह अपने काम में लग गया। वह अगले दिन फिर कचहरी में गई, परन्तु परिणाम वही रहा। यह बात अनेक बार दुहराई गई। हर बार उसे फटकार मिली। सफलता पाने के लिए उसका निश्चय दृढ़तर होता गया। उसने १८७६ में अमेरिका की कांग्रेस से इस सम्बन्ध में एक कानून पास करवाया। यह कानून पास होने के पश्चात् उसकी वकालत की कठिनाई दूर हो गई। शीघ्र ही उसकी कानूनी प्रतिभा सारे अमेरिका की चर्चा का विषय बन गई। वह अपनी इस प्रतिभा का प्रयोग असहाय लोगों के विशेषकर स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा में करती थी। उसे, उस योग्यता के कारण एक विश्वविद्यालय ने "डाक्टर आफ ला" की उपाधि दी और स्त्रियों के दल ने अमेरिका के राष्ट्रपति पद के चुनाव में अपने प्रार्थी के रूप में उसे खड़ा किया। उसने मुझे बताया कि जब वह एक बार वाशिंगटन के बाजारों में साइकिल पर चढ़ी जा रही थी, तो क्षुद्राशय लोगों ने इस पर होहल्ला मचाया था। यह काम सर्वथा अमर्यादित समझा गया था। उसका साइकिल उससे छीन लिया गया था। आज तो लड़कियें और स्त्रियें संसार में सभी जगह साइकिलों पर चढ़ती हैं। इससे पता लगता है कि अब संसार कितना बदल गया है, और यह परिवर्तन इस लिए आया है कि अबला बसु और बेलवा लोकवुड जैसी नारियें अज्ञान एवं अन्धविश्वास पर आश्रित अशुद्ध विचारधारा के आगे झुकीं नहीं।

जब मैंने ब्रिटेन में निवास आरम्भ किया, इससे पहले ही मैं प्रगतिशील नारियों की कठिनाइयों के सम्बन्ध में पढ़ा और सुना करती थी। जब मैं उन देवियों के सम्पर्क में आई तो मैंने अनुभव किया कि उनका आन्दोलन कितना कठिन था और उससे कितनी कड़वाहट उत्पन्न हो गई थी। स्त्रियों को उच्च एवं पेशे सम्बन्धी शिक्षा देने से रोकने के लिए इंग्लैंड के पुरुष इतने कटिबद्ध थे कि स्त्रियों को अपने स्वतन्त्र शिक्षणालय खोलने पड़े थे। क्या आप विश्वास करेंगे कि अभी हाल तक इंग्लैंड के विश्वविद्यालय इन शिक्षणालयों द्वारा दी हुई उपाधियों को स्वीकार नहीं करते थे। मैं चाहती हूं कि डाक्टर गैरट ऐण्डरसन की जद्दोजहद का कुछ विस्तार से वर्णन कर सकती। बाधायें और कुछ कारणों से हतोत्साह न होकर उसने चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उसने लण्डन में एक कालेज और एक औषधालय खोला, ऐण्डरसन और उसकी छात्राओं ने तब तक विश्राम नहीं किया जब तक कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान चिकित्सा शास्त्र पढ़ने और चिकित्सा व्यवसाय करने की सुविधा नहीं मिल गई। और पुरुषों का इस क्षेत्र का एकाधिपत्य विनष्ट नहीं कर दिया गया।

मैं चाहती हूं कि मैं उसकी छोटी बहन मिलिसेन्ट फासेट के सम्बन्ध में भी कुछ कहूं। उसने डाक्टर फासेट से विवाह किया, जो फासेट पार्लियामेंट में भारत का समर्थन करते रहने के कारण भारतीय मेम्बर के नाम से कहे जाने लगे थे। जब डाक्टर फासेट मन्त्रीमण्डल के सदस्य थे और डाक विभाग के मन्त्री थे, तो वे एकाएक अन्धे हो गये। तब मिलिसेन्ट ने उसकी आंखों का काम किया। वह सब सरकारी कागजात पढ़कर सुनाया करती थी और सब तरह से उसके काम में सहायता करती थी। डाक्टर फासेट भी अपनी पत्नी के स्त्रियों की उन्नति सम्बन्धी कामों में सदा भरपूर सहायता करता था। उसकी पत्नी का मुख्य कार्य स्त्रियों को पुरुषों के हाथ से राजनैतिक शक्ति के एकाधिपत्य को छीनने के लिए संगठित करना था।

जिन दिनों मैं ब्रिटेन में पत्रकार का कार्य कर रही थी, उन दिनों यह आन्दोलन पूरे यौवन पर था। लोग दो दलों में बट गये थे। अत्यधिक जोश से लोगों को वैधानिक तरीके में विश्वास नहीं रहा था। स्त्रियों को राजनैतिक क्षेत्र में पुरुषों की समानता का अधिकार प्रथम महायुद्ध के बाद मिल सका, जबकि स्त्रियों ने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम कर के दिखाया।*

---

* कन्या गुरुकुल, देहरादून में दिये गये दीक्षान्त अभिभाषण का एक अंश

अलुमुनियम और उसकी उपयोगिता

(आयन काबस)

उन कई पदार्थों में जिनकी हमें आज प्रतिदिन आवश्यकता पड़ती है अलुमुनियम अपना विशिष्ट स्थान रखता है। संसार में उसकी कमी नहीं है और न ही कोई ऐसा देश है जहां वह सरलता से प्राप्त न किया जा सके। खाद्य उद्योगों और रसोई में उसका उपयोग अधिकाधिक किया जा रहा है।

इस उपयोग की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ाने के लिए ब्रिटिश वैज्ञानिक उसमें अनुसन्धान कर रहे हैं। ऐसे महत्वपूर्ण कार्य का श्रीगणेश कैम्ब्रिज स्थित नीचे तापमान का अध्ययन करने वाली सरकारी संस्था ने अलुमुनियम सम्बन्धी सूचना संग्रह के रूप में किया। इसके फलस्वरूप डाक्टर जे० एम० आयन ने 'खाद्य उद्योगों में अलुमुनियम और अलुमुनियम मिश्रित धातु' नामक पुस्तिका लिखकर जनसाधारण को यह अवसर दिया कि, एक ही स्थान में, अलुमुनियम की पूर्ण आलोचनात्मक चर्चा सुन सकें।

विषैली धातु नहीं

आप सर्वप्रथम यह जानना चाहेंगे कि अलुमुनियम विषैली धातु है या नहीं। वैज्ञानिकों के अनुसार यह न विषैली धातु है और न इसके बर्तनों में पकी चीजें खाने से रोग का डर है। विटेमिन भी अलुमुनियम के बर्तनों में नष्ट नहीं होते।

कुछ कारणों से खाद्य उद्योगों तथा घर में अलुमुनियम बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है इस से विविध आकार के बर्तन आसानी से बनाए जा सकते हैं और खाने की क्षार वस्तुओं से बर्तन नष्ट होने से बचाए जा सकते हैं। अलुमुनियम बर्तनों की सतह पर आक्साइड—वह द्रव्य जो प्राणवायु का अन्य तत्वों के योग से बनता है—की एक झिल्ली होती है जो बर्तनों को क्षार वस्तुओं द्वारा नष्ट होने से बचाती है

बर्तनों का नष्ट होना

आक्साइड की इस झिल्ली में ... के बहुत गुण हैं और डाक्टर ... ने इस गुण का विस्तृत विश्लेषण उन विभिन्न वस्तुओं का उदाहरण देकर किया है जो अलुमुनियम के बर्तनों में रखी जा सकती हैं क्यों कि बर्तन की सतह की बनावट का धातु के नष्ट होने पर बहुत प्रभाव पड़ता है और यह भी देखना आवश्यक है कि बर्तन में रक्खी वस्तु ऐसी तो नहीं है जिसके कारण आक्साइड की झिल्ली घुल जाय। उदाहरणार्थ, फलों के ठंडे जूस का अलुमुनियम पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है, पर कुछ गरम जूस धातु को नष्ट कर सकते हैं। बर्तन पर जूस का प्रभाव चीनी अधिक समय तक नहीं पड़ने देती और जूस का सम्पर्क धातु से बहुत समय तक रहता भी नहीं। इन्हीं दो कारणों से अलुमुनियम के बर्तनों में मुरब्बा बनाने पर धातु खराब नहीं होती।

अलुमुनियम के बर्तनों से कठिनाइयां पहले बर्तनों में निम्नश्रेणी की धातु के उपयोग और उन्हें साफ करने में प्रयुक्त रही वस्तुओं के कारण होती थीं। इन कठिनाइयों का निवारण निश्चय ही वैज्ञानिक प्रगति के कारण हुआ है।

घरों में अलुमुनियम के बर्तन साफ करने के लिए डाक्टर आयन हटका साबुन और इस्पाती रेशों की कोई रोयेंदार हल्की चीज अथवा चिकने वाला पदार्थ अच्छा समझते हैं।

अन्य बातें

ये घरेलू नुस्खे मनोरंजक अवश्य हैं पर आयन की पुस्तिका में इस विषय को थोड़ा ही स्थान दिया गया है अधिकांश भाग में इस पर विचार किया गया है कि अलुमुनियम और अलुमुनियम-मिश्रित धातु खाद्य उद्योगों में कितनी उपयोगी हो सकती है।

दुग्धशाला की विभिन्न मशीनों में इस धातु का प्रयोग आरम्भ हो गया है। इस्पात की चादरों पर जस्ते के स्थान में अलुमुनियम की सतह लगाई जाने लगी है। वायुयान निर्माण में और बिजली के यन्त्रों में अलुमुनियम का प्रयोग पहले से ही होता है।

राष्ट्र-भाषा की समस्या

[श्री भगवद्दत्त शर्मा]

भारतीय संघ की कौन सी भाषा हो, इसका निश्चय राष्ट्र के कर्णधार अब तक नहीं कर सके यह आश्चर्य ही नहीं, सन्ताप का विषय भी है। इस सम्बन्ध में चार विचार धाराएं प्रकट रूप से सामने आई हैं। एक तो यह कि संस्कृत को राष्ट्रभाषा बना दिया जाय इसके समर्थक उड़ीसा व बिहार के गवर्नर द्वय मा० डाक्टर कैलाशनाथ काटजू और मा० माधव श्री हरि अणे हैं। दूसरी के पृष्ठपोषक हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के प्राण राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन और समस्त हिन्दी जगत् है जो देवनागरी लिपि में लिखी गयी हिन्दी को यह सम्मान देना चाहता है। तीसरी के अनुयायी महात्मा गांधी के भक्त हैं जो हिन्दुस्तानी को दो लिपियों में लिखकर राजभाषा का पद देना चाहते हैं। इनमें मुख्य प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू और शिक्षा मन्त्री श्री अबुल कलाम आजाद हैं। चौथी के मूकसमर्थक केन्द्रीय शासन के अधिकांश उच्च अधिकारी हैं जो अंग्रेजी को ही उपयुक्त समझते हैं, क्योंकि वह आज की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। इनमें मदरासी सर्वाधिक हैं और प्रतीत ऐसा होता कि निकट भविष्य में केन्द्रीय शासन में एक भी अ-मदरासी न रहेगा। इस प्रकार राष्ट्रभाषा का 'पत्रव' (जहाज) विचार धाराओं के क्षुब्ध मर्यादा रहित सागर के प्रचण्ड कम्पन में बहता फिर रहा है; किनारे नहीं आता, बल्कि आने नहीं दिया जाता।

भारत सरकार की इस दुर्नीति के कारण समस्त प्रान्तों के राजकर्मचारी असमंजस में पड़े हुए हैं, जनता के धैर्य की समाप्ति हो चुकी है। उधर कांग्रेस इस प्रश्न को टालती जा रही है। भारत विभाजन के कारण वह हिन्दुस्तानी (उभयलिपिमूलक) को इस समय राष्ट्रभाषा घोषित करने का साहस नहीं रखती और अपनी इष्टपूर्ति के लिए अन्दर ही अन्दर सदस्यों की बहुसंख्या अपने पक्ष में कर रही है। कितनी प्रवंचना है! यद्यपि जनमत इसके अनुकूल होगा इसमें सन्देह है।

प्रथम विचारधारा

यह निर्विवाद सत्य है कि पूर्वकाल में संस्कृत भारत की राष्ट्रभाषा थी। सर्वत्र उसका अबाध प्रचार था। वेद ही नहीं, उच्च साहित्य से लेकर सामान्य पुस्तकों तक की उसी में रचना होती रही। आज भी हमारे पास जो कुछ बचा है वह इसी संस्कृत में है। संस्कृत की अमर शक्ति को म्लेच्छ कुटिल अंग्रेज समझते थे और इसीलिए उन्होंने संस्कृत को मृतभाषा कह-कहकर भारतीयों में उसके प्रति अनास्था उत्पन्न करदी। अन्यथा मैक्समूलर यह न कहता कि अंग्रेजों के पदार्पण से पहले अकेले बंगाल में अस्सी हजार संस्कृत पाठशालाएं थीं। अर्थात् प्रति चार सौ मनुष्यों के पीछे एक संस्कृत पाठशाला। सभी मनुष्य शिक्षित थे। इसीलिए बंगला भाषा में संस्कृत—मंजुल प्रचुर शब्दावलि विद्यमान है। यद्यपि अंग्रेजों ने समस्त पाठशालाओं को सहायता देनी बन्द कर दी जो उन दिनों उन्हें ग्राम पचायतों से मिलती थी तो भी स्कूलों में वे संस्कृत का पठन पाठन बन्द नहीं कर सके। यही कारण है कि भारत के सभी प्रान्तों में संस्कृत स्कूल कालेजों में एक पाठ्य विषय है। उत्तर भारत के सभी प्रान्तों में जहां संस्कृत का प्रचार है वहां दक्षिण भारत में भी यही स्थिति है और दक्षिण की तामिल, तैलगू मलयालम आदि भाषाओं में ७० प्रतिशत इसी भाषा के शब्द हैं। मदरास आदि प्रान्तों के नेता या अधिवासी हिन्दी के प्रति अपना वैराग्य या विरोध प्रदर्शित कर सकते हैं परन्तु संस्कृत के लिए वे ऐसा नहीं करेंगे।

यही नहीं, भारत के शिक्षा सचिव श्री आजाद तक पटना विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में और भारतीय पार्लमेंट में शिक्षा कटौती प्रस्ताव पर अपना अभिमत संस्कृत के पक्ष में व्यक्त कर चुके हैं। परन्तु वह इस लिए नहीं कि उन्हें संस्कृत से प्रेम है, प्रत्युत संस्कृत के सहारे से वे उसके समकक्ष अरबी और फारसी को भी आश्रय प्रदान कराने में सफल हो सकते हैं। अर्थात् सर्वसाधारण की भाषा में ३३ प्रति शत संस्कृत के शब्द आवेंगे तो ६६ प्रतिशत अरबी और फारसी के। हिन्दुओं की मूर्खता देखिये कि प्रान्त्य भाषाओं में उन्होंने केवल संस्कृत रखी, वे संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत या पाली को रख सकते थे।

द्वितीय विचारधारा

दूसरा दृष्टिकोण या विचारधारा हिन्दी जगत् की है। इसके पीछे भारी जनमत है। संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्य प्रान्त, पूर्वी पजाब, विन्ध्य प्रदेश, समस्त राजपूताना, मालवा आदि सब प्रान्तों की भाषा हिन्दी ही है और कई प्रान्तों में तो वह राज भाषा के पद पर आसीन भी हो चुकी है। यद्यपि मध्य प्रान्त में उसकी मराठी के साथ प्रति द्वन्द्विता है और पूर्वी पंजाब में एक कल्पित भाषा गुरुमुखी के कारण उसकी हित-हानि की संभावना है, तथापि प्रान्तों के पुनः संगठित हो जाने पर वह अपने प्रदेश में अधिकार सम्पन्न हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं।

इस समय भारतीय संघ का समस्त क्षेत्रफल १२,२०,०९९ वर्गमील है जिसमें से ६,३२,२११ वर्गमील का क्षेत्र प्रान्तों का है और शेष ५,८७,८८८ रियासतों का है। रियासतों के लगभग तीन लाख से अधिक क्षेत्र में हिन्दी बोली और लिखी जाती है। एक लाख से अधिक मराठी क्षेत्र की लिपि भी देवनागरी है, यह भी स्मरण रखना चाहिए। प्रान्तों के क्षेत्रफल में से संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्य प्रान्त, पूर्वी पजाब, अजमेर मेरवाड़ा और दिल्ली का योग तीन लाख से कुछ ही कम होता है। फिर पश्चिमी बंगाल का बर्दवान डिवीजन, कलकत्ता जिला, बम्बई प्रान्त का बम्बई नगर और मैसूर राज्य का अधिकांश भाग हिन्दी समझ लेता है। मदरास प्रान्त में भी महात्मा गांधी के प्रयास के कारण हिन्दी बोली व लिखी जाती है। उड़ीसा में भी हिन्दी का प्रचार है। अर्थात् भारत के समस्त वर्गमील क्षेत्र की ७५ प्रतिशत जनसंख्या हिन्दी भाषी और हिन्दी से अवगत है राजनीति ही नहीं, सर्वमान्य सिद्धान्त के अनुसार हिन्दी का राष्ट्रभाषा के पद पर अभिषिक्त किया जाना न्यायसिद्ध एव अधिकारसिद्ध भी है। जब कि रूस आदि देशों में ८० या किसी के मत से ९९ उपभाषायें होने पर भी रूसी इस लिए राष्ट्रभाषा है कि वह अधिक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है, तब हिन्दी तो प्रतिनिधित्व के नाते रूसी भाषा से बहुत बढ़ी चढ़ी है। रही यह बात कि उसकी संस्कृत निष्ठता किसी को फूटी आंख नहीं सुहाती, तो उस में सरलातिसरल शब्दावलि भी प्रचुर मात्रा में है। 'इस बात को समाप्त करो' के स्थान में 'इस बात को खत्म करो' क्यों सरल है? क्या इस लिए कि 'खत्म' शब्द श्री नेहरू या श्री आजाद अधिक बोलते हैं? हिन्दी में तद्भव शब्दों की कमी नहीं है, कमी उनकी है जो हिन्दी की शब्द-शक्ति का बिना प्रयोग किये और जाने वह संस्कृत निष्ठ है ऐसा समझ बैठे हैं। इसे ही संस्कार का दोष कहते हैं।

आज भारत सरकार का सारा शिक्षा विभाग हिन्दी विरोधियों का एक अखाड़ा है। उसके मन्त्री से लेकर अधिकतर उच्चाधिकारी हिन्दी विद्वेष की नाना योजनाएं बनाने में व्यस्त हैं। और इसी में वे अपने कर्तृत्व की पराकाष्ठा समझते हैं। क्या कारण है कि अफगानिस्तान का राजदूत पद स्वीकार करने और जाने की तिथि निश्चित होजाने पर भी डा० ताराचन्द को शिक्षा सचिव का परामर्शदाता नियुक्त कर दिया गया? क्या केवल हिंदी विरोध के कारण? श्री रामलाल आदि की नियुक्तियां पुकार-पुकार कर कह रही हैं [illegible] कि हिंदी विरोधी तत्व अधिक [illegible] समवेत किये जा रहे हैं ताकि ये लोग अपना कार्य कुशलता से हिंदी को अपदस्थ करें। आयर देश का स्वाधीनता के सन्धिपत्र पर आयर की मृतभाषा 'गैलिक' (जो अंग्रेजों के कुकृत्यों के कारण लुप्त-सी हो गई थी) में उस देश के नेताओं ने हस्ताक्षर किये और उसी दिन से लेकर एक वर्ष के भीतर समस्त आयर में वह भाषा प्रचलित हो गई।

जिस के बल पर आज नेताओं ने स्वराज्य लिया है वह हिन्दी भाषा विद्यमान है, परन्तु तो भी कभी कोई कमेटी और कभी कोई कमीशन केवल इस लिए बैठाये जाते हैं कि किसी तरह कालक्षेप हो जाय और या तो अंग्रेजी ही बनी रहे और या हिन्दुस्तानी जनता के सिर पर लाद दी जावे। अन्यथा डा० ताराचन्द प्रभृति हिन्दी-विरोधी और हिन्दी की शक्ति से अनभिज्ञ उर्दू अंग्रेजी-भक्त २२ व्यक्तियों के कमीशन का अभिप्राय क्या है? जो हो जिस जनता की जागृति के कारण भारत स्वाधीन हुआ है उसी के सतत यत्नों से हिन्दी भाषा भी अपने स्थान पर आरूढ़ होगी, यह निश्चय है। क्या वे नेता जो राष्ट्र के कर्णधार बने बैठे हैं, छाती पर हाथ धर कर बता सकते हैं कि उनके आन्दोलनों में अंग्रेजी पत्रों या अंग्रेजी ने कितना सहयोग दिया था? क्या ६०० राज्यों का सरलता पूर्वक विलीनकरण हिन्दी अथवा प्रान्तीय भाषाओं के समाचार पत्रों के आन्दोलन का परिणाम नहीं है?

तृतीय विचार धारा

तीसरी विचार धारा के प्रवर्तक महात्मा गांधी थे। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति दो बार बने और आज मद्रास पर्यन्त हिन्दी का जो प्रचार है वह उन्हीं के शुभ प्रयासों का शोभन परिणाम है। प्रारम्भ में वे हिन्दी के पक्षपाती थे परन्तु आगे चल कर उन्होंने किसी भी मूल्य पर मुसलमानों को मिलाने के लिए हिन्दुस्तानी का पक्ष लिया और दूसरी गोलमेज परिषद के अवसर पर मुसलमानों को 'कोरा चैक' तक दे दिया, परन्तु तब भी मुसलमान सन्तुष्ट न हुए और सरदार पटेल के कलकत्ता और लखनऊ में दिये गये भाषणों के अनुसार वे महात्मा जी को अपना 'प्रथम शत्रु' मानते रहे। परन्तु फिर भी गांधी जी अपने प्रयासों से विरत न हुए और मुसलमानों के हित के लिए ही उनके प्राण गये। वे चाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान घुलमिल कर रहें, एक राष्ट्र बनें। दोनों को अत्यन्त निकट लाने के लिए वे हिन्दुस्तानी का प्रयोग चाहते थे। फलतः हिन्दुओं ने उर्दू सीखी, परन्तु मुसलमान हिन्दी के निकट भी न आये। अपनी इस [illegible] के बल पर उन्होंने पाकिस्तान लेकर छोड़ा और वहां की राजभाषा डंके की चोट उर्दू कर दी गई। यहां भारत के प्रधानमन्त्री कहते हैं कि मैं दोनों लिपियों वाली भाषा हिन्दुस्तानी (यद्यपि 'हिन्दुस्तानी' शब्द उन्हें पसन्द नहीं है) इस लिए चाहता हूं कि उसे महात्मा जी चाहते थे।

महात्मा जी तो यह भी चाहते थे कि कोई ५०० रुपये से अधिक वेतन न ले। प्रत्येक कांग्रेसी त्याग व तपोमय जीवन बितावे। क्या आप यह करते कराते हैं? केवल भाषा के प्रश्न में ही आप महात्मा जी का अनुसरण करते हैं। यही नहीं, आप यह भी कहते हैं कि संस्कृत के शब्द जो हिन्दी में भरे जा रहे हैं वह मुझे मान्य नहीं, परन्तु अरबी फारसी के शब्दों के सम्बन्ध में आप मौन हैं। साथ ही आप यह कहते हैं कि हिन्दी उर्दू का प्रश्न हिन्दू मुस्लिम प्रश्न नहीं है यह तो विशुद्ध राष्ट्रीय प्रश्न है तो आप दोनों लिपियों वाली हिन्दुस्तानी की व्यवस्था करके जनता पर व्यर्थ का भार बढ़ाने को क्यों तैयार हैं? भारतीय संघ के किसी भी प्रान्त में उर्दू राजभाषा नहीं है, केवल नेहरू जी की गद्दी दिल्ली में जनता की इच्छा के विपरीत वह बनी हुई है। जिस भाषा का उपयोग ही नहीं होगा उसको रखना और उसमें सरकारी रिपोर्ट आदि छपाना क्या प्रजा के धन का दुरुपयोग करना नहीं है? उर्दू की छपी पुस्तकों व विवरणों के बंडल के बंडल बंधे पड़े रहते हैं। रहे शिक्षामंत्री श्री आजाद! उनका रहस्यमय जीवन है। गांधी जी के जीवन काल में वे उन्हें भ्रामक रिपोर्टें देते रहे। अब वे जो चाहते हैं उसे श्री नेहरू द्वारा सम्पन्न कराते हैं। वे मूक हिन्दी-द्रोही हैं। हिन्दी की जड़ें खोखली करने का उनका प्रयत्न अब चरम सीमा पर है। जिस प्रकार पादरी नोल्सने हिन्दी के विरोध में रोमन भाषा का भाषा प्रचार किया और उसे रक्षा-विभाग की भाषा बना कर छोड़ा। उसी प्रकार आज आजाद कर रहे हैं। आज भी सेना की भाषा रोमन, उर्दू, गुरुमुखी और तेलगू है' हिन्दी का कहीं नाम तक नहीं।

चतुर्थ विचारधारा

चौथी विचार धारा के पोषक केन्द्रीय शासन के सत्तासम्पन्न उच्चाधिकारी हैं। ये सब वेश, भूषा और संस्कृति से पूर्ण अंग्रेज हैं, यद्यपि रहते भारत में हैं। इन में भी अधिकांश मद्रासी हैं, उनसे कुछ कम पंजाबी, और तदनन्तर सिख हैं। अर्थविभाग, पराराष्ट्र सम्पर्क विभाग, गृहविभाग, और देशीराज्य विभाग में मद्रासियों का बोलबाला है। रक्षा विभाग में सिख ही सिख नजर आते हैं। शेष विभागों में जिन में रेलवे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि हैं उर्दू प्रेमी पंजाबी भरे पड़े हैं। ये परस्पर अपनी प्रांतीय भाषा में वार्तालाप करते हैं। [illegible] से अंग्रेजी में अथवा अपनी प्रांतीय भाषा में हिन्दी में बोलना सचिवालय में पाप समझा जाता है। सभी सचिव अंग्रेजी के पक्ष में हैं या अपनी प्रांतीय भाषाओं के। हिन्दी का पक्षपाती कोई भूला भटका मन्त्री हो तो हो। वह भी हिन्दुस्तानी का ही दम भरता है। जनता की तो यह धारणा होती जा रही है कि इतना प्रचार तो अंग्रेजी का अंग्रेजों के समय में भी नहीं था।

इस बार रेलवे बजट और साधारण बजट का सारांश तक हिन्दी पत्रों को नहीं मिला। जबकि पहले वर्षों में दिया जाता रहा है। हिन्दी का प्रचार विभाग सोता रहता है। इधर हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों का यह कथन है कि अंग्रेजी पत्रों में जो सूचना या लेख निकलते हैं उन पर तत्काल कार्यवाही की जाती है, भाई, हिन्दी पत्रों को कौन पूछता है? अंग्रेजी के जो अधिक जानकार होते हैं वे ही केन्द्रीय सरकार के योग्य कर्मचारी समझे जाते हैं। उच्च कर्मचारियों के इशारों पर, जो कलम शूर हैं और भाषण-पटु हैं, आज भारतीय मंत्रीमण्डल नाचता है। ये जनता के मन्त्रियों को आज अधिक दूर ले जा रहे हैं। जिस देश में उसकी भाषा और उसके बोलने वाले अपने अधिकार के लिए पक्षी के समान पर फड़फड़ाते रहें जिसका शिक्षा मन्त्री देश की परम प्रमुख भाषा से अनभिज्ञ हो तथा दीर्घ काल के लिए अंग्रेजी को ही राजभाषा बनाये रखना चाहे और जिस देश में सच्ची बात कहने वाला विद्रोही या अराजक समझा जाता हो उस देश का कदाचित् ही मंगल होगा।

भाषा के प्रश्न को सरकार जितना अधिक खींचती जायगी और कृत्रिम हिन्दुस्तानी को जनता के सिर पर लादने का दुष्प्रयास करेगी उतना ही अप्रिय और एकांगी दृष्टि से देखी जायगी। हिन्दी को अपना स्थान अब भी न मिला तो ६० वर्ष तक न मिलेगा। भी नहीं और जनता की सच्ची सहानुभूति के अभाव वह अवसर पर आ जाई तो वे असम्मान्य नेता इस सुअवसर के से अपने को वंचित करके अपयश के ही भागी होंगे। निश्चय ही ऐसा अभागा देश होगा जिसमें उसकी भाषा के प्रश्न के साथ स्वयं नेताओं ने खिलवाड़ की हो।

———

भारत मेरा !

[श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' साहित्य रत्न]

कितना ही सागर लहराए !
मांझी ! डूब न नौका जाए !
उद्वेलित जल शिखरों में, रे !
तेरी स्वर-प्रतिध्वनि छा जाए !!
'भारत मेरा !
भारत मेरा !'

आज मुक्त है सागर तेरा !
आज मुक्त है अम्बर तेरा !!
नाविक ! तेरी तरी मुक्त है !
क्योंकि मुक्त है भारत तेरा !!
भारत तेरा !
भारत तेरा !!

ओ युग के सेनानी ! तुझको, आज न झंझारों का भय हो !
ओ मोती के पानी ! तुझको, आज न तूफानों का भय हो !
तेरा अणु अणु प्रति पग प्रतिक्षण, रे चट्टानों से टकरा कर !
दिखलाए वह ज्वाला जग में, हो स्वाहा जिसमें आ आकर !—
रे दुनिया के पाप सभी !
रे जग के अभिशाप सभी !!
आए सबनाश इठलाए !
चाहे महा—प्रलय हो जाए !
ओ युग-स्नु ! हिम-शृङ्ग-शिखर से
तू फिर भी हुंकार सुनाए !—
'भारत मेरा !
भारत मेरा !!'

देख विश्व तैयार खड़ा है, आज पुनः रण-वाद्य बजाने !
अणु-बम से भी अधिक विघातक, अस्त्र-शस्त्र से खड़े भिड़ाने !!
तेरा पथ बीहड़-निर्जन है ! जिसमें पुंजीभूत अनल है !
तेरी दिशा तिमिर-घन घन मय ! प्रलय-समीरण-वेग प्रबल है !
बढ़ रे बढ़ साहस से बढ़ !
चढ़ रे आज शिखर पर चढ़ !
बजने वाली है रण भेरी !
आज परीक्षा होगी तेरी !
सैनिक ! अपने प्राण स्वरों में,
भर ले यह कम्पितध्वनि मेरी !!
'भारत मेरा !
भारत मेरा !!'

युग कवि ! तुझे पुकार रहा है !
रह-रह कर ललकार रहा है !
गौरव मय इतिहास पुराना !
सुन रे ! मां हुंकार रहा है
यदि तू पीछे हट जाएगा,
बाधाओं से डर जायगा,
मानव सृष्टि कुचल जायगी,
और न फिर तू कुछ पायगा !
भारत मेरा !
भारत मेरा !!

मेवाड़ का लोकगीत

मां का हृदय

[सज्जनसिंह वर्मा]

जब कन्या अपने पतिगृह जाती है, उस समय या जब पुत्रवधू अपने पितृगृह जाती है उस समय पास पड़ोस की अनेक स्त्रियां उसे कुछ दूर तक विदा देने जाती हैं व लौटते समय यह गाया गाती हैं।

यह गीत आंखों के सामने एक मनमोहन चित्र खींच देता है। जब कन्याएं विवाहित हो कर अपने पतिगृह चली जाती हैं। पुत्र विवाहित होकर अपना संसार अलग बना लेते हैं, उस समय एक वृद्धा अपने पति के पास बैठ कर आंखों में आंसू भर कर जीवन की करुण कहानी सुनाती है।

गीत का आरम्भ कल्पना से होता है और यथार्थ का लेखा हुआ भावी सुख की कल्पना से वर्तमान असन्तोष में समाप्त होता है।

भीतो सागा मेवाई को आम्बो लवियो
बतो रंग्यो राइ आगण बीच शइया।
अगी घरे अमरत आम्बो मोटियो।

मीनों पाली पपोली मोटो कीदो,
वोतो बीयो केरी बांग शइयां
अगो घरे अमरत........।
ईलो आया गरब केरी लेगीया।
मारा मनड़ा में रयो पशताव शइयां
अगो घरे अमरत........।

अशीलो मूं मन में जाणती
जीवड़ जणी दोई—चार
मीनो पाली पगोली मोटी कदा
इलो आया साजन जीवड़ लेगाया
मारा मनड़ा में रया पशताव शइयां
अगी घरे अमरत........।

अशीतो मूं मन में जाणती
पूत जणू तो दोई चार
इतो पूत परणाया पाड़शी वे गीया
मारा मनड़ा में रयो पशताव शइयां
अगी घरे अमरत........।

मोतो आगे जाई ने पछि देखू
न्यारा-न्यारा घर में दिखला चले
मारो हियो डिगला जाय शइया
अगी घरे अमर आम्बो मोटियो।

अर्थ—वृद्धा अपने पति से कहती है—हे प्रियतम इस घर में अमृत तुल्य आम का वृक्ष फलीभूत हुआ। मेरा पिछला जीवन ऐसा प्रतीत होता है कि मैं बाग में जाकर एक आम का वृक्ष लाई और उस को अपने आंगन के मध्य बो दिया, उस का पालन पोषण किया, उस पर फल की प्राप्ति भी हुई, पर अत्याचारी आया और फल का ले गया, मेरे मन में पश्चाताप हुआ। मैंने कन्याओं को जन्म दिया, उनको लाड़ चाव से बड़ा किया, उसका विवाह किया, उसे भी सुसराल वाले ले गये मैं पुत्रों की जननी बनी पर उनका भी विवाह होते ही वे पड़ौसी के सदृश हो गये यानी अलग हो गये। मेरे मन में इसके लिए ही पश्चात्ताप है।'

सब कुछ होते हुए भी मा का हृदय मां का ही है।

'माता कुमाता न पुत्र कुपुत्र भले ही।' कन्या चली गई पुत्र अलग हो गये फिर भी वह वृद्धा शक्ति एकत्रित करके भविष्य की शांति की बात कहती है, 'हे स्वामी, मैं मृत्यु पश्चात इस संसार से दूर जाकर देखूंगी तो मुझे अपनी कन्याओं और पुत्रों के घरों में प्रकाश दिखेगा, यही विचार मेरे हृदय में उत्पन्न होता है और मैं आनन्दोल्लसित हो उठती हूं।'

इस गाव के गीत में मां का हृदय कूट कूट कर भरा है व लोक कामना की पुष्टि भी की गई है कि संतानोत्पत्ति नाम-वृद्धि व मृत्यु पश्चात् आत्मा को शांति के लिए होती है।

एक व्यंगचित्र

कांग्रेस के दुश्मन

[श्री शोभाराम गुप्त एम० ए० एल० एल० बी०]

कल सक्सेना साहब की पार्टी में क्या गये, बस शामत आ गई पार्टी क्या थी, कांग्रेस के दुश्मनों का अच्छा खासा अखाड़ा था। मेरे पहुंचते ही चार लोगों ने तपाक से स्वागत किया। एक साहब ने कुर्सी पेश की और मेरे बैठते ही पूछा 'कहिए कमल जी, आपके लिए कौन सा पोर्टफोलियो तजवीज हुआ है?' मैंने सकपका कर बोलने वाले साहब की तरफ देखा तो वह मुस्कराते हुए बोले — बन क्यों रहे हैं जनाब! बतलाइये न। आप किस विभाग के मिनिस्टर बन रहे हैं। मैंने कहा—भाई मजाक के लिए क्या मैं ही गरीब मिला हूं। मगर दूसरे साहब आखें मिचमिचाते हुए बोल उठे "क्यों साहब इसमें मजाक क्या है अब तो उन लोगों को जो किसी भी कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष या प्रधान मन्त्री है, इस बोझ को सम्भालना ही पड़ेगा। भारत का शासन पहिले श्वेतांगों पर एक बोझ था। अब कांग्रेस कमेटियों के अध्यक्षों का सिर दर्द है। बड़े जोर का कहकहा लगा इस कटाक्ष पर। मैं कुछ जवाब दूं, इसके पहिले ही तीसरे साहब बोल उठे। क्यों अध्यक्ष महोदय, क्या यह सम्भव नहीं है कि आप लोगों को जेल की तकलीफ उठाने के बदले में कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता के साथ साथ कुछ नकद रुपया या जमीन देकर मुआवजा अदा कर दिया जावे।' मैं चुप रहा। वही साहब कहते रहे "देखिये ना राजस्थानसंघ, मत्स्य संघ, इन्दौर, ग्वालियर, जयपुर, जोधपुर के प्रधान तथा अन्य मन्त्रियों को।

यदि मध्यभारत संघ के मन्त्री कौन होंगे यह आपसे कोई पूछे तो मध्यभारत तथा बड़ी २ रियासतों की केन्द्रीय कांग्रेस कमेटियों के अधिकारियों पर जरा सा दृष्टिपात करके थोड़ा दिमाग खर्च करने से काम चल जावेगा।

मैंने अपने चारों ओर नजर दौड़ाई कि कोई मेरी तरफ से बोलने वाला भी है या नहीं। परन्तु कोई नहीं दीखा। न अभी मेजों पर परोसगारी ही शुरू होने की नौबत दिखलाई पड़ी। तीसरे साहब कह ही रहे थे, 'अजी जनाब, जेल गये कांग्रेस में वर्षों काम किया तो क्या अब भी दीगर क्वालीफिकेशन्स की जरूरत बाकी रह गई। पहिले साहब बोल उठे—वाह जनाब और क्वालिफिकेशन्स भी क्या कम हैं। सारी जनता के यानी मर्द, औरत, शरीफ, गुंडे, चोर, बदमाश सबके विश्वासपात्र, खद्दरधारी, माफी मांगने की कला में उस्ताद, प्रोपेगण्डा, कैनवासिंग में प्रवीण, व्याख्यानबाजी के मर्मज्ञ ब्लैक मार्केट रिश्वतखोरी......।" मिचमिचे साहब ने इनको रोक दिया कि 'इन बातों की यहां क्या जरूरत है, देखते नहीं कि कमलजी भी खद्दरधारी हैं और इनकी घर दूकान पर भी जनाब की आढ़त का सा काम होता है।" मैंने सोचा अब तो बुरे फंसे और बोला —भाई छोड़ो भी इस प्रसङ्ग को। बड़ों की बातें उन्हीं तक रहने दो, मुझ गरीब को क्यों घसीटते हो।

एक पहलवान पीछे बैठे थे। वह आगे कुर्सी बढ़ा कर लाये, कहने लगे—'हां साहब यह तो बतलाइये आखिर कांग्रेस के शासन हाथ में लेने से देश की स्थिति में सुधार क्या हुआ? मैंने कहा—आपको क्या दीखता है। वह फरमाने लगे—हमें तो यह दिखता है कि आज भी अनाज मिलना मुश्किल है और इन कांग्रेस प्रेसीडेन्टों व मिनिस्टरों के ही बाप भाई भतीजे खूब ब्लैकमार्केटिंग कर रहे हैं, कपड़े की हालत यह है कि कांग्रेस गवर्नमेन्ट ने यह सोच कर कि कपड़े में चोर बाजार वाले ही क्यों मुनाफा कमाए, २५ प्रतिशत और १२½ प्रतिशत भाव बढ़ा दिये। चीनी पर भी टैक्स बढ़ा दिया, रिश्वतखोरों की आज भी चांदी है, पुलिस और यमराज एक ही चीज के दो नाम आज भी समझे जाते हैं। तीसरे दर्जे का किराया बढ़ता जाता है और है वही नरककुंड का नरककुंड, चांदनी चौक उठाईगीरों और गिरहकटों का अड्डा बन गया है। कहिये तो और गिनाऊं।'

मैंने कहा — जनाब आपके मकान के पास घूरा तो नहीं है? वह बिगड़ कर बोले, 'इस का मतलब'? मैंने अर्ज किया 'भाई जान, तमाम दुनिया भर की गन्दगी आपको झट मालूम हो जाती है। इस लिए समझा, शायद आपकी नाक इसकी अभ्यस्त है।" अब तो वह खीज कर कहने लगे—'नहीं नेता जी महाराज, असलियत यह है कि आपकी नाक गन्दगी में रहते रहते इतनी बेकार हो गई है कि आपको अपनी गन्दगी का ज्ञान ही नहीं होता। क्या आपको मालूम है कि आज यू० पी० की सरकारी नौकरियों में... भाइयों का बोल बाला क्यों हो रहा है। सी. पी., यू. पी. व रियासतों में मन्त्रियों में तोब तू तू मैं मैं और खूनी पैकार अधिकारियों की नियुक्तियों पर क्यों हुआ करती है और इन स्वतंत्र नेताओं ने अपना और भाई बन्दों का घर भरने के अतिरिक्त जनता का क्या हित किया है।'

मैंने इन साहिब से कहा, 'जनाब आप यह तो बताइये कि इन सात आठ महीनों में कांग्रेस सरकार किस प्रकार परेशानियों में फंसी रही। काश्मीर, हैदराबाद, जूनागढ़ की समस्याएं, रियासतों के एकीकरण की योजनाएं, अन्तर्राष्ट्रीय उलझनें, पाकिस्तान का रुख और देश की साम्प्रदायिकता की समस्या, शरणार्थी समस्या क्या मामूली बातें थीं; जो शासन भार ग्रहण करते ही उनके सामने आईं।' मगर शीकिया पहलवान तो जैसे तैयार ही बैठे थे, फौरन बोल उठे—'यह भी आपने खूब कहा—अजी जनाब यह सब उलझनें तो कांग्रेस की अपनी ही पैदा की हुई हैं। मुसलमानों को शह दे दे कर सिर पर चढ़ाने की नीति आज भी बरती जा रही है। अगर ... मिचमिचे सा० ने फिर टोका, 'अरे भाई, बस भी करो। यह नहीं सोचते कि कमल जी रिपोर्ट कर दें तो?'—बस, बात यहीं समाप्त हो गई और किसी तरह मेरी जान बची।

पपीते का दूध — डालर प्राप्ति का सुन्दर साधन

भारत में पपीता एक चिर परिचित फल है। पपीते का पौधा एक वर्ष के पहले ही फलों से लदा वृक्ष बन जाता है। आज ब्रिटेन के लिए यह डालर प्राप्त का एक साधन है।

ऊष्णवृत्त के देशों में रहने वाले लोगों ने पपीता अवश्य खाया होगा पर बहुत कम यह जानते हैं कि इसमें से निकलने वाला रबर के सदृश दूध पपायन कहलाता है और वह कई उद्योगों तथा औषधियों में प्रयुक्त होता है। उदाहरणार्थ कपड़ा बुनने की क्रिया में जब नकली रेशम या ऊन में असली रेशम फंस जाता है तो उसे अलग करने में पपायन काम आता है। इससे अनेकों कांति वर्धक वस्तुएं तैयार होती हैं तथा अन्य उपयोगी काम भी लिए जाते हैं।

पपीते के छिलकों में से निकलने वाला सूखा रस अमेरिका में इतना लोकप्रिय हुआ कि द्वितीय महायुद्ध में पपायन की उत्पत्ति दस गुना अधिक बढ़ गई। १९३९ में इसकी उत्पत्ति १०४८० पौंड थी और मूल्य ३५०० पौंड (४६,५८५ रुपये) १९४५ में उत्पत्ति बढ़कर २०६७६० पौंड हो गई और मूल्य लगभग ५०००० पौंड (६६५५१० रुपये) हो गया।

पपीते का पेड़ बोने में यह खतरा अवश्य रहता है कि मादा वृक्षों में ही फल पैदा होते हैं। पौधों के विकसित होने पर नर पौधे काट कर फेंक दिए जाते हैं और उनके स्थान पर नए पौधे लगा दिए जाते हैं — इस आशा से कि मादा वृक्ष अवश्य उत्पन्न होंगे।

लगभग सात या आठ महीनों के बाद वृक्षों पर पपीते उगने आरम्भ होते हैं। उन्हें कतरकर दूध निकाल लिया जाता है इस शीघ्र जमने वाले दूध को इकट्ठा कर इन्हें फिर सुखाया जाता है। सुखाने के बाद पपायन टीनों में बन्द कर दिए जाते हैं। और आज ये इतने महत्व के हो गए हैं कि इन्हें अमेरिका भेज कर डालर प्राप्त किए जाते हैं।

रंग बिरंगे अण्डे

उत्तरी आस्ट्रेलिया में मुर्गियां रंग बिरंगे अण्डे देती हैं। इसके लिए वहां का एक वृक्ष उत्तरदायी है। कुछ पक्षी इसके फल आदि गिरा देते हैं और ये मुर्गियां उन्हें खा लेती हैं तभी वे ऐसे रंग बिरंगे अण्डे देती हैं।

लगातार ९ वर्ष से दूध देने वाली गाय

न्यूजीलैंड के एक किसान की गाय ९ वर्ष से निरंतर दूध दे रही है। इस किसान का नाम श्री आर० ए० कडी है। श्री कडी की इस गाय के पहला बार ९ वर्ष की अवस्था में बछड़ा पैदा हुआ, तब से यह आज तक दूध दे रही है।

अपनी जानकारी बढ़ाइये

★

चौदह फीट लम्बी मछली

मद्रास तट के निकट एक १४ फीट लम्बी मछली पकड़ी गयी। इसके पेट में ५६ छुटे छुटे बच्चे निकले। लगभग २० बच्चे अलग पड़े थे। जिनको यह अभी और निगलना चाहती थी।

यह पहला अवसर है जब कि कहीं इतनी बड़ी मछली पकड़ी गयी है यह ९ फीट गहरे दलदल में फंसी थी। इसका वजन ८५६ पौंड तोला गया है। इसके शरीर से १३ गैलन तेल निकला है।

---

६० फुट का जानवर

६० फुट लम्बा एक विशालकाय प्रागैतिहासिक जन्तु ?मलाया प्रदेश में विचरण करता हुआ देखा गया है। लन्दन के शाही चिड़ियाखाने की ओर से कहा गया है कि इस विषय के समाचार अत्युक्तिपूर्ण हैं सम्भव है कि मगम से प्राप्त किसी जीव का यह उत्पत्ति भूरूप हो और भ्रमवश इसके जीवित रूप का समाचार उड़ गया हो।

मछलियों का शोर

बा मुदा के निकट अब महासागर में मछलियों के शोर से जो समुद्र में हाईड्रोफोन लगा कर सुना गया, अमरीकी वैज्ञानिक चकरा गये। ये वैज्ञानिक समुद्र के पानी के नीचे की पृष्ठ भूमि किस तरह की बनी हुई है इसका पता लगा रहे हैं।

इनमें से एक वैज्ञानिक ने कहा कि हम ने इस तरह की आवाज कभी नहीं सुनी यह मछली राने, खीटी बजने और विचार जैसा भीषण और डरावना आवाज करती है। अन्य सैकड़ों मछलियों की जो आवाज सुनी गयी है उनमें कुछ की आवाज गाय के रम्भाने जैसी और कुछ की मोटर के हार्न की तरह की है।

उड़ता सिनेमा घर

उड़ता सिनेमा घर अब तैयार हो चुका है। ब्रिटिश साउथ अमेरिकन एयरवेज कारपोरेशन के एक वायु हवाई जहाज से यात्रा करने वाले उड़ते उड़ते आकाश में सिनेमा देखते हैं। ४ और १० इंच लम्बे चौड़े पर्दे पर ख़ूब बड़े कार्टून फिल्म दिखाई जाती है।

अदालत के दो फैसले

दक्षिण अफ्रीका की एक ही अदालत में एक ही हाकिम के द्वारा ये दोनों फैसले दिये गये हैं। एक मामले में एक गोरे पर यह जुर्म था कि उसने एक काले को बेंतों से मार कर आग में झोंक कर उसे मार डाला और दूसरे मामले में एक काले आदमी पर यह अभियोग था कि उसने एक गोरी मिस पर बलात्कार किया है।

अब गोरे हाकिम ने काली स्याही से क्या फैसला लिखा? काले को जान से मारने के जुर्म में गोरे को सिर्फ २० पौंड जुर्माने की सजा दी गयी और वह जुर्माना भी मासिक किश्त के रूप में अदा करने का आदेश दिया।

और बेचारे काले को गोरी मिस पर बलात्कार करने के लिए फांसी की सजा हुई।

ठीक है गोरे अभियुक्त के लिए मुलायम सजा और काले के लिए काली सजा।

चलता-फिरता डाकघर

गत २ मई को नागपुर के जेनरल पोस्ट आफिस के अहाते में प्रधान मन्त्री पण्डित रविशंकर शुक्ल ने एक चलते फिरते डाकघर का उद्घाटन किया है। अब वहां की जनता को घर बैठे ही कार्ड और लिफाफे मिलेंगे तथा उनकी चिट्ठियां घर बैठे ही छूट जायगी। इस प्रकार का भारत में यह पहला डाकघर है। इस डाकघर के काम करने के लिये जो माग तय हुआ है वह महात्मा गांधी के प्रय स्थान वर्धा से प्रारम्भ होता है। छोटे २ देहातों में भी इस डाकघर के कारण चिट्ठी भेजने में आसानी हो जायेगी।

जिन्ना का निजी विमान

मिया जिन्ना के निजी उपयोग के लिए 'रायल विकिंग' हवाई जहाज मई मास के आरम्भ में कराची पहुंच जायगा। इस जहाज के निर्माता विकर्स आर्मस्ट्रांग ने ऐसे कुल ६ हवाई जहाज बनाये हैं। इनमें ४ तो बादशाह जार्ज के लिए, पांचवां आस्ट्रेलिया के राष्ट्रपति के लिए और छठा मियां जिन्ना के लिए है। इसका विस्तृत हाल तो अभी बताया नहीं गया है पर अन्य जहाजों के समान इसमें सब की विशेष सुविधा होगी। यह लम्बा सफर कर सकेगा। इस लिए इसमें पेट्रोल के लिए अतिरिक्त टंकियां लगायी गयी हैं ताकि बीच में बिना रुके यह उड़ाकर ले जाया जा सके। इसकी रफ्तार घण्टे की गति ज० ४६ मील और अधिकतम रफ्तार २६० मील प्रति घण्टा होगी।

दिल्ली स्टेशन की दैनिक आय १,१५,००० रु० तक पहुंची

दिल्ली के मुख्य रेलवे स्टेशन की आजकल दैनिक आय ८५०००) है। १५ अगस्त से पहले यह दैनिक आय ७५०००) थी। अभी हाल में कुछ दिनों से यह आय बढ़ कर १,१५,००० रु० प्रतिदिन हो गयी है। दिल्ली स्टेशन की इतनी आय पहले कभी नहीं हुई।

---

७५ पन्ने की रिपोर्ट के लिए १ लाख ७५ हजार

बिहार सरकार ने बिहार सिंचाई योजना को दामोदर घाटी कारपोरेशन के हवाले करने का निश्चय किया है। १९३७-३९ के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल के जमाने में प्रधान मन्त्री श्री एस० के० सिंह को इस योजना के लिए स्पेशल अफसर नियुक्त किया गया था। श्री फनगिल नामक विशेषज्ञ ने प्रारम्भिक कार्यों की एक अधूरी योजना बनायी।

इस सम्बन्ध में सरकार ने विलायत की एक कम्पनी मेसर्स मज एण्ड मकलेलेन की सलाह ली। उस कम्पनी ने ७५ पन्ने की एक रिपोर्ट दी और उसके लिए १७५००० रु० लिये थे। प्रारम्भिक कार्यों को पूरा करने के लिए भी उसने अलग से १३८००० रु० लिये थे। किंतु बाद में निश्चय किया गया कि वह प्रारम्भिक कार्य छोड़ दिया जाय।

बिहार सरकार के नये निश्चय के मुताबिक यह व्यवस्था भी रद्द हुई। अब यह काम दामोदर घाटी कारपोरेशन को सुपुर्द किया जायगा।

अणु बम की परीक्षा क्यों

प्रशान्त महासागर में हाल में जो अणु बम का परीक्षण किया गया था, वह इसलिए किया गया था कि हजारों मील दूर पर इस तरह के किसी अणु विस्फोट का अमरीकी यन्त्र पता लगा सकता है या नहीं। इस अमरीकी यन्त्र ने इन परीक्षणों का पता लगा लिया था और वे इस परीक्षण के रूस में होने पर उसका भी पता लगा सकेंगे और उसका विवरण भी बता सकें।

ये शब्द हैं या रत्न ?

[स्वामी कृष्णानन्द]

वह बीमार थी और निराश। वक्त उसके काटे नहीं कटता था। एक दिन उसने शब्दों से मन बहलाने का विचार किया। एक नोटबुक ली और पेंसिल। पहले उसने प्रसन्नता शब्द लिखा और फिर उसके बाद उसके पर्यायवाची शब्द, या अर्थ में निकट पहुंचने वाले शब्द बैठाने लगी।

प्रसन्नता — प्रफुल्लता, हर्ष, खुशी, उल्लास, जिन्दादिली, उत्साह, मुस्कराहट, आनन्द, आशा।

उसने इन शब्दों को जरा ऊंची आवाज से पढ़ा और फिर सोचने लगी कि इन शब्दों में से प्रत्येक का अर्थ उसके जीवन में उतर जाय तो उसका स्वभाव कैसा बन जायगा। धीरे धीरे उसकी नोटबुक में शब्दों की संख्या बढ़ती गई।

हिम्मत — बहादुरी, विश्वास, आत्मनिर्भरता, स्थिरता, लगन, निश्चय।

धीरज — सहनशीलता, संतुलन, सुस्थिरता।

शांति — संतोष, निद्रा, गम्भीरता, निश्चलता, आराम।

ईमानदारी — विश्वास, उच्चता, वफादारी, सत्यता, यथार्थवादिता।

स्वास्थ्य — तेजस्विता, शक्ति, पूर्णता, क्रियाशीलता, सहनशीलता मजबूती, जोर, जीवनशक्ति, कठोरजीवन, प्रवाह।

बुद्धिमत्ता — समझदारी, तर्कशक्ति ज्ञान, अध्ययन, सावधानी, विज्ञता, सतर्कता।

उदारता — विपुलता, प्रचुरता, उच्चता, कुलीनता, शुभचिन्तन, बेखुदी, सहानुभूति, दया, त्याग।

प्रार्थना — प्रेम, चिन्तन, समर्पण, गुणगान, अपनापन ध्यान, स्नेह।

अपने इकट्ठे किए शब्दों पर वह विचार करती रही और उनमें इस प्रकार रमी कि उसकी सभी शारीरिक और मानसिक समस्याएं धीरे-धीरे हल हो गईं और उसने पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर लिया।

अब भी वह उपर्युक्त सभी शब्द मन से दुहराती है और उनमें रमण करती है। यह वह करती रहेगी और बढ़ती रहेगी। क्योंकि बढ़ने की कोई सीमा नहीं है।

('आरोग्य' से)

★ विविध चित्रावलि ★

लन्दन में अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट स्व० रूजवेल्ट के स्मारक का उद्घाटन करने के पश्चात श्रीमती रूजवेल्ट तथा ब्रिटिश शाही घराने के अन्य व्यक्ति वापिस आ रहे हैं।

क्लिफर्ड रोटेरो कल्टीवेटर, जो खोदने, जोतने, तथा बीज बोने इत्यादि कृषि सम्बन्धी कार्य स्वयं करता है।

सैकड़ों व्यक्तियों को ले जाने वाली इस प्रकार की 'लकजरी फ्लाइंग बोट्स' इंग्लैण्ड में बनाई जा रही हैं।

सं० राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति में ब्रिटेन के प्रतिनिधि मि० फिलिप नोयल बेकर ने काश्मीर के मामले पर भारत का विरोध किया।

अमेरिका के समुद्री बेड़े के प्रधान एडमिरल रिचर्ड एल कोनोली। आप हाल में ही नर्वे का दौरा करने वाले हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ में रूसी प्रतिनिधि अन्द्रे ग्रोमेको ने किस तीन युद्ध में हस्तक्षेप के प्रस्ताव का समर्थन किया है।

नवीन औद्योगिक नीति और ग्रामीण उद्योग धन्धे

(पृष्ठ ६ का शेष)

बहुत गहरी छाप पड़ी है। विकेन्द्रित उत्पादन एवं ग्राम स्वावलम्बन का सिद्धांत बापू की देन है। ऊपर हम बता चुके हैं कि औद्योगिक नीति में उपभोक्ता-पदार्थ से सम्बन्धित उद्योगों को व्यक्तिगत व्यवसाय के हाथ में छोड़कर इस सिद्धांत की अवहेलना की है। आज बहुत बड़े अंश में बड़े कारखानों में कपड़ा, शक्कर, तेल, कागज, चमड़ा, शीशा इत्यादि बनाये जाते हैं। सरकार ने इन उद्योगों को विकेन्द्रित करने की घोषणा नहीं की है। अतः यह कहना बिल्कुल अतिशयोक्ति न होगी कि बापू के ग्राम अथवा प्रादेशिक स्वावलम्बन के सिद्धांत का पालन नहीं किया गया है। सन् १९२० से कांग्रेस खादी पर जोर देती आ रही है। सन् १९२९ के मई मास में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया था कि राष्ट्र की दरिद्रता दूर करने और जीवन स्तर उठाने के लिए समाज के वर्तमान आर्थिक और सामाजिक ढांचे में क्रान्तिकारी परिवर्तन करना आवश्यक है। फिर जुलाई १९३४ में कांग्रेस कार्यकारिणी ने कांग्रेस के सदस्यों को जहां तक हो सके ग्राम उद्योगों द्वारा बनाई हुई वस्तुएं उपयोग करने का आदेश दिया। इसके तीन महीने पश्चात् कांग्रेस ने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना की जिसका एक मात्र उद्देश भारत के समस्त ग्रामोद्योगों को पुनर्जीवित करना है। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस ने राष्ट्र के आर्थिक उत्पादन के लिए ग्रामोद्योग को गौण नहीं, बल्कि प्रधान माना है। कुछ मास पूर्व अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा नियुक्त आर्थिक प्रोग्राम कमेटी ने कांग्रेस की आर्थिक नीति स्पष्ट करते हुए कहा था कि 'कपड़ा खाद्य पदार्थ तथा अन्य उपभोग वस्तुओं से सम्बन्धित उद्योगों को विकेन्द्रीकरण एवं सहकारिता के सिद्धांत पर संगठित किया जावे। ऐसे उद्योग जहां तक हो सके गांवों में ही उन्नत किये जावें। आज की परिस्थिति में हमारा ध्यान विशेष कर देहाती जनता को काम देने तथा कम से कम पूंजीगत माल मंगाने की ओर होना चाहिये। बड़े उद्योगों का उपयोग छोटे धन्धों के आर्थिक स्थायित्व तथा उत्पादन कुशलता की वृद्धि में अधिक से अधिक करना चाहिए। आर्थिक सहायता मूल नियन्त्रण तथा बड़े कारखानों के लिए आज्ञा प्रणाली इत्यादि के द्वारा छोटे उद्योगों को बड़े उद्योगों की प्रतिस्पर्धा से बचाया जाना चाहिए।'

इन मूल सिफारिशों को जब हम औद्योगिक नीति से तुलना करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि औद्योगिक नीति में सरकार ने कांग्रेस की आर्थिक प्रोग्राम कमेटी की सिफारिशों की अवहेलना की है। यद्यपि ऊपरी तौर से सरकार ने ग्रामीण उद्योगों को आर्थिक सहायता देने की जिम्मेदारी ली है परन्तु उस ने दो मूल भूत बातों की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया है — प्रथम तो देहाती जनता को काम देने की दृष्टि से उपभोक्ता की वस्तुओं से सम्बन्धित अधिक से अधिक उद्योग विकेन्द्रित कर गांव में ही चलाये जावें, दूसरे बड़े उद्योग धन्धे इस प्रकार संगठित किये जावें कि वे ग्रामीण उद्योगों के लिए प्रति स्पर्द्धी सिद्ध न होकर सहायक ही सिद्ध हों।

कुछ सुझाव

सरकार की औद्योगिक नीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। सर्व प्रथम सरकार इस सिद्धान्त को स्वीकार करे कि उत्पादन में मशीन उस हद तक काम में लाई जावेगी जिस हद तक वह गांवों में उद्योग-धन्धों की वृद्धि में सहायक होगी। अर्थात् औद्योगिक विकास में मनुष्य का कल्याण ही प्रधान वस्तु होगा न कि उत्पादन और मशीन। दूसरे समस्त देश को प्रादेशिक इकाइयों में बांट कर उसे कुछ मूलभूत उद्योगों को छोड़ कर अन्य सब उपभोक्ता की वस्तुओं में स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न किया जावेगा। स्थानिक आर्थिक साधनों के आधार पर जो उद्योग खड़े किये जा सकेंगे, उन्हें प्राथमिकता दी जावेगी। तीसरे कृषि से सम्बन्धित तथा कृषि द्वारा उत्पादित कच्चे माल पर आधारित उद्योग धन्धों को सब से पहले संगठित किया जावे ताकि कृषि एवं उद्योग में संतुलन एवं तारतम्य स्थापित हो सके। उदाहरणार्थ तिलहन उत्पन्न करने वाले प्रदेशों में तेल से सम्बन्धित उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जावे। इसी प्रकार गोपालन, खादी इत्यादि को कृषि से सम्बन्धित किया जावे। चौथे सरकार इस बात की पूर्ण जिम्मेदारी ले कि इन उद्योगों को कच्चे माल यातायात, औजार, औद्योगिक शिक्षा तथा आर्थिक सहायता सुचारु रूप से मिलती रहेगी तथा इनके पैदा किये हुए माल को सरकार अपने उपयोग के लिए खरीदे साथ ही सहकारी बिक्री समिति भी स्थापित करे। अन्त में सरकार इस बात की जिम्मेदारी ले कि गांवों में कोई प्रौढ़ स्त्री पुरुष बेकार न रहें और उसे काम करने के पश्चात् कम से कम जीवन वेतन तो मिल सके। जब तक इस व्यापक दृष्टिकोण को सरकार स्वीकार नहीं कर लेती तब तक यह ग्रामीण जीवन को पुनः संगठित करने में सफल नहीं हो सकेगी।

(प्रभात फिचरेट, वर्धा)

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियां का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति-स्वीकार किया जायगा। — सम्पादक

शाहआलम की आंखें (ऐतिहासिक उपन्यास) ले०:— प्रो० श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति। प्रकाशकः— नालन्दा प्रकाशन, तीसरी माला, 'धननूर' बिल्डिंग सर फीरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई १. पृष्ठ संख्या १८४। मूल्य ३॥)।

हिन्दी-साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास अंगुली पर गिनने योग्य ही हैं और उनमें से भी अधिकांश में इतिहास के गुण तो हैं, पर उपन्यास के गुणों का अभाव है। पं० इन्द्रजी की प्रस्तुत कथा में दोनों का सुन्दर समन्वय पाया जाता है। पुस्तक एक बार हाथ में ले भर लीजिये, फिर जब तक आप उसे समाप्त न कर लें तब तक तबियत मानेगी नहीं। मनोरंजन ऐतिहासिक उपन्यास का एक आवश्यक अंग है, जिसके अभाव में उपन्यास इतिहास के घटना-चक्र का एक निबन्ध मात्र रह जाता है।

शाहआलम की आंखें, जिसे पं० इन्द्रजी ने ३० वर्ष पूर्व लिखा था और जो अब प्रकाशित हुआ है, मुगल-शासन के पतन की कारुणिक कहानी है। किस प्रकार शाहआलम की विलासिता, गुलामकादिर, मंजूरअली, इस्माइल आदि के षड्यन्त्र तथा मराठों और राजपूतों में तनातनी के कारण भारत से मुगल-साम्राज्य का सूर्यास्त हुआ उसका बड़ा मार्मिक वर्णन पुस्तक में किया गया है। बूढ़े शाहआलम की दशा देखिये: "बाबर, अकबर, और शाहजहां ने अपने विक्रम और प्रतिभा से मुगल-साम्राज्य के नाम में एक अपूर्व गौरव पैदा कर दिया था, जो शाहआलम को मुगलों की गौरवयुक्त गद्दी पर बैठे देख कर ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई कौवा मन्दिर के कलश पर बैठा हो। शाह आलम कहने को हिन्दुस्तान का राजा था, परन्तु वह असल में किसी का भी राजा नहीं था। जवानी के भोग-विलास के कारण इतनी क्षीणता आ गई थी कि उसे अपने शरीर का राजा भी नहीं कह सकते।"

पुस्तक की भाषा के बारे में इससे अधिक और क्या प्रशंसा की जाय कि वह पं० इन्द्रजी की परिमार्जित लेखनी से निकली हुई चिर-परिचित भाषा है। वसन्त-ऋतु के प्रातःकाल के वर्णन में भाषा-चमत्कार,: "पूर्व की ओर मुंह किए पक्षीगण अपने-अपने मन-मोहने राग अलाप रहे थे मानों पृथ्वी के साथ सूर्य के भावी सम्बन्ध की प्रसन्नता में गायक लोग गीतियां सुना रहे थे। फूले हुए सुगन्धित फूलों को हिलाता, हरी-हरी नई कोंपलों को नहलाता, शाखाओं पर बैठे हुए पंछी गायकों को हरसाता और हृदयों को हुलसाता हुआ सुगन्धित वायु कोमल हाथों से वृक्षों को छूता हुआ मानो प्रकृति देवी के साथ किलोलें कर रहा था।"

तेजसिंह और कमला के प्रेम का सम्बन्ध इतिहास की घटनाओं से कल्पना के आधार पर कायम किया गया है। कमला के रूप में एक वीर रमणी और तेजसिंह के रूप में एक वीर पुरुष का चित्रण आदर्श है। लाख मुसीबतें उठाती हुई भी कमला अपना सतीत्व नष्ट नहीं होने देती। अंत में उसका विवाह तेजसिंह से हो जाता है। दोनों के प्रेम का वर्णन जगह-जगह इतना रसीला है कि प्रेमियों के दिल फड़क उठते हैं। कमला की सुन्दरता का वर्णन इससे अधिक और क्या हो सकता था कि "कपड़े पहन कर जब वह तेजसिंह की माता के सामने आई तो बुढ़िया का मुखड़ा खिल गया। यदि वह बुढ़िया पुरुष होती और तेजसिंह की माता न होती तो उस समय प्रेम में तेजसिंह का एक दुश्मन खड़ा हो जाता।"

पुस्तक पढ़ने की सिफारिश मैं इस रूप में करूंगा कि यदि लोग पं० इन्द्रजी को पत्रकार रूप में नहीं, बल्कि एक उपन्यास लेखक के रूप में देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक का रसास्वादन अवश्य कीजिये।

—गोवर्द्धनदास मेहता

कर्मयोगी प्रेस की पुस्तकें

आजादी के परवाने—सम्पादक, श्री आर० सहगल। मूल्य ५)

इस पुस्तक में भारत की राज्यक्रान्ति के उन नेताओं की जीवन गाथा सुनाई गई है जिन्होंने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी है। कूका-विद्रोह के शहीदों से लेकर सरदार भगतसिंह तक के ५६ क्रांतिकारियों के संक्षिप्त जीवन वृतान्त यदि आप सरल भाषा में पढ़ने हों तो इस पुस्तक को अवश्य लीजिये। देश स्वाधीन हो गया है और मनुष्य की स्मृति शक्ति बहुत निर्बल है, इस कारण आशंका है कि कहीं हम उन देशभक्तों को भूल न जायें, जिन के रक्त से स्वाधीनता की दीवारें चुनी गई हैं। इस अवसर पर शहीदों के जीवनों का संक्षिप्त परिचय प्रकाशित करके श्री सहगलजी ने देशवासियों का बहुत उपकार किया है।

राजासाहिब—लेखक, श्री शौकत थानवी।

यह एक प्रहसनात्मक उपन्यास है। राजा साहिब की मिट्टी खूब खराब की गई है। इसके पढ़ते समय एक कमी मालूम होती है। कहानी की पृष्ठभूमि ऐसी है कि कहानी का नाम 'नवाब साहिब' होता, परन्तु नाम रखा गया है 'राजा साहिब'। इसका समाधान सम्भवतः यह है कि युक्तप्रान्त में बहुत से नवाब भी राजा कहलाते हैं। भाषा उर्दू मिश्रित और चुलबुली है। कई शब्द विचित्र मजेदार हैं।

कुमकुमे—सम्पादक, श्री आर० सहगल। मूल्य ४॥)

यह विविध लेखकों की लिखी हुई हिन्दी तथा उर्दू की हास्यरस-प्रधान कहानियों का संग्रह है। कुछ कहानियां वस्तुतः हास्यरस प्रधान हैं, और अच्छी हैं। यह एक विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात है कि उर्दू में लिखी गई कहानियां अधिक मजेदार हैं। प्रतीत होता है कि हिन्दी भाषा में अभी हास्यरस के योग्य भाषा का पूर्ण विकास नहीं हुआ। फिर भी संग्रह उत्तम है, पढ़ने में आनन्द आता है और शिक्षा भी मिलती है।

वातायन—ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री, मूल्य ३॥)

यह आचार्य चतुरसेन जी की कहानियों का संग्रह है। आचार्य जी की लेखनी की ओजस्विता प्रख्यात है। प्रायः सभी कहानियों में लेखनी का चमत्कार है। किसी में कम, किसी में अधिक। सबसे अच्छी—छोटी और जोरदार कहानी वही है जिसके नाम पर संग्रह का नाम रखा गया है।

छपाई और रूपरंग सभी पुस्तकों का अच्छा है।

— इन्द्र

खेती की रीति—(पहला भाग)— ले० श्री नारायण दुलीचन्द व्यास। मिलने का पता—मैनेजर लीडर प्रेस, इलाहाबाद या इण्डियन एग्रिकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट नई दिल्ली। मूल्य ३)

लेखक श्री व्यास अपने विषय के विशेषज्ञ हैं। प्रस्तुत प्रस्ताव वस्तुतः किसानों के लिए नहीं, ऐसे शिक्षित नवयुवकों के लिए लिखी गई है, जो खेती में रुचि लेते हैं। फसल, भूमि, जुताई, खाद, बुवाई, सिंचाई, गेहूं, धान, मक्का आदि अनाजों की विस्तृत चर्चा की गई है। आशा है, कृषि में रुचि रखने वाले शिक्षित युवक लेखक के इस सुन्दर प्रयत्न से लाभ उठावेंगे।

— कृष्णचन्द्र

राष्ट्र पिता का बलिदान—ले० विश्वम्भरप्रसाद शर्मा, सम्पादक 'आलोक।' प्रकाशक —नवयुग प्रकाशन, नागपुर। मूल्य सवा रुपया।

महात्मा गांधी की मृत्यु के पश्चात् जितने सामयिक प्रकाशन दृष्टिगत हुए हैं उनमें यह अधिक व्यापक है। पुस्तक के ६ अध्यायों में से प्रथम में गांधी जी के बलिदान के विषय में कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के बयान दिये गये हैं। दूसरे अध्याय में शव यात्रा का वर्णन है। तीसरे में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के के नेताओं की श्रद्धांजलियां संग्रहीत हैं। चौथे में संक्षिप्त जीवन-कथा है। पंचम में प्रयागराज में त्रिवेणी के संगम पर अस्थि प्रवाह का वर्णन है और छठे में उनकी अमृत वाणी के कुछ उद्धरण दिये गये हैं। दैनिक पत्रों के आधार पर संग्रहीत होने के कारण यद्यपि पुस्तक में नवीनता कुछ नहीं है, फिर भी गांधी जी के बलिदान से सम्बन्ध रखने वाली इतनी सामग्री के एकत्र संकलन का महत्व अवश्य है। छपाई सफाई सामान्य। ब्लाकों के प्रिंटिंग में उन्नति की काफी गुंजायश है।

जीवन-विहार—मूल लेखक — काका कालेलकर, अनु० — श्री वाद वशी। प्रकाशक — वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स लिमिटेड ३, राउण्ड बिल्डिंग कालबादेवी रोड बम्बई २।

दत्तात्रेय बालकृष्ण काका कालेलकर के बीस निबंधों का यह संग्रह है। मूल निबन्ध गुजराती में लिखे गये थे। अनुवाद के विषय में कहीं शिकायत की गुंजायश नजर नहीं आती परन्तु —"संस्कृत अध्ययन में तो कई अच्छे फिर्के जमा हो सकते हैं"— जैसे वाक्यों में हिन्दुस्तानी का अनुचित मोह अखरता है। (परन्तु यह मोह अनुवादक का है या लेखक का यह पता नहीं काका साहब हिन्दुस्तानी — पक्षपातियों में अग्रगण्य हैं, परन्तु इस पुस्तक के पढ़ने से उनकी लेखनी और वाणी की विसंगति स्पष्ट प्रमाणित होती है। किसी किसी वाक्य या वाक्यांश को छोड़ कर सब निबंध विशुद्ध हिन्दी (संस्कृत निष्ठ हिन्दी) में ही लिखे गये हैं।

काका साहेब ने एकाधिक स्थान पर घोषणा की है कि साहित्य मेरा क्षेत्र नहीं है, परन्तु इन निबन्धों के पढ़ने से उनकी सूक्ष्म सहृदयता तथा साहित्यानुरागिता का प्रमाण मिलता है। प्रत्येक विषय का विवेचन करते हुए सात्विक-बुद्धि और जनहित की भावना लेखक की अपनी देन है।

भूमिका रूप 'विनय' में—'गूजराती, खीचड़ी, बागला, स्त्रीलिंग, वैठु'— शब्दों की अशुद्धि अखरती है। यद्यपि यह प्रसन्नता की बात है कि बाकी पुस्तक में यह उपेक्षा दृष्टिगोचर नहीं होती छपाई सफाई उत्तम है।

— क्षितीश

पाकिस्तान से वापिसी पर

(पृष्ठ १० का शेष)

'फिर आप ऐसी बहिश्त छोड़कर क्यों चल दिये ?'

'इसमें राज है। क्या आपको अंजुमन की तरफ से कोई परचा नहीं मिला। मैं खुद नहीं, कायदे आजम के इरशाद पर आया हूं।''

'शायद आज पहुंचे। मैं इधर दो हफ्ते था भी नहीं।'

मैनेजर साहब आप हैं ?'— एक दूसरे व्यक्ति ने आकर पूछा।

'लो, यह है, अंजुमन का हिदायतनामा। गौर से पढ़कर फाड़ देना या किसी इस्लामी भाई को दे देना।'— अफजल को दफ्तर से परचा देकर सिद्दीक ने आगन्तुक की ओर देखकर कहा—'हां, कहिये। मैनेजर समझिये या मालिक, क्यों ?'

अफजल सलाम करके कमरे से बाहर हो गया। आगन्तुक अफजल की कुरसी पर डट बैठा।

दो घण्टे बाद सारा होटल पुलिस और सैनिक आफिसरों से भर गया। मिर्जा सिद्दीक, मुस्तफा, ऐरे गैरे सौ सवा सौ आदमियों के हाथ रुपहले जेवर से चमक उठे। मालिक साहब के खास कमरे में वहां जहां पेशाबखाना बनाया गया था—एक बटन दबाने पर नीचे खासा हथियारखाना पाया गया और अंजुमन के पर्चे तो आसानी के साथ ऊपर ही बरामद हो चुके थे। नीचे था एक छोटा सा प्रेस। परचे को हाथ में लिये हुए अफजल एक अदाकार की तरह सिद्दीक के सामने आकर बोला "अदाबअर्ज"

'कौन तुम ! अफजल...' सिद्दीक ने नीचे देखते हुए मगर पूर्ण आवेश में कह डाला।

'मियां ! होश की दवा करो। आजाद हिन्द फौज का हर सिपाही तो न अपने को हिन्दू कह सकता है, न मुसलमान। वह हर एक का भाई है, और तुम्हारे मुल्क का जानी दुश्मन। गनीमत समझो कि तुम बगैर सिर्फ गिरफ्तार किये जा रहे हो।'

अफजल ने वह परचा एक बार फिर जोर से पढ़ा—

हिन्दोस्तान के मुसलमानो ! होशियार !!!

वह दिन दूर नहीं कि पाकिस्तान हिन्दोस्तान पर चारों तरफ से हमला बोलने वाला है। सिर्फ तुम लोगों की हिफाजत के लिये। दीनेइस्लाम का झण्डा फहराने के लिये। इस्लामिया हकूमत कायम करने के लिये। अपना फर्ज खुद समझो।

लघु संगीत नाटिका

सांझ सुहानी

[श्री चिरंजीत]

(वाद्य-संगीत के साथ पर्दा उठता है। डूबते हुए सूर्य का दृश्य। सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार—दिन भर चमक दमक कर सूरज
कुंकुम-रोली का सुन्दर ध्वज—
फहराता सोने के रथ पर
आ पहुंचा है पश्चिम के घर
और उतर आई मस्तानी
सर्दी की यह सांझ सुहानी।

(अंतिम पंक्ति के समाप्त होते ही छः सात छोटे छोटे बच्चे गाते हुए प्रवेश करते हैं)

बच्चे—सर्दी की यह सांझ सुहानी!
पश्चिम में लाली लहराई,
जैसे हो रोली बिखराई,
जादू के इस रंग महल से
झांक रही है रजनी रानी!
सर्दी की यह सांझ सुहानी!
ढोर लिये आते हैं ग्वाले,
उड़ घर आते पंखों वाले,
औ' नीड़ों में नन्हे बच्चे
'चीं-चीं' कर करते अगवानी!
सर्दी की यह सांझ सुहानी!

सूत्रधार—सांझ सुहानी, डाल डाल पर—
मधुर पंछियों का गूंजा स्वर।
पंछी बन से लौट आये,
रैन—बसेरा करने आये।
पर, न अभी सोने की बेला,
गली—गली बच्चों का मेला।

बच्चे—गली—गली बच्चों का मेला।
खेल कूद की यह ही बेला,
कुछ तो खेलें चोर-सिपाही
औ' कुछ खेलें आंख मिचौनी
सर्दी की यह सांझ सुहानी!
ज्यों-ज्यों रात उतरती आये,
त्यों-त्यों सर्दी बढ़ती जाये,
ओढ़ रजाई नानी कहती—
'आओ बच्चो! सुनो कहानी!'
सर्दी की यह सांझ सुहानी!

(लाठी टेके रजाई ओढ़े बुढ़िया नानी प्रवेश करती है)

नानी—आओ बच्चो! सुनो कहानी—
इक था राजा, इक थी रानी।

बच्चे—'इक था राजा, इक थी रानी,'
नानी, यह तो बात पुरानी।
हम तो आज सुनेंगे कोई
हिन्द देश की नई कहानी!
सर्दी की यह सांझ सुहानी!

(पर्दा गिरता है और काफी समय तक वाद्य-संगीत के साथ बच्चों का स्वर गूंजता रहता है)

समाप्त

जादू की छड़ी

गांव में मोहन नाम का एक बालक रहता था। उसकी टांगें बहुत पतली थीं और सिर मटके की तरह गोल और बड़ा। एक दिन गांव के लड़कों को एक मजाक सूझी। उन्होंने एक लकड़ी के ऊपर एक घड़ा रख दिया और उसे गाड़ कर घड़े के ऊपर लिख दिया 'मोहन'। मोहन को बड़ा गुस्सा आया, और बिना कुछ कहे सड़क-सड़क एक दूसरे गांव चला गया।

वह गांव जादूगरों का था। मोहन को भूख तो लगी ही थी, एक आम के पेड़ पर चढ़ गया। जिस समय वह चढ़ा था कि एक आदमी एक छड़ी लेकर वहां आ गया। मोहन ने समझा कि वह मुझे पकड़ने आ रहा है तो वह टहनियों में छिप गया। उसने ऊपर से देखा कि वह आदमी उस छड़ी को जमीन में गाड़ता है और ५ मिनट बाद ज्यों ही खोदता है तो उसमें से रुपये और कीमती कपड़े आदि निकलते हैं।

वह आदमी उस छड़ी को वापिस गाड़ने वाला ही था कि उसी समय मोहन एक आम तोड़ने लगा। पर, अरे यह क्या! वह आम जादू के थे। उनके हाथ लगाते ही वे पत्थर के हो गये और पत्थर धम् से आदमी के सिर पर गिरा। वह वह उसी समय छड़ी छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। मोहन नीचे उतरा और छड़ी को लेकर एक शहर में चला गया। उसने छड़ी के बल से हजारों रुपये पैदा कर लिये। अपने लिये अच्छे अच्छे कपड़े बनवा लिये और ठाट से रहने लगा।

—निर्मल कुमार कोटिया

पुरस्कार

बालबन्धु अपना नाम, आयु, शिक्षा, तथा पूरा पता, निम्न प्रश्न के उत्तर के साथ साफ साफ शब्दों में लिख भेजें। जिन बालकों के उत्तर सुन्दर होंगे उन्हें पुरस्कार दिये जायेंगे।

तुम भविष्य में क्या बनना चाहते हो? अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये तुम अभी क्या कर रहे हो?

अध्यक्ष, 'बाल रचनालय' सरस्वती प्रिन्टिंग वर्क्स, हाथीभाटा, अजमेर।
(राजपूताना।)

बाल बन्धुओं से निवेदन है कि, वे इस पते पर अपनी रचनायें भेजा करें। सुन्दर रचनाओं पर हर माह पांच पुरस्कार दिये जाते हैं।

चुटकुले

एक दिन राम और श्याम बाल-गोष्ठी में बैठे थे। राम ने श्याम की हंसी करने के हेतु कहा! श्याम आज से आप कुत्तों के हाकिम बनाये गये हैं। श्याम — अब तो आपको मेरी आज्ञा में रहना पड़ेगा।

— जयकुमार

प्रश्न पहेली

१ — पक्षी रहे पद के बिना,
गधो रहे सिर हीन।
पग काटे पग होत है,
अक्षर केवल तीन।
[पगड़ी]

२ — "खटमल" के मैं आगे रहता,
"मखमल" के मैं बीच हूं बसता
"बतख" के मैं पीछे रहता,
व्यंजन में अलबेला बनता।
["ख"]

—जगदीशलाल 'प्रेम'

३ — आदि काटे से किसी का,
सार हो जाता है।
अन्त काटे से चिन्ता का,
रूप हो जाता है।
आज इसे नष्ट करने को,
परमाणु जैसा शस्त्र बना है।
उत्थान-पतन की होड़ लगी,
इसमें यह जग कहाता है।
[संसार]

— कुन्दनसिंह

४ — आदि कटे पर दाता बनती,
मध्य कटे माता को बनती।
अन्त काट कर उल्टा फेरो,
दाना दाना मुझको टेरो।
आती हूं वैसे सब में ही,
पर ज्यादातर वह बच्चों में ही।
[नादानी]

— रामदत्त

सूचना

मैं देश विदेश के टिकटों का संग्रह करता हूं, कोई भी बालबन्धु मुझ से टिकट बदल सकता है। देशी टिकट भेजने पर एक विदेशी टिकट व एक विदेशी टिकट पर दो देशी टिकट। कोई भी बालबंधु मुझ से प्राप्त कर सकता है। ४ भारत के नये टिकट पर एक सेक्स भी मिल सकता है।

पता:— निर्मलकुमार कोटिया
रेलवे स्टेशन उदयपुर

गीत

जग प्रतिपल आगे बढ़ता है।
पल पल हैं घड़ियों में खोते,
रैन सबेरा नित ही होते,
दिन मिल कर हैं वर्ष बनाते,
वर्षों से युग बनता है।
जग प्रतिपल आगे बढ़ता है।
ग्रीष्म, शीत औ ऋतु शुभ पावस,
पूर्णमासी औ रात अमावस,
इनके आने जाने से इस,
दुनिया का रंग बदलता है।
जग प्रतिपल आगे बढ़ता है॥
कुंकुम ले नित्य ऊषा है आती,
जग मस्तक पर तिलक लगाती,
नित विजय चिन्ह धारण कर,
मानव, उन्नति गिरि पर चढ़ता है।
जग प्रतिपल आगे बढ़ता है।

—कुंवर ईश्वरचन्द्र जोशी

भारतीय बच्चों को रूस की भेंट

छोटे बच्चों की संस्था किशोर दल के पास अन्य देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने वाली रूसी संस्था की ओर से दो फिल्म आये हैं। ये दो फिल्म विक्टोरेनस कन्सर्ट तथा होर्सकि इन मास्को भारतीय बच्चों को भेंट में दिये गये हैं। किसी भी भारतीय संस्था को रूस की यह पहली भेंट है। इन फिल्मों का शीघ्र ही उद्घाटन होने वाला है।

ढोंगी साधु

सिर पर जटा बढ़ाए,
तन में खाक लगाए।
साधु बाबा कहलाते हैं,
भीख मांग कर खाते हैं।
हट्टे कट्टे औ जवान,
ढोंगी धूर्त महान—॥
काम होता है इनसे नहीं,
पेशा उठाया इन्होंने नहीं।
न फसना इनके फंदे में,
लगे रहो अपने धंधे में॥

—विश्वनाथ प्रसाद गुप्त

पहेली सं० ३५ की संकेतमाला

बायें से दायें

१. राजधानी का प्रमुख समाचार पत्र।
३. दुकानदार के लिए बहुत लाभकारी है।
५. अच्छे ... पर नाटक की सफलता का बहुत आधार होता है।
७. अतिथि को ... देना हिन्दुस्तान का खास रिवाज है।
८. दिन को यह निस्तेज होता है।
१०. प्रतिष्ठा।
११. यह न हो तो पेट के लाले पड़ जाते हैं।
१२. श्रवणेन्द्रिय।
१३. इस उमर में भारी काम की आशा नहीं की जा सकती।
१४. गरमी के दिनों में लोग देर तक इस पर पड़े रहते हैं।
१६. बड़ा व गोल तकिया।
१७. यह बिगड़ जाय तो संगीत का मजा नहीं रहता।
१८. डरपोक आदमी को इस जानवर की उपमा दी जाती है।
२०. खरगोश।
२१. उमर।
२३. वैद्यों के विशेष उपयोग की वस्तु है।
२४. प्रायः पदार्थ आग पर रखने से ... हो जाते हैं।
२५. इससे काम कर देने से गाहक खुश हो जाते हैं।

ऊपर से नीचे

१. बहादुरी।
२. दवाई का ... ठीक न हो तो उसका उलटा प्रभाव हो सकता है।
३. "शासक" की उलट फेर।
४. परमात्मा।
६. "नियम" की गड़बड़ी से बना है।
९. वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण अङ्ग है।
१०. इस तालाब में राजहंस रहते हैं।
१२. आलसी आदमी इससे बचता है।
१३. सादापन।
१५. यहां पैसे बनते हैं।
१७. यह पेड़ बहुत ऊंचा होता है।
१८. खतरनाक रोगी अच्छे वैद्य की ... से ठीक हो सकता है।
२०. खरबूजे की तरह का एक स्वादिष्ट फल।
२२. मृत्यु का देवता।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५

ये वर्ग आपने इस्त की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

सम्राट विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का भयंकर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य २॥), डाक व्यय ।=)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

(५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३५] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये (कूपन)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम.................................

पता.................................

ठिकाना.......................उत्तर नं०.......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम.................................

पता.................................

ठिकाना.......................उत्तर नं०.......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम.................................

पता.................................

ठिकाना.......................उत्तर नं०.......

इन तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों को एक ही या पृथक नामों से भरे जासकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो एक पर बाकी लकीर खींच दें।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले व संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहा वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १२ जुलाई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ७ जुलाई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३५, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २ जुलाई १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २४ देखिये

आपने हल की नकल पृष्ठ २४ पर वर्गों में रख सकते हैं।

क्या फिलस्तीन दूसरा स्पेन बनेगा ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

पहुंचे। यहूदियों की सख्या बराबर बढ़ते जाने और 'होमलैंड' सम्बन्धी उनकी मांग के कारण जुलाई १९३७ में पील कमीशन ने यह सुझाव रखा कि तटवर्ती और उत्तर के यहूदी प्रदेशों को मिलाकर एक स्वतन्त्र यहूदी राज्य कायम किया जाए जबकि फिलस्तीन का आन्तरिक प्रदेश अरबों के हाथ में ही रहे। अनुमान था कि इस यहूदी राज्य में बीस लाख यहूदी बसाये जा सकते हैं किन्तु कुछेक यहूदियों के समर्थन करने पर भी अधिकांश यहूदियों और अरबों ने इसे अस्वीकार कर दिया और फलतः १९३८ में इस योजना पर अमल करने का प्रयत्न छोड़ दिया गया। १९३९ में ब्रिटिश सरकार ने एक नयी नीति की घोषणा की और कहा कि फिलस्तीन में यहूदी अथवा अरब राज्य की स्थापना नहीं की जायगी, फिलस्तीन में दस वर्ष बाद एक ऐसा राज्य कायम किया जाएगा, जिसमें दोनों जातियां समानाधिकार का उपभोग कर सकें। यहूदियों ने इस घोषणा को भी अस्वीकार कर दिया और पृथक राज्य की अपनी मांग पर डटे रह कर अपनी सख्या में वृद्धि करते गये। अब फिलस्तीन में उनकी संख्या लगभग ६ लाख हो गयी है। उन्होंने फिलस्तीन में उद्योग धन्धों और कृषि के काम को उन्नत करने में अनथक यत्न किया है और इन कामों में उनकी लगभग चार करोड़ पौंड पूंजी लगी हुई है। तेलअवीव का शहर भी उन्हीं का निर्माण हुआ है। आज फिलस्तीन में जो समृद्धि नजर आती है, उसका अधिकांश श्रेय यहूदियों को है।

यद्यपि यहूदियों द्वारा किये गये विकास से प्रभावित होकर ही बहुत से अरब फिलस्तीन में आ बसे हैं, किन्तु उन्हें हर समय यह भय लगा रहता है कि संख्या बल में कम होते हुए भी कहीं यहूदी उन पर छा न जायें। वे उन्हें 'अरब राज्य' में तो समानाधिकार देने को उद्यत हैं, किन्तु यहूदियों द्वारा अलग राज्य कायम करने के हक में नहीं हैं।

दूसरा स्पेन बनेगा ?

जब यहूदियों ने नये राज्य इसराइल की स्थापना की घोषणा की, तो अरब देशों ने फिलस्तीन के अरबों के प्रति सहानुभूति रखने के कारण तुरन्त उस पर चढ़ाई आरम्भ कर दी। इस आक्रमण में मिस्र की ५०,०००, ईराक की ६०,०००, ट्रान्सजोर्डन की १२,००० और सीरिया व लेबनान की १०,००० सेनाएं भाग ले रही हैं। इनके मुकाबले यहूदी सेना की सख्या के बारे में तरह तरह के समाचार मिले हैं। मिस्र के 'अल अहराम' पत्र का अनुमान है कि उनकी सख्या लगभग २०,००० है, जबकि अन्य सम्वाद समितियों ने इस सख्या को एक लाख तक कूता है। आक्रान्ता सेनाओं में मिस्र का बल सब से अधिक है और ईराक व ट्रान्सजोर्डन की सेनाएं अंग्रेजों द्वारा शिक्षित हैं। ट्रान्सजोर्डन की सेनाओं का नेतृत्व भी अंग्रेज अफसर ही कर रहे हैं।

फिलस्तीन पर तीन दिशाओं—उत्तर, पूर्व और दक्षिण—से आक्रमण किया गया है। उत्तर से सीरिया व लेबनान की सेनाओं ने आक्रमण किया है, किन्तु उसमें उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली है। इसके विपरीत एकर नगर में यहूदियों के दबाव के कारण अरबों को आत्मसमर्पण कर देना पड़ा है। पूर्व से ट्रान्सजोर्डन की जो सेनाएं फिलस्तीन में बढ़ रही हैं, वे लिड्डा और जेरुसलम तक पहुंच चुकी हैं और यहूदियों की राजधानी तेलअवीव से केवल १० मील की दूरी पर हैं। जेरुसलम के पुराने शहर के ९० प्रतिशत भाग पर अब यहूदी बस्ती के उनका अधिकार हो गया बतलाते हैं। दक्षिण से समुद्र तट के साथ साथ तेलअवीव की ओर बढ़ने वाली मिस्री सेनाओं ने गाजा पर अधिकार कर लिया है और तेलअवीव से लगभग ३० मील दूर रह गयी हैं। इस लड़ाई में आक्रान्ताओं ने विमानों की भी सहायता ली है और वे तेलअवीव पर अब तक कई बार हमले कर चुके हैं।

यद्यपि अब तक के समाचारों से ऐसा ध्वनित होता है कि यहूदी मार खा रहे हैं और अरब सेनाएं शीघ्र ही समूचे फिलस्तीन पर अधिकार कर लेंगी, किन्तु आक्रान्ता सेनाओं ने अब तक फिलस्तीन के अरब भाग पर ही अधिकार किया है। जब तेलअवीव और दूसरे यहूदी प्रदेशों की लड़ाई आरम्भ होगी, तभी दोनों पक्षों के बलाबल की वास्तविक परीक्षा होगी।

अमेरिका के अतिरिक्त रूस, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और ग्वाटीमाला यहूदी राज्य को स्वीकार कर चुके हैं, और स्वीडन, नारवे तथा डेनमार्क द्वारा भी इसी सप्ताह इसराइल को स्वीकार कर लेने की घोषणा हो जाने की आशा की जाती है। उनकी यह स्वीकृति इस बात की सूचक है कि उन्हें यहूदियों के पक्ष से सहानुभूति है, जबकि ब्रिटेन उसे न केवल स्वीकार नहीं कर रहा, उसका स्पष्ट विरोध तक कर रहा है। ब्रिटिश क्षेत्रों में तो यहां तक कहा गया है कि अपनी पिछली सन्धियों के कारण ब्रिटेन अरबों को शस्त्रास्त्र देने तथा ट्रान्सजोर्डन की सेना में ब्रिटिश अफसरों को रहने देने के लिए बाधित है। ऐसी स्थिति में हम स्पष्टतः रूस और अमेरिका को एक तरफ और ब्रिटेन को दूसरी तरफ खड़ा देखते हैं। यद्यपि मित्रराष्ट्र-संघ ने फिलस्तीन के युद्ध में मध्यस्थता करने के लिए स्वीडिश रेडक्रास के अध्यक्ष काउन्ट फोल्के बर्नाडोट को अपनी ओर से नियुक्त कर दिया है, किन्तु सुरक्षा कौंसिल में फिलस्तीन में लड़ाई बन्द कराने के लिए प्रस्तुत अमेरिकन प्रस्ताव की जो दुरवस्था हुयी है, उससे यह आशा नहीं होती कि मित्रराष्ट्र संघ इस बार भी शान्ति भंग को रोकने के लिए कारगर प्रभावकारी साधन सिद्ध कर सकेगा। अमेरिका ने अपने प्रस्ताव में फिलस्तीन के वर्तमान युद्ध को स्पष्टतः शान्ति भंग बतलाया है और सुझाव रखा है कि यदि अरब लड़ाई बन्द न करें, तो उनके विरुद्ध सैनिक तथा आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये जाएं। एसी स्थिति में यदि सुरक्षा कौंसिल सचमुच एक खिलौना सिद्ध हुआ और ब्रिटेन को अरबों का समर्थन करते और उन्हें सहयोग देते देख कर यहूदियों के पक्षपाती किसी देश ने इस राइल की सक्रिय सहायता करने का निश्चय किया तो फिलस्तीन दूसरा स्पेन बन जायगा।

२१ मई, १९४८

[पृष्ठ ६ का शेष]

जहां भी जाएं हों, वहां उन्हें इस्तेमाल करने का असीमित अधिकार हो, रूस ने अस्वीकार कर दिया। (९) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार। जेनेवा हवाना और क्यूबा में हुए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्मेलनों में रूस ने भाग नहीं लिया। (१०) युद्ध-विध्वस्त देशों को सहायता। अमरीका पर्याप्त सहायता कर रहा है। (१२) मानव अधिकार। इस विषय पर मित्रराष्ट्रीय कमीशन एक मसविदा तयार कर रहा है। उसमें रूस और अमरीका दोनों सदस्य हैं; अतः इस प्रश्न का यहां उठाना निरर्थक है।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छप कर प्रकाशित किया।

दिल्ली, सोमवार १६ ज्येष्ठ
सम्वत् २००५

DELHI 31th. May 1948.

सम्पादक—
श्री रामगोपाल विद्यालंकार
श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

एक प्रति का मूल्य [illegible])
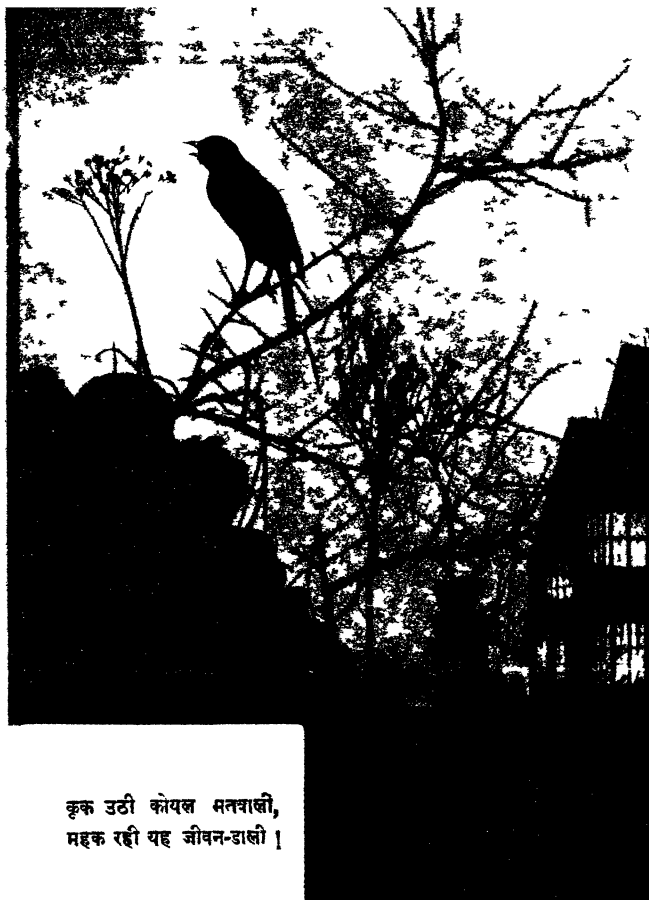
कूक उठी कोयल मतवाली,
महक रही यह जीवन-डाली !

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम्

सोमवार १६ जेठ सम्वत् २००५

संकीर्ण प्रान्तीयता का खतरा

दो सप्ताह पूर्व हमने स्वाधीन भारतीय राष्ट्र पर आने वाले दो खतरों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया था। कम्यूनिस्ट और साम्प्रदायिक श्रेणियों का खतरा प्रतिदिन और भी अधिक स्पष्ट होता जा रहा है, किन्तु इन दो खतरों के अलावा भी एक नया खतरा पिछले दिनों पैदा हो रहा है। इसे यदि प्रारम्भ में ही न रोका गया, तो वह उपर्युक्त खतरों से भी अधिक हानिकारक हो सकता है। वह खतरा है प्रान्तीयता की बढ़ती हुई भावना का। जब अंग्रेज भारत में आये थे, भारतवर्ष छोटे बड़े प्रदेशों में बंटा हुआ था। प्रत्येक प्रदेश का अलग अलग शासक था। अंग्रेजों के आने से भारत को कितनी ही हानियां हुई हों, एक लाभ यह अवश्य हुआ कि समस्त देश में एक राष्ट्रीयता की भावना पैदा हो गई है। यह ठीक है कि पिछले दो तीन दशकों से अंग्रेजों की समस्त नीति का आधार भेदभावना को बढ़ाना रहा है, किन्तु फिर भी समस्त राष्ट्र में कुमारी अन्तरीप से काश्मीर तक एकता की भावना कायम रही।

अनेकता की भेदभावना किसी भी राष्ट्र को निर्बल कर देती है। यही कारण है कि स्वातन्त्र्य सूर्योदय के साथ ही महान् राजनीतिज्ञ सरदार पटेल ने भारत वर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक फैली हुई ५, ६ सौ रियासतों को संगठित करके भारतीय संघ में लाने का महान् प्रयत्न किया। आज दो चार रियासतों को छोड़ कर प्रायः सब रियासतें परस्पर संगठित हो गई हैं। जब हम ये पंक्तियां लिख रहे हैं, तब मध्यभारत की रियासतों के महान् संघ का उद्घाटन पं० जवाहरलाल नेहरू कर रहे हैं। यह संघ ४०००० वर्गमील तथा आठ करोड़ रु० की आय का विस्तृत प्रदेश है। किन्तु एक ओर जहां रियासतें अपनी कृत्रिम सीमाएं छोड़ कर एक सूत्र में ग्रथित हो रही है, दूसरी ओर प्रान्तीयता की भावना शेष समस्त देश में लगातार बढ़ रही है। इस समय इस भेदभावना का आधार है भाषा। बंगाल के राजनीतिज्ञों में संकुचित प्रान्तीयता की भावना सबसे अधिक है। आज भी शरत्चन्द्र बोस बंगाली भाषा की आड़ में समस्त मानभूम, बिहार का पर्याप्त क्षेत्र घेर कर रहे हैं और कुछ जिलों को बंगला भाषी बता कर उन्हें बंगाल प्रान्त में सम्मिलित कर लेना चाहते हैं। उनकी मांगों के औचित्य अनौचित्य की बहस में न जा कर हम यह अवश्य कहना चाहते हैं कि इसके मूल में अखिल देशीयता की बजाय अपने अपने प्रान्त की हितभावना ही दीखती है। बिहार को इस संकुचित दृष्टिकोण के कारण केवल बंगाल से ही नहीं, उड़ीसा से भी निबटना पड़ रहा है। कुछ रियासतों को लेकर इन दोनों प्रान्तों में झगड़ा पैदा हो गया था। दक्षिण भारत में भाषाओं के आधार पर प्रान्त विभाजन की चर्चा पुरानी है और जो अब बहुत ज्यादा जोर पकड़ रही है। बम्बई प्रान्त के भी महाराष्ट्र व गुजरात में विभाजन की बात बहुत दूर तक बढ़ चुकी है। मध्य प्रान्त में भी हिन्दी और मराठी भाषाभाषियों का संघर्ष पैदा हो जाता है। पंजाब भी इस भाषा की भेद भावना से, जैसे लक्षण प्रकट हो रहे हैं, अलग नहीं रहेगा। केवल पंजाबी को राजभाषा बनाने की मूर्खतापूर्ण मांग का अर्थ केवल यह है कि पंजाब के भी दो भाग किये जाय।

इस तरह एक ओर सरदार पटेल रियासतों को एक कर रहे हैं, दूसरी ओर विभिन्न प्रान्त परस्पर भेदभाव की सृष्टि कर रहे हैं। इस भेदभाव के मूल में केवल भाषा की अपेक्षा संकुचित स्वार्थ की भावना अधिक है। राजपूताने की रियासतों ने जब देशी परदेशी का प्रश्न उठाया था, उसमें भी संकुचित प्रांतीयता की भावना विद्यमान थी और आज भी भाषा के आधार पर प्रान्त विभाजन के मूल में अखिल भारतीयता की भावना की कमी स्पष्ट रूपेण झलकती है। प्रजा का सामान्य हित प्रजातन्त्र का मूल आधार है, वहां भाषा का प्रश्न उठाकर राजकार्य में बाधा डालने का प्रयोजन हमारी समझ में नहीं आया। अपनी स्वार्थ भावना के ही कारण हम एक दूसरे से अलग होते हैं। हम यह जानते हैं कि अलग अलग प्रदेश बनाकर हम स्वयं सरकारी कुर्सियों पर बैठ सकेंगे और यही संकुचित भावना 'बंगाल बंगालियों के लिए का' नारा लगाने वालों के हृदय में थी और यही भावना भाषा के आधार पर विभाजन चाहने वालों के दिलों में मात्रा भेद से सम्भव है। प्रांतीयता का झगड़ा आगे बढ़कर और भी विकट रूप धारण कर सकता है। यदि यह भावना बढ़ती गई, तो नदियों के जल वितरण पर झगड़ा किसी भी समय सम्भव है। कृषि व्यवसाय के अन्य प्रश्न भी समय समय पर खड़े हो सकते हैं।

आज से ५, ६ वर्ष पूर्व जब राजस्थान के अनेक कार्यकर्ताओं ने राजस्थानी भाषा के उद्धार का नारा लगाया था या जब युक्तप्रान्त से जनपद भाषाओं के पुनर्जीवन का आन्दोलन किया गया था, तब हमने उनका इसी आधार पर विरोध किया था कि इससे इमारी प्रान्तीय संकीर्णता को पुष्टि मिलेगी और आज भी हमारा यह मत है कि प्रान्तीय भाषाओं के पक्ष में ऐसा प्रचार न किया जाय, जो हमारी भेदभावना को और अधिक बल दे। हमें यह जान कर कुछ दुःख अवश्य हुआ कि भारत सरकार का शिक्षाविभाग जनपद भाषाओं को फिर से प्रोत्साहन देने पर विचार कर रहा है। हम इस प्रवृत्ति को हिन्दी के लिए और उससे बढ़ कर राष्ट्रीयता के लिए घातक समझते हैं। साम्प्रदायिकता के साथ समझौता करके हमारे राष्ट्रनेताओं ने जो भारी गलती की है, उसका परिणाम हम भोग रहे हैं और अब हम प्रान्तीयता के साथ भी वैसा समझौता करके वैसी गलती न करें। हिन्दी अखिल राष्ट्र की भाषा है। जहां वह स्थान पा चुकी है उसके स्थान पर जन पद भाषा को पुनर्जीवित करने का अर्थ हिन्दी की क्षति है। एक समाजवादी ने भाषा गत भेद को लक्ष्य में रख कर प्रान्त विभाजन का समर्थन किया था, किन्तु वे यह भूल गये कि प्रत्येक भाषा में भी कई बोलियां हैं। एक बार विभाजन का यह आधार स्वीकार कर लिया, तो फिर बोलियों के आधार पर भी प्रान्त विभाग की नौबत आकर रहेगी। इस लिए आज हमें यह मूल मंत्र स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी ऐसा कार्य हमें नहीं करना चाहिए, जिससे देश में भेद भावना को थोड़ी सी पुष्टि मिले। देश की एकता और अखण्डता ही हमारा चरमलक्ष्य होना चाहिए।

आलोचना का स्वागत

पाठक इस अंक में अन्यत्र श्रद्धेय श्री भगवानदासजी का लेख पढ़ेंगे। इस लेख का पूर्वार्ध पिछले एक अंक में भी प्रकाशित हुआ था। लेखक ने एक साथ अनेक समस्याओं पर अपने विचार प्रकट किये हैं। उनसे सहमत हों या न हों हम सब कांग्रेसियों से—आजकल वे ही शासक दल के हैं—यह अवश्य कहना चाहते हैं कि वे उन पर ठण्डे दिमाग से विचार करें। हम स्वयं भी उनसे सभी विचारों में सहमत नहीं हैं, किन्तु अपनी आलोचना को सुनने की क्षमता किसी भी प्रजातन्त्र के लिए आवश्यक है। इंगलैण्ड प्रजातन्त्र की जननी है पद पद पर हम उसी का अनुकरण कर रहे हैं। शासक अपनी भारी कार्यव्यस्तता, जिम्मेवारियों, अपने विश्वसनीय या अविश्वसनीय साथियों अथवा अपने शासनमद के कारण भूलें कर सकते हैं। उन्हें अपने शुद्ध मार्ग पर नियंत्रित रखने के लिए तीव्र और जागरूक लोकमत अनिवार्य है। आलोचक का भय शासक को ठीक मार्ग पर रखता है यही कारण है कि इंगलैंड की सरकार विरोधी दल के नेता को दो हजार पौं० प्रतिवर्ष वेतन देती है, ताकि वह आलोचना द्वारा सरकार को सदा सावधान करता रहे। आज भारत सरकार को भी एक ऐसे जागरूक प्रहरी की आवश्यकता है, जो सदा उसे गलती करते देख कर सावधान करे। इसीलिए सरकार को और कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को आलोचनाओं का स्वागत करना चाहिए न कि उन्हें सुन कर विचलित हो जाना चाहिए।

हिन्दू जाति का ह्रास

श्रद्धेय श्री भगवानदासजी की दूसरी जिस बात की ओर हम अपने पाठकों का ध्यान विशेषरूपेण खींचना चाहते हैं, वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। किसी समय का हिन्दू प्रधान काश्मीर आज मुस्लिम प्रधान हो गया है। पाकिस्तान का भीषण खतरा भी आज इसी कारण उत्पन्न हुआ है कि भारतवर्ष के करोड़ों हिन्दू आज मुसलमान हैं। इसका मुख्य कारण ब्रिटिशजन्य ब्राह्मण गुरुओं के 'अहंकार अदूरदर्शिता और संकीर्णता' आदि है। एक समय था, जब काबुल, कन्दहार आदि भी हिन्दू राष्ट्र थे। आज लाहौर, सियालकोट और पूर्वी पाकिस्तान आदि प्रदेश तक मुस्लिम बहुल होने के कारण भारतवर्ष से पृथक हो गये हैं। दुःख तो यह है कि आज भी बहुत से हिन्दू नेता अनुदार और प्रतिगामी बने हुए हैं। प्रगतिशील और उदार नीति की आज आवश्यकता पहले से भी अधिक है। यदि इस नीति को स्वीकार न किया गया तो हिन्दू जाति का ह्रास और भी अधिक होगा।

राष्ट्रसंघ की परीक्षा

सन् १९२० में जिस राष्ट्र संघ की स्थापना हुई थी उसकी वास्तविक परीक्षा मंचूरिया पर जापान के और अबीसीनिया पर इटली के आक्रमणों के समय हुई थी और यह स्पष्ट हो गया था कि राष्ट्रसंघ बड़े बड़े स्वार्थियों का एक गुट है, जो कभी कोई ठोस कदम उठा नहीं सकता। इस महायुद्ध के बाद और भी अधिक उत्साह से संगठित संयुक्त राष्ट्र संघ की भी परीक्षा का अवसर आ गया है। और यह परीक्षा होगी फिलस्तीन के प्रदेश में। अरब और यहूदी अब तक राष्ट्रसंघ की उपेक्षा कर रहे हैं, यद्यपि संघ में कई इतने शक्तिशाली राज्य हैं, जो अकेले अरबों और यहूदियों का सामना करने का सामर्थ्य रखते हैं, परन्तु फिर भी यहूदी व अरब मजे में राष्ट्रसंघ के आदेशों की अवहेलना कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि पिछले राष्ट्रसंघ के

हैदराबाद के सम्मुख दो विकल्प

इस सप्ताह जनता बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी कि हैदराबाद के विषय में भारत सरकार क्या निर्णय करती है। इधर लायकअली दिल्ली में बातचीत करने आये हुए थे उधर रजाकारों की दानवता का अधिकाधिक प्रसार हो रहा था। बम्बई से मद्रास जाने वाली गाड़ी पर गंगापुर में जो आक्रमण किया गया उसके कारण हैदराबाद के रास्ते से गाड़ियों का जाना बन्द कर करना पड़ा। (सैनिक पहरे में अब गाड़ियां जाने लगी हैं।) २४ मई को पं० नेहरू सरदार पटेल से इस विषय में परामर्श करने गये। यद्यपि स्पष्ट रूप से कुछ भी व्यक्त नहीं किया गया है, पर फिर भी ऐसा ख्याल है कि निजाम सरकार ने कुछ कुछ्ना स्वीकार कर लिया है।

मीर लायक अली अपने साथ भारत सरकार की ओर से दो प्रस्ताव ले गये हैं जिनमें से किसी एक का चुनाव निजाम सरकार ने करना है। इनप्रस्तावों पर निजाम सरकार का उत्तर लेकर मीर लायक अली सप्ताहान्त तक पुन दिल्ली लौटने वाले हैं।

फिलस्तीन संघर्ष

संयुक्तराष्ट्रों की सुरक्षा परिषद ने अरबों को फिलस्तीन में बुधवार रात्रि के साढ़े नौ बजे तक युद्ध बन्द करने का आदेश दिया था। पुन उनकी प्रार्थना पर ४८ घण्टे का समय उन्हें विचार करने के लिए और दिया गया। परन्तु उस समय की समाप्ति पर भी अरबों ने 'युद्धरोको' आदेश को मानने से इन्कार कर दिया है। जो शर्तें उन्होंने रखी हैं वे ऐसी हैं कि यहूदियों के लिए स्वीकार योग्य नहीं हो सकतीं। इस समय दोनों पक्षों में भीषण संघर्ष जारी है।

अमेरिका ने इजराइल राज्य को दस करोड़ डालर तक ऋण देना स्वीकार कर लिया है। इजराइल राज्य की स्वीकृति में अमेरिका ने पहल की थी पर कूटनीति सम्बन्ध स्थापित करने में रूस बाजी मार गया है। अभी तक ब्रिटेन ने इजराइल राज्य को स्वीकृति नहीं दी है, इतना ही

नहीं, अपितु अरबों की वह सक्रिय सहायता कर रहा है। मार्शल योजना के अन्तर्गत ब्रिटेन अमेरिका से जो सहायता प्राप्त कर रहा था वह उसने अरबों को भेजनी शुरू कर दी है। इस प्रकार फिलस्तीन के मामले में परस्पर विरोधी दल होने के कारण ब्रिटेन और अमेरिका में मन मुटाव बढ़ता जा रहा है।

इजराइल के राष्ट्रपति ने भारत सरकार से अपने नये राज्य को मान्यता देने की प्रार्थना की थी, परन्तु स्थिति की विषमता के कारण अभी तक भारत सरकार ने इस विषय में पक्ष विपक्ष में कोई निश्चय नहीं किया है। उधर मिश्र में स्थित भारतीय राजदूत डा० सैयद हुसैन ने मिश्र में यह घोषणा की है भारत अरबों के साथ है। डा० साहब को इस प्रकार की मनचाही घोषणा करने का अधिकार किसने दिया — यह प्रश्न जनमत को आन्दोलित कर रहा है।

अवसर पर प्रकट हुआ था अर्थात् स्वयं संघ के सदस्यों के स्वार्थ। आज अमेरिका रूस आदि यहूदियों का समर्थन कर रहे हैं और ब्रिटेन अरबों का। इन्हीं के पक्ष समर्थन के कारण आज न यहूदी संघ के आदेश का पालन करते हैं और न अरब उसको सुनते हैं। फिलस्तीन का प्रश्न यह सिद्ध करेगा कि राष्ट्रसंघ किसी प्रश्न पर उचित निर्णय अथवा अपने आदेश का पालन करा सकता है या नहीं। यदि राष्ट्रसंघ को कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई, तो वह फिलस्तीन की चट्टान से टकरा कर छिन्न भिन्न न भी हो, तो वह बहुत कमजोर अवश्य हो जायगा।

गांधी हत्या सम्बन्धी मुकदमा प्रारम्भ

शुक्रवार २८ मई को दिल्ली के लाल किले में महात्मा गांधी के कथित हत्यारे नाथूराम विनायक गोडसे हिन्दू महासभा के नेता विनायक दामोदर सावरकर तथा अन्य सात अभियुक्तों पर विशेष जज श्री आत्माचरण के न्यायालय में प्रारम्भ मुकदमा हुआ। मुकदमे की सुनवाई १४ जून के लिए स्थगित कर दी गई।

अभियुक्तों का परिचय पृ० २६ पर

मुकदमे में सरकारी वकील

मुकदमे में अभियुक्तों के वकील

मुकदमे के अभियुक्त

पिपलोदा की महारानी अधिकार-च्युत

मध्यभारतीय रियासतों के प्रादेशिक कमिश्नर श्री सी० एस० वेंकटाचार ने पिपलोदा स्टेट की महारानी को शासन-अधिकार से वंचित करने का आदेश दिया है। स्टेट की पुलिस द्वारा मालवा पुलिस पर हमला करने के कारण यह निर्णय किया गया है।

राजस्थान संघ में शराब-बन्दी

राजस्थान संघ सरकार ने आगामी अक्टूबर तक सारे संघ में शराब बन्दी लागू करने का निर्णय किया है। राजस्थान संघ में एक पंचवर्षीय योजना का सूत्रपात हो रहा है जिसमें नई सड़कें बनाने तथा नये टेलीफोन लगाने की व्यवस्था की जा रही है।

किंग्सवे कैम्प मे भीषण क्षति

मंगलवार सायंकाल (२५ मई) ६ बजे के लगभग भारत की राजधानी दिल्ली में जो भयंकर आंधी आई उसमें दिल्ली के सबसे बड़े शरणार्थी कैम्प — किंग्सवे में आग लग जाने से ३०० तम्बू और २० बैरकें जल गई हैं। फलस्वरूप १२ हजार शरणार्थी निराश्रित हो गये हैं। इन सब निराश्रितों को हुमायूं कैम्प में तथा स्कूलों की इमारतों में — जो विद्यार्थियों की गर्मी की छुट्टियों के कारण इस समय खाली हैं — ठहराने का प्रबन्ध किया जा रहा है। बिचारे शरणार्थी। 'क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णम्।'

लुहारू व पटौदी रियासतें पूर्वी पंजाब में

पूर्वी पंजाब सरकार के एक प्रतिष्ठित गजट में कहा गया है कि लुहारू व पटौदी रियासतें शासन व अन्य प्रयोजनों के लिए क्रमश हिसार और गुड़गांवा जिलों की प्रादेशिक सीमाओं में मिला दी गई हैं।

मध्यभारत संघ का उद्घाटन

२८ मई को पं० नेहरू ने मध्यभारत संघ का उद्घाटन कर दिया है। ग्वालियर नरेश इस संघ के राजप्रमुख और इन्दौर नरेश उपराजप्रमुख होंगे। इस संघ में ग्वालियर और इन्दौर जैसी बृहद् आकार और आय वाली रियासतों के साथ १५ सलामी वाली और ७ बिना सलामी वाली रियासतें भी शामिल हुई हैं। इस संघ का क्षेत्रफल ४० हजार वर्गमील, आबादी ७२ लाख और वार्षिक आय ८ करोड़ रुपये होगी। अब तक के सभी संघों में यह सबसे बड़ा है। मध्य भारत के इतिहास में यह दिन चिरस्मरणीय

(शेष पृष्ठ २१ पर)

कुछ विचारणीय प्रश्न—२

[श्रद्धेय भगवानदास जी]

हिन्दुओं के साथ अन्याय क्यों ?

और देखिये। इधर कलकत्ता में लाख से मुस्लिम-पीड़ित हिन्दू शरणार्थी प्रायः लाख तक लाख आ गये हैं, और कई लाख और आ रहे हैं। पहिले ही कलकत्ते में तिल रखने को स्थान नहीं था, अब तो मछलियों के ऐसा एक पर एक लदेंगे और लद रहे हैं; एक-एक छोटी-छोटी कोठरी में पांच-पांच सात-सात मर्द औरत बच्चे भर गये हैं। पूर्वी पंजाब में इसके विरुद्ध पाकिस्तानी मुस्लिम-सेनापीड़ित काश्मीरी मुस्लिम शरणार्थियों की भरमार हो गयी है और हो रही है। हिन्दू निवासी निकाले जा रहे हैं, मुस्लिम शरणार्थी उनके स्थान पर भरे जा रहे हैं। फल यह कि निवासी तो शरणार्थी और शरणार्थी तो निवासी बनाये जा रहे हैं। जो कथा पूर्वी पंजाब और पश्चिमी बंगाल की हो गयी है, वही कथा, न्यूनाधिक, संयुक्तप्रांत और बिहार की हो रही है। यदि हमारे हिन्दू मंत्रियों ने झूठी उदारता का ढोंग बनाये रखा, तो हिंदू प्रजा का उत्पीड़न और मुस्लिम सज्जनों का पालन-पोषण होगा, जिससे हिन्दू जनता उन उदार हृदय मन्त्री महोदयों की घोर शत्रु, अवश्य और उचित ही हो जायगी, क्या हो गई है—इस महा जटिल प्रश्न का एकमात्र उत्तर जो मेरी समझ में आया है वह यही है कि नाप तोलकर जितने मकान जितनी जमीन से मुस्लिम लोगों ने पश्चिमी पंजाब से हिन्दुओं को निकाला है, उतने ही मकान और उतनी ही जमीन हिन्दू शरणार्थियों को पूर्वी पंजाब में दी जाय और जितना नुकसान हिंदुओं के माल का (जान तो वापस मिल ही नहीं सकती) पाकिस्तानी मुस्लिमों ने किया है, उतने का पूरा-पूरा मूल्य जब तक पश्चिमी पंजाब से भाग आये हिन्दू शरणार्थियों को पाकिस्तानी हुकूमत न चुका देवें तब तक एक भी मुस्लिम पूर्वी पंजाब में न आने पावे और जो आये हैं, वे निकाल दिये जायं। ऐसा बर्ताव ढाका से आये हिन्दू शरणार्थियों के प्राण बचाने के लिए, कलकत्ता तथा समग्र पश्चिमी बंगाल में बसे मुस्लिमों के साथ होना चाहिये। देखने में तो यह नीति बहुत नृशंस जान पड़ती है, पर इसको न बरतेगा तो हिन्दुओं के साथ नृशंसतर नीति होगी। जैसा शेख सादी ने फर्माया है :—

'न दानिस्त आं कि रहमत कर्द बदमार,
कि ईं जुल्मस्त बर फ़र्ज़न्दि आदम'

जिन कदमनाम सज्जन ने सर्प पर दया की उन्होंने यह नहीं विचारा कि आदमी के बच्चे पर घोर क्रूरता कर रहा हूं।

× × ×

हिन्दुओं के ह्रास का कारण

और सुनिये—'हिन्दुस्तान' शब्द का तो अर्थ 'हिन्दुओं का स्थान' है न ? सो आज 'मुस्लिमस्तान' कैसे हो गया—हिंदू ब्राह्मणम्मन्य कठ पण्डितों के ही अहंकार मूढ़ग्राह, धर्मान्धता से तथा उन पंडितों पर अन्धविश्वास करने वाली हिन्दुम्मन्य जातियों की हतबुद्धि से, कि ढाई-तीन सहस्र परस्पर द्वेषिणी जातियों में बिखर गये हैं, जैसा पहले कह चुके, पर पुनः पुनः दुहराने सिहराने की नितान्त घोर आवश्यकता है—यदि इन ऋषि-वंशजंमन्य ब्राह्मण ब्रुवों की' बुद्धि वैसी होती जैसी सम्राट अशोकवर्धन के समय तक रही, तो भारतवर्ष में आज एक भी मुस्लिम या ईसाई न होता, वैदिक धर्मी ही देख पड़ते। १५०० वर्ष पहले, अर्थात् मुहम्मद और इस्लाम के जन्म से पूर्व, भारत में १०० प्रतिशत हिन्दू थे, आज ६५ प्रतिशत रह गये हैं, २५ प्रतिशत मुसलमान और १० प्रतिशत ईसाई तथा अन्य धर्मी हैं—यदि 'अस्पृश्य' जातियों को भी 'अ-हिन्द' गिना जाय (जैसा वस्तुतः वे हैं) तो 'शुद्ध' हिंदुओं की संख्या स्यात् ५० प्रतिशत ही रह जाय। १५०० वर्ष पहिले, वे देश जो अब काबुल, कन्दहार, बलूचिस्तान, अपितु बल्ख बुखारा, समरकन्द आदि कहलाते हैं, वे सब हिंदू थे, और तक्षशिला (टंक्शिला) पुरुषपुर (पेशावर) गांधार (कन्दहार) आदि सब क्षत्रियों और ब्राह्मणों के देश थे, जहां पाणिनि, पतंजलि, चरक आदि महर्षि गिने जाते शास्त्रकार उत्पन्न हुए। इस सब की कथा कि क्यों ब्राह्मणप्राय काश्मीर (पितुः प्रदेशाः तव देवभूमयः) आज मुस्लिम प्राय हो गया है, और दक्षिण समुद्र तट का देश ब्राह्मण क्षत्रियप्राय से ईसाईप्राय हो गया है।

× × ×

रूस से दिशा संकेत...

और देखिये— आजकल भारतीय 'लीडर' महोदयों की क्या कांग्रेसी, क्या सोशलिस्टी, क्या कम्युनिस्टी, सबकी आंख सोवियत रूस पर सदा लगी रहती है। प्रतिपद उसी का अनुकरण, अनुसरण, करना चाहते हैं। पर यह नहीं देखते, या जानते ही नहीं, या जानना चाहते ही नहीं कि वहां की वास्तविक दशा क्या है। अभी अभी न्यूयार्क की उत्तम मासिक पत्रिका 'रीडर्स डाइजेस्ट' के कई अंकों में एक ऐसे सज्जन, श्री बुलिट, के कई लेख छपे हैं, जो रूस में दो तीन वर्ष तक यू० स्टे० अमेरिका की ओर से राजदूत रहे और रूस में चारों ओर घूम घूमकर एक रूसी फौजी जनरल के साथ दौरा करते रहे। (ऐसा करने इस हेतु से पाये कि उस समय रूस और यू० स्टे० अमेरिका की मैत्री थी) अब तो भारत की राजदूत श्रीमती पण्डित एक उत्तम सजे सजाये, खान पान से सुसम्पन्न गृह के भीतर कैदी की भांति रखी जाती हैं। जैसा उन्होंने स्वयं अन्तरंग भारतीयों से स्वीकार किया है। श्री बुलिटने उत्तरी समुद्र के तट के घोर हिममय प्रदेश में जहां तापमान (क्या शीतमान), 'फ्रीजिंग पाइण्ट' (पानी जम जाने के मान) में से ४० डिग्री नीचे सदा रहता है, तथा साइबेरिया के मध्य की मरुभूमि में, जहां दिन में आग बरसती है और रात्रि में ओला पाला (जैसा अफ्रीका और राजस्थान के मरुधर में) खूब घूम फिर कर, दशा देखी। वे लिखते हैं कि दोनों स्थलों के कई-कई स्थानों में भारी-भारी यन्त्रालय और कई कई लाख मनुष्यों की बस्तियां देखीं, जो एकराट् स्टालिन (स्टील, लोहा) की आज्ञा से तीन-तीन चार-चार वर्षों में, मानो जादू से, बना दिए हैं — क्यों ? इसलिए कि भावी तृतीय पृथ्वी नाशक विश्व युद्ध के छिड़ने से पहले ही, चतुर्वार्षिक योजनाएं सब सिद्ध हो जायं, कि युद्ध होते हुए किसी समरोपयोगी सामग्री की कमी न हो। बुलिट महाशय ने क्या देखा ? यह देखा कि प्रत्येक महाकर्मान्त (फैक्टरी) के पास बड़े बड़े बन्दीगृह ('कान्सेण्ट्रेशन कांम्प') बने हैं, जिनकी दशा हिटलर के भी 'बेन्सेन' स्थान के बन्दी घरों से दारुणतर है, और प्रतिदिन एक-एक दो दो सहस्र कमेरे कुत्ते-बिल्लियों चूहों की मृत्यु दारुणतर मौत मरते हैं — बुलिट् के साथी जनरल के पवित्र मुख से निकल गया कि इस समय ऐसे बन्दी प्रायः दो कोटि रूसी ही हैं, कुछ थोड़े से विदेशी यहूदी आदि हैं। बुलिट ने पूछा, 'इतने आदमी जब नित्य मरते हैं तो रिक्त स्थान की पूर्ति कैसे होती है ?' विवश होकर जनरल साहब को कहना पड़ा कि 'पुलिस झूठे अभियोग लगाकर, मजिस्ट्रेटों से कारागार का दण्ड दिलवा कर साइबेरिया भेजती रहती है और यह सब कार्य श्री स्टालिन की आज्ञा से ही होता है।' अपने ही देशी भाइयों पर यह करुणा ! क्यों भाई मन्त्रियो, नेताओं, समाजवादियों, साम्यवादियो ! भारत में भी यही करोगे क्या ?

× × ×

यह तो आफतें हो ही रही थीं कि रेल का भाड़ा ड्योढ़ा दूना कर दिया गया, तिस पर भी यात्रियों की भीड़ बढ़ती ही जाती है। डब्बों की पटरियों पर पचासों और गाड़ियों की छतों पर पचासों चढ़े चढ़े चलते हैं और बीच बीच में पचासों मर भी जाते हैं, जब दूसरी ट्रेन पास से सन् से निकल जाती है और उसके थपेड़ में आ जाते हैं या इन सवारों की ट्रेन किसी नीची पुलिया या किसी स्टेशन पर के रेलवे 'ओवरब्रिज' के नीचे से डाकगाड़ी एक्सप्रेस आदि बिना रुके निकल जाती है। इधर तो चिल्लाहट है कि अन्न वस्त्र बिना लोग मरे जाते हैं और किसी प्रकार की आवश्यकीय विलासीय द्रव्यों का अभाव है, उधर काशी के मुख्य मुख्य राजपथों पर यथा मैदागिन से गोदौलिया तक, बिजली के लम्पों से प्रति रात्रि आधी रात दिवाली मची रहती है और हलवाइयों की दूकानों पर तो दो बजे रात तक और दूकानों में सब प्रकार का माल लदा हुआ है। क्रयिकों, खरीददारों की भीड़ उनके सामने भरी है और बिक्री खटाखट हो रही है और हलवाइयों से जब चाहो तब, बिना 'नोटिस' दिये मनों, मिठाइयां और नमकीन उम्दा से उम्दा खरीद लो, कण्ट्रोल और राशनिंग के रहते भी !

× × ×

ब्रिटेन की नकल क्यों ?

ब्रिटेन की पार्लमेंट की अनुकृति, नकल यहां के मन्त्री महाशय प्रतिपद करते हैं, यहां तक कि 'हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा बनावेंगे' का डंका बजाते हुए भी 'स्पीकर' शब्द वहां का ही यहां भी ज्यों का त्यों धर रखा है — किन्तु उस पार्लमेंट की जो नितान्त ग्रहणीय बात है उससे नितान्त विमुख हैं — वहां तो 'आपोजिशन के लीडर को कई वर्ष से दो सहस्र पौण्ड प्रायः तीस सहस्र रुपये वार्षिक देना आरम्भ किया है, जब प्रधान मन्त्री, 'लीडर आफ दी हाउस' को दस सहस्र पौंड देते हैं, इसलिए कि अपनी तकर्बों, बिलों, प्रस्तावित विधानों में और राजनीतिक आर्थिक सामाजिक उपायों (पोलिटिकल ईकोनामिकल-सोशल मेजर्स) में जो दोष हो वह प्रतिपक्षी दिखा दे (क्योंकि स्वाभाविक बात है कि मनुष्य अपने दोष नहीं देख सकता है) तो गुण दोष पर अच्छी रीति से धर्म परिषद् में विचार होकर वही विधान, वही उपाय निश्चय किया जाय जो प्रजा का अधिकतम हितकर हो। यहां क्या हो रहा है ? सावधान ! 'कांग्रेसी मन्त्रियों की कारगुजारियों के विरुद्ध मुंह मत खोलो' नहीं तो दलीय अनुशासन' 'पार्टी डिसिप्लिन' का दण्ड दिया जायगा या कांग्रेस से निकाल ही दिये जाओगे ?' — निकाल देंगे तो हे बुद्धिमानों ! हानि किसकी होगी ? उसकी या तुम्हारी ही ?

[शेष पृष्ठ २४ पर]

कानून निर्माताओं से

हिन्दू महिलाओं पर दया कीजिये

[श्रीमती शान्ताकुमारी]

श्रीमती हंसा मेहता ने पिछले मास महिला संबंधी नये बिलों के सम्बन्ध में कुछ विचार प्रकट किये हैं इनमें कुछ अंग ऐसे हैं, जिनका परिणाम भयंकर निकलेगा। अभी तो यह बिलों के रूप में पेश हुए हैं और फिर कानून बन जायेंगे। श्रीमती हंसा मेहता का विचार है कि तलाक का कानून लागू होना चाहिए। उनका यह विचार हेय है। भारतवर्ष में सदियों से परम्परा चली आ रही है कि विवाह एक अटूट बन्धन है, जिसे कोई भी शक्ति विच्छेद नहीं कर सकती। यूरोप आदि विदेशों में यह प्रथा है कि कुमार ने कहीं कुमारी को देख लिया और पसन्द कर लिया। कहीं क्लबों में, बाजारों में, सिनेमा में कहीं कोई सौन्दर्य की झलक मिल गई, बस गिरजे में शादी हो गई। जब तक बनी, निभाते रहे और बाद में पतिदेव पूर्व और श्रीमती जी पश्चिम में। विवाह उनके लिए धार्मिक बन्धन नहीं। वह तो एक साथी ढूंढते हैं और साथी कभी बदला जा सकता है। भारत में ठीक इसके विपरीत कार्य होता है। भारत की ललनायें साथी नहीं, एक देवता या परमेश्वर के रूप में पति की उपासना करती हैं। श्रीमती हंसा कुलशीला बधुओं या उन ग्रामीण भोली भाली बालिकाओं के हृदय को नहीं समझ सकती, जिन्हें अपने धर्म पर श्रद्धा है, विश्वास है। उन्हें पथ भ्रष्ट करना कहां का न्याय होगा। जिन्हें तलाक का अर्थ भी पता नहीं, वह लज्जाशील कुल बधुएं अदालत में खड़ी होकर तलाक दिया करेंगी। भारतीय स्वराज्य का अर्थ देश को एक नया पश्चिमी राज्य बनाना नहीं होना चाहिए। मैं जानती हूं कि कुछ समय से महिलायें भी पुरुषों से आजादी का राग अलाप रही हैं और वह पददलित न रह कर शिक्षित समाज में पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर चलना चाहती हैं, परन्तु पहले अपनी ओर देखो, अपने को इस काबिल बना लो फिर आजाद होने का प्रयत्न करना। मेरा अभिप्राय चार दिवारी में आपको बन्द करने का नहीं है। परन्तु मैं यह अवश्य कहना चाहती हूं कि आज की स्त्री शिक्षा उन्हें पति भ्रष्ट कर रही है। शिक्षित स्त्रियों को चाहिए कि वे अपने पर संयम व नियन्त्रण रक्खें, उन्मुक्त प्रेम पथ को तिलांजलि दे दें अपने सुधार का आदर्श भारतीय संस्कृति रखें।

अभी तो स्वतन्त्र भारत दुनिया के झगड़ों से भी फुर्सत नहीं पा रहा। तलाक बिल के कानून बनते ही अदालतों में नये झगड़ों में फंस जायगा। तलाक लेने देने में हमारे न्यायालयों का पर्याप्त समय व शक्ति व्यय हो जायंगे। श्रीमती हंसा को तो मालूम होगा कि आजकल के नवयुवक विलासिता के पुतले बने हुए हैं, उनके लिए तो तलाक एक खेल बन जायगा। जहां पर दो या चार पश्चिमीय सभ्यता में रंगी हुई अपटूडेट पुजारिनें तलाक देने को उद्यत होंगी, वहां पर शत प्रतिशत नये युग के लाल भी अपनी मनोकामना की शान्ति के लिए तलाक देने के इच्छुक होंगे। गृहस्थ धर्म रहेगा ही नहीं बात बात पर तलाक देने का डर दिया जायगा। क्या जीवन होगा उस युग के प्राणियों का? तलाक देना और लेना। जिन औरतों को तलाक दिया जायगा, उनका जीवन तथा उनकी सन्तान का किस प्रकार बीतेगा। क्या वह अपना आचरण शुद्ध रख सकेंगी? कदापि नहीं। क्या हमारे नये स्मृतिकार इस बिल पर गम्भीर दृष्टि से पुनः विचार करेंगे?

क्या आप भी अपनी भौंहें पतली करना चाहती हैं?

नारी के सौंदर्य निखारन में नेत्रों का एक विशिष्ट स्थान है। और भारतीय शृङ्गार प्रसाधना में भौंहों का खास स्थान है। किंतु पाश्चात्य संसार में जिस तरह नारी के केशों को काट छांट कर बहुत कुछ उसे शृङ्खला रूप दे डाला, वैसी ही उसकी दृष्टि अब भौंहों पर भी गयी है। पहले की तरह घनी काली भ्रूपंक्ति आज अशोभनीय लगने लगी है और पाश्चात्य नारियों को प्रायः बाल समान पतली भ्रूपंक्ति बनाये देखा जाता है। पश्चिम की नकल करने वाली भारतीय स्त्रियां भी उसमें भला कैसे पीछे रह सकतीं थीं। लेकिन वे भूल जाती हैं कि भौंहों को इस तरह कृश करने की प्रणाली भारतीय सौंदर्यकला की दृष्टि से तो अशोभनीय लगती ही है, स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक भी है। डाक्टरों का मत है कि भौंहें नेत्रों की रक्षा पांति है, पलकें यदि भीतरी बचाव की पांति है, तो भौंहें बाहरी रक्षा पांति है और इस पांति को नष्ट करने का अर्थ है नेत्र के शत्रु को भीतर प्रवेश करने के अवरोध को जानबूझ कर नष्ट कर देना।

श्रीनगर में श्रीमती फ्रोडावेदी श्रीमती शेख अब्दुल्ला से काश्मीर की स्थिति समझ रही हैं।

समाज सुधार की रूपरेखा

(बसन्तलाल जी गुप्त)

कई समाज सुधार प्रेमियों ने अपने यहां सुधारों को क्रियात्मक रूप देने के लिये सामाजिक सुधारों की रूपरेखा की मांग की है।

समाज में समयानुकूल सामाजिक प्रगति और परिवर्तन की अत्यन्त आवश्यकता को महसूस करते हुए सुधार प्रेमियों से अनुरोध है कि निम्नलिखित आवश्यक सुधार और परिवर्तन अवश्य किये जांय—

(१) समाज से पर्दा प्रथा उठा दी जाय। (२) बालक बालिकाओं की उच्च शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाय। (३) प्रौढ़ स्त्रियों की शिक्षा का प्रबंध किया जाय। (४) विवाहों में निम्नलिखित सुधार काम में लाये जाय—

(क) विवाह के पहले वर वधू की स्वीकृति ले लेनी चाहिये। (ख) वर वधू की अवस्था क्रमशः १८ और १४ से कम न होनी चाहिये। (ग) बाहर जाने वाली बारात में २१ से अधिक आदमी महिलाओं, छोटे बच्चों तथा नौकरों को छोड़ कर न हों। (घ) जब तक विवाह पद्धति में सुधार न हो जाय, तब तक प्राचीन पद्धति से ही विवाह संस्कार किये जाय। (ङ) विवाह के समय वधू को पर्दा घूंघट न कराया जाय। (च) विवाह के पश्चात् उभय पक्षों का सम्मिलित प्रीतिभोज किया जा सकता है। (छ) दहेज स्वरूप कुछ भी न लिया जाय। (ज) बाहर के विवाह से बारात लौटने पर वर पक्ष मित्रों को सपत्नीक जलपान करा सकते हैं और उसी अवसर पर वर वधू बड़ों का आशीर्वाद ग्रहण करें। (१) बेजोड़ विवाह न किये जांय। (२) विधवा विवाहों की रुकावटें दूर की जांय। (३) अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन दिया जाय। (४) नारी जाति की उन्नति के लिये उनको आर्थिक समानाधिकार दिया जाय।

सोवियत स्त्रियों को तगमे

मोर्दोविया प्रजातन्त्र में हाल में कई औरतें अच्छे अच्छे पदों पर रखी गई हैं। ३००० से ज्यादा वहां के सोवियतों की प्रतिनिधि चुनी गयी हैं एक हजार से ज्यादा जिला और गांव सोवियतों की अध्यक्षाएं, कम्यूनिस्ट पार्टी की जिला कमेटियों की सेक्रेटरी, पंचायती खेतों की अध्यक्षाएं आदि हैं। १५७ को अच्छी फसल काटने के लिए तगमे और सार्टीफिकेट मिले हैं। पंचायती खेती करने वाली ओलगा श्चेम्याकिना को वीर समाजवादी मजदूरन की पदवी मिली है। ५००० से ज्यादा स्त्रियां डाक्टर और नर्से हैं। स्कूलों और क्लबों में भी औरतें काम करती हैं एक लाख लड़कियां स्कूलों में पढ़ती हैं। मोर्दोविया की ३८ स्त्रियां सोवियत यूनियन की सब से बड़ी असेम्बली की सदस्याएं हैं।

—पिछले दिनों खाद्य मन्त्रालय के एक असिस्टेंट श्री एन. वी. रमन पर गोली चलाने के अपराध में दक्षिण भारत की शकुन्तला नामक एक महिला को गिरफ्तार किया गया था। गत शनिवार को सेशन जज क्यू लिट की अदालत में बयान देते हुवे अभियुक्त शकुन्तला ने कहा — मेरा उद्देश्य किसी को मारने का नहीं था। मैं उस बुराई की ओर संसार का ध्यान दिलाना चाहती थी जो रमन ने मेरे साथ की। मैं चाहती थी कि संसार वास्तविक तथ्य को समझे और भविष्य में कोई भी व्यक्ति मेरा अन्य बहिनों का इस प्रकार अपमान करने का दुस्साहस न कर सके। श्री एन. वी. रमन ने अभियुक्त के आरोपों का खण्डन किया।

नौशेरा का विजेता

[श्री हरिश्चन्द्र]

ब्रिगेडियर उस्मान सैण्डहर्स्ट में सैनिक शिक्षा प्राप्त एक ३५ वर्षीय सेनाधिकारी हैं। जब से इस युवक ने होश सम्भाला है और अच्छे-बुरे को पहिचानना आरम्भ किया है, धर्मान्ध सम्प्रदाय में जन्म लेकर भी उसका दृष्टिकोण सदैव राष्ट्रवादी रहा है। जब कभी वह रणक्षेत्र में नहीं होते, उन्हें चर्खा चलाने में बड़ा आनन्द आता है। काश्मीर के अग्रिम मोर्चों पर स्थित भारतीय सेना के प्रधान शिविर में उन्होंने अपने कमरे में महात्मा गांधी का एक छोटा किन्तु सुन्दर सा चित्र लटका रखा है। गांधी जी के समान ही उन्हें मदिरा-पान से घृणा है, बकर-ईद को धार्मिक त्यौहार के रूप में मनाने वाले सम्प्रदाय का सदस्य होते हुए भी वह शाकाहारी हैं और उच्च समाज में विचरण करते हुए भी उन्हें आज तक किसी ने सिगरेट पीते नहीं देखा। भारतीय सेना के लिए के उनकी उपयोगिता इसी बात से प्रकट होती है कि पाकिस्तान द्वारा गठित 'आजाद काश्मीर'—सरकार ने उन्हें जीवित या मृत पकड़ कर लाने वाले को ५०,००० रुपया पुरस्कार देने की घोषणा की है।

पन्द्रह अगस्त १९४७ से पूर्व भारतीय सेना में ऐसी परम्परा का न होना स्वाभाविक ही था, जिससे स्वातन्त्र्य-प्रिय भारतीयों को उत्साह अथवा प्रेरणा मिल सके। दोनों विश्व-युद्धों में वीरता एवं अद्भुत साहस प्रदर्शित करने पर अनेक भारतीय सैनिकों को विक्टोरिया क्रास के तमगे मिले, किन्तु उनका भी भारत की इन वीर जातियों पर वह प्रभाव नहीं पड़ा, जो द्वितीय विश्व-युद्ध में अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लड़ने वाले सोवियत युवकों पर कामरेड स्टालिन के आह्वान मात्र का पड़ा था। देशभक्ति से पूर्ण हमारे दिलों में इस समाचार से कैसे अभिमान उत्पन्न होता कि जमादार रामदास ने फ्लैण्डर्स में पन्द्रह जर्मनों को मार डाला है अथवा हवलदार मुहम्मद यासीन ने मुसलमान होते हुए भी मेसोपोटामिया के पवित्र नगर पर गोले फेंके हैं अथवा नायक सेवकसिंह ने बर्मा युद्ध में बहुत से जापानियों को मार कर वीरगति पायी है।

ब्रिटिश शासन-काल में भारतीय सेना के अफसरों को देहरादून और सैण्डहर्स्ट में जिस प्रकार की शिक्षा दी गई, उसका यह स्वाभाविक परिणाम था कि ये अफसर अपने भारतीय होने पर लज्जा अनुभव करते और उन्हें साहबी ठाठ से रहना अधिक अच्छा लगता। भारतीय जनता और देशभक्तों से वे अधिकाधिक दूर होते जाते थे — अपनी आजादी के लिए तड़पते हुए देशभक्तों पर गोली चलाने में उन्हें तनिक संकोच न होता था।

फिर भी, अपवाद सर्वत्र होते हैं। देशभक्ति की भावनाओं से युक्त कुछ थोड़े से युवक अफसरी के चुनाव में सफल रहे और सेना में प्रविष्ट हो गये। आज वे स्वतंत्र भारत की सेना के स्तम्भ बने हुए हैं। इन्हीं में से एक ब्रिगेडियर उस्मान भी हैं, जिन्हें काश्मीर-युद्ध के परिणामस्वरूप आज भारत का बच्चा-बच्चा 'नौशेरा के विजेता' के रूप में स्मरण करता है।

ब्रिगेडियर उस्मान उन व्यक्तियों में से हैं, जिनके जीवन के बारे में साधारणतया सही कल्पना नहीं की जा सकती। सैण्डहर्स्ट में सैनिक शिक्षा प्राप्त करने पर भी वह जब कभी मोर्चे से कुछ दूर होते हैं, उन्हें खद्दर का कुर्ता और पायजामा पहने, चर्खा कातते अथवा महात्मा गांधी की 'सत्य के प्रयोग' नामक पुस्तक पढ़ते देखा जा सकता है। महात्मा गांधी और उनके आदर्शों के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा है। काश्मीर के अग्रिम मोर्चों पर स्थित भारतीय सेना के प्रधान शिविर में उन्होंने अपने कमरे में महात्मा गांधी का एक चित्र लटका रखा है। वह केवल मदिरा नहीं पीते (सम्भवतः भारतीय सेना में मद्य पान न करने वाले वही एकमात्र उच्च भारतीय अफसर हैं) पूर्णतया शाकाहारी भी हैं और सिगरेट को आज तक उन्होंने अपने होठों से कभी छुआ तक नहीं।

भारतीय संघ की सेना में जो मुसलमान अफसर हैं, उनमें आप का प्रमुखतम स्थान है और स्वतन्त्र भारत की प्रथम महान् सैनिक विजय को प्राप्त करने तथा काश्मीर में पाकिस्तान की प्रेरणा एवं पाकिस्तान के अड्डों से धावा करने वालों को करारी मात देने का श्रेय भी आप को ही है। ऐसी अवस्था में, जब भारतीय जनता यह सुनती है कि आक्रान्ताओं की तथाकथित 'आजाद काश्मीर' सरकार ने उन्हें जीवित अथवा मृत पकड़ कर लाने वाले को ५०,००० रु० पुरस्कार देने की घोषणा की है, तो किसी को आश्चर्य नहीं होता।

इस ३५ वर्षीय ब्रिगेडियर के जीवन पर दृष्टिगत करने से पता चलता है कि एक मनुष्य अपने व्यक्तित्व का क्रमशः विकास करके किस प्रकार अपने आपको आकर्षक और जन-प्रिय बना सकता है। ब्रि० उस्मान का जन्म आजमगढ़ (युक्त-प्रांत) जिले के बीबीपुर नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था। जब वह बी० ए० में पढ़ते थे, वह न केवल एक बहुत अच्छे खिलाड़ी थे, राजनीति में भी खूब दिलचस्पी लेते थे और विश्वविद्यालय की यूनियन की ओर से होने वाले वादविवादों में प्रायः भाग लेते थे।

बाद में, भारत सरकार के तत्कालीन गृह मंत्री सर हेरी हेग से अपने पिता की मित्रता होने के कारण वह सैण्डहर्स्ट के सैनिक शिक्षणालय में प्रविष्ट होने में सफल हो गये। इस अंग्रेजी सैनिक शिक्षणालय का वातावरण कुछ इस प्रकार का है कि वहां शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रायः सभी भारतीय अफसर पूरी तरह से अंग्रेजियत में रंग जाते हैं और उन्हें भारतीय आचार-विचार, भारतीय, रहन सहन और भारतीय सभ्यता व संस्कृति से घृणा हो उठती है, किन्तु उस्मान ने अपने को इस वातावरण से बिलकुल अछूता रखा और उनमें मानव के प्रति दया के भाव और देशभक्ति की भावनायें यथापूर्व कायम रहीं। सेना में उनका जीवन बड़ा शानदार रहा और वह अपनी योग्यता के बल पर अपने पिता काजी मुहम्मद फारुख (जो आरम्भ में ६ रु० मासिक पर पुलिस कान्सटेबिल होकर बाद में डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट के पद पर जा पहुंचे थे) की भान्ति ही जल्दी-जल्दी पद-वृद्धि करते गये। युद्ध के दिनों में उन्होंने बर्मा में एक रेजीमेंट का नेतृत्व किया और बाद में इंगलैंड में छाता फौज की शिक्षा प्राप्त करके एक ब्रिगेड के कमाण्डर बन गये। इस ब्रिगेड ने युद्ध में अनेक सफलताएं प्राप्त कीं और सैनिक क्षेत्रों में उस्मान इतने विख्यात और लोकप्रिय हो गये कि मलाया की मुक्ति के बाद अंग्रेजों ने उन्हें वहां का अस्थायी सैनिक गवर्नर बना दिया।

तथापि, एक योद्धा सिपाही होते हुए भी, उन्हें सबसे अधिक आनन्द मानव-जाति की सेवा करने में आता है। उनके जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं घटी हैं, जिन से उनकी उदार और भावुक प्रकृति का परिचय मिलता है। एक बार जब उनकी रेजीमेंट दक्षिण में तैनात थी, उस्मान (तब मेजर) अपनी जीप में सवार होकर एक गांव में से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक कुएं के आसपास कुछ भीड़ जमा है और एक बुढ़िया जोर-जोर से रो रही है। उसका बच्चा कुएं में गिर गया था और उसे डूबने से बचाने का कोई उपाय नहीं था। उस्मान ने तुरंत एक रस्सा लिया और उसकी सहायता से कुएं में उतर गये और उस बच्चे को मूर्छितावस्था में किन्तु जीवित ही ऊपर निकाल लाये। इसी प्रकार एक बार जब रात के समय भोजन कर रहे थे कि कुछ गांव वाले आतंक-ग्रस्त होकर उनके पास दौड़े आये। एक

[शेष पृष्ठ २० पर]

अन्तिम मिलन

(श्री देवीचंद जैन)

उस दिन की बात है, वह पथिक अपने पथ पर जा रहा था। मालूम नहीं कौन था वह! नंगे सिर, पांव में बूट, शरीर पर एक कुर्ता और एक धोती। वह कुछ चिन्तित सा जान पड़ता था। जब वह दो मील का सफर पार कर चुका तो सहसा एक कुटी के पास आकर रुक गया। अन्दर से आवाज आई, 'कौन?'

वह पथिक बोला, 'मैं ही तो हूं। दरवाजा खोलो, रानी!'

रानी ने दरवाजा खोल दिया। वह अन्दर गया। रानी ने पूछा — आज इतने चिंतित क्यों हो? क्या वह कार्य नहीं बन सका?'

पथिक ने कहा— रानी! सब व्यर्थ गया! कुछ नहीं हो सका। रामनिरंजन ने जवाब दे दिया।

रानी — क्या करूं? भगवान इस विपत्ति से छुटकारा दिलवाये। अच्छा, हाथ मुहं धोकर भोजन कर लो।

रानी ने पानी लाकर दिया। पथिक हाथ मुंह धोकर भोजन करने लगा। भोजन करते २ उसने कहा — रानी! श्यामसुन्दर के एक लड़का है। स्थानीय हाई स्कूल में पढ़ता है। देखूं, कल वहां भी चक्कर लगा आऊं।

रानी चिंतित होकर बोली, जैसी तुम्हारी इच्छा!'

दूसरे दिन पथिक फिर उसी पथ पर था। सवेरा होते न होते प्रभात की धुंधली छाया में ही वह पथ पर चल पड़ा। वह आज भी चिंतित था। वह चिन्ताग्रस्त होकर अपने पथ पर अग्रसर हो रहा था। उसने तीन मील का सफर पार किया, फिर भी उसकी यात्रा की मंजिल अभी तक पूर्ण नहीं हुई थी। आधे मील पर एक ग्राम था।

श्यामसुन्दर इस ग्राम के एक मध्यस्थ घराने के सज्जन हैं। उनका लड़का, कृष्णचन्द्र जो सोलह वर्ष का है, पास के ही शहर की हाई स्कूल में पढ़ता है। वह अपनी कक्षा में हरदम प्रथम रहा करता है। वह सब विद्यार्थियों में श्रेष्ठ है।

श्यामसुन्दर अपने घर की चौकी पर बैठ कर हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। आप पुराने खयालातों के आदमी हैं। कृष्णचन्द्र स्कूल चला गया था। वे हुक्के का कश लेते हुए अपने नौकर को डांट रहे थे। हुक्के के धुयें से अनगिनत बादलों का नया संसार रचा जा रहा था। इतने में बाहर से आवाज आई, 'श्यामसुन्दर शर्मा का मकान क्या यही है?'

वह आवाज पथिक की थी। श्यामसुन्दर अन्दर से बोले' 'यही है!' और दरवाजा खोल कर बाहर आये। पथिक शर्माजी के साथ भीतर गया। अन्दर जाकर शिष्टाचार के पश्चात् पथिक ने अपना मतलब कहा। श्यामसुन्दर बोले, "मगर कृष्ण की सगाई तो सेठ गोविन्दप्रसाद की लड़की कान्ता से होने वाली है। हम......"

श्यामसुन्दर बोल भी नहीं पाये थे कि पथिक घर से बाहर था। उस का सुन्दर चेहरा मलिन हो गया था। फिर भी वह उसी पथ पर बढ़ा जा रहा था। आज भोजन भी नहीं किया था। वह हांफ रहा था, फिर भी लम्बे २ डग बढ़ाये जा रहा था। उसने ज्यों त्यों कर एक मील का सफर पार किया। वह आगे बढ़ रहा था पर पांव पीछे हटने का प्रयत्न कर रहे थे। 'शहर भी अभी तक नहीं आया था, मगर' हिम्मत ने जवाब दे दिया था। सूर्य अस्ताचल का अरुण अचल पकड़ कर उसमें छिपने का प्रयत्न कर रहा था। धीरे धीरे सूर्य का प्रकाश क्षीण होने लगा। सूर्य भी पथिक की उदासी से ऊब कर शीघ्र ही हट जाना चाहता था। पथिक आगे बढ़ रहा था। सूर्य ने अपना मुंह अरुण अचल में छिपा लिया था। शशि ने भी आज अपना भव्य दर्शन नहीं दिया। अन्धकार ऐसा था मानो सहस्र अमावस्यायें गले मिल रही हों। पथिक फिर भी आगे आगे कदम बढ़ाते हुए जा रहा था, सहसा वह बैठ गया। थोड़ी देर तो वह बैठा रहा, पर थोड़ी देर बाद निद्रादेवी ने अपना आसन जमाना शुरू कर दिया। निद्रा इतनी गाढ़ी आई कि वह दूसरे दिन दस बजे उठा। उसका अंग-प्रत्यंग शिथिल हो रहा था। हाथ पैर टूट रहे थे। अंगड़ाई लेता हुआ वह उठा। पथिक फिर आगे बढ़ने लगा। वह धीरे-धीरे जा रहा था। रास्ते में एक ग्राम में उसने भोजन किया। वह शाम को ब्यालू के समय घर पहुंचा।

रानी ने दरवाजा खोल दिया। पथिक घर में आया। रानी ने उसे भोजन कराया, फिर पूछा — श्यामसुन्दर ने क्या जवाब दिया?

पथिक ने निराश होकर उत्तर दिया— जिस उत्तर की आशा की जा सकती थी।

रानी पथिक का भाव समझ गई। दोनों ने निद्रादेवी का चरण स्पर्श किया। प्रभात वेला में जब पथिक उठा तो देखा, सूर्य निकल चुका था। रानी ऊषा और यामिनी को नाश्ता करा रही थी।

पथिक फिर आज उसी पथ पर जा रहा था, जिस पथ पर वह कई बार जा चुका था। जो पथ उसके जीवन इतिहास के भीतरी से भीतरी पहलू को जानता था। जिस पथ पर उसने बालापन के सुहास्यमय दिन व्यतीत किये थे, जिस पथ पर होकर वह पास के शहर में पढ़ने जाया करता था, जिस पथ पर वह कई बार शाम को घूमने जाया करता था, जिस पथ पर वह अपनी नवल वधू रानी के साथ टहलने जाया करता था, उसी पथ पर वह आज चिन्तित सा जा रहा था। मालूम नहीं आज वह किस ओर जा रहा था। उसके मानस पटल पर भांति भांति के चित्रों का प्रदर्शन हो रहा था। उसके हृदय में एक द्वन्द युद्ध छिड़ा हुआ था। अचानक वह एक ग्राम के पास आकर रुक गया।

ग्राम के बाहर के उपवन के नल पर एक सुन्दर, सुगठित शरीर सम्पन्न युवक पानी पी रहा था। उम्र सोलह या सत्रह वर्ष की प्रतीत हो रही थी। पथिक उस युवक की तरफ देखने लगा। ज्यों ही वह युवक ग्राम में जाने लगा, पथिक भी उसके पीछे हो लिया। वह उसके पीछे पीछे जा रहा था। सहसा वह युवक एक सरल, सादी कुटिया के पास आकर रुक गया। उसने पुकारा — मां!

अन्दर से एक अस्सी वर्ष की वृद्धा निकली। उसके गालों में झुर्रियां पड़ गई थीं। बाल शुभ्र हो गये थे, कमर झुक गई थी, वह खांस भी रही थी, फिर भी उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह खांसते हुए बोली, 'बेटा! तू आ गया?'

युवक ने कहा — हां, मां!

और दोनों अन्दर हो लिए। पथिक भी उनके पीछे हो लिया। मां ज्योंही दरवाजा बन्द करने को मुड़ी तो उसने पथिक को देखा। वह सहम गई, फिर भी साहस हुई, अपने दुर्बल शरीर का पूर्ण जोश एकत्रित कर बोली—'तुम... कौन....यहां?'

पथिक की जबान बन्द हो गई, फिर भी धीरे से बोला, 'मा! मैं हूं! मुझे बचा लो।'

मां बोली, 'क्या?'

पथिक ने कहा—मां बहुत दिनों की बात है, मुझे मेले में एक नन्हीं सी बालिका मिली थी। अब तो वह नवयुवती हो गई है। नाम तो मालूम नहीं था, पर मैंने उसका नाम यामिनी रखा है। मुझे विश्वास है, तुम अपने पुत्र का पाणिग्रहण उसके साथ कर बहुत प्रसन्न होगी।

मा को न मालूम क्या हुआ जो वह रो पड़ी। रोते रोते खांसते हुए बोली, 'मंजूर है बेटा, पर पहले मेरा पुत्र उसे देखेगा अवश्य।'

पथिक उस दिन वहीं रहा। भोजन भी वहीं किया। पूछने से ज्ञात हुआ कि युवक का नाम प्रभात कुमार है। पथिक ने कहा—मेरे भी एक पुत्र है, तुम्हारी ही उम्र का, नाम है उसका उषाकांत।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पतंग

[श्री प्रतापसिंह एम० एस० सी० बी० टी०]

★

पतंग, इस नन्हे से ३॥ टांग के शब्द में न जाने क्या-क्या भरा हुआ है। कवियों ने पतंग को लेकर खूब पतंग सी उड़ाई है। कवियों ने दुनियां को परवाना बना डाला है। परन्तु मेरी राय में तो प्रेमी हर घड़ी पतंग ही बना रहता है। ज़रा हवा लगी तो बस फाड़कर फुदक गये, तनिक झलक पाई कि अदा से न्यौछावर हो गया। इसी पतंग के लिए एक सज्जन कहते हैं कि—

> दिल मेरा पतंग होता,
> उड़ाते गम की डोरी से,
> लगा कर इश्क का मांझा
> पतंग तेरा कटा देते।

फिर क्या मजाल थी कि किसी खां की पतंग ठहरने पाती।

पतंग (सूर्य) छिप जाने पर उल्लुओं की बन आती है, चमगादड़ भी पर फड़काने लगते हैं और पतंग (परवाना) को भी अपने दीपक पर बलि होने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है, क्योंकि 'ज़रा शाम होने दो हम रंग लायेंगे' गुनगुनाता हुआ अपना सर्वस्व उसी पर चढ़ा देता है। वैज्ञानिक लोग प्रकाश तथा वर्षा का हेतु पतंग को ही बताते हैं क्योंकि अगर पतंग न हो तो दिन रात न हो और संसार अन्धकारमय हो जाय और गर्मी न मिलने से बादल न बनें। चेरापूंजी भी जैसलमेर की तरह एक एक बूंद को तरसती रहे। उसी की गर्मी से बचने के लिए अरब वाले नकाब पहनते हैं और हिमालय भी अपनी हिम रूपी नकाब ज़रा सी हटा लेता है तो हमारी गंगा यमुना को गर्मी में पानी देकर सूखने नहीं देता है और इसी प्रकार उसकी कृपा कटाक्ष की कुछ झलक हम भी पा लेते हैं, वरना हम भी दीदार को तरसते रहते।

निःस्वार्थ जीवन बलिदान करने का उच्च आदर्श पतंग ही से सीखा जा सकता है, जो दीवाने की तरह अपने दीपक का चक्कर लगाया करता है और गुनगुनाता जाता है कि—

> शमा पर देखिये जलते हुए परवाने को,
> ऐसे होते हैं जो होते हैं मुहब्बत वाले।

दीपक का प्रेमी पतंग और शमा का आशिक परवाना क्या भगवान ने जोड़ी बनाई है। इनको कोई भी अलग नहीं कर सकता है। जहां एक का नाम वहां दूसरे का ज़िक्र आ ही जाता है। संसारी प्रेमी तो चिराग में तेल कम होते देखकर टरकने लगते हैं, जैसा कि एक साहब फरमाते हैं कि—

> जलाते तुम हो आशिक,
> किनारा करते जाते हैं।

लेकिन सच्चा प्रेमी तो जल-जल कर भी यह कहते हैं कि—

> परवाह नहीं जल जायेंगे,
> महफिल में रहेंगे।
> तुम शमा बनो यार,
> हम परवाना बनेंगे।

परन्तु इस आशिके सादिक को भी दुनिया में लालच देने वालों की कमी नहीं है, और अनेकों इस गरीब का पथ भ्रष्ट करने पर तुले रहते हैं और अपनी तरफ खींचने का कोई न कोई रास्ता निकाल लेते हैं। जैसा कि—

> रुखे रोशन के आगे शमा
> रख कर वह यह फरमाते हैं,
> इधर आता है या देखें,
> उधर जाता है परवाना।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि प्रकाश पतंग पर पड़ते ही एक प्रकार की प्रबल भावना (सैंसेशन) पैदा कर देता है, फलस्वरूप पतंग प्रकाश की तरफ भागता है, पास आने पर उसी से झुलस कर गिर पड़ता है, लेकिन फिर उठता है और दौड़ता है उसी दीपक की तरफ। यह भावना इतनी प्रबल होती है कि पतंग दीपक के लिए अन्धा हो जाता है, तन बदन की सुध भूल जाता है। जल-जल कर भी कुछ नहीं सीखता कारण यह है कि—

> नासहा मत कर नसीहत,
> क्यों मुझे समझाए है।
> नेकी बद सूझे नहीं,
> जब दिल कहीं लगजाए है

दीपक से बार-बार टकराता है। झुलस जाता है, पर जब भुन जाते हैं और श्रीमती चौहान की तरह 'दीपक मय कर डाला, जब पतंग ने जीवन' तभी उसको आनन्द प्राप्त होता है। एक दूसरे कविवर कहते हैं कि—

> अहमद दाहे प्रेम के,
> बूझि,बूझि सुलगाहि,
> जलते ये फिर फिर बुझे,
> बुझे वे सुलगहि नाहि।

दीपक के बुझने पर पतंग कटी पतंग की तरह भटकते फिरते हैं, दूसरी शमा की खोज में, और गुनगुनाते जाते हैं कि—

> जाते हो तो जाइए,
> फिर-फिर न देखिये।
> हम भी किसी को ढूंढ लेंगे
> दिल लगाने के लिए।

लेकिन भारत ललनाएं अपने स्वामी के शव पर भी धधकती हुई चिता में कूद कर अपने जीवन की आहुति दे देती हैं। क्या विश्व इसका दूसरा उदाहरण उपस्थित कर सकता है?

पतंग के अनेकों रूप और रंग होते हैं, लेकिन आकार सब का एकसा होता है और होते हैं सब कागज के ही। तमाशा तथा समय काटने के लिए उड़ाये जाते हैं। परन्तु न्यूटन महाशय ने इसी से आकाशीय विद्युत् को मकानों पर गिरने से बचाने का उपाय ढूंढ निकाला था जो वर्तमान संसार में गगनचुंबी अट्टालिकाओं पर शिव त्रिशूल के रूप में दिखाई पड़ता है।

भारत का चित्र पतंगाकार बताया जाता है तो क्या यह भारत में पतंग उड़ाने की प्राचीन प्रथा को सूचित करता है पर इतना अवश्य है कि पतंग बाजों की गीध दृष्टि हो जाती है। पतंग बहु-रूपिया भी होता है, कहीं इसको कनकौआ कहीं गुड्डी, और न जाने इसको लोग किस-किस नाम से पुकारते हैं। ऊपर पतंग, शलभ, सूर्य्य, परवाना तथा पतंग के अर्थ में आया है। हिन्दी भाषा की यह भी एक बड़ी उत्तमता है।

संसार में पतंग से अधिक त्यागी शायद दूसरा कोई ही हो परन्तु इसको तंग करने वाले तथा सताने वालों की भी कमी नहीं है। फानूस भी जब इसकी आशा में बाधक होते हैं तो यह भी गुन-गुना कर उसको कोसता है कि—

> फानूस को जो परवानों
> ने देखा तो यह बोले,
> क्यों हमको जलाते हो
> कि जलने नहीं देते॥

दीपक का मान इसी पतंग के कारण होता है क्यों कि इसी के बलिदान की महिमागान में दीपक का भी नाम आ जाता है, वरना शमा को कौन पूछता क्योंकि—

> खुश किस्मती शमा की
> जो महफिल में आ जली
> नजराना लेकर आया है,
> परवाना जिन्दगी का॥

परवाने का अच्छे अच्छे भी आदर करते हैं, क्योंकि अगर आप किसी का परवाना (Introductory letter) साथ लेकर जायें तो खातिर भी होती है, और काम भी जल्दी बन जाता है और इसी परवाने से मातृभूमि पर बलिदान होने का भी आदर्श सीखा जा सकता है क्योंकि—

> खाके परवाने से,
> आती है सदाए पैहम।
> जिन्दगी है गमे दिलवर
> में फना हो जाना॥

शमा और परवाना, दीपक और पतंग की सुन्दर जोड़ी है। एक का जलना दूसरा नहीं देख सकता शमा को जलता देख कर परवाना भी उसी में जल जाना चाहता है, क्योंकि सच है कि—

> मुहब्बत का जब मजा,
> है कि दोनों हों बेकरार।
> दोनों तरफ हो आग,
> बराबर आग लगी हुई।

परवाने हरेक जगह पहुच जाते हैं पर चाहिए कोई शमा और वह भी जगमगाती हुई, फिर इनकी क्या कमी है, हर समय चक्कर काटते ही दिखाई देते हैं, शमा हर जगह जलती है और परवाने भी, परन्तु महफिल का अन्तर है क्योंकि आपकी महफिल में एक तीसरी चीज को भी जलना पड़ता है, जैसा एक साहब कहते हैं—

> इस महफिल और उस
> महफिल में फर्क है इतना
> यहां चिराग वहां दिल,
> जलाए जाते हैं॥

जलना तो संसार में किसी को भी अच्छा नहीं लगता है परन्तु खुशी में सभी दीपक जलाते है, लेकिन एक साहब तो फरमाते हैं कि—

> शबे विसाल है बुझादो,
> इन चिरागों को।
> खुशी की महफिल में,
> क्या काम जलने वालों का

लेकिन परवाना इसकी क्या चिन्ता करता है, वह तो इसी में खुश है कि जरा लौ और तेज करदी जाय क्योंकि—

> कहा पतग ने दौरे
> शमा पे चढ़कर।
> अजब मजा है जो मरले
> किसी के सर चढ़कर॥

कदाचित सुभाष और गान्धी जी ने इसी से कुछ सीखा है।

इंग्लैण्ड का कवि जोन मैसफील्ड

[श्री देवर्षि सनाढ्य साहित्य रत्न एम० ए०]

जीवन की संक्षिप्त रूप-रेखा

इंगलैंड के वर्तमान राजकवि श्री जोन मैसफील्ड का जन्म लेडबरी नगर में सन् १८७८ में हुआ था। जीवन का उषः काल उन्होंने एक नाविक के रूप में अनन्त ऊर्मिमाला सकुल समुद्रों के तट पर व्यतीत किया। इनके माता पिता दुर्भाग्य से इन्हें बचपन में ही अनाथ कर उस पार चले गये थे। फलतः इनका लालन-पालन इनकी एक चाची के द्वारा हुआ। प्रारम्भिक स्कूल की शिक्षा समाप्त होने पर मैसफील्ड एक व्यापारी जहाज पर अपरेंटिस नाविक हो गये। सन् १८९५ में ये अमेरिका चले गये। होटलों और सरायों में काम करते हुए वहां इनका जीवन कठिनाइयों के बीच बीता। अपने विशाल प्रयत्न और कठिन परिश्रममय जीवन से इन्होंने भविष्य के लिए बहुत कुछ सीखा, इकट्ठा किया। समुद्र और समुद्र यात्रा के प्रति प्रेम इसका ही परिणाम है।

अमेरिका से लौटने पर इंगलैण्ड में इन्होंने पत्रकार का व्यवसाय आरम्भ किया और कविताएं तथा नाटक लिखना आरम्भ कर दिया। इनकी रचनाओं ने प्रकाशकों और पाठकों को खूब आकर्षित किया और इस प्रकार जोन मैसफील्ड आधुनिक साहित्य के उदीयमान कलाकार गिने जाने लगे। सन् १९३० में तत्कालीन राजकवि श्री राबर्ट ब्रिजेज की मृत्यु हो गई और जोन मैसफील्ड को यह आदरणीय पद प्राप्त हुआ। १९२५ में इन्हें 'योग्यता का प्रमाण-पत्र' दिया गया। वर्तमान अंग्रेजी साहित्य में श्री जोन मैसफील्ड का एक विशेष प्रभाव है।

मैसफील्ड का साहित्य

श्री जोन मैसफील्ड की रचनाएं विभिन्न और बहुत अधिक हैं, वे कवि हैं, उपन्यासकार हैं, नाट्य-लेखक हैं और समालोचक हैं, किन्तु उनके गीतों ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। उनकी प्रकाशित रचनाओं में विशेष प्रसिद्ध कुछ पुस्तकों के नाम यहां दिये जाते हैं।

(१) साल्ट वाटर बैलेड्स, १९०२ (२) दी एवर लास्टिंग मर्सी १९११ (इस संग्रह में कवि की श्रेष्ठतम वर्णनात्मक कविताएं हैं), (३) रीनार्ड दी फाक्स १९१९, (४) राइटराएल १९२०, (५) दी ट्रेजेडी आफ नन और (६) पाम्पी दी ग्रेट (नाटक), (७) मल्टीच्यूड एण्ड सालीच्यूड तथा (८) लास्ट इंडीवर (उपन्यास), (९) एटोपौंलाइन मस्टर १९०७ (समुद्री कहानियों का संग्रह) और (१०) ए स्टडी आफ शेक्सपियर (समालोचना)।

मैसफील्ड के विचार और उनकी शैली

यद्यपि राजकवि का प्रारंभिक जीवन गरीबी और कठिनाइयों के बीच बीता परन्तु इससे वे न तो निराशा के कवि हुए और न अध्यात्मवाद ने ही उनके साहित्य पर अधिकार जमाया, वे मुख्यतः जनता के कवि हैं, जनतंत्री विचारधारा के हामी हैं। निर्धनता की शक्ति एवं निम्न श्रेणी के जनों के प्रति सहानुभूति की जो भावनाएं मैसफील्ड के साहित्य में हैं, वे किसी अन्य की रचनाओं में नहीं। उनके जीवन का उषः काल निम्न श्रेणी के जनों के बीच ही प्रभात में बदला था और इसी कारण जब उनका

श्री जोन मैसफील्ड

जीवन मार्तण्ड मध्याह्न के आकाश में आया तब प्रभात का एकत्रित रागभाव पूर्ण रूप में उड़ेलने लगा कि संसार चौंधिया गया।

कवि ने जीवन को जैसा देखा है, वैसा ही कहने का प्रयत्न किया है, इसी से उनकी भाषा स्वाभाविक है, भावनाएं शक्तिशाली हैं और वातावरण भावमय है।

समुद्र और उनके जीवन से मैसफील्ड का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अतः समुद्री जीवन से सम्बन्ध रखने वाली रचनाओं में मैसफील्ड की रचना शक्ति का चरम विकास हुआ है। "साल्ट वाटर बैलेड" नामक संग्रह की कविता "सी फीवर" में कवि और समुद्रयात्रा के प्रति महान् उत्सुक है, वह उत्सुकता एक ज्वर के समान है जो सागर की उत्ताल फेनिल तरंगों के बीच एकाकी नौका को खेते हुए ह्वेल मछली के दर्शन किए बिना नहीं दूर होगा। प्रस्तुत कविता में कवि ने रहस्यमय समुद्र के समस्त रहस्यों को एक आत्मचरित्र के से रूप में स्पष्ट रख दिया है। कवि की समस्त सम्वेदना और शक्ति इस कविता में जैसे उमड़ कर आ गई है, यथार्थ और रोमांस का अद्भुत सम्मिश्रण इस कविता में पाया जाता है, जो मैसफील्ड की अपनी विशेषता है। समुद्र की विशाल फेनिल तरंग राशि के यथार्थ वर्णन के साथ साथ उसका सौन्दर्य अनोखे अनुभव और विचित्र असंतोष की रोमांटिक कल्पना बड़ी ही सजीव है। समुद्र के घनघोर और विनाशकारी रव के प्रति कवि का आकर्षण सचमुच बड़ा ही जोशीला है, कवि की इच्छा है —

"मैं समुद्र तक पुनः अवश्य जाऊं, जहां एकांत समुद्र हो और एकाकी आकाश।"

जोन मैसफील्ड के रूप में समुद्र ने अपना एक महान् गायक पाया है, वे यथार्थवाद के सच्चे कवि हैं।

राजकवि ने १९३१ में दिये एक अपने एक व्याख्यान में कविता की निम्न परिभाषा की थी —

"मैं विश्वास करता हूं कि श्रेष्ठ कविता संसार के जीवन, व्यक्ति, शक्ति और उसके निगमों का पूर्ण प्रकटीकरण है। कविता अनुभूति से जन्म लेती है, अतः जो जीवन कविता का उद्बोधक बनता है, वह जीवन आत्मा की उच्च दशा, महान् प्रेम, उदारता, प्रसन्न, महान् पाप, महान् क्रोध और पतन आदि के अनुभवों से पूर्ण होता है।

भारत का लक्ष्य : १ करोड़ टन अन्न का अधिक उत्पादन

★

'सदा बनी रहने वाली अन्न की कमी, दुर्भिक्ष तथा इस समय आयात पर देश की निर्भरता को दूर करने के लिये यथाशीघ्र प्रतिवर्ष देश में एक करोड़ टन खाद्यान्न और उत्पन्न करना चाहिये।

निकट भविष्य में व्यापक रूप से अन्नोत्पादन के लिये कई बहु उद्देशीय कार्य बड़े पैमाने पर होने आवश्यक हैं जिनमें सिंचाई की व्यवस्था, अधिक पानी, खाद, और अच्छे बीजों द्वारा उत्पादन की वृद्धि तथा कृषि योग्य परती भूमियों का विकास आदि सम्मिलित है।

इस योजना को क्रियान्वित करने के लिये यह आवश्यक है कि ५० करोड़ की पूंजी से एक कृषिसम्बन्धी केन्द्रीय बोर्ड, कृषि के प्रान्तीय बोर्ड तथा एक केन्द्रीय भूमि सुधार संस्था की स्थापना होनी चाहिए।'

खाद्यान्ननीति समिति की अन्तिम रिपोर्ट की मुख्य सिफारिशें ये हैं, जो गत २२ मई को प्रकाशित हुई हैं। सितम्बर १९४७ में भारत सरकार ने आगामी पांच वर्षों में देश के अन्नोत्पादन को बढ़ाने के उपाय सुझाने के लिये यह समिति बनायी थी।

'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन

१९४३-४७ में आन्तरिक अन्नोत्पादन को बढ़ाने के लिये किये गये प्रयत्नों की जाच करने के बाद समिति का यह निश्चय है कि अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन के अभीष्ट परिणाम नहीं निकले। जो प्रयत्न किये गये, वे निःसंदेह ठीक थे, किन्तु उनके उद्देश्य सर्वथा भिन्न थे। जो प्रयत्न हुए वे अपर्याप्त थे तथा बहुत से प्रदेशों में आवश्यक शक्ति एवं उत्साह का अभाव था।

अधिक अन्नोत्पादन की शक्तियां

देश में खाद्यान्न की कमी तथा आन्तरिक अन्नोत्पादन को बढ़ाने के साधनों के विषय में समिति का यह विचार है कि भारतीय अन्न-व्यवस्था में कई खतरे हैं जिनमें से प्रमुख ये हैं —

(क) अनाज की औसतन कुल पैदावार वर्तमान आबादी की आवश्यकता के अनुपात से कम है।

(ख) तीन साल में अनाज की पैदावार में विशेष न्यूनाधिकता होती रहती है।

(ग) देश में कई स्थायी दुर्भिक्ष प्रदेश हैं, जिन्हें दुर्भिक्ष प्रदेश कहा जाता है।

समिति, विशेषज्ञों के इस मत से सहमत है कि देश में कृषि का विकास कृषि के साधनों के अनुकूल नहीं हुआ है और इसलिये उत्पादन में वृद्धि के लिये पर्याप्त गुंजाइश है। देश की प्रधान नदियों पर बड़े बड़े बांध बनाने से ही देशीय कृषि को वर्षा पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा और बहुत विस्तृत प्रदेश में सिंचाई का उत्तम प्रबन्ध हो जाने से उत्पादन में २० से ३० प्रतिशत वृद्धि हो जायगी।

पुरानी भूमि की काश्त पर यदि अधिक परिश्रम किया जाए तथा श्रेष्ठ किस्म के खाद और उत्तम बीज का प्रयोग किया जाए तथा अच्छी सिंचाई की जाए तो उसकी उपज बढ़ाई जा सकती है।

अनाज की कमी वाले क्षेत्रों के विकास के सम्बन्ध में समिति ने सिफारिश की है कि उन क्षेत्रों को सिंचाई की अधिक सुविधाएं दी जाएं, सिंचाई के बिना खेती करने की विधियां सिखाई जाएं, और साथ साथ छोटे छोटे उद्योग धंधे सिखाए जाएं तथा जीविका उपार्जन के अन्य साधनों की खोज की जाए। बम्बई सरकार ने थोड़े वर्षों में ही प्रायः ७ लाख एकड़ ऊसर भूमि को सिंचाई के बिना ही उपजाऊ बना लिया है। समिति ने अन्य प्रान्तों तथा रियासतों में भी खेती की इन विधियों के जोरदार प्रचार और प्रसार की सिफारिश की है। समिति ने ऊसर परन्तु बेकार पड़ी भूमि को शीघ्र से शीघ्र काश्त करने के सम्बन्ध में बहुत ज्यादा जोर दिया है। समिति की इस सम्बन्ध में बड़ी कड़ी आलोचना है। उसका मत है कि बेकार पड़ी भूमि को उपजाऊ बनाने का अब तक कोई भरसक प्रयत्न और परिश्रम नहीं किया गया।

संशोधित खाद्य उत्पादन योजना

समिति ने इस मत का समर्थन किया है कि कृषिविकास मुख्यतः प्रान्तों तथा रियासतों का कर्तव्य है परन्तु कुछ महत्वपूर्ण विषयों में केन्द्रीय सरकार की भी जिम्मेदारियां हैं। यह केन्द्रीय सरकार का काम है कि वह प्रान्तों और रियासतों की पृथक पृथक योजनाओं का अखिल भारतीय अन्न उत्पादन योजना से एकीकरण करे, रियासतों और प्रान्तों को खाद्य-उत्पादन के लिए जिन आवश्यक साधनों तथा वस्तुओं की आवश्यकता है उनका प्रबंध करे और खेती के योग्य जो भूमि बेकार पड़ी है उस को फिर से जुतई तथा काश्त में लाए।

खाद्य मन्त्री श्री जयरामदास दौलतराम

केन्द्र तथा प्रांतों में पूर्ण सहयोग प्राप्ति के हेतु समिति ने दो संस्थाएं स्थापित करने की सिफारिश की है।

(क) एक केन्द्रीय कृषि योजना बोर्ड।

(ख) और दूसरे प्रांत व प्रदेश में एक एक कृषि बोर्ड।

केन्द्रीय बोर्ड में प्रांतों, रियासतों, कृषिकों और केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि होंगे। इस बोर्ड का कार्य होगा प्रांतों और रियासतों की खाद्य उत्पादन की योजनाओं का प्रतिवर्ष एकीकरण, मशीनें, खाद्य तथा अन्य वस्तुओं के विभाजन में प्राथमिकताओं का निर्णय करना, और प्रत्येक योजना की प्रगति का निरीक्षण करके केन्द्रीय सरकार को रिपोर्ट देना। व्यवस्थापिका सभा द्वारा एक स्वतन्त्र संस्था का निर्माण होगा जिसका नाम होगा "सैंट्रल लैंड रिक्लेमेशन आर्गेनाईजेशन'। बेकार भूमि को उपयोगी बनाने की सभी योजनाएं बोर्ड इस संस्था के पास निरीक्षण करके भेजेगा।

प्रांतीय बोर्ड के कार्य निम्नलिखित होंगे—

१. कौनसी परती भूमि कृषि के योग्य है तथा आसानी से मिल सकती है। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय बोर्ड को सलाह देना। २. भूमि सुधार कार्य में केन्द्रीय संगठन की सहायता करना। (३) सुधार की हुई भूमि में कृषि करने के विषय में प्रांतीय सरकारों को सलाह देना, और ४. प्रांतीय खाद्य उत्पादन योजनाओं की प्रगति की परीक्षा करके उसकी रिपोर्ट केन्द्रीय बोर्ड को देना।

भूमि सुधार संगठन

कृषि योजना के केन्द्रीय बोर्ड द्वारा स्वीकृत योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए कमेटी ने एक स्वाधीनाधिकार संस्था की स्थापना की सिफारिश की है, जिसका नाम केन्द्रीय भूमि सुधार संगठन होगा। इसमें केन्द्रीय सरकार ५० करोड़ रुपये की पूंजी लगायेगी। इस संगठन

इंगलैंड में गौ का दूध ऐसी मशीन से दुहा जाने लगा है जिस में लगी घड़ी दुहे गये दूध की मात्रा भी साथ साथ बताती जाती है।

का एक बोर्ड होगी। इसमें अधिक से अधिक ७ डाइरेक्टर होंगे। डाइरेक्टरों को केन्द्रीय सरकार नामजद करेगी। बोर्ड में व्यापार व्यवस्था, कृषि, अर्थ-शास्त्र भूमि कर, शासन प्रबन्ध और सिंचाई के विशेषज्ञ तथा कृषकों का एक प्रतिनिधि रहेगा।

संगठन का कार्य सामान्यतया भूमि के सुधारने और काम में लाने के लिए उसे प्रांतीय कृषि बोर्डों को देने तक ही सीमित रहेगा। प्रत्येक योजना में जितना वास्तविक व्यय होगा, वह उसी प्रांत या रियासत से २० किश्तों में लिया जायगा, जिसकी सीमा के अन्तर्गत वह योजना कार्यान्वित हुई है। कमेटी का विचार है कि इस केन्द्रीय भूमि सुधार संगठन को सामान्यतया दस हजार एकड़ से कम भूमि के सुधार का कार्य अपने हाथ में नहीं लेना चाहिये और सुधरी हुई भूमि का विभाजन इस प्रकार करना चाहिए कि कोई खेत २०० एकड़ से कम न रहे, क्योंकि मशीनों के द्वारा कृषि करने के लिए एक खेत में कम से कम २०० एकड़ भूमि होना आवश्यक है।

सहायक खाद्यपदार्थ

कमेटी ने आलू, शकरकन्द और केला आदि अधिक मात्रा में पैदा होने वाली फसलों की उत्पत्ति और खपत के सम्बन्ध में आये हुए सुझावों पर विचार किया है। कमेटी का मत है कि सब प्रांतों और रियासतों में उपयुक्त परती भूमि पर आलू और शकरकन्द का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए, परन्तु वह इन खाद्य पदार्थों को प्रधान अनाजों का अभावपूरक नहीं समझती और न इनका उस भूमि पर उगाया जाना ही ठीक समझती है, जिस पर इस समय प्रधान अनाजों की फसलें उगाई जा रही हैं।

अग्रिम पांच वर्षों में खाद्य नीति

कमेटी का विचार है कि भोजन जैसे जीवनोपयोगी पदार्थ के सम्बन्ध में विदेशी आयात पर निर्भर रहना संकट काल में देश के लिए खतरा मोल लेना है। यह अनुचित है। अतः कमेटी ने सिफारिश की है कि खाद्य नीति के रूप में खाद्य पदार्थों के लिए विदेशों पर निर्भर रहना जितनी जल्दी हो सके, उतना जल्दी छोड़ देना चाहिए।

कमेटी इस बात को मानती है कि उत्पादन और खपत की वर्तमान मात्रा को देखते हुए निश्चय ही देश में खाद्य पदार्थों की खासी कमी है, और क्योंकि जिन खाद्य उत्पादन योजनाओं की उसने सिफारिश की है, उनके परिणत होने में पर्याप्त समय लगेगा, अतः भारतवर्ष के लिए यह आवश्यक होगा कि वह वर्तमान खपत के लिए और केन्द्रीय अन्न भंडार बनाने के लिए विदेशों से कुछ अन्न प्राप्त करे। इस लिए कमेटी का विचार है कि किसी भी वर्ष में आवश्यकतानुसार विदेश से मंगाये जाने वाले अन्न की मात्रा का निर्धारण दो सिद्धांतों के आधार पर होना चाहिए कि किसी भाग में फसल खराब हो जाने से या अन्य किसी प्रकार से पैदा हुये संकट के निवारणार्थ एक केन्द्रीय अन्न भंडार के लिए जितने अन्न की आवश्यकता हो, उतना ही अन्न मंगाया जाय, और (ख) अधिक से अधिक ५ वर्ष बाद विदेशों से अन्न मंगाना बंद कर दिया जाय। आगामी पांच वर्षों में विदेशों से अन्न मंगाने का एकाधिकार सरकार को होना चाहिये। इससे सरकार अपने देश की कीमतों को संसार की कीमतों से पृथक करने में समर्थ हो सकेगी और अपेक्षाकृत सस्ते अन्न का भंडार बना सकेगी।

केन्द्रीय अन्न भंडार

कमेटी ने सिफारिश की है कि प्रथम खाद्य उत्पादन योजना के ५ वर्षों की अवधि में सरकार को हर समय १० लाख टन अन्न-भंडार में सुरक्षित रखना चाहिये। इस अन्न में प्रधान तया गेहूं और चावल होने चाहिये।

कमेटी ने सिफारिश की है कि तुरन्त जांच करके इस बात का पता लगाया जाय कि क्या एक ऐसी स्वाधीनाधिकार प्रबंध संस्था स्थापित करना वांछनीय है, जो सरकार के तत्वावधान में अन्न के आयात के काम अपने हाथ में ले ले। यह संस्था केवल अन्न प्राप्त करने, उसे उपयुक्त भंडारों में भरने और सरकार द्वारा निर्धारित भावों पर बेचने आदि का प्रबन्ध करेगी।

क्या यही स्वराज्य है ?

[श्री होमवती]

★

जब कांग्रेस एक राजनैतिक संस्था के रूप में थी, तब धुने जुलाहे और मनिहारों से लेकर तेली तंबोली तक उसकी ओर भागते थे और प्रत्येक आंदोलन में सभी वर्ग और समुदाय के व्यक्ति तन मन धन से उसे सफल बनाने में कोई बात उठा नहीं रखते थे। बापू की एक आवाज पर स्त्रियों ने अपने पर्दे फाड़ कर फेंक दिये और मैदान में सारे बन्धन तोड़ कर निकल आईं। बच्चों ने स्कूल छोड़ दिये और छोटी बड़ी टोलियों में राष्ट्रीय पताका को थामे जलूस निकालने शुरू कर दिये। पुरुषों ने कारबार और घर गृहस्थी पर ठोकर मार कर जेल जाना पसन्द किया और लाठियों के वार हंसते हंसते अपने अंगों पर सहे। किस लिए था यह सब ? केवल भावी सुख और समृद्धि की लालसा से, स्वतन्त्र वायु मण्डल में खुल कर सांस लेने की आकांक्षा से। वह न सही, उनकी सन्तान और उनके देशवासी तो कभी 'राम राज्य' का आनन्द लूटेंगे ही। यही जोश था सब की नस नस में और यही पाठ पढ़ाया था उन्हें बापू ने। बापू ने स्वयं अपना सर्वस्व देश के अर्पण कर दिया था, फिर उनका प्रभाव जो कुछ भी था वह किसी से छिपा नहीं है और आज यही कारण है कि उनके अभाव में हम सभी अपने को अनाथ हुआ अनुभव करते हैं। 'सब कुछ खोकर भी कुछ मिल जाता है' यही वाक्य बापू ने पूरा किया। उन्होंने अपना सब कुछ खोकर इतना पाया कि किसी ने न वैसा पाया और न पाने की कोई सम्भावना ही है।

पर हमारा तो सब कुछ जैसे खोया हुआ ही रहा है अब तक। दुख सुख का जो एक साथी था (बापू) वह भी गया और 'राम राज्य' की कल्पना भी धीरे धीरे लोप होती जा रही है। कांग्रेस आज लोक सेवक संस्था न रह सत्ता बन गई है और उसकी परिधि इतनी संकीर्ण हो गई है कि उसमें पूरी जनता और भारत के समाने की बात तो दूर रही; वही कांग्रेसी जो उच्चकोटि के नेता कहलाते थे अब कांग्रेस से अलग कर दिये गये हैं।

हमें तो अपना 'राम राज्य' का स्वप्न भंग होता दीख रहा है। हम वस्त्र विहीन हैं, भूखे हैं, हमारे शिशु बूंद बूंद दूध को तरस तरस कर मर रहे हैं। क्या आश्चर्य है कि हम सत्ता विरोधी बन जाएं। यही तो हुआ था पहिले भी ! अस्तु, यह कोई नीति और तरीका नहीं है शान्ति बनाए रखने का कि अपने विरोधी उत्पन्न किये जाएं, या अपनों को ठुकरा कर विद्रोही बना दिया जाये, बजाय अपनाने के !

राजनीति के दांव पेंच तो राजनीतिज्ञ ही जानें, साधारण जनता तो भोजन वस्त्र की सुविधाएं ही चाहती है, जो उसके अभाव का आज अन्त नहीं है। फसल के जमाने में दो सेर का अनाज और सोलह सत्रह रुपये का एक धोती जोड़ा तथा चारे का यह हाल है कि फसल में बारह आने मन भूसा मिलता है। क्या इसी प्रकार 'राम राज्य' की स्थापना करेगी हमारी कांग्रेसी सरकार ! क्या इसी से पशु पालन को उत्साह मिलेगा और क्या इसी प्रबन्ध पर कोई राज्य जीवित रह सकता है ?

सत्ताधारी जन तनिक बाजारों में घूम घूम कर देखें कि भारत की जनता किस दुर्दशा में जी रही है। प्राण कण्ठगत हैं, पर अभावों का तांडव ज्यों का त्यों है !

एक बात और बड़े दुःख की है, चाहे कांग्रेसी हो और चाहे समाजवादी हो, सभी लोग किसान, मजदूरों का ही रोना रात दिन रोते रहते हैं। पर मध्य वर्गीय गरीबों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं। आज की परिस्थिति में दो सेर के भाव का गेहूं बेच कर कोई किसान जब किसी सर्राफ की दुकान पर पूरे हजार का हंसला और कठला अपनी घर वाली के लिए गढ़वाता है, तब वह क्या उस पढ़े लिखे मध्य वर्गीय व्यक्ति से बुरा और भाग्यहीन माना जायेगा, जो कि अपने बच्चे की बीमारी में घरवाली के कानों के बुन्दे बेच कर डाक्टर को बुलाने दौड़ता है ?

अथवा जो मजदूर पूरे चार पांच रुपये नित्य जेब में डाल कर ताड़ीखाने या जुए के अड्डे में बेधड़क घुस कर रोज शाम को मनोरंजन करता है ? वह उस मध्यवर्गीय गरीब से अच्छा है, जिस को कभी खिचड़ी के अलावा रोटी के दर्शन दुर्लभ हैं और घी की साध 'कोटोजम' से भी पूरी नहीं कर पाता !

गाय और भैंसों की ठठरियां रात दिन सड़कों पर घूमती दीख पड़ती हैं, उनके लिए क्या व्यवस्था है सरकार की ओर से ? कौनसे चरागाह छोड़े हैं अब तक ? जब जन जन के सामने भुखमरी मुंह फाड़े खड़ी हो, तो इन पशुओं को कौन पालेगा ? और कैसे बहाये यो दूध की नदियां हमारी अपनी सरकार ?

यह कोई व्यवस्था नहीं है, न हमें इसमें सन्तोष है, हमारी हालत तो पहले से भी बदतर है, हमारी सरकार की दृष्टि एक पक्षीय है। आज भी पूंजीपतियों को ही उसका आशीर्वाद प्राप्त है। गरीब जनता को कौन पूछता है ?

प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब से मकानों पर कण्ट्रोल हुआ है, आज तक नहीं टूटा। माना कि किरायेदारों की संख्या अधिक है और उनके लाभ और सुविधा को ध्यान में रखना चाहिये, परन्तु उन अनाथ और विधवाओं की दशा भी ध्यान में रखनी चाहिए, जिन्होंने अपने अंग का छल्ला छल्ला बेच कर मकान खड़ा किया था, इस आशा से कि अपना तथा अपने अनाथ बच्चों का पालन करती रहेंगी। इज्जत के साथ घर में बैठी रहेंगी। पर आज न किराया बढ़ा सकती हैं और न अपनी इच्छानुसार किरायेदार ही बदल सकती हैं, चाहे आये दिन किरायेदार जूता ताने खड़ा रहे। चीजों के दाम दस गुने और किराये की सीमा अधिक से अधिक पचास फीसदी वह भी किरायेदार की इच्छा पर और सन् ४२ के प्रतिबन्ध के साथ साथ। जिसे हजार रुपये मासिक की आय है उसके लिए भी वही कानून और जिसे बीस रुपये मासिक की आय है भाड़े को उस पर भी वही कानून लागू है। पता नहीं यह कैसा न्याय है ? उस दशा में जब कि मकानों में बसने वाले अधिकांश परदेसी ही होते हैं। नौकरीपेशा, डाक्टर या व्यापारी, जिन्होंने कि वस्तुओं की कीमतों से लेकर मजदूरी चौगुनी कर रक्खी है और भाड़ा चुकाने में हाय हाय करते रहते हैं। एक पक्षीय न्याय है यह और क्या सार है इसमें ?

घूसखोरी का यह हाल है कि तांगे और रिक्शा वाले तक तंग हैं, इससे बड़े बड़े अधिकारियों से लेकर साधारण सिपाही तक अपनी हैसियत के अनुसार घूस लेने से नहीं चूकता।

हमारे प्रांतपति और लोक सेवक कांग्रेस जन तथा सत्ता के सहयोगी तनिक ध्यान दें इस ओर कि जनता का जीवन एक भयानक परिस्थिति से गुजर रहा है। यह न्याय है या अन्याय, इसे वह स्वयं सोचें। माना कि सरकार के सामने अनेक कठिनाइयां हैं, पर जनता की कठिनाइयों से आंखें मींचे रहना भी तो वैसा ही भयानक है। सरकार की ओर से जनता के लिए कोई मासिक वृत्ति नहीं बंधी है और न कोई सुविधा प्राप्त है, फिर वह कैसे जिये ?

———

सोवियत पत्रों के सुनहले दिन

[श्री निकोलोई समस्की]

सोवियत की जनता ५ मई को अखबार दिवस मनाती है। रूस में मजदूरों के अखबार का जन्म बहुत पहले हुआ था। ५ मई १९१२ को मजदूरों के अखबार 'प्रावदा' का जन्म हुआ। मजदूरों के क्रान्तिकारी आन्दोलन के जोर पकड़ने का यह फल था। मजदूर इसे जार से होने वाली लड़ाई में अपना बहुत ही मजबूत हथियार समझते थे। मजदूरों ने अपने बोलशेविक पत्र के छापे जाने को अपनी बड़ी शानदार जीत समझा। 'प्रावदा' निकालने का जिसके जन्मदाता लेनिन और स्टालिन थे, खास उद्देश्य था मजदूरों के संग्राम को रास्ता दिखाना, मजदूरों की ताकत को एकत्र करना और मजबूत बनाना, उनमें राजनीतिक ज्ञान पैदा करना, खास राजनीतिक सवालों की तरफ उनका ध्यान ले जाना और मजदूर श्रेणी के दुश्मनों की सब से कमजोर जगहों पर चोट करना। प्रावदा के शुरू के ९९ अंकों में मजदूर सम्वाददाताओं ने १७८३ लेख लिखे। २३६ लेखों में पूंजीपतियों के खिलाफ चलने वाली मजदूरों की लड़ाइयों का बखान था।

जार के रूस में 'प्रावदा' और मजदूरों के दूसरे अखबार या किताबें बहुत ही मुश्किल से छपती थीं। पूंजीपति और जमींदार मजदूरों और गरीब किसानों के प्रगतिशील और क्रान्तिकारी अखबारों के बुरी तरह से दबाते थे। 'प्रावदा' निकलने पहले ही साल ३६ दफे बन्द किया और पहले दो सालों के भीतर उस रोक लगाई गई। उस वक्त ार निकालने की आजादी ...क हुकूमत, कारखानें, मिलें, ...और रेलें, तार और छपाई से सम्बन्ध रखने वाली दूकानें सब पूंजीपतियों के हाथों में थी जिनको जनता के स्वार्थों का रत्ती भर भी ख्याल न था। अपने स्वार्थ के लिए पूंजीपति जनता के शरीर और मन दोनों को दबा कर रखते थे। कार्ल मार्क्स ने लिखा है, 'जो श्रेणी समाज पर हुकूमत करती है, वह साथ ही मन पर भी हुकूमत करती है।'

सोवियत में इस समय ७१६३ अखबार निकलते हैं, जिनके खरीदने वाले ३ करोड़ १० लाख हैं। सभी शहरों, बहुत से गांवों, कारखानों और स्कूलों से सोवियत जनता की १११ भाषाओं में अखबार निकलते हैं। कारखानों के मजदूर, जनता की संस्थाएं मजदूर यूनियनें, मजदूरों की पंचायतें अखबार निकालती हैं। अखबार और मासिक पत्र सोवियत जनता के लिए बड़े जरूरी हो गये हैं। इस समय ११८३ मासिक पत्र प्रकाशित होते हैं। किसान सम्बन्धी पत्र कुल पत्रों के १५.४ सै०, उद्योगधन्धों संबंधी २१.६ सैकड़ा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक १७.८ सैकड़ा, डाक्टरी सम्बन्धी ८.१ सैकड़ा और साहित्य सम्बन्धी ९ सैकड़ा निकलते हैं। मासिक पत्रों में राजनीति, राज्य, अर्थनीति, संस्कृति आदि सभी विषयों की चर्चा होती है।

सोवियत में किताबें भी बहुत छप रही हैं, सारी दुनिया में सब से ज्यादा मई १९४८ से अप्रैल १९४८ के बीच ९० हजार किताबें छपी हैं जिनके संस्करण ११ अरब प्रतियों से अधिक हुए हैं।

सोवियत के पत्र जनता को कम्यूनिज्म (साम्यवाद) की भावना के अनुसार जमात और शिक्षा देते हैं। लड़ाई के बाद की पांच साल वाली योजना के चार साल में ही पूरा करने के लिए जोश दिलाते हैं। जनता को राजनीतिक शिक्षा देने के बहुत ही शक्तिशाली साधन हैं। सचाई, ईमानदारी, सरलता और देश प्रेम सोवियत जनता की विशेषताएं ... इन्हीं को सामने रखते हैं।

सोवियत की जनता अपने अखबारों से बराबर सम्बन्ध रखती और उनमें बराबर लिखा करती है। २० लाख से ज्यादा मजदूर और किसान सोवियत के अखबारों और मासिक पत्रों में बराबर लिखते रहते हैं। उदाहरण के लिए विनित्सा (यूक्राइन) के अखबार के १३४७ सम्वाददाता हैं। १९४७ में इस अखबार को १२५०० लेख और चिट्ठियां मिलीं। यही हाल सोवियत के सभी अखबारों का है। जनता के बीच रहने वाले सम्वाददाता बड़े काम के होते हैं। स्टालिन ने लिखा है कि अखबार के चलाने में मजदूरों के हिस्सा लेने से श्रेणी संग्राम में अखबार को जनता को गुलाम बनाने का साधन बनाने के बदले उसे आजादी लाने वाला हथियार बनाया जा सकता है। मजदूर और देहातों के सम्वाददाता ही ऐसे कर सकते हैं। मजदूर और देहातों के सम्वाददाता संगठित होकर ही अखबारों की उन्नति में मेहनत करने वाली जनता की आवाज बन सकते हैं और सोवियत समाज की कमजोरियों को बतला कर उन्हें दूर कराने और ...ा समाज बनाने के लिए लड़ सकते हैं।

१९४१ में डी० सेल्डीज, एम० अर्न्स्ट और दूसरे लेखकों ने अमरीका में किताबें निकाली हैं जिनसे पता चलता है कि हर्स्ट और स्क्रिप्स हेनर्ड के ही ३८ पत्र हैं, जिनकी ग्राहक संख्या ९० लाख है। ४५ पत्र जिनकी ग्राहक संख्या १ करोड़ १० लाख है। मुट्ठी भर पूंजीपतियों खास कर हर्स्ट, स्क्रिप्स होवार्ड और पटर्सन मेककार्मिक के हाथों में हैं।

एम० अर्न्स्ट का कहना है कि अमरीकन पत्रों की ७० सैकड़ा आमदनी विज्ञापनों से, २९ सैकड़ा पढ़ने वालों से और १ सैकड़ा दूसरी मदों से होती है। ज्यादा विज्ञापन पाने के लिए अखबारों के मालिक ग्राहक बढ़ाने की चिन्ता में रहते हैं और इसके लिए वे सनसनी पैदा करने वाली झूठी खबरें छापते रहते हैं।

आर्य जगत

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अव्यवस्था

[श्री पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति]

पाठकों को ज्ञात होगा कि, आज से लगभग २½ वर्ष पूर्व काशी विश्व विद्यालयान्तर्गत धर्म विज्ञान महाविद्यालय की वेद मध्यमा कक्षा में श्री प्रो० महेश प्रसाद जी मौलवी आलिम-फाजिल की सुपुत्री श्री कल्याणी देवी के प्रवेश की अनुमति न मिलने पर जनता में विभिन्न समाचारपत्रों द्वारा आन्दोलन हुआ। इस पर स्व० पण्डित मदन मोहन जी मालवीय की अध्यक्षता में विश्व विद्यालय द्वारा नियोजित उपसमिति ने पर्याप्त समय तक विचार विमर्श करने के पश्चात् २२-८-४६ को एक संयुक्त संस्कृत महा विद्यालय की स्थापना का निश्चय किया, जिसमें वेद सहित समस्त संस्कृत साहित्य की आचार्य कक्षा तक पढ़ाई बिना जाति, सम्प्रदाय या लिङ्ग (पुरुषस्त्री) भेद के, सब के लिए प्रबंध हो। श्री कल्याणी देवी को वेद मध्यमा की कक्षा में प्रवेश की अनुमति दे दी गई, जिस के अनुसार ७ सितम्बर को उसका प्रवेश हो गया। जनता को इस समाचार से प्रसन्नता हुई किन्तु पीछे से ज्ञात हुआ कि श्री कल्याणी देवी को पाठ क्रम में नियत सस्वर वेद पढ़ाने की उचित व्यवस्था महाविद्यालय में नहीं है। पंडित लोग उसे सस्वर वेद पढ़ाने को उद्यत नहीं है। लीडर, नेशनल हेरल्ड, अमृत बाजार पत्रिका तथा अन्य अनेक समाचार पत्रों में इस विषयक कई समालोचनात्मक लेख व पत्र प्रकाशित होते रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री पं० गङ्गा प्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० का भी इस विषयक एक पत्र अंग्रेजी पत्रों में प्रकाशित हुआ।

सभा की ओर से मान्य उपाध्याय जी और मैंने डा० अमरनाथ झा वाइस चांसलर हिन्दू विश्व विद्यालय को उचित व्यवस्था करके जनता के असंतोष को दूर करने के लिए पत्र लिखे, किन्तु उत्तर न आने पर मैंने अनेक मित्रों के परामर्शानुसार यही उचित समझा कि स्वयं काशी में जाकर विश्वविद्यालय के अधिकारियों से भेंट की जावे और इस विषयक स्थिति का निरीक्षण करके भावी कार्यक्रम निश्चित किया जावे। तदनुसार मैं २६ अप्रैल को बनारस पहुंचा। २ मई तक काशी में ठहर कर संस्कृत महाविद्यालय के प्रिन्सिपल, विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, प्रो० वाइस चांसलर तथा अन्य अनेक प्रतिष्ठित उपाध्यायों से इस विषय में बात चीत की। महाविद्यालय के प्रि० पं० कालीप्रसाद जी मिश्र ने साफ कहा कि वर्तमान नियमों के अनुसार संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश का अधिकार उन सब को है जो इंजिनियरिंग कालिज आदि में प्रविष्ट हो सकते हैं। स्त्री-पुरुष जाति भेद का उसमें कोई स्थान नहीं। आप चाहें तो अछूतों को भी प्रविष्ट करा सकते हैं। मैं पण्डितों को सूचित कर रहा हूं कि सब को बिना भेद भाव के पढ़ाना होगा। जो इसके लिए उद्यत नहीं है उन्हें विश्व विद्यालय से त्याग पत्र देना चाहिये अन्यथा उन्हें हटा दिया जाएगा।" विश्व विद्यालय के प्रो० वाइस चान्सलर श्री प० गोविन्द मालवीय जी ने १० अप्रैल की रात को मेरे भेंट करने पर इसी नीति से सहमति प्रकट की। जब विश्वविद्यालय के अधिकारियों को ज्ञात हुआ कि प्रबन्ध सन्तोष जनक नहीं है तो वाइस चान्सलर महोदय ने १००) मासिक पर प० अनन्त राम जी शास्त्री की विशेष नियुक्ति की। वाइस चान्सलर महोदय द्वारा प्रदत्त उस नियुक्ति पत्र की प्रति मैंने देखी है और यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि विश्व विद्यालय की अब ऐसी उदार नीति है। किन्तु वे पण्डित जिन को ४ अप्रैल से नियुक्ति का पत्र दिया गया था (३० अप्रैल) तक भी नहीं आए। सम्भवतः उनको किसी ने बहका दिया। श्री कल्याणी देवी १० अप्रैल को इस नियुक्ति की सूचना पाकर संस्कृत महाविद्यालय में कई दिनों तक जाती रही किन्तु प्रिन्सिपल महोदय द्वारा उसे यही सूचना मिली कि अभी कोई प्रबन्ध नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि श्री कल्याणी देवी की पढ़ाई न होने पाई और २७ अप्रैल से प्रारम्भ होने वाली परीक्षा में वह न बैठ सकी। इस प्रकार उस का एक वर्ष व्यर्थ नष्ट हुआ। ऐसी अवस्था में जब तक वेद की पढ़ाई का उचित प्रबन्ध न हो तब तक जनता को कैसे सन्तोष दिलाया जाए?

क्या हम आशा करें कि काशी विश्व विद्यालय के अधिकारी अपनी घोषित नीति को शीघ्र क्रियात्मक रूप देंगे?

युक्तप्रान्तीय सरकार के दो आदेश

युक्त प्रान्तीय सरकार ने यह आदेश दिया है कि सरकारी आवेदन पत्रों में जाति उपजाति के स्तम्भों को रिक्त छोड़ दिया जाया करे। उनमें जाति का नाम लिखने की मनाही की गयी है। यह भी आदेश दिया है कि सरकारी पत्र व्यवहार में मिस्टर, मिसेज, मिस, मुसम्मात, बाबू, पण्डित, मौलवी आदि की जगह यथोचित श्री, श्रीमती व कुमारी का प्रयोग किया जाए। सेना के अफसरों व सैनिकों तथा विचारपतियों (जजों) के सम्बन्ध में यह निदेश लागू नहीं होगा।

विभिन्न विभागाध्यक्षों के पास एक गश्ती पत्र भेजकर मद्यपान को छोड़ने का अनुरोध किया है। सरकार द्वारा प्रान्त भर में मद्य-निषेध लागू करने की आशा है।

राजार्य सभा का विरोध क्यों?

[पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित बी० ए०]

आर्यसमाज के विशुद्ध धार्मिक संस्था होने की भ्रांत धारणा ने उसे इतना सीमित और संकुचित बना दिया कि उसका सर्वाङ्गसुन्दर विकास न हो सका। आज आर्यसमाज की गिनती विश्वजनीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाली सार्वभौम सर्वभौम संस्थाओं में न होकर हिन्दू धर्म के अन्तर्गत सम्प्रदायों में ही की जाती है।

संसार का उपकार करने का दावा करने वाली संस्था के हाथों से अपने ही देश के सार्वजनिक जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों का नेतृत्व छिन चुका है। राजनैतिक क्षेत्र को तो आर्य समाज ने स्वयं ठुकराया। दूसरे क्षेत्रों में उसे जनता ने ठुकरा दिया। आये दिन आर्यसमाज का प्रभाव घटता जाता है और उसका स्थान नई संस्थायें लेती जा रही हैं। सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की कामना करने वाले आर्यों का शासन एक गांव में भी नहीं दीख पड़ता। शान्ति सम्मेलन होते हैं किन्तु वेद के आधार पर शाश्वत सुख और शान्ति का संदेश देने वाले आर्य समाज को वहां कोई पूछता भी नहीं। भारतीय विधान परिषद की बैठकें होती हैं। विधान तैयार करने के लिए दुनिया भर से सलाह ली जाती है किन्तु सब सत्य-विद्याओं के पुस्तक वेद, मनुस्मृति शुक्रनीति तथा कौटिलीय अर्थशास्त्र आदि से युक्त आर्यसमाज को वहां कोई जाल भी नहीं डालता। शिक्षा सम्मेलन होते हैं किन्तु राष्ट्रीय शिक्षा को जन्म देने वाले तथा देश को साक्षर बनाने में सबसे पहले और सबसे अधिक प्रयत्न करने वाले आर्य समाज की ओर कोई आंख उठाकर भी नहीं देखता। स्त्रियों और शूद्रों को जिन्हें किसी समय इस देश में पशुओं से भी निकृष्ट समझा जाता था, मन्त्रिमंडल में स्थान पाने के योग्य बनाने के बाद आर्यसमाज अपने को उन्हीं द्वारा अपमानित हुआ पाता है।

आर्यसमाज का प्रगतिशील वर्ग कहता है कि इस सबका कारण है आर्य समाज का राजनीति से पृथक रहना। कट्टरपन्थी कहते हैं कि खबरदार, राजनीति का स्पर्श होते ही आर्य समाज भ्रष्ट हो जायगा नष्ट हो जायेगा। राजनीति से भड़कने वाले लोगों द्वारा उठाये जाने वाली आपत्तियों का विश्लेषण निम्न प्रकार से है—

१. धार्मिकसंस्था—आज का संसार आर्य समाज को एक धार्मिक संस्था के रूप में ही जानता और मानता है। संसार ही नहीं आर्य समाज के सदस्य और बहुत से नेता भी ऐसा ही समझते हैं। इसी आधार पर यह कहा जाता है कि आर्य समाज राजनीति में भाग नहीं ले सकता। यदि धर्म और राजनीति परस्पर विरोधी होते तो कहा जा सकता था कि आर्य समाज धार्मिक संस्था है, राजनीतिक नहीं। जो लोग यह कहते हैं कि आर्य समाज का धार्मिक संस्था होने के कारण राजनीति से कोई सबंध नहीं उन्होंने न आर्य समाज को समझा है और न उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द को।

[शेष पृष्ठ २२ पर]

राजस्थान के किसान

किसान की आमदनी सिर्फ छः आने

[श्री अमृतानन्द]

> जिन जननेताओं ने गतवर्ष किसानों को अनाज न देने की सलाह दी थी, वे ही गद्दी पर बैठते ही आधी कीमत पर गेहूं मांग रहे हैं और इसे अन्यायपूर्ण बताने वाले राजद्रोही कहे जा रहे हैं।

भारत सरकार की नीति कण्ट्रोल उठाने की घोषित हो चुकी है। उसने युद्ध के दौरान में भी कभी गांवों में से जबरदस्ती या सस्ता अनाज वसूली नहीं की, लेकिन रियासतों में प्रजा को बेतरह लूटा जाता रहा—जबरदस्ती लोगों से अनाज वसूली के नाम पर उनसे आधे दामों पर अनाज लिया जाता रहा। और खुद कई रियासतें तक उससे ब्लेक मार्किट करती रहीं। युद्ध समाप्त होने के बाद भी यह लूट जारी रही, लेकिन कपड़ा कण्ट्रोल भाव से थोड़ा बहुत मिलता रहा किन्तु इधर कपड़े का कण्ट्रोल हटा दिया गया है। कहने को २५ प्रतिशत कीमत बढ़ाने की बात की गई है, परन्तु असलियत में साधारण आदमी को कम से कम चार गुने दामों में कपड़ा मिलता है इससे जन साधारण का खर्च बढ़ गया है। उधर किसानों पर प्रकृति का भी कोप हो रहा है। दो साल से बराबर ओले पाला और रोली आदि से फसलों को नुकसान हो रहा है। किसानों को उम्मीद थी कि लोकप्रिय सरकार बनने पर उसे जागीरदारों और कण्ट्रोल की लूट से कुछ राहत मिलेगी और जब देश भर में से अनाज वसूली रुक चुकी है, तो यहां भी रुक जायगी।

किसानों को कुछ अरसे से एक और आफत का सामना करना पड़ रहा है। पहले उन्हें जंगल से जलाने और खेती तथा मकान के लिये लकड़ी और पत्थर मुफ्त में लाने का हक था। इधर कई वर्ष से इन सब चीजों के ठेके दे दिये गये हैं। ठेकेदार उनसे मनमानी कीमत वसूल करते हैं। उनके अपने गांव की हद के जंगल हैं, उन्हीं की हद की खानें हैं। कहने के लिये जनता का राज्य है। परन्तु उन्हें अपने ही गांव और परगने की चीजें लाने का भी अधिकार नहीं है, इसीलिये पूछते हैं कि यह कैसा स्वराज्य है।

अब थोड़ा सा किसानों के आय व्यय का चित्र भी देखिये, मैंने कृषि विशेषज्ञ की शिक्षा ही नहीं पाई है, स्वयं मेवाड़ में हो कृषि कर भी रहा हूं। इसलिये मैं जो हिसाब बता रहा हूं, वह कल्पना का नहीं अनुभव का है। राजस्थान की मुख्य पैदावार गन्ना, गेहूं, मक्का, कपास और मेथी है। हाड़ौती के कुछ भागों में धीया धनिया आदि बोया जाता है। प्रायः १० लाख मीलों के क्षेत्र में खाने योग्य भी अनाज नहीं होता। अतः इन चीजों की औसतन पैदावार नीचे लिखे अनुसार होती है।

गन्ना (वाड़) फी बीघा २०० न पक्का।

मक्का फी बीघा ८ मन पक्का।

गेहूं फी बीघा ८ मन पक्का।

कपास फी बीघा ५ मन पक्का।

मेथी फी बीघा २॥ मन पक्का।

एक किसान औसतन चार बीघा पीवल खेती करता है, जिसमें फसलों का बंटवारा औसतन नीचे लिखे माफिक होता है।

फसल	बीघा	आमदनी
गन्ना (वाड़)	॥	२००) रु०
गेहूं	२	२४०) ,,
मक्का	२	१२०) ,,
कपास	१॥	१२०) ,,
मेथी	१॥	३०) ,,
		कुल जोड़ ७१०)

खर्च

लगान	३२)
खेती के औजारों की मरम्मत खरीद आदि	६८)
मजदूरी	३०)
बीज आदि	५०)
	कुल खर्च १८०)

कुल आय	७१०) रुपया
कुल खर्च	१८०) ,,
शेष आमदनी	५३०) रुपया

ये ५३०) रुपया साल भर में किसान को तब मिलते हैं, जबकि जमीन अपेक्षाकृतः अच्छी और उसकी अपनी हो, पानी की सुविधा हो, खाद घर का हो और घर के आदमी बराबर काम करते रहें, फसल को ओले, पाला, रोली आदि से नुकसान न हो। इसमें से भी कम से कम एक सौ रुपया किसान को बीमारी, रिश्वत आदि में देने पड़ते हैं।

ध्यान रहे कि यह आमदनी मौजूद बाजार भाव अर्थात् २०) फी मन गेहूं आदि के हिसाब से है। यह भी बताया जा चुका है कि इधर प्रायः तीन वर्ष से फसलों को बराबर ओले रोली आदि से नुकसान होता रहा है। इसका अर्थ यह है कि किसान को ।=) रोज भी मजदूरी नहीं मिलती जबकि देहात में आज भी मजदूर एक रुपये से कम नहीं लेता अर्थात् राजस्थानी किसान की हालत मजदूर से भी गई बीती है।

लोग यह कहते हैं कि पीवल के अलावा किसान के पास माल, जमीन और मवेशियों की भी आमदनी होती है किन्तु जिन्हें व्यावहारिक अनुभव है, वे जानते हैं कि जब पीवल में ।=) रोज की मजदूरी पड़ती है तब माल में क्या बच सकता है। उसमें तो मेहनत भी कठिनाई से वसूल होती है। रहे मवेशी सो वे तो केवल खाद के ख्याल से पाले जाते हैं, २ या २॥ सेर दूध देने वाली भैंसों और ॥ या १ सेर दूध देने वाली गायों से उनकी खुराक भी पूरी पड़ना कठिन है। तिस पर किसानों के सब बच्चे उन्हीं पर लगे रहते हैं और इसीलिये वे उन्हें पढ़ाते भी नहीं। यही कारण है कि राजस्थान के किसान आज भी कर्जदार हैं। हां यदि वे जागीरदारों और राज्यों की लूट के शिकार न बनाए जाते तो सम्भव था कि युद्ध की महगाई से उनकी हालत सुधर जाती। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि लोग कहते हैं और समझते हैं कि किसान खुशहाल है। कोई कोई तो यह भी कहने में नहीं हिचकिचाते कि वे मालदार हो गये हैं। इससे मालूम होता है कि किसानों की असली हालत के बारे में लोगों में कितना अज्ञान फैला हुआ है। ऊपर का सही विवरण इसका प्रमाण है।

श्री रणजीतसिंह कछवाहा

इन्हें भारत सरकार ने केमिकल इंजिनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेजा था। हाल ही में वे अपनी शिक्षा पूरी करके स्वदेश लौटे हैं।

इस हालत में यह देखकर आश्चर्य होता है कि जिन प्रजामण्डल वालों ने गये साल स्वयं किसानों को अनाज न देने की सलाह दी थी, वे ही गद्दी पर बैठते ही आधी कीमत पर गेहूं मांग रहे हैं। और जो लोग इसे अन्यायपूर्ण बताते हैं, उन्हें राजद्रोही कहने की धृष्टता कर रहे हैं। यह किसानों को लुटवाना नहीं तो क्या है ? मैं प्रजा मण्डल के नेताओं और नये मन्त्री मण्डल से अपील करता हूं कि इन सब तथ्यों को विचार कर अनाज वसूली तत्काल बन्द कर दें। जिस प्रकार कपड़ा बेचने में व्यापारियों को स्वतन्त्रता दी गई है, उसी तरह किसानों को भी आजादी दें।

★ विविध चित्रावलि ★

यह बृहदाकार चिमनी ब्रिटेन से वैनेजुला भेजी गई है यह ८३ फीट लम्बी है तथा — इसका वजन १०८ टन है। यह मिट्टी का तेल साफ करने के काम में लाई जाती है।
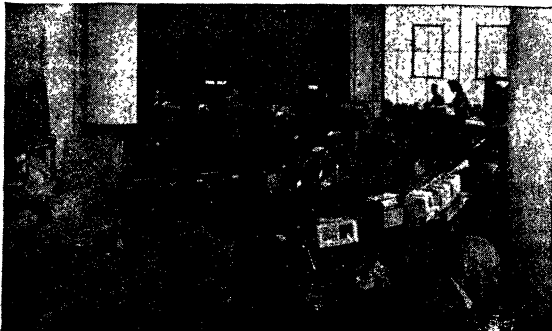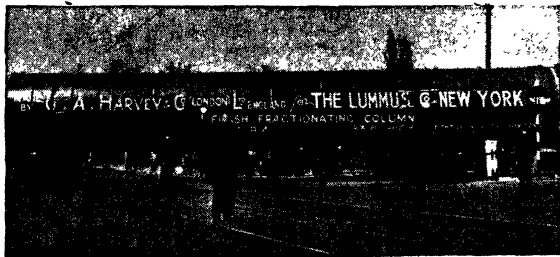
(१) इंगलैंड के सम्राट तथा साम्राज्ञी को उनके २५ वे विवाह-दिवस के अवसर पर ३ फीट ९ इंच ऊंची और २॥ मन भारी केक भेंट की गई थी।

(२) विज्ञान का नवीन चमत्कार इस मशीन द्वारा साबुन के बुलबुले के अन्दर का दवाब नापा जा सकता है।

(३) इंगलैंड ने, १० लाख अन्य देशों को रेडियो भेजने के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये इस वर्ष रेडियो प्रदर्शनी न करने का निश्चय किया है।

नौशेरा का विजेता

(पृष्ठ ६ का शेष)

चौता गांव में घुस आया था और उसने कई किसानों को मार डाला था। उस्मान भोजन किये बिना ही उठ खड़े हुए और अपनी राइफल को उठा उनके साथ हो लिये। उन्होंने उसी रात चीते को मार डाला, परन्तु एक गढ़े में गिर पड़ने से स्वयं भी घायल हो गये और हड्डी टूट जाने से काफी समय तक अस्पताल में पड़े रहे।

यह सब कुछ उस्मान की देशभक्ति और मानव-प्रेम की महत्तम परीक्षा की विभाजन हुआ और सैनिक अफसरों स नों डोमीनियनों में से किसी एक को चुन लेने के लिए कहा गया, तो पाकिस्तान जाने पर बड़े उज्ज्वल भविष्य का प्रलोभन दिये जाने पर भी उस्मान ने २५० अन्य मुस्लिम अफसरों के साथ भारत की ही सेवा करने की इच्छा व्यक्त की। पाकिस्तान जाने से इन्कार करने पर उस्मान को काफिर का खिताब दे दिया गया और उन मुस्लिम अफसरों ने उनका एक प्रकार से बहिष्कार कर डाला, जिन्होंने पाकिस्तान की सेना में कार्य करने का निश्चय किया था। पन्द्रह अगस्त १६४७ को उनके ब्रिगेड को मुलतान में तैनात किया गया और उन्हें पश्चिमी पंजाब के कुछ सब से अधिक उपद्रव-ग्रस्त जिलों—मुलतान, मुजफ्फरगढ़, डेरा गाजीखां और झंग—में कानून व व्यवस्था को कायम रखने का आदेश दिया गया। वातावरण अत्यन्त विक्षुब्ध था और बारूद के लिए एक चिन्गारी ही पर्याप्त थी। ऐसे समय एक ऐसे सेनाधिकारी की आवश्यकता थी, जो स्थिति को बड़ी सावधानी और देशभक्ति की भावना के साथ सम्भाल सकता।

उस समय उस्मान ने अपनी योग्यता, निष्पक्षता एवं मानव-प्रेम का परिचय दिया। वह अपने क्षेत्र में घिरे हिन्दुओं और सिखों की रक्षा के लिए अहर्निश कार्य करते रहे और न आराम की परवाह की, न नींद की। उन्हीं के प्रयत्नों का यह फल था कि पश्चिमी पंजाब के अन्य भागों की अपेक्षा इन चार जिलों में साम्प्रदायिक उपद्रव सब से कम हुए। मुलतान में जब तक उस्मान की ब्रिगेड तैनात रही, नगर के ५०,००० अ-मुस्लिम पूर्णतः सुरक्षित रहे। उसी जिले के एक गांव में उन्होंने १०,००० अ-मुस्लिमों को मुस्लिम गुण्डों से बचाया। उन्होंने मुसलमानों के मुखियाओं को बुला कर शान्त भाव से चेतावनी दी कि यदि एक भी हिन्दू या सिख को छेड़ा गया, तो सब से पहले उन्हें गोली से उड़ा दिया जायगा।

जब काश्मीर में पिरासतों की लड़ाई आरम्भ हुई, नेहरू सरकार के लिए यह स्वाभाविक था कि वह उसके एक मोर्चे का नायकत्व एक ऐसे सेनाधिकारी के हाथ में सौंपती, जो साम्प्रदायिक भावनाओं से विमुक्त हो और कर्तव्यनिष्ठ होकर कार्य करे। उनकी उपस्थिति का स्थानीय जनता के आत्मविश्वास पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है। इससे वह अनुभव करने लगी है कि यह लड़ाई साम्प्रदायिक लड़ाई नहीं, प्रत्युत आक्रमणकारी आक्रमण के विरुद्ध लोकतन्त्र की लड़ाई है।

काश्मीर में कबायलियों के अत्याचारों ने उस्मान को इतना विक्षुब्ध कर डाला है कि उसने रणक्षेत्र से बीबीपुर स्थित अपने मामा को एक पत्र में लिखा—"ये कबायली मुसलमान नहीं शैतान हैं। इन्सानियत नाम की चीज तो इनके पास है ही नहीं। इन ताड़ के सदृश मोटे और बड़े कबायली हमारी एक गोली भी बेकार नहीं जाने देते। गोली के लगते ही यह कटे हुए पेड़ की तरह जमीन पर लुढ़क पड़ते हैं। अगर हमें 'यहां गोली न चलाओ, वहां गोली न चलाओ' का आदेश का न होता, तो हमने इन्हें कभी का हिन्दुकुश की कन्दराओं में दफना दिया होता।"

उस्मान की ब्रिगेड को नौशेरा में जो शानदार सफलता मिली है, उसने उनके रण-चातुर्य को चार चांद लगा दिये हैं। उन्होंने अब तक जो सफलतायें प्राप्त की हैं, उनमें से एक बालक सेना का संगठन है, जिसे उन्होंने १०० शरणार्थी बच्चों से तैयार किया है। इन बच्चों ने मोर्चे पर सन्देशों को इधर-उधर पहुंचाने में महत्वपूर्ण कार्य कर दिखाया है। उस्मान ने नागरिकों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने, स्थानीय स्वरक्षा दल तैयार करने तथा जनता को अपने घरों की स्वयं रक्षा करने के लिए शस्त्र प्रयोग की शिक्षा देने में भी मदद की है। उनके क्षेत्र में सेना और जनता में निकटतम और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं।

यद्यपि उस्मान अपनी दो बहिनों और दो भाइयों में (उनके एक भाई मुहम्मद सुभान नयी दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के सहायक सम्पादक हैं) सब से बड़े हैं, किन्तु वह अभी तक अविवाहित हैं। उनकी शादी के लिए बहुतेरे लोग आये, किन्तु उन्होंने विवाह करने से इन्कार कर दिया। उनका कहना है कि जब तक मेरा सैनिक जीवन है, मैं विवाह नहीं कर सकता, क्योंकि सैनिक के जीवन का कोई भरोसा नहीं। विवाह करके मैं एक नारी के जीवन को मिट्टी में नहीं मिला सकता। (उस्मान के परिवार में अधिक विवाह नहीं होता।)

अन्तिम मिलन

(पृष्ठ १० का शेष)

दूसरे दिन सूर्य रश्मियां सारे पथ को सुरम्य बना रही थीं। पथिक अपने पथ पर आ रहा था। आज वह प्रसन्न-वदन था। लम्बे लम्बे डग बढ़ाये आ रहा था। वह अपनी रानी को यह खुश खबरी शीघ्रातिशीघ्र पहुंचा देना चाहता था।

कुछ देर पश्चात् पथिक अपनी कुटिया के सामने था। उसने पुकारा—'रानी !'

रानी आई, दरवाजा खोला। चेहरा देख कर समझ गई कि आज कार्य बन गया है। वह भी प्रसन्न-वदन थी। पथिक ने सब वृत्तान्त ज्यों का त्यों बयान कर दिया।

दूसरे दिन युवक प्रभात कुमार पथिक के घर आया। भोजनोपरान्त वह यामिनी को देखने आयगा। उस का मन बहुत खुश था।

यामिनी ने भी आज अपना शृंगार पूर्ण रीति से किया था। उसका सुन्दर, लावण्यमय चेहरा ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो बादलों के नीले अंचल से चन्द्रमा शरमाता हुआ झांक रहा हो। उसकी मांग में सिन्दूर की ललाई चमक रही थी। एक नीले रंग की सुन्दर साड़ी उसने पहन रखी थी। केशों से सुगन्धित तेल की सुरभित सुवास रह रह कर आती थी। सखियां उसके साथ छेड़ छाड़ कर रही थीं।

घड़ी ने टन् टन् टन् करके बारह बजाये। प्रभात कुमार यामिनी के कमरे में गया। सखियां बाहर हो गईं। प्रभात ने एक बार यामिनी की ओर प्रेम भरी निगाहों से देखा, पर देखते ही 'संध्या बहन...' कहते २ वह धरा पर मूर्छित हो गया।

उषाकान्त को बहुत विस्मय हुआ। शीघ्र ही उसका ध्यान मूर्छित प्रभात की की ओर आकर्षित हुआ। वह शीघ्र ही पानी लेकर आया और उसने प्रभात पर पानी के छींटे डाल कर उसे होश में लाने का प्रयत्न किया। यामिनी कुछ न समझ सकी। वह मन्त्र मुग्ध सी खड़ी रही। प्रभात को जब कुछ होश आया तो उषाकान्त से कहा — भैया, जरा बापू जी को तो बुला लो।

कुछ देर पश्चात् उषाकान्त ने पथिक के साथ कमरे में प्रवेश किया। प्रभात कुमार पथिक से बोला, "बापू जी ! यह यामिनी मेरी बहन है। यह गंगा के मेले में खो गई थी। बहुत खोज करने पर भी पता नहीं लग सका। भगवान् की कृपा है कि आज मेरे सम्मुख खड़ी है। मुझे अच्छी तरह याद है कि यही इसका चेहरा था। इसके ललाट में एक बिन्दु था, जो आज भी है। इसका नाम सन्ध्या है।" इतना कहते २ वह रो उठा।

प्रभात अपनी बहन के साथ घर गया। मां सन्ध्या को देख कर, प्रेम से विह्वल होकर, मूर्छित हो गई। जब होश आया, तो रुन्धे हुए कण्ठ से वह कांपती हुई बोली, 'बे..टी...स—..न्ध्या... बे..टी !'

यामिनी ने कहा...मां !

मां बोल उठी, 'बेटी...मे...री...बेटी' और इतना कहने के साथ ही वृद्धा के प्राण पखेरू सदा के लिए अनन्त में विलीन हो गये। यह उनका अन्तिम मिलन था।

राजार्य सभा का विरोध क्यों ?

(पृष्ठ १७ का शेष)

आर्यसमाज जिस धर्म को मानता है वह मत, मजहब या रिलीजन का पर्यायवाची नहीं है। केवल निःश्रेयस की सिद्धि में सहायक होने के कारण उसका व्यापार क्षेत्र किसी मन्दिर की परिधि तक ही सीमित नहीं है। अभ्युदय का कारण होने के नाते हमारे धर्म का प्रवेश किसी भी क्षेत्र में वर्जित नहीं। जिस धर्म का स्वरूप इतना व्यापक हो और 'धारणा-द्धर्मः' जिसकी परिभाषा हो, राजनीति ही क्या संसार की कोई भी नीति उसकी सीमा से बाहर नहीं रह सकती।

अनेकानेक मतमतान्तरों की तरह वैदिक धर्म अधूरा नहीं है। आर्यसमाज का विश्वास है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। बाइबिल और कुरान आदि की भांति वह कहानियों का संग्रह नहीं है और न ही गीता और उपनिषद् आदि की तरह वह केवल ईश्वर और जीव की व्यवस्था करने वाले ग्रन्थ हैं। हम तो वेद को मनुष्य के लिए आवश्यक सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार मानते हैं। तो क्या उसमें अभ्युदय के मूलाधार राज-नीति का उल्लेख नहीं है? वेद के अध्याय के अध्याय सूक्त के सूक्त और काण्ड के काण्ड राजनीति विषयक ज्ञान से भरे पड़े हैं। जिन अर्थों में वेद धार्मिक पुस्तक है उन्हीं अर्थों में आर्यसमाज धार्मिक संस्था है। मानव धर्म शास्त्र के अध्ययन से यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। कहने को वह धर्मशास्त्र है किन्तु उसमें राजशास्त्र विषयक ज्ञान की कमी नहीं है। सत्यार्थप्रकाश भी हमारा धार्मिक ग्रन्थ है किन्तु उसका भी १।१४ भाग राजनीति विषयक चर्चा से भरा है। वास्तव में राजनीति धर्म की ही विविध शाखाओं में से एक है। प्राचीन ऋषियों ने उसे राजनीति न कह कर राजधर्म के नाम से ही पुकारा है।

आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार की शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना है। शारीरिक तथा सामा-जिक उन्नति धर्म की 'अभ्युदय सिद्धि' का दूसरा नाम है। इसका आधार प्रत्यक्ष रूप से समुचित राज व्यवस्था अथवा राजनीति है। इतना ही नहीं, निःश्रेयस की सिद्धि भी शान्ति और व्यवस्था होने पर ही सम्भव है। शान्ति और व्यवस्था की स्थापना के लिए राज-नीति का आश्रय लेना आवश्यक है। अपने सर्वाङ्गीण विकास के लिए आव-श्यक है कि आर्यसमाज अपने को सन्ध्या तथा हवन तक सीमित न रख कर जनता के दैनिक जीवन से सम्पर्क स्थापित करे और सामयिक समस्याओं तक का हल करने में मनुष्य मात्र का सहायक बने। राशन की खराबी, कपड़े की कमी और चिकित्सा की असुविधा आदि को दूर करने के उत्तरदायित्व से आर्यसमाज अपने को धार्मिक संस्था कह कर नहीं बचा सकता। क्योंकि इन सब का सम्बन्ध उसके मुख्य उद्देश्य 'शारीरिक उन्नति' से है। मनुष्य की सभी समस्याओं का केन्द्र राजनीति है। राजनीति में भाग लिए बिना आर्यसमाज न दूर तक जा सकता है और न देर तक रह सकता है।

२. सामूहिक रूप से नहीं—राजनीति के सम्बन्ध में आर्यसमाज की स्थिति बड़ी हास्यास्पद है। उसे स्थिति कहना भी स्थिति शब्द के साथ अन्याय करना है। एक ओर आर्यसमाज का आदेश है कि प्रत्येक आर्य को वेद द्वारा प्रतिपादित धर्म का ही आचरण करना चाहिए। इसके विपरीत दूसरी ओर आर्यसमाज अपने सदस्यों को राजनीतिक विचारों की स्वतन्त्रता देता है। मानो वेद इस विषय में मौन है और धार्मिक एवं सामाजिक सिद्धान्तों की तरह आर्य समाज के राज नीतिक सिद्धान्त सर्वथा अनिश्चित हैं। परन्तु ऐसा मानना धर्म, वेद, ऋषि दयानन्द तथा सत्यार्थप्रकाश सभी का अपमान करना और अपनी अज्ञता का विज्ञापन करना है। आर्यसमाज के वेद विषयक विश्वास को सामने रखते हुए कहना पड़ता है कि जैसे समस्त आर्यसमाजियों के धार्मिक तथा सामाजिक सिद्धान्त निश्चित हैं और वैसे ही उनके राजनैतिक सिद्धात भी निश्चित हैं और एक हैं। साथ ही जैसे इन धार्मिक तथा सामाजिक सिद्धातों की रक्षा और उनके प्रचार के लिये प्रयत्न करना सभी आर्यों के लिए आवश्यक है वैसे ही राजनैतिक सिद्धातों की रक्षा और उनके प्रचार व प्रसार के लिए प्रयत्न करना सभी आर्यों के लिए समानरूप से आवश्यक है। जब ऐसा है तो जिस रूप में आर्य समाज धार्मिक तथा सामाजिक संस्था है उसी रूप में वह राजनीतिक भी है।

आर्यसमाजी राजनीति में स्वतन्त्र हैं। जिसका जी चाहे वह कांग्रेस में रहे, जिसका जी चाहे हिन्दू सभा में। इतना ही नहीं, यह स्वतन्त्रता इतनी बढ़ी कि आर्यसमाजियों को कम्यूनिस्ट तक बन जाने की छूट दे दी गई। इस प्रकार की घोषणाओं के फलस्वरूप आर्य समाज में फूट पड़ गई। परस्पर विरोधी विचार रखने वाले एक दूसरे को देशद्रोही, जातिद्रोही किंवा धर्मद्रोही कहने लगे। थोड़े से आर्यसमाजी कई समुदायों में बट गये। कांग्रेस में होने के कारण एक व्यक्ति पाकिस्तान को स्वीकार करता है, हिन्दू सभा में होने के कारण दूसरा भारत को अखण्ड रखना चाहता है। दोनों आर्यसमाजी हैं। धार्मिक क्षेत्र में दोनों ही वेद को मानते हैं और सत्यार्थप्रकाश में आस्था रखते हैं। वेद और सत्यार्थ-प्रकाश दोनों ही देश को अखण्ड रखने का आदेश देते हैं। किन्तु राजनीतिक स्वतन्त्रता के नाम पर एक उसे मानता है, दूसरा नहीं। क्या तमाशा है।

हमारा विश्वास है कि एक ही वेद को मानने वाले दो आर्यसमाजी किसी भी विषय में—भले ही वह राजनीतिक हो—दो प्रकार के विचार नहीं रख सकते और न ही परस्पर विरोधी संस्थाओं के सदस्य रह सकते हैं। कहा जाता है कि जैसे इंग्लैंड में एक व्यक्ति लेबर पार्टी का सदस्य है, दूसरा लिबरल का और तीसरा कन्सर्वेटिव का, किन्तु धर्म तीनों का एक ईसाईमत रहता है, उसी प्रकार एक कांग्रेस में रहे और दूसरा हिन्दू सभा में, फिर भी दोनों आर्यसमाजी रह सकते हैं। किन्तु ध्यान रहे, यह बात बाइबिल के मानने वालों में तो चल सकती है, वेद के मानने वालों में नहीं। ईसाइयों के पास ऐसा कोई साधन नहीं जिससे वह अपने विचारों का मिलान कर सकें। इसके विपरीत आर्यसमाज के पास सब सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद है। इसलिए समस्त आर्यसमाजी केवल एक और वह भी ऐसी संस्था से ही सम्बन्ध रख सकते हैं जो वेदानुकूल हो। यह ठीक है कि आर्यसमाज किसी राजनीतिक दल से बधा हुआ नहीं है। किन्तु इसका मतलब यह कदापि नहीं कि वह अन्य संस्थाओं की तरह बिलकुल निराधार है। आर्य-समाज वेद से बधा हुआ है। अतः कोई भी संस्था पूर्णतः वैदिक आदर्शों के अनुकूल नहीं है, अतः आर्यसमाज के लिए आवश्यक है कि वह राजार्य सभा का निर्माण करके सामूहिक रूप से आर्य राजनीति के प्रचार का कार्य करे।

—

देश का घटनाचक्र

(पृष्ठ ४ का शेष)

स्वीकार रहेगा। सरदार पटेल ने इस अवसर पर मालवा-निवासियों को उत्साह वर्धक सन्देश भेज कर राजा और प्रजा को परस्पर ईर्ष्या द्वेष भुलाने का आग्रह किया है।

भारत व पाकिस्तान में कैदियों की वार्ता विफल

दिल्ली में भारत व पाकिस्तान के प्रतिनिधियों में कैदियों के परिवर्तन पर जो विचार चल रहा था उनमें भारतीय प्रतिनिधियों ने पूर्वनिर्धारित समझौते को अविलम्ब क्रियान्वित करने का आग्रह किया। भारत इस बात चीत में सिन्ध को भी शामिल करना चाहता था और पाकिस्तान दिल्ली को। पाकिस्तान के प्रतिनिधि डा० कुरेशी का — जिन पर डा० जोशी की हत्या का आरोप है—परिवर्तन करवाना चाहते थे, परन्तु भारत ने इस प्रकार के जघन्य अपराधों के मुजरिमों को देने से इन्कार कर दिया, क्योंकि दिल्ली के मुसलमानों का पूर्ण निष्क्रमण नहीं हुआ है।

पाकिस्तान द्वारा गाजीलश्कर का निर्माण

पश्चिमी पंजाब की सरकार ने अपनी सीमा रक्षा के लिए एक रक्षक सेना का निर्माण प्रारम्भ कर दिया है। अब तक इसमें १०० गावों से लगभग ५,००० आदमी भर्ती हो चुके हैं। इस संगठन का नाम 'गाजी लश्कर' है। इसका सदर मुकाम स्यालकोट जिले में बद्दोमल्ली नामक स्थान है।

बिहार सरकार द्वारा राष्ट्रीय विद्या पीठ मान्य

बिहार सरकार ने निम्न राष्ट्रीय विद्या पीठों की उपाधियां स्वीकार करली हैं — १. गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, हरिद्वार, २. बिहार विद्यापीठ पटना, ३ जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली, ४. काशी विद्यापीठ बनारस, ५. गुजरात विद्यापीठ देवगढ़, ६ तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, इलाहाबाद, ७ प्रयाग महिला विद्यापीठ इलाहाबाद, ८ विश्वभारती शान्तिनिकेतन।

जूनागढ़ में एक्जीक्यूटिव कौंसिल

काठियावाड़ की रियासतों में लोक तन्त्र की स्थापना हो जाने के कारण यह आवश्यक हो गया है कि जूनागढ़ शासन में जनता का प्रतिनिधित्व हो। इसलिए भारत सरकार ने घोषणा की है कि जूनागढ़ राज्य के लिए एक एक्जीक्यूटिव कौंसिल (शासन परिषद्) नियुक्त करने का निश्चय किया गया है।

अभियुक्तों का परिचय

इस मुकदमे के अभियुक्तों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है —

नाथूराम विनायक गोडसे

गोडसे इस खूनी मुकदमे का प्रधान अभियुक्त है। इसकी अवस्था ३६ वर्ष की है। यह चितपावन ब्राह्मण है। यह रत्नागिरि जिले का रहने वाला है, जहां इसके मां बाप अब भी रह रहे हैं। बचपन में ही यह दक्षिण की एक रियासत सांगली से आया और सांगली हाई स्कूल से मेट्रिकुलेशन परीक्षा पास की। उसने दर्जी का भी काम अच्छी तरह सीख लिया और सांगली में अपनी एक दुकान खोल दी। कुछ दिनों के बाद यह पूना आया और वहां से 'हिन्दू राष्ट्र' नामक एक दैनिक पत्र प्रकाशित करने लगा। उस पत्र का वही सम्पादक हुआ। उसने भारत के विभिन्न प्रान्तों का दौरा किया। एक समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वह प्रमुख कार्य कर्ता था। उसके दो भाई भी हैं।

नारायण दत्तात्रेय आप्टे

इस मुकदमे का दूसरा अभियुक्त नारायण दत्तात्रेय आप्टे हैं। यह बम्बई विश्वविद्यालय से एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण है। यह गोडसे का सहयोगी है तथा 'हिन्दू राष्ट्र' पत्र का मालिक। यह महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता दत्तात्रेय आप्टे का पुत्र तथा प्रसिद्ध उपन्यासकार हरिनारायण आप्टे का सम्बन्धी है। उस ने २६ वर्ष की अवस्था में शादी की तथा अहमदनगर मिशन स्कूल में अध्यापक का कार्य किया।

विष्णु रामचन्द्र करकरे

यह अहमद नगर का ४० वर्षीय ब्राह्मण है। यह एक होटल का स्वामी है, तथा फिल्म में एक्टर का काम करता है। यह विवाहित है।

दिगम्बर रामचन्द्र बाडगे

यह खान देश का एक ब्राह्मण है। पूना के छुरे और भाले आदि छोटे छोटे हथियारों की उसकी दुकान है। इसकी अवस्था ४२ वर्ष की है। यह धार्मिक त्योहारों का 'गन्धाला गायक' है।

मदनलाल काश्मीरीलाल पहवा

यह पंजाब का एक शरणार्थी है जो नागर जिले के विषपुर शिविर में रहता था। यह २८ वर्ष का तरुण युवक है।

शंकर किस्तैया

इसकी अवस्था ६० वर्ष की है। यह पूना में रहता है। लोग कहते हैं कि यह दिगम्बर रामचन्द्र बाडगे का रिक्शा वाहक है।

गोपाल विनायक गोडसे

यह प्रधान हत्यारे नथूराम गोडसे का छोटा सगा भाई है। इसकी अवस्था २८ वर्ष की है। यह अभी तक अविवाहित है।

विनायक दामोदर सावरकर

इनका जन्म १८८३ में नासिक में हुआ था। पूना में इनकी शिक्षा दीक्षा हुई थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुए और इंगलैण्ड भेज दिये गये। वहां उन्होंने श्रीमती कामा तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के आधीन भारतीय स्वतन्त्रता के लिए खूब कार्य किया। वह ये नासिक षड्यन्त्र के मामले में गिरफ्तार कर लिए गये। किन्तु १९१० में ये जहाज से कूद गये। भूमध्य सागर में पचासों मील तैरकर मार्सेल्स पहुंचे फिर भी ये पकड़ लिए गये और इन्हें १५ वर्ष काला पानी की सजा दी गई और अण्डमन भेज दिये गये। १९३७ के कांग्रेस मन्त्रिमण्डल के समय में अण्डमन से कारामुक्त कर दिए गये। कुछ दिनों तक ये सभी कार्यों से अलग रहे। ये एक साहित्यिक व्यक्ति हैं और बड़ कविताएं लिखी हैं।

दत्तात्रेय सदाशिव परचुरे

यह एक डाक्टर हैं। ग्वालियर में रहते हैं। इनकी अवस्था ४५ साल की है। लोग कहते हैं कि यह गोडसे तथा सावरकर के अन्तरंग मित्र हैं।

दक्षिण अफ्रीका में जनरल स्मट्स की पराजय

जनरल स्मट्स जो एक लम्बे अर्से से दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मंत्री चले आ रहे थे नये चुनाव में हार गये हैं। स्मट्स की पार्टी को इलेक्शन में ७१ सीटें मिली हैं जबकि उनकी विरोधी पार्टी के नेता डा० मालन को ७८ सीटें मिली हैं। यह स्मरणीय है कि जनरल स्मट्स चर्चिल पन्थियों के अगुवा तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के स्तम्भ माने जाते रहे हैं।

भूल-सुधार

२४ मई सन् १९४८ के साप्ताहिक वीर अर्जुन के २४ पृष्ठ पर—जो हिन्दी शब्द कोशानचक्र नामक पहेली प्रकाशित हुई है उसमें चक्र के ३ नम्बर के खाने में भूल से ए की मात्रा (े) के स्थान पर ओ की मात्रा (ो) छप गई है। कृपया पाठक ठीक कर लें।

—विज्ञापन मैनेजर

पहेली सं० ३५ की संकेतमाला

बायें से दायें

१ राजधानी का प्रमुख समाचार पत्र।
३ दुकानदार के लिए बहुत लाभकारी है।
५ अच्छे 'पर नाटक की सफलता का बहुत आधार होता है।
७. अतिथि को''देना हिन्दुस्तान का खास रिवाज है।
८. दिन को यह निस्तेज होता है।
१०. प्रतिष्ठा।
११. यह न हो तो पेट के लाले पड़ जाते हैं।
१२. श्रवणेन्द्रिय।
१३. इस उमर में भारी काम की आशा नहीं की जा सकती।
१४. गरमी के दिनों में लोग देर तक इस पर पड़े रहते हैं।
१६. बड़ा व गोल तकिया।
१७. यह बिगड़ जाय तो संगीत का मजा नहीं रहता।
१८. डरपोक आदमी को इस जानवर की उपमा दी जाती हैं।
२०. खरगोश।
२१. उमर।
२३. वैद्यों के विशेष उपयोग की वस्तु है।
२४. प्रायः पदार्थ आग 'पर रखने से''हो जाते हैं।
२५. इससे काम कर देने से गाहक खुश हो जाते हैं।

ऊपर से नीचे

१. बहादुरी।
२. दवाई का''ठीक न हो तो उसका उलटा प्रभाव हो सकता है।
३. "शासक" की उलट फेर।
४. परमात्मा।
६. "नियम" की गड़बड़ी से बना है।
९. वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण अङ्ग है।
१०. इस तालाब में राजहंस रहते हैं।
१२. आलसी आदमी इससे बचता है।
१३. सादापन।
१५. यहां पैसे बनते हैं।
१७. यह पेड़ बहुत ऊंचा होता है।
१९. खतरनाक रोगी अच्छे वैद्य की''से ठीक हो सकता है।
२०. खरबूजे की तरह का एक स्वादिष्ट फल।
२२. मृत्यु का देवता।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

(१०७) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३५] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) **न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)**

---------- इस लाइन पर काटिये ----------

साथ के दोनों वर्गों की फीस क्या करने वाले के लिये शुल्क।
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।
नाम ....
पता ....
ठिकाना .... उत्तर नं० ......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५ फीस १)
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है
नाम ....
पता ....
ठिकाना .... उत्तर नं० ......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५ फीस १)
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है
नाम ....
पता ....
ठिकाना .... उत्तर नं० ......

इन तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों को एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजी हो तो बाकी पर लकीर खींच दें।

---------- इस लाइन पर काटिये ----------

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो असपष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि के बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १२ जुलाई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ७ जुलाई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३५, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २ जुलाई १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'
का
संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये
इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी प्रेमियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।
मूल्य १) डाक व्यय ।-)

विविध

बृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]
भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ||।=)

बहन के पत्र
[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]
गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेम दूती
श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ||)

वैदिक वीर-गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]
इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जागृत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ||।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]
ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास
सरला की भाभी
[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]
इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]
महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १||) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस
नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य २) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]
मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ||=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]
जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]
अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १||) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन होआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये
हिन्दू-संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]
पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री वसन्त]
प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]
रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)
लेखक—श्री विराज
उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। मूल्य १||), डाक व्यय ।=।

प्राप्ति स्थान
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति—लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा
इस पुस्तक में लेखक ने भारत का और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।
मूल्य १||) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान
साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तेल विज्ञान
तिलहन से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तुलसी
तुलसीवन के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के ढंग बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर
अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज
अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक
(ले० प्रो० फकीरचन्द जी एम. एस सी.)
अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १||) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान
घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की
'जीवन की झांकियां'
प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ||)
द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ||)
दोनों खण्ड a एक साथ लेने पर मूल्य ||)

मुद्रक प्रकाशक ... ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छप कर प्रकाशित किया

वीर अर्जुन

"एशिया का कोई भी देश राजनैतिक-दासता को सहन नहीं करेगा"

उटकमण्ड मे सुदूरपूर्व संयुक्तराष्ट्रीय आर्थिक कमीशन का उद्घाटन करते हुए पं० नेहरू ने उपर्युक्त सिंह-गर्जना की है।

सुदूरपूर्व आर्थिक कमीशन के १९४८ के लिये निर्वाचित प्रधान डा० जानमथाई

गांधी-हत्या केस का सबसे मुख्य अभियुक्त नाथूराम विनायक गोडसे

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २६ जेष्ठ सम्वत् २००५

चौधरी रहमत अली

पाकिस्तान अब क्रियारूप में आ चुका है, परन्तु एक समय यह सचमुच ही ऐसा स्वप्न था जिसके सत्य होने की कल्पना शत्रु-मित्र किसी ने भी नहीं की थी। यह स्वप्न सिद्ध हुआ और भारत के करोड़ों लोगों के इस को अवांछनीय समझे जाने पर भी इसे रोका नहीं जा सका। इसे कांग्रेसी नेताओं की राजनैतिक अदूरदर्शिता कहें या मुस्लिमलीगियों और अंग्रेजों की मिलीभगत—परन्तु अब इस सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि संसार के नक्शे पर एक नया देश—पाकिस्तान—बन गया, जिस की कभी किसी ने कल्पना भी न की थी।

इस पाकिस्तान के स्वप्न के सूत्रधार थे चौधरी रहमत अली। चौधरी साहब ने 'पाक एशिया' की योजना बना कर सारे एशिया पर मुस्लिम साम्राज्य का स्वप्न देखा था। 'इण्डिया' का 'दीनिया तो अभी तक नहीं बना, परन्तु पाकिस्तान की सिद्धि होने से उनकी कल्पना को और उर्वरा भूमि मिल गई। अनेक पैम्फलेट लिखकर 'मुइनिस्तान' 'नसीरिस्तान' आदि स्थानों के रूप में प्रत्येक प्रान्त में उन्होंने अलग २ पाकिस्तान स्थापित करने की योजना का प्रचार किया है और भारतीय मुसलमानों के हृदय में यह विषबीज शनैः शनैः अप्रकट रूप से अंकुरित हो रहा हो तो किसी को यह आश्चर्यजनक बात नहीं माननी चाहिये।

भारतीय मुसलमानों की वफादारी पर हम सन्देह नहीं करते, परन्तु जिस मनोवृत्ति के कारण पाकिस्तान का जन्म हुआ है वह मनोवृत्ति एक रात में ही एकदम पाकिस्तान विरोधी दिशा में प्रगति प्रारम्भ कर देगी, ऐसा विश्वास करना भी हमें लगता है कि मनोविज्ञान के सर्व सम्मत सिद्धान्तों की अवहेलना करना है। साम्प्रदायिकता को भुलाकर सर्वथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सोचने पर भी हमें इस विषय में सतत जागरूकता की नीति ही सर्वथा समबोचित प्रतीत होती है।

ज्यों २ हम पाकिस्तान की पृष्ठ भूमि और मुस्लिम लीग के विगत इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं त्यों २ हमें यह स्पष्ट होता जाता है कि इस्लाम में कहीं तो कोई ऐसी चीज छुपी हुई है जिसके कारण एक राह चलता सामान्य मुसलमान भी मजहब के नाम पर बड़ी आसानी से भड़काया जा सकता है। तेरह सौ साल पुरानी जीर्ण शीर्ण अधिकांश विज्ञान-विरुद्ध बातों पर भी सन्देह की उत्पत्ति मात्र से जहां 'काफिर' होने का खतरा रहता हो, वहां यदि यह संकुचित दृष्टिकोण सदा बना रहे, तो इसमें आश्चर्य क्या है।

अत्यन्त उदार दृष्टिकोण रखते हुए जिस 'इस्लामी बन्धुता' को इस्लाम का आधार समझा गया है, वही इस्लाम की सब से बड़ी कमजोरी भी है। कमजोरी इस अंश में कि इसके कारण अपने मतवादी को अच्छा समझने के कारण जो परमत-असहिष्णुता की भावना उत्पन्न होती है वह कभी शान्ति को चिर-स्थायी नहीं बनने देगी। फिलस्तीन के मामले में जिस प्रकार समस्त मध्यपूर्व के मुस्लिम राष्ट्र एक स्वर से बोलने लगे, उससे यह स्पष्ट आभास होता है कि यदि इस परमत-असहिष्णुता को थोड़ी सी भी हवा दी जाए तो यह आग किस प्रकार सारे संसार को ज्वालामय बना सकती है।

चौधरी रहमतअली अठारह वर्ष इंगलैण्ड में रह कर अब पुनः लाहौर लौटे हैं। एक मुलाकात में उन्होंने कहा है—

"मैं मुस्लिम लीग से बाहर रह कर गत तीन जून की योजना को समाप्त करने का प्रयत्न करूंगा। भारत संघ में जो साढ़े पांच करोड़ मुसलमान बाकी हैं, उनको मैं भुला नहीं सकता। उनका मैं एक पृथक् राष्ट्र बनाना चाहता हूं यदि समझौते से बातचीत हल न हुई तो हमारे पास और भी साधन हैं। सब मुसलमानों को मिल कर शीघ्र ही कश्मीर और फिलस्तीन का युद्ध जीतना चाहिए।" पाकिस्तान के 'पाकिस्तान टाइम्स' ने तो यह भी खबर दी है कि 'उनके समर्थकों का वहां एक सम्मेलन जल्दी ही होने वाला है।'

यदि चौधरी रहमत अली के समर्थक यहां भारत में भी आ गये—और अभी तक पाकिस्तान से वापिस आये मुसलमान शरणार्थियों के रूप में ऐसा कोई व्यक्ति यहां नहीं आया है, ऐसी गारण्टी कौन दे सकता है—तो जिस विष-बीज के अंकुरित होने की दुश्शंका से हम भयभीत हैं उसकी ओर समय रहते अपनी सरकार के अधिकारियों का ध्यान खींचना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं। चौधरी साहब की कुछ पुस्तिकायें पहले कई प्रान्तों में जब्त भी हो चुकी हैं। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों को भविष्य में इस विषय में और अधिक जागरूक रहना चाहिये।

निजाम और भारत

पिछले लगभग एक पक्ष से हैदराबाद निजाम और भारत सरकार के मध्य जो वार्ता चल रही है उसका निश्चित आधार क्या है यह अब तक जनता को विदित नहीं है। गत सप्ताह ही हैदराबाद के प्रधान मन्त्री भारत सरकार द्वारा दिये गये निश्चित प्रस्तावों पर निजाम का उत्तर लेकर दिल्ली आने वाले थे, परन्तु वे नहीं आये केवल इतना ही नहीं, उन प्रस्तावों के स्पष्टीकरण के लिये मीर लायकअली ने भारत सरकार को दो पत्र भी भेजे हैं। इसी स्पष्टीकरण में ही तो अब तक सारा समय व्यतिवाहित होता रहा है। जिस प्रकार निजाम हैदराबाद ने भारत के साथ यथास्थित समझौतों का भंग किया है, भारत की सीमाओं पर निजामी पुलिस ने आक्रमण किये हैं और जिस प्रकार रियासत के अन्दर हिन्दुओं का जीवन और सम्पत्ति रजाकारों की दानवता से प्रतिक्षण आतंकित रहती है उसको देखते हुए अभी तक भारत सरकार को अब से बहुत पहले ही अत्यन्त कठोर कदम उठाना चाहिये था। परन्तु मीर लायक अली इतने वाकपटु मालूम होते हैं कि जब ऐसी घड़ी आ भी गई तो वे भारत सरकार के प्रस्तावों के स्पष्टीकरण में ही काल-हरण करना श्रेयस्कर समझते हैं। संस्कृत के महाकवि बाणभट्ट के शब्दों में मीर लायक अली को 'महासान्धिविग्रहिक' ही कहना उचित है।

यदि निजाम यथाकथंचित् कालहरण को ही अपने लिए श्रेयस्कर समझें तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। परन्तु यदि भारत सरकार भी इस काल-हरण में किंचिन्मात्र सहायक हुई तो यह नहीं भूल जाना चाहिये कि अब तक निजाम को जो ढील दी गयी है जनता उसी से अत्यन्त असन्तुष्ट है। जब जनता की अधीरता सीमा तक पहुंच गई हो तब इस जनतन्त्र और जनशक्ति के युग में उसकी अवहेलना करना न केवल जनता के भाग्य से, अपितु अपने भाग्य से भी खिलवाड़ करना ही होगा। जब जलप्लावित नदी का पूर सीमातिक्रमण कर जाता है, तब नदी के कगार पर के वृक्षों का क्या हाल होगा?

पत्रों में ऐसा समाचार प्रकाशित हुआ है कि हैदराबाद के प्रधानमन्त्री नये शासन विधान में ६० प्रतिशत मुस्लिम अल्पसंख्यकों को एवं ४० प्रतिशत बहुसंख्यक हिन्दुओं को स्थान देने को तय्यार हैं। प्रारम्भ में तो यह अनुपात इसी प्रकार रहेगा, परन्तु पीछे धीरे २ परिवर्तित होते २ यह अनुपात उलट जाएगा—अर्थात् ४० प्रतिशत मुसलमान और ६० प्रतिशत हिन्दू। यदि यह समाचार सत्य है तो आश्चर्यजनक है। और यदि पं० जवाहर लाल नेहरू थोड़ी-सी देर के लिये भी इस प्रकार के अप्रजातन्त्रीय सिद्धान्त के साथ क्रियात्मक रूप में समझौता कर लेते हैं तो यह महान् अनर्थ होगा। 'प्रारम्भ' और 'पश्चात्'—इन दो शब्दों के फेर से क्या कोई बुराई अच्छाई में परिणत हो सकती है? जो चीज लोकतन्त्र के विरुद्ध है वह यदि कालान्तर में अनर्थकारी है तो वह इस समय भी उतनी ही अनर्थकारी है।

हमारे प्रधानमन्त्री पग पग पग पर जनतन्त्र का नारा बुलन्द करते हैं। सारे संसार में वे जनतन्त्र के अप्रतिम समर्थक माने जाते हैं। जनतन्त्र, जनतन्त्र, जनतन्त्र—यह उनकी अहर्निश घोषणा है। फिर हैदराबाद में ही यह जनतन्त्र की हत्या क्यों?

और यदि हैदराबाद में इस प्रकार का अजनतन्त्रीय शासन-सिद्धान्त स्वीकरणीय हो कि ८८ प्रतिशत जनता को केवल ४० प्रतिशत स्थान मिले और १२ प्रतिशत लोगों को ६० प्रतिशत, तो क्या हम विनयावनत वाणी में पूछ सकते हैं कि काश्मीर में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को ६० प्रतिशत शासनाधिकार क्यों नहीं दिया जाता?

न्याय, न्याय है और अन्याय, अन्याय। यदि भारत सरकार ने और हमारे प्रधानमन्त्री ने इस प्रकार का अन्याय एक बार स्वीकार कर लिया तो समग्र राष्ट्र-शरीर में एक ऐसा भयंकर विष व्याप्त हो जाएगा जो प्रत्येक अंग को क्षत-विक्षत और गलित कर नष्ट करके छोड़ेगा।

कांग्रेसियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई

१५ अगस्त के बाद देश की शासन-सत्ता का सूत्र कांग्रेस के हाथ में आते ही देश की जनता में तो आत्मविश्वास की और अपने आप को स्वतन्त्र समझने की भावना पैदा हुई, परन्तु वे कांग्रेस कार्यकर्ता जो निःस्वार्थ देश प्रेम और अपने त्याग व तपस्या के कारण जनमन के आराध्य बने हुए थे, उनका नैतिक धरातल इतना गिर गया कि अब जनता उनकी आराधना करने के बजाय उनको समालोचना की दृष्टि से देखने लगी।

यद्यपि यह सब कांग्रेसियों के विषय में सत्य नहीं है, परन्तु इस समय देश में सर्व व्यापक बने भ्रष्टाचार और रिश्वत खोरी का बहुत कुछ दुःश्रेय ऐसे ही लोगों को दिया जा सकता है जिन्होंने अपने पहले के त्याग को अब इस रूप में ब्याज सहित उगाहना शुरू किया है। इसी का परिणाम है कि युक्तप्रान्त जैसे कांग्रेस के गढ़ में एक हजार कांग्रेस कर्मियों के ऊपर कांग्रेस कमेटी की ओर से अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार किया जा रहा है।

भारत हैदराबाद चर्चा

इस सप्ताह भी जनता बड़ी उत्सुकता से हैदराबाद से चलने वाली वार्ता के परिणाम की प्रतीक्षा करती रही है, परन्तु अभी तक कुछ भी परिणाम पता नहीं लगा है। बीच में निजाम ने प० नेहरू को हैदराबाद आने का निमन्त्रण दिया था, परन्तु वह अस्वीकृत कर दिया गया। फिर रियासती सचिवालय के सेक्रेटरी श्री मेनन के हैदराबाद जाने की चर्चा चली पर वह भी कार्यान्वित न हुई। अब पता चला है कि हैदराबाद के प्रधानमन्त्री मीर लायक अली और निजाम के वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मौंकटन इस सप्ताह की समाप्ति से पहले पुन: दिल्ली पहुंच रहे हैं और भारत सरकार से पुन: नये सिरे से बात चीत शुरू होने वाली है। यह बारम्बार कालातिपात क्यों? क्या अंग्रेज बन्धु (माउण्टबेटन और उनके अभिन्न मित्र सर वाल्टर माकटन) जाते जाते कोई नया गुल तो नहीं खिलाता जायेगा?

पठानकोट-जम्मू सडक तैयार

भारत और काश्मीर के मध्य यातायात के लिये एकमात्र स्थल मार्ग के रूप में ६५ मील लम्बी पठानकोट जम्मू सड़क बनकर तय्यार होने वाली है। ३० जून तक इस पर आवागमन प्रारम्भ हो जाएगा। ३ मास में अद्भुत कुशलता के साथ इस सड़क को बनाने में तीन करोड़ रुपया व्यय हुआ है। सड़क पर तीन बड़े पुल और १५०० छोटे पुल बनाये गये हैं।

गांधी हत्याकांड का मुकदमा

२७ मई को यह तय हुआ था कि गांधी हत्याकांड के मुकदमे की सुनवाई १४ जून से होगी, परन्तु अब निश्चय हुआ है कि इस मुकदमे की दैनिक सुनवाई २२ मई से होगी। सफाई पक्ष के वकील श्री एल० बी० भोपटकर की प्रार्थना पर यह समय दिया गया है। सफाई के वकीलों को अभियुक्तों से जेल में मिलने की आज्ञा दे दी गई है। सब अभियुक्तों को स्पेशल हवालात में रखा गया है।

सुहरावर्दी नजरबन्द

बंगाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तथा इस समय पाकिस्तान विधान परिषद् के सदस्य श्री हुसन शहीद सुहरावर्दी को पूर्वी बंगाल सरकार ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द कर लिया है आप कलकत्ता से विमान द्वारा सद्भावना मिशन पर ढाका पहुंचे थे।

अमृतसर और श्रीनगर में हवाई सर्विस

अमृतसर से श्रीनगर तक माल की ढुलाई के लिए हवाई यातायात लाईसेंसिंग बोर्ड ने हवाई सर्विस प्रारम्भ की है। डालमिया जैन एयरवेज लिमिटेड को ५ जून से सर्विस चालू करने के लिए अस्थायी लाइसेंस मिल गया है। यह सर्विस सप्ताह में तीनबार चला करेगी।

पाकिस्तान के पांच जिलों में प्रवेश की अनुमति

पश्चिमी पंजाब में अपहृत स्त्रियों तथा बच्चों के उद्धार के कार्य में जो कठिनता आ रही थी उसका प्रमुख कारण यह था कि गुजरात, स्यालकोट, झेलम, रावलपिण्डी और कैमलपुर इन पांच जिलों में अभी तक भारतीय कार्यकर्ता नहीं जा सकते थे। किन्तु अब भारत सरकार के बारम्बार आग्रह से इन जिलों में भी कार्यकर्ताओं को जाने की अनुमति मिल गई है। आशा है कि अब इस कार्य में वह मन्दता नहीं रहेगी।

पाकिस्तान के कर्मचारियों की हड़ताल

पिछले दस दिन से पाकिस्तान के सरकारी कर्मचारी जो हड़ताल कर रहे हैं उनको अर्थविभाग की ओर से मौखिक नोटिस दिया गया है कि उन्हें हड़ताल के दिनों का वेतन नहीं मिलेगा। कर्मचारियों ने धमकी दी है कि यदि सरकार से हमें निर्वाहयोग्य वेतन नहीं मिला तो हम भारत चले जायेंगे।

इण्डियन नेशनल एयरवेज का राष्ट्रीय करण

इण्डियन नेशनल एयरवेज एक निजू कम्पनी है। यह सम्भावना है कि भारत सरकार उस पर कब्जा करले। इस समय यातायात सचिवालय कम्पनी के प्रबन्धकों से समझौते की चर्चा कर रहा है। शर्तें तय हो जाने के बाद विशेषज्ञ कम्पनी की पूंजी व देनदारी की जांच करेंगे और तब क्रय मूल्य निर्धारित किया जायगा। यदि यह परीक्षण सफल रहा तो सरकार अन्य वायु कम्पनियों का भी राष्ट्रीयकरण करने पर विचार करेगी।

कम्यूनिस्ट का सरकार को उलटने का षड्यन्त्र

पश्चिमी बंगाल के गृहमन्त्री श्री किरणशंकर राय ने एक वक्तव्य में यह घोषणा की है कि बंगाल के कम्यूनिस्टों का मद्रास और बर्मा के कम्यूनिस्टों से सम्पर्क होने के पुष्कल प्रमाण हैं। सरकार द्वारा पकड़े गये बुलेटिनों से यह भी पता चलता है कि कम्यूनिस्ट पार्टी सारे देश में वर्तमान कांग्रेसी सरकारों को उलटने के लिये हड़तालों का संगठन कर रही है। पार्टी का अन्तिम उद्देश्य जनता द्वारा सशस्त्र विद्रोह करना है। पार्टी के अधिकांश कार्यकर्ता भूमिगत गुप्त रूप से कार्य कर रहे हैं।

कच्छ का शासन केन्द्रीय सरकार के हाथ में

कच्छ रियासत की शासन व्यवस्था भारत सरकार की ओर से श्री सी० के० देसाई ने अपने हाथ में ले ली है। शीघ्र ही कच्छ के समुद्र तट पर एक बन्दरगाह बनाने का कार्य शुरू कर दिया जाएगा। राजपूताने के लिये सड़कें भी यथा शीघ्र बनेंगी।

दिल्ली में एक जुलाई से पचास नये स्कूल

सारे भारतवर्ष में अनिवार्य बुनियादी शिक्षा के द्वारा जनता के सांस्कृतिक और नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिये दिल्ली में परीक्षण के रूप में एक जुलाई से पचास नये स्कूल खुलेंगे — जिससे कि अन्य प्रान्तों के लिये फिर ये ही स्कूल आदर्श का काम दे सकें।

भारत में चैक विशेषज्ञ

चैकोस्लावाकिया के कुछ टेक्नीकल विशेषज्ञों का एक दल इस समय भारत में भ्रमण कर रहा है, जो यहां रासायनिक पदार्थों, हवाई जहाजों, टेलीफोन यन्त्रों, विद्युत् लाइनों और बिजली के कारखानों आदि से सम्बन्धित उद्योग बड़े पैमाने पर खोलने की सम्भावनाओं के विषय में जानकारी एकत्रित कर रहा है। यह दल शीघ्र ही अपनी रिपोर्ट उद्योग विभाग को सौंप देगा।

लन्दन में पौंडपावना वार्ता प्रारम्भ

भारत की पौण्ड पावना वार्ता लन्दन में शुरू हो गई है। यह रकम लगभग एक अरब बीस करोड़ रुपया है। भारत सरकार के अर्थमन्त्री श्री षणमुखम् चेट्टी के नेतृत्व में अर्थ विशेषज्ञों का एक प्रतिनिधि मण्डल वहां पहुंचा हुआ है। इस प्रतिनिधि मण्डल के साथ रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के गवर्नर सर चिन्तामणि डी० देशमुख भी हैं। लगभग तीन सप्ताह के अन्दर अन्दर सब मुख्य बातें समाप्त हो जायेंगी इस बातचीत के परिणाम पर ही भारत की औद्योगिक योजनाओं का भविष्य निर्भर है।

फिलस्तीन संघर्ष

सुरक्षा कौंसिल ने अरबों और यहूदियों को एक मास तक युद्ध बन्द करने का आदेश दिया था। अरबों और यहूदियों ने यद्यपि इस आदेश को मान भी लिया है पर अभी तक दोनों पक्षों में फिलस्तीन के अन्दर युद्ध जारी है। यहूदियों की एक बख्तर बन्द गाड़ी ने ट्रान्सजोर्डन सीमा पर आक्रमण कर दिया है और वह ८ मील अन्दर तक घुस गई है। मिस्री सेनाओं ने इसरायल सीमा के अन्दर दो स्थानों पर हमला किया है। 'युद्ध रोको' आदेश के सम्बन्ध में दोनों पक्षों में जो अर्थसम्बन्धी मतभेद उत्पन्न हो गये थे उन पर सुरक्षा कौंसिल में विचार किया जा रहा है। अरबों ने युद्ध बन्द करने के सम्बन्ध में जो जो शर्तें रखी हैं उनमें से मुख्य यह है कि अरबों को कोई भी विराम सन्धि तब तक मान्य नहीं होगी जब तक कि यहूदी प्रवासियों का आना बन्द नहीं किया जाएगा।

अर्थसम्बन्धी मतभेदों के कारण इस संघर्ष के निकट भविष्य में ही बन्द हो जाने में अब सन्देह होने लगा है।

अमेरिका का बृहत—सैनिक बजट

अमेरिका की प्रतिनिधि सभा की एक विशेष समिति ने कांग्रेस से अमेरिका के सबसे बड़े शान्ति कालीन सैनिक बजट के लिये ११ अरब १ करोड़ ६६ लाख ६७ हजार दो सौ पचास डालर की सिफारिश की है जो देश की पैदल सेना, नौसेना और हवाई सेना में खर्च किये जायेंगे। सात लाख नब्बे हजार व्यक्तियों की पैदल सेना और चार लाख चवालीस हजार पांच सौ व्यक्तियों की हवाई सेना बनाई जायगी। पहली जुलाई तक पांच लाख चालीस हजार व्यक्तियों की पैदल सेना और तीन लाख बयानवे हजार पांच सौ आठ व्यक्तियों की हवाई सेना तैयार हो जायगी।

नया काश्मीर

अगर फिरदौस बरूये जमीनस्त।
हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त ॥

—यदि इस धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है। यही धरित्री का स्वर्ग काश्मीर पाकिस्तानी दानवों की संहार-स्थली बनी हुई है शेरे कश्मीर शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में प्रत्येक कश्मीरी बाल-वृद्ध-तरुण ने इसी भूमि पर पाकिस्तान की कब्र खोदने का निश्चय किया है। कश्मीरी चाहते हैं कि भारतीय सेनाओं की सहायता से सुरक्षा परिषद् के 'कश्मीर कमीशन' के आने से पहले ही इन आक्रान्ताओं को अपनी जन्मभूमि से निकाल बाहर करें। इस दृष्टि से जून का यह महीना महत्वपूर्ण है।

ऊपर जम्मू व कश्मीर रियासत का नक्शा दिया गया है। नीचे (१) कश्मीर की बाल सेना परेड कर रही है। और (२) कश्मीर स्वातन्त्र्य समारोह के अवसर पर उसी बाल सेना के एक सैनिक से पं० नेहरू हाथ मिला रहे हैं।

यह नई पौध ही नया काश्मीर है नया काश्मीर जिन्दाबाद।

हिन्दी-जगत

हम न्याय चाहते हैं

★

उर्दू के आदि आचार्य प्रसिद्ध कवि सैयद इंशा अल्लाह खां का स्वयं स्पष्ट कहना है कि —

'शाहजहानाबाद के खुशबयानों (शिष्ट-वक्ताओं) से मुत्तफिक (सहमत) होकर मुनाहिद (परिगणित) जबानों से अच्छे-अच्छे लफ्ज निकाले और बाजे इबारतों (कतिपय वाक्यों) और अलफाज (शब्दों) में तसर्रुफ (परिवर्तन) करके और जबानों से अलग एक नई जबान पैदा की जिसका नाम उर्दू रक्खा।'

(दरिया-ए-लताफत (सन् १८०८ ई०) अंजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली, सन् १९३६ ई०, पृष्ठ २)।

× × ×

उर्दू के अदीबुलमुल्क नवाब सैयद नसीर हुसेन खां 'खयाल' साहिब का खुद फरमान है कि —

'उमदतुलमुल्क (नव्वाब अमीर खां) ने और उमरा (अमीरों) के मशविरा (परामर्श) से देहली में एक उर्दू 'अंजुमन' (सन् १७४४ ई० कायम० की। उसके जलसे होते, जबान के मसलेय (प्रश्न) छिड़ते, चीजों के उर्दू नाम रक्खे जाते, लफ्जों और मुहावरों पर बहसें होतीं और बड़े रगड़ों-झगड़ों और छान-बीन के बाद 'अंजुमन' के दफ्तर में वह तहकीकशुदा (संशोधित) अलफाज व महावरात (मुहावरे) कलमबन्द (लिपिबद्ध) होकर महफूज (सुरक्षित) किए जाते; और नकोल 'सियरुल् मुताखरीन' इनकी नकलें हिन्द के उमरा (अमीरों) व रूसा (रईसों) के पास भेज दी जातीं और उसकी तकलीद (अनुकरण) को फख (गर्व) जानते और अपनी-अपनी जगह उन लफ्जों को फैलाते।'

(मुगल और उर्दू, एम० ए० उसमानी एंड सन्स, फिपर्स लेन, कलकत्ता, सन् १९३१ ई०, पृष्ठ ६०)।

× × ×

उर्दू के परम प्रतिष्ठित कोषकार मौलवी सैयद अहमद देहलवी आप ही बताते हैं कि —

'वह लोग तुर्की उन्नस्ल (तुर्कवंशी) थे या फारसी उन्नस्ल (फारसवंशी) या अरबी उन्नस्ल (अरबवंशी) वह हिन्दी की मुताबकत (अनुकूलता) किस तरह कर सकते थे?'

(फरहंगे आसफिया, बिल्द अव्वल का मोकद्दमा, रिफाहे आम प्रेस लाहौर, सन् १९०१, पृष्ठ ८)।

× × ×

उर्दू के प्रमुख तबलीगी नेता ख्वाजा हसन निजामी देहलवी साहिब आप ही सब को समझाते हैं कि —

'यह हिन्दी जबान ममालिक मुत्तहदा (युक्तप्रदेश) अवध और रुहेलखंड और सूबा बिहार और सूबा सी० पी० और हिन्दुओं की अक्सर देसी रियासतों में मुरव्वज (प्रचलित) है। गोया, बंगाली और बरमी और गुजराती और मरहठी वगैरह सब हिन्दुस्तानी जबानों से ज्यादा रिवाज हिन्दी यानी नागरी जबान का है। करोड़ों हिन्दू औरत-मर्द अब भी यही जबान पढ़ते हैं और यही जबान लिखते हैं, यहां तक कि तकरीबन एक करोड़ मुसलमान भी जो सूबा यू० पी० और सी० पी० और सूबा बिहार के देहात में रहते हैं या हिन्दुओं की रियासतों में बतौर रियाया के आबाद हैं और उनके हिन्दू रियासतों के खास हुक्म के सबब से हिन्दी जबान लाजमी तौर से हासिल करनी पड़ती है, हिन्दी के सिवा और कोई जबान नहीं जानते।'

× × ×

(कुरान मजीद के हिंदी अनुवाद की भूमिका, सन् १९२९ ई०)

मुस्लिम साहित्य के प्रकाण्ड पंडित, देशभक्त अल्लामा सैयद सुलेमान साहिब नदवी का खुला निर्देश है कि—

'हम अपने बदगुमान (भ्रान्त) दोस्तों को बावर (सचेत) करना चाहते हैं कि यह लफ्ज 'हिन्दुस्तानी' मुसलमानों के इसरार (हठ) से और मुसलमानों की तिफ्लतसल्ली (सुखसन्तोष) के लिए रक्खा गया है, और इससे मुराद (इष्ट) हमारी वही जबान है जो हमारी आम बोलचाल में है। हमको जो शिकायत है वह यह है कि हिन्दी और हिन्दुस्तानी को हममानी (एकार्थवाची) और मुरादिफ (पर्याय) क्यों ठहराया गया है?'

और

'यह समझना भी दुरुस्त (ठीक) नहीं कि इस तजवीज (निश्चय) को पेश करने वालों का मकसद (उद्देश्य) है कि हम अपनी जबान में कोई ऐसी तबदीली (परिवर्तन) कर लें जिससे वह 'हिन्दी' या हिन्दी के करीब बन जाय। हाशा व कल्ला (कदापि) इस किस्म की कोई बात नहीं है, बल्कि दरऐनहि (वस्तुतः) इसी उर्दू, इसी जबान, इसी बोलचाल को जो हम बोलते हैं, हम हिन्दुस्तानी कहते हैं।'

(नुकूशे सुलेमानी, दारुल् मुसन्नफीन, आजमगढ़, सन् १९४८ ई०, पृष्ठ १०६)

× × ×

फ्रांस के कट्टर ईसाई पंडित भी गार्सां-द-तासी भी यही कहते हैं कि—

'लफ्ज हिन्दुस्तानी उस जबान के हक में, जिसके लिये यह इस्तैमाल किया जाता है, नामौजूं (अनुपयुक्त) है और उसे इस नाम से याद करना हमारी बदमजाकी (कुरुचिता) है। अलबत्ता उसको हिन्दुस्तानियन कहा जा सकता है। मगर अंगरेजों की तकलीद (अनुकृति) में हमने भी इसकी इब्तदाई, (आरम्भिक) शक्ल (आकृति) को कायम रखा जैसा कि नाम से जाहिर (प्रकट) है। हिन्दुस्तानी अहल हिन्दुस्तान की जबान है। मगर यह जबान अपने हकीकी हुदूद (निजी सीमा) से बाहर भी बोली जाती है। खुसूसन् (विशेषकर) मुसलमान सिपाही इसकी तमाम जजीरेनुमा (समस्त प्रायद्वीप) हिन्दोस्तान नीज (भी) ईरान, तिब्बत और आसाम में भी बोलते हैं। वह इस जबान के लिए लफ्ज 'हिन्दी' या 'इंडियन' जो मुब्तदा (आदि) में इसको दिया गया था और जिस नाम से कि अक्सर (बहुधा) बाशिंदे (निवासी) उस मुल्क के अब तक इसको मौसूम (नामी) करते हैं, उस नाम से ज्यादा मौजूं (उपयुक्त) है जो अहल यूरप ने एख्तयार (स्वीकार) किया है। अहल यूरप लफ्ज हिन्दी से हिन्दुओं की बोली मुराद लेते हैं जिसके लिए 'हिन्दवी' बेहतर है। और मुसलमानों की बोली के वास्ते 'हिन्दुस्तानी' का नाम करार दे लिया है।'

(खुतबात गार्सां-द-तासी; अंजुमन तरक्की उर्दू, १८५२ ई० का व्याख्यान, पृष्ठ १७-१८)

तो फिर आज आप उस उर्दू या हिन्दुस्तानी का दम किस देश के नाते भरते हैं और क्यों नहीं हिन्दी के हो रहते? और यदि नहीं जानते तो कृपा कर इस पुस्तक को पढ़ डालिए फिर देखिये कि आपका अन्तःकरण क्या कहता है और आप का हाथ किधर उठता है। स्मरण, रहे हम आप से न्याय चाहते हैं, बदलाव नहीं। न्याय! अविलम्ब!!

—पं० चन्द्रबलि पाण्डेय

विज्ञान की शिक्षा हिन्दी

प्रयाग विश्वविद्यालय में नव स्थापित भारतीय वैज्ञानिक समिति का उद्घाटन करते हुए प्रयाग हाईकोर्ट के भूतपूर्व चीफ जस्टिस श्री कमला कान्त वर्मा ने कहा कि विज्ञान के शब्द संस्कृत से लेने चाहिये, भारत की सब भाषाएं संस्कृत से निकली हैं, इसलिए संस्कृत के ही शब्द भारत में आसानी से समझ में आ सकते हैं। विज्ञान की शिक्षा हिन्दी में होनी चाहिये क्योंकि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

हिन्दी संग्रहालय

भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के हिन्दी-संग्रहालय की ओर से हिन्दी की पत्र पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण विषयों के आवश्यक लेखों की मासिक सूची प्रकाशित करने का विचार हो रहा है। हिन्दी संग्रहालय की ओर से 'हिन्दी जगत् वार्षिकी' प्रकाशित करने का विचार किया जा रहा है। इसमें विशेष महत्व की ज्ञातव्य बातें होंगी और प्राय: २०० पृष्ठ होंगे।

हिन्दी संग्रहालय की ओर से पुस्तकालय पद्धति पर ८० पृष्ठों की पुस्तक प्रकाशित करने का भी विचार है। इस पुस्तक में संग्रहालय के वृद्धिशील पुस्तक भंडार की क्रम व्यवस्था को आधुनिकतम वैज्ञानिक पद्धति पर रखने का प्रकार लिखा रहेगा। इस महत्वपूर्ण पुस्तक से अन्य पुस्तकालय भी लाभ उठा सकेंगे।

मद्रास में हिन्दी

इस वर्ष के पाठ्यक्रम में हाई स्कूल तथा मिडिल स्कूल परीक्षा के लिए हिंदी की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। सरकारी निर्णय पर प्रकाश डालते हुए पाठ्यक्रम में लिखा गया है कि हिंद के राष्ट्रीय जीवन में उपयुक्त स्थान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे युवक हिन्दी की शिक्षा प्राप्त करें, क्योंकि हिंद में सबसे अधिक इसी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

पढ़ाई के लिए नागरी और फारसी (उर्दू) दोनों लिपियों में से कोई एक चुनने की सहूलियत रखी गई है। सरकार को खुद ही कुछ दिनों में मालूम हो जायगा कि फारसी लिपि में हिंदुस्तानी पढ़ाने के लिए उसे इतना अधिक खर्च व्यर्थ ही करना पड़ेगा कि शीघ्र ही उसे इसे बन्द करने की बात सोचनी होगी।

अंग्रेजी के प्रयोग पर जुर्माना।

नागरी प्रचारिणी सभा ने नियम बनाया है कि सभा की बैठक में किसी अंग्रेजी शब्द का प्रयोग न किया जाय। यदि कोई सदस्य अपने भाषण में अंग्रेजी शब्द का प्रयोग करता है तो उसे अंग्रेजी के प्रयुक्त प्रति शब्द के पीछे एक आना जुर्माना देना पड़ेगा। [कुछ प्रान्त के शिक्षा-सचिव इसी नियम के अधीन पांच आने जुर्माना दे भी चुके हैं।]

परीक्षार्थियों को सूचना

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के रजिस्ट्रार सूचित करते हैं कि हिन्दी शीघ्र लिपि विशारद की परीक्षा १ जुलाई १९४८ से प्रारम्भ होगी। आवेदनपत्र जाने की अन्तिम तिथि १० जून १९४८ है। परीक्षाशुल्क १०) है। आवेदनपत्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय या केन्द्रों से [illegible] मूल्य [illegible] लिये जा सकते हैं।

मां! अब बापू कब बोलेंगे

[श्रीकृष्ण 'सरल']

मां ! अब बापू कब बोलेंगे ?
कब मधुरिम राघव-धन-ध्वनि हित, मौन अधर पल्लव डोलेंगे ?
मां ! अब बापू कब बोलेंगे ?

जिन में करुणा प्रतिबिम्बित थी
था जिनमें अनुराग अपरिमित,
जो भर-भर आते थे प्रति पल
लख दीनों-दलितों को पीड़ित।
जन-मन उन्मन देख सजल-घन—
से जो बरस-बरस पड़ते थे,
छवि-दर्शन हित मन-मन्दिर में
जो प्रभु की प्रतिमा गढ़ते थे।
कब वे ज्योति-पुंज, जन-जीवन, करुणा-अयन नयन खोलेंगे ?
मां ! अब बापू कब बोलेंगे ?

जिनका मृदुल स्वभाव मनोहरता
का था मयङ्क बन आया,
मन मानस में जन-जागृति का
था जिसने नव ज्वार उठाया।
स्नेह-सिक्त था जिनका अन्तर
वाणी में अमृत का वर्षण,
जिनको मोहन मंत्र सिद्ध था
था जिनमें अनन्त आकर्षण।
इस विष-भरे जगत में वे फिर, मधुर सुधारस कब घोलेंगे ?
मां ! अब बापू कब बोलेंगे ?

शरणार्थी की पुकार

[श्री कैलाशनाथ]

हर मन्दिर के दर्वाजे पर आवाज लगाता जाता हूं।
नैनों के मोती बीन बीन मैं उन्हें चढ़ाता जाता हूं ॥
हम शरणार्थी, इसी लिये क्या हैं जीने के पात्र नहीं ?
ऊंची कोठी वाले बाबू क्या हम उनके समगात्र नहीं ?
फिर यह कैसा अन्याय भला वो धन दौलत में इठलावें।
दाने दाने को तरस हाय हम उस ज्वाला में मर जावें ॥
क्या तुम भी हो गूंगे बहरे ? फिर क्यों उत्तर नहि पाता हूं।
हर मन्दिर .... ॥
भगवान् ! हमारी इज्जत क्यों हर जगह खिलौने सी लुटती।
आकर के अपने घर में भी फूटी तकदीर नहीं जुटती ॥
यद्यपि स्वदेश में आये हैं फिर भी शरणार्थी कहलाते।
अपने घर में होने पर भी हम हाय भंवर क्यों बन जाते ॥
हममें उनमें क्या भेद भला मैं नहीं समझ यह पाता हूं।
हर मन्दिर .... ॥
हैं इतने कष्ट उठाने पर फिर भी आराम नहीं मिलता।
रोटी का टुकड़ा खाने को प्रातः औ शाम नहीं मिलता ॥
इस सर्दी में सोना पड़ता तारों की नंगी छाया में।
क्या कोई बन्धन रहा नहीं भगवान् तुम्हारी माया में।
है बहुत सहा पर कष्टों की अब थाह नहीं मैं पाता हूं।
हर मन्दिर .... ॥
धन दौलत की उन लहरों में थे कभी हाय हम भी झूले।
हम भी त्योहार मनाते थे हैं अभी नहीं वे सुख भूले ॥
पर आज ठोकरें दर दर की भूखे नंगे रह कर खाते।
घनघोर अन्धेरा है छाया हम ढूंढे राह नहीं पाते ॥
भगवान् दया जो हमको था, गुण आज तुम्हारे गाता हूं।
हर मन्दिर .... ॥

बढ़े चलो

[श्री महेन्द्रनाथ चतुर्वेदी]

हे क्रान्तिकारियो ! बढ़े चलो कर दो कण कण रंगीन आज।
तुम उठो धरा, सलिल, अम्बर कांपे,
तुम बढ़ो प्रलय का झंझावाती वेग लिए;
तुम गरजो सुनकर दिग्गज भी मद गान करें,
तुम शत्रु-काल हो तरुण तरणि का तेज लिए।
तुम निकल पड़ो तलवार चूम केसरिया बाना पहन आज।
हे क्रान्ति कारियो ! बढ़े चलो कर दो कण कण रंगीन आज ॥
तुम में अन्तर्हित है वशिष्ठ का ब्रह्म तेज,
तुम में दधीचि शिवि आदिक का निस्वार्थ त्याग;
महाराष्ट्र वीर के वैभव बल के अधिकारी,
है निहित तुम्हीं में भगतसिंह नेताजी की विप्लवी आग।
तुम हनूमान् से बलशाली, निष्क्रय निज बल को भूल आज।
हे क्रान्तिकारियो ! बढ़े चलो कर दो कण-कण रंगीन आज।
रज के कण भी ठोकर खाकर सिर पर चढ़ते,
पत्थर में घिस घिस फूल बने ज्वाला कायर;
अत्यधिक प्रघित चदन भी करता अग्नि वमन,
चुप चुप सहते अन्याय तुम्हारे स्वाभिमान का निम्न-स्तर ?
'कर मिट' या मर मिट' लक्ष्य बना, तुम उठो सजाओ प्रलय-साज।
हे क्रान्तिकारियो ! बढ़े चलो कर दो कण-कण रंगीन आज ॥
तुम चलो दमन का ज्वालामुखी निस्तेज पड़े,
तुम बढ़ो शुष्क, गोपद समान हो जायें बाधा के समुद्र,
तुम त्याग भोग विप्लव की ज्वाला चेताओ,
तुम चलो उठो ललकार हिमालय कठिनाई के बनें क्षुद्र।
तुम रक्त-स्नान कर स्वतन्त्रता देवी के साधक बनो आज।
हे क्रान्तिकारियो ! बढ़े चलो कर दो कण कण रंगीन आज ॥
जिसके शरीर का एक-एक अपवित्र बिन्दु,
शत मासूमों के मांस-रक्त का ही निचोड़;
है वह निजाम का सावयव साम्राज्यवाद,
दो उसे सौंप क्रान्ति की सर्व भक्षिणी अग्नि-क्रोड़।
शासन के पशु बल के मद को कर चूर बनाओ राम-राज।
हे क्रान्तिकारियो ! बढ़े चलो कर दो कण-कण रंगीन आज।

तुम्हारी खीझ

[श्री ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी एम० ए० एल० एल० बी०]

तुम यों ही रूठी रहती हो !

जी की जी में पी जातीं, प्राणों की प्राणों पर सहती हो।
जी भर आता है आने दो, लो कहलो, हलका कर डालो;
हृदय रीझ के लिये बना है, उसमें ज्यादा खीज न पालो।
रीझ-खीज से परे चीज जो प्रिये, एक है, वही प्यार है;
आंसू बहते हैं, बह जावें, लेकिन तुम भी क्यों बहती हो।
तुम यूं ही रूठी रहती हो !

अच्छी कहो न क्या लगती हैं ये सावन भादों की झड़ियां ?
क्यों ना मुझको प्रिय होवें ये प्रणय खीज की मीठी घड़ियां ?
सुख-दुख दोनों नन्हें बच्चे, जीवन तरु के तले खेलते;
प्रिये हमारी कृति दोनों ही; किसको भला बुरा कहती हो।
तुम यूं ही रूठी रहती हो।

मेरे जीवन-तरु से प्रेयसि. लिपटी रहो स्वर्ण लतिका सी,
मुझे चाहिये बस इतना ही; मैं न और कुछ क अभिलाषी।
हम तुम दोनों एक प्राण, तब कौन दुखी है कौन सुखी है।
क्या न प्रिये मेरे सागर में, तुम गंगा बन कर बहती हो ?
तुम यों ही रूठी रहती हो !

गृह-कला और महिला-समाज

[श्रीमती रामेश्वरी शर्मा]

हमारे स्कूल एवं कालिजों में जिस प्रकार की शिक्षा लड़कियों को दी जाती है वह हमारे सामाजिक विधान एवं उनके जीवन की गति को देखते हुये सर्वथा ही अवाञ्छनीय है, यह एक स्पष्ट सत्य है। यह ठीक है कि लड़कियां भी पुरुषों के समान ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहायता देती हैं और राष्ट्र निर्माण का कार्य करती हैं किन्तु यह भी एक कटुसत्य है कि केवल मिल्टन, शेक्सपियर कालिदास आदि को रटने अथवा रेखा गणित की सीधी टेढ़ी लकीरें खींचने या इतिहास की गाथा मात्र याद करने से ही उन की शिक्षा समाप्त नहीं हो जाती। इन विषयों का अध्ययन उनके दर्शन में वृद्धि अवश्य करता है, कुशल नागरिक नहीं बना पाता, जब तक कि इन शिक्षाओं के साथ ही उन्हें व्यावहारिक जीवन की शिक्षा न दी जाये, पाकशाला का वास्तविक ज्ञान न कराया जाय और शिल्प कला को अन्य विषयों की तरह अनिवार्य रूप में न सिखाया जाय।

पुरुषों से होड़

अब तक जिस ढंग की शिक्षा हमें दी जाती रही है। वह गुलामी की भावनाओं से ओतप्रोत रहती थी। अधिकांश लड़के पढ़ते समय यही सोचा करते थे कि कम से कम दसवीं कक्षा पास कर लें तो कहीं अच्छी सी क्लर्की करलें और लड़कियां, क्यों कि उनके लिये क्षेत्र अधिक व्यापक नहीं था—अधिकांश में शिक्षिका होने के स्वप्न लिया करती थीं और अब पुरुषों की समानता की होड़ करती हुई वह शिक्षालयों को छोड़ कर आफिसों में भी आ विराजी हैं या अन्य ऐसे ही और क्षेत्रों में भी प्रवेश कर चुकी हैं—जहां पुरुष की कुर्सी से कुर्सी सटाकर बैठने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त है। इसे ही वह जीवन के चरम ध्येय की प्राप्ति समझ बैठी हैं।

लेकिन ऐसे भी क्षेत्र हैं जिनके सम्भालने पर वह अपने को अधिक दक्ष प्रमाणित कर सकती हैं और आर्थिक दृष्टिकोण से भी अधिक लाभ उठा सकती हैं और साथ ही दूसरे की गुलामी से भी मुक्त हो स्वतन्त्र रूप से अपना व्यवसाय चला सकती हैं।

शिल्प-शून्य शिक्षा का परिणाम

किन्तु हमें शिक्षा ही ऐसी दी जाती है कि समय पड़ने पर हम वाद विवाद में दक्ष, हाकी और टेनिस खेलने में पारगत, साईकिल और मोटर चलाने में सिद्ध हस्त हो सकती हैं, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर अपनी इच्छा का ब्लाउज का डिजाइन बनवाने के लिये हमें पुरुष दर्जी के सन्मुख ही जाना पड़ेगा। मेजपोश पर बूटे बनवाने के लिये बाजार से नमूने की कापी ही खरीदनी पड़ेगी। अपने केशबन्धन के लिये बाजार से रबांबन मंगाना पड़ेगा और चेहरे की कान्ति के लिये स्नो, क्रीम और पाउडर आदि जाने क्या क्या खरीदना ही पड़ेगा।

इन सब बातों की पूर्ति के लिये दस गुणा पैसा व्यय करना पड़ता है। यदि सौभाग्य से पति पूंजीपति हैं तब तो कोई बात ही नहीं—उनका तो समाज विशिष्ट है। लेकिन साधारण गृहस्थ की पत्नी के सन्मुख दो समस्यायें रहती हैं। प्रथम तो यही है कि अपनी इच्छा पूर्ति के लिये पति से पैसे की मांग करे और अर्थाभाव में पति पत्नी दोनों में झगड़ा पैदा हो और जीवन में कटुता बढ़े। अथवा फिर वह अपनी इच्छाओं का दमन करके साधारण जीवन यापन करे, अन्यथा गृह कार्य का एक अवैतनिक नौकर पर छोड़ कर स्वयं भी जीविकार्जन के निमित्त कहीं सर्विस करके आर्थिक संकट को दूर करे।

लेकिन विचार पूर्वक देखने पर तीनों ही बातें ऐसी हैं जो जीवन को नीरस बना देती हैं। जीवन में आनन्द एवं उल्लास का स्थान नैराश्य एवं नीरसता ले लेती है और मनुष्य शीघ्र ही इस जिन्दगी से छुटकारा पाने का उपाय सोचा करता है।

आज हम स्वतन्त्र हैं, हमारी विचार-धारा से गुलामी की भावना तिरोहित हो चुकी है, नौकरी करने की अपेक्षा हम और हमारे नेता उद्योग धन्धों को प्रमुख स्थान देने का निर्णय कर चुके हैं। फिर क्यों न महिलाओं के लिए भी ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे वे गृह उद्योगों में पारगत हो राष्ट्र के कार्य में सहायक हों। गृह कला का सम्पूर्ण क्षेत्र उनकी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा है हमारे स्कूलों में यों तो आजकल भी गृह-विज्ञान (डमेस्टिक साइंस) नाम का एक विषय पढ़ाया जाता है, लेकिन वह कहलाने मात्र के लिए ही है।

शिल्प का महत्व

महिलाओं के लिये ऐसे शिल्प निकेतन खोले जायें जहां वे वास्तव में कुछ सीख सकें। उदाहरण के लिये आजकल के विषयों को केवल ज्ञान वर्धन मात्र के लिए रख कर यदि महिलाओं को दर्जीगीरी, चमड़े का काम, पाकशाला, चित्र कला, बुनाई-कढ़ाई आदि में भी डिग्री अथवा डाक्टरेट दी जाने लगे तो अधिक उपयुक्त होगा। ऐसा करने पर समय का अपव्यय भी कम होगा और इधर उधर जाने की दिक्कत से बच कर अपने घर पर रह कर ही वह अधिक धनोपार्जन कर सकेंगी।

६०) मासिक पाने वाली महिला यदि दर्जी का कार्य सम्भाले तो भली प्रकार से १०) रोज का काम कर सकती है। साथ ही एक महिला पुरुषों की अपेक्षा कपड़े के अच्छे डिजाइन बना सकती है और अधिक कुशल प्रमाणित हो सकती है।

बेल बूटे बनाने में भी पुरुषों की अपेक्षा नारी समाज की रुचि अधिक परिष्कृत होती है। क्योंकि नारी स्वयं ही कला की प्रतीक है। चित्रकारी में भी नारी पुरुषों से बाजी मार सकती है।

पाक विज्ञान तो नारी जाति का जन्म सिद्ध अधिकार है। पाक विज्ञान पर उत्तमोत्तम पुस्तकें महिलायें तैयार कर सकती हैं। साथ ही होटलों में जो कार्य अनभिज्ञ बैरे और रसोइये करते हैं, वही कार्य महिला समाज द्वारा अपनाये जाने पर नागरिकों को अधिक स्वादिष्ट भोजन और कम मूल्य पर प्राप्त हो सकता है। महिलाओं में पाक-सम्बन्धी एक सहज कला होती है जो पुरुषों में दुर्लभ है।

परिणाम यह होगा — आज जबकि भारत की बहुत सी नारियां फटे हुए कपड़े को भी सीने में असमर्थ, साधारण खाद्य वस्तुएं बनाने में भी फूहड़, चित्रकारी में नितान्त अनभिज्ञ और सौन्दर्य वर्धक प्रसाधनों के न जुटा पाने पर असुन्दर सी दिखाई देती है, वे दो चार महिलाओं के इन क्षेत्रों में प्रवेश कर लेने पर प्रतिस्पर्धा की भावना से स्वयं भी इस क्षेत्र में प्रवेश करेंगी।

ऊंचे पैमाने पर कार्य बढ़ जाने पर महिलाओं की एक यूनियन तैयार हो जाये, जो समस्त निर्मित एवं तैयार की हुई वस्तुओं के क्रय विक्रय का भी प्रबन्ध करे और धीमे शनैः आगे बढ़ते हुए राष्ट्र के उद्योगीकरण में अपनी सामर्थ्य का विकास करें। ऐसी अवस्था में उनका आर्थिक स्तर तो ऊंचा उठेगा ही, साथ ही सम्मिलित कार्य प्रणाली उनके लिए अधिक आरामदेह और सुखदायक सिद्ध होगी। और सबसे बड़ी बात जो होगी — वह यह कि समानता की मांग करने वाली नारी पुरुष से कहीं आगे बढ़ कर राष्ट्र का नेतृत्व कर सकेगी।

लेकिन इस सबके लिए आवश्यकता है ऐसी संस्थाओं की जो नारियों को गृह-विज्ञान, शिल्प-कला आदि की शिक्षा भली प्रकार दे सकें। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकार को इस ओर कदम उठाना चाहिये।

कन्या के पिता की विचित्र मांग

हरदोई के एक ग्राम में बारात में वेश्या न ले आने के कारण लड़की के पिता ने विवाह न करने का हठ ठान लिया और लड़के के पिता ने वहां से बिना विवाह किये न जाने की प्रतिज्ञा कर ली, किन्तु वे वेश्या लाने पर तैयार नहीं हुए। फलतः बारात चार दिन तक पड़ी रही।

विवाह का अनोखा तरीका

हेमस्टेड की २८ वर्षीया डोरोथी लालोर नामक युवती ने तलाक देने के एकदम बाद अपने को नीलाम करने की घोषणा की है। उसे १० हजार डालर देने वाले किसी भी व्यक्ति से विवाह करना स्वीकार है। उस स्त्री के दो बच्चे भी हैं। अमेरिका के एक पत्र में उसने इसका विज्ञापन भी भेजा, जिसका आशय यह था—पत्नी का नीलाम, तलाक दी हुई, गोरी आकर्षक महिला अपने तथा अपने दो बच्चों के पालन के लिए विवाह की इच्छुक हैं। जो लोग तुरन्त १० हजार डालर दे सकें सूचित करें। १४ विवाहार्थियों ने प्रस्ताव किया है।

युद्धोत्तर कालीन

भारत का विदेशी व्यापार

[श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार]

सभ्यता के विकास औद्योगिक उन्नति के साथ देशों की अन्योन्य पराश्रितता बढ़ती जाती है और आत्म पूर्ण स्वावलम्बी बनने की बात न केवल भ्रमपूर्ण रह जाती है, बल्कि स्वप्न हो जाती है। विदेशी व्यापार की क्रमि वृद्धि और सम्वर्धन का मार्ग उद्यगों का विकास है। उद्यगों के विकास के साथ मेशीनरी और प्लाण्ट की आवश्यकता बढ़ती है। उद्यगों की स्थापना से जनता की क्रय-शक्ति बढ़ती है और इसके साथ अन्यान्य प्राम्मिक उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है और अप्रत्यक्ष रूप से औद्योगिक उत्पन्न पदार्थों के लिए अन्य देशों में मांग उत्पन्न होती है। इसलिए उद्योगों की स्थापना से विदेशी व्यापार और बढ़ता है। यह व्यापार परिमाण और चीजों की विविधता दानों में बढ़ता है।

युद्ध समाप्त होने के बाद के दो सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को पुनर्स्थापित होने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। लड़ाई की अवस्था से शांति की अवस्था में आने का संक्रमण काल होने, उत्पादन कम होने, कीमतें अत्यधिक चढ़ने रोकड़ के भुगतान की तंगी और डालर की अल्पल्पता ये कुछ कारण हैं, जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार युद्ध पूर्व की अवस्था में अभी तक नहीं पहुंचा है। दुर्लभ मुद्रा के देशों को छोड़ कर प्रायः सब देशों को आयात का मूल्य बढ़ गया है और निर्यात कम हो गया है। भारत को भी इस कठिनाई का सामना करना पड़ा है और अब भी करना पड़ रहा है। यह कठिनाई आन्तरिक अव्यवस्था, राजनीतिक अनिश्चितता और औद्योगिक अशांति के कारण और अत्यधिक उग्र हो गई।

इस विषम परिस्थिति में भारत के पक्ष में एक बहुत अनुकूल बात थी। वह था स्टर्लिङ्ग पावना। अप्रैल १९४६ में स्टर्लिंग पावना १७०० कोटि रु० था पर भारी मात्रा में अन्न का आयात करने म भारत का व्यापारिक सतुलन प्रतिकूल हो गया। सितम्बर १९४७ को समाप्त होने वाले साढ़े तीन वर्षों में भारत ने १६६ करोड़ मूल्य देकर ५५ लाख टन अन्न आयात किया। फलतः भारत का स्टर्लिङ्ग पावना १५०० करोड़ रु० अब रह गया है।

आयात-निर्यात व्यापार

१९३८-३९ में भारत का सामुद्रिक व्यापार ३२१ करोड़ रु० का था। १९४६-४७ में यह लगभग दुगना हो गया और ६०४ करोड़ रु० पर पहुंच गया। मूल्य बढ़ गया पर व्यापार की प्रकृति में कोई अन्तर नहीं आया। चीजें वही हैं जो लड़ाई से पहले व्यापार की थीं और वह सब है, जब भारत ने बड़े परिमाण में अनाज का आयात किया है।

भारत का आयात व्यापार इस प्रकार रहा:—

	(कोटि रुपये)
१९३८-३९	१५२
१९४५-४६	२४०
१९४६-४७	२८७

आयात व्यापार मूल्य में बढ़ा है, पर उसकी प्रकृति में विशेष अन्तर नहीं आया है। आयात माल में ६० प्रतिशत तैयार माल है. २० प्रतिशत कच्चा माल और अर्द्ध तैयार माल है, और १५ प्रतिशत वर्गीकृत चीजें हैं, यथा खाद्य पदार्थ, पेय और तम्बाकू। १९४५-४६ और १९४६-४७ इन दो वर्षों में ५६ करोड़ रु० की मेशीनरी आई, जबकि १९३८-३९ में २० करोड़ रु० की आई थी। मेशीनरी और उसके कल-पुर्जों की कीमत यदि दुगनी बढ़ी भी मान लें, तब भी मानना होगा कि भारत की पुरानी और क्षीण मेशीनरी और कल-पुर्जों की जगह नई मेशीनरी बिठाने लायक भी मशीनरी का आयात नहीं हो रहा, नए उद्यगों के विस्तार के लिए आवश्यक मेशीनरी के आने की बात तो दूर रही।

आयात व्यापार के मुकाबले निर्यात की अवस्था इस प्रकार है :—

	(करोड़ रु० में)
१९३८-३९	१६३
१९४५-४६	२४०
१९४६-४७	२९६

इस सम्बन्ध में एक बात ध्यान रखने की है। आयात निर्यात व्यापार के जो अंक ऊपर दिए गए हैं, उनमें सरकार द्वारा किया गया विदेशी व्यापार सम्मिलित नहीं है। यह केवल व्यापारियों द्वारा निजी रूप से किए गये विदेशी व्यापार का ब्यौरा है।

भारत के निर्यात व्यापार की प्रकृति में कुछ अंतर आया है। युद्ध-काल में मध्यपूर्व में भारत का कोई प्रतियोगी नहीं रहा। इसी प्रकार जापान की पराजय से सुदूरपूर्व का बाजार खुल गया। फलतः भारत के निर्यात व्यापार में तैयार माल का स्थान ऊंचा हो गया है। यथा—

	कुल निर्यात व्यापार में तैयार माल का प्रतिशत भाग
१९३८-३९	२९
१९४५-४६	४५
१९४६-४७	४७

इसके मुकाबले कच्चे माल और अर्द्ध तैयार माल का निर्यात घट गया है।

भारत के कुल निर्यात व्यापार में कच्चे माल और अर्द्ध तैयार माल का भाग इस प्रकार रहा :—

	प्रतिशत
१९३८-३९	४४
१९४५-४६	२८
१९४६-४७	३१

इन परिवर्तनों के बाद भी संयुक्त भारत के निर्यात व्यापार में जूट (कच्चा और तैयार), चाय, कपास, खाल और चमड़ा, और तेलहन का स्थान मुख्य रहा। कुल निर्यात-व्यापार में इनका स्थान ६० प्रतिशत है। भारत के निर्यात माल में जूट का थैलों और वस्त्रों का महत्वपूर्ण स्थान है इनके निर्यात से भारत को प्रचुर मात्रा में विदेशी विनिमय प्राप्त होता है। यथा—

	करोड़ रु० में
१९३८-३९	२९
१९४५-४६	६०
१९४६-४७	७०

इसके अतिरिक्त वस्त्रों का निर्यात बढ़ा है। वह किस मूल्य परिमाण मे बढ़ा है वह नीचे की तालिका से ज्ञात होगा :—

	(करोड़ रु० में)
१९३८-३९	७
१९४५-४६	३२
१९४६-४७	२०

व्यापार की दिशा

लड़ाई के कारण भारत के व्यापार की दिशा भी बदली है। ब्रिटिश साम्राज्य के देशों का भारत के साथ व्यापार आज भी सबसे अधिक है। पर एक अन्तर है। भारत का उनके साथ निर्यात व्यापार जहां ५३ (१९३८-३९) प्रतिशत से ५५ (१९४५-४६) प्रतिशत हो गया है, वहां आयात व्यापार घटकर ५८ प्रतिशत (१९३८-३९) से ४२ (१९४५-४६) रह गया है। ब्रिटेन जो जगह खाली कर रहा है उसकी पूर्ति अमरीका कर रहा है। भारत के आयात-निर्यात व्यापार मे मुख्य देशों का क्या भाग है यह निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

आयात

(मुख्य देशों का प्रतिशत भाग)

	१९३८-३९	१९४५-४६
ब्रिटेन	३०.५	२५.४
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	६.४	२७.९
मध्यपूर्व(मिश्र कोछोड़कर)	२.२	२२.०
मिश्र	—	६.२
आस्ट्रेलिया	१.७	२.९
कनाडा	०.६	२.५
केनिया और जंजीबार	३.४	४.१
सीलोन	०.८	१.६
बर्मा	१६.०	०.१
जापान	१०.१	—
जर्मनी	९.५	—

निर्यात

(मुख्य देशों का प्रतिशत भाग)

	१९३८-३९	१९४५-४६
ब्रिटेन	३४.१	२८.३
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	८.५	२५.८
मध्यपूर्व(मिश्रकोछोड़कर)	२.४	५.८
आस्ट्रेलिया	१.८	४.५
कनाडा	१.३	२.६
सीलोन	३.१	७.०
बर्मा	६.२	—
जापान	९.०	—
फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी, हालैण्ड और इटली	१६.१	—

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत के आयात व्यापार में जापान, जर्मनी और बर्मा से खाली की गई जगह संयुक्त राष्ट्र अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया मध्यपूर्व और उत्तरीय अफ्रीका ने ली है। इसी प्रकार निर्यात व्यापार में जापान, बर्मा और पश्चिमी यूरोप द्वारा खाली की

(शेष पृष्ठ २१ पर)

जवानी जीवन के उस अंग का नाम है जब जिम्मेवारियों का बोझ सर पर कुम्हार के गधे की तरह आकर लद पड़ता है या लाद दिया जाता है। अरमानों और जिम्मेवारियों के बीच बेचारी इस जवानी का ऐसा कचूमर निकलता है कि कलेजा मुंह को आ जाता है, सतप्त हृदय हिन्दू विधवा की तरह ग्गं करता है। इसी लिए जब आते जाते समय पड़ोसी रहमान चचा की आवाज—खुदा तुम्हारी जवानी सलामत रखे—कानों के परदों से टकराती है तो दिल शीशे की तरह चकनाचूर हो जाता है, ओठ चबाने पड़ते हैं, दांत टकरा जाते हैं और मैं गम के साथ खून के दो चार घूंट उतार लेता हूं।

आप शायद मेरी इस नादानी पर हंसें। हो सकता है तरस भी खा जाएं। पर मैं आपकी नादानी—हंसने की नादानी पर तरस खा कर चुप रह जाऊंगा। तरस इस लिए कि मुझे अपनी जवानी पर तरस आता है। वजन उठाने वाली इस 'आटोमेटिक क्रेन' को गले में लटका कर हंसना तो दूर की बात, मैं मुस्कराने की भी गलती नहीं कर सकता क्योंकि अपने राम उन लोगों में से नहीं जो गूलर का झाड़ उगने पर 'छाया' हुई। कह कर संतोष कर लें।

बचपन में जब पिता जी पीटते या जेब में खाने उड़ने को पैसे न होते तो सोचते थे कि काश हम भी जवान होते। आज जब जवान हो गये हैं तो सोचते हैं काश, हम बच्चे या बूढ़े होते? यह सब रोना गाना इस लिए कि अपने राम की अक्ल इन जिम्मेवारियों ने झाड़पोंछ कर साफ कर दी।

जवानी जिम्मेवारियों का बोझ लादने के लिए ही बनी है यह प्रथम बार उस दिन मालूम पड़ा जब पिता जी ने उलाहना देते हुए कहा—बेटा, अब तो तुम जवान हो गए हो। कुछ कमाई करो तो हमारे बुढ़ापे को भी कुछ राहत मिले। आखिर तुम्हारी जवानी किस काम की?

उस दिन सारे स्वप्न, जवानी के बारे में बने समस्त हवाई किले, बालू की नाईं, एक दो-तीन हो गए। यथार्थ के चाबुक ने भावना के भूत के चमड़े बरबाद कर दिये। कान पकड़कर बार बार स्वयं से कहा—'बच्चू, जवानी निठल्ले शायरों कवियों और प्रेमियों की तरह आहें भरने के लिए नहीं जवानी का जोर मारता लहू देश सेवा के लिए नहीं, सपूत बेटे बन कर परिवार के बूढ़े बच्चों का बोझ ढोने के लिए है। यही तुम्हारा—तुम जवान बेटे का—प्रथम और सर्व प्रथम कर्त्तव्य है—और एक दिन कर्त्तव्य की बलि वेदी पर सपूत बेटे का सार्टिफिकेट प्राप्त करते हुए स्वयं को पैंठ में बिकने वाले गधे की तरह, पचास रुपये महावार पर पारिवारिक वजन ढोने के लिये बेच दिया।

नये मुसलमान थे अतः नमाज में कोर कसर क्यों रखते। आफिस में दो तीन महीने तो कस कर काम किया कि साहब की तबियत तर हो गई और तरक्की पा गये। हम रुपये रोज के आदमी बन गए। पर कुम्हार की नजर जिस प्रकार किसी खास गधे पर होती है उसी भांति साहब की कृपादृष्टि भी हमीं पर होने लगी। वजन का वजन ढोना और ऊपर से सवारी देना। इतनी लदाई चालू हो गई कि सारा नशा हिरन हो गया। स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया।

पिता जी का माथा ठनका। सोचा—अरे बेटे के तो पर निकल आये। किसी दिन फुर्र न हो जाए। तब फिर क्या था? झट एक पिंजरे की व्यवस्था की गई। एक गरीब सज्जन के सर का बोझ हलका कर हमारे सर पर नित्य का बोझ और वह भी गीला बोझ लाद दिया गया। घर में 'छुम छुम' करती श्रीमती जी आईं और उनके साथ ही साथ 'धम धम' करती आफतें।

श्रीमती के 'श्रीमता' रहे तब तक तो कुछ न बिगड़ा। पर 'पुत्र रत्न' के प्राप्त होते ही 'पिता' बनने के श्रेय ने पितरों की याद दिला दी—छठी का दूध याद आ गया। पितरों को पूरी तरह याद भी न कर पाये थे कि पिता जी ने एक और परेशानी पैदा कर दी। घर के बेनौकरी बार? पिता जी को परलोक ले उड़ा। यजमान जैसे इस ताक में ही थे। पिता जी को अन्त्येष्टि क्रिया ने अपने राम की भी अन्त्येष्टि कर दी। कर्त्तव्य था, अतः मन मसोस कर करना ही पड़ा।

कर्त्तव्य की इति श्री यहीं नहीं हुई। कर्जे की लम्बी लिस्ट भी पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली। सपूती का तकाजा कुछ ऐसा था कि मन मार कर इस अन्याय को भी जवान और सपूत बेटे का कर्त्तव्य' मानना पड़ा।

अब आफतें पूरी तैयारी के साथ मुंडेर पर मंडराने लगीं। तकादेवाज रोज घर रौंद रौंद कर छाती पर मूंग दलने लगे। आफिस का साहब अलग त्यौरियां चढ़ाने लगा। घर घुसते ही बोलों की इस वर्षा के कारण हमारा दम घुटने लगा। आप हंसेंगे लेकिन सच कहता हूं एक दो बार तो आंखें गंगा जमुना भी बन गईं। लेकिन गंगा की तरह मेरी अश्रु गंगा साठ हजार तो क्या मेरे साठ दुखों को भी सद्गति न दे सकी।

दुखड़े तो थे ही। ऊपर से दो असाढ़ बन कर टूटी साहबजादे की बीमारी। हजरत जी ने जम कर जो खटिया पकड़ी कि उनकी तो दूर की बात हमारी जान के भी लाले पड़ गये। समझदार आदमी का उनकी अर्दली में होना आवश्यक था और घर में इस 'अर्दली गिरी' के लिये हम से अधिक अव्वल दर्जे का आदमी और कौन हो सकता था। ऐसी अवस्था में छुट्टी लेना आवश्यक हो गया।

आफिस पहुंच कर साहब के सामने गिड़गिड़ाये—'आज की छुट्टी चाहिए। बच्चा सख्त बीमार है।'

साहब ने सड़ा सा मुंह बनाया और टके सा जवाब दे दिया'—काम बहुत 'सफर' हो रहा है। छुट्टी नहीं मिल सकती।'

टके सा जवाब सुन कर हमें तैश आ गया। जवानी का सारा जोश उबल पड़ा और आंखों में खून बन कर छा गया। दिल ने कहा—रानी रूठेगी, अपना सुहाग लेगी। साहब ज्यादा से ज्यादा करेगा नौकरी से अलग कर देगा। जब नौकरी ही करना है तो सैकड़ों ठिकाने हैं। यहां न सही कहीं और सही। परन्तु जब ठिकाने के लिए इकाई का ही आकड़ा चालू किया तो अक्ल ठिकाने लग गई। जब हारे पशु की तरह मैं एक बार और मिमयाया पर साहब अपनी जगह से टस से मस न हुआ। रोबीली आंखें दिखाता बोला—'जाओ, काम करो। वक्त खराब करने से क्या फायदा!'

मैंने एक बार और विनय से काम लिया। कहा—'हुजूर, बच्चा बहुत बीमार है।'

'बहुत बीमार है तो मरने दो!'—लापरवाहीपूर्वक उत्तर देते हुए उन्होंने कागजों का एक मोटा सा पुलिन्दा मेरे सामने फेंक दिया।

ईमान से कहता हूं गुस्सा तो ऐसा आया कि मारे तमाचों के साहब का कचूमर बना दूं। लेकिन परिस्थितियों ने पहले से ही मेरा कचूमर बना रखा था। नौकरी के चले जाने का अर्थ था 'मम्मू मम्मू' से मोहताज हो जाना। अतः खून के घूंट पीकर काम करने बैठना पड़ा।

काम कर रहा था पर मेरी नजर बच्चे पर थी और सबसे बड़ी चिन्ता थी श्रीमती के मुखारविन्द से निकलने वाली मधुर वचनावली की। काम में मेरा मन बिल्कुल नहीं लग रहा था। रह रहकर अपनी जवानी पर मुझे तरस और क्रोध दोनों ही आ रहे थे।

अकस्मात् साहब को सद्बुद्धि सूझी। बोले—'अच्छा आज तुम जाओ। कल जल्दी आकर काम समाप्त कर देना।'

सच कहता हूं मैं उस समय आफिस से ऐसा भागा जैसे पुलिस से सिर छुड़ा कोई चोर भागता हो। जल्दी-जल्दी मैं घर की ओर बढ़ा। रास्ते में रहमान चचा का घर पड़ता था। प्रतिदिन की भांति आज भी वे चबूतरे पर बैठे हुक्का पी रहे थे। मैंने जान-बूझकर उन्हें आदाब नहीं बजाया। आंख बचाकर निकलने ही वाला था कि चचा की गिद्ध दृष्टि मुझ पर पड़ी। वहीं से चिल्लाये—'अस्सलाम वे, क्या बुलबा हो?'

उससे आगे डोलना पड़ा। नजदीक पहुंचकर मैंने जल्दी-जल्दी पूछा—'कहिये?'

(शेष पृष्ठ ११ पर)

यह इतनी आसान नहीं है

नौशेरा पर वायुयानों की उड़ान

[श्री सुरेश प्रभाकर]

★

समाचार पत्र तथा रेडियो बहुधा रायल इन्डियन एअर फोर्स के वायुयानों द्वारा आक्रान्ताओं पर आक्रमण करने के समाचार देते हैं। किन्तु यह बहुत ही थोड़े व्यक्ति जानते हैं कि इस प्रकार आक्रमण करने में कितनी तैयारी और संगठन की आवश्यकता होती है। कितने मनुष्यों को इसमें भाग लेना पड़ता है और कितनी चतुराई से आक्रमण की योजना बनाई जाती है।

प्रातःकाल का समय है। हवाई अड्डे पर चहल पहल है। एक खुली कोठी सारी धूल से भरे हुये मैदान में आकर ठहरती है। सारी वायुयानों की पंक्ति के पास आकर रुक जाती है। और बहुत से मनुष्य उसमें से बाहिर निकल आते हैं। हवाबाज नीली पोशाक में आपस में हास परिहास करते हुये जाते दिखाई देते हैं। वे रिकेट खोल देते हैं जिन में कि वायुयान बंधे होते हैं और प्रत्येक कारीगर टेम्पेस्ट (वायुयान) पर अपना अपना कार्य पर प्रारम्भ कर देता है। फिटर एंजिन के प्रत्येक का भाग निरीक्षण करता है। रिगर कन्ट्रोल करने वाले पुर्जों और एयर फ्रेम को चेक करता है। एक आदमी बन्दूकों की देखभाल देखने में व्यस्त है जिनको गतरात्रि उसने मशीनगन की कारतूस की पेटियों के साथ संयुक्त कर दिया था। उसका एक सहकारी उसकी सहायता कर रहा है। वायरलैस आपरेटर (बेतार के बेतार पर कार्य करने वाला) रेडियो टेलीफोन इत्यादि के सामान की जांच करता है। बिजली का कारीगर तार की देख भाल में व्यस्त है और भली भांति जांच कर निश्चय करता है। बैटरियां ठीक भरी हुई है या नहीं और बिजली के तारों में किसी प्रकार की खराबी तो नहीं है।

साधारण जनता की दृष्टि में ये व्यक्ति शायद ही कभी आते हों किन्तु इनके बिना कोई भी वायुयान सफलता पूर्वक नहीं उड़ सकता और नाहीं वायुयान चालक अपनी उड़ान में पूर्ण कुशलता की आशा रख सकता है। ये व्यक्ति अपने समय का अधिकांश भाग वायुयान पर कार्य करने में ही व्यतीत करते हैं और बहुधा इन्हें रात्रि में भी देर तक कार्य करना पड़ता है। किसी भी पुर्जे के टूट भी टूटे होने पर तथा पेट्रोल के टैंक में छेद भी-पानी होने पर बेचारे चालक की जान जाने तक की सम्भावना रहती है। इनमें तथा चालकों के मध्य में सद् पारस्परिक व्यवहार का बन्धन रहता है।

अब वायुयान बिलकुल तैयार है। बन्दूकें भरी जा चुकी है तथा टैंकों में पैट्रोल डाला जा चुका है, और प्रत्येक व्यक्ति अपने २ हस्ताक्षर करके प्रमाणित करता है कि वायुयान का प्रत्येक भाग विश्वसनीय है। सब अपने २ वायुयान के साथ आदेश की प्रतीक्षा में खड़े हैं। ड्यूटी रूम में, जो समीप ही है। स्क्वैड्रन कमान्डर, फ्लाइट कमान्डर, तथा अन्य अनेक अफसर उपस्थित हैं। वायु सम्पर्क अधिकारी को अभी २ सेना के प्रधान सैनिक पड़ाव से फोन द्वारा आदेश प्राप्त हुआ है। जिन विशेष लक्ष्यों पर आक्रमण करना है उनके विषय में जानकारी दी गई है। नौशेरा के दक्षिण पश्चिम में कुछ मील की दूरी पर आक्रमण करना है। उत्तर की ओर दो नुकीली पहाड़ियां हैं जिन पर हमलावारों ने मजबूत मोर्चे लगा रखे हैं। यह भी सन्देह है कि आक्रान्ताओं के पास दो माउटस्टेन गन हैं जो उन्होंने पहाड़ियों के दक्षिण की ओर के नाले में छिपा रखी हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने बन्दूकों, मोर्टारों और मशीनगनों को भी बड़ी चतुराई से छिपा रखा है।

अब आर० आई० ए० एफ० का मुख्य कार्य इन मशीन गनों तथा मोर्टारों पर आक्रमण करना है। नक्शे दे दिये गये हैं और आक्रान्ताओं की स्थिति के सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त कर ली गई है। स्क्वैड्रन कमान्डर दो वायुयान-चालकों को आक्रमण करने के लिये आदेश देता है। उसने वायु सम्पर्क अधिकारी को बताया है कि प्रातः दस बजे वायुयान लक्ष्य पर पहुंच जायेंगे। सेना उसने ऐसी व्यवस्था की है कि जिससे हमारा अग्रगामी सैनिक दल धुएं के चिन्ह द्वारा आक्रान्ताओं की स्थिति को स्पष्ट कर सके जिन वायुयान चालकों को काम सौंपा गया है वे अपने नक्शे मोड़ते हैं और अपने फ्लाइंग बूटों में उन्हें खोंस लेते हैं। वे अपने पैराशूट संभालते हैं और 'औथोराइजेशन बुक' में हस्ताक्षर करके अपने वायुयान २ नम्बर लिखते हैं। वे अन्तिम बार की सिगरेट पीते हैं और जाकर अपने वायुयान चला देते हैं। दो हवाबाज वायुयानों के एक ओर चढ़कर चालक को पैराशूट तथा पेटियों को बांधने में सहायता देते हैं।

जब चालक भली भांति संभल जाता है तो हवाबाज वापिस आकर संकेत करते हैं। चालक उसके उत्तर में संकेत करते हैं और ब्रेक, सम्भाल कर अपने एंजिन ढीला देते हैं। धूल का बादल उठता है और उस विषम पथ के अन्त तक वे धड़ाधड़ दौड़ते जाते हैं। एक बार फिर चालक एंजिन की परीक्षा करते हैं और तब रवाना हो जाते हैं।

—और इस तरह वे आकाश में ऊंचे चढ़ते गये।

प्रथम चालक अपने वायरलैस और रिसीवर को ठीक करता है और फ्लाइंग कन्ट्रोल से बात करता है। मीनार पर से हरी रोशनी चमकती है। चालक यन्त्र को खोलता है और एयर क्राफ्ट एक जोर के शब्द के साथ दौड़ता है। जहां जहां उसके टायर जमीन को छूते हैं। जहां एयरक्राफ्ट जहां जहां धूल के बादल उठते जाते हैं जमीन को छोड़कर धीरे २ आकाश में ऊंचा चढ़ता जाता है। द्वितीय चालक पीछे से मोड़ काट कर अपने अगुआ से आकर मिल जाता है।

प्रत्येक चालक अपने डैश बोर्ड पर लगे दिग्दर्शक को देखता है और नौशेरा के मार्ग का निश्चय करता है। जम्मू शहर से अखनूर जाने वाली सड़क के साथ २ वे उड़ते हैं। सैनिक यातायात के बड़े २ कनवाय नीचे सड़क पर रेंगते दिखते हैं। विभिन्न स्थानों पर सैनिक पड़ाव और कैम्पों में रसोई बनाने की आग उन्हें दिखाई देती है। वे नौशेरा पहुंच जाते हैं।

वहां जाकर वे अपनी दिशा बदल लेते हैं और दक्षिण पूर्व की ओर मुड़ते हैं। नीचे ही उन्हें वे दोनों पहाड़ियां और वह नाला दिखाई देता है। अपने लक्ष्य के सम्बन्ध में सुनिश्चित होने के लिये वे पहाड़ियों के चारों ओर एक उड़ान भरते हैं। हमारी सेनाओं द्वारा दिया गया धूम्र संकेत भी उन्हें नजर आता है। तब एक नम्बर का एयर क्राफ्ट डुबकी लगाता है।

चालक दूरबीन से देखता है कि एक पहाड़ी के एक ओर-ताजा खुदी हुई मनों मिट्टी पड़ी है इससे आक्रान्ताओं की स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

चालक क्षणभर के लिये बटन दबा देता है। मशीनगनें दहाड़ उठतीं हैं और लक्ष्य पर धकाधक गोलियों की वर्षा होनी आरम्भ हो जाती है। प्रथम चालक डुबकी लगाकर वापिस लौट आता है

अब दूसरे एयर क्राफ्ट की बारी है यह डुबकी लगाता है और नाले के स्थित स्थल पर गोलियां बरसाता है एयर क्राफ्ट बारी २ से आक्रान्ताओं की बन्दूकों, मोर्टरों और खाइयों पर गोलाबारी करते हैं। जब उन्हें यह पता लगता है कि आक्रमण पूर्ण रूप से कार्यान्वित हो गया है तब वे वापिस लौट पड़ते हैं।

वे अपने हवाई अड्डे के ऊपर पहुंचते हैं फ्लाइंग कन्ट्रोल से हरी रोशनी द्वारा 'आल क्लीयर' संकेत होता है। वे एक २ करके नीचे उतरते हैं, अपने एंजिनों का स्विच बन्द करते हैं और स्वयं भी उतर कर बाहर आजाते हैं। प्रतीक्षा करते हुए हवाबाज इनका चार्ज लेते हैं। एक ट्रक आकर इन वायुयानों में दुबारा पैट्रोल

(शेष पृष्ठ २० पर)

अमरीका में नीग्रो समस्या

[श्री दीनानाथ सिद्धान्तालङ्कार]

★

पहले महायुद्ध के बाद दूसरे महायुद्ध को रोकने के लिए जेनेवा में 'लीग आफ नेशन्स' का और दूसरे महायुद्ध के बाद तीसरे महायुद्ध को रोकने के लिए लेकसक्सेस में 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' (युनाइटेड नेशन्स आरगेनाइजेशन) की स्थापना में सब से अधिक हाथ अमेरिकन नेताओं का रहा है। पहली संस्था की स्थापना में अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रो० विल्सन और दूसरी संस्था की स्थापना मे अमरीका के राष्ट्रपति श्री रूजवेल्ट का प्रभाव था। 'स्वतन्त्रता' 'समानता' और 'बन्धुता' के मनोहारी शब्द एक मिनिट में जितनी बार अमरीका के प्रेस, प्लेटफार्म और रेडियो से दोहराये जाते हैं उतने संसार के अन्य किसी देश के द्वारा शायद ही प्रचारित होते हैं। पर अभी तक हल न की जा सकी नीग्रो समस्या अमरीका के लिए गलग्रह बनी हुई है। इसी का नाम है 'दिये तले अंधेरा'। भारत के हरिजनों का प्रश्न भी विकट था पर उसे विदेशियों ने अतिरंजित मात्रा में चित्रित करके संसार के सामने हिन्दुओं को सदा हीन और अत्याचारी सिद्ध करने का प्रयत्न किया। सुधारकों विशेषत गांधी जी के अपूर्व त्याग के कारण भारत हरिजन समस्या को बड़ी सफलता के साथ सुलझा रहा है पर अमरीका का वर्ण विद्वेष उससे उग्र से उग्रतर रूप धारण कर रहा है।

इस वर्ष दो फरवरी को अमरीका के राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन ने नागरिक अधिकारों के सम्बन्ध में एक संदेश अमरीका की पालमेंट कांग्रेस को भेजा। इस संदेश का इतना भयंकर परिणाम होगा, इसकी वे कल्पना भी न कर सकते थे। अमरीका की दक्षिणी रियासतों में नीग्रो की बहुतायत है। वहां के गोरे उन पर अमानुषिक अत्याचार करते हैं। ट्रूमैन साहब का सन्देश सुनते ही दक्षिणी नेताओं का क्रोध भड़क उठा और उन्होंने 'खून' और 'लड़ाई' के शब्दों में घोषणायें करनी आरम्भ करदीं। नागरिक अधिकारों की कितनी ही दुहाई दी जाय, दक्षिणी रियासतों ने सदा चाबुक अपने हाथ में रखा है। जिस किसी बिल द्वारा नीग्रो को नागरिक भी अधिकार दिये गये, उन्होंने बराबर तत्काल उसका गला घोंट दिया। सन् १९४७ में २५२ पक्ष में और ८४ विरोध से, हाउस आफ रिप्रेजेन्टेटिव ने पोल टैक्स नाशक बिल पास किया परन्तु सीनेट ने इसे समाप्त कर दिया। सन् १९४३ में हाउस ने फिर पास किया पर सीनेट ने फिर इसे दफना दिया।

अमरीका म लगभग १ करोड़ ३० लाख नीग्रो हैं जिन में से एक करोड़ दक्षिणी रियासतों में हैं। संयुक्त राज्य के विधान के अनुसार उन्हें भी कई अधिकार प्राप्त हैं द क्षिण में उन में से अधिकांश निषिद्ध हैं।

आज स्थिति यह है कि दक्षिण के १ करोड़ नीग्रो, यद्यपि कानून की दृष्टि से स्वतन्त्र हैं, पर सम्मानयुक्त नागरिकता के अधिकारों से वंचित हैं। उत्तर की रियासतों में भी नीग्रो के विरुद्ध भेद बुद्धि है विशेषतः सीमावर्ती रियासतों में — पर वहां यह प्रश्न इतना गम्भीर नहीं है। समस्या के रूप में यह दक्षिणी प्रदेशों में ही है।

रंग विद्वेष के रूप

एक रियासत से दूसरी रियासत में तनिक भेद के साथ, दक्षिण के समाज में साधारणतः नीग्रो उसी स्कूल में पढ़ नहीं सकता है जहां उसका पड़ोसी श्वेतांग पढ़ सकता है यद्यपि वह स्कूल सरकारी है और उसके चलाने में नीग्रो माता-पिता ने उतना ही टैक्स दिया है जितना श्वेतांग ने। सार्वजनिक स्थान जैसे, होटल, रेस्टोरां, सिनेमा, बाग इत्यादि में उसका प्रवेश निषिद्ध है। नीग्रो के लिए इस प्रकार के स्थान पृथक् हैं जो बहुत छुटे दर्जे के हैं। हमारे पाठकों को यह सुन कर आश्चर्य होगा कि दक्षिण की रियासतों में कानून या चिकित्सा के ऐसे विद्यालय खुले हुए हैं जिनमें केवल एक ही नीग्रो छात्र पढ़ता है, क्योंकि वह 'श्वेतांग' के विद्यालय में प्रविष्ट नहीं हो सकता। ऐसे विद्यालय में क्या पढ़ाई होगी—इसकी कल्पना की जा सकती है।

एक ही गाड़ी या बस में नीग्रो नहीं चढ़ सकते। पिछले डिब्बों में उनके लिए सीट रिजर्व होती हैं। ३ जून १९४६ को संयुक्तराज्य अमरीका के सुप्रीम कोर्ट ने इरीन मोरगेन के विरुद्ध कामनवेल्थ आव वर्जिनिया के मुकदमें में निर्णय किया था कि एक रियासत से दूसरी रियासत में जाने वालों के लिए पार्थक्य नीति गैर कानूनी है क्योंकि इससे रियासतों के आपसी व्यापार को हानि पहुंचती है। परन्तु सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को तोड़ कर ही इसका मान किया जाता है, पालन करके नहीं। दक्षिण में बहुत थोड़े नीग्रो इस प्रकार भेदभाव के प्रचलित कानूनों को तोड़ने का साहस कर सकते हैं। अगर कोई प्रयत्न करता भी है तो उसे सजा दी जाती है।

विश्व प्रसिद्ध नीग्रो पकड़ा गया

भारी वजन के साथ बाक्सिंग का विश्व प्रसिद्ध (चैम्पियन) खिलाड़ी नीग्रो जो लूइस भी गोरों के हाथ इस अपमान जनक व्यवहार से नहीं बच सका। उसके अपने शब्दों में "मैं वर्जिनिया में टेलीफोन का केवल इस्तेमाल करने के कारण पकड़ा गया था। हम बाक्सिंग का प्रदर्शन कर रहे थे। एक स्थान से मुझे टेलीफोन करना था। जिस ओर "कालों के लिए" लिखा था उधर कोई टेलीफोन नहीं था। इसलिए मैं

संसार विख्यात मुक्केबाज जो लुइस

"श्वेतांगों के" स्थान की ओर चला गया। वहां के एक कर्मचारी ने मुझे "कालों के" स्थान की ओर जाने को कहा। मैंने उत्तर दिया, उधर टेलीफोन नहीं है, मुझे तनिक सा ही काम है। इससे वह सन्तुष्ट नहीं हुआ और मुझे पकड़ लिया।"

वाशिंगटन में

देश की राजधानी वाशिंगटन में भी अवस्था खराब है। वाशिंगटन दक्षिण में नहीं है पर दक्षिण की ओर जाने का प्रारम्भिक स्थान है। दक्षिण की ओर जाने वाली गाड़ियों में यहां पृथक् सीटें हैं। वाशिंगटन के रेस्टोरां, होटल, सिनेमा नीग्रो के लिए बन्द हैं। हां, बस और ट्राम में वे एक समान सीटों पर बैठ सकते हैं। वाशिंगटन में नागरिक अधिकारों के सम्बन्ध में अमरीका के अध्यक्ष की समिति में निम्न वाक्य कहे गये हैं —

शहर के पिछले भाग में सिवाय एक थियेटर के और किसी में नीग्रो नहीं जा सकते। अपने मकान के पड़ोस के सिनेमा में ही वे जा सकते हैं। पिछले शहर की कई दूकानें व सरकारी स्टोर नीग्रो ग्राहकों की परवाह नहीं करते, उनकी मांगी हुई चीजों को दिखाने से इन्कार कर देते हैं या सब श्वेतांग ग्राहकों को भुगता देने के बाद उनकी ओर ध्यान देते हैं। बिना विशेष प्रबन्ध किये नीग्रो शहर के होटलों में नहीं जा सकता। सरकारी व अर्द्ध सरकारी होटलों में यद्यपि वे जा सकते हैं पर नीचे शहर के अधिकांश होटल उनके लिए बन्द हैं।

बेतुकी भेद सीमाएं

कुछ अवस्थाओं में ये भेद सीमायें बड़ी बेतुकी और हास्यजनक हैं। वाशिंगटन के कन्स्टीट्यूशन हाल में जो महिलाओं की एक संस्था के अधिकार में है कन्सर्ट के आयोजनों में नीग्रो शामिल हो सकते हैं पर स्टेज पर जाने की उन्हें आज्ञा नहीं। भाषणों विवादों में नीग्रो

(शेष पृष्ठ १८ पर)

पश्चिमी जर्मनी और मित्रराष्ट्रों का मतभेद

जर्मनी के सम्बन्ध में रूस से ही नहीं, अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस आदि में भी परस्पर गहरे मतभेद हैं। पूर्वीय जर्मनी रूस के हाथ में है। पश्चिमी जर्मनी अन्य राष्ट्रों के हाथ में। इनका पारस्परिक मतभेद क्या है, यह इस लेख में देखिये।

सामरिक सुरक्षा और आर्थिक सम्पन्नता का ऐतिहासिक प्रश्न इतना कठिन और पेचीदा कभी न था जितना कि आज, जब पश्चिमी जर्मनी के भविष्य पर विचार-विनिमय हो रहा है।

यदि इन छः राष्ट्रों के प्रतिनिधि जिनका इस प्रश्न से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है समझौते पर पहुंचने पर कठिनता का अनुभव कर रहे हैं तो यह आश्चर्य का विषय नहीं है क्योंकि विभिन्न दृष्टिकोणों में मौलिक मतभेद हैं। यदि यह केवल एक राजनैतिक प्रश्न होता तो उसे हल करना अपेक्षाकृत सरल था।

देश की सुरक्षा के कारणों से प्रेरित होकर फ्रांस पूर्णरूप से अकेन्द्रित जर्मनी देखना चाहता है। अपने अनुभव और परम्पराओं से प्रेरित होकर अमेरिका संघीय व्यवस्था के पक्ष में है जिसमें विभिन्न जर्मन राज्यों और प्रांतों को अधिकतम अधिकार देकर केन्द्रित रीश को युद्ध छेड़ने के अयोग्य बनाया जा सके। इसके विपरीत ब्रिटेन और कुछ कम हद तक बेनेलक्स देश (बेल्जियम, नेदरलैण्ड तथा लक्सेमबर्ग) उपर्युक्त दृष्टिकोण को पर्याप्त नहीं समझते।

दो कारण

जर्मनी को पूर्ण रूप से अकेन्द्रित करने का परिणाम होगा जर्मन जनसाधारण से कड़ा विरोध आमन्त्रित करना। स्पष्टतः जर्मन समस्या का ऐसा कोई हल प्रभावपूर्ण नहीं हो सकता था, जर्मनी से मित्रराष्ट्र सेनाओं के हट जाने के बाद, जर्मन जनसाधारण को अस्वीकृत हो। इस कारण पूर्ण अकेन्द्रीकरण का प्रस्ताव यथार्थवादी नहीं कहा जा सकता। ब्रिटेन और बेनेलक्स देशों के असहमत होने का यह प्रथम कारण है।

राजनैतिक दृष्टि से जर्मनी को पूर्ण रूप से अकेन्द्रित करने पर उसकी अर्थ-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जायगी और निर्धन जर्मनी, योरोपीय आर्थिक पुनरुत्थान में सहयोग देना तो दूर, आगामी वर्षों तक आत्म-निर्भर होने की आशा भी नहीं कर सकता। यह है दूसरा कारण।

फ्रांस का दृष्टिकोण समझना कठिन नहीं है : जर्मनी को अशक्त और युद्ध के अयोग्य बनाने के लिए जो कुछ किया जाय वह थोड़ा है। यद्यपि बेनेलक्स देश भी जर्मनी के शिकार बन चुके हैं और फ्रांस के दृष्टिकोण से उनकी सहानुभूति है पर उनकी साथ कठिनाई यह है कि जर्मनी की आर्थिक सम्पन्नता पर उनकी आर्थिक सम्पन्नता निर्भर है। उदाहरणार्थ, एंटवर्प और राटरडम बन्दरगाहों का आर्थिक जीवन रूस और उत्तरी जर्मनी से सफल व्यापार द्वारा प्रभावित होगा।

रूर औद्योगिक प्रदेश के आर्थिक जीवन में ब्रिटेन की अभिरुचि उतनी प्रत्यक्ष नहीं है जितनी बेनेलक्स देशों की। पर जर्मनी, विशेषतः, जर्मनी के ब्रिटिश क्षेत्र, की यथाशीघ्र आत्म निर्भरता में ब्रिटेन की गहरी अभिरुचि है ताकि ब्रिटिश आर्थिक साधनों का बोझ कम हो जाय। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन तथा पश्चिमी योरप के अन्य देश अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के कारण यह जानते हैं कि यदि जर्मन उद्योगपति को स्वच्छन्द रूप से जर्मनी के लिए सैनिक शासन का समर्थन करने दिया जाय तो उसका भयंकर परिणाम क्या होता है? यहां अमेरिका अपने योरोपीय सहयोगियों से पृथक कहा जा सकता है।

मित्रराष्ट्रों के नियंत्रण का प्रश्न

इस समय अमेरिका को स्वतंत्र और प्रगतिशील जर्मन उद्योग से प्रतियोगिता का भय नहीं है। पर इस समय पश्चिमी जर्मनी की देखभाल का मुख्य बोझ अमेरिका के ऊपर है। इसलिए वह जर्मन उद्योगपतियों को सहायता देने के पक्ष में है ताकि वे अपना व्यापार बढ़ा सकें और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, मित्रराष्ट्रों का नियंत्रण यथासम्भव कम किया जा सके।

इस प्रकार, राजनैतिक और आर्थिक दृष्टिकोणों में अन्तर है। राजनैतिक दिशा में मुख्य मतभेद ब्रिटेन और फ्रांस का है और आर्थिक में फ्रांस तथा अमेरिका का।

रूर के लिए योजना

छोटी अवधि की दृष्टि से इस समस्या का राजनैतिक अंग कम महत्वपूर्ण सा हो गया है क्योंकि रूस के साथ सारे जर्मनी के भविष्य पर समझौते की आशा भी कम होती जा रही है।

क्या रूस के भविष्य पर अमेरिका और फ्रांस के मतभेदों का अन्त किया जा सकता है? क्या जर्मनी के मुख्य औद्योगिक केन्द्र के लिए ऐसी योजना बनाई जा सकती है जो अमेरिका और फ्रांस दोनों की मांग पूरी कर सके : अर्थात् सामरिक सुरक्षा और रूर का औद्योगिक विकास। इस समय मुख्य प्रश्न यही है।

आर्थिक प्रश्न इस समय अधिक मुख्य है अभी ही इसका प्रभाव राजनैतिक प्रश्न पर पड़ने लग गया है क्योंकि अमेरिका संघीय शासन में विश्वास करने पर भी फ्रांस का विरोध होते हुए पश्चिमी जर्मनी के एकीकरण के लिए उतावला हो रहा ताकि इस प्रकार, जर्मनी का आर्थिक पुनरुत्थान हो सके।

ब्रिटेन और बेनेलक्स देश इन दोनों लक्ष्यों की प्राप्ति चाहते हैं, इस लिए उनका कर्तव्य है कि दोनों पश्चिमी देशों के मध्यस्थ बनें ताकि सभी छः राष्ट्र अपने सभी लक्ष्यों का सार प्राप्त कर सकें : सैनिक सुरक्षा और आर्थिक पुनरुत्थान।

स्वतन्त्र होने के बाद

हमने अब तक क्या किया ?

★

जनता ने अपनी लोकप्रिय सरकारों से बड़ी बड़ी आशाएं बांधी थीं, किन्तु आज वह निराश है। उसकी हृदय वेदना और निराशा को 'संसार' के सम्पादक ने बहुत अच्छे शब्दों मे चित्रित किया है। उसी लेख के कुछ अंश निम्न लिखित हैं।

हम जानते हैं कि कांग्रेसी सरकारों ने बहुत कुछ किया है। हम यह भी जानते हैं कि जिन लोगों के कन्धों पर सरकार के सचालन का भार है वे देश सेवक हैं, देश के लिए उन्होंने त्याग किया है और उनकी प्रवृत्ति तथा नियत जनता का हितसाधन करने की ओर ही है। कोई भी निष्पक्ष दर्शक यह स्वीकार किये बिना भी नहीं रह सकता कि कांग्रेसी सरकारों के कारण देश के वातावरण में महान परिवर्तन हुआ है, जनता की मन स्थिति बदल गई है, उसे स्वाभिमान और अपने अधिकार की अनुभूति होने लगी है और वह आत्मविश्वास के साथ कमर सीधी सिर ऊंचा करके खड़ी होने लगी है। कांग्रेसी सरकारों ने भी अनेक सुधार किये हैं, जनसमाज की आर्थिक और सामाजिक स्थिति उन्नत करने के लिए अनेक योजनाओं को जन्म दिया है, जनता के मौलिक और नागरिक अधिकारों की घोषणा की है, बहुत से जनोपयोगी कानून बनाये हैं और जमींदारों तथा पूंजीपतियों के शोषण से किसानों और मजदूरों की रक्षा करने की नीति बर्ती है।

पर आज हमारे सामने प्रश्न दूसरे ढंग से उपस्थित होते हैं। सरकारों ने जो कुछ किया है वह किया हो है पर जो नहीं किया है, उसकी मात्रा इतनी अधिक है तथा जो किया है वह इस ढंग से किया है कि उसकी ओर ध्यान देना हमारे लिए आवश्यक हो गया है। हमारे मंत्री अपना ध्यान इस बात की ओर दें कि उन्होंने क्या नहीं किया और जो नहीं किया गया वह कितना अधिक है। वे इस ओर भी ध्यान दें कि थोड़ा बहुत जो कुछ किया वह भी पुरानी रूढ़ियों, कायदे कानूनों और प्रथाओं परिपाटियों की लीक पकड़ कर किया गया कि उसमें कोई जान न रह गयी। व्यवस्था के सूत्रधार होकर व्यवस्था के ऐसे पुजारी बन गये कि व्यवस्था को बदलने के अपने लक्ष्य और कार्य को भूल गये। विचार तो कीजिए कि आपने कौनसा महान कार्य किया है, जिससे देश की जनता की स्थिति में रत्तीभर भी सुधार हुआ। ढाई वर्ष पूरे हो रहे हैं आपको शासन करने पर आपने इस बीचमें शासन के स्वरूप को शासन के यन्त्रों को और जन समाज के स्तर को बदलने तथा ऊंचा उठाने में कौन सी सफलता दिखाई? इन ढाई वर्षों में जनता के ऊपर करोड़ों रुपये का भार अवश्य लग गया। हमारे प्रान्त की सरकार ने स्वयं अपने बजट में करोड़ों रुपये साल की आय करसे बढ़ा ली पर जिससे आपने कर वसूल किया उसका कौनसा उपकार हुआ? राई बराबर भी तो परिवर्तन नहीं हुआ। वहीं अभाव वही दरिद्रता, वही दीनता, वही अशिक्षा, वही ढंग और वही शासन जो पहले था। आज भी जारी है। वही घूसखोरी वही भ्रष्टाचार, वही मुनाफाखोरी और चोर बाजारी चल रही है। गांवों में वही सड़कें हैं, वही कूएं हैं, वहीं मकान हैं, वही सूखा है, वही बाढ़ है और वही समस्याएं तथा संकट हैं। परिवर्तन केवल यही हुआ कि करोड़ों रुपये के टैक्स बढ़ गये। यह शासक शकट जैसे पहले चलता था, वैसे ही आज चला जा रहा है ग्रामसुधार हो या हो प्रश्न खेती के सुधार की बात हो या खाद और पशुओं के पालन तथा नस्ल की समस्या, कुएं बनवाने या सड़कों के निर्माण का प्रश्न हो, सब आपके सामने हैं। सब के लिए आप योजनायें छापते हैं पर आप कर क्या सके? इन कामों में उन रुपयों को भी खर्च नहीं कर सके जिसे आपने गत वर्ष के बजट में निर्धारित किया था। हां इतना अवश्य किया कि करोड़ों रुपये साल में इन विभागों के नौकरों पर खर्च कर डाले और प्रति माह एक न एक नया विभाग खोलते जा रहे हैं।

जनता से कर लिए बिना राष्ट्रीय सरकारें नहीं चल सकतीं यह निर्विवाद है। कर वृद्धि भी करनी होगी इसे भी हम मानते हैं। पर जन समाज का कुछ कीजिये और फिर कुछ कर उगाहिये तो उसे भी कर भार न अखरे। पर केवल कर बढ़ाते जाना और जनता के हित के लिए योजनाओं को पेश करके बकवास करते जाने से तो केवल रोष ही बढ़ेगा। आप मद्य निषेध की बात करते हैं पर पैसे के लिए उसे कार्य रूप में परिणत नहीं करते। लाखों रुपये की आय शराब खोरी से बढ़ रही है। जहां शराब अधिक बिक सके, वहां आप दुकानें खुलवाते हैं और फिर आप बातें करते हैं मद्यनिषेध की। जब पैसा वसूलते हो यह कह कर कि कर जनता की भलाई में खर्च किया जायगा, पर भलाई कुछ दिखाई नहीं दे रही है। भारत में विदेशी सत्ता के नौकर पैसे से ही अपना काम चलाते थे। आज हम और आप भी उसी पद्धति के गुलाम हैं। आपने चने चबा कर, पेड़ों के नीचे लेट कर, कम्बल कन्धे पर लाद कर गांव की पगडण्डियों पर घूमते हुए स्वतन्त्रता संग्राम का सचालन किया था। आज पैसे बिना आप देश की सेवा नहीं कर सकते। व्यवस्थापक सभा के सदस्य हैं तो दस रुपये रोजाना भत्ता चाहिये। दो सौ रुपये मासिक पुरस्कार भी चाहिये। फर्स्ट क्लास का दुगुना किराया भी चाहिये। होटलों में भोजन करना है, किराये की रकम बचानी है फिर भी रुपया तो चाहिये ही। मन्त्रियों का काम भी बिना पैसे के नहीं चल सकता। गवर्नरों के यहां पार्टियां होंगी और पार्टियों में वे ही पुराने दकियानूस जिन्हें विदेशी गवर्नर बुलाते थे, बुलाये जायंगे। बुलाये जायेंगे इसलिए कि दरबारियों की पुरानी सूची भी आज तक मौजूद है और हमारे गवर्नरों की रूढ़ि का ही पालन है। विशाल गवर्नमेंट हाउसों की शोभा भी तो सजे सजाए और सुन्दर परिधानों वाले पुराने दकियानूसों से ही बढ़ेगी। क्या यह सत्य नहीं है कि कांग्रेसी गवर्नरों के यहां पार्टी में टेबुलों पर पियक्कड़ों अतिथियों के लिए शराब तक रखी गयी क्योंकि पार्टियों की यही परिपाटी होती है। जब हमारी यह दशा है तब जो कर्मचारी रखे जाते हैं वे भी पैसे के लिए ही आयेंगे। फिर जनता का पैसा विभागों का पेट भरने में खर्च करते चलिए और टिक्स पर टिक्स लगाते तथा बढ़ाते चलिये। हम पूछते हैं कि हमारी यह गति किस बात की द्योतक है। क्या हमारे पतन की सूचना नहीं दे रही है? क्या हम अपने मार्ग से भ्रष्ट नहीं हो गये हैं। यदि देश की सेवा हम पहले गरीबी ग्रहण करके कर सकते थे, तीसरे दर्जे की यात्रा करने में हमारी प्रतिष्ठा को कोई ठेस नहीं लगती थी तो आज भी तो देश सेवा ही करनी थी। जनता के पैसे का सदुपयोग जनता के हित की बात हम क्यों भूल गये। वास्तव में हमारी दृष्टि बदल गई है। बापू ने हमें सिखाया था कि मनुष्य की श्रेष्ठता तथा उसका गौरव और उसकी प्रतिष्ठा भी पैसे में ही है। यह दृष्टि वही है जिसके विरुद्ध हम लड़े थे। स्पष्ट है कि जब हम अपनी विवेचना करते हैं तब हमें अपना स्वरूप अत्यन्त विकृत दिखाई देता है। पर अपने दोषों का दर्शन करना ही होगा अन्यथा हमारा और देश का सत्यानाश हो जायगा। अब भी सचेत होने का समय है और अच्छा हो हमारी आंखें खुल जाय।

स्वतंत्र भारत की पोशाक कैसी हो

[श्री नारायण श्यामराव चिताम्बरे]

स्वतन्त्र भारत की पोशाक कैसी हो — इस विषय में भारतीय विचार चुप है। अतएव अब हमें इसका निर्णय करना है। हमें ऐसी पोशाक का निर्णय करना है जो भविष्य में सम्मान की दृष्टि से देखी जाये और जिसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता न पड़े। साथ ही जो भारतीय संस्कृति की प्रतीक हो। — ले०

कहावत है — 'एक नूर आदमी दस नूर कपड़ा।' मानव के जीवन में जहां और और वस्तुओं का महत्व है, वहां पोशाक का भी बहुत बड़ा महत्व है। जिस देश की सभ्यता जितनी अधिक उच्च होगी, संस्कृति जितनी अधिक परिमार्जित होगी, कला जितनी अधिक विकसित होगी, उस देश की पोशाक भी उतनी ही अधिक नयनाह्लादकारी और कलापूर्ण होगी।

प्राचीन भारत की पोशाक के विकास पर एक विहंगम दृष्टि डाल लें।

आदि मानव तो पोशाक विहीन ही था। ज्यों ज्यों मानव मस्तिष्क के ज्ञानतन्तु विकसित होते गये, उसे अपनी नग्नता पर लज्जा हो आई और वृक्षों की छाल और पत्तों से वह अपने शरीर को ढकने लगा, ज्ञान के सहारे मानव विज्ञान की उन्नति की ओर बढ़ता गया तथा छाल और पत्तों की जगह कपास के तन्तुओं ने ले ली। तन्तुओं से सूत्र बना और वहीं से वस्त्र-कला का सूत्रपात हुआ। वस्त्र निर्माण कला का वह प्रथम रूप आज भी हम भारतीय 'जनेऊ' के रूप में परिधान करते हैं। तत्कालीन भारतीयों की सांस्कृतिक विशेषता यह थी कि सामाजिक सुधार का गठबंधन वे धार्मिक संस्कारों के साथ कर देते थे। प्रत्येक सामाजिक उन्नति के पर्याय से मानवता को विकास का धार्मिक रूप देकर प्रचलित करने का नियम था। कपास के तन्तुओं को 'सूत्र' रूप मिलते ही उपनयन संस्कार में उन सूत्रों को धार्मिक मंत्रों से परिशुद्ध करके परिधान करने की विधि प्रचलित कर दी गई और सूत्रकाल के उस आदि रूप को अमर कर दिया गया [क्या यज्ञोपवीत का यही तत्व है? – सं०]।

इसके बाद बुनने की कला का आविर्भाव हुआ। धोती और उत्तरीय बुने जाने लगे। स्वभावतया सौंदर्य प्रिय मानव ने वस्त्रकला के इस विकास का सहर्ष स्वागत किया होगा। पौराणिक कथाओं में जहां जहां वस्त्रों का उल्लेख आया है, वहां धोती और उत्तरीय का ही वर्णन किया गया है। स्त्रियों की पोशाक का भी कोई वर्णन नहीं मिलता। स्त्रियां भी धोती ही पहनती थीं। हां, उत्तरीय की जगह स्त्रियों के लिए 'कंचुकी' शब्द का प्रयोग मिलता है।

धीरे धीरे सीने की कला का निर्माण हुआ। कुरते और अचकन सीये जाने लगे। स्त्रियों के लिए लहंगा और चोली की प्रथा चली। भारतीयों में इससे अधिक इस कला का विकास नहीं हो पाया। इसका कारण यह हो सकता है कि भारत वासी एक तो सादगी प्रिय थे, दूसरे उन की संस्कृति आध्यात्मिकता पर आधारित थी। आत्मा की उन्नति ही उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य होता था। भौतिक विज्ञान की ओर उनका अधिक झुकाव नहीं था।

मध्य युग में भी भारतीय पुरुषों की यही पोशाक रही। पगड़ी, कुरता, अचकन और धोती। हां, स्त्रियों की पोशाक में प्रान्तों के अनुसार भेद था। किसी प्रांत में लहंगा, ओढ़नी और चोली की प्रथा थी तो किसी प्रान्त में साड़ी और चोली ही थी।

स्थूल रूप से पोशाक के तीन विभाग हैं। फौजी पोशाक, राज कर्मचारियों की पोशाक और नागरिकों की पोशाक। प्राचीन काल से ही ये तीन प्रथायें प्रचलित हैं। फौजी पोशाक के सम्बन्ध में हम महाभारत की एक कथा का उल्लेख करेंगे। महारथी कर्ण ने भगवान सूर्य की उपासना करके इन्हें प्रसन्न किया। जब भगवान सूर्य इन्हें वर देने के लिए प्रकट हुए तब कर्ण ने उनसे एक ऐसा शिरस्त्राण और शरीर रक्षक (जिरह-बख्तर) मांगा जो बाणों के प्रहार से छिन्न भिन्न न हो सके। स्वदेश की रक्षा के हेतु फौज की आवश्यकता है तो फौज के सैनिकों की रक्षा के लिए फौजी पोशाक की भी आवश्यकता है। उसी प्रकार नागरिकों की तथा राज कर्मचारियों की पोशाक में भी कुछ न कुछ भेद अवश्य ही रहा है।

पोशाकों के इन तीनों विभागों का स्पष्ट रूप हमें मुस्लिम काल में मिलता है। एक हजार वर्ष पूर्व जब भारतीयों का सम्पर्क मुस्लिम संस्कृति से हुआ तब भारतीय विचारों पर उस संस्कृति का प्रभाव पड़ा, वहां उनके रहन सहन और पोशाक पर भी उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहा। भारतीय संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति का सम्पर्क यदि एक दूसरी से केवल पड़ोसी की हैसियत से ही होता और राज्य संचालक की हैसियत से नहीं तो सम्भव है, मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव भारतीयों पर पड़ता ही नहीं। क्योंकि भारतीय संस्कृति में और मुस्लिम संस्कृति में एक बहुत बड़ा फर्क है। भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि आध्यात्मिकता पर अधिष्ठित है तो मुस्लिम संस्कृति का धरातल भौतिकता पर आधारित है।

भौतिकता पर आधारित इस मुस्लिम संस्कृति के संचालक जब राज्य संचालक भी बन गये तब उनकी सुन्दर और असुन्दर, सभ्य और असभ्य सभी बातों का प्रभाव भारतीयों के जीवन पर पड़ा। तब पोशाक ही कैसे अछूती रह सकती थी। हमें यह प्रामाणिक रूप से स्वीकार करना होगा कि मुस्लिम साम्राज्य की शान शौकत, पोशाक की उच्चतम कला, शृंगार के विविध रूप सहज ही उपेक्षा योग्य वस्तुयें नहीं थीं। पोशाक की विविध कलाओं के अनेक नमूने उन्होंने भारतीयों को प्रदान किये। उस समय वस्त्र निर्माण कला को बहुत प्रोत्साहन मिला। इसमें सन्देह नहीं।

दो सौ वर्ष पूर्व जब ईसाई संस्कृति ने भारत में प्रवेश किया तब फिर भारतीयों के विचारों में और रहन सहन में आमूल परिवर्तन होने लगा। ईसाई संस्कृति मुस्लिम संस्कृति से अधिक विकसित और परिमार्जित थी। कला के विकास की कुंजी परिमार्जन है। कला में आकर्षण तभी हो सकता है जब उसका परिमार्जन होता रहे। इस में सन्देह नहीं कि ईसाई संस्कृति भी भौतिकता की ही अनुगामिनी थी, किन्तु उसके अनुयायी कलासाधन में दत्त चित्त थे। यही कारण है कि आज भी विश्व में ईसाई संस्कृति से जनित कला का बल बाला है। तत्कालीन भारतीय अपनी विगत पांच सौ वर्षों की गुलामी में अपनी प्राचीन पोशाक को भूल चुके थे। न तो वे गुलामी के कारण अपनी कोई पोशाक निर्धारित ही कर पाये थे, न उन्हें इस पर सोचने विचारने का अवसर ही मिला था। कलासाधन का द्वार ही बन्द हो गया था। पिंजड़े में बन्द पक्षी के समान उनकी अवस्था थी। अतएव अंग्रेजों की कलापूर्ण और मोहक पोशाक से विमोहित हो कर वे उसे ही अपनाने लगे।

उपरोक्त मुस्लिम काल और ईसाई काल में पुरुषों ने ही उनकी पोशाकों को अपनाया है। भारतीय स्त्रियों ने तत्कालीन मुस्लिम स्त्रियों की तथा अंग्रेजी स्त्रियों की पोशाकों का जरा भी अनुकरण नहीं किया है प्राचीन स्वतंत्र भारत के समय उनकी जो पोशाक थी वही आज के स्वतंत्र भारत में भी है। अपनी इस भारतीयनिधि को वे गुलामी की उस लम्बी अवधि में जब कि भारत पर उसकी संस्कृति पर, साहित्य पर, विचारों पर, रहन सहन पर आघात प्रत्याघात हो रहे थे, किस प्रकार रक्षा कर सकीं यह एक आश्चर्य भरी बात है। पुरुषों का लौह हृदय उन आघात प्रत्याघातों के सम्मुख, मोहकता और आकर्षण के सम्मुख झुका किन्तु पुष्प सदृश कोमल हृदया स्त्रियां अविचल सेनानी की तरह मोर्चे पर डटी रहीं। न तो उन्हें आघात प्रत्याघात झुका सके न मोहकता और आकर्षण

सुमा ही सके। आज स्वतन्त्र भारत में वे अभिनन्दन के योग्य हैं, कि उन्होंने भारत की गुलामी की उस लम्बी अवधि में भारतीय संस्कृति तथा अपनी पोशाक की श्रृंखला नहीं टूटने दी [पश्चात्य स्त्रियों की पोशाक के विषय में लेखक का क्या मन्तव्य है ?—स]

इस प्रकार आदिकाल से लेकर अब तक के भारत की पोशाक का इतिहास रहा है। अंग्रेजों के भारत से चले जाने पर अब उनकी पोशाक में कोई स्वारस्य नहीं रह गया है, अंग्रेजों का जब तक हमारे देश पर प्रभुत्व बना रहा, उनकी पोशाक हमारे शरीर पर अधिकार जमाये रही। देश के स्वतन्त्र होते ही गुलामी की एक भी वस्तु से हमें प्रेम नहीं रहा है। हमारा मन, हमारी आत्मा, हमारा शरीर अब ऐसे विचारों को, ऐसे रहन सहन को अपनाना चाहता है, जिसमें स्वतन्त्रता की प्रखर ज्योति आलोकित हो रही हो। इसे ही स्वतन्त्रता का जादू भरा चमत्कार कहते हैं।

अतीत की और मध्ययुग की पोशाकें, जो उस समय के स्वतन्त्र भारत की पोशाकें थीं, आज के स्वतन्त्र भारत के प्रगतिशील युग में प्रचलित करना उचित नहीं है। व शोभा भी नहीं देगी, तब प्रश्न उठता है कि स्वतन्त्र भारत की पोशाक कैसी हो ?

इस सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि मानव स्वभावतः श्रृङ्गार प्रिय होता है। प्रत्येक युग में श्रृंगार की प्रथाएं थीं। चाहे उसके रूप भिन्न भिन्न रहे हों। एक दूसरे के प्रति आकर्षण बना रहने के लिए श्रृंगार का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। आकर्षण में ही वह प्रबल शक्ति है जो दो आत्माओं को निकट सम्पर्क में लाने की क्षमता रखती है। वही प्रेम का जनक है और प्रेम मानवता का निर्माता अतएव मानव जीवन में आकर्षण का अमोघ स्थान है। जिस अदृश्य कलाकार ने इस दृश्य सृष्टि का सृजन किया है, यदि उसने उसमें नयनाभिराम आकर्षण न बनाया होता तो मानव दुःख के थपेड़ों से टकरा टकरा कर मर जाता। मानव को काटों भरे दुःख का विस्मरण कराने के लिये ही उस सर्वज्ञाता कलाकार ने इस सृष्टि को अभिनव अलंकारों से सजाया है जहाँ में जहाँ काटे हैं वहाँ फूल भी हैं जहाँ पतझड़ है, वहाँ बसन्त है।

अतएव मानव जीवन में आकर्षण साध्य है, श्रृंगार उसका साधन है, सुन्दरता उस अदृश्य कलाकार की कला का दृश्य रूप है। उसने हमें सुन्दरता प्रदान की है। हमें तो उसका कृतज्ञ होना चाहिये कि उसने हमें कलापूर्ण सुन्दरता प्रदान की और उसको सजाने के लिए श्रृंगार के सभी साधन दिये, तब हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उस सुन्दरता का स्वागत करें, उसे सवारें। यही उस कलाकार की कला के प्रति कृतज्ञ होना है।

श्रृङ्गार—भारतीय

प्रश्न किया जा सकता है कि भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक ज्ञान की प्रतीक है और श्रृंगार आदि भौतिकता के साधन हैं तब उनको अपनाना भारतीय संस्कृति के विपरीत होगा। उत्तर सरल है। अनादि काल से भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि वह युग की पुकार के अनुसार जीवन संचालन करने की शिक्षा देती रही है। उसने कभी यह नहीं कहा कि भारत के नागरिक जीवन के प्रत्येक युग में—बाल्य और यौवन—में भी साधु बन कर ही रहें। उसने युग की पुकार के अनुसार ज्ञान और विज्ञान का स्वाभाविक ढंग से समन्वय कर दिया है। जहां वह हमें मधुर स्वर में भौतिक विज्ञान जनित सम्मोहक साधनों को अपनाने का आदेश देती है, वहां वह प्रखर शब्दों में ज्ञान की महत्ता बतला कर उन साधनों में आसक्त न होने का उपदेश भी देती है। तात्पर्य यह है कि भारतीय संस्कृति मानव के जीवन यापन का एक संयत और उच्च तम स्तर प्रस्तुत करती है, जिसमें भोग है, तो योग भी है और दोनों के अपने अपने युग हैं।

तो अब सिद्ध हो गया कि भारतीय संस्कृति में श्रृंगार की आज्ञा है। श्रृंगार के साधनों में पोशाक का स्थान सर्व प्रथम है। ट्रेन में कोट पतलून पहने हुए व्यक्ति दूसरे प्रवासियों पर हुकूमत करते देखे गये हैं। इस पोशाक के धारण करने पर गरीबों के प्रति घृणा तिरस्कार ही उत्पन्न होता है, क्योंकि यह शोषक और शासक की पोशाक है। इसके विपरीत जब उस ट्रेन में कोई खद्दर धारी व्यक्ति खादी कुरता पहने, गांधी टोपी लगाये, जवाहर जाकिट पहने प्रवेश करता है तो उसका बर्ताव दूसरे प्रवासियों के प्रति प्रेम भरा और अपनापन लिये होता है। इस पोशाक का एक चमत्कार यह भी है कि किसी भी समय, कैसी भी विषम परिस्थिति में वह अन्याय को सहन नहीं करती। स्वभावतया उसमें मानवता जागृत रहती है। भगवे वस्त्र पहने हुए सन्यासी की ओर देख हम स्वभावतः विनम्र हो उठते हैं। किसी त्यौहार के दिन हमारे मन में नये कपड़े पहनने की लालसा अपने आप जाग उठती है।

भारतीय विधान इस सम्बन्ध में चुप है अतएव स्वतन्त्र भारत की पोशाक का निर्णय हमें करना है। एक दो मनुष्यों को नहीं, तैंतीस करोड़ मनुष्यों को अपने स्वदेश की पोशाक का निर्णय करना है। कोई एक राजनीतिक दल अपने सिद्धान्तों को ध्यान में रख कर पोशाक का निर्णय कर दे तो वह भी उपयुक्त नहीं होगा। उदयोन्मुख स्वतन्त्र भारत में अभी अनेकों राजनीतिक दल बाल्य अवस्था में हैं अतएव कोई ऐसी पोशाक आज हमें निर्धारित नहीं करनी है जो कल बदलनी पड़े। हमें ऐसी पोशाक का निर्णय करना है, जो भविष्य में सम्मान की दृष्टि से देखी जा सके और जिसमें परिवर्तन करने का किसी को साहस न हो सके। जो भारतीय संस्कृति की प्रतीक हो। जिसके पहनने पर हमारे मन में अहिंसा के साथ साथ स्वदेशरक्षा की महत्ता का भाव भी जाग्रत हो। जो प्रेम और सहयोग की भावनाओं को जन्म दे सके, वह ऐसी पोशाक हो जिसे पहन कर भारत के नागरिक जब विदेश में जायें तब वहां के लोग कह सकें यह भारत के—एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं।

———

पाकिस्तान से भारत की सीमा में

[श्री इन्द्रकुमार विद्यार्थी]

शुजाबाद (जिला मुलतान) से भारत की सीमा तक पहुँचने की एक करुण आपबीती।

शाम की रूपहली किरणें हमारे गांव की सीमा के बाहिर झाड़ रही थीं, किन्तु हमारे भाग्य में उन्हें देखना बदा न था। १५ अगस्त से पूर्व तो हम अपने शहर से एक मील स्टेशन तक सैर को जा सकते थे, किन्तु इधर उधर के अप्रकाशित कत्लों के भय ने हमें वहां से खींच कर शहर से केवल एक फर्लांग की दूरी पर, नहर की पटरी पर लापटका। सायंकाल के पांच बजते ही लोग पचास साठ की टलियां बना कर नहर की पटरी तक जाते। पुल के किनारे पर बैठते। सामाजिक चर्चा करके फिर जेल के कैदी के समान दिया जलने से पूर्व ही लौट आते व अन्धेरा होते ही शहर के चारों दरवाजे बन्द हो जाते थे।

भगवान् ने हमारे शहर की बनावट ही विचित्र बनाई है। इस जैसा एक रूप में बना शहर और शायद कहीं हो तो हो। चौक में खड़ा मनुष्य सारे शहर को एक ही नजर में देख सकता है। गली के बिल्कुल सामने गली। शहर के चारों ओर परकोटा। यह एक ऐसी स्थिति थी जो इस भयानक समय वातावरण में भी हमें शत्रुओं के आक्रमणों से बचाये हुए थी। सारा दिन भय और चिन्ता में बीतता था, तो रात्रि 'खबरदार और होशियार' के नारों से गुञ्जित रहती थी। शत्रु की दृष्टि में हम पूर्णतया अपनी रक्षा में समर्थ और उसे नीचा दिखाने की क्षमता रखते थे। यह तो भगवान् ही जानता है कि हमारी कितनी तैयारी थी और हम कितने पानी में थे।

रोज रक्षा समितियां होती थीं, किन्तु बातों ही बातों में शहर के कर्णधार समय व्यतीत करके अपने घरों को चले जाते थे। इतना कुछ होते हुए भी चन्द एक युवकों के उत्साह से हम स्थानीय मुसलमानों से हार जाने वाले नहीं थे, ऐसी धारणा शत्रु और मित्र पक्ष की थी।

मुसलमानों के भय और स्थानीय हिन्दू धनिपतियों की गाढ़ी निद्रा तथा पाकिस्तानी योजना की कार्य प्रणाली के फल स्वरूप, हमारी विपत्ति की एकमात्र रक्षिका हिन्दू सेना भी हमें भगवान् के सहारे छोड़ कर के चली गई थी। म्युनिसिपल कमेटी का कार्य अस्तव्यस्त हो चुका था। पूर्व कार्यकर्ता काम छोड़ बैठे थे। सफाई का तनिक मात्र भी प्रबन्ध नहीं था। सारा शहर बीते की, चलते फिरते मनुष्यों से भरे नर्ककुण्ड से भी निकृष्टतर हो चुका था। इर्द गिर्द के देहात के अशिक्षित लोगों के आ जाने के कारण सफाई की प्रणाली और भी बिगड़ चुकी थी। यह कार्य जो कौम अछूत जातियों में ही लिया होते थे। इन जातियों की सफाई का कार्य भी शहर के प्रतिष्ठित सज्जनों को करना पड़ता था। ऐसी अवस्था को देख करके उस युग की याद आ जाती थी जबकि स्वर्गीय अमर शहीद बापू अन्य कांग्रेसी नेताओं के साथ अपने हाथों में झाड़ू और सिर पर गन्दगी की टोकरी उठाये सफाई करते दिखाई देते थे। मकानों को साफ करने वाले मुसलमान भंगी एक समय का १) और २) तक वसूल करते थे। जिन्हें दो समय भर पेट भोजन भी दुर्लभ था, वे इस रकम को कैसे भरते?

ऐसी विकट परिस्थिति थी, सारा शहर पाकिस्तान छोड़ कर हिन्दुस्तान जाने को कमर कसे बैठा था। हमारा सब सामान पाकिस्तान की सम्पत्ति समझी जाती थी। मुस्लिम नेशनल गार्ड के लगातार प्रचार के अतिरिक्त भी हमारे घर की नई मशीनें ३५) को बिक रही थी। रुईयों का तोड़ा जो १५) और २०) पर भी आ निपटता था। आईना २०) को और सजाने की शीशे वाली मेजें ३) तक को उठ जाती थीं। कुर्सी १), पलंग ५) और ट्रंक ॥) आने तक में प्रत्येक घर से मिन्नतों और धन्यवादों से मिल जाता था। खालिस घी १) सेर और चीनी ≶) में बिक रही थी। कपड़ों और गेहूँ को लोग गरीबों में मुफ्त बांट करके परम सन्तोष अनुभव करते थे। चारों ओर अन्धेर नगरी, चौपट राजा। टके सेर भाजी टके सेर खाजा॥ का राज्य छाया हुआ था। ऐसी परिस्थिति में भला कौन वहां रहना चाहता।

पहली स्पेशल गाड़ी चल गई, तो जूते की तह से लेकर के पगड़ी के छोर तक सब कुछ टटोला गया। स्त्रियों के गुप्त अंगों की भी, स्त्री वेषधारी कामुकों ने तलाशी लेकर हिन्दू शरीर धारी मानव को मुस्लिम वेष में फिरते नर पशु ने तीन ही वस्त्रों में भेजा। इसमें वे कोमलांगि भी थी जोकि आज तक भूमि पर पैदल भी न चली थीं। आहें लेती और सिसकियां भरती ललनाओं को अपने तीन वस्त्रों में छिपाये भारत की शान देवी पाकिस्तान को हमेशा के लिए प्रणाम करके भारत को चल पड़ी।

दूसरी और तीसरी स्पेशल गाड़ी के बीच शहर में अभूत पूर्व परिवर्तन हुए। तीसरी स्पेशल के जाने से पन्द्रह दिन पूर्व हमारा शहर से निकलना पूर्ण तया बन्द हो चुका था। प्रति शुक्रवार शहर में नमाज के लिए हजारों मुसलमानों के घड़ घड़ा आने पर हमारा सारा दिन मौत की घड़ियां गिनते बीतता था। लोग अपने २ तख्तपोशों पर और गलियों के सिरों पर मोर्चा बना कर के बैठे रहते थे। माताएं और बहिनें घर में भगवान् का नाम लेकर के हमारे सकुशल घर पहुंचने की प्रार्थनाएं किया करती थीं। शहर की अपेक्षा से अधिक स्त्रियों के पास संखिया विष था, जो किसी भी समय आने वाली मुसीबत के समय संकटमोचन का काम देता।

आखिर वह समय आ ही पहुंचा, जब कि सबने सुना कि कल ३५०० मनुष्यों की एक स्पेशल भारत की ओर जावेगी। टिकट बट गये ताकि लोग अधिक न जा सकें। सारी रात भाग कर लोग तैयारी करते रहे क्योंकि आने वाला प्रात काल उन के दुःखों को नष्ट करने के हेतु स्वरूप लुभावना दीख रहा था।

सारी रात जागते कटी। रात को यह अफवाह फैल गई कि कल बैलगाड़ियां और टांगे स्टेशन को भी नहीं जायेंगे इस लिए सामान जितना उचित किया जा सकता था किया गया। इन्तजार की घड़ी लम्बी होती है, वह भी आ ही पहुंची।

प्रातः पांच बजे मुझे चाचा जी ने बुलाया, जो कि कमेटी के प्रधान थे और कहा — 'मुझे एक विश्वस्त सूत्र ज्ञात हुआ है कि इस गाड़ी के साथ एक षड्यन्त्र है, अतः तुम मत जाओ।'

मैं वर्षा का बिलखना सुन चुका था। दूध उन्हें मिल नहीं रहा था। ताजा सब्जी के दर्शन दुर्लभ थे। मैं टूट चुका थी। गली में स्थान २ पर पड़े कूड़े के ढेरों को देख कर प्रति समय हैजे का भय सताता था। इन के अतिरिक्त मुसलमानों की चलाई और बलोच सेना के मनमाने अत्याचार हमारी दिन और रात की रोटी का रस सुखाये चले जा रहे थे। ऐसी परिस्थिति में मैंने भी उद्दण्ड सन्तान के समान आज्ञा का उल्लंघन करते हुए जवाब दे ही तो दिया, यहां के घुल घुल करके मरने से रास्ते में ही कहीं पर मर जाना श्रेयस्कर है।'

इस पर चाचा जी ने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा 'भगवान् तुम्हारा भला करे।'

उनकी चरण रज लेकर के हम शहर से बाहिर निकले। आठ ट्रंक और आठ बिस्तरे तीन परिवारों के थे। बैलगाड़ी पर एक मील के ८०) भर कर हम स्टेशन की ओर चले। पहिली स्पेशल रात्रि के समय ही पहुंच जाती थी, किन्तु यह ११ बजे दो पहर को आई। हमने सारी गाड़ी को झांक डाला, किन्तु हिन्दू सेना का निशान कहीं पर भी न मिला।

सेना नायक अपनी बलोच सेना को रास्ते का प्रोग्राम समझा रहा था, और मन अन्दर से धक् धक् कर रहा था। आने वाला भय मिश्रित समय हमारे अन्दर निराशा का आसव उंडेल रहा था। मुस्लिम सेना हिन्दू नवयुवकों को जबरन बाहर निकाल २ करके गाड़ी की

[शेष पृष्ठ २० पर]

सुगमवर्ग पहेली सं० ३४ का शुद्ध उत्तर

१ म	नो	२ र	३ ज	न	■	■	४ क	प	५ न
नो	■	गी	त	■	६ व	बो	र	■	ग
र	■	सा	ह	७ प	र	व	ल	■	र
म	८ यो	■	री	त	■	■	■	९ दी	■
■	१० गी	ता	■	का	■	११ त	क	री	र
१२ खा	१३ ह	कि	ब	र	■	१४ क	व	■	■
■	न	■	१५ ब	का	ल	न	■	१६ बा	१७ न
१८ मा	धा	■	■	१९ श	नि	वा	र	■	र
र	प	■	२० भा	ब	ना	का	खो	■	पा
मी	■	२१ बा	द	न	■	२२ प	न	■	ल

अमरीका में नीग्रो समस्या

(पृष्ठ १७ का शेष)

एक्टर स्टेज पर आते हैं पर श्रोतागणों में वे नहीं बैठ सकते।

वाशिंगटन के दो बड़े विश्वविद्यालय और अधिकांश छोटे स्कूल नीग्रो के लिए बन्द हैं। गोरो और नीग्रो लड़कों के लिए खेलों का टूर्नामेंट पृथक् होता है।

'रक्त शुद्धता' की आड़ में

इन भेद भावों को दूर करने के विरुद्ध जो युक्ति आमतौर से दी जाती है वह यही है, "अगर ये भेद भाव दूर कर दिये गये तो गोरों की रक्त शुद्धता नष्ट हो जायगी। नीग्रो विद्वेषी उदार विचार वालों के सामने प्रायः यह युक्ति देते हैं "क्या तुम अपनी लड़की या बहिन को नीग्रो के साथ विवाह करते देख सकते हो?"

अन्तर्जातीय विवाहों के प्रति यहां इतना तीव्र विरोध है वहां, दूसरी ओर, दक्षिण के गोरों में बहुतों के अनुचित सम्बन्ध नीग्रो स्त्रियों के साथ हैं। जान गुन्थर की 'इनसाईड यू० एस० ए०' के अनुसार अमरीका के १ करोड़ ३० लाख नीग्रो में से ६० लाख इसी प्रकार के मिश्रित विवाहों की सन्तान हैं। अमरीका में उन्हें 'मुलेट्टो' कहा जाता है।

मुलेट्टो की बहुसंख्या ऐसी गोरी चमड़ी की है कि समाज में उन्हें 'गोरा' समझ कर बर्ता जाता है, 'गोरों' के परिवारों में उनके विवाह होते हैं।

इसका उपाय क्या है ?

अमरीका की इस नीग्रो समस्या का क्या उपाय है? सचमुच, अमरीका जैसे उन्नत और सभ्यताभिमानी देश में इस समस्या का अभी तक बिना सुलझे रहना एक बड़ा कलंक है। कट्टर नीग्रो-विद्वेषी और सेनेट के मेम्बर श्री बिलबो ने इसका हल यह बताया था कि नीग्रो वापस अफ्रीका भेज दिये जायें।' उसने प्रस्ताव किया था कि लिबेरिया के समुद्री तट पर अमरीका उन्हें जमीन खरीद कर दे दे और वहां नीग्रो आबाद कर दिये जायें। कुछ कम नीग्रो विद्वेषी उन्हें रखते हुए समानता देने के पक्ष में हैं, जिस का अभिप्राय यह है कि वर्तमान अवस्था को चालू रखा जाय। बहुत उदार विचारक पारस्परिक विवाहों पर जोर देते हैं। उनका कहना है कि अमरीका में इस समय १५ हजार मिश्रित विवाह हैं।

राजनीतिक दृष्टि से अध्यक्ष पद के लिए तृतीय पक्षीय उम्मेदवार श्री हेनरी वालेस और उनके साथी दक्षिण रियासतों में प्रचलित नीग्रो विरोधी कानूनों को समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सरकार की ओर से कठोर कार्यवाही किये जाने की सलाह देते हैं। सीनेट में दक्षिण के श्वेतांगों का अल्पमत यदि इसका विरोध करे तो, श्री वालेस के मतानुसार अध्यक्ष की विशेष आज्ञा के अनुसार बाध्य रूप इसे मनवाया जाना चाहिये और सन् १९२८ में अमरीका के अध्यक्ष श्री जेक्सन के अनुसार, श्री ट्रूमैन को चरम सीमा तक जाने के लिए उद्यत रहना चाहिये। श्री जेक्सन के अध्यक्ष-काल में दक्षिण निवासियों ने संयुक्तराज्य की चुंगी के नियम को तोड़ा था। श्री जेक्सन ने उस समय इस विरोधी दल के नेता को लिखा था कि 'अपनी रियासत में मेरे मित्र को मेरी ओर से बधाई देना। उनसे कह देना कि इन कानूनों के विरोध में अगर एक बूंद भी खून गिरा तो मैं इस काम में लगे सबसे पहले आदमी को सबसे समीप वृक्ष के साथ फांसी लटका दूंगा।'

सन्तोषजनक रीति से यदि नीग्रो प्रश्न का हल न हुआ तो 'अमरीकियन' स्वतंत्रता की घोषणा और अधिकारों के बिल– इत्यादि का मूल्य उतना भी नहीं होगा जितना उस कागज का जिस पर यह सब कुछ लिखा गया है। इसलिए नीग्रो समस्या अमरीकन जनता और सरकार के लिए खुला आह्वान है।

विविध चित्रावलि

बस है या होटल ?—इस ३० फीट लम्बी बस में पाकशाला भी मौजूद है। भोजन घर में १६ आदमी एक साथ बैठ सकते हैं। यात्रियों के लिए वस्त्र टांगने और हाथ-पैर धोने का भी प्रबन्ध है।

'आजनापकमम्नाना गज एव धुर धर।'

एक वायुयान दूसरे विकृत वायुयान का इंजिन ठीक कर रहा है।

प्रो० फ्रेडरिक जोलियो क्यूरी फ्रांसीसी अ विश्व शांति कमीशन के अध्यक्ष हैं। आपने जनता से अपील की है कि वह फ्रांस को अमेरिकन अत्याचार से मुक्त कराये।

जेनरल आल्फ्रिड जिलेप जर्मनी के फ्रेंच अधिकृत प्रदेश के नये कमाण्डर इन चीफ हैं

हालैण्ड के विदेश मन्त्री वान बेटजेलेअर जिन्होंने ब्रूसेल्स में ५ देशों की सन्धि पर हस्ताक्षर किये थे

पाकिस्तान से भारत की सीमा में

[पृष्ठ १७ का शेष]

मुख पर खिला रही थी। उनकी ये हरकतें हमारे अन्दर छिपे भय को और भी बढ़ा रही थीं। हम दुविधा में थे। इधर आग और उधर खाई। हम मन मसोस कर हो बैठे रहे। मुस्लिम सेना के सैनिक अभी अन्दर घुसने को ही थे कि दूर से हमें एक ट्रक आता दिखाई दिया। उनमें से निकलते मरहट्ठा सैनिकों के चेहरों को देख कर के सबके सूखे मुख-कमल आशा और प्रसन्नता से निखर उठे। हमने समझा बस अब संकट कट गया, किन्तु हमें क्या पता था कि फूलों के नीचे विष धर सर्प कुण्डली मारे बैठा है। राख के नीचे सुलगती चिनगारी सब को भस्म करने के लिए अभी जल रही है। अमृत युक्त घट के अन्दर हलाहल विष छिपा पड़ा है।

फिर भी सब प्रसन्न थे। सबके छिपे चेहरे खिड़की के बाहर झांक रहे थे। बच्चे हंस रहे थे और स्त्रियां सुखमयी वार्ता में लीन थीं।

कोई ११ ½ बजे के करीब हम शुजाबाद को अंतिम प्रणाम करके चल पड़े। हमारे मन में जन्म भूमि का प्रेम उमड़ पड़ा। सब बिलख २ कर रो रहे थे और बिस्मिल के वह शब्द गुनगुना रहे थे —

छुटो दीवार पर हसरत की नजर करते हैं,
खुश रहो अहलेवतन हम तो सफर करते हैं।

गाड़ी अपना रास्ता तय करती चली जा रही थी। शुजाबाद के चौथे स्टेशन पर गाड़ी एक घण्टे के लिए रुकी और उसने दिशा परिवर्तन किया। सबने नलकों से पानी भरा। गाड़ी चल पड़ी। प्रत्येक स्टेशन पर सशस्त्र पर्मंथ मुस्लिम सैनिकों और हजारों की संख्या में प्लेटफार्म पर ठहरे हमारा स्वागत करते थे। वह सच मुच उन जंगली पशुओं के समान दीख रहे थे, जोकि हिंसक वृत्ति में उलझे हुए अपने सामने शिकार को आता देख कर के अपने से अधिक बलवान् को सामने देख कर दांत पीस कर के रह जाते हैं, ठीक वह दशा उनकी थी। इसी तरह कराते कराते हम साढे आठ बजे पाकपटन स्टेशन पर पहुंचे, जहां पर कि हमारे भाग्य का निर्णय होना था।

यहां पर आकर हिंदू सेना उतर गई और उनकी जगह पर बलोच सेना के सिपाही अपने कंधे पर संगीनों वाली बंदूकें को लटकाये आ पहुंचे। उनके आगमन के साथ ही स्टेशन पर का सब पानी बंद हो गया। बच्चे प्यास से कराह उठे। ३॥ घण्टे एंजिन भी स्टेशन से दूर रहा। हमें क्या पता था कि पानी लेने के बहाने वह हमारे खून लेने का षड्यन्त्र रच रहा था रात के ठीक १२ बज कर पांच मिनिट पर हमारी गाड़ी पाकपटन की सीमा को पार करती हुई, हमारे दुर्भाग्य पर धूल उड़ाती हुई चल पड़ी ठीक १२ बजकर दस मिनिट पर पाकपटन और बंगलावाला स्टेशन के बीचो बीच भिन्ट गुमरी सिक्खे को आबाद करने वाली, हमारे लिए "अल्लाहो अकबर" और "या अली" तथा 'काफिरों को मारो" का संदेशा लेकर बहने वाली नीलवाह नदी के किनारे पर जाकर के हमारी गाड़ी रुक गई। छुरियों कुल्हाड़ियों नेजों और दूसरे प्रकार के शस्त्रों का ताण्डव नृत्य होने लगा। हम कई आशा पथ मृत्यु की सुख छाया में पड़े करवटें बदलते रहे! गाड़ी के किवाड़ों और खिड़कियों के तख्ते नहीं थे। सबने उनके आगे ट्रंकों और बिस्तरों को रखकर अन्दर से बंद कर दिया। जिन्होंने आज तक भगवान् का नाम नहीं लिया था, वे भी अविराम गति से "राम" 'कृष्ण" और 'ओम्" का जाप करने लगे। स्त्रियें पतियों और बच्चों की सलामती की मनौतियां मना रही थीं। चंद स्वार्थी नरपिशाच यहां पर भी रक्षा के नाम पर चोर बाजारी धन बटोर रहे थे। हमें बाहरी दुनिया का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं था। हम तो केवल यही जानते थे कि १२ बजकर ३० मिनिट पर गाड़ी चली और बंगलावाला स्टेशन पर पहुंची, जहां पर कि सुबह छः बजे तक ठहरी रही। वह ५॥ घण्टे हमारे उस कैदी के समान गुजर रहे थे, जिनको किसी समय भी फांसी की सजा मिल जावे। यहां पर आकर हमें पता चला कि हमारी गाड़ी के तीन डब्बों के आदमी बिल्कुल समाप्त कर दिये गये हैं।

पशुता का ताण्डव

मेरे पास एक बच्चा आया, जिसकी आयु पांच वर्ष थी। वह प्लेट फार्म पर मेरा नाम लेकर चिल्ला रहा था। जब उसे मेरे पास पहुंचाया गया, तो वह रो रहा था। उसकी सिसकियों में एक करुण क्रन्दन था—'मेरे माता पिता मर गये हैं, मेरे भाइयों और बहिनों को किसी ने कुल्हाड़ी से काट डाला है।' कितना मर्म स्पर्शी दृश्य था वह, जिसे देखकर वहां पर बैठी सब स्त्रियां फूट फूट कर रो रही थीं। हम उसे धैर्य बंधा रहे थे किन्तु हमारा आंखें गंगा जमुना बन रही थीं।

जाको राखे साइयां

इसी प्रकार एक घटना अगले डब्बे में गुजरी। एक लड़की जिसकी आयु १४ वर्ष की थी, रोती हुई चिल्ला रही थी 'भगवान् के लिए मुझे बचाओ।' चन्द नवयुवकों ने उसे गाड़ी में खींच लिया। वह नंगी थी उसे कपड़े दिये गये। उसके मुख पर एक निशान था, जो जबरदस्ती पकड़ कर छूटने में हुआ था। चन्द नापाक मुसलमानों के चुम्बन का दाग उसके मुख पर था जिसमें लहू टपक रहा था।

छः बजे हमारी गाड़ी चली और दोपहर को निर्विघ्न कसूर पहुंच गई। यहीं भारत और पाकिस्तान से आने वाली गाड़ियों का अड्डा था। बंगलावाला और कसूर के बीच सही सलामत यात्रा करने का श्रेय हम अपने शहर के तहसीलदार और एक राना शफी अहमद को देते हैं, जिन्होंने पाकपटन से कसूर इस आशय का तार दे दिया था कि 'हमने सारी गाड़ी नष्ट कर दी है।' बंगलावाला स्टेशन पर छः घण्टे की रुकावट ने हमें उस सारे प्रोग्राम से बचा दिया, जो कि रास्ते में हमारे विनाश की घड़ियां गिन रहा था। 'जाको राखे साइयां मार सके न कोय' फिर भी हम १५०० मनुष्यों में से ६०० को गवां कर के आंसुओं का हार पहिने कसूर पहुंचे।

यहां पर भी भाग्य हम पर अठखेलियां कर रहा था। २ बजे दोपहर को कोई ५००० सशस्त्र आक्रान्ताओं ने हम पर हमला कर दिया। हमारे साथी १३७ बलोच सैनिक भी थे जिनके पास युद्ध का सब आधुनिक सामान था। हमारे साथी थे भगवान् और ३६ मरहटे सैनिक, जिन्होंने दो की आहुति देकर के हमारी रक्षा की। यहां पर हमारे १५० आदमी मरे। छः घण्टे लगातार हम गोलियों की बौछार के नीचे पड़े रहे। हमें दुनिया की सुध-बुध नहीं थी। हम अपना नाता उन परमात्मा से जोड़ चुके थे जिससे मिलाने के लिए यह गोलियां हमारे ऊपर सांय सांय करके चल रही थीं। रात भी सर पर आ पहुंची। आक्रमणकर्ता वापिस चले गये। हम भी अन्धकारमयी रजनी में मुर्दों को सिरहाना बना कर लहू की शैय्या पर पड़े रहे। इसका भान हमें तब हुआ, जब कि हम प्रातःकाल जागे और अपने सारे कपड़ों को लहू में लिथड़े देखा। बरबस मेरे मुख से निकला दुर्भाग्य! कभी तो सफेद वस्त्र पर दो धब्बे खून के देख कर न्यायाधीश मनुष्य को फांसी पर चढ़ा देता था, और कहां आज खून से हम चारों ओर लिथड़े हुए हैं। किन्तु न्याय नदारद!

प्रातः सात बजे ट्रक आये, जो हमें सतलुज से पार भारत की सरहद में ले गये। हमने दस माह के बाद अपने मुख से नारा लगाया —'हिन्दुस्तान, जिन्दाबाद"।

नई जगह को संयुक्तराष्ट्र अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया मध्यपूर्व, उत्तरी अफ्रीका और सीलोन ने लिया है।

विभाजन का परिणाम

देश विभाजन का भारत के निर्यात व्यापार पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। जूट और रुई ये दो चीजें सबसे अधिक विदेशी विनिमय उत्पन्न करने वाली थी। १९४६ ४७ में १६ लाख गाठें कच्चे जूट की, और ४६ लाख गाठें जूट के तैयार माल की निर्यात की गई। इनका मूल्य ८६ करोड़ रु० था और निर्यात व्यापार का यह २९ प्रतिशत था। पर जूट का ७५ प्रतिशत उत्पादन पूर्वीय पाकिस्तान में होता है, यद्यपि जूट की सब मिलें भारत में हैं। १९४६ ४७ में भारत ने भारत और पाकिस्तान के समस्त उत्पन्न ५५ लाख गाठ जूट में से १५ लाख गाठ उत्पन्न की थीं। दूसरी ओर भारत की मिलों ने इसी वर्ष ६० लाख गाठें खपाई थीं। इस लिए भारत में उत्पन्न जूट मिलों की २५ प्रतिशत से अधिक की माग का पूरा नहीं कर सकता। जूट के लिए भारत पाकिस्तान पर निर्भर है। पर भय का कोई कारण नहीं है। मिलों के पास स्टाक जमा है। दूसरे, भारत में जूट की खेती बढ़ाई जा सकती है। फिर पाकिस्तान में जल्दी ही जूट मिल भी नहीं खुलने लगीं। पाकिस्तान यदि दुनिया का कुल उत्पन्न जूट का ७५ प्रतिशत जूट उत्पन्न करता है तो भारत के पास कुल करघों का ५७ प्रतिशत है। अतः दोनों को परस्पर सहयोग करना ही पड़ेगा। इसलिए यह आशा करनी चाहिए कि जहा तक जूट की बनी चीजों का सवाल है भारत के निर्यात व्यापार में कोई अन्तर नहीं आयगा। यद्यपि कच्चे जूट का निर्यात भारत से न होगा।

विभाजन का कपास, ऊन, खाल और चमड़े के निर्यात पर भी प्रभाव पड़ेगा। संयुक्त भारत के कुल उत्पन्न कपास का ⅕ पाकिस्तान में होता है। यद्यपि ४५१ मिलों में से केवल १४ मिलें पाकिस्तान में हैं। लम्बे रेशे की रुई के कुल उत्पादन का ६० प्रतिशत पाकिस्तान में उत्पन्न होता है यद्यपि इसकी खपत भारत में होती है। देश के विभाजन के फलस्वरूप भारत को निर्यात व्यापार में लगभग २५ करोड़ रु० की हानि हुई है।

निर्यात व्यापार बढ़ाने की आवश्यकता

आयात निर्यात व्यापार की नियन्त्रण-नीति की आलोचना करने का यह अवसर नहीं है। पर यह एक तथ्य है कि यदि भारत अपने विदेशी व्यापार को सन्तुलित करना चाहता है और डालर भारी मात्रा में अर्जित करना चाहता है, तो उसको निर्यात व्यापार बढ़ाना

भारत का विदेशी व्यापार

(पृष्ठ ९ का शेष)

चाहिए। १९४६ ४७ के अन्त में आयात पर ८६ करोड़ रु० और अन्य खाद्य पदार्थों के आयात पर १५ करोड़ रु० भारत ने खर्च किये थे। १९४७ ४८ में भारत ने अर्थ मन्त्री के अनुसार ११० करोड़ रु० अन्न के आयात पर खर्च किया इस विशाल परिमाण में अन्न का आयात करने से देश की औद्योगिक आवश्यकतायें पूरी नहीं हो रही हैं।

दूसरा काम यह है कि निर्यात की मुख्य चीजों की १९४७ में १९४६ की अपेक्षा कीमतें १५ प्रतिशत बढ़ी हुई थीं। निर्यात व्यापार का बढ़ा मूल्य इस लिए व्यापार बढ़ने का सूचक नहीं है, अपितु मुद्रास्फीति का परिणाम है। अर्थ मन्त्री का अनुमान है कि १९४८ के पहले छः मासों में चालू खाते में रोकड़े के भुगतान से ५२ करोड़ रु० की कमी रहेगी। भारत को आयात के अन्न का मूल्य चुकाने, देश विभाजन से हुई हानि की भरपाई करने और अदृश्य आयात का मूल्य चुकाने के लिए अपना निर्यात व्यापार कम से कम ७५ करोड़ रु० और १०० करोड़ रु० का बढ़ाना चाहिए। इसलिए भारत की वैदेशिक व्यापार की नीति निर्यात व्यापार को बढ़ाने की होनी चाहिए, उसको सीमित करने की नहीं।

दूसरी आवश्यक बात यह है कि युद्ध काल में भारत ने मध्यपूर्व, उत्तरी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और आग्नेय एशिया में बाजार पाया है उसमें अपनी स्थिति मजबूत करे। भारत को अपने निर्यात की चीजों की अच्छाई बढ़ानी चाहिए। प्रचार, प्रदर्शन, विज्ञापन का इसमें उपयोग करना चाहिए। जन रुचि मालूम करनी चाहिए। सब से बड़ी बात यह है कि भारतीय माल सस्ता होना चाहिए। स्वतन्त्र भारत की ईमानदारी की परीक्षा भारतीय निर्यात माल से होगी। यह व्यापारियों को सदा स्मरण रखना चाहिए। सब से बड़ी बात यह है व्यापार को कुछ वर्ष योजना पूर्वक करे और मिल कर करे।

दुर्लभ मुद्रा प्राप्त करने का एक उपाय पुनर्निर्यात है। मध्य एशिया के देशों से भारत सम्पर्क बढ़ा कर अपना पुनर्निर्यात का व्यापार बढ़ा सकता है। यदि सम्भव हो तो पहाड़ी घाटियों के मार्गों को और अधिक सुधारने और उन्नत बनाने के विचार से मोटर पथ में परिवर्तन करने का उद्योग करना चाहिए।

उत्तरीय मध्य और दक्षिणी अमरीका से भारत को अपना व्यापार उत्तरोत्तर अधिकाधिक बढ़ाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र अमरीका भारत से चाय, काजू, लाख और चन्दन अधिक मात्रा में लेने लगा है। भारत अमरीका को लकड़ी के खिलौने, उत्तम कारीगरी की लकड़ी की चीजें हाथी दात की बनी चीजें, पतल की कारीगरी की सुन्दर चीजें, एनामल के बर्तन, कलापूर्ण चूड़ियां, बनारसी सुन्दर शिल्प का सामान, सोना, चादी, रेशम आदि की सुन्दर कलापूर्ण चीजें भारत अमरीका भेज सकता है। इनके पैसे भी अच्छे मिलेंगे। डालर की दुर्लभता को दूर करने के लिए इस प्रकार के माल का निर्यात व्यापार बढ़ाना चाहिए काश्मीर के शाल, दुशाले और काश्मीरी शिल्प को और दस्तकारी की चीजों को भी इसमें सम्मिलित किया जा सकता है।

यात्रियों का व्यापार

भारत एक प्राचीन देश है। यह गांधी और बुद्ध का देश है। इस देश में अनेक रमणीक और सुन्दर स्थान हैं। प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों की भी कमी नहीं है। स्वास्थ्य वर्द्धक सुन्दर स्थान भी इस देश में हैं। फिर दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई अन्तर्राष्ट्रीय हवाई मार्ग पर हैं। पूर्व और पश्चिम को ये मिलाते हैं। भारत सरकार यदि चाहे तो इस स्थिति का लाभ लेकर यात्रियों के व्यापार को बढ़ा सकती है। उसको प्रकाशन प्रचार का काम करना होगा। उस द्वारा स्थापित व्यवसायिक संगठन देश भर में यात्रियों को आवश्यक सूचना देगा, उनका पथ प्रदर्शन करेगा, उनके लिए होटलों की उत्तम व्यवस्था करेगा।

सैलानियों की संख्या बढ़ने के साथ भारत की इस स्रोत से अदृश्य आमदनी बढ़ेगी। यात्रियों के व्यापार में राज्य और वैयक्तिक साहसी दोनों सहयोग कर सकते हैं।

भारतीय फिल्मों को विदेशों में दिखाने से भी 'अदृश्य निर्यात' की वृद्धि होगी। भविष्य में इसके बढ़ने की बहुत सम्भावना है।

पर निर्यात व्यापार उसी समय बढ़ सकता है, जब देश में उत्पादन बढ़ाया जाय। खेती और उद्योग दोनों की पैदावार को बढ़ाने की ओर ध्यान देना चाहिए। प्रतिकूल व्यापारिक सन्तुलन का मुख्य कारण अनाज का बड़े परिमाण में आयात है। इसलिए खेती की पैदावार बढ़ाने की ओर विशेषरूप से ध्यान देना चाहिए। सरकार की नीति निर्यात व्यापार बढ़ाने की है। इसका लाभ उठाने के लिए सम्मिलित प्रयत्न की जरूरत है। निर्यात व्यापार की सफलता 'प्रतियोगात्मक मूल्य' और चीजों की अच्छाई पर निर्भर है। घटिया माल भेज कर हम अपनी ही हानि करेंगे। यदि इसका ध्यान रखेंगे, व्यापार की वृद्धि भी अनाज के मेशीनरी और प्लाण्ट, औद्योगिक माल और आवश्यक उपभोग्य माल के मूल्य चालू हिसाब में से चुकाने में कोई कठिनाई न होगी।

नौशेरा पर वायुयानों की उड़ान

(पृष्ठ ११ का शेष)

भरता है। फिटर आमरर तथा इलेक्ट्रीशियन आदि कारीगर पुनः अपना अपना काम सभाल लेते हैं।

चालकों का ड्यूटी रूम में पहुंचाया जाता है वहा वे आक्रमण की रिपोर्ट देते हैं। 'हमने पूर्वी पहाड़ी पर लगभग ५० व्यक्ति देखे और उन पर गोलियां बरसाईं हमने नाले पर हमला किया जहां बन्दूकें छिपाई हुई थीं —इ०' इस प्रकार वे आक्रमण की कहानी कहते हैं और वहा से चले जाते हैं। उनके स्थान पर दूसरे चालक आ जाते हैं।

इसके बाद वायुसेना के अधिकारी के फोन की घंटी अचानक ही बजती है और वह बताता है कि इस प्रभावशाली आक्रमण की सफलता को हमारी एक गश्ती टुकड़ी ने प्रमाणित कर दिया है।

यही खबर आगे पहुंचा दी जाती है और तब रक्षा सचिवालय की विज्ञप्ति में इसका संक्षिप्त निर्देश किया जाता है।

जवानी

[पृष्ठ १० का शेष]

'जल्दी में मालूम पड़ते हो। सब खैरियत तो है ? साहबजादे की तबीयत तो ठीक है ?'

'हां अब तो बस ठीक है।' गोलमाल जवाब देकर मैंने बढ़ना चाहा। परन्तु रहमान चचा की 'सुनो तो' ने मुझे पुनः रुकने को मजबूर किया।

सुनाते हुए उन्होंने कहा — 'खुदा पर भरोसा रखो, सब ठीक होगा।'

अधिक कुछ न कहते हुए बातचीत समाप्त करने के शस्त्र का मजबूरन प्रयोग कर मैंने कहा—'अच्छा चचा, सलाम।'

चचा जैसे सलाम का ही रास्ता देख रहे थे। बोल उठे—'खुदा तुम्हारी जवानी सलामत रखे।'

रहमान चचा का एक एक शब्द बर्छी की तरह मेरे दिल में जा चुभा। दिल में तो आया, कह दूं — 'चचा, क्यों नाहक बद दुआएं देते हो। इस कमबख्त जवानी को लेकर क्या चाटूं ? गधे की तरह लदना ही जिस जवानी का गुण विशेष हो, उसी जवानी को क्यों नाहक खुदा से मुझपर लदवाते हो।' — पर वह सब गले तक ही रहा — जबान तालू तक पहुंच ही न सकी। चुपचाप घर की राह पकड़ने के सिवाय अन्य मार्ग ही न था।

घर में कदम रखते ही श्रीमतीजी ने स्वागत किया — 'वाहरे आप, पन्द्रह-बीस मिनिट में लौटने का कहकर गये थे, सो अब चले आ रहे हो। तुम्हें क्या ? लड़का मरे या जिये। आखिर हो तो आदमी की जात न ! कलेजा पत्थर का जो ठहरा !'

ओफ ! इन औरतों को तो कोई न कोई लड़ने के लिये चाहिए ही। श्रीमतीजी समझती हैं जैसे दिल तो औरतों के यहां ही धरोहर है। आदमी बेचारा तो जैसे दिल की जगह पत्थर को लटकाये फिरता है। पर इन्हें यह सब समझाये कौन ! बाबा तुलसीदास का ताड़न वाला मार्ग ग्रहण करना तो अपने अपने पितामहों को निमन्त्रण दिलवाना है। अतः 'दिल' की सफाई न देते हुए इतना ही कहना पड़ा — 'छुट्टी नहीं मिल सकी।'

श्रीमतीजी की त्यौरियां तीन बल खाकर ब्रह्माण्ड छू उठीं। बोलीं — 'पर मैं तो लड़का बीमार पड़ा है और छुट्टी नहीं मिली ! ऐसे क्या बिक गये हो।'

सोचा — कहूं — नौकरी करना बिकने के बराबर ही है। पर कहा — 'बहुत कोशिश की, पर साहब माने ही नहीं। नौकरी का सवाल था।'

'नौकरी का सवाल था तो नौकरी छू' जाती। भाग्य तो नहीं छूट जाता। अभी बूढ़े तो नहीं हुए हैं, जो जगह नौकरियां मिल सकती हैं।' — श्रीमतीजी ने तुनक कर कहा।

मैंने कपाल कूट लिया। मन ही मन कहा — हाय रे जवानी ! क्या तू इसीलिए है कि हर कोई तुझपर सवारी कर बैठे। यदि ऐसा है तो हे यवन-वाहिनी, तुझे शत शत नमस्कार। और एकाएक मेरे हाथ उठ गये।

श्रीमतीजी समझीं हाथ उन्हीं के जोड़े गये हैं। अतः अदा के ढंग से मुस्कराकर बोलीं — 'बस खुशामद करना तुम मर्दों से कोई सीख ले।'

एक ठंडी सांस भरकर हमने कहा — 'जी हां जवानी चीज ही ऐसी है।'

श्रीमतीजी ने फटे टमाटर की तरह आंखें फाड़कर पूछा — 'क्या मतलब ?'

पूरे रहस्यवादी बनकर हमने कहा — 'एक की जवानी खुशामदी होती है और एक की जवानी खुशामद पसंद ? एक की जवानी चमन की बहार और दूसरे की जवानी गधे की पीठ का भार है।'

श्रीमतीजी मुस्कराती हुई चली गईं और हमारे दिल पर हजारों सांप लोटने लगे — अपनी कमबख्त जवानी पर, जो जो लानत भेजने के लिये दिल छटपटाने लगा। हमने निश्चय कर लिया कि यदि इस बार चाचा ने खुदा से जवानी के सलामत रखने की दुआ की नहीं कि हम सलामत नहीं या वे सलामत नहीं !

अपनी जानकारी बढ़ाइये !

★

दूध शुद्ध करने का नया उपाय

दूध के अदृश्य कीटाणुओं को मारने के लिए वैज्ञानिकों ने नया तरीका निकाला है। उनका कहना है कि 'ध्वनि-हीन ध्वनि' से जो किसी सीटी से ४० गुनी तेज होगी और जिसे मनुष्य सुन सकेंगे, दूध शुद्ध किया जा सकेगा। जब फार्म से डेरी को दूध लाया जाय तो बीच में ही दुग्ध शोधक यंत्र लगा दिया जाय। एक सेकण्ड में यह ध्वनि १० लाख से २० लाख तक चक्कर लगाया करेगी जिससे अदृश्य कीटाणु नष्ट हो जायेंगे। १००० गैलन दूध १ घण्टे में शुद्ध किया जा सकता है।

इससे एक और लाभ है कि दूध दुहते समय आम तौर पर ऊपरी भाग पर मक्खन आ जाता है। पर दुग्ध-शोधन क्रिया से मक्खन सारे दूध में समान रूप से मिल जायगा। परीक्षण के तौर पर ध्वनि यन्त्र तैयार किया जा रहा है। एक किसान के सुझाव पर यह मशीन इतनी छोटी बनायी जा सकेगी कि दूध मथने के पात्र में भी लगायी जा सके।

*

बुरी लिखावट से क्रीट का पतन

सरकारी तौर पर घोषित किया गया है कि ब्रिटिश नौ सेना के एक व्यक्ति की बुरी लिखावट के कारण भूमध्य सागर स्थित ब्रिटिश नौ सेना १९४१ में क्रीट की रक्षा करने में विफल रही। इस गलती के कारण केली और काश्मीर नामक दो ब्रिटिश विध्वंसक डूब गये। हिन्द के वर्तमान गवरनर जनरल लार्ड माउण्टबेटन केली नामक जहाज से समुद्र में से बचाये गये थे। एक अफसर ने क्रीट से भूमध्य सागर स्थित ब्रिटिश प्रधान नौ सेनापतिको लिखा कि विमान-भेदी तोपों की गोलियां समाप्त हो गयी हैं। इस कारण प्रधान सेनापति ने सभी १७ हजार सेना क्रीट से हटा लेने का आदेश दिया। तथ्य यह था कि बुरी लिखावट के कारण प्रधान नौसेनापति को भ्रम हुआ जिससे सेना हटा लेने का आदेश दे दिया गया। अन्यथा ब्रिटिश स्थल सेना को परास्त कर क्रीट पर कब्जा करना जर्मन हवाई सेना के लिए असम्भव था।

*

स्त्री से पुरुष

इटली में बोलोना में बिओवाना कासमना नाम की १२ साल की एक रूपवान लड़की रहती थी। उसका प्रेम काली हवाई सेना के एक अफसर से हो गया था। वह उसे बराबर चिट्ठियां लिखती रही। कुछ दिनके बाद चिट्ठियां आना अचानक बन्द हो गया। इस पर वह अफसर बोलोना गया पर वहां उसे लोगों ने बताया कि बओवाना अब स्त्री से पुरुष हो गयी है और सेना में भर्ती हो कर विदेश चली गयी है।

*

बुद्धि मापक यन्त्र

प्रयाग विश्वविद्यालय में एक मनोविज्ञान का विभाग खोला गया है, जिस में वैज्ञानिक यन्त्र से विद्यार्थी की बुद्धि की माप की जा सकेगी और इसके अनुसार उसे स्कूल में शिक्षा दी जायगी। लेफ्टिनेण्ट कर्नल सोहनलाल इस विभाग के प्रधान हैं। इस विभाग में आधुनिक रूप के यन्त्र और मनोविज्ञान पर आधुनिक रूप की पुस्तकों का संग्रह किया गया है। इस विभाग का उद्देश्य है कि विद्यार्थी की शक्ति का अपव्यय न हो और विद्यार्थी की क्षमता और रुचि के अनुसार उसे अपनी बौद्धिक शक्तियों का विकास करने के लिए उपयुक्त स्कूल में शिक्षा दी जावे। इससे विद्यार्थी अपनी रुचि का उपयोग भी सीख सकेंगे। इस विभाग में मानसिक उपचार भी होगा।

*

यन्त्र का मनुष्य

राजकुमारी एलिजाबेथ ने जन-स्वास्थ्य-प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में एक यान्त्रिक व्यक्ति से बात की। इस व्यक्ति में बिजली का मस्तिष्क लगा दिया गया था। इस यान्त्रिक व्यक्ति का नाम 'गाडफ्रे' रखा गया था। वह आठ फुट लम्बा था। इसका मस्तिष्क बिजली से प्रसंचालित होता था।

गाडफ्रे का काम प्रदर्शनी में केवल इतना ही था कि वह दर्शकों से अपने विषय में बातें करे और उन्हें यह बतावे कि मनुष्य का शरीर किस प्रकार काम करता है। उसने राजकुमारी के साथ बहुत धीमे धीमे पांच मिनटों तक बातें कीं। बीच बीच में जब कभी विषयान्तर होने लगता था, तो वह राजकुमारी से क्षमा भी मांग लेता था।

*

मेंढक को इनाम

कैलिफोर्निया में मेंढकों के उछलने की प्रतिद्वन्दिता में एक मेंढक ने १०,००० दर्शकों के सामने ११ फीट ५ इंच ऊंचा उछल कर बाजी जीत ली। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के कुछ विद्यार्थियों ने इस मेंढक को कुछ दिन पहले पकड़ा था और उन्हें इसे ट्रेनिंग देने का मौका भी नहीं मिल पाया था। २०० डालर पुरस्कार मेंढक को मिला है।

*

फिर हंसने लगी !

१७ वर्षीया गिल्डाफरे ने जिसके बारे में यह विश्वास हो चला था कि अब वह कभी भी न हंस सकेगी, अचानक अस्पताल में मिलने आने वाले प्रियजनों का हंस कर स्वागत किया। गिल्डा स्नायु सम्बन्धी एक रोग से पीड़ित थी। जिसके कारण वह हंस नहीं सकती थी। वह आस्ट्रेलिया से इलाज कराने लन्दन आयी और उसकी बीमारी ठीक हो जाने पर अब वह ५ महीने बाद फिर हंस सकी है।

*

रोटी के भीतर नोट

लन्दन में किसी ने विदेश से एक सुन्दर रोटी भेजी। सन्देह हो जाने पर चुंगी अफसरों ने उसकी जांच की और उन्हें उसमें पौंड सिक्के के नोट बरामद हुए। इस रोटी को खोखला करके उसमें भीतर नोट भरे गये थे।

*

सन्देशवाहक कबूतर

युद्ध काल में एक आदमी ने सैनिक सन्देश ले जाने के लिए हजारों कबूतरों को ट्रेनिंग दी थी। वही व्यक्ति आज एक ऐसा पक्षी पैदा करने की आशा करता है जो १०० मील से भी अधिक प्रति घण्टे उड़कर सन्देश वहन कर सके। वह एक कबूतरी और पेंडुकी की सन्तान होगा।

*

भेड़ के सोने के दांत

मरी हुई भेड़ के सिर के कारण दक्षिण अफ्रीका में सोने की जोरों से खोज शुरू हो गयी है।

श्री ऐवटिन नामक एक व्यक्ति पकाने के लिए एक भेड़ के सिर की बोटी बना रहा था कि उसे लगा कि इस भेड़ के दांत सोने के हैं। अच्छी तरह देखने पर उसे पता चला कि उसके दांत सोने की तरह चमक रहे हैं। बाद में खोज करने पर पता चला कि यह भेड़ केप प्रान्त के बोसवर्ग के पास एक खेत में रहती थी।

सम्भवतः जब यह भेड़ वहां छोटी-छोटी घास तथा अन्य वनस्पतियां चरती थी तो उसके साथ स्वर्णधूलि भी उसके मुंह में चली जाती होगी। इस तरह चरते-चरते और रोंथ करते करते उसके दांत सोने की तरह चमकने लगे। इस भाग में सोने की खोज करने वाले व्यक्ति सारे यूनियन से आ रहे हैं।

*

बिचारे धोबी क्या करेंगे !

ध्वनि तरंगें साबुन का स्थान ग्रहण कर सकती हैं। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान के बाद पता लगाया है कि यदि ध्वनि तरंगों के नीचे धागे को रखा जाय तो उसका मैल बिना साबुन के साफ हो जायगा। इन ध्वनि-तरंगों का दबाव इतना जोरदार पड़ता है कि यदि कपड़े को ठीक तरह से सम्भाल कर न रखा जाय तो वह फट जायगा। किन्तु वैज्ञानिकों का विचार है कि इस त्रुटि को शीघ्र दूर किया जा सकता है। यह ध्वनि तरंगें एक विद्युत् यन्त्र से उत्पन्न की जा सकेंगी। यह यन्त्र आकार में इतना छोटा होता है कि लोग इसे अपनी जेब में रख सकते हैं।

*

कोलम्बिया नदी की बाढ़ में १८,७०० आदमी लापता हो गये।

जार्ज मार्शल को छानबीन करनी चाहिए कि इस बीमारी में कम्यूनिस्ट नाम के कीड़ों का उत्पात तो नहीं था।

× × ×

राजा माईकेल का विवाह फिर रुक गया! —एक समाचार

बचेरी किस्मत की ऐसी की तैसी। राजपाट छुटा, घर छुटा, एक ऐनी पर ईमान रखा था, पर वह भी अपनी न बनी—

किस्मत की खूबी देखिये टूटी कहा पतंग
दो चार कोस जबकि लबे बाम रह गया।

× × ×

यदि हमें यह पता होता कि कराची हमसे छीना जायगा और सिन्ध की तकदीर फूट जायेगी तो हम पाकिस्तान का समर्थन कभी न करते।

—सिन्ध का लीगी एम० एल० ए०

मियां, अभी तो तकदीर के दो टुकड़े भी न हुए, अभी से फफक-फफक कर रोना शुरू कर दिया। अभी तो मुझे—
इब्तदाये इश्क है रोता है क्या,
उठकर सवेरे देखना होता है क्या।

× × ×

काश्मीर-कमीशन की पहली बैठक जिनेवा में होगी। —एक शीर्षक

जिनेवा जगह हो बैठकों की है। देखना शेष बैठकें भी इटली या स्विजरलैंड के किसी होटल में ही कर डालना। क्यों कि 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' बन कर आने वाले मेहमानों का जो मान होता है हिन्दुस्तान आने पर उससे गिरह दो गिरह कम ही मान की सम्भावना है।

× × ×

मित्रराष्ट्र-संघ की प्रतिष्ठा फिलस्तीन के मामले पर ही निर्भर है।

—त्रिग्वेलाई

जनाब! कितनी बार अपमानित होने पर आपके यहां प्रतिष्ठा चली जाती है। कुछ बतायेंगे?

× × ×

काश्मीर में पाकिस्तानी फौज का रखना चोरों को चौकीदार बनाना है।

—वेस्लोदी

लेकिन श्रीमान् जी फैसला भी तो चोरों के मौसेरे भाइयों ने ही किया है।

× × ×

मुसलमान मकानों को खाली रखने की वृत्ति छोड़ दें। —मीर मुश्ताक

आप सरकार से किसी और 'वृत्ति' का प्रबन्ध करा दीजिये, हम इस वृत्ति को छोड़ने को तैयार हैं।

× × ×

साम्यवादी लोग धैर्यवान् नहीं हैं।

—शंकरराव

ऐसे धैर्य को क्या करें? दो महीने घर से आते हो गये, किसी कामरेड की बीवी ने एक प्याला चाय तक की भी तो न पूछा!

× × ×

भारत का नक्शा नया बन रहा है।

—नेहरू जी

पुराना नक्शा माउण्टबेटन को विदायगी के समय में दे दीजिये।

× × ×

लोगों को दूसरे प्रान्तों की भाषा भी सीखनी चाहिये। —राजा जी

गांधी हत्या केस में नियुक्त जज जो, अपने अभियुक्तों की बोली नहीं समझते, क्या उन को भी यही सलाह नहीं दी जा सकती?

× × ×

फतेहगढ़ में एक रेलवे मजिस्ट्रेट बिना टिकट सफर करते हुए पकड़ लिये गये।

अफसरों के लिये भी कानून का पालन करना क्या जरूरी है और खास कर अपने महकमे में—इसे तो मजिस्ट्रेट क्या, एक चौकीदार भी नहीं मानता।

× × ×

खुली हवा में खुले आसमान के नीचे बिना मकानों के शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। —मौ० आजाद

जी, यह गर्मी का मौसम, नंगे पाव, नंगे सिर, गले में कफन और सीधा सुरपुर का मुफ्त का टिकट। हर तीसरे दिन तिहाई तो पास हो ही जाया करेंगे।

× × ×

राष्ट्र का अब काया-कल्प होगा।

—कृपलानी

पंजाब और बंगाल का तो काया-कल्प हो ही चुका। अब देखें कौनसा प्रान्त आगे बढ़ता है!

पहेली सं० ३५ की संकेतमाला

बायें से दायें

१. राजधानी का प्रमुख समाचार पत्र।
३. दुकानदार के लिए बहुत लाभकारी है।
५. अच्छे...पर नाटक की सफलता का बहुत आधार होता है।
७. अतिथि को...देना हिन्दुस्तान का खास रिवाज है।
८. दिन को यह निस्तेज होता है।
१०. प्रतिष्ठा।
११. यह न हो तो पेट के लाले पड़ जाते हैं।
१२. अवयोन्द्रिय।
१३. इस उमर में भारी काम की आशा नहीं की जा सकती।
१४. गरमी के दिनों में लोग देर तक इस पर पड़े रहते हैं।
१६. बड़ा व गोल तकिया।
१७. यह बिगड़ जाय तो संगीत का मजा नहीं रहता।
१८. डरपोक आदमी को इस जानवर की उपमा दी जाती है।
२०. खरगोश।
२१. उमर।
२३. वैद्यों के विशेष उपयोग की वस्तु है।
२४. प्राय: पदार्थ आग पर रखने से... हो जाते हैं।
२५. इससे काम कर देने से गाहक खुश हो जाते हैं।

ऊपर से नीचे

१. बहादुरी।
२. दवाई का ठीक न हो तो उसका उलटा प्रभाव हो सकता है।
३. "शासक" की उलट फेर।
४. परमात्मा।
६. "नियम" की गड़बड़ी से बना है।
९. वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण अङ्ग है।
१०. इस तालाब में राजहंस रहते हैं।
१२. आलसी आदमी इससे बचता है।
१३. सादापन।
१५. यहां पैसे बनते हैं।
१७. यह पेड़ बहुत ऊंचा होता है।
१९. खतरनाक रोगी अच्छे वैद्य की... से ठीक हो सकता है।
२० खरबूजे की तरह का एक स्वादिष्ट फल।
२२ मृत्यु का देवता।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

सम्राट विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय।≈)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३५] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) **न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)**

--- इस लाइन पर काटिये ---

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये हुक्म।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम............................

पता............................

ठिकाना.................... उत्तर नं०......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम............................

पता............................

ठिकाना.................... उत्तर नं०......

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम............................

पता............................

ठिकाना.................... उत्तर नं०......

इन तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले को ... कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जासकते हैं। यदि फीस केवल ... भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

--- इस लाइन पर काटिये ---

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप मे लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण इस प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले वा संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहा मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहा वह पहेली मे दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १२ जुलाई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ७ जुलाई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजें।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३५, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धिया होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २ जुलाई १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया

साप्ताहिक का चन्दा

१ साल का	८)
६ मास का	४)
एक प्रति का	≡)

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २ आषाढ़ सम्वत् २००५

एशियायी राष्ट्रों का सम्मेलन

उटकमण्ड में होने वाले सुदूरपूर्व एशियायी सम्मेलन की ओर सर्वसाधारण का ध्यान कम हो गया है और आज कल की विविध पेचीदी राजनैतिक समस्याओं के होते हुए यह स्वाभाविक भी था, किन्तु केवल इसीलिए इसका महत्व कम नहीं हो जाता। अन्तःकालीन सरकार के समय जब प० जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में एशियायी राष्ट्रों का सम्मेलन निमन्त्रित किया था, तब उसके असाधारण समारोह के साथ साथ उसके महत्व की ओर भी लोगों का ध्यान खिंचा था। वह एशिया के जागरण का शुभ चिन्ह था। वह सम्मेलन इस बात का द्योतक था कि संसार में नया युग आ रहा है और उसमें एशिया पश्चिमी शक्तियों का आश्रित और पराधीन न होकर विश्वनिर्माण में स्वतन्त्र और प्रभावकारी भाग लेगा। उस सम्मेलन ने यह प्रकट कर दिया था कि एशिया अब जाग खड़ा हुआ है और उसे कोई शक्ति दबा नहीं सकती। एशियावासी जहां उस सम्मेलन को देख कर प्रसन्न हुए थे, वहां उसने पश्चिमी शक्तियों को अवश्य सशंक बना दिया था और यह असम्भव नहीं है कि उसी सम्मेलन ने अंग्रेजों को विशेष रूप से विचलित कर दिया हो और भारत का विभाजन अस्वाभाविक और अव्यावहारिक है, यह घोषणा करने वाली ब्रिटिश सरकार पाकिस्तान का निर्माण करके एशिया के महान् राष्ट्र भारत को खण्डित एवं दुर्बल करने के लिए उद्यत हो गयी हो।

पश्चिमी शक्तियों ने एशियायी संगठन को किसी दृष्टि से देखा हो, किन्तु यह सत्य है कि उस सम्मेलन ने जिस भावना को जन्म दिया था, वह लगातार बलवती हो रही है। एशिया एशियावासियों के लिए यह भावना एशियायी देशों को और विशेषकर सुदूर पूर्वी एशियायी देशों को परस्पर एक सूत्र में ग्रथित कर रही है और उटकमण्ड सम्मेलन में इसी भावना के दर्शन हुए। यह सम्मेलन राष्ट्र संघ की प्रेरणा से किया गया था, किन्तु इसमें जिस मूल भावना पर विचार किया गया, वह यह था कि आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से एशिया को स्वतन्त्र व समर्थ हो जाना चाहिए। अब तक आर्थिक उद्धार की जितनी योजनाएं बनीं, उनके पुरस्कर्ता पश्चिमी राजनीतिज्ञ होते थे, इसलिए एशिया की निरंतर उपेक्षा की जाती थी। वह पराधीन था — जो भी आर्थिक योजनाएं बनाती थीं उनका मूल एशिया का यूरोपियन राष्ट्रों के लिए शोषण होता था। उटकमण्ड सम्मेलन में वक्ताओं ने यह स्पष्ट कर दिया था कि एशिया अपनी दृष्टि से आर्थिक योजनाओं का निर्माण करेगा। आज साम्राज्यवाद ने दूसरा रूप धारण कर लिया है—राजनीतिक प्रभुत्व की बजाय आर्थिक प्रभुत्व आज की नीति है। दक्षिण अमेरिकन प्रदेशों तथा यूरोप के विभिन्न देशों में अमेरिका आर्थिक सहायता देकर ही अपना प्रभाव स्थापित करना चाहता है इसीलिए इस सम्मेलन में प० नेहरू ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विदेशी पूंजी का ग्रहण यदि अनिवार्य होगा, तो भी ऐसी किसी शर्त पर नहीं लिया जायगा, जो हम किसी अवाञ्छनीय बन्धन में बांधे।

उटकमण्ड सम्मेलन ने कृषि और उद्योग की दृष्टि से एशिया को समृद्ध तथा स्वावलंबी बनाने के अनेक निश्चय किये हैं। उनके विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। उसकी मूल भावना यह रही कि एशियायी राष्ट्र एक दूसरे के सुख दुःख में सम्मिलित हों। अब तक विदेशी शक्तियों के पराधीन होने के कारण एशियायी राष्ट्र अपनी समस्याएं स्वयं हल नहीं कर पाते थे। हमारी समस्याएं भी हल होती थीं हमारे विदेशी प्रभुओं द्वारा, जिनका दृष्टिकोण सदा हम से पृथक् रहा है। आज हम अपने भाग्य के स्वयं स्वामी हैं और हमें यूरोपियन राष्ट्रों के चंगुल से छूट कर एक ऐसी शक्ति के रूप में संगठित हो जाना चाहिए कि हम पिछली डेढ़ दो सदियों से हमारा शोषण करने वाले हृदयहीन यूरोपियन राष्ट्रों को यह कह सकें कि अपनी साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों से बाज आवें और इसी दृष्टि से हम ऐसी प्रवृत्तियों को विशेष महत्व देना चाहते हैं, जिससे एशियायी राष्ट्र परस्पर संगठित हों। यही उटकमण्ड सम्मेलन का महत्व है।

पौंड पावने का प्रश्न

पिछले चार वर्षों से पत्रों के नियमित पाठक यह जानते हैं कि पौण्ड पावना किस तरह एकत्र हुआ था। ब्रिटिश सरकार ने युद्ध काल में अपने स्वार्थ साधन के लिए भारत का जिस तरह आर्थिक शोषण किया था, वह हम कभी नहीं भूल सकते। भारतवर्ष का अन्न, वस्त्र तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएं कल्पनातीत मात्रा में भारत से छीन ली गईं न्याय प्रजातन्त्र और स्वाधीनता की रक्षा के नाम पर। इसका परिणाम भी कल्पनातीत हुआ। बंगाल में ३५ लाख आदमी भूख से बिलबिलाते हुए मर गये। समस्त देश में अन्न वस्त्र का महान् संकट छा गया और मजा यह था कि भारी मात्रा में किये जाने वाले इस शोषण का मूल्य बाजार दर से बहुत कम लगाया गया और वह भी नकद नहीं दिया गया। इस तरह भारतवर्ष ने पौण्ड पावने के नाम से एकत्र उधार दी गई राशि का जितना मूल्य चुकाया है, वह युद्ध में ग्रस्त अन्य किसी राष्ट्र ने नहीं चुकाया। लाखों भारतीयों के कंकाल की नींव पर निर्मित इस राशि को ब्रिटेन चुकाने में टाल मटोल कर रहा है। भारत सरकार के अर्थ मन्त्री श्री षण्मुखम चेट्टी इसी राशि के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार से बातचीत करने गये हैं। उन्होंने अत्यन्त दृढ़ता का रुख अपनाया है कि इस रकम को किसी तरह कम नहीं किया जायगा। आज भारत को अपने उद्योग धन्धों के लिए भारी मशीनरी की जरूरत है। ब्रिटेन से कर्ज को हम इन मशीनों द्वारा वसूल सकते हैं। हमें आशा है कि भारत सरकार पौण्ड पावने के प्रश्न पर किसी तरह भी न झुकेगी।

हैदराबाद वार्ता भंग

हैदराबाद और भारत सरकार में समझौते की जो अन्तिम वार्ता चल रही थी, वह बिना किसी परिणाम पर पहुंचे समाप्त हो गई, यह जान कर हमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। जिस रियासत का सलाहकार आज भी अंग्रेज हो, उससे यह आशा करना ही व्यर्थ था कि वह कभी समझौता करेगी। भारतवर्ष को पिछले डेढ़ सौ सालों का कटु अनुभव है, वह उसे ही नहीं भूल सकता। पिछले डेढ़ सालों में तो अंग्रेज सरकार ने जाते जाते जो नृशंस, घृणित पैशाचिक काण्ड किया है, उसे तो कभी इतिहास में क्षमा नहीं किया जा सकता। जो पाप अंग्रेज ने पंजाब में किया है, वह पाप हैदराबाद में भी कर रहा है। हैदराबाद चारों ओर से भारतीय संघ से घिरा है, वह निरन्तर दीर्घ समय तक बिना किसी प्रबल आश्रय के दुराग्रह नहीं कर सकता। हैदराबाद रियासत का पिछला इतिहास ही नहीं, पिछले दिनों की घटनाएं भी बताती हैं कि निजाम ब्रिटेन से अपनी आर्थिक घनिष्ठता करता जा रहा है। इसलिए यह बहुत सम्भव है कि इस सब की तह में अंग्रेज का हाथ हो, जिसका आन्तरिक लक्ष्य भारत को दुर्बल बनाना रहा है।

नैतिक प्रश्नों की उपेक्षा

राजनैतिक व आर्थिक समस्याएं अधिक आकर्षक होती हैं और उनमें पड़ कर मनुष्य स्वभावतः नैतिक प्रश्नों की उपेक्षा करने लगता है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि नैतिक प्रश्न किसी तरह राजनैतिक प्रश्नों की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण हैं। आज यह समय का प्रभाव है कि हम केवल जीवन के बाह्य रूप को अधिक देखते हैं, नैतिक पहलू की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। यही कारण है कि स्वातन्त्र्य प्राप्त करने के बाद हम उन नैतिक समस्याओं की ओर भी कतई ध्यान नहीं दे सके, जिनमें विशेष व्यय की अपेक्षा केवल तत्परता अपेक्षित थी। म० गांधी ने मद्य निषेध की ओर ध्यान खींचा था, इसलिए इस दिशा में कुछ प्रगति अवश्य हुई, किन्तु अन्य दिशाओं में कार्य शून्य ही हुआ है। सिनेमाओं में अनुचित चरित्रहीन दृश्यों की कमी अभी तक नहीं हुई। बालकों में तमाखू बीड़ी अभी तक वैसी ही कायम है वेश्या प्रथा की ओर अब तक सरकारों का ध्यान नहीं गया है। यह हर्ष की बात है कि राजस्थान संघ की नई सरकार ने पदासीन होते ही पासवान प्रथा को समाप्त कर दिया है। यह प्रथा वस्तुतः राजस्थान के लिए कलंक रही है। बिहार सरकार ने भी बालकों के लिए तमाखू निषेध का निश्चय किया है। वस्तुतः समाज सुधार की दिशाओं में काम करना अधिक आवश्यक है। जीवन निर्माण के लिए पैसे से अधिक आवश्यक चरित्र है, लेकिन आज हम इधर ध्यान नहीं दे रहे। गांधी जी के आदर्शों पर चलने का दम भरने वाले कांग्रेसी कार्यकर्ता उनके संदेश के इसी मूलतत्व को नहीं समझ पा रहे।

उलेमा और राजनीति

पिछले दिनों जमीयतुल उलेमा ने राजनीति से सम्बन्ध विच्छेद करने का निर्णय किया था, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसका यह निर्णय केवल आंखों में धूल झोंकने का था। इस देश के प्रति निष्ठा का यह स्पष्ट अर्थ है कि देशविरोधी किसी तत्व से किसी तरह का मेल न रखना चाहिए। लेकिन जमीयत के नेताओं ने पिछले दिनों इस्लाम की बन्धु भावना के नाम पर अरब राष्ट्रों व रूस से इसरायल को स्वीकार कर लेने पर घोर विरोध प्रकट किया है। यह राष्ट्रीयता के ऊपर साम्प्रदायिकता की छाप है। हम सब जानते हैं कि इससे पूर्व

हैदराबाद का निर्णय

निजाम हैदराबाद के साथ भारत सरकार की जो वार्ता चल रही थी वह किसी परिणाम पर बिना पहुंचे ही समाप्त हो गई है। भारत सरकार की मांग थी कि हैदराबाद बिना शर्त के रक्षा, विदेशी मामले और यातायात को भारत के हवाले कर दे और उत्तरदायी सरकार स्थापित करे। इन्हीं मूलभूत बातों के तय हो जाने के बाद इनकी पूर्ति के लिए अन्तःकालीन व्यवस्था की जा सकती थी। परन्तु हैदराबाद सरकार इन मूलभूत बातों को भी मानने को तैयार नहीं हुई। भारत सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि शान्ति व सुरक्षा के लिए रजाकारों की प्राइवेट सेनाएं भंग कर दी जायें और जन प्रतिनिधियों की अन्तः कालीन सरकार बन ई जाये। परन्तु वहां के प्रधान मन्त्री अब तक तरह तरह से न केवल टालमटोल करते रहे हैं, किन्तु निजाम की सेनाएं लगातार भारतीय सीमाओं का उल्लंघन करती रही हैं। भारत सरकार ने भी अब अपनी सेनाओं और पुलिस को यह आदेश दे दिया है कि हैदराबाद की सीमा के अन्दर तक आक्रान्ताओं का पीछा किया जाय और क्षति के हर्जाने की मांग की जाय।

भारत व पाकिस्तान का नया समझौता

भारत तथा पाकिस्तान में परस्पर आवश्यक सामग्रियों की सप्लाई पर जो समझौता हुआ था उसे प्रकाशित कर दिया गया है। भारत पाकिस्तान को प्रतिमास १८३ टन कोयला, ४ लाख गांठें वस्त्र तथा सूत, १५ हजार टन लोहा प्रति तिमाही तथा ६ हजार टन कागज देगा। इसी प्रकार पाकिस्तान भारत को ५० लाख गांठ कच्चा जूट, ६॥ लाख गांठें कच्ची रूई, पंने दो लाख टन चावल और आटा देगा।

अफगानिस्तान और पाकिस्तान में तनातनी

काबुल से प्रकाशित होने वाले सरकारी मुखपत्र 'अनीस' ने प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित एक लेख मे पाकिस्तान से ६०० मील लम्बी भूमि देने की मांग की है — जो डूरण्ड लाइन और सिन्धु नदी के बीच अवस्थित है। पत्र में चेतावनी दी है कि यदि पाकिस्तान ने इसे नहीं माना तो सारे मध्यपूर्व पर इसका प्रभाव पड़ेगा और पाकिस्तान में भी अत्यधिक आन्तरिक अशान्ति रहेगी।

कश्मीर का ३५०० वर्गमील प्रदेश मुक्त

गत तीन सप्ताहों में भारतीय सेना ने काश्मीर के लगभग ३५०० वर्ग-मील प्रदेशों को आक्रान्ताओं से मुक्त कर लिया है जिससे काश्मीर की घाटी में शत्रु के घुस आने का तमाम खतरा दूर हो गया है। लेह में संसार के सर्वोच्च हवाई अड्डे (लगभग १२००० फीट ऊंचाई पर स्थित) पर आकाश मार्ग द्वारा सहायता पहुंचाई गई है जिससे अब लद्दाख घाटी भी शत्रुमुक्त हो गई है और अब वहां हमारी सेना की शत्रु से मुठभेड़ की गुंजायश नहीं रही।

बिहार में हिन्दी

बिहार सरकार ने प्रांत में देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को अविलम्ब अदालती भाषा के रूप में प्रचलित करने का निश्चय किया है। इसके निश्चय की सूचना एक सप्ताह के अन्दर सब अदालतों को भेज दी जावेगी। प्रांत के सब जिलाधिकारियों को यह आदेश दिया गया है कि जिस व्यक्ति को हिन्दी की काम चलाऊ जानकारी नहीं है उसे सरकारी नौकरी में नहीं रखा जा सकता। हिन्दी से अनभिज्ञ नव नियुक्त अफसर यदि ६ महीने के अन्दर हिन्दी नहीं सीख लेगा तो उसकी नियुक्ति रद्द कर दी जावेगी।

डा० काटजू पश्चिमी बंगाल के गवर्नर

उड़ीसा के गवर्नर डा० कैलाशनाथ काटजू श्री राजगोपालाचार्य से पश्चिमी बंगाल के गवर्नर का कार्यभार ग्रहण करने के लिये २० जून से पहले कलकत्ता पहुंच जावेंगे। श्री राजगोपालाचार्य २० जून को भारत के गवर्नर जनरल का पद संभालने के लिये नयी दिल्ली रवाना हो जायेंगे।

पचास सिख पाकिस्तान गये

१० जून को पश्चिमी पंजाब सरकार की अनुमति से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने ५० सिखों का एक जत्था लाहौर भेजा है। इस जत्थे ने गुरु अर्जुनदेव के शहीद दिवस पर (११ जून) गुरुद्वारा डेरा साहिब में गुरुग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ व कीर्तन किया। इस कार्य से सिखों में सन्तोष प्रकट किया गया है।

फ्रेंच भारत में जनता को आत्म निर्णय का अधिकार

फ्रेंच भारत के गवर्नर म० बेरों ने फ्रेंच भारत के भविष्य के सम्बन्ध में घोषणा की है कि फ्रेंच सरकार फ्रेंच भारत के प्रदेशों में रहने वाली जनता को अपने भाग्य तथा अपनी भावी स्थिति के निश्चय करने का अधिकार देती है। प्रत्येक प्रदेश की निर्वाचित म्यूनिसिपल कौंसिल की सहमति से यह निश्चय किया जाएगा। इन प्रदेशों द्वारा आत्म निर्णय किये जाने तक फ्रेंच सरकार इन प्रदेशों में शान्ति व व्यवस्था स्थापन का कार्य करती रहेगी।

पूर्वी पंजाब का अंग-भंग सम्भव

पूर्वी पंजाब में नये सिरे से मन्त्रिमण्डल बनाने में जो विलम्ब हो रहा है, उसका कारण वैयक्तिक अथवा दलीय प्रतिस्पर्धा ही नहीं अपितु कुछ ऐसे आधारभूत प्रश्न भी हैं जिनसे पंजाब का भविष्य अन्धकारमय हो जाने की आशंका है। नये मंत्रिमण्डल को यह निश्चय करना होगा कि प्रान्त एक इकाई के रूप में रहे अथवा विभिन्न भाषाओं तथा भौगोलिक आधार पर उसका पुनः सीमानिर्धारण किया जाए। यदि प्रान्त को भंग किया गया तो शिमला, कांगड़ा होशियारपुर और गुरुदासपुर के जिले हिमाचल प्रदेश में शामिल हो जावेंगे। जालन्धर डिवीजन फुलकियां संघ में चला जाएगा और अम्बाला डिवीजन दिल्ली प्रान्त में मिला दिया जाएगा।

पाकिस्तान में अपहृत स्त्रियां

पूर्वी पंजाब-सरकार की ओर से लाहौर में नियुक्त प्रमुख सम्पर्क अधिकारी श्री राम रत्न मेहता ने सरकार को बताया है कि पश्चिमी पंजाब में अभी तक अठारह हजार हिन्दू व सिख अपहृत स्त्रियों को निकालना शेष है। पाकिस्तान की पुलिस और अधिकारी इस विषय में सहयोग नहीं दे रहे हैं।

फिलस्तीन-संघर्ष

अरबों और यहूदियों ने विराम संधि के लागू होने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। मिश्र व ट्रान्सजोर्डन ने अपनी सेनाओं को युद्ध बन्द करने का आदेश जारी कर दिया है। इस विराम संधि की सफलता का श्रेय काउण्ट बर्नाडोट को है जो संयुक्तराष्ट्र संघ की ओर से मध्यस्थ निर्वाचित हुए थे। काउण्ट बर्नाडोट ने फिलस्तीन की समुद्र-तट रक्षा एवं सेनाओं व शस्त्रास्त्रों का आगमन रोकने के लिए, अमरीका, बेल्जियम व फ्रांस से ६ समुद्री जहाज मांगे हैं। विराम संधि की देख भाल के लिए ६३ सैनिक सलाहकार भी मांगे हैं। वे शीघ्र ही रोड्स द्वीप (एजियन सागर में स्थित) में दोनों पक्षों का एक सम्मेलन बुलायेंगे। रोड्स द्वीप को इसलिये चुना गया है कि वह न अरबों के अधिकार में है, न यहूदियों के।

इण्डोनेशिया की सहायता का प्रश्न

उटकमण्ड में एशिया व सुदूर पूर्व का जो आर्थिक कमीशन हो रहा है उसमें इण्डोनेशिया की सहायता विषयक फिलस्तीन के प्रतिनिधि का प्रस्ताव पास हो गया और भारत का प्रस्ताव रह गया। भारत का प्रस्ताव था कि इण्डोनेशिया को कमीशन का एसोशियेट मेम्बर बना लिया जाय और उसकी सदस्यता का प्रार्थना पत्र नीदरलैण्ड्स की मार्फत मंगवाने की जरूरत न समझी जाए। फिलस्तीन के प्रतिनिधि का प्रस्ताव था कि इस प्रश्न को अगले अधिवेशन तक स्थगित कर दिया जावे।

सुरक्षा परिषद् में नेहरू जी का पत्र

भारतीय संघ के प्रधानमन्त्री पं० नेहरू ने संयुक्तराष्ट्रसंघ की सुरक्षापरिषद् को एक पत्र लिखा था जिसमें काश्मीर कमीशन के अधिकार-क्षेत्र के बढ़ाये जाने का विरोध करते हुए कहा था कि कमीशन के भारत भेजे जाने से पूर्व भारत सरकार को यह बता दिया जाए कि कमीशन किस किस विषय पर भारत सरकार से विचारविनिमय करेगा। परिषद् ने इस विषय बहस समाप्त कर दी है और प्रधान को उत्तर देने का अधिकार दे दिया है। इस समय परिषद् के अध्यक्ष फारिसअल खोरी उत्तर तय्यार कर रहे हैं।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

समाचार चित्रावलि

प० नेहरू शान्ति आन्दोलन का सूत्रपात कर रहे हैं।

आखिर जीवराज मेहता बड़ौदा के दीवान बन कर रहे।

शरणार्थ लड़का भी आजीविका के लिए अखबार बेच रहा है।

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर ने फारवर्ड ब्लाक के अध्यक्ष पद से स्तीफा दे दिया है

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री वियोगी हरि ने रेडियो म हिन्दी विरोधा रुख स्थिर रहने पर फिर से रेडियो बहिष्कार की धमकी दी है।

श्री सुहरावर्दी को एकता आंदोलन के कारण पूर्वी बंगाल से निकलना पड़ा।

युक्तप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता के उम्मीदवार राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन

उड़ीसा के गवर्नर बन कर श्री आसफअली शीघ्र जा रहे हैं

मैं सिनेमा क्यों नहीं देखता ?

[श्री चारुचन्द्र]

उस दिन एक युवती ने अचानक पूछ लिया 'आप सिनेमा क्यों नहीं देखते ?' मैं कुछ क्षण के लिये स्तमित-सा हो गया। सचमुच आधुनिक आविष्कारों की सब से बड़ी देन के प्रति मेरी विरक्ति क्यों ? मैंने उत्तर दिया'—नहीं, ऐसी बात तो नहीं है। 'कल्पना' मैंने पिछले महीने में देखी है। पर साधारण 'सिनेमा-चित्रों' के प्रति मेरी अवश्य ही अभिरुचि नहीं है। मेरा निजी विचार है कि अर्थ के साथ ही साथ जो समय की हत्या होती है, वह एक बहु मूल्य और अक्षम्य हानि है।' युवती ने चकित हो कर मेरी ओर देखा, क्षण भर के लिये मेरी आंखें भी उसकी ओर उठीं। मैंने देखा उसके सुन्दर ललाट पर चिन्ता के बल उभर आए थे। मुझे लगा, जैसे वह मेरे विचारों से सहमत नहीं है, पर जैसे कोई उत्तर उससे न बन पड़ रहा हो। वह वैसी ही किंकर्त्तव्य विमूढ़ता की अवस्था में मेरी ओर कठोर दृष्टि से देखती हुई चली गई।

अब उसका प्रश्न मेरा प्रश्न बन गया। सचमुच ही उस कुरूपता पर जो सिनेमा की एकमात्र देन है, जिसके कारण समाज अस्वस्थ एवं क्षीण होता चला जा रहा है, जिसके कारण अनेक मानसिक एवं शारीरिक रोगों की सृष्टि हुई है, कोई भी दो चार मिनटों में कैसे प्रकाश डाल सकता था।

सिने चित्रों के द्वारा वास्तव में देशोन्नति के सभी अंगों को आशातीत लाभ पहुंचाया जा सकता था, पर सिने-निर्देशकों को देश कल्याण की अपेक्षा अर्थ का आकर्षण ही अधिक श्रेय सिद्ध हुआ है। फलतः व्यक्ति की निम्नगा वृत्तियों को जागरूक करने का यश ही अभी तक अर्जन कर सके हैं। ऊर्ध्वगामी वृत्तियों को प्रेरणा देने वाले चित्रों की संख्या नहीं के बराबर ही समझो। उनका महत्व भी नगण्य-सा ही है। कदाचित् मानसिक स्तर को ऊंचा करने वाले चित्रों के द्वारा निर्देशकों को अर्थ-लाभ अधिक नहीं हो सका है और यही कारण है कि सांस्कृतिक, चारित्रिक, कलात्मक तथा आध्यात्मिक चित्रों के प्रति घोर उदासीनता रही है। पर निर्देशकों की कौन कहे, प्रत्येक प्राणी जो इस विश्व में जन्मा है और अपने उत्तरदायित्व को बारम्बार चेतावनी देने पर भी नहीं समझता है, उसे नियति कभी क्षमा नहीं करेगी है। यह एक नित्य सत्य है।

रविवार का दिन था। छुट्टी का दिन। लगभग दिन के दस बजे होंगे, मैं भोजन कर रहा था बड़ी तन्मयता के साथ सहसा मेरे कानों में एक सुरीली ध्वनि पड़ी। कोई गा रहा था। कण्ठ में लोच था, स्वर में दर्द। मेरा मन खिंचा चला गया। कोई बालिका गा रही थी—

'मुहब्बत करने वालों का तड़पना किसने देखा है' वह उतनी ही तन्मयता से गा रही थी जितनी तन्मयता से मैं भोजन कर रहा था। दस वर्ष की बालिका थी वह। जिसे कदाचित् 'मुहब्बत' का शाब्दिक अर्थ भी ज्ञात न हो 'मुहब्बत' की अनुभूति तो बहुत दूर की बात है। अब मैं तीन कार्यों में लग गया। भोजन करने का कार्य, गीत को सुनने का कार्य, और कुछ और। कदाचित् वह 'कुछ और' यह था कि मैं इस गीत को लेकर किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहता था। तभी दो और षोडशियों ने उस दस वर्षीया बालिका के संगीत में योग दिया। संगीत ध्वनि अब पर्याप्त उच्च हो उठी थी। इस गीत की समाप्ति के पश्चात् उन कन्याओं ने और कई गीत गाए। उन गीतों में प्रमुख ये थे 'जब दिल ही टूट गया तब जी के क्या करेंगे' सहगल का प्रसिद्ध गीत। 'अखियां मिला के चले नहिं जाना।' 'दिल ठंडी हवा में उड़ा जाए पिया की याद आए।' मैं सुनता रहा। खाता रहा। सोचता रहा। सहसा मैंने अनुभव किया कि संगीत समाप्त हो गया अब आलोचना चल रही है। पहले पहल पारस्परिक स्वरों के माधुर्य पर बात रही। फिर गीत का किसने कितना अधिक अच्छा अनुकरण किया, इसकी विवेचना होती रही। इसके पश्चात् अभिनेता और अभिनेत्रियों की बात चली। उनके नख शिख उनके वस्त्रों, तथा उनके अभिनय पर विशद विवेचना की गई। पश्चात् अभिनेताओं में पतियों का निर्वाचन होने लगा। वे परस्पर कहने लगीं कि अमुक अभिनेता अच्छा पति हो सकता है, अमुक बुरा। वस्त्रों के विषय में भी अपनी अपनी पसन्द का निर्णय हुआ।

और अब मैं निष्कर्ष पर पहुंच गया था। यही तो है जो आधुनिक युवती चाहती है, आधुनिक युवक चाहता है। और तब भी प्रश्न उठता है इन सब का कारण ? और आत्मा से एक ध्वनि आती है, सिनेमा।

सिनेमा का असर

और सचमुच ही सिने-चित्र इन सब के मूल में हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो बुद्धि वाला कहा जाता है। वह मनुष्य इसलिए है कि वह पशुओं से अधिक बुद्धि रखता है। यह सच है कि वह सृष्टि के विकास क्रम के अनुसार विकसित हुआ है। वह सृष्टि का चरम विकास है। पर एक सबसे बड़ी विचित्रता उस में यह है कि वह पतन की ओर बड़े द्रुत वेग से बढ़ता है। यह बात भी उतनी ही सत्य है जितना उसकी सृष्टि का चरम विकास होना। उसके इस निम्नगामी वेग को कोई सहसा रोक नहीं सकता। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। इसी लिए हमारे पूर्वज ऋषियों ने मन के इस वेग को रोकने के लिए शम, दम प्रत्याहारादि नियम बनाये थे। पर आज हम उन नियमों को भूलते गये हैं। आज हम उन्हीं बातों के अन्धानुकरण में संलग्न हैं, जो संयम के बांध को तोड़ने में अग्रणी हैं।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि प्रायः सभी रोग मन के विकार से उत्पन्न होते हैं। डाक्टर 'फ्रायड' का कहना था कि सभी रोग काम की विकृति से ही उत्पन्न होते हैं। इस में कोई सन्देह नहीं कि कि सभी रोग मन से सम्बन्धित हैं। इसी लिए कहा गया है कि 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'। और यह मन बड़ा फिसलने वाला है। विकार वाली वस्तुएं इसे बहुत भाती हैं। उनके न मिलने पर उन्हीं के सोचते रहने पर ये शरीर में रोग उत्पन्न कर देता है, और मिल जाने पर तृप्ति नहीं होती और उनके भोग में रोगों का प्रादुर्भाव कर देता है। सर्व प्रथम मानसिक रोग का जन्म होता है, जिसके प्रथम दर्शन चिन्ता के रूप में होते हैं, फिर वह किसी शारीरिक व्याधि में परिवर्तित हो जाता है। मन के इन रोगियों में क्षय, प्रमेह, हिस्टीरिया, शिरदर्द, अपच, एवं प्रदर के रोगी प्रधान हैं। स्त्रियों का अनियमित मासिक धर्म भी इसी के अंतर्गत आता है। बारह वर्ष के ऊपर की आयु वाली प्रायः ९९ प्रतिशत बालिकाएं शिर की पीड़ा से पीड़ित रहती हैं और उसका मूल कारण या तो 'प्रदर' है या मासिक धर्म का अवरोध जिसके मूल में उनकी काम चिन्तना है, जिसका अधिकांश श्रेय सिने-चित्रों को है।

सामाजिक विस्फोटों में—द्यूत-क्रीड़ा, बीड़ी-सिग्रेट का पीना, नाना प्रकार के फैशन के प्रचलन, व्यभिचार, शिष्टाचार की अवहेलना, उद्दंडता, चपलता, अपव्ययता, मद्यपान, चायपान आदि के प्रचार एवं प्रसार में भी चित्रों का पर्याप्त हाथ है।

यह उत्तर-दायित्व

उपर्युक्त रोगों एवं व्यसनों के होते हुए भी क्या कोई राष्ट्र अपने को स्वस्थ कह सकता है ? क्या उसके युवकों और युवतियों और बच्चों में इतनी शक्ति है कि राष्ट्र के उत्तर दायित्व को वहन कर सकें ? क्या उनमें इतना सामर्थ्य है कि खोई हुई स्वतंत्रता पा कर उस की रक्षा कर सकें ? क्योंकि सभी जानते हैं कि अनैतिक एवं भोगविलास में लिप्त व्यक्तियों पर कोई भी उत्तर दायित्व कभी नहीं डाला जा सकता।

अत एव उन निर्देशकों का अब भी संभल जाना चाहिये जो अनुत्तरदायित्व पूर्ण चित्रों के निर्माण में अब भी संलग्न हैं। क्योंकि उन्हें जानना चाहिये कि

[शेष पृष्ठ १५ पर]

सघन घन को चीरती वह कौन आई !

[श्री वेदप्रकाश अग्निहोत्री बी० ए०]

—नूपुरों से झंकृत
सघार साकी रुक गया कुछ,
और वेणी से निकल कर
गिर गया फूलों का लघु गुच्छ।
सुप्त पहरेदार ने उठ ली जम्हाई।
सघन घन को चीरती वह कौन आई।

अंध साथी को जगाने
चल पड़ी बधिरा भिखारिन
और मन में श्याम लखकर
लग पड़ी गाने पुजारिन।
दूर मरघट से किसी की चीख आई।
सघन घन को चीरती वह कौन आई !

व्योम उर जल निधि अपरिमित
अवनि, पर्वत अंखिया सब
हो सचेतन पा निमन्त्रण
सोचते बरसेगा जल अब !
लिपट लतिका ने तरु से शरण पाई।
सघन घन को चीरती वह कौन आई !

एशिया की विशाल समस्याएं

राजनीतिक दृष्टि से समस्त संसार को एक समझने की बात हम सुन चुके हैं, लेकिन आर्थिक दृष्टि से ऐसा भी समझने की और भी अधिक आवश्यकता है। आप एशिया और उसकी समस्याओं पर विचार करने के लिए एकत्र हुए हैं — ऐसी समस्याएं जो समस्त संसार के घटनाचक्र से अनिवार्य हैं, क्योंकि आज हम किसी भी समस्या को विश्व के घटनाचक्र से पृथक् नहीं देख सकते। एशिया बहुत बड़ा है और जिन विषयों पर आपको विचार करना है, वे बड़े विशाल हैं और उनका अत्यन्त महत्व है।

पिछले बहुत से वर्षों में इनमें से अधिकांश समस्याओं पर संसार के घटनाचक्र के साथ विचार किया गया है और मेरी कुछ ऐसी भावना रही और अब भी है कि एशिया महाद्वीप की उपेक्षा की गई है, इस पर ध्यान नहीं दिया गया है। इसे इतना महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता। इस पर उतना ही ध्यान दिया जाय, जितना संसार के कुछ अन्य भागों के प्रश्नों पर दिया जाता है। सम्भवतः इसका कारण यह था कि जो लोग इन समस्याओं पर विचार करते थे, उनमें से अधिकांश संसार के अन्य भागों से निकट सम्बन्ध रखते थे और स्वभावतः वे पहले उन्हीं पर विचार करते थे।

आज यदि संसार का एक भाग आर्थिक दृष्टि से गिर जाता है, तो वह दूसरों को भी अपने साथ पीछे खींचता है। ठीक वैसे ही जैसे कि जब युद्ध छिड़ता है तो अन्य राष्ट्र जो युद्ध नहीं चाहते, वे भी उसमें पड़ जाते हैं। इसलिए वस्तुतः यह प्रश्न नहीं है कि समृद्ध देश केवल अपनी उदारता के कारण उनकी सहायता करें जो समृद्ध नहीं हैं। वास्तव में प्रश्न यह है कि अपने हित को समझने वाला उन्नत राष्ट्र यह अनुभव करे कि यदि संसार का कोई भाग उन्नति नहीं करता और पिछड़ा रहता है तो समस्त संसार के आर्थिक संगठन पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है और वे उन भागों को भी पीछे खींचते हैं जो इस समय समृद्ध हैं। इसलिए यह अनिवार्य है कि इन समस्याओं पर अखिल विश्व की दृष्टि से विचार किया जाय और उन भागों पर और भी अधिक ध्यान दिया जाय जो अपेक्षाकृत पिछड़े हुए हैं।

एशिया का संघर्ष

एशिया का राजनीतिक संघर्ष तो मुख्यतः समाप्त हो चुका है, पर अभी पूर्ण रूप से नहीं। एशिया के कुछ भाग ऐसे हैं जहां किसी न किसी प्रकार का राजनीतिक संघर्ष अभी जारी है। यह स्पष्ट है कि जब तक राजनीतिक स्तर पर इस प्रकार का संघर्ष-चलता रहेगा तब तक अन्य गतिविधियों की उपेक्षा की जायगी या उनका विरोध होगा। इसलिए जितनी ही जल्दी यह समझ लिया जाय कि राजनीतिक दृष्टि से एशिया के प्रत्येक देश को बिल्कुल स्वतन्त्र होना चाहिये और उस की यह स्थिति होनी चाहिये कि संसार की किसी व्यापक नीति में, जिसे संसार का कोई संगठन निर्धारित करे, अपनी सूझ बूझ का अनुसरण कर सके, उतना ही अधिक अच्छा होगा। यदि कोई बात निश्चित है तो वह यह है कि यदि किसी देश ने एशिया के किसी देश पर प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न किया तो एशिया में कहीं भी शान्ति न होगी।

साधारणतया, एशियाई संघर्ष का राजनीतिक पहलू अब अपनी स्वाभाविक पराकाष्ठा की ओर पहुंच रहा है। किन्तु इसके साथ साथ इसका आर्थिक पहलू संसार की आर्थिक समस्याओं से सब प्रकार से सम्बन्धित है। एशियाई दृष्टिकोण से इन समस्याओं को सुलझाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। संसार के दृष्टिकोण से भी यह इतना ही आवश्यक है क्योंकि जब तक इन समस्याओं को एशिया में नहीं सुलझाया जायगा, तब तक उनका प्रभाव विश्व के दूसरे भागों पर पड़ता रहेगा।

औद्योगीकरण के लिए सबसे बड़ी रुकावट बड़ी २ मशीनों की कमी है। जिन देशों के पास आधिक्य में ये मशीनें तथा तत्सम्बन्धी विशेष अनुभव हैं उनसे लेने में कठिनाइयां हैं। यह निर्णय आप को तथा उत्पादक देशों को करना है कि कहां तक ये उपलब्ध हो सकती हैं। यदि जल्दी ही ये हमें न मिल सकीं तो हमारे औद्योगीकरण के कार्यक्रम में कुछ देर होगी किन्तु हम उस ओर अग्रसर होते ही जायगे।

आर्थिक प्रभुत्व नहीं होगा

अब, यदि विश्व के बड़े बड़े हितों के दृष्टिकोण से पूर्व के भारत जैसे देश अथवा अन्य देशों के औद्योगीकरण तथा आधुनिकतम ढंग से कृषि उत्पादन का निश्चय किया जाय तो यह मशीनों तथा विशेष अनुभव सम्पन्न एशियाई अथवा अन्य देशों के हित में होगा कि वे इस दिशा में सहायता करें। किन्तु ऐसा करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि यदि कोई देश आर्थिक प्रभुता जमाने के विचार से ऐसा करेगा तो कोई भी एशियाई देश इसे स्वीकार नहीं करेगा। हम अपनी औद्योगिक अथवा अन्य प्रकार की उन्नति में देर होने देना

पण्डित नेहरू

एशिया का आर्थिक पुनर्निर्माण

[श्री जवाहर लाल नेहरू]

अल्पकालीन समस्याओं की ओर भी शीघ्र ही ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि कुछ बड़ी कठिनाइयों को शीघ्र ही सुलझाना आवश्यक है। खाद्य सम्बन्धी समस्या को ही लीजिए। भारत जैसे देश के लिए यह एक असाधारण बात है कि इस में खाद्य की कमी है अथवा पर्याप्त मात्रा में खाद्य उपलब्ध नहीं है। ऐसी अवस्था में प्रत्यक्ष ही इनमें कुछ न कुछ कमी है। इसमें कई संशय नहीं है कि भारत अपने लिए पर्याप्त खाद्य उत्पन्न कर सकता है और करेगा यह शीघ्र ही नहीं हो सकता किन्तु अगले कुछ वर्षों में यह सम्भव हो जायगा। इस समय हमें इस समस्या का सामना करना है। इस तरह की अन्य आवश्यक समस्याएं भी विचारार्थ आपके सम्मुख आयगी। इनको दीर्घकालीन दृष्टिकोण से देखने पर मुझे यह जान पड़ता है कि बहुत सी कमियों को पूरा करना है। हमें अपनी कृषि सम्बन्धी तथा औद्योगिक उत्पादन शक्ति को बढ़ाना होगा। यह अब मान लिया गया है कि एशियाई देशों का औद्योगीकरण होना चाहिये। भूत में विभिन्न जातियों तथा विभिन्न हितों के कारण यह कार्य रुका रहा।

पसन्द करेंगे, किन्तु किसी देश की आर्थिक प्रभुता स्वीकार नहीं करेंगे।

विद्युत् शक्ति के साधन

मेरे विचार में विद्युत् शक्ति के साधनों का विकास करना सब से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन साधनों का विकास होने से देश का औद्योगीकरण होगा तथा खाद्य उत्पादन की वृद्धि होगी। इस समय जैसा कि आप जानते हैं कि संसार के किसी अन्य देश की अपेक्षा भारत में सिंचाई के लिये अधिक क्षेत्र हैं और हमें आशा है कि हम इस की ओर भी अधिक वृद्धि करेंगे। हमारे सामने बहुत सारी विशाल तथा छोटी नव योजनाओं का कार्यक्रम है, जिसमें से कई योजनाएं टैनिसी घाटी की योजना से भी बड़ी हैं। हम इन योजनाओं को बड़े बड़े बान्ध और जलागार बना कर शीघ्र ही क्रियान्वित करना चाहते हैं जिससे कि भारत के उन विशाल भू-खण्डों की सिंचाई भी हो सके जिनमें अभी तक खेती नहीं की गयी।

जन संख्या का प्रश्न

मैं यहां भारत की जन संख्या के विषय में भी कुछ कह देना चाहता हूं। हमारी विशाल जन-संख्या के विषय में बहुत अधिक कहा तथा लिखा गया है और यह समझा जाता है कि यह एक भयानक समस्या है, जिसके सुलझाये बिना हम कुछ नहीं कर सकते। मैं नहीं चाहता कि भारतवर्ष की जनसंख्या बढ़े। मैं जनसंख्या के नियन्त्रण के पक्ष में हूं। किन्तु फिर भी इस विषय में बड़ी भारी गलतफहमी है। मेरे विचार में भारत की जनसंख्या न्यून है। यह मैं इस दृष्टि से नहीं कहता कि मैं जनसंख्या की वृद्धि चाहता हूं किन्तु मेरे विचार में भारत की जनसंख्या इसलिये न्यून है कि भारत के बहुत से प्रदेशों में आबादी है ही नहीं। यह ठीक है कि यदि आप गङ्गा के मैदान में जाय तो वहां घनी आबादी मिलती है। भारत के कुछ भागों में घनी आबादी है किन्तु बहुत से हिस्सों में आबादी बिल्कुल नहीं है।

गत सायंकाल सम्मेलन के एक प्रतिनिधि ने मुझे यह बताया कि कराची से दिल्ली, मद्रास और तब उटकमंड आते हुए जनसंख्या की कमी देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। यह प्रतिनिधि हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे तो भी समस्त ग्रामीण प्रदेश उनको दिखाई देता था और इसलिये यह निश्चय किया ही जा सकता है कि प्रदेश की आबादी अधिक है या कम इन प्रतिनिधि का यह विचार बहुत ठीक है, क्योंकि बहुत से हिस्सों में आबादी नहीं है।

(शेष पृष्ठ ० ०र)

'सुनते हो सुनते हो' ?

'हां कहो भी।'

'छुट्टियों के दस दिन और हैं।'

'तो मैं क्या करूं, नाचूं ?'

'नाचने को कौन कहता है, तुम तो बिगड़ते हो' — कुछ रुक कर पत्नी ने कहा — देवरिया को मेज दो बुलाने की चिट्ठी आई है, कल अम्मा जी पूछें तो 'हां' कह देना।'

'कोई आवश्यकता नहीं रोज रोज जाने की। सीता जी कभी लौट कर मायके गई थीं ? आज कल की औरतों पर कलयुग फट पड़ा है। मुझसे दूर क्यों भागना चाहती हो, मैं नापसन्द हूं ? हां वहां किस्सू के बिना बेचैनी होगी।'

'राम, राम फिर वही गन्दी-बातें, क्या हो गया है ? तुम्हें ? पाप काहे को मोल लेते हो, अरे भाई वह हमारा धर्म भाई है। बुआ का मांजा है तुम से थोड़े ही ऊंची हूं ? तुम तो प्राणों से ······ तुम्हीं मेरे सब कुछ हो। तुम्हारी याद अवश्य आयेगी। पर किंचित् 'जी' बहल जायेगा और थोड़ा विश्राम मिल जायेगा।' पत्नी ने गिड़गिड़ा कर कहा।

'बस सोने दो। तुम नाचती हो मैं मर जाता हूं तुम्हारे बिना, कितना बुरा लगता है अकेले रहने में। फिर भी 'जी' बहलाने वाला किस्सा रोज रोज' रतन ने उदास होकर कहा।

'अच्छा, मैं कभी न जाऊंगी।' षोडशी पत्नी ने खीज कर कहा।

× × ×

'रतन ! देवरियासे बुलाने की चिट्ठी आई है क्या लिखवा दूं —ले आओ।'

'जैसा कुछ चाहो' रतन ने जीने पर चढ़ते हुये कहा।'

'पत्नी प्रतीक्षा में बारजे पर अन्धेरे में खड़ी थी, लपक कर हाथ दिखा कर बोली—तुम कितने अच्छे हो, कितने सलोने, कितने मन मोहने।'

'अच्छा तो बड़ी खुशी मनाई जा रही है। मुझसे दूर भागना चाहती थी। तुम कितनी निठुर हो।' रतन ने कुछ मजा रूप कर कहा।

पत्नी की आंखों में आंसू झलक आये। बोली—'हाय कैसी बातें करते हो ? मैं तो तुम पर मरती हूं। दस दिन में लौट कर आऊंगी। तुम कहो तो न जाऊं ?' बड़ी लम्बी सांस खींच कर रतन ने अस्फुट स्वर में कहा 'जाओ·· हां ··· जाओ' उसने मुंह पर हाथ रख कर करवट बदली।

'लो तुम उदास हो गये तो मैं बिल्कुल न जाऊंगी। पत्नी ने आंखें दबाईं और आंसू की दो गरम गरम बूंदे रतन के मुंह पर ढुलक पड़ीं। रतन स्तब्ध था। स्तब्धता ने नवोढ़ा को विचलित कर दिया 'हुं, हुम, हुम मैं सच कहती हूं मैं बिल्कुल न जाऊंगी तुम उदास न हो।'

अपना गम दिखाने का सु-अवसर रतन क्यों चूकने लगा। बराबर लम्बी लंबी ठंडी सांसें लेता रहा।

× × ×

'देखो बाहर कौन पुकार रहा है ? शायद देवरिया वाले आये हों ?' मां ने दरवाजे की ओर झांकते हुये कहा —

'हां वही है' भीतर बुला लो।

रतन ने सलाम कर फिर खाना शुरू किया।

मां ने धोती का पल्ला खींच कर कहा 'भय्या, अच्छे रहे।'

हां चाची सब तुम्हारी दुआ है,' पैर छूकर भय्या बोले। इधर उधर की कुछ गपशप हुई और खाना पीना खतम हुआ। रतन सोने चले गये। पत्नी रसोई से निकल कर भाई से बातें करने लगी। 'हां भय्या तो कल सवेरे ही की मोटर से चलना, चलोगे ना ?

'हां देखो जैसा सब कहें।

'नहीं भय्या कल ही सवेरे अवश्य चलना। समझे भय्या कल ही अवश्य।'

'हां, हां बिट्टो सब तैयारी कर लेना।

ऊपर खटपट, सुनकर सास बरोठे से बोली 'बड़ी रात हुई, अब जाओ सवेरे बातें करना, सो जाओ।'

× × ×

'अरे ! तुम अब तक जाग रहे हो ?'

'हम मरें या जियें, तुम्हें क्या है भाई, जाओ मौज करना।'

'काहेको हमें दुखी करते हो, मरें तुम्हारे दुश्मन, ऐसी बातें न किया करो।'

'मेरी बातें खराब होती हैं। जाओ अब भय्या की मीठी बातें सुनना'—रतन ने सांस भरते हुये कहा।

'फिर वही, तो मैं क्या करूं, तुम मुझे तंग न करो, इसी से मैंने कह दिया था मैं न जाऊंगी। एक तो मैं खुद ही दुखी हूं तुम्हें छोड़ने पर। ऊपर से तुम सताते हो।'

'दुखी होती तो कहती, भैया कल ही की मोटर से जरूर चलना, खूब बातें बनाती हो।'

'तुम्हें कैसे समझाऊं ?' वह रोने लगी। कुछ खीझ कर और कुछ दुखी हो कर। सिसकियों को संभाल कर उसने कहा, 'तुम भी चलो मेरे साथ तो कितना अच्छा लगे, कल इलाहाबाद तक मेजने जरूर चलना।' रतन केवल ठंडी सांसें भरता रहा।

× × ×

लारी सरसर दौड़ रही थी। रतन सामने बैठा था और भाई बहन की बगल में—हिन्दू धर्म के अनुसार। कभी-कभी एक प्रेम भरी निगाह घूंघट के भीतर से रतन के ऊपर आ पड़ती थी और वह तुरंत ठंडी सांस खींच आंखें ऊपर चढ़ा लेता था। भाई इधर उधर देखने में व्यस्त था।

जनाने डिब्बे में भाई ने बहन को बिठाल दिया और फिर कुछ खरीदने के लिये चला गया। रतन बड़ी गंभीर मुद्रा लिये खिड़की के सामने आ खड़ा हुआ और पत्नी की ओर देखने लगा। पत्नी खिड़की से सट आई। उसने दबी जबान कहा—'चिट्ठी लिखना, उदास न होना।'

रतन ने मुंह और लंबा कर लिया और लंबी सांस भरी। रतन के खिड़की पर रखे हुये हाथ पर हाथ रख कर पत्नी ने कातर दृष्टि से उसकी ओर देखा और आंसू छलछला आये। रतन ने ओंठ दबा कर सिर नीचा किया। और पत्नी रोने लगी। सिसक कर बोली 'चिट्ठी लिखना, जब लेने आओगे आजाऊंगी।'

'दस दिन में अपने आप चली आना, समझीं'—उसने उसने आंखें तरेर कर कहा। रेल ने सीटी दी और चल दी। वह हाथ पकड़े रेल के साथ साथ चलता रहा और बात पूरी करता गया—'समझी दस दिन में जरूर आजाना, नहीं, फिर मुझ से भेंट न होगी, और किस्सू के घर न जाना ! नहीं टांग तोड़ दूंगा—समझी अपनी जान तुहारी जान एक कर दूंगा— गाड़ी तेज हुई और वह दौड़ने लगा 'मेरे घर की बुराई भलाई न करना।'

सिसकते सिसकते पत्नी चिल्लाई— 'देखो—हाथ छोड़ दो कहीं गिरना ना।'

रतन हाथ छोड़ कर खड़ा हो गया। ट्रेन आगे जा चुकी थी। पत्नी रो रही थी। जब स्टेशन आंखों से ओझल हो गया वह बैठ गई। फिर धीरे से रुमाल निकाला और कस कर आंखें पोंछ डालीं और घूंघट उलट कर औरतों को देखने लगी। डिब्बे की औरतों में से एक ने पूछा—'कहां जा रही हो, मायके ?'

'हूं' वह हंस कर बोली,

'यह कौन थे तुम्हारे।'

'............'

'पति ?'

'हां'

'तो तुम रो क्यों रही थीं'

'यों ही'—वह हंस दी और मुंह फेर कर बाहर देखने लगी।

× × ×

दूसरे स्टेशन पर भैया आये तो वह मचल कर बोली—'भैया, जी नहीं लगता। तुम्हारे ही डिब्बे में बैठूंगी।'

'चल पगली कहीं की'—बरबस उठा कर भैया बोले।

'हां भैया, जरा सब का हाल बताओ। मुन्नू, चुन्नू, लल्लो, बुल्लो चुन्नी। और आम का पेड़ कितना बड़ा हुआ, बौर तो आई ही होगी। लौरी तो प्यारे दुलारी हो। गोरी के बछड़ा हुआ कि बछिया ?'

'घर में चल कर बातें करना। गंभीर स्वर में भैया ने कहा।

'नहीं भैया, बस एक बात बताओ, चम्पो ससुराल से आई या नहीं और रग्घू दादा की सोनाही चली गई या है ?'

'चम्पो और सोनाही दोनों यहीं हैं।'

वह खुशी से उछल कर खिलख पड़ी। थोड़ी देर चुप रह कर फिर बोली— 'भैया एक बात और बताओ—'चुन्नी तो चलती होगी। वह बिल्ली कहती है या नहीं ?

'चुन्नी खूब तमाशे और बातें करती है।' भैया ने हंस कर कहा।

'भैया गाड़ी कब पहुंचेगी ?'

'बस अब देर नहीं।'

× × ×

षोडशी घर पहुंची। पहिले घर के बच्चों से लिपटी फिर मां और भाभी से। दिन भर सहेलियों के तांते बंधे रहे। कभी आना कभी जाना। यहां तक कि शाम हो गई। वह दौड़ी-दौड़ी गई आम के पेड़ को ऊपर से नीचे तक डाल-डाल उचक कर देख आई। गोरी श्यामा लौरी सब से लिपटी और सब ही को सहलाया।

मां ने कहा—'सांझ हो आई, नहा खा लो बिट्टो।' 'हां हां' वह भैया के साथ खाने को बैठ गई। बातों के तांते बंध गये और हंसी दिल्लगी के फव्वारे छूटने लगे। रात हुई जा पीकर भैया ऊपर गये। भाभी रसोई से निकलीं तो षोडशी ने खींच कर बिस्तर पर लिटा लिया और बातें करने लगी।

भाभी ने आंखें मटकाकर कहा— 'कहो, रतनबाबू के क्या हाल चाल हैं उनसे तुम्हारे बिना कैसे रहा जायगा ?

'[illegible]'

([illegible])

क्या आप चाय पीते हैं ?

[श्री उमाशङ्कर शुक्ल]

अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों को बहुत सी वाहियात बातें सिखाई हैं—उनमें से एक यह भी है—चाय पीना। चाय का प्रचार इतना बढ़ गया है कि शहरों में तो अस्सी प्रतिशत लोग उसे पीते हैं और देहातों में भी उसका प्रचलन जोरों पर है। चाय बेचने वाली कम्पनियां जो विज्ञापन करवाती हैं—उसमें वे लिखती हैं कि ''''गर्म चाय गर्मी में ठंडक पहुंचाती है और सर्दी में गर्मी पहुंचाती है। यह बात लोगों के दिमाग में घर कर गई है और वह वे उसका सेवन करने लगे। पर वे नहीं जानते कि चाय पीने से शरीर को कितनी हानि होती है।

चाय भी एक नशा है। अगर हमेशा पीने वाले को चाय न दी जाय तो वह बीमार पड़ सकता है, उसके सिर में दर्द होने लगता है, किसी काम को करने में उसका चित्त नहीं लगता और वह कुछ खोया सा महसूस करता है। सी० पी०, गुजरात व बम्बई में तो इसका इतना प्रचलन है कि कुछ पूछो मत। जगह जगह होटल लगे हुये हैं। छोटे छोटे शहरों में होटल रहते हैं। गांव में भी होटल बनने लगे हैं। युद्ध के पहले तो दो पैसे का कप मिलता था किन्तु अब छः पैसे का कप मिलता है। होटलों की चाय और घर में बनाई जाने वाली चाय में बड़ा अन्तर होता है।

कोई किसी के यहा जाता है तो पहले चाय को जरूर पूछा जाता है। फिर दूसरी बात। टी पार्टी अक्सर सुनी जाती हैं। हिन्दुस्तान में असली दूध का दर्शन होना दुर्लभ हो गया है—इसलिए चाय पर ही लोगों ने धावा बोला है। चाय में असली दूध के बजाय पावडर का दूध डाला जा सकता है। शक्कर न हो तो गुड़ भी डाला जाता है और गुड़ का रंग चाय में ठीक उसी तरह मिल जाता है, जैसे दूध में पानी मिल जाता है। गुड़ की चाय पीने से भले ही नुकसान क्यों न होता हो, पर लोग पियेंगे जरूर ही।

स्टेशनों पर जो चाय बिकती है—वह तो इतनी खराब होती है कि उसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता। सिर्फ पानी का रंग तबदील कर दिया जाता है। शक्कर तो नाम मात्र को होती है। जनता की गाढ़ी कमाई के पैसों को होशियारी तथा धोके बाजी के साथ लूटा जाता है।

एक कप चाय मामूली चीज नहीं है। उसमें बड़ी ताकत है। उससे बड़े-बड़े काम निकलते हैं। किसी कचहरी के बाबू को एक कप चाय पिला दीजिए जो चाहे काम उससे करा लीजिए।

किसी कांस्टेबल को एक कप चाय पिला दीजिए फिर चाहे आप उसके सामने कुछ भी अन्याय करें वह न बोलेगा। मोटर ड्राइवर को एक कप चाय पिला दीजिए आपको फ्रंट सीट पर बिठा लेगा। अपना नाम अखबार में छपवाना हो, तो किसी मामूली अखबार के लोभी संवाददाता को चाय का एक कप पिला दीजिए वह आपकी खबर छाप देगा। फिर वह नहीं देखेगा कि खबर सच है या झूठ। इससे उसे क्या उसे तो चाय का कप चाहिए। इसलिए ही कुछ स्वाभिमानी सम्वाददाताओं ने चाय पीने की आदत ही नहीं डाली है। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी।

बहुत लोग इस बात की कोशिश में रहते हैं कि चाय पीने को मुफ्त में मिल जाय। वे ऐसी जगह पहुंच जाते हैं जहां जानते हैं कि इस समय चाय पी जा रही होगी। बस पहुंचे कि एक कप चाय के लिए कोई इन्कार थोड़े ही करता है। मैं एक आदमी को जानता हूं वे मेरे एक मित्र के यहां लगातार पन्द्रह वर्ष तक चाय पीने के लिए रोज दो बजे दिन को जाते थे और उन्हें चाय मिलती थी। मेरे मित्र शहर के एक प्रतिष्ठित कांग्रेसी कार्यकर्ता हैं और चाहे गर्मी हो, बरसात हो या ठण्ड, उनके यहां दिन को ठीक दो बजे चाय तो जरूर बनेगी। उक्त चाय पीने वाले सज्जन कभी भी अपना समय न चूकते—बराबर पहुंच ही जाते। चाहे गर्मी की ऋतु में कड़क धूप क्यों न हो या वर्षा ऋतु में मूसलाधार पानी क्यों न बरसता हो—वे बराबर पहुंचते। दुःख है कि उक्त सज्जन अब इस संसार में नहीं हैं।

कुछ मुफ्त में चाय पीने वाले किसी का कुछ काम कर देंगे और बस चाय पीने के लिए एक आना मांगेंगे और रौब से कहेंगे कि अच्छे कंजूस हो—चाय भी नहीं पिलाते। भले ही वे स्वयं किसी को भी चाय न पिलाते हों। हमारे एक साहित्यिक मित्र हैं—मैंने उन्हें कभी भी अपने गांठ से पैसा खर्च करके चाय पीते नहीं देखा है। जब उन्हें देखा है, तो मुफ्त की ही चाय पीते देखा है। मेरे उक्त साहित्यिक मित्र चाहें तो पैसा खर्च करके चाय पी भी सकते हैं पर उनकी आदत ही हो गई है मुफ्त में चाय पीना।

सेवाग्राम आश्रम में चाय पीने की इजाजत नहीं है और न कभी गांधी जी ही चाय पीते थे। पर अगर कोई उनका मेहमान बनकर आता और वह चाय का आदी होता तो उसके लिए चाय पीने की अनुमति दे दी जाती। अहमद नगर जेल से छूटने के बाद डा० सैयद महमूद बहुत समय तक सेवाग्राम आश्रम में रहे वे बराबर चाय पीते रहे।

हमारे एक शिक्षक कहा करते थे कि चाय उत्तम पेय नहीं है किन्तु सब से अच्छा पेय है शीतल जल। पर न जाने क्यों आप लोग चाय को ही सर्वश्रेष्ठ पेय समझने लगे हैं। इन पंक्तियों का लेखक चाय छूता नहीं है। कई बार इसके लिए उसे अपने मित्रों की मीठी झिड़कियां भी सुनने को मिली हैं। पर चाय पीने की बजाय मित्रों की मीठी झिड़कियां सुनने में ज्यादा आनन्द आता है। चूंकि मैं चाय नहीं पीता—इसलिए कभी भी मैं दूसरों को चाय के लिए पूछता भी नहीं हूं ऐसी बात नहीं है। 'साहित्य-सेवा-सदन' में जब कभी साहित्यगोष्ठी होती है चाय का इन्तजाम जरूर करवाना पड़ता है।

मेरा तो सुझाव है कि चाय पान बंद होना चाहिए और उसकी जगह जलपान शुरू हो। पर सम्भवतः मेरे इस सुझाव पर कुछ लोग नाक भौं सिकोड़ें और कहें कि क्या वाहियात राय है। जान भले ही जाय पर चाय न छूटने पावे। कई लेखक चाय पीकर ही अच्छा लेख लिख सकते हैं। कुछ लोग तो चाय पर इतना फिदा हो गये हैं कि वे 'चाय की चुसकियां' लिखने लगे हैं। हिन्दी साहित्य संसार के सुप्रसिद्ध लेखक तथा तपस्वी सम्पादक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी चाय के बड़े भक्त हैं। अगर उन्हें चाय न मिले तो व्याकुल हो जाते हैं। वे अगर किसी पत्र सम्पादक को लेख भेजते हैं तो उससे 'चाय का खर्च' मांगते हैं। उनकी चाय हिन्दी संसार में प्रसिद्ध है। चाय भक्त होने के कारण उन्होंने अपने संपादन काल में 'विशालभारत' में 'चायचक्रम' एक स्तंभ भी खोला था।

चाय को सभी प्यार करते हैं। क्या नेता, क्या लेखक और क्या सम्पादक। एक सम्पादक जी को मैं जानता हूं, वे जब तक तीन कप चाय न पी लेंगे अपना सम्पादकीय लेख पूरा नहीं कर पायेंगे। चाय का सर्वत्र आदर हो रहा है।

चाय बनाने के शास्त्रोक्त पद्धति के तरीके स्टेशनों के 'टीस्टाल' या अखबारों के चाय के विज्ञापनों में लिखे रहते हैं। चाय किसी आफीसर को पिला दो वह खुश हो जायगा। चाय से बड़े बड़े काम निकलते हैं।

इतना सब होते हुए भी हिन्दुस्तानियों को चाय पीना नहीं आता। कुछ लोग यद्यपि जान गये हैं। चाय कप द्वारा पी जाती है न कि कप से तश्तरी में डाल कर। चाय पीते समय कोई आवाज नहीं होनी चाहिए। कई लोग 'फुर्र फुर्र,' करते हैं। चाय का प्याला कम से कम पन्द्रह मिनट में खत्म होना चाहिए न कि दो मिनट में। चाय पीने में जो जितनी देर लगाता है वह उतना ही होशियार समझा जाता है। चाय के बढ़ते हुए प्रचार को देख कर यह शंका होने लगती है कि कहीं वह भांग व गांजा के समान मंहगी न बिकने लगे।

चाय पीने वालों को नीचे लिखी बातें जरूर ध्यान में रखना चाहिये—

(१) कभी भी मुफ्त की चाय न पीना चाहिए क्योंकि वह बाद में मंहगी पड़ती है।

(२) किसी का स्वार्थ साधने के लिए चाय न पी जाय।

(३) किसी के यहा रोज २ जाकर जबरदस्ती चाय न पी जाय।

(४) रेलवे स्टेशनों पर जो चाय बिकती है — उस से अगर बच सको तो उत्तम है।

(५) सिर्फ चाय पीकर ही किसी का काम मत करो। हां बिना चाय पिये करो तो अच्छा।

(६) सरकारी नौकरों को चाहिये कि वे कभी भी किसी के यहा की चाय न पियें। क्योंकि भारतीय ललनायें जिस तरह रक्षाबंधन के दिन सूत की राखी बांधकर भाइयों पर रक्षा की जिम्मेवारी डाल देती हैं उसी तरह चाय पिला कर लोग चाय पिलाने वाले पर बड़ी जवाबदारी डाल देते हैं।

(७) रद्दी होटलों की चाय से बचो — उससे धन, स्वास्थ्य व धर्म तीनों जाते हैं। अगर चाय पीनी ही है तो उस होटल की चाय पी जाय, जो साफ और पवित्र हो और जहा के चाय बनाने वाले लड़के स्वच्छ कपड़े पहने हों।

विविध देशों में सौन्दर्य के विभिन्न आदर्श

★

जब से मनुष्य ने असभ्यता से उठकर सभ्यता के पथ पर चलना प्रारम्भ किया है, तब से नारी कवियों, चित्रकारों और शिल्पकारों की प्रतिभा का विषय बनी हुई है। नारी ने अपने रमणीय सौन्दर्य के कारण न केवल कलाकारों के हृदय पर अपितु संसार के भ ग्य पर भी शासन किया है।

एक कवि ने कहा है कि सुन्दर वस्तु सदा प्रसन्नता का कारण होती है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि स्त्री में विशेषतया ऐस कौनसा अमूल्य गुण छिपा होता है, जिससे सब के हृदयों को मोहने की शक्ति वह रखती है। सुंदरता का जो आदर्श पश्चिम का है, वही आज पूर्व का भी है। परन्तु सौन्दर्य किस अंग किस आकृति किस वर्ण या किस वेष में है, यहा न कभी कोई एकमत हुआ है और न कभी होने की आशा है। सभी देशों में सौन्दर्य की अपनी अपनी कल्पना है और अपना २ आदर्श है। आज कल एक अंग्रेज लड़की अपना सौन्दय सुनहले बालों पतली कमर और नीली आखों में समझती है। और यदि हम एक दृष्टि आस्ट्रेलिया न्यू जीलैंड से लेकर अफ्रीका की काली स्त्रियों, चीन की मङ्गोल जातियो और आधुनिक अमेरीकन 'मिस' पर डालें तो हमें सुन्दरता के भिन्न भिन्न प्रकार के आदश दिखाई पड़ेंगे। आप को यह जान कर शायद आश्चर्य होगा कि न्यू जीलैण्ड के पास स्थित टापू पोलीनीशा, अफ्रीका में मराक और ट्यूनिस के वासियों का यह मत है कि सुन्दरता का एक आवश्यक अग मोटापन है। इसलिए इन देशो में लड़कियों को बचपन से ही माताए मोटा बनाने की चिन्ता करती हैं, ताकि वह युवा होकर एक अच्छे पति को प्राप्त कर सकें। माताए इस आदर्श को लेकर लड़कियों को जबरदस्ती शायरनी का दूध भी पिला देती हैं। इससे भी बढ़ कर एक और क्रूरता व अत्याचार का सामना वहा की लड़कियों को करना पड़ता है — माताए छोटी लड़कियों के नथनों में एक मट्टी का बना हुआ यन्त्र घुसेड़ देती हैं ताकि उनके नथने खूब चौड़े और खुले हो जाए। वह लोग सफेद' जातियों की पतली नाक को बहुत बुरा मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार उनका नाक भूख से सूखा हुआ दिखाई देता है।

भारत और अरब के देशों में काले और लम्बे २ बालों की बहुत प्रशंसा है। यूनान में बड़ी २ और चमकदार आखों को बहुत प्रधानता दी जाती है। वहा की महिलाए इसके लिए विशेष प्रयत्न भी करती हैं। वह अपनी आखों को बड़ा और चमकदार बनाने के लिए काजल अथवा सुर्मे का प्रयोग करती हैं। यह दोनो गुण अर्थात् लम्बे बाल और चमकदार आखें बर्मि-ों को बहुत भाते हैं। बर्मा की महिलाओं का कद तो बहुत छोटा होता है परन्तु उनकी आखें आकर्षण का स्रोत होती है और जब वह अपने काले और लम्बे २ बालों को अपने चौड़े कन्धों पर डाल देती हैं, तो ऐसा दिखाई पड़ता है, जैसे पवत पर रात्रि छा गई हो।

चीन और जापान में बसने वाली मगोल जाति में सुगठित शरीर और छोटे २ पैरों में अधिक सौंदर्य म माना जाता है। पै ों को छोटा बनाना तो वहा एक असाधारण महत्व माना जाता है। लड़कियों के पैरों को बचपन से ही अच्छी प्रकार बाध कर रखा जाता है, जिससे वह अच्छी प्रकार से काम भी नहीं कर सकती, परन्तु पैरों का छोटा होना यहा अधिक महत्व रखता है। चीन और जापान के लोग अपने पैरों को छोटा रखने के अतिरिक्त रंगे हुए शरीर, सामान्य और चमकीले दात और लाल फूल ओठों को भी पसन्द करते हैं। कपड़े भी वह कसे हुए और भड़कीले रगों वाले पसन्द करते हैं। परन्तु जापानी और चीनी लड़कियों में एक बहुत बड़ा भेद होता है, जापानी लड़की के मुख की आकृति तो प्राय पीली होती है, परन्तु उसका शरीर साधारण अंग्रेज लड़की से भी अधिक गोरा होता है।

आजकल योरोप में तो हालीवुड का ही फैशन छाया हुआ है। परन्तु कुछ काल पूर्व वहा ब्रिटिश गायना की लड़कियों का सुन्दरता की बहुत चर्चा थी वहा की महिलाओं का सुन्दर सुगठित शरीर अङ्गों की बनावट और मुख का आकर्षण बहुत प्रसिद्ध था। परन्तु वहा का यह सौन्दय स्थायी नहीं था। २० वें वर्ष के लग भग ही वहा की लड़किया अपनी आभा खो बैठती है और २५ वर्ष तक पहुचते २ तो उनका शरीर पर्याप्त मोटा हो चुका होता है।

आज की नारी पुरुष को अपना खिलौना बनाना चाहती है।

परिस्थितिया भी सौन्दर्य को बढ़ाने और घटाने में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पूर्वी टापुओं की महिलाए शारीरिक दृष्टि से बिल्कुल सम्पूर्ण होती है। बहुत बोझ इत्यादि उठाने से उनका शरीर भी बहुत हृष्ट पुष्ट हो जाता है, परन्तु उस में वह कोमलता नहीं रहती जो कि स्त्री का एक बड़ा गुण है। उन को कोई वस्त्र भी शोभा नहीं देता। वास्तव में सुन्दरता का आदर्श तो शरीर को स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट बनाना है न कि बाह्य रूप से ही भड़कीले और फैशन वाले कपड़े पहन कर सज ना। परन्तु शरीर के सर्वथा स्वस्थ होने पर ऊपर की यथोचित सजावट लाने पर सुहागे का कार्य अवश्य करती है।

— शिवनारायण

स्त्री के गर्भ से सांप

युक्त प्रान्त के एक गाव में किसी बनिये की स्त्री के पेट से एक सांप का जन्म हुआ है। सांप के पैदा होने से पहले उस स्त्री के पेट में बहुत दर्द था बाद में उस स्त्री को यह कह कर आश्वासन दिया गया कि शिशु की मृत्यु हो गयी। कहा जाता है वह सांप अभी तक जीवित है।

पासवान प्रथा समाप्त

राजस्थान सघ की सरकार ने समस्त सघ में पासवान प्रथा पर पाबन्दी लगा दी है और यह आज्ञा तुरन्त लागू कर दी गई है। मत्स्य सघ की सरकार पीछे रह गई। राजस्थान की नारियों को बधाई।

नींद में कुम्भकर्ण को भी मात

न्यूयार्क में श्रीमती कार्नी हेसमेन को सोते सोते आज एक वर्ष हो गया है। उनके पति मेयर हेसमेन ने अपनी पत्नी का आपरेशन करने वाले डाक्टर पर अदालत में १२,५०० पौंड का दावा कर दिया है। श्रीमती कार्नी संसार की वर्तमान अनुपम सुन्दर महिलाओं में से हैं। आज कल लोग उन्हें 'सुप्त सौन्दर्य' के नाम से पुकारने लगे हैं।

मई १९४६ में श्रीमती कार्नी का आपरेशन एक डाक्टर ने किया था। यह आपरेशन उनकी प्रसूतावस्था में किया गया था। इस अवसर पर उनकी धमनियों में हवा का एक बबूला बन गया और स्नायु तन्तुओं को इतनी क्षति पहुंची जिसके कारण वह सदा निद्रा की गोद में पड़ी रहती है।

पर्दा न करने पर प्रकोप

गुरदासपुर जिले के शकरगढ़ से समाचार प्राप्त हुआ है कि मुस्लिम ग्रामीणों के दो दलों में 'परदा प्रथा' का परित्याग करने के विषय में झगड़ा हो गया। एक मुस्लिम अध्यापक की स्त्री जो बिना परदे जा रही थी, वह और चार मुसलमान गोली से मार डाले गये। कुछ पठानों को जिन्होंने 'पर्दा' प्रथा के परित्याग के विरुद्ध आवाज उठाई, गिरफ्तार कर लिया गया है। पठानों ने पुलिस का सामना किया, जिसमें एक सिपाही मारा गया। पुलिस ने गोली चला कर दो पठानों को मार डाला।

सोंठ

लेखक—श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार।

अदरक और सोंठ प्रत्येक भारतीय घर में मिल जाती है। इन घरेलू चीजों से छोटे मोटे प्राय सब रोगों का इलाज करने की विधियां इसमें बताई गई है। इसका सचोपित और परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य एक रुपया। डाक खर्च ≈ आने। मिलने का पता —

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

अरब लीग किसके हाथ खेल रही है?

[श्री गूजा]

★

ब्रिटेन ने पहली लड़ाई में यह ऐलान किया था कि उसके लड़ाई में उतरने का एक कारण है अरब की जनता को तुर्की की गुलामी से छुड़ाना। ब्रिटेन के साहित्य में ब्रिटेन के प्रख्यात गुप्तचर कर्नल लारेंस के कामों की भी खोल कर प्रशंसा की गयी है। ऐसा दिखाया गया है मानों उसने 'बिना किसी स्वार्थ के अरब देशों की स्वाधीनता के लिये 'सेवा' की।

लेकिन लड़ाई में जब जर्मनी के साथ तुर्की की भी हार हो गयी, तब ब्रिटेन ने अरब जनता से जो वादे किये थे, उनका क्या हुआ? सा रेमो में फ्रांस और ब्रिटेन का सम्मेलन हुआ और तुर्की के पंजे से जिन अरब देशों को छुड़ाया गया था, उन्हें दोनों ने आपस में बांट लिया। ब्रिटेन ने ईराक, फिलस्तीन और अरब प्रायद्वीप के राज्य के शासन का भार लिया और सीरिया और लेबनान फ्रांस को दिये।

यह ऐसा साफ विश्वासघात था कि लार्ड अल्ट्रिंचम को, जो मध्य पूर्व में ब्रिटेन के दूत मंत्री थे, रायल एम्पायर सोसाइटी के सामने अपने संदेश में मानना पड़ा कि "हमने जो ऐलान किये थे कि हम अरब जनता को स्वाधीन करेंगे, जनता स्वयं जिस ढंग से चाहेगी रहेगी, और जिसके लिये हम लड़ रहे थे वह हिस्सा बांट उसके अनुसार नहीं हुआ। इसका उससे मेल नहीं है।"

इसके बाद ब्रिटेन ने इन शासनाधीन देशों को 'स्वतन्त्रता' देने का नाटक किया। उसने ईराक, ट्रान्सजोर्डन और दूसरे अरब देशों से सन्धियां कीं, जिनके अनुसार वे आधे स्वाधीन देश ब्रिटिश साम्राज्य के पुछल्ले बने रहें। मिस्र में भी ऐसा ही नाटक हुआ। मिस्र मांग कर रहा था कि हमारे देश से निकल जाओ। ब्रिटेन ने मिस्र की सरकार को सन्धि करने के लिये लाचार किया जिसके अनुसार कहने को तो मिस्र और ब्रिटेन की बराबरी का दर्जा रहा, लेकिन असल में पूरी नील घाटी (मिस्र और सूडान) में ब्रिटेन का साम्राज्य बना रहा। स्वेज नहर का इलाका भी अंगूठे के नीचे रहा।

सोवियत यूनियन और स्वाधीनता चाहने वाले देशों ने मिल कर हिटलरी जर्मनी और उसके साथी फैसिस्ट इटली और जापान को हरा कर जब जीत का डंका बजाया, तो अरब जनता में साम्राज्यवादी जुआ उतार फेंकने का नया जोश आया। इस से पहले ही प्रथम विश्वयुद्ध के बाद और द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले इधर के देशों में आजादी की लड़ाई जोरों पर था। दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद तो [illegible] प्रबल हटा लेने, अपमान सन्धियों को रद्द करने और अन्यान्य प्रकार की दासता को खत्म करने का सवाल ब्रिटेन, फ्रांस और इटली के साम्राज्यवादियों के सामने बड़े जोरों के साथ आया। फ्रांस ने इसकी कोशिश की कि सीरिया लेबनान जिस गुलामी में हैं, उसी में बने रहें। उसने मांग की कि इन दोनों राज्यों में उसको विशेषाधिकार मिले रहें। इसके बाद 'अमन-चैन बनाये रखने के लिये' ब्रिटेन सीरिया और लेबनान में अपनी सेना ले गया। सीरिया और लेबनान के शिकायत करने पर यह सवाल मित्रराष्ट्र संघ की सबसे बड़ी कमेटी सुरक्षा कौंसिल के सामने पेश हुआ। सोवियत ने अरबों की उचित मांगों का पूरा समर्थन किया, लेकिन अमरीका और सुरक्षा कौंसिल के दूसरे स्थायी सदस्यों ने इसकी भरसक कोशिश की कि सीरिया और लेबनान के पक्ष में फैसला न हो। फिर भी सोवियत के समर्थन का नैतिक और राजनीतिक असर ऐसा हुआ कि ब्रिटेन और फ्रांस को ये देश आजाद कर देने पड़े।

उधर मिस्र और ईराक की जनता ने ब्रिटेन से मांग की कि गुलाम बनाने वाले समझौते रद्द किये जाय। दूसरे अरब देशों में भी साम्राज्यवादियों के खिलाफ आजादी का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था।

अब यह जरूरी हो गया कि सभी अरब देशों और वहां की जनता की सारी ताकत को एक सूत्र में पिरोया जाय जिससे इस मौके से लाभ उठाया जा सके।

इन्हीं सब कारणों से १९४५ में अरब लीग बनी। अरब देशों की जनता को आशा थी कि अरब लीग विदेशी साम्राज्यवादियों से लड़ने के लिये ५ करोड़ अरबों का मजबूत मोर्चा बनायेगी। लेकिन अरब लीग के कारनामे बताते हैं कि अरब जनता की आशाओं पर पानी फिर गया।

अरब लीग जागीरदारों (शेखों, सुल्तानों और अमीरों) की संस्था बन गयी। बड़े २ अरब व्यापारी इसमें आ घुसे। अरब लीग अरब तानाशाहों और विदेशी साम्राज्यवादियों की चालबाजियों का अखाड़ा बन गयी।

शुरू से ही अरब लीग मुख्य रूप में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की पिट्ठू रही है, अरब जनता की स्वाधीनता की भावना को दबाने में साम्राज्यवाद का हथियार रही है। उसका काम था कुछ हेर फेर कर पुराना ढांचा कायम रखना। लीग के मन्त्री आजम पाशा के बारे में कहा जाता है कि वह मिस्र का धनी राष्ट्रवादी है और कभी उसने ब्रिटेन के खिलाफ सशस्त्र क्रान्ति में हिस्सा लिया था, "उसे माल्टा (ब्रिटेन के नजरबन्दी शिविर) में ऊंची शिक्षा मिली थी। उसने अपनी भूल मान ली और ब्रिटेन का साथी बन गया।"

जनरल क्लेटन को जो मध्यपूर्व में ब्रिटेन का गुप्तचर है, ब्रिटेन ने अपना प्रतिनिधि बनाया और उसको यह काम सौंपा गया कि वह अरब लीग और अजम पाशा से मेल जोल पैदा करे। १९४५-४६ में जब फिलस्तीन का सवाल बड़े जोरों से उठा था, तब क्लैटन ही लीग को रास्ता बता रहा था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद फिलस्तीन पर अपना सिक्का जमाये रखना चाहता था, इसलिए उसने वही पुरानी शरारत शुरू की, यानी अरबों को यहूदियों के विरुद्ध भड़काना और गृह युद्ध कराना। जनरल क्लेटन और जनरल ग्लब पाशा (ट्रान्सजोर्डन के राजा अब्दुल्ला का अंग्रेज फौजी सलाहकार) ने एक गुप्त योजना बनाई कि फिलस्तीन, सीरिया और लेबनान को

जनरल ग्लब पाशा

हड़प लिया जाय और महान् ट्रान्सजोर्डन बनाया जाय।

लीग की कौंसिल में भी यह सवाल उठाया गया जिसका नतीजा वही हुआ जो ब्रिटेन ने सोचा था। अरब देशों में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मिस्र ने तो कह दिया कि ऐसे झगड़ालू को पड़ोसी बनाने को वह तैयार नहीं। सऊदी अरब को, जो एक तरह से अमरीका के तेल कुबेरों की जमींदारी है, अमरीका ने समझाया कि वह इस योजना का जोरों से विरोध करे। इस योजना के बनाने वाले जो चाहते थे वही हुआ, अरब देशों में फूट पड़ गई।

इसके अलावा फिलस्तीन के मामले ने अरब देशों के दूसरे सवालों को पीछे धकेल दिया है। यह क्लेटन और उसके पिट्ठुओं के अनुकूल ही हुआ है। वे छिपे छिपे अरब सेना बना रहे थे और उसे फौजी शिक्षा दे रहे थे। उन्होंने उसे फिलस्तीन पर हमला करने के लिए आह्वान किया। क्लेटन के हुक्म से ग्लब पाशा ने यह योजना बनाई कि ट्रान्सजोर्डन फिलस्तीन के उस हिस्से पर दखल कर लेगा, जहां से अंग्रेज हटेंगे। यह योजना भी अरब लीग के नेताओं को बतला दी गई और उन्हें सलाह दी गई कि 'वे फिलस्तीन के मसले पर मित्रराष्ट्र संघ के फैसले का जोरों से विरोध करें।"

इस प्रकार अरब लीग ब्रिटिश साम्राज्यवाद और जनरलों के हाथ की कठपुतली बन गई।

इसी समय एक और ताकत मैदान में आई। यह थी अमरीकन साम्राज्यवाद। सऊदी अरब में अमरीकनों का तेल है। अमरीकन साम्राज्यवादी चाहते हैं कि मिस्र से ब्रिटेन को हटा कर अमरीकन आ जाय उत्तरी अफ्रीका के अरब देशों में पैर रखने को जगह मिल जाय और स्वेज नहर और नील घाटी हमारे हाथ में आ जाय। इसका नतीजा यह हुआ कि अरब लीग ब्रिटेन और अमरीका की पारस्परिक स्पर्धा और संघर्ष का साधन बन गई।

इस सब का उद्देश्य यह न था कि

(शेष पृष्ठ २२ पर)

हमारी माध्यमिक शिक्षा

[श्री किशोरीलाल मशरूवाला]

पिछले सप्ताह मैंने डा० ताराचन्द की युनिवर्सिटी शिक्षा के माध्यम से सम्बन्ध रखने वाली कमेटी को उसके प्रगतिकारक निर्णयों के लिए बधाई दी थी। अगर वैसे ही बधाई मैं उनकी माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाली कमेटी को दे सकता, तो मुझे खुशी होती। लेकिन अगर कमेटियों के निर्णयों के बारे में दी गयी असोसियेटेड प्रेस की रिपोर्ट सही हो, तो मुझे दुःख है कि वह बहुत निराशाजनक है। यहां मैं पहले उनका कुछ परिचय दे दूं।

(१) विद्यार्थी युनिवर्सिटी के पहले साल में दाखिल हो, उसके पहले उसे बारह बरस का अभ्यास पूरा कर लेना होगा।

(२) इस बारह बरस के अभ्यास क्रम का बटवारा इस तरह होगा। पहले पाच बरस में 'बेसिक' शिक्षा का पूर्व भाग। बाद के तीन बरस में बेसिक शिक्षा का उत्तर भाग या पूर्व माध्यमिक शिक्षण। आखिरी चार बरस में माध्यमिक शिक्षण।

(३) बेसिक शिक्षा के पूर्वभाग के आखिरी हिस्से में संघ या राष्ट्र की भाषा का शिक्षण शुरू किया जाय। इसके बादके तीन बरसों में वह सब के लिए आवश्यक रहे और उसके बाद विद्यार्थियों की मरजी पर छोड़ दिया जाय।

(४) बीच के तीन बरसों में जो पूर्व माध्यमिक शिक्षण लेंगे, उनके सिवा दूसरे के लिये अंग्रेजी का अभ्यास आवश्यक न रखा जाय।

(५) जब तक युनिवर्सिटियों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहे, तब तक शिक्षा में अंग्रेजी अवश्य रहे।

(६) जब युनिवर्सिटियों में अंग्रेजी के द्वारा शिक्षा देना बन्द हो जाय, तब माध्यमिक शिक्षण में राष्ट्रभाषा को आवश्यकीय विषय बना दिया जाय।

पहले निर्णय के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन दूसरों के बारे में ऐसा मालूम होता है कि माध्यमिक शिक्षण की कमेटी ने युनिवर्सिटी माध्यम कमेटी के फैसलों को जाने बिना ही अपने फैसले किये हैं। अगर माध्यमिक शिक्षण कमेटी को यह मालूम होता कि युनिवर्सिटियों में माध्यम कमेटी ने ठहराया है कि हिन्दुस्तान की युनिवर्सिटियों में पाच बरस के बाद सारी शिक्षा स्थानीय या उपराज्य (स्टेट-प्रान्त) की भाषा में ही दी जायगी, तो उसे यह जानना चाहिये था कि आज जो विद्यार्थी माध्यमिक या पूर्व माध्यमिक शिक्षण ले रहा है वह जब युनिवर्सिटी में भर्ती होगा, तब तक मातृभाषा ही जायगी। युनिवर्सिटियों में पढ़ाई का माध्यम बन जायगी। युनिवर्सिटी शिक्षा के माध्यम से सम्बन्ध रखने वाली कमेटी के बारे में

राष्ट्र की शिक्षा राजनीति की भांति महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस क्षेत्र में आजकल जो महत्वपूर्ण निर्णय किये जा रहे हैं, उनके सम्बन्ध में हम बहुत अज्ञान में हैं। 'हरिजन सेवक' में लेखक ने मध्यम शिक्षा समिति के निर्णयों की आलोचना की है। पाठकों की जानकारी के लिए यह लेख यहां दिया जा रहा है।

लिखते हुए मैंने बताया था कि उसके निर्णयों पर ठीक तरह से अमल करना हो, तो अगले साल के जून से ही कालेजों के पहले बरस का शिक्षण देशी भाषाओं में शुरू कर दिया जाना चाहिये। क्योंकि युनिवर्सिटी के कुछ अभ्यास क्रम ऐसे हैं, जिनके लिए पाच या पाच से ज्यादा साल लगते हैं।

माध्यमिक शिक्षण कमेटी के निर्णयों से पढ़ने वाले के मन पर दूसरी छाप यह पड़ती है कि हमारे देश प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षण के बारे में पिछले कई बरसों से जो अशास्त्रीय रिवाज पड़ गया है, उसे यह कमेटी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। किसी रिवाज को छोड़ने का मतलब है नयी पद्धति चालू करना और क्रान्तिकारी फेरबदल करना। लेकिन प्राथमिक माध्यमिक शिक्षा के चलाने वाले यह सब करने के लिये तैयार नहीं हैं। यह बड़े अफसोस की बात है। पटना में जो बुनियादी तालीम सम्मेलन हुआ था, उसमें यह बताया गया था कि बुनियादी तालीम के सात बरस के समय को घटाने की कोशिश शिक्षा शास्त्री की दृष्टि से गलत है, और उसका विरोध करना चाहिये। अगर हम इस बात को छोड़ भी दें कि सात बरस से कम समय में स्थायी अक्षरज्ञान नहीं दिया जा सकता, तो भी इस में सबसे बड़ा हर्ज यह है कि बालक जब तक कम से कम चौदह बरस का न हो जाय, तब तक हम शिक्षा के जरिये उसके मन पर जो सामाजिक और नैतिक संस्कार जमाना चाहते हैं, वे नहीं जमाये जा सकते।

पटना का वह निर्णय बरसों के अनुभव और बड़ी सावधानी से की हुई जाच का नतीजा है। मध्यम वर्ग के लोगों में बिना कारण की उतावल और गैर दूरन्देशीभरी चाह है कि उनके बच्चे किसी भी तरह जल्दीसे जल्दी अंग्रेजी शब्द और कविताएं रटने लग जायें। इसी इच्छा के आधीन होकर चौथे या पाचवे बरस के अन्त में बुनियादी तालीम के दो हिस्से करने की वृत्ति बनी है। यह वृत्ति शास्त्रीय नहीं है। जिस वर्ग के बालकों के लिए ऐसी मांग की जाती है, उनका भी इससे भला नहीं होगा। और बड़े वर्ग के दूसरे सब बच्चों के लिए तो यह निश्चित रूप से हानिकारक है।

इस तरह बेसिक शिक्षा के दो भाग करने में एक दूसरा दोष भी है। मालूम होता है कि कमेटी यह आशा रखती है कि पाच बरस के अन्त में बालक को यह तय कर डालना चाहिये कि अब शिक्षा लेने के बाद उसे आगे अभ्यास करना है या छोड़ देना है। अगर अभ्यास छोड़ देना हो, तो उसके लिए अंग्रेजी का अभ्यास लाजमी नहीं रखा गया है; और जो चालू रखना हो, तो उसे लाजमी तौर पर अंग्रेजी सीखनी होगी। लेकिन ज्यादातर विद्यार्थी इस समय यह तय ही न कर सकेंगे कि वे माध्यमिक शिक्षण तक आगे जा सकेंगे या नहीं। और बहुत से विद्यार्थी आगे पढ़ने की ही आशा रखेंगे, फिर वह पूरी हो या न हो। नतीजा यह होगा कि लगभग सारे विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी लाजमी हो जायगी। इससे ज्यादा सरल तो यह कहना होगा कि बुनियादी तालीम में पाच बरस के बाद अंग्रेजी लाजमी तौर पर सिखाई जायगी। इस तरह के दो हिस्से करने का ढोंग रचने की जरूरत ही नहीं थी। लेकिन हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि जब तक दो वर्ग या जातियां खड़ी न की जायें, तब तक हमें सन्तोष होता ही नहीं। इसलिए पाच बरस बाद अंग्रेजी पढ़ने वाले और अंग्रेजी न पढ़ने वाले विद्यार्थियों की दो जातियां करने की सूचना कमेटी के निर्णय में है।

रिपोर्ट में दूसरी भी विचारों की गड़बड़ी है। तीसरे निर्णय के मुताबिक बुनियादी तालीम के पूर्वभाग के आखिर में और आखिर के तीन बरसों में संघ या राष्ट्र की भाषा की पढ़ाई अनिवार्य रहेगी। लेकिन उसके बाद वह विद्यार्थियों की इच्छा पर छोड़ दी जायगी। इसका मतलब यह हुआ कि माध्यमिक शिक्षा के चार बरसों में विद्यार्थियों को वह सब भूल जाने का मौका दिया जायगा, जो उन्होंने तीन बरस में सीखा होगा। इस तरह हमारी राष्ट्रभाषा की शिक्षा का भविष्य बनाया जायगा।

इसके अलावा, छठे ठहराव में बताया गया है कि जब तक युनिवर्सिटियों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहे तब तक माध्यमिक शिक्षण में अंग्रेजी की पढ़ाई रखी जायगी। युनिवर्सिटी माध्यम कमेटी ने इस बारे में जो ठहराव पास किए हैं, इसकी जानकारी न होने पर भी माध्यमिक शिक्षण कमेटी को इतना तो जानना ही चाहिए था कि देरसबेर हमारे देश की नीति अंग्रेजी के बजाय स्थानीय उपराज्य की या संघ की भाषा को ज्यादा से ज्यादा महत्व देने की होगी। लेकिन मालूम होता है कि कमेटी की इस बात में श्रद्धा नहीं है कि इस नीति का आग्रह रखा ही जायगा। शायद वह यह मानती है कि थोड़े से चुनवाले लोग चाहे जो कहें, अंग्रेजी को तो हमेशा वही महत्व का स्थान मिलेगा, जो आज मिला हुआ है।

कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर और गांधी जी दोनों को प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के संचालन के बारे में भारी असंतोष था, क्योंकि इस शिक्षा का सचालन शिक्षण को नीचे से धीरे २ ऊपर की ओर ले जाने की दृष्टि से नहीं होता। उसका एक मात्र ध्येय युनिवर्सिटी शिक्षण की जरूरतों को ध्यान में रख कर प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षण का इन्तजाम करना होता है। दरअसल यह होना चाहिए कि माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थी को जिस हद तक पहुंचा दे, उसके बाद आगे की शिक्षा के लिए युनिवर्सिटी इन्तजाम करे। अगर इस तरह का संचालन हो तो माध्यमिक शिक्षा का इन्तजाम करने वालों को यह विचार करने की जरूरत न पड़े कि युनिवर्सिटियों को अंग्रेजी के ज्ञान की जरूरत होगी या नहीं। उन्हें युनिवर्सिटियों को यह साफ बता देना चाहिए कि भविष्य में हम यह विश्वास दिला सकते कि माध्यमिक शिक्षा पाये हुए विद्यार्थी अंग्रेजी के जरिये दी जाने वाली शिक्षा को समझने लायक होंगे ही। क्योंकि वे तो अपनी ताकत बुनियाद को मजबूत बनाने में ही खर्च करेंगे और उसके लिए अंग्रेजी के बजाय मातृभाषा या राष्ट्रभाषा के अच्छे शिक्षण को ही ज्यादा महत्व देंगे। अगर युनिवर्सिटियों को ऊंची शिक्षा के लिए अंग्रेजी की अच्छी जानकारी की जरूरत हो, तो उन्हें अपने यहां अंग्रेजी के खास वर्ग या दल चला कर यह काम करा लेना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा की संस्थाओं को युनिवर्सिटियों के लिए विद्यार्थी देने वाले दलाल नहीं बनना है। लेकिन युनिवर्सिटियों का यह फर्ज है कि वे माध्यमिक शिक्षा जहां रुक गई हो, वहां से शिक्षा को आगे बढ़ायें।

मुझे अफसोस है कि इस दृष्टि से देखा जाय तो इस कमेटी का काम बिलकुल निराशाजनक है।

भाषा गई तो संस्कृति भी जायगी

[श्री कात्यायन]

अखिल भारतीय रेडियो की समाचार शाखा में 'हिन्दुस्तानी' नाम की खिचड़ी भाषा को जन्म देने का कृत्रिम प्रयत्न गुजारी काल से चला आ रहा है। किन्तु जान पड़ता है कि रेडियो के पंडित अभी तक कोई ऐसा भाषा नहीं पा सके, जिसमें हिन्दुस्तानी नाम की कल्पनातीत भाषा को ढाला जा सके। यही कारण है कि रेडियो से कभी-कभी दुरंगी तिरंगी हिन्दुस्तानी सुनाई दे जाती है (दुरंगी वह जिसमें हिन्दी उर्दू हो और तिरंगी वह जिसमें हिन्दी व उर्दू अंग्रेजी हो।) कुछ दिन हुए इस तथाकथित हिन्दुस्तानी में हिन्दी शब्दों का प्रतिशत तीस तक पहुंच गया था, लेकिन हाल में उर्दू का प्रतिशत फिर यथापूर्व हो गया है।

इस सुन्दर भाषा से किसे लाभ पहुंचाने का प्रयत्न किया जा रहा है, यह समझने में नहीं आया। पाकिस्तान ने उर्दू को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया है किन्तु भारत में अभी तक इस के सम्बन्ध में इस प्रकार की कोई घोषणा नहीं हुई। हमें आश्चर्य न होगा, यदि भारत की भाषा भी हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू ही घोषित कर दी जाय।

असम्भव प्रयत्न

क्या संसार में कोई ऐसी दूसरी भाषा है, जिसमें किसी अन्य भाषा का मेल हुआ हो? पाश्चात्य देशों के अनेक महापण्डितों ने अनेक बार ऐसी भाषा गढ़ने का प्रयत्न किया, जो सार्वभौम नहीं, तो कम से कम ऐसी तो बन ही सके जिसे संसार के बहुसंख्यक लोग लिख पढ़ सकें ऐसी भाषाओं में 'एस्परान्तो' अधिक प्रसिद्ध है, किन्तु पाश्चात्य विद्वानों के हजार सिर मारने पर भी 'एस्पराँतो की गाड़ी चल न सकी। कृत्रिम भाषा गढ़ने की दिशा में हम चाहें तो योरोपीय विद्वानों की इस असफलता से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। किन्तु जान पड़ता है कि अपना कुछ खोये बिना हमें सद्बुद्धि न आवेगी। हिन्दी में उर्दू और अंग्रेजी का समावेश कर हम युग युग तक केवल यही प्रदर्शित कर सकेंगे कि हम पहले मुसलमानों और फिर अंग्रेजों के गुलाम रहे। प्रस्तर मूर्तियों और सड़कों के नाम बदल देने पर भी हिन्दी में उर्दू और अंग्रेजी का सम्मिश्रण रख कर हम भारती को कभी भी बन्धनमुक्त न देख सकेंगे। हमारी भाषा के कलेवर में उर्दू और अंग्रेजी के शब्द हमारी दासता के चिरस्थायी स्तम्भ बन कर खड़े रहेंगे जिन्हें देखकर प्रत्येक स्वाभिमानी का मस्तक नत हो जायगा।

रेडियो की भाषा

रेडियो के सामने हमारी भाषा में किस प्रकार विकार डाला जा रहा है, यह पाठकों और रेडियो के श्रोताओं से छिपा नहीं है।

कुछ नमूने

उर्दू फ़ारसी शब्दों की बहुलता के साथ ही वाक्यों का विन्यास भी फारसी के ढंग का होने लगा है और बेचारे श्रोताओं को झक मार के उसे सुनना पड़ रहा है। १४ मई को रात के बुलेटिन में बेपार, उन्नति, कान्ती, जनाता आदि अशुद्ध शब्दों के अतिरिक्त 'कारवाइयों को बढ़ाए' आम समझौता, 'स्थायी सुलह', 'नाराजगी की चिट्ठी आदि वाक्यांश भी सुनाई दिये थे। इसी बुलेटिन में एक वाक्य इस प्रकार का था। ' अरब यहूदियों की बस्ती पर हमला कर रहे हैं।' यह वाक्य फारसी ढंग का है और भ्रामक है। इससे यह भ्रम होता है कि अरब और यहूदियों की बस्ती पर किसी तीसरे धर्म वाले हमला कर रहे हैं। दस अप्रेल के रात के बुलेटिन में मर्दों, स्त्रियों और बच्चों' कहा गया था। अच्छा तो यह होता कि 'स्त्रियों' के स्थान पर 'औरतों' का प्रयुक्त किया जाता और सारा वाक्य उर्दू का बना दिया जाता। 'मर्द' के साथ तो 'औरत' की ही शोभा है 'स्त्री' की नहीं। इसी प्रकार ' संयुक्त यूरोप बनाने के लिये' यह वाक्यांश भी फारसी के ढंग का है। होना चाहिये 'यूरोप को संयुक्त करने के लिये।' 'यूरोप' से पहले 'संयुक्त' रखने पर तो यूरोप को संयुक्त करने का काम पहले ही से पूरा हुआ जान पड़ता है। दोपहर के खाने तक' यह वाक्यांश भी हिन्दी की प्रकृति के विरुद्ध है। सब जानते हैं कि दोपहर खाना नहीं खाती अन्यथा इस वाक्यांश का यही अर्थ निकलता कि 'जब तक दुपहरी खाना खाती रही तब तक। होना चाहिये था 'दोपहर के खाने के समय तक।' 'उर्दू वाले तो 'खाने पर बुलाये जाते हैं, लेकिन हिन्दी वाले खाने पर कभी भी न जायगे—वे तो 'खाने के लिये ही जायगे। 'सनीचर को रेलों में काम करने वालों ने ' शनिश्चर के स्थान पर सनीचर ध्यान देने योग्य है इसके अतिरिक्त उपर्युक्त वाक्यांश से यह अर्थ निकलता है कि केवल वे ही जो जो शनिवार का रेलों में काम करते हैं। 'सुर्ख पोश' न तो हिंदी है, न हिन्दुस्तानी। यह रेडशर्ट' का उर्दू अनुवाद है। हिन्दुस्तानी में इसे लालकुर्ती' या 'लाल कमीज' कहते हैं।

दक्षिण भारत के किसी स्थान पर बापू के चित्रोद्घाटन का समाचार यों सुनाया गया था—'श्री जान मथाई ने गांधी जी के पूरे चित्र पर से पर्दा हटाया।' सब जानते हैं कि 'शिला-न्यास' 'गृह प्रवेश,' 'मूर्ति प्रतिष्ठा' आदि संस्कारों की भांति 'चित्रोद्घाटन' भी एक संस्कार है किन्तु रेडियो के उत्साही पण्डितों ने इस संस्कार का भी अपने ढंग से संस्कार कर दिया है। रेडियो के इस हिंदुस्तानीकरण को आदर्श मान लिया गया तो 'मुंडन' संस्कार के लिए 'बाल बनाना' 'उपनयन' संस्कार के लिए 'धागा पहनाना' और 'पाणिग्रहण' संस्कार के लिए हाथ पकड़ना' लिखा जायगा। किसी बड़े उद्देश्य की पूर्ति के प्रलोभन में हिंदू इस हिन्दुस्तानीकरण को मान भी सकते हैं किंतु क्या किसी को एक क्षण के लिये भी यह विश्वास हो सकता है कि प्रोफेसर गुलाम नबी अपने लड़के के खतने का निमन्त्रण अपने सहयोगी डाक्टर नगेन्द्र के पास रेडियो की हिंदुस्तानी भाषा में भेजेंगे? और यदि थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय कि प्रोफेसर गुलाम नबी खतने का निमन्त्रण हिन्दुस्तानी भाषा में लिख कर भेजेंगे तो प्रश्न उठता है कि जिस प्रकार चित्रोद्घाटन के लिए रेडियो चित्र पर से परदा हटाना लिखता है उसी प्रकार खतने के लिये प्रोफेसर गुलाम नबी क्या लिखेंगे?

उपर्युक्त हिन्दुस्तानीकरण के अतिरिक्त चित्रोद्घाटन सम्बन्धी समाचार कुछ भ्रामक भी है। 'श्रीजान मथाई ने गांधीजी के पूरे चित्र पर से पर्दा हटाया' इस वाक्य से तो यह जान पड़ता है कि श्री जान मथाई ने किसी निगूढ़ विषय का स्पष्टीकरण किया। यदि यह भी मान लिया जाय कि रेडियो के उपर्युक्त वाक्य से किसी प्रकार के अन्यथा अर्थ का भ्रम नहीं होता, तो भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि उस से चित्रोद्घाटन का भाव व्यक्त नहीं होता। यदि 'उद्घाटन' शब्द से बचना ही था तो यह वाक्य इस प्रकार भी लिखा जा सकता था— श्री जान मथाई ने गांधी जी के पूरे आकार का चित्र स्थापित किया' या 'श्री जानमथाई से गांधी जी के पूरे आकार के चित्र की प्रतिष्ठा करायी गयी। और यदि हिन्दुस्तानी के लिए दिल में इतनी तड़प हो कि ये दोनों वाक्य भी हिंदी के जान पड़ें तो फिर इसे यों भी लिखा जा सकता था श्री जान मथाई के हाथ से गांधी जी के पूरे आकार का चित्र लगवाया गया' या श्री जान मथाई ने गांधी जी के पूरे आकार का चित्र खोला। अंग्रेजी शब्द 'अनव्हेल' के शाब्दिक अनुवाद [पर्दा हटाना] ने 'उद्घाटन' शब्द की समारोह एवं संस्कार विषयक भावना को पास तक फटकने नहीं दिया।

हिन्दुस्तानी

रेडियो में आजकल इसी प्रकार की हिन्दुस्तानी की प्रतिष्ठा की जा रही है। यदि हम समय रहते न चेत पाये तो थोड़े ही समय में अपनी भाषा और संस्कृति दोनों को गवा बैठेंगे। हमारी भाषा में हिन्दुस्तानी के नाम पर बड़ी चतुराई से उर्दू और अंग्रेजी के ऐसे

आर्थिक नट नृत्य

[प्रो० जे० सी० कुमारप्पा]

हमारा वैदेशिक व्यापार असंतुलित अवस्था मे है। हम बहुत सी ऐसी चीजें मगा रहे हैं जिनसे सामान बना कर निर्यात किया जा सके और खाद्य हमें बाहर से मिल सके। ऐसी हालत बड़ी असंतोष जनक है। हिन्दुस्तान यूनाइटेड किंगडम का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा खरत का बाजार है। उसने यूनाइटेड किंगडम से किसी भी दूसरे ग्राहक से दुगुनी मशीनें खरीदी हैं और इस मद में शायद वह सबसे बड़ा ग्राहक है। पुतली घर की मशीनों में हिन्दुस्तान का हिस्सा यूनाइटेड किंगडम की कुल निर्यात का ३० प्रतिशत है और उसका यह आयात दूसरे नम्बर के खरीददार से तिगुनी कीमत का है।

हमें अपनी जरूरतों को बाहर से पूरा करने के बारे में इतनी आपत्ति नहीं है, लेकिन जब कारखानादारों की अखिल-भारतीय संस्था 'दि आल इंडिया ओर्गेनाइजेशन आफ इन्डस्ट्रियल एम्प्लायर्स' में प्रेसीडेंट महोदय कहते हैं कि 'अब अपने आयात का पलड़ा बराबर करने के लिए हमें अपना उत्पादित माल बाहर भेजना पड़ेगा' तो हमें खतरा दिखाई देता है। खास तौर से ऐसी हालत में जब हमारा आयात खाद्य पदार्थ और दूसरी प्राथमिक जरूरतों का हो तब और भी डरने की बात है, क्योंकि इन चीजों का आयात ही अधिकतर देश देश के बीच लड़ाई झगड़े पैदा करवाता है। हमारे मुल्क का आर्थिक ढाचा राष्ट्रीय सरकार के आने से बड़ी तेजी से बदल रहा है और ऐसा लगता है कि यह तबदीली अवनति की ओर ही है। एक समतोल व्यवस्था प्राथमिक आवश्यकताओं के बारे में पायाधार होनी चाहिये। हमारा उत्पादन विशेषतया भोजन और कपड़े का — वैदेशिक आयात पर अधिक निर्भर नहीं रखना चाहिये। यह कोई दलील नहीं है कि कपड़े का निर्यात कर के हम अधिक भोजन मगा सकेंगे। हमें ऐसी नीति के नतीजों पर गौर करना चाहिये।

सरकार के 'अधिक अन्न उपजाओ' प्रयत्न का हम स्वागत करते हैं पर यहां पर यह चेतावनी देना अनुचित न होगा कि इस क्षेत्र में भी हमें अपनी निर्भरता दूसरे देशों पर नहीं रखनी चाहिये। जैसे ट्रैक्टर्स के लिए पेट्रोल, क्रूड आयल आदि का और खादों का आयात हमें फिर उसी व्यवस्था में लाकर ढकेलेगा जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय गड़बड़ी का अन्देशा बना रहेगा।

नदियों की व्यवस्था और बंजर जमीन में खेती का भाग बढाने की जो कोशिशें हो रही हैं वे अच्छी हैं, लेकिन साथ ही साथ हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी खेती की जमीनें व्यावसायिक खेती के कामों में तो नहीं लाई जा रही हैं और उनकी उत्पत्ति बाहर भेजकर अनाज तो बाहर से नहीं मंगाया जा रहा है? यह तरीका समस्या का बड़ा गलत हल है। अब हमारी बहुत-सी चरागाहों की जमीनचली गई है इसलिए मवेशियों को बांध कर खिलाने के लिए चारे की फसलों की जरूरत है। यह भी खेतिहर जमीन की एक जिम्मेदारी है जिसे व्यवसायिक खेतियों से अधिक महत्व देना चाहिए।

अपने खाद्य भंडार को संरक्षित रखने के लिए जो प्रयत्न चल रहे हैं उनमें चावल, चीनी और वनस्पति की मिलों को बन्द करने का भी समावेश होना चाहिए। क्यों कि ये मिलें हमारे खाद्य पदार्थों के पोषक तत्वों को हानि पहुंचाती हैं। इसलिए इनको बढ़ावा देने का मतलब होगा अन्न अधिक उपजाने की अपनी नीति के विरुद्ध जाना। हम एक तरफ तो लोगों को अन्नोत्पत्ति के लिए जी तोड़ कोशिश करने को कहें और दूसरी ओर भोजन तत्वों के नाश को सहारा दें, ऐसा कैसे हो सकता है?

इसलिए हमारी आर्थिक व्यवस्था के लिए जरूरी है कि उत्पादन के विभिन्न साधनों का ठीक से सोची गई योजना के मुताबिक ऐसा एकीकरण करें जिससे थोड़े से लोगों को धनी बनाने के बजाय आम जनता का फायदा हो। मुल्क का विदेशी आयात द्वारा औद्योगीकरण करने और अनाज मंगाने के लिए अपने उत्पादन का निर्यात करने की कोशिशें आर्थिक क्षेत्र में तनी रस्सी पर नटनृत्य के समान हैं। इससे दर्शकों को क्षणिक आनन्द भले ही मिले पर नृत्य कर्त्ता के लिए यह खतरे की बात साबित हो सकती है। हमारे मुल्क को इन जोखिम के खेलों में नहीं पड़ना चाहिए।

शब्द और मुहावरे भरे जा रहे हैं जो भारत के स्वतन्त्र होते हुए भी सदियों तक हमारी पिछली दासता का झण्डा फहराते रहेंगे तथा संसार के समस्त राष्ट्र हम पर उंगली उठायेंगे। वे कहेंगे कि भारतीयों की अपनी कोई भाषा नहीं है। यदि इन्हें मुसलमानों से उर्दू और अंग्रेजों से अंग्रेजी न मिली होती तो इन बर्बर भारतीयों के पास अपने विचार प्रकट करने का कोई माध्यम ही न होता। और उर्दू अंग्रेजी मिली हिन्दुस्तानी के माध्यम से जब हम अन्तर्राष्ट्रिय समाज मे अपने विचार प्रकट करने बैठेंगे तब इतर राष्ट्रिय जन हमारे मुंह पर थूक देंगे।

वनस्पति घी की खराबी

[श्री बाबा राघवदास]

एक समय था जब वनस्पति घी का रोजगार करते लोग शरमाते थे। मुझे याद है कि बरहज के एक भाई ने मुझसे वनस्पति तेल के बारे में कुछ सलाह मांगी थी तो वह बिलकुल एकान्त में जिससे उसको कोई सुनने न पावे और ऐसी लज्जा और संकोच के साथ जैसे वह व्यक्ति कोई बड़ा पाप कर रहा हो। मैंने उसको उसी समय कह दिया कि भाई, यह रोजगार तुम्हें सफल मालूम पड़ता है, पर तुम ने कभी सोचा कि इससे तुम गो हत्या कर रहे हो ! इस पर वह चौंका और अपनी लाचारी दिखलाने लगा कि मैं तो माल मंगा चुका हूं। मेरा पैसा लग गया है। अब मेरी मदद करो।

इस पर मैं वहां से उठ कर चला आया। मुझे मालूम नहीं कि बाद में क्या हुआ पर इतना तो स्मरण है कि वह भाई मेरे पास फिर कभी नहीं आया।

इस प्रकार एक समय इस वनस्पति तेल की चर्चा करने से लोग हिचकते थे और आज यह हालत है कि पूज्य बापूजी के कट्टर भक्त कहलाने वाले, अपने को मानव धर्म का उपासक समझाने वाले बड़े बड़े कारखाने खोल कर जनता का स्वास्थ्य, गो वंश का नाश करने के लिए तैयार हो गये हैं। यह है समय की महिमा।

गत १४ फरवरी को मैं दिल्ली में पशु प्रदर्शनी देखने गया था। वहां एक जगह पर चार्ट टंगा था, जिसमें एक तरफ गो का घी खाने वाले चूहों का जोड़ा दिख-लाया गया था और दूसरी तरफ वनस्पति 'घी' (नहीं नहीं भूल गया तेल) खाने वाले चूहों की जोड़ी। गो का घी खाने वाले चूहे तो खूब स्वस्थ दिखाई देते थे और उनकी संतान बढ़ी हुई थी और दूसरे उधर कमजोर होते गये और ६ मास के अन्त में उसमें से एक तो मर गया था और दूसरा मरणासन्न था। यह प्रयोग १८० दिन के लिए किया गया था, और किया गया था भारत सरकार की बरेली खोज संस्था में, जिसके परिणाम इस प्रदर्शिनी के चार्ट में हमारी जानकारी के लिए दिखलाये गये थे।

कुछ लोग कहेंगे कि चूहे और मनुष्य का सम्बन्ध क्या ? इस पर इतना कहना काफी है कि कम से कम जब प्रयोग का शिकार बना सकते हैं तब ये चूहे हमें बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

सभी जानते हैं कि यह वनस्पति तेल अधिकांश मूंगफली से बनता है और यह बम्बई, मद्रास और हैदराबाद (दक्षिण) की ओर अधिक पैदा होता है।

बम्बई प्रान्त में मूंगफली का तेल [illegible] विशेष रूप से खाया जाता है, [illegible] गाय, बैल आदि पशुओं को खिलाने पर डाली जाती है। इस समय बम्बई में मूंगफली का तेल आठ आने पौण्ड याने एक रुपया सेर है और इसी तेल से बना हुआ 'डालडा' (जिसका बोलबाला शहरों में खास तौर पर है) बिकता है एक रुपया दो आने पौंड अर्थात् २।) सेर। क्या आश्चर्य है कि जिस तेल में बहुत से जीवन तत्व हैं, जो बनने में सुगम है, उसको बिगाड़ कर सफेद गाढ़ा बना दिया गया और उसकी कीमत दुगनी से भी अधिक कर दी गई। बम्बई के एक प्रसिद्ध मूंगफली के व्यापारी ने हिसाब लगा कर बताया कि तेल को इस विकृत रूप देने में जो खर्च पड़ता है, २० प्रतिशत रोजगारी को रखा जाय तो डालडा की कीमत ॥।–)॥ से अधिक किसी भी हालत में नहीं हो सकती पर वह बिकता है १=) पौण्ड अर्थात् मुनाफा १।३ (३४ प्रतिशत) मुनाफा पर बड़ी फायदा वनस्पति तेल के कारखाने वाले को इतना नशा चढ़ा रहा है कि वह अपने ग्राहकों के स्वास्थ्य तथा गो वंश के ह्रास का ख्याल न कर नकली घी पैदा कर असली घी का रोजगार करने वाले गोपालकों के पेट पर पैर रख कर अपना खजाना बढ़ा रहा है।

चंदौसी, आग्रा, खुर्जा, हरियाना, बेलगांव, खानदेश आदि स्थानों का घी देश भर में प्रसिद्ध है। जांच करने से पता चला है कि (पञ्जाब) हरियाना के किसान को एक सेर घी तैयार करने में इस समय ७॥) लागत लगती है पर बाजार भाव ५॥) से अधिक नहीं। इससे इस गो सेवक को अपना घी बाजार में २॥) घाटा देकर बेचना पड़ता है। और इधर वनस्पति तेल वाले मुनाफे पर मुनाफा कमा रहे हैं, तो कौन ऐसा मूर्ख होगा कि जो यह घाटे वाला रोजगार करने की हिमाकत करेगा ?

काशी की सभा में एक देश भक्त मुसलमान भाई ने कहा कि इस वनस्पति घी के प्रचार से काशी में चर्म रोग खुजली बहुत बढ़ गई है और ऐसे ही समाचार और कई जगहों से मिले हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय के टैक्निकल विभाग के अध्यक्ष डा० गाडगोले साहब जो इस विषय के भारत प्रसिद्ध विशेषज्ञ हैं, कहते हैं कि उनके पास वनस्पति तेल वालों ने जो चार्ट भेजे हैं उसके हिसाब से कोई भी ऐसा वनस्पति तेल नहीं है जो ५० डिग्री से नीचे गर्मी से तपाया जाता हो। मनुष्य के शरीर में ३७ डिग्री और अधिक गर्मी पैदा करने में शरीर में जो सुरक्षित शक्ति है उसको खर्च कर यह गरमी पैदा करनी पड़ती है। परिणाम यह होता है कि इससे शरीर बलशाली होने की अपेक्षा और कमजोर हो जाता है। उनका तो यह कहना है कि सूखी रोटी भात खाना अच्छा है क्योंकि शरीर को कुछ पोषण तो देते हैं पर यह वनस्पति तो बल कहां से देगा, यह तो घटाता है। अपने धोखाधड़ी के काम से और रूप से कभी कभी वनस्पति वाले अपने टीन पर यह भी लिख देते हैं कि इसमें ए०, डी० जीवन तत्व है पर हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि 'ए' जीवन तत्व प्राणियों की चर्बी में जैसे घी दूध में या छाछ-मक्खन आदि में ही होता है। इसलिए ये वनस्पति वाले मछली के तेल इस बनावटी घी में मिलाकर अपना मतलब साधते हैं। मालूम नहीं है कि जिस प्रान्त में मांस मछली खाने से परहेज करते हैं उस प्रान्त में यह वनस्पति भेजने की हिम्मत ये मिल वाले करते हैं या नहीं; पर न करते हों तो उसमें जीवन-तत्व है यह कहना सरासर झूठ है ! भेजते हों तो मांस मछली खाने से जिनको परहेज है, जो इस खाद्य को अपने धर्म विरुद्ध समझते हैं उनका धर्म बिगाड़ कर यह पैसा कमाया जा रहा है ॥

इसलिए महात्मा गांधी ऐसे महा-पुरुष ने जो एक एक शब्द तौल कर लिखते थे इन नकली घी बेचने वालों को देश का दुश्मन कहा था। कहीं बापूजी के इसी लिखने का यह परिणाम न हो कि भारत-सरकार ने यह रुकावट लगायी थी कि इसको वनस्पति घी लिख कर या कहकर न बेचा जाय बल्कि 'वनस्पति तेल' स्पष्ट कहा जाय। साथ ही इसकी जांच के लिए सुविधा हो इसलिए इसमें ५ या १० फी सदी तीली का तेल मिलाया जाय। मालूम नहीं कि इस कायदे क्या लाभ पहुंचा, लेकिन इसमें सन्देह नहीं है कि जब तक यह नकली चीज कायम रहेगी तब तक असली घी को हानि पहुंचे बिना नहीं रहेगी और इसका असर होगा गो-सेवकों पर, गो भैंस पाल पास कर घी तैयार करके बेचने वालों पर। यदि गाढ़ा किया हुआ यह तेल इतना बेकार है तो उसको तुरन्त ही क्यों न रोका जाय, जब कि शुद्ध तेल उससे कई गुना लाभप्रद है। सरकार को थोड़ी हिम्मत करनी ही पड़ेगी।

हम जानते हैं कि यह मिल वाले अपने पैसों की बदौलत बड़ों बड़ों को खरीद कर जनता को लूट सकते हैं, भ्रम में डाल सकते हैं। पर हमारे देश में इन लोगों का मुकाबला करने वाला एक समाज है जो गरीब किसान और साधारण जनता के हितों की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता है। उनसे हम प्रार्थना करेंगे कि वे देश के इन शत्रुओं को परास्त करने के लिए अपनी शक्ति लगावें।

ब्रिटिश गायना में भारतीय

[श्री प० श्रुषिराम]

(श्री पं० ऋषिराम पंजाब के एक अच्छे विद्वान् लगन वाले प्रचारक हैं। वे दक्षिणी अफ्रीका ब्रोरप तथा अमेरिका में हिन्दू धर्म तथा संस्कृति के प्रचारार्थ यात्रा कर चुके हैं। अभी वे हाल में प्रचार के लिये इंग्लैंड से ट्रिनिडाड गये थे और ट्रिनिडाड से वे अब ब्रिटिश गायना पहुंचे हैं। उनके इस प्रकार कार्य में आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ यथाशक्ति सहायता प्रदान करता रहा है। ब्रिटिश शासन के भारतीयों की दशा का निम्नलिखित आखों देखा बयान उन्हीं का भेजा हुआ है। सं०)

गायना नामक प्रदेश दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भाग में अन्ध महासागर के किनारे बसा हुआ है इसका क्षेत्रफल दो लाख पचास हजार वर्गमील के लगभग है। यह देश प्रायः बराबर के तीन भागों में बंटा हुआ है और प्रत्येक भाग क्रमशः अंग्रेजों, डचों और फ्रांसीसियों के अधिकार में है। तीनों भाग अलग अलग ब्रिटिशगायना, डचगायना तथा फ्रेंचगायना के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से डचगायना और ब्रिटिशगायना में भारतीय पर्याप्त संख्या में बसे हुए हैं। इस लेख का उद्देश्य केवल ब्रिटिशगायना के हिन्दुओं की परिस्थिति का दिग्दर्शन कराना है।

आज से बीसियों वर्ष पहले भारतवर्ष से अनेकों भारतीय, हिन्दू और मुसलमान दोनों, डच ब्रिटिश गायना में विदेशियों द्वारा उपनिवेश बनाने के लिये शर्तबन्द कुली के रूप में भर्ती करके भेजे जाते थे। ये ही भारतीय पांच वर्ष तक वहां खेती आदि में काम कर चुकने पर स्वतन्त्र कर दिये जाते थे। धीरे धीरे उनकी संख्या बढ़ती गयी और इस समय डचगायना और ब्रिटिश दोनों में मिलकर भारतीयों की जनसंख्या दो लाख से ऊपर है।

मैं २७ फरवरी को ट्रिनिडाड से ब्रिटिश गायना पहुंचा। यह स्थान ट्रिनिडाड से वायुयान द्वारा केवल दो घंटे का रास्ता है। ब्रिटिश गायना की कुल जनसंख्या ३ लाख ७० हजार है और भूमि का क्षेत्रफल ८३००० तेरासी हजार वर्ग मील है। सारा देश जंगलों पहाड़ों और नदियों से आवृत है। केवल समुद्र के किनारे किनारे कुछ भूमि आबाद हुई है। शेष सारा अभी अगम्य है। यहां प्रथम यूरोपीय लोगों की गन्ने की खेती पर कार्य करने के लिये अफ्रीका के हब्शी गुलाम बना कर लाये गये थे। परन्तु १८३४ में उनको स्वतन्त्र कर दिया गया। उसके पश्चात् भारतीय कुलियों की भरती आरम्भ हुई। इस समय ब्रिटिश गायना में जनसंख्या भारतीयों की ही अधिक है। उनकी जनसंख्या १ लाख ५० हजार है अर्थात कुल आबादी का ४३ प्रतिशत भारतीय हैं। हब्शी लोग ३४ प्रतिशत हैं। शेष चीनी, पुर्तगाली और अंग्रेज हैं। यहां शासन अंग्रेजों का है और बड़े बड़े सरकारी पद उन्हीं के हाथ में हैं। गन्ने, की बड़ी बड़ी खेतियां और चीनी के कारखाने भी उनके हाथ में है। चीनी लोग केवल व्यापारी हैं। हब्शी लोग कारखाने और भूमि पर कार्य करते हैं और सिविल सर्विस में भी प्रायः वही लोग हैं। उनका यूरोपीय लोगों से रक्त-मिश्रण भी हो चुका है। शिक्षा का सारा विभाग तथा स्कूल उनके हाथ में हैं। वे व्यापार में अधिक नहीं हैं। वे सबके सब ईसाई हैं। चीनी भी २० हजार के लगभग सब ईसाई हो चुके हैं। भारतीयों में १ लाख २० हजार हिन्दू हैं, ३० हजार मुसलमान हैं और १० हजार ईसाई हैं। भूमि का ६० प्रतिशत भाग भारतीयों के अधिकार में है। वे प्रायः खेती में और कुछ व्यापार में हैं। सरकारी नौकरियों में उनकी संख्या अध्यापकों के रूप में बहुत कम है। परन्तु आर्थिक अवस्था में भारतीय हब्शियों से बहुत आगे बढ़ गये हैं।

राजनीतिक अधिकार में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं है। भारतीय सेना गवर्नर की कौंसिल में तथा एग्जीक्यूटिव (कार्यकारिणी) कौंसिल में भी सभासद् हैं। मत देने का सबको समान अधिकार है। यहां भी ट्रिनिडाड के समान शिक्षा का सारा क्षेत्र ईसाइयों के हाथ में है और सरकार उनको रुपया देती है। यहां भी कोई हिन्दू ईसाई बने बिना अध्यापक नहीं बन सकता था। अतः बहुत से शिक्षित हिन्दू ईसाई बनते गये। हिन्दुओं के अन्दर विशेष धार्मिक जागृति नहीं थी। प्रारम्भ में हिन्दुस्तानी कुलियों में जो कुछ थोड़ा बहुत लिखे पढ़े थे वे पंडिताई का काम करने लगे। वे पुराने ढंग की रूढ़ियों को ही धर्म समझते थे। अतः शिक्षित लोगों को उनकी बातें रुचिकर नहीं लगीं।

भाई परमानन्द जी यहां १६१० में आये और कुछ मास ठहरे। १६२७ में मेहता जैमिनी जी तथा पं० अयोध्या प्रसाद जी आये। प्रो० भास्करानन्द एम० ए० यहां लगभग ६ वर्ष रहे और आर्य समाज के संगठन का कार्य करते रहे। इन लोगों के उद्योग से आर्यसमाज का एक विशाल भवन भी बन गया, जिसे वे कालेज का रूप देना चाहते थे, परन्तु उनके जाने के पश्चात् काम आगे नहीं बढ़ा। केवल वह भवन ही बना है, कोई स्कूल स्थापित न हो सका। पं० [illegible] उनकी पत्नी भी यहां कुछ दिनों तक प्रचार का कार्य करते रहे। वे भी कुछ समय हुआ यहां से चले गये हैं। इस समय भारत से कोई अध्यापक या प्रचारक यहां नहीं है। परन्तु यहां के हिन्दुओं की स्थिति ऐसी है कि बिना भारत से किसी कार्यकर्ता के आये कोई विशेष जन हित का कार्य यहां नहीं हो सकता।

यहां के लोगों में शिक्षा की कमी है और प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने घरेलू धन्धों में फंसा रहता है। नैतिक जीवन की कमी है। शराब और मुकद्दमेबाजी ये दो बुरे व्यसन हिन्दुओं में बहुत प्रविष्ट हो रहे हैं। हिन्दुओं के पास धन है और देश तथा धर्म के प्रति प्रेम भी है। किंतु नेतृत्व के अभाव में यहां के भारतीयों की दशा हीन हो रही है।

यहां केवल चीनी, कोपा और चावल की पैदावार होती है। साग, सब्जी, फल पर्याप्त होता है। ऋतु गर्म है। प्रायः दिन रात में ७५ और ८५ के बीच तापमान रहता है। समुद्र का वायु चलता रहता है। यहां की भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए अधिक जन संख्या की आवश्यकता है। भारतीय कृषक इस काम को सफलता पूर्वक कर सकते हैं। यदि भारतीय सरकार और यहां की सरकार मिल कर कोई ऐसी योजना बनावे कि जिस से यहां १,२ लाख भारतीय आ सकें तो दोनों देशों को लाभ होगा।

हिन्दुओं की धार्मिक तथा सामाजिक अवस्था सन्तोषजनक नहीं है। उनके अन्दर प्रेम तो बहुत है, किन्तु कार्य करने वालों की कमी है। हिन्दी का प्रचार बहुत कम है। प्रायः स्कूलों में केवल अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। कहीं २ सायंकाल हिंदी के स्कूल लगते हैं, परन्तु विशेष लाभदायक नहीं। यदि भारतीय अध्यापक यहां आकर अंग्रेजी स्कूल जारी करें तो अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी का शिक्षण भी हो सकता है और धार्मिक जागृति भी हो सकती है। यहां फीस छटी श्रेणी से दसवीं श्रेणी तक ८ रु० के लगभग होती है। अतः १५० विद्यार्थियों के हो जाने से स्कूल का सारा व्यय पूरा हो जाता है। हब्शी अध्यापकों ने ऐसे बहुत से निजी स्कूल जारी किये हैं। भारतीय अध्यापक इस क्षेत्र में बहुत सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साधनों की कमी नहीं परन्तु जनता में विश्वास उत्पन्न करके सच्ची लगन से काम करने की आवश्यकता है।

हिन्दुस्तानी फिल्मचित्र यहां भी बहुत प्रिय और प्रसिद्ध हैं और उनके देखने के लिए न केवल हिन्दुस्तानी प्रत्युत दूसरे लोग भी जाते हैं। इन चित्रों के द्वारा हिन्दुस्तान के जीवन के साथ संबंध ताजा बना रहता है। इस अंश में इन चित्रों ने बहुत लाभ पहुंचाया है। भारतीय सरकार को भी यहां शीघ्र ही अपना प्रतिनिधि नियुक्त करना चाहिए जो यहां के सब भारतीयों के हितों की देखभाल और रक्षा करता रहे। चीनी संख्या में बहुत थोड़े हैं तथापि उनकी सरकार का एक प्रतिनिधि ट्रिनिडाड में और एक यहां विद्यमान है। यहां सबसे बड़ी आवश्यकता अध्यापकों की है जो स्कूल के संचालन कार्य में कुशल हों। पश्चिमी पंजाब के स्कूलों से आये हुए जो अध्यापक खाली बैठे हैं, उनमें से कुछ यहां आकर अपना अच्छा स्थान बना सकते हैं।

ब्रिटेन में उत्पत्ति की प्रवृत्ति

[श्री जान किंग्सले]

ब्रिटिश उद्योग प्रदर्शिनी ने जो कुछ समय पहले समाप्त हुई थी यह प्रमाणित कर दिया कि ब्रिटिश मशीनरी और यंत्र सर्वत्र लोकप्रिय हैं और सर्वत्र उनकी आवश्यकता है। प्रदर्शिनी में मशीनरी, यन्त्र तथा अन्य उत्पादक यंत्रों के विभाग सबसे अधिक क्रियाशील थे। इन्हें अनेक आर्डर लेने पड़े। इसके अतिरिक्त, कुछ विदेशों द्वारा अपने यहां ब्रिटिश वस्तुएं बनाने का प्रबन्ध भी किया गया। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में निश्चय ही यह ब्रिटिश आविष्कारक और कारीगर के लिए गौरव का विषय है।

इस बढ़ती हुई मांग से स्पष्ट है कि इंजीनियरिंग तथा इस प्रकार की अन्य वस्तुएं ग्रेट ब्रिटेन के निर्यात व्यापार में अधिकाधिक मुख्य होती जायंगी और यह भी कि ब्रिटिश औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था की मुख्य समस्या प्राप्त मशीनरी और यंत्र को देश तथा निर्यात की आवश्यकताओं पर उचित रूप से बांटना है।

जैसा कि मैं पहले कई बार लिख चुका हूं, इस समय देश के अन्दर मशीनरी और यंत्र की मांग बहुत अधिक है और इनकी प्राप्ति पर्याप्त न होने पर निर्यात के दूसरे क्षेत्रों को हानि पहुंचेगी। पर आर्डर लेने मात्र से उनकी पूर्ति नहीं होती। कारखानों और सरकार में सहयोग तथा कच्चे माल के विशेष बटवारे द्वारा अत्यधिक आवश्यक वस्तुओं की उत्पत्ति बढ़ाने तथा देश और निर्यात की आवश्यकता पूर्ति के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

नवीन अस्थायी आंकड़े

पिछले वर्ष के अंत में देश के अंदर मशीनरी इत्यादि की आवश्यकता में कमी करने के विचार से एक योजना बनाई गई थी जिसकी सफलता के कारण निर्यात में वृद्धि सम्भव हुई। निर्यात पर उत्पत्ति में प्रोत्साहन की प्रणाली ने भी अच्छा प्रभाव डाला। अब औद्योगिक उत्पत्ति के कुछ अस्थायी, संकेतात्मक आंकड़े तैयार कर लिए गए हैं जिनसे ब्रिटिश औद्योगिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। इन आंकड़ों का आधार १९४६ है जिसकी औसत उत्पत्ति १०० मान ली गई है।

इस प्रकार १९४७ के प्रथम त्रैमासिक में इंजीनियरिंग, जहाज-निर्माण और बिजली की वस्तुओं के कारखानों में उत्पत्ति ९०१ थी; दूसरे त्रैमासिक में ९९१; तीसरे में ९९५ और चौथे में ९३३। सभी कारखानों में उत्पत्ति का विकास सामूहिक रूप से इस प्रकार हुआ। प्रथम त्रैमासिक में ९५ और चौथे में १२०।

इस विश्लेषण से कुछ अन्य मनोरंजक प्रवृत्ति पर प्रकाश पड़ता है। कपड़ों की उत्पत्ति प्रथम त्रैमासिक में ९२ थी और चौथे में ९२२। गाड़ियों की संख्या ९३ से बढ़ कर ११५ तक पहुंची। स्मरण रखना आवश्यक है कि निर्यात व्यापार में कपड़ों को इस समय विशिष्ट स्थान प्राप्त है। फुटकर कारखानों में इससे भी अधिक उन्नति देखने में आती है—प्रथम त्रैमासिक में १०१ और चौथे में १४३। पृथक् उद्योगों के सम्बन्ध में प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि इस वर्ष के प्रथम त्रैमासिक में भी उत्पत्ति की प्रगति संतोषजनक रही है।

इस्पात का महत्व

इस्पात की समस्या के कारण कई कारखानों में उत्पत्ति को उच्चतम शिखर तक पहुंचाना कठिन है। सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पत्ति का रेट १,६०,००,००० टन होना चाहिए। कच्ची चीजों, विशेषतः कतरन की कमी के कारण सरकारी लक्ष्य पहले १,४०,-००,००० टन निर्धारित किया गया था। पर उत्पत्ति की संतोषजनक प्रवृत्ति के बल पर लक्ष्य में पांच लाख टन की वृद्धि की गई। कुछ भी हो, इस्पात के बटवारे में अभी बड़ी सावधानी की आवश्यकता किसी हालत में रहेगा।

कारखानों और फैक्टरियों में तैयार वस्तुओं का निर्यात बहुत संतोषप्रद रहा है। १९४८ के प्रथम त्रैमासिक में इनका निर्यात १९३८ से ४३ प्रतिशत अधिक था। निर्यात के क्षेत्र में वस्तु की बनी वस्तुएं विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं क्योंकि यहां इस वर्ष के प्रथम त्रैमासिक में संख्या १९२८ से ८६ प्रतिशत अधिक थी अर्थात इस वर्ष के अंत तक १९३८ की दुगनी होने में केवल आठ प्रतिशत की कमी रह गई है।

दूसरी ओर, उस लक्ष्य को प्राप्त करने में जो इस वर्ष के अंत तक के लिए निर्धारित किया गया है कुछ ब्रिटिश उद्योगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उदाहरणार्थ, कपड़ों और बने हुए वस्त्रों का निर्यात इस वर्ष के अंत तक निर्धारित लक्ष्य के अनुसार १९३८ से ३४ प्रतिशत अधिक होना चाहिए। यदि लक्ष्य प्राप्त करना है तो इन्हें इस समय ६१ प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी।

आर्य जगत्

ऋषि दयानन्द का एक स्मारक

[अखिल विनय]

★

यू० पी० के जिला बुलन्द शहर में भागीरथी के तट पर कर्णवास नामक ग्राम अवस्थित है। यह वही स्थान है, जहां अमर मानव दयानन्द घण्टों समाधिस्थ हो, प्रभु प्रेम में निमग्न हुआ करते थे, जहां ठा० गोपालसिंह आदि अनेक क्षत्रिय युवकों को यज्ञोपवीत देने के लिए गायत्री-पुरश्चरण उन्होंने कराया था। यह वही स्थान है, जहां मदोन्मत्त राव राजा कर्णसिंह के खड्ग के दो टुकड़े कर दिग्विजयी दयानन्द ने राजा के अभिमान को चूर चूर किया था। इसी स्थान पर उनका एक स्मारक था जिसे चन्दौसी निवासी लाला विश्वम्भर नाथ ने नष्ट कर दिया है। जिस चबूतरे पर बैठ कर स्वामी जी महाराज समाधिस्थ होते थे, जहां से सहस्रों नर नारियों को उपदेशामृत पान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, आज वह नहीं रहा। जिस यज्ञशाला का स्वामी जी महाराज ने निर्माण कराया था और जहां वेदों की पवित्र ध्वनि से वे यज्ञ कराया करते थे, जहां सत्य-सनातन धर्म पुनर्जागरणार्थ अनेक व्यक्तियों को ऋषि ने दीक्षा दी थी, यह कहते हुए खेद है, आज वह वहां नहीं है। उस यज्ञशाला को भी तोड़ फोड़ डाला गया है। जिस बरगद के वृक्ष की शीतल छाया में महाराज विराजते थे उस वृक्ष को भी कटवा डाला गया है।

स्वामी दयानन्द ने आज से ७५ वर्ष पूर्व देश में एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक अज्ञानान्धकार में डूबे भारतवासियों को जगाने का उत्तमोत्तम प्रयास किया। उसने पहले पहल 'स्वराज्य' शब्द की व्याख्या की। उसने सर्व प्रथम 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा बनाने का सुझाव हमारे समक्ष उपस्थित किया और अपने विचारों को क्रियात्मक रूप देने के लिए, गुजरात प्रान्त में जन्म लेकर भी, संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित होते हुए भी, आज से इतने वर्षों पहले 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में लिखा। इस संसार में आने से लेकर 'यहां से जाने तक' जीवन भर वे अन्यायों से लड़ते रहे, अज्ञान का उन्मूलन करने और ज्ञान की ज्योति को प्रदीप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहे।

स्वामी दयानन्द ने सौ सौ आंसू बहाने वाली समाज के घोरतम अन्याय की शिकार, विधवाओं का दुःख दूर करने के लिए कोई कोर-कसर उठा न रखी। उन्हें यह समझना कि उन्होंने भी मानव-हृदय पाया है; सुख-दुःख का अनुभव उन्हें भी होता है। दुधमुंहे बच्चों को गृहस्थ में फांस डालने वाले नर चण्डालों की आंखें उन्होंने खोल डालीं, अनेक व्यक्तियों को इस घोर कुकृत्य में लीन होने से उन्होंने बचाया। पापी, पामर और अमुक्ता के शिकार, धन के मद में मस्त, वासनाओं के दास बुड्ढों को अबलाओं पर अत्याचार न करने का आदेश देकर, उचित पथ प्रदर्शन किया। इस प्रकार प्रत्येक सामाजिक कुनीति के विरुद्ध खड्गहस्त हो उसको जड़ से उखाड़ फेंकने के लिये यावज्जीवन संघर्ष करते रहे।

स्वामी दयानन्द ने अपने आचरण द्वारा नर नारायण की सेवा करते हुए प्रभु प्राप्ति के महान् जीवनोद्देश्य को जनता के समक्ष रखा। उन्हीं के बताये मार्ग का अनुसरण कर मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हुए जिन्होंने धर्म, देश और जाति में नवज्योति को जाग्रत किया, पाखण्ड को खण्ड २ करने के लिए ऋषि की 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली' को कार्य रूप दिया और अन्त में अमर शहीद हुए। जिनके विचारों को क्रियान्वित करने के लिए आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम जीवन-भर अन्यायों के विरुद्ध लड़ते रहे। ऋषि के अमर सन्देश— 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'— के लिए वे जीये तथा बलिदान हुए। उस बाल ब्रह्मचारी के अमूल्य उपदेशों का पान करके लाला लाजपतराय 'शेरे पंजाब' बने, जनता में जाग्रति के लिए 'सर्वेण्ट्स आफ पीपल सोसायटी' (जिसके वर्तमान प्रधान स्व नाम धन्य श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन हैं) की स्थापना की। जिनके वचनामृत और अन्तिम दर्शन से गुरुदत्त विद्यार्थी घोर नास्तिक से महान् आस्तिक बने, डी० ए० वी० कालेज की स्थापना की। जिनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाकर महात्मा हंसराज महात्मा बने, जिनके सन्देश और पथ का दिग्दर्शन हमें आचार्य रामदेव और महात्मा नारायण स्वामी जी ने कराया।

क्या जनता अपनी आंखों के सामने उस महा मानव का यह स्मारक नष्ट होते देख सकेगी? जिसने हमें जीवन भर अन्यायों के विरुद्ध लड़ना और प्रतिकार करना सिखाया क्या हम उसकी स्मृति को कायम न रख सकेंगे? क्या हमारी जनता की सरकार उधर ध्यान न दे सकेगी? ६ सितम्बर सन् ४७ को लाला विश्वम्भर नाथ ने स्मारक को गिराना शुरू किया और अब वह बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट किया जा चुका है। क्या सरकार वहां 'पुरातन-इमारत कानून' का उपयोग न करेगी?

गुरुकुलों में परिवर्तन

गुरुकुल जैसी संस्थाओं के सम्बन्ध में आर्य समाज की नीति में परिवर्तन होना चाहिए। इनकी प्रबन्ध कमेटियों को समाज और प्रांतीय समाज से पृथक् कर देना चाहिए।

गुरुकुलों के शिक्षा क्रम में भी शिल्प और सैनिक शिक्षण के साथ २ ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे जनता से आए दिन चन्दा मांगने की आवश्यकता न रहे। इन संस्थाओं के साथ व्यवसाय शिल्प कृषि आदि की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए। गुरुकुलों में मुख्य गुरुकुल कांगड़ी है। इसके महाविद्यालय विभाग में क्रांतिकारी परिवर्तन यह होना चाहिए कि वेद महा विद्यालय को वैदिक अनुसंधान का केन्द्र बना कर ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मौलिक प्रणाली से वेद भाष्य करने की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। इसके अध्यापकवर्ग, उपाध्यायवर्ग तथा विद्यार्थियों के रहन सहन का प्रबन्ध, शेष महा विद्यालयों से पृथक् होना चाहिए। वर्तमान समय में आयुर्वेद महा विद्यालय आर्ट्स कालेज तथा वेद महाविद्यालय एक ही व्यक्ति के आधीन है। परिणाम यह है कि किसी में भी सन्तोष जनक उन्नति नहीं होती। वेद महा विद्यालय को छोड़ कर शेष महा विद्यालय में शिक्षा शुल्क और भरण पोषण का शुल्क बाहर के अन्य कालेजों की भांति लेना चाहिए। वेद महा विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से शुल्क न लेना चाहिए जहां तक सम्भव हो उन्हें खाने पीने का व्यय भी न देना पड़े। आर्यसमाज तथा जनता से इसके लिए ही चन्दा मांगा जाय।

शेष महाविद्यालयों से पूरी फीस ली जावे उपाध्यायों को बाहर के मुकाबले में अच्छे वेतन दिये जाय। यह समय परिवर्तन का है। इस समय गुरुकुल कांगड़ी के सचालकों को चाहिए कि समय रहते सावधान हो जायें नहीं तो वर्तमान अवस्था रही और हमने कोई स्पष्ट नीति निर्धारित न की तो पीछे हमें पछताना पड़ेगा। —भीमसेन विद्यालंकार

आर्य देशों का संगठन

मुस्लिम नेता विश्व-इस्लामी संगठन करने में लगे हुए हैं, यह बात अब छिपी नहीं है। जहां जहां मुसलमान हैं, वहां वहां मुस्लिम राज्य की स्थापना कराके अखिल इस्लाम सगठन करना उनका ध्येय है। धर्म के आधार पर मुसलमान राजनीतिक सगठन करना चाहते हैं। भारत संघ में भी वे मुस्लिम क्षेत्रों की रचना और उनकी राजनीतिक स्वतन्त्रता चाहते हैं। मुसलमानों के इस भावी आन्दोलन और कार्यक्रम को भारतीय उसी प्रकार का खिलवाड़ न समझें, जैसा कि वे पाकिस्तान के आंदोलन को समझते थे। अन्त में भारतीयों को पाकिस्तान स्वीकार करना पड़ा। यदि भारतीय अभी से सतर्क न होंगे तो उन्हें आगे भी संकटों का सामना करना पड़ेगा। अतएव आवश्यकता इस बात की है कि भारत के सभी राष्ट्रवादी बहुसख्यक सास्कृतिक आधार पर अपना सुदृढ़ सगठन करें और इस्लामी विश्व-सङ्घवादियों की गतिविधि पर दृष्टि रखें। मुसलमान अपनी सख्या वृद्धि में अब भी लगे हुए हैं। परन्तु भारतीय बहुसख्यक निश्चिन्त बैठे हैं मानों अब वे निरापद हो गये। भारतीय बहुसख्यकों को अपनी संस्कृति के प्रचार और प्रसार का यत्न करना चाहिए। भारत के भीतर वह स्वय संगठित हों और भारत के बाहर वे संस्कृति प्रचारार्थ योग्य प्रचारक भेजें।

उत्तरी एशिया पूर्वी और दक्षिण पूर्वी एशिया के समस्त बौद्ध देश भारतीय संस्कृति को मानते हैं। सास्कृतिक आधार पर उनके साथ नये सिरे से सम्बन्ध जोड़ने के लिए उन देशों में आर्य प्रचारक और सास्कृतिक दूत भेजे जाने चाहिए, जो भारत के प्रति प्रेम और सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयत्न करें। ऐसा होने से राजनीतिक सम्बन्ध भी दृढ़ होंगे तथा आत्मीयता में वृद्धि होगी। जब बौद्ध देशों से भी यह उद्घोष होने लगे कि भगवान् बुद्ध की भूमि के निवासी हमारे बन्धु हैं और उनके कष्ट हमारे कष्ट हैं, उनकी समस्या हमारी समस्या है, तब भारत का हित साधन अधिक होगा।

[पृष्ठ ७ का शेष]

यदि आप पसद करें तो हम यह कह सकते हैं कि हमारी आबादी बहुत अधिक है क्यों कि हमारी उत्पादन शक्ति कम है। यदि हम अपने कृषि सम्बन्धी तथा अन्य प्रकार के उत्पादन को बढ़ा लें और यदि हमारी जनसंख्या उत्पादन के कार्य में लग जाय तो हमारी आबादी अधिक नहीं है। हमारी विशाल नद योजनाओं द्वारा भूमि की सिंचाई, बाढ़ के निवारण, तथा मिट्टी को मजबूत करने के अतिरिक्त बहुत अधिक मात्रा में विद्युत शक्ति भी उत्पन्न होगी जिससे देश का औद्योगिक विकास हो सकेगा। यदि आप भारत के मानचित्र को देखें तो आपको उत्तर से उत्तर पूर्व तक हिमालय की पर्वत शृंखला दिखायी देगी। मेरे विचार में संसार में कोई ऐसा अन्य प्रदेश नहीं जहा इतनी अधिक गुप्त घनीभूत शक्ति विद्यमान हो। इस शक्ति के केवल विकास और प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है। इस शक्ति को विकसित करने और प्रयोग करने का हमारा निश्चय है। कुछ हद तक हमने इसका प्रयोग भी किया है। हिमालय में विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थों की सम्पत्ति भरी पड़ी है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि केवल भारत में ही नहीं किन्तु समस्त एशियाई प्रदेश में मानवीय और भौतिक साधनों की प्रचुरता है और इस लिये हमारे सामने उन साधनों को सयुक्त कर के परिणाम प्राप्त करने का प्रश्न है। हमारे पास व्यक्तियों तथा सामान की कमी नहीं। हमारे पास दोनों ही हैं इन दोनों को मिलाने का सबसे सरल उपाय यह है कि हमें उन देशों से मशीन सम्बन्धी सामग्री तथा अनुभवी टैक्निकल व्यक्तियों की कुछ सहायता प्राप्त हो जिनके पास इन दोनों चीजों की अधिकता है। इस सहायता से सारे संसार ही का कल्याण होगा। यदि ऐसा नहीं हो सकता तो स्वभावतः हमें अधिक सीमित रूप में काम करना होगा किन्तु कुछ भी हो हमें इस दिशा में आगे बढ़ना है।

मैं आशा करता हूं कि यह कमीशन इस बात को ध्यान में रखेगा कि हम करोड़ों मनुष्यों के भाग्य पर विचार कर रहे हैं, निर्जीव देश या निर्जीव समूहों पर नहीं। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार से सम्बन्ध रखता है। सम्भव है उस परिवार के बच्चे भूखों मर रहे हों। यह भी सम्भव है कि उनकी शिक्षा न हुई हो और उन्नति एवं वृद्धि का अवसर भी न मिला हो।*

* उटकमंड में एशियायी आर्थिक सम्मेलन में दिये गये उद्घाटन भाषण से

पैलेस्टाइन के विभाजन का विरोध विश्व के सभी मुसलमानों ने किया, परन्तु भारत विभाजन के विरुद्ध भारत के बाहर के देशों से किसी ने उद्घोष नहीं किया, क्योंकि भारतीयों ने उन देशों के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित नहीं किया। यद्यपि सास्कृतिक एकता के आधार पर ऐसा सम्बन्ध स्थापित किया अवश्य जा सकता है। निरन्तर प्रचार करने से ही उद्देश्य की पूर्ति होगी। अतः इस कार्य में विलम्ब न लगाना चाहिए। भारतीय आर्य संस्थाएं योजना बनाकर शीघ्र आरम्भ करें तो पांच वर्ष के परिश्रम से ही सुदृढ़ संगठन हो सकता है। इस प्रकार के सास्कृतिक सगठन और प्रचार के लिए कार्यपद्धति और योजना बनाने के लिए भारत में आर्य-संस्कृति प्रचार-प्रेमी संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाना चाहिए, जो योजना बने उसके अनुसार कार्य किया जाय।

—'लोकमान्य'

आखिर माइकेल से ऐनो का विवाह हो गया।

विविध चित्रावलि

यातायात के लिये उपयोगी इस वायुयान को अभी हाल ही में दिल्ली में प्रदर्शित किया गया है।

ये चार पनडुब्बियां उत्तरी ध्रुव समुद्र के जल-गर्भ में परीक्षार्थ तय्यार हैं।

कोयला नहीं मिलता न। उसी की बचत का यह घरेलू परीक्षण है।

इन पन्द्रह वर्ष के लड़कों ने बिना कारीगरों की सहायता के मकान बना लेते हैं।

धूप छाँह

(पृष्ठ ८ का शेष)

'वह तो भई सन्यासी हैं, हम तो भाई कुछ भी नहीं। लो हम ये सोने चले।' और उठकर चल दी।

षोडशी उसकी बातें भरती रही। जब सब ऊंघने लगे तो वह चुपके से उठकर मुन्नू की अलमारी से दवात कलम उठा लाई और प्रेम उंडेलने लगी।

× × ×

चार दिन बाद पत्रोत्तर मिला। पत्र क्या था, तीर था। षोडशी पर प्रेम की ओट में छुरी चलाई गई थी। एकांत में बैठ कर चुपचाप खूब रोई। पढ़ पढ़ कर रोती रही वह रतन की याद में विह्वल हो उठी। खूब सोच-सोच कर जवाब लिखा। रतन के एक एक वाक्य को ब्रह्म वाक्य मानकर और हर एक भाव को सच्चा प्रेम उद्‌गार मानकर उसने खूब रच रच कर पत्रोत्तर दिया और प्रेम लगभग दस डिगरी बढ़ा ही दिया। उसने लिखा 'मुझे ले जाओ नहीं मर जाऊंगी, मुझे तुम्हारे बिना एक एक पल भारी है।'

× × ×

चौथे दिन तार आया। और छठे दिन रतन बाबू लेने आ गये। सब क्रुद्ध थे। कोई कुछ न कह सका। मा ने आंसू भर कर कहा—'कैसा अंधेर करते हो भैया, कुछ दिन तो रह लेने देते।' रतन हंसता रहा। षोडशी रोती रही। मौसी खूब रोई। सब बहिनों ने भी खूब साथ दिया।

फिर चेतन जब बीजा के साथ घूम कर लौटा तो 'खूब बनती हो बिट्टो।' वहां खिलती हो ले जाओ और यहां रोती हो।' षोडशी बेचारी कट सी गई और बोली—'[illegible] हमें नहीं भाती।' फिर रो पड़ी।

× × ×

विदा का समय आया। रतन बाबू पहिले से ही स्टेशन चले गये। षोडशी सब से लिपट लिपट कर खूब रोई। कभी सहेलियों, कभी मां और कभी मामी से। उसने छोटे भाई बहिनों को गोद में लेकर प्यार किया। बच्चे से लगा कर बूढ़े तक सभी रो रहे थे। वह स्टेशन तक रोती रही। ट्रेन पर भी आंसू बहते रहे। मायके के सुख, और ससुराल के बंधन होड़ लगाते और वह फफक कर रो उठती। ट्रेन पर भी आंसू चलते रहे। भैया समझाते रहे—फिर ले आयेंगे न रो बिट्टो क्या करें? हमारा कौन बस है? न रो बेटा! अब की हम चार महीने का वादा करके आयेंगे।' ट्रेन ने सीटी दी और रतन चढ़ आया। भैया उतर गये। षोडशी ने कुछ थककर, कुछ रतन के भय से आंसू पोंछ लिये।

अरब लीग किसके हाथ खेल कर रही है?

(पृष्ठ ११ का शेष)

साम्राज्यवादियों के इन आपसी झगड़ों का फायदा उठा कर अरब देशों में उनकी ताकत कम की जाय। अरब नेता तो सिर्फ यह चाहते थे कि ज्यादा से ज्यादा उनका अपना भला हो जाय। कहते हैं कि आजम पाशा का अमरीका और ब्रिटेन की कई कम्पनियों से सम्बन्ध है। वह उनके साथ बिगाड़ नहीं चाहता। वह तो सिर्फ मोटी मुर्गी चाहता है। बेशक अमरीकन साम्राज्यवाद ही ऐसा है, लेकिन पूर्व के देशों में अभी भी ब्रिटेन का पाया मजबूत है। इसलिए लीग अपने पुराने मालिक को नाराज किये बिना नये से सांठ गांठ कर रही है।

यह पैंतरेबाजी फिलस्तीन के मसले में बिलकुल साफ सामने आ जाती है (वहां अमरीकन तेल धन कुबेर अगुआ हैं)। उत्तरी अफ्रीका के अरब देशों में भी यही पैंतराबाजी चली जा रही है। अखबारों के समाचारों से मालूम होता है कि अमरीकन उत्तरी अफ्रीका के फ्रांसीसी उपनिवेशों के राष्ट्रवादियों को बढ़ावा दे रहे हैं कि वे "स्वाधीनता" की मांग जोरों से करें। दूसरी तरफ छिपे तौर पर उन्होंने मिश्र से वादा किया है कि फ्रांसीसी उपनिवेश तुम को दिलायेंगे। लीबिया में भी अमरीकन दोहरी चाल चल रहे हैं। एक तरफ लीबिया के शेखों की 'स्वाधीनता' की मांग का समर्थन कर रहे हैं। दूसरी तरफ मिश्र की इस मांग का समर्थन कर रहे हैं कि लीबिया मिश्र के साथ रहे। उधर उन्होंने ब्रिटेन से जो इस समय लीबिया का शासक है, हवाई अड्डे लिये हैं। साफ नजर आता है कि अमरीकन इस देश को [illegible] बनाना चाहते हैं।

साम्राज्यवादियों की चालों का भंडा फोड़ करने के बदले, उनकी [illegible] और योजनाओं का पर्दा फाश करने के बदले, साम्राज्यवादियों के इस झगड़े से लाभ उठाने के बदले अरब लीग अरब जनता का ध्यान फिलस्तीन की तरफ हटा रही है।

और यही साम्राज्यवादी चाहते हैं। क्योंकि ब्रिटेन और अमरीका में चाहे जितना झगड़ा हो, वे जनता की स्वाधीनता को दबाने में एक हैं और इस काम में अरब लीग उनकी सहायक है।

उसने देखा रतन उसकी ओर देख रहा था प्रेम भरी दृष्टि से। वह भी मुस्कराने का प्रयत्न करने लगी। [illegible] उसके निकट खिसक आया और बोला—कितनी अच्छी हो। वह शरमा कर हंसी। और धीरे से रतन का हाथ दबा दिया।

मिल गया भगवान

[जगदीशलाल 'प्रेम']

ल गया भगवान,
पू को बुला के।
रती के लाल को,
रती से उठा के॥

हम सोच रहे थे कभी—
भाई भाई से मिलेंगे।
हिन्द की इस नगरी में,
कभी फूल खिलेंगे।

थी खबर तुम को—
यैगो दया भी।
होगे किसी दिन,
दुनिया को मिटा के।

क्या मिल गया भगवान,
तुम्हें बापू को बुला के।

स्वान ही दुश्मन नहीं,
मन है बहान भी।
आफत के मारों को,
हीं चैन कहीं भी।
तुम्हारे आने से पहले,
हम मर जाते तो अच्छा।
छुट गये हम खुद,
तुम को लुटा के।

क्या मिल गया भगवान,
तुम्हें बापू को बुला के।

मालूम न था खाक में,
मिल जायेंगे एक दिन।
खुद अपने ही हाथों से,
खो बैठेंगे एक दिन।

तुम से तो यह उम्मीद—
न थी जग के खिवैया।
बापू को बुला लोगे,
आजादी दिला के।

क्या मिल गया भगवान,
तुम्हें बापू को बुला के।
हम सब को रुला के,
सूनी नगरी को बना के।

इस धरती के लाल को,
इस धरती से उठा के।
क्या मिल गया भगवान,
तुम्हें बापू को बुला के।

"स्वदेश"

[बलदेव शर्मा 'विशारद']

तुम छुटे बच्चो क्या जानो?
तुम में स्वदेश का प्रेम नहीं,
तुम में उसका वह रक्त नहीं,
अपनी स्वदेश की भूमि पर,
न्यौछावर होना क्या जानो।
तुम छोटे बच्चो क्या जानो?
तुम में उसके प्रति भक्ति नहीं,
तुम में स्वदेश की चाह नहीं,
अवसर आने पर निज स्वदेश पर,
मरना कटना क्या जानो,
तुम छोटे बच्चो क्या जानो?
ये छोटे त्यागो यह भाषा,
करती तुम को दूषित ऐसा,
उसके उन सुन्दर पंखों पर,
तुम तीर चलाना क्या जानो,
तुम छोटे बच्चो क्या जानो?
अपने स्वदेश का गान करो,
बापू का उर में ध्यान धरो,
सब काम करो उनके सदृश,
उनकी स्वदेश की सेवा को,
तुम छोटे बच्चो क्या जानो?

पहेलियां

स्वामी की आंखों के आगे,
पूरा काम बजाता हूं।
आंखों के ज्यों ओट हुआ,
चट बाहर घुस जाता हूं॥
अंधकार के होते ही मैं,
काम नहीं कुछ करता हूं।
ऐसा नौकर हूं विचित्र,
न खाता हूं न पीता हूं॥
[दीपक]

पैर कटे तो पुत्र बनेगा,
कमर कटे तो बने शहर।
इसने ही था कृष्ण चन्द्र को,
दूध पिलाया मिला जहर॥
[पूतना]

आदि काटते लज्जा आवे,
मध्य काटते वन बन जावे।
अन्त काटते सबको लाजे,
जो बतलावे मीठा चाखे॥
[बलम]

मध्य काटके कम हो जावे,
अंत काटके समय बतावे।
तीन अक्षर की ये कहलावे,
लिखे पढ़ों के आवे काम।
झट बतलाओ मिले इनाम॥
[कलम]

जरा हँसिये

पिता—पुत्र, यदि तुम मास्टर के सामने एक बयान दे दिया करो तो तुम्हें उस पर विश्वास करना चाहिये उसे फिर नहीं बदलना चाहिये। जैसे यदि वे पूछें कि १+१ तुम कहना २ उनके धमकाने पर बदला मत करो।

मास्टर—मोहन १०+१० कितने हुये।

मोहन—२२ हुये और कितने हुये।

किशोर से

[श्री सोमदेव शर्मा 'मधुर']

मम साथी
किशोर!
हमको चलना
कर्त्तव्य पथ पर,
चाहे धारा धर
वर्षा बरसे,
चाहे आंधी आये,
चाहे तूफान उठे,
हमको तो बस
कर्त्तव्य पथ पर
चलना है।
अपने पथ में
जो भारी रोड़ा
आवेगा,
हम उसे
ठोकर मार
गिरा देंगे।
जो जन हम को,
भटकायेगा,
उसको हम,
मार भगा देंगे।
कुछ भी हो न,
बस हम को तो,
कर्त्तव्य पथ पर,
बढ़ चलना है।
कर्त्तव्य पथ पै ही
चलने से
यह जीवन
सफल बनेगा।
आ हम तो
कर्तव्य पथ पर
बढ़े चलें
बढ़े चले।

बालकों की सरकार

अमेरिका में ओहियो के जानेरिमले नगर के अधिकारियों ने बालकों में नागरिक शासन-व्यवस्था की अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है। बालक वोट डाल कर म्युनिसिपल उम्मीदवार अपने साथी बालकों में से चुनेंगे और नगर अधिकारी इन निर्वाचित बालक उम्मीदवारों को प्रति वर्ष एक दिन के लिए नगर का शासनभार सौंप दिया करेंगे।

उक्त निर्णय के अनुसार अभी हाल में एक दिन के एक निर्वाचित ... मेयर बन गया। एक १६ वर्षीय ने पुलिस का उत्तरदायित्व लिया और एक बालक ने आग बुझाने की व्यवस्था का संचालन अति उत्तमता से किया।

सूचना

सोमदेव शर्मा 'मधुर' सूचित करते हैं कि किशनगढ़ (जयपुर राज्य) से लिखित मासिक पत्र 'भारत' और 'भारत' का नववर्षांक प्र... है। बालबन्धुओं की ...

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियां का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति-स्वीकार किया जायगा। — सम्पादक

भारत की भाषा — ले०—स्वामी नाथ शर्मा। प्रकाशक — नालन्द प्रकाशन, चननूर बिल्डिंग्स, सरफीरोजशाह मेहता रोड फोर्ट बम्बई !

प्रस्तुत पुस्तक का विषय नाम से स्पष्ट है। इसमें आज के नेताओं को जिनके कारण ही स्वयं सिद्ध राष्ट्र भाषा समस्या भी बहुत जटिल हो गई है, यह समझाने का प्रयत्न किया गया है कि भारत की राष्ट्र भाषा केवल हिन्दी नागरी लिपि में लिखी गई संस्कृतनिष्ठ हिन्दी हो सकती है। इस सम्बन्ध में विद्वान लेखक ने प्रायः सभी युक्तियों का संग्रह कर दिया है। हमें आशा है कि भाषा समस्या में रुचि रखने वाले इस पुस्तिका को उपयोगी पावेंगे।

नालन्द प्रकाशन ने पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित किया है, क्योंकि दुर्भाग्य से हमारे राष्ट्रीय नेता आज भी हिन्दी पुस्तकों की अपेक्षा अंग्रेजी साहित्य के अधिक प्रेमी हैं। नागरी लिपि व हिन्दी के क्षेत्रों के मानचित्र बहुत उपयोगी हैं।

विजय — (साप्ताहिक पत्र) — संपादक—श्री सत्यकाम विद्यालंकार—प्रकाशक — तेज लिमिटेड, श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली। मूल्य ।) एक प्रति।

दैनिक अर्जुन के भूतपूर्व सम्पादक श्री सत्यकाम विद्यालंकार के सम्पादन में यह साप्ताहिक पिछले दो मास से प्रकाशित होने लगा है। पत्र का गेट अप अच्छा है। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समस्याओं पर प्रायः प्रत्येक अंक में दो एक पठनीय लेख रहते हैं, किन्तु इसकी विशेषता सुन्दर कहानी, नारी व गृहस्थ जीवन बढ़िया मनोरंजन, अद्भुत जानकारी, गेट अप, छपाई तथा चित्रावलि आदि में है।

हमें निश्चय है कि यह पत्र सर्वसाधारण जनता में शीघ्र ही लोकप्रिय हो जायगा।

उर्दू 'तेज' के संचालक श्री देशबन्धु राष्ट्रभाषा हिन्दी के क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं, इसके लिए वे भी हिन्दी जगत् के धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है कि [illegible] ना उर्दू तेज भी हिन्दी में प्रका- [illegible] के हिन्दी के प्रति अपने कर्तव्य [illegible] में किसी से पीछे न रहेंगे।

पूर्णाहुति — लेखक और प्रकाशक — श्री वी. मुकर्जी गुंजन। १० रतनलाल बिल्डिंग्स, रामनगर नई दिल्ली। १)

[illegible] पुस्तक लेखक का प्रथम उप- [illegible] इसकी कथा का आरम्भ ऊर्मि और विजय के प्रेम से प्रारम्भ होता है। ऊर्मि उदात्त विचारों की एक संभ्रान्त कन्या है। वह विजय के साथ आजन्म रहने का निश्चय करती है। विजय ऐसा वचन देकर भी सामाजिक बन्धनों के कारण या अपनी दुर्बलता से विवाह करने से इंकार कर देता है। जब उसका मित्र मोती उसे ऊर्मि के असाधारण कष्ट का स्मरण करा कर्तव्य पालन के लिए कहता है, तो वह अपनी प्रियतमा ऊर्मि को मोती के साथ ही विवाह करने का परामर्श देता है। ऊर्मि का भाभी या बहन के रूप में देखने वाला आदर्शवादी मोती भी इस प्रस्ताव को सुनकर चकित हो जाता है। इसी उलझन के साथ उपन्यास का कथानक प्रारम्भ होता है।

कथानक के मध्य में आ जाता है कलकत्ता और नोआखाली का हत्याकांड, जिसमें साम्प्रदायिक मुस्लिमलीगियों ने बर्बर अत्याचार किये। इसी प्रवाह में ऊर्मि गुण्डों के द्वारा अपहृत की गई, उसके सतीत्व के साथ खिलवाड़ किया गया, कितनी बार गुण्डों के हाथ बिकी और अन्त में ईराक पहुंची। इधर विजय अपनी भूल समझता है और सेवा के कार्य में जुट जाता है, तभी उसे ऊर्मि की करुण कथा और आत्महत्या का समाचार मिलता है और यही पूर्णाहुति उपन्यास के नामकरण का कारण है।

उपन्यास में अनेक प्रसंग बहुत अच्छे हैं। मोती, ऊर्मि के विचार सवर्ण वैवाहिक समस्या पर प्रकाश डालते हैं। किन्तु सेवा और आश्रम की चर्चा के लम्बे उपदेश कला पर हावी हो जाते हैं। देश की तत्कालीन स्थिति का चित्रण अच्छा हो गया है।

—कृष्ण

स्वराज्य दर्शन — लेखक — श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित, प्रकाशक — सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड देहली। मूल्य १)

साठ साल के अनवरत संघर्ष के बाद जनता ने यद्यपि स्वराज्य प्राप्त कर लिया है, परन्तु यह स्वराज्य अभी तक केवल विदेशियों को बाहर करने तक ही सीमित है। अभी तक सुराज्य की स्थापना नहीं हुई। देश के मनीषियों ने इससे पूर्व कदाचित् इस रूप में सोचा ही नहीं था। नेताओं की सारी शक्ति विदेशी सत्ता को निकालने में ही लगी रही। किन आदर्शों तथा किन राजनीतिक सिद्धांतों के अनुसार हमें अपने देश का भविष्य-निर्माण करना है — यह प्रश्न इस समय जनता के सामने उपस्थित है। ऐसे अवसर पर इस पुस्तक का प्रकाशन अत्यन्त सामयिक है।

पुस्तक में लेखक द्वारा स्वनिर्मित वैदिक सिद्धांतानुसारी उनचास सूत्र दिये गये हैं, और फिर [illegible] ने स्वयं ही उनकी व्याख्या की है। व्याख्या [illegible] स्थान पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ [illegible] उद्धरण देकर विचारधारा को [illegible] किया गया है। प्राचीन होते [illegible] यह ढंग नया है।

श्री घनश्यामसिंह गुप्त स्पी- [illegible] पी० अरुणजी ने भूमिका में [illegible] है — "राजनैतिक उन्नति डालने वाले महर्षि दयानन्द ये लोगों को विदित नहीं है" — [illegible] पूरे सहमत हैं और आज तक के सोचने वाले युग में लेखक के [illegible] को सोचने के प्रयत्न का स्वागत है। न केवल राजनीति के विद्यार्थि[illegible] अपितु राजनीतिक नेताओं [illegible] इस पुस्तक पर्याप्त विचारोत्तेजक [illegible] में मिलेगी। — [illegible]

'मां ! अब बापू कब बोलेंगे ?'

—एक कविता का शीर्षक

प्रलय के बाद।

× × ×

भारत के बंटवारे का इतिहास पाकिस्तान सरकार लिखेगी।

—पाकिस्तान सरकार

भूमिका का पूर्वार्ध चर्चिल, और उत्तरार्ध शायद माउण्टबेटन लिखेंगे।

× × ×

भारत पाकिस्तान-एकता के सयोजक डा० खान यूग्प बनेंगे। —एक शीर्षक

एकता की ट्रेनिंग यूरूप के सिवाय और मिलती भी कहीं नहीं। आजकल तो कई नये नये स्कूल भी और खुल गये हैं।

× × ×

पाकिस्तान के एक पुराने लीगी ने जिन्ना का तुलादान करने का निश्चय किया है।

बेचारे के बुरे गिरह टालने के लिये तुलादान की तदबीर है तो अच्छी परन्तु अधिक अच्छी तब हो जब दान की दक्षिणा काश्मीर के काक को और नाई का नेग रिजवी को दिया जाय।

× × ×

लायक अली ने दो घंटे नेहरू जी से मुलाकात की।

—सरकारी विज्ञप्ति

लायक अली दो घंटे मुलाकात करें या १० घंटे। बेकार। इस समस्या को यदि सुलझाना ही हो तो किसी नालायक अली को भेजो।

× × ×

भारत सरकार के एक डिस्ट्रीक्ट आफिसर को अमानत में खयानत करने पर गिरफ्तार कर लिया गया।

बुरा किया, यह कौन सा ऐसा गुनाह था जो, गरीब ने जो चार पैसे काठ-कबाड़ बेचकर कमा लिये। मियां आजकल तो इस बहती गंगा में सरकार के ६० फी सदी वफादार भी हाथ धो रहे हैं।

× × ×

एक मुस्लिम महिला के प्रेम में पड़कर पालीवाल जी ने स्तीफा दिया है।

— 'नव जीवन'

अंग्रेजों को भी अभी पता चलेगा कि हिन्दुस्तान में विंडसर के भी गुरू हैं। लेकिन किसी ज्योतिषी ने यह नहीं बताया कि इस साल अधिकांश मन्त्रियों की ही जन्म कुण्डली में शादी का योग है या यह पिछले वायदों के सौदों का भुगतान है।

× × ×

रुस्तान ईशाक की उस चिट्ठी का हैदराबाद सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया, जिसमें उन्होंने हैदराबाद की सेना में शामिल होने की प्रार्थना की थी।

मियां ईशाक ने शायद यह नहीं लिखा था कि वह औरतों की फौज में भर्ती होना चाहते हैं या मर्दों की।

× × ×

हमें हवाई जहाज और तोपखाना नहीं मिला तो हथियार डाल देंगे

—कबायली नेता

जरा ठहरो—भेजे हैं कुम्हार के यहां बनने के लिये।

× × ×

विदेशी पूंजी लेने में कोई खतरा नहीं।

— ग्रेडी

खतरा कैसा। पैसे लिये जाओ, सूद दिये जाओ। रहन रखी हुई अमानत तुम्हारी, ब्याज न पटा तो हमारी। क्यों है न यही बात !

× × ×

युद्ध से बचने के लिये शान्ति आवश्यक है।

— नेहरू जी

और युद्ध में फंसने के लिये ?

× × ×

हिन्दुस्तान में पानीपत का दूसरा युद्ध लड़ेंगे और दिल्ली के किले पर आसफजाही झण्डा फहरायेंगे।

— रिजवी

यदि ऐन मौके पर मुर्गे ने बांग देकर नींद हराम न कर दी होती तो मियां अपनी मनहूस आकृति को दिल्ली के तख्त पर भी बैठा देख लेते !

———

पहेली सं० ३५ की संकेतमाला

बायें से दायें

१ राजधानी का प्रमुख समाचार पत्र।
३ दुकानदार के लिए बहुत लाभकारी है।
५ अच्छे पर नाटक की सफलता का बहुत आधार होता है।
७ अतिथि को देना हिन्दुस्तान का खास रिवाज है।
८ दिन को यह निस्तेज होता है।
१० प्रतिष्ठा।
११ यह न हो तो पेट के लाले पड़ जाते हैं।
१२ श्रवणेन्द्रिय।
१३ इस उमर में भारी काम की आशा नहीं की जा सकती।
१४ गरमी के दिनों में लोग देर तक इस पर पड़े रहते हैं।
१६ बड़ा व गोल तकिया।
१७ यह बिगड़ जाय तो संगीत का मजा नहीं रहता।
१८ डरपोक आदमी को इस जानवर की उपमा दी जाती है।
२० खरगोश।
२१ उमर।
२३ वैद्यों के विशेष उपयोग की वस्तु है।
२४ प्राय: पदार्थ आग पर रखने से हो जाते हैं।
२५ इससे काम कर देने से गाहक खुश हो जाते हैं।

ऊपर से नीचे

१ बहादुरी।
२ दवाई का ठीक न हो तो उसका उलटा प्रभाव हो सकता है।
३ "शासक" की उलट फेर।
४ परमात्मा।
६ "नियम" के गड़बड़ी से बना है।
९ वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण अङ्ग है।
१० इस तालाब में राजहंस रहते हैं।
१२ आलसी आदमी इससे बचता है।
१३ सादापन।
१५ यहां पैसे बनते हैं।
१७ यह पद बहुत ऊंचा होता है।
१९ खतरनाक रोग अच्छे वैद्य की से ठीक हो सकता है।
२० खरबूजे की तरह का एक स्वादिष्ट फल
२२ मृत्यु का देवता।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रमुख हिन्दूमहासभाइयों को सजा

अखिल भारतीय हिंदू महासभा के सेक्रेटरी श्री वी० जी० देशपाण्डे और दिल्ली महासभा के प्रधान प्रो० रामसिंह को ६ ६ मास तथा युक्तप्रान्तीय हिन्दू महासभा के प्रधान महन्त दिग्विजयनाथ व ओम् बाबा को चार चार मास सपरिश्रम कारावास की सजा देदी गई है। इन पर जिला मजिस्ट्रेट के आदेश का उल्लंघन करके नई दिल्ली में सभा करने का अभियोग था। पंजाब हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रायबहादुर सेठ लद्दनदास को बरी कर दिया गया है।

[पृष्ठ ६ का शेष]

प्रमिक अब भ्रम के बाहर निकल पड़ा है। उसने अब रेल देख ली है। टेलीफोन से वह बातें कर लेता है। रेडियो का रहस्य अब उसके सामने खुल गया है। उसको अब अज्ञान तिमिरावृत चक्षुओं को उन्मीलित करने वाले सद्गुरू मिलने लगे हैं।

अब उसकी व्यवसायात्मिका बुद्धि जाग्रत होने लगी है। उसके मस्तिष्क में अब अच्छे एवं बुरे निर्णय की प्रज्ञा जग उठी है। अतएव निर्देशकों को भी चाहिये कि समय की गति को पहिचान कर अपने कर्त्तव्य का निर्णय करें। नग्न नाच बहुत हो चुका। व्यक्ति का चरित्र किस सीमा तक गिर चुका इसको बतलाने की आवश्यकता नहीं। चतुर्मुखी पतन की काली करतूतें नित्य ही समाचार पत्र देते हैं, और निश्चय ही सिने चित्रों का उन काली करतूतों के सृजन में बहुत बड़ा हाथ है।

सूचना

३१ मई के अंक में पृष्ठ २४ पर 'वेद भाष्यकार भट्टाचार्य' रचना के नीचे 'वेद संस्थान अजमेर द्वारा प्रकाशित कविता से' इतना और छपना चाहिये था, जो भूल से रह गया है। कृपया पाठक नोट कर लें।

---

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३५] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) **न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)**

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों के शुल्क भेजा जा सकता है परन्तु प्रत्येक कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि यथार्थ बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १२ जुलाई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ७ जुलाई १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही

...४८ ई०

है।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३५, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा

प्रकाश गाँगड़ी.

भारत के दो गवर्नर जनरल

प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल
श्री राजगोपालाचार्य चक्रवर्ती

अन्तिम अंग्रेज गवर्नर जनरल
लार्ड माउण्टबेटन

वीर अर्जुन

साप्ताहिक का चन्दा

साल का	८)
मास का	४)
प्रति का	=)

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ६ आषाढ़ सम्वत् २००५

हैदराबाद की विकट समस्या

हमने गत सप्ताह हैदराबाद वार्ता पर जो विचार प्रकट किये थे, उनमें आज [illegible] परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं [illegible] । इसके विपरीत हमारा यह [illegible] और भी पुष्ट हो गया है कि हैदराबाद का साधारण सा निज़ाम केवल अपने बलबूते पर भारत जैसे महान् देश से मुकाबला करने का साहस नहीं कर सकता । इस समस्त षड्यन्त्र के पीछे ब्रिटेन और पाकिस्तान आदि किसी विदेशी शक्ति का हाथ निश्चित रूप से अवश्य है । यह बात कम रहस्यपूर्ण नहीं है कि हैदराबाद के सलाहकार जनरल मांकटन पिछले महीनों में कई बार कराची होते हुए लन्दन गये और कराची होते हुए हैदराबाद आये । हैदराबाद का शिष्टमण्डल मि० जिन्ना से भी मिलने गया था । पिछले दिनों अंग्रेज़ सरकार के प्रधानमन्त्री मि० एटली के इन्कार के बावजूद अनुदार दल का हैदराबाद-समर्थन भी रहस्य से खाली नहीं है । एक अनुदारदली राजनीतिज्ञ ने हैदराबाद को ब्रिटिश कामनवेल्थ का एक सदस्य मान लेने की सलाह दी थी, तो दूसरे अनुदार दली पत्र ने उसे अपना संरक्षित [illegible] बनाने का विचार प्रकट किया है । [illegible]बाद व ब्रिटेन के अनेक आर्थिक समझौतों का संकेत हम पिछले अङ्क में कर चुके हैं । आज से करीब एक वर्ष पूर्व ब्रिटिश योजना का विरोध करते हुए हमने स्पष्ट लिखा था कि रियासतों को, जो सदा व्यवहारतः भारत सरकार के मातहत रही हैं, स्वतन्त्र सत्ता देना गम्भीर खतरे से खाली नहीं है । उसी अवसर पर हमने इसकी ओर भी पाठकों का ध्यान खींचा था कि आज अंग्रेज़ नई दिल्ली में बैठा हुआ भारत के जन-जन के साथ जो खिलवाड़ कर रहा है, वही कदाचित वह नई दिल्ली से कुछ सौ मील दूर पाकिस्तान या रियासतों में बैठ कर [illegible] । आज पाकिस्तान या हैदरा[illegible] में जो कुछ हो रहा है, उससे हमारी [illegible] का समर्थन ही होता है ।

भारत सरकार के नेता भले ही यह स्पष्ट इतने नग्न रूप से न कहें, तथापि वे इसे न समझते हों, ऐसा नहीं कहा जा सकता । पं० जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि भारत सरकार हैदराबाद में विदेशी शक्तियों का अड्डा बनना किसी तरह सहन न करेगी । यह विदेशी शक्तियां कौन हैं, यह पं० नेहरू द्वारा स्पष्ट न होते हुए भी हम समझ सकते हैं । सब मुस्लिम राष्ट्रों के मध्य में ट्रांसजोर्डन से समझौता कर वहां अपनी सैनिक स्थिति संगठित करने तथा अरब लीग की आड़ में अपना षड्यन्त्र करने वाले अंग्रेज़ों की चाल से कौन अपरिचित है ?

प्रश्न यह है कि अब क्या होगा और हमें क्या करना चाहिए । रज़ाकार जिस तरह उत्पात कर रहे हैं और पाकिस्तान का समर्थन जिस तरह उन्हें मिल रहा है, उसे देखते हुए कुछ भी कभी सम्भव है । यह निश्चित है कि अदूरदर्शी रज़ाकार और निज़ाम ऐसे संयम से नहीं रह सकते, जिससे सदा शान्ति बनी रहे । पाकिस्तान व ब्रिटेन से अवाञ्छनीय सम्बन्ध, सीमावर्ती भारतीय प्रदेश तथा रियासती हिन्दुओं पर अत्याचार किसी दिन भी उग्र रूप धारण कर सकते हैं और भारत सरकार को भी कठोर कदम उठाने पड़ सकते हैं । तब विकट स्थिति पैदा हो सकती है ।

भारत सरकार के प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने अपने वक्तव्य में यह स्पष्ट किया है कि वे अब और किसी भी तरह न झुकेंगे और न निज़ाम हैदराबाद की ऐसी स्वतन्त्र सत्ता को सहन करेंगे, जिससे भारतवर्ष को किसी अहित की सम्भावना हो । उन्होंने अत्यन्त दृढ़ता से कहा है कि यदि वहां स्थिति बिगड़ती है, तो उसका परिणाम भी, जो निज़ाम के हक में कभी अच्छा नहीं होगा, भुगतने के लिए उसे तैयार रहना चाहिए । यह दृढ़ता आवश्यक है, परन्तु स्थिति वस्तुतः इससे भी अधिक विकट है । पं० नेहरू ने आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने की भी धमकी दी है । लेकिन हमारे द्वारा लगाये गये आर्थिक प्रतिबन्धों का सब से प्रथम और भीषण दुष्परिणाम हैदराबादवासी हिन्दुओं को भुगतना पड़ेगा । रियासत के मध्यवर्ती भारत सरकार के दो छोटे छोटे प्रदेशों पर इसका प्रभाव पड़ भी रहा है । इसलिए भारत सरकार को दूरदर्शितापूर्वक, किन्तु अत्यन्त दृढ़तापूर्वक चलना होगा । जितना वह अधिक दृढ़ रहेगी, उतना ही कम ब्रिटेन व पाकिस्तान का सहयोग हैदराबाद को प्राप्त होगा और उतना ही वहां की स्थानीय जनता का बल बढ़ेगा । हैदराबाद से सीधे तौर पर उलझने की अपेक्षा वहां की जनता को ही अधिक जागरूक और समर्थ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि वहां वास्तविक उत्तरदायी शासन स्थापित हो सके और उसी सरकार को स्वीकार करना चाहिये । हैदराबाद की प्रत्येक चाल का जवाब ऐसी भाषा में दिया जाए, जिसे वहां के उपद्रवी रज़ाकार समझ सकें । आर्थिक प्रतिबन्ध या सैनिक तैयारियों का प्रयोग बहुत विवेक से किया जाय । सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु यह है कि स्वयं भारतीय संघ में हम सतर्क रहें । यहां कोई भी व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पांचवें कालम का काम न कर सके । पिछले दिनों ऐसे अनेक उदाहरण मिले हैं, जिनमें कुछ लोग पाकिस्तान को सहायता देने का षड्यन्त्र करते पाये गये । कासिम रज़वी को भारत के ४॥ करोड़ मुसलमानों का बहुत भरोसा है और शायद उससे भी अधिक विश्वास अपने पैसे का हो । इस लिए इधर थोड़ी भी शिथिलता हमारे लिए बहुत हानिकारक होगी । हैदराबाद में आने जाने वाले अरबों, पठानों आदि पर भी कठोर नियन्त्रण करना होगा । हैदराबाद नीति का मूल मन्त्र हमारा यह होना चाहिए—दृढ़ता, किसी भी शरारत का तत्क्षण प्रतीकार, भारत में समाविष्ट पांचवें कालम के लिए सतर्कता, आर्थिक प्रतिबन्ध, स्थानीय जनता के स्वातन्त्र्य आन्दोलन से पूर्ण सहानुभूति तथा विदेशी शक्तियों की गतिविधि पर कठोर दृष्टि ।

———

अभिनन्दन

आज श्री राजगोपालाचार्य स्वतन्त्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल पद पर नियुक्त होकर दिल्ली में प्रवेश कर रहे हैं । इस समय हम समस्त अर्जुन परिवार की ओर से उनका अभिनन्दन करते हैं । वे परखे हुए देशभक्त तथा राजनीतिज्ञ हैं । उनकी योग्यता तथा प्रतिभा असंदिग्ध है ।

आज देश की परिस्थितियां अत्यन्त विकट हैं । काश्मीर व पाकिस्तान के साथ साथ हैदराबाद की समस्या और भी अधिक उग्ररूप के साथ आ रही है । शरणार्थियों की गम्भीर समस्या अभी तक समाधान नहीं पा सकी है, अन्न वस्त्र संकट अभी तक मुंह बाये खड़ा है, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट तथा कुछ प्रतिगामी शक्तियां अन्तर्विग्रह के लिए बराबर खतरा बन रही हैं । इन सब समस्याओं व विषम परिस्थितियों का, जिनमें से अधिकांश विदेशी शासन की देन हैं, राजाजी को सामना करना है । किन्तु हमें विश्वास करना चाहिए कि उनकी प्रतिभा, व व्यवहारकुशलता अपने योग्य साथियों का सहयोग पाकर निश्चित रूपेण स्थिति को सुलझने में सफल होगी । एक बार फिर हम राजाजी का अभिनन्दन करते हैं ।

———

चतुर गवर्नर जनरल

लार्ड मौंटबेटन जा रहे हैं । शायद भारतीय इतिहास में कोई भी अंग्रेज़ गवर्नर जनरल इतना लोकप्रिय नहीं हुआ, जितने लार्ड मौंटबेटन । यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के जो महारथी पिछली चौथाई सदी से ब्रिटिश सरकार से तीव्र संघर्ष कर रहे थे और जो अंग्रेज़ सरकार की निरन्तर विश्वासघाती नीति के कारण अंग्रेज़ मात्र को घोर संदेह व शंका की दृष्टि से देखने लगे थे, प्रायः वे सभी नेता लार्ड माउंटबेटन के मित्र, साथी और प्रशंसक बन गये । इसमें संदेह नहीं कि व्यवहार कुशलता, कार्यक्षमता, प्रसन्नवदनता, मधुर वाणी और सबसे बढ़कर अपने आकर्षक तथा प्रभावकारी व्यक्तित्व के कारण लार्ड मौंटबेटन बहुत लोकप्रिय हो गये । इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने भारतीय नेताओं की सबसे अधिक प्रशंसा प्राप्त की है और इतनी शानदार विदाई के दृश्य देखे हैं ।

लार्ड मौंटबेटन ब्रिटेन के अत्यन्त चतुर राजनीतिज्ञों में से हैं । भारतवर्ष की राजनैतिक स्थिति जब विषमतम हो गई और लार्ड वैवल उसे सम्भाल नहीं सके, तब ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भेजा । अन्तःकालीन सरकार के प्रारम्भिक काल में जो कुछ हुआ, उसके कारण लार्ड वैवल बहुत बदनाम हो गये, किन्तु अपने समय में वैसा या उससे भी कुछ अधिक क्रूर होने पर लार्ड माउंटबेटन लोकप्रिय बने रहे, यही उनकी राजनीतिज्ञता या व्यवहार कुशलता का प्रमाण है । पंजाब के हत्याकाण्ड बढ़ते गये, पाकिस्तान का निर्माण हुआ और सीमा प्रान्त व पंजाब के गवर्नर लार्ड मौंटबेटन के सीधे अधीनस्थ होने पर भी बर्बर नरमेध कराने से रोके नहीं जा सके । रैडक्लिफ के विभाजननिर्णय के लिए नियत सीमा प्रदेश के अंग्रेज़ सेनापति रीस के समय जो नरमेध हुआ, उसे लार्ड मौंटबेटन रोकने में सफल नहीं हो सके और समस्त भारत ने उन्हीं के कार्यकाल में देश विभाजन की सब से कड़वी गोली तक पचाई । यह सब जिसके शासनकाल में हुआ, वह आज भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय अंग्रेज़ शासक है । इस रहस्य का उत्तर है उनके उन गुणों में, जिनकी चर्चा हमने ऊपर की है ।

भारतीयों के आत्म शासन के इच्छुक राष्ट्रनेताओं ने जिन आशाओं, इच्छाओं के साथ लार्ड मौंटबेटन को स्वतन्त्र भारत का गवर्नर जनरल बनाना स्वीकार किया था, वे आशाएं व इच्छाएं कौनसी थीं, यह हम नहीं जानते और न यही जानते हैं कि वे इच्छाएं पूर्ण हुई हैं या नहीं । हैदराबाद की समस्या तो उलझ रही है परन्तु फिर भी आज जब वे जा रहे हैं हम यह

निजाम ने समझौता ठुकरा दिया

हैदराबाद और भारत सरकार के मध्य चल रही जिस वार्ता के परिणाम की चिरकाल से प्रतीक्षा की जा रही थी वह अब पूरी हो गई है। निजाम ने भारत सरकार के प्रस्तावों को मानने से इन्कार कर दिया है।

भारत-सरकार का प्रस्तावित समझौता इस प्रकार है:—

सामान्य—(१) निजाम सरकार स्वीकार करती है कि वह भारत सरकार की प्रार्थना पर सूची में दर्ज किसी भी सम्बन्धित मामले पर भारत सरकार के कानून की भांति ही कानून पास करेगी।

(२) यदि निजाम सरकार तत्काल वैसा कानून पास न करे तो निजाम स्वयं आवश्यक आर्डीनेन्स जारी करेंगे।

सुरक्षा—(३) भारत सरकार हैदराबाद की सेना की कुल संख्या २० हजार नियत करती है। सन् १९३९ की भारतीय रियासती सेना योजना की धाराएं इन सेनाओं पर लागू होंगी और भारत सरकार इस योजना में उल्लिखित बातों के अनुसार शस्त्र, गोलाबारूद व अन्य सामान देने का वायदा करती है। भारत सरकार को समय-समय पर उनके निरीक्षण का अधिकार होगा और निजाम सरकार इस प्रकार के निरीक्षण की पूर्ण सुविधाएं देगी और समय-समय पर इस सम्बन्ध में जो सूचना मांगी जायगी; उसे भेजी जायगी।

(४) निजाम सरकार अपने घरेलू व उत्सवों आदि में भाग लेने वाले रक्षकों के अतिरिक्त अपनी अनियमित सेनाएं ८००० तक सीमित करना स्वीकार करती है। हैदराबाद सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि सैनिक प्रकार की समस्त संस्थाएं खत्म कर दी जायंगी। रजाकारों को समाप्त करने के लिए तीन मास में प्रगतिशील कदम उठाये जायंगे। रजाकारों की रैलियां, परेडें, प्रदर्शन और भाषण तत्काल बन्द कर दिये जायंगे।

(५) यह तय हुआ कि भारत सरकार अपनी सेनाएं हैदराबाद रियासत में नहीं रखेगी, लेकिन संकट के समय भारत-सरकार यदि फौजें रखना चाहेगी तो १९३५ के कानून की धारा १०२ के अनुसार अपनी सेनाएं वहां संकटकालीन समय तक तैनात कर सकेगी। ऐसी सूरत में भारत-सरकार हैदराबाद को अधिकृत इमारतों व अन्य सर्विसों का मुआवजा देगी।

(६) यदि संकट कालीन समय में भारतीय सैन्य दल हैदराबाद रियासत में रहे तो उन पर भारतीय डोमीनियन का कानून लागू होगा।

(७) यह तय हुआ कि हैदराबाद का किसी भी बाहरी देश से सम्बन्ध भारत-सरकार द्वारा संचालित होगा। हैदराबाद को अन्य देशों से आर्थिक व्यापारिक व माली सम्बन्ध स्थापित रखने के लिए व्यापार एजेंसियां स्थापित रखने की छूट रहेगी। लेकिन ये एजेंसियां भारत-सरकार के सामान्य निरीक्षण तथा पूर्ण सहयोग से कार्य करेंगी। हैदराबाद किसी भी देश से राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकेगा।

(८) उक्त पैराग्राफों के अतिरिक्त समान सम्बन्धित मामलों के बारे में वर्तमान समझौतों और शासन-सम्बन्धी प्रबंध जारी रहेंगे और दोनों पक्ष उनका पालन करेंगे। ये समझौते और प्रबन्ध २९ नवम्बर १९४८ को समाप्त नहीं होंगे, जिसकी कि २९ नवम्बर १९४७ के यथापूर्व समझौते की धारा ५ में व्यवस्था की गई थी।

(ह०) भारत सरकार की ओर से
(ह०) हैदराबाद सरकार की ओर से

सूची

सूची में रक्षा, बाहरी मामले और यातायात की व्याख्या की गई है।

(अ) रक्षा में हैदराबाद की रियासत या रियासत से बाहर रहने वाली सेनाएं, नौसेना, सैनिक व हवाई कारखाने, शस्त्र, गोलाबारूद व विस्फोटक पदार्थ शामिल हैं।

(ब) विदेशी मामलों में दूसरे देशों से संधियां व समझौते आदि करना, हैदराबाद में प्रवेश, प्रवास आदि शामिल हैं।

(स) यातायात में डाक व तार, जिसमें टेलीफोन, वायरलेस, ब्राडकास्टिंग आदि भी हैं, रियासत में भारत की रेलवे और हवाई यातायात आदि शामिल है।

फरमान

प्रस्तावित समझौते पर हस्ताक्षर करने के साथ ही निजाम को निम्नाशय का फरमान जारी करना पड़ता —

(१) मैंने हैदराबाद के भारत में शामिल होने के मसले पर जनता से राय लेने का निश्चय किया है। अतः मैं बालिग मताधिकार पर जनमतसंग्रह कराऊंगा। मैं यह जनमतसंग्रह किसी निष्पक्ष संस्था के निरीक्षण में कराऊंगा इस जनमतसंग्रह का जो परिणाम होगा उसे मैं स्वीकार करूंगा।

(२) मैं अपनी सरकार को निम्न सिद्धांतों पर चलने का आदेश देता हूं।

(अ) मेरा इरादा राज्य में उत्तरदायी सरकार बनाने का है और उसके लिए सन् १९४९ तक विधान परिषद बनाई जाय।

(ब) सरकार का पुनर्निर्माण हो और प्रमुख राजनीतिक पार्टियों की सम्मति से अन्तःकालीन सरकार बनाई जाय।

(स) मेरी सरकार ने जनमत संग्रह होने तक हैदराबाद व भारत के बीच सम्बन्धों पर एक समझौता कर लिया है।

हम हैदराबाद के ऊपर हिन्द-संघ में सम्मिलित होने के लिए कोई दबाव नहीं डालना चाहते हैं किन्तु यदि परिस्थिति बिगड़ी और हैदराबाद की गैर-जिम्मेदार घातक शक्तियां, जो वहां की सरकार को अपने पंजे में दबाए हुए हैं, उसने अपना नाशक रवैया न छोड़ा तो उसका सामना करने के लिए निजाम सरकार पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दबाव हमें डालना ही पड़ेगा और वह डाला जायगा।

जहां तक हिन्द सरकार की बात है हमने ठण्डे दिमाग से हैदराबाद की समस्या पर पूर्ण विचार किया और मैं आपसे यह कह देना चाहता हूं कि हिन्द सरकार किसी भावना से प्रेरित होकर नहीं वरन् व्यावहारिक दृष्टि से कभी भी यह सहन नहीं करेगी कि हैदराबाद अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाता रहे और मनमानी करे। भौगोलिक दृष्टि से हैदराबाद को हिन्द का हिस्सा बनना ही पड़ेगा। यह कोई अनुचित दबाव की बात नहीं है न किसी के अधिकार हड़प करने की चाल है; अपितु बहुत सीधी राजनैतिक चीज है।

हैदराबाद के सामने अब केवल दो ही प्रश्न हैं या तो वह हिन्द संघ में और राज्यों की भांति ही शामिल हो जाय या हिन्द सरकार की कटुता को स्वीकार करे। किन्तु सरदारी प्रथा जीवित रख कर हम मध्य युग व ब्रिटिश राज्य की मूलक आत्मा को जीवित रखना पसन्द नहीं करते और न ही हैदराबाद के लोग सहे जायेंगे, न यहां की सरकार। इसलिए हैदराबाद के लिए एक ही रास्ता है कि वह हिंद-संघ में शामिल हो।

रजाकारों ने हैदराबाद में एक हंगामा मचा रखा है। उसका हरेक कदम उद्दण्डता व उच्छृंखलता का प्रतीक है। रजाकारों की आक्रमणात्मक वृत्ति इतनी बढ़ती जा रही है कि उसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। हमारे पास सहस्रों ऐसे उदाहरण हैं कि यह रजाकार हैदराबाद में लोगों को सता रहे हैं, उन पर विनाश की बिजलियां गिरा रहे हैं और यही नहीं, हमारी सीमा पर भी ऊधम मचा रहे हैं।

आखिर यह सब बातें क्या जाहिर करती हैं? हैदराबाद हथियार आदि से अपने आपको क्यों सुसज्जित कर रहा है?

निजाम सरकार मुस्लिम लीग व रजाकारों के हाथ की कठपुतली बनी हुई है। रजाकारों के गैर जिम्मेवार नेता भड़काने वाली तकरीरें करते हैं, ऊटपटांग बातें बकते हैं और वहां की सरकार उन्हें मना तक नहीं करती। यह निजाम की बड़ी भारी राजनैतिक भूल है, जिसका परिणाम भयंकर होगा।

हमारे पास ऐसी धमकियां भी आईं कि हिन्द सरकार को वहां की सत्ता सम्भालने के पूर्व वहां हजारों हिन्दुओं की अस्थियां मिलेंगी। उनका स्वागत करते हुए शोले करेंगे, वे शोले जिनमें हिन्दुओं का होम हो रहा होगा।

जहां तक हमारी सरकार की बात है हमने जो प्रस्तावित समझौता बनाया है वह अन्तिम है। उसमें रत्ती-भर भी परिवर्तन नहीं होगा। निजाम अब भी चाहें उस वाली लकीर पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। यह जाहिर है कि हैदराबाद की परिस्थिति व समस्या गम्भीर है और मैं यह साफ कह देना चाहता हूं कि हम प्रत्येक स्थिति का मुकाबला करने के लिए पूर्णतया तैयार हैं और रहेंगे। हम हैदराबाद की गतिविधि को पूर्णरूप से देखते रहेंगे और समयानुकूल कार्यवाही करने में नहीं हिचकिचायेंगे।

हम अभी से नहीं कह सकते कि यदि हैदराबाद में कोई बगावत की तरह सरकार बने या आन्दोलन हो तो हमारी सरकार का क्या रुख होगा? हमारा कदम परिस्थिति के अनुसार ही उठेगा। मैं इस वार्ता के टूट जाने से किंचित मात्र चिंतित नहीं हूं और न उत्तेजित ही हूं। हम निजाम सरकार से सब तक समझौता

[शेष पृष्ठ २५ पर]

नहीं भूल सकते कि म० गांधी जी के नृशंस वध के बाद राष्ट्रीय शोक में वे और उनकी पत्नी एक सामान्य भारतीय की तरह सम्मिलित हुए। उस समय सचमुच ऐसा प्रतीत होता था कि वे हमीं में से एक हैं। उनकी पत्नी भी प्रायः सामाजिक समारोहों में, शरणार्थियों की सेवा में या अन्य अवसरों पर ग्रामीण स्त्रियों या बालकों में हिल मिल जाती थी, गांधीजी की प्रार्थना में तथा अन्य स्थानों में उन का जाना हमारे लिए जिनके निकट संपर्क में अंग्रेज कभी नहीं आना चाहते थे, स्वयं एक आश्चर्य का विषय था। वायसरायदम्पती ने अपनी विनम्रता तथा मधुरता आदि के गुणों से भारतीय जनता का हृदय जीत लिया।

———

★ समाचार चित्रावलि ★

लार्ड मौंटबेटन की पुत्री प्रमीला को विदाई-उपहार दिया जा रहा है।

पाकिस्तान के दमनचक्र के शिकार

खां अब्दुलगफ्फार खां और उनके पुत्र श्री अब्दुल गनी लीगी सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

श्री डीवेलरा का भारत आने पर विशेष स्वागत किया गया।

भारत के नये और पुराने गवर्नर जनरल—श्री राजगोपालाचार्य व श्री मौंटबेटन।

एक अदालती फैसले के कारण अब आप अमेरिकन अध्यक्षपद के चुनाव में तीसरी पार्टी की ओर से खड़े न हो सकेंगे।

निजाम की सरकार ने भारत सरकार के समझौता प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया है

(हाल) में प्रायः हा· · की दुर्घटनाओं का एक उदाहरण।

प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

[श्री अशोक]
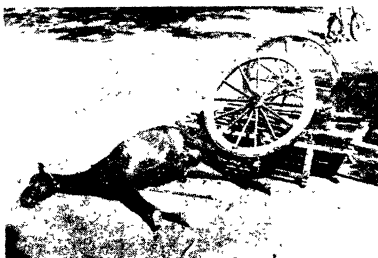
भारत के भावी गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य भारत राष्ट्र के उन ५७ विशिष्ट व्यक्तियों में से हैं, जिन्होंने वर्तमान भारत का निर्माण किया है। प्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार जान गुन्थर के शब्दों में 'वे उनमें से एक हैं जिनकी राजनीतिक दूरदर्शिता ने भारत का बेड़ा पार लगा दिया।' गांधी जी उन्हें 'साक्षात् बृहस्पति' मानते थे। भारत की अनेक ऐसी गुत्थियों को चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने ही सुलझाया जिनमें गांधी जी तक चक्कर में पड़ जाते थे। यही सब बातें हैं जिनके लिए उन्हें 'तामस महात्मा' कहा जाता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य का जन्म सन् १८७९ में सलेम में हुआ था और उन्होंने ला कालेज एवं प्रेसीडेंसी कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। फिर १९०० में आपने सलेम में वकालत शुरू कर दी।

सन् १९१९ में अन्य अनेकों बड़े बड़े वकीलों की भांति आप भी वकालत छोड़ कर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। अपनी मेधावी बुद्धि, विवेचन शक्ति एवं विचारवान होने के कारण १९२१-२३ में ही आप कांग्रेस के महामंत्री चुने गये। १९३५ तक आप बराबर कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य भी चुने जाते रहे। १९३५ में आप तामिलनाड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गए। इसी बीच आपने गांधी जी के पत्र 'य़ंग इंडिया' का सम्पादन भी किया। कांग्रेस ने १९३० में जब यह पद ग्रहण किया तो आप ही मद्रास के सर्वप्रथम प्रधानमंत्री चुने गये।

मद्रास के प्रधान मंत्री चुने जाने के पूर्व जब आप सलेम म्युनिसिपैलिटी के चैयरमैन चुने गये थे, आपने हरिजनोद्धार के लिए एक कदम उठाया और ब्राह्मण होते हुए भी एक अछूत नियुक्त कर दिया जिसे अपने काम के लिए ब्राह्मणों के मुहल्ले में जाना पड़ता था। ब्राह्मणों ने इस बात का विरोध किया और इनको जाति से बहिष्कृत करने की धमकी दी कि इनके घर में कोई कोई पुरोहित धार्मिक कृत्य सम्पादन कराने न जावे। इस पर उन्होंने स्वयं ही सब मन्त्र याद करके इस कठिनाई को हल कर लिया और इस प्रकार इनके विरोधियों को मुंह की खानी पड़ी।

इसी समय के लगभग आपने गांधी-जी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तिरुचेनगोडे में गांधी आश्रम की स्थापना की, और वहीं पर मद्यनिषेध का जोरदार प्रचार किया। इससे वहां के ताड़ी बेचने वालों का व्यापार चौपट हो गया और इसलिए उन्होंने आश्रम और राजा जी के सम्बन्ध में अनेकों भ्रांत धारणाएं फैलानी शुरू करदीं। वहां वर्षा न होने का कारण आश्रमवासियों का शीर्षासन करना बताया गया कि पैर आकाश की तरफ करने से इन्द्र देवता कुपित होते हैं। पर ग्राम वासियों के निरंतर सम्पर्क में रह कर राजा जी ने उन्हें मद्यनिषेध का विश्वासी बना दिया। जब वे मद्रास के प्रधानमंत्री बने तो इन्होंने तुरत मद्यनिषेध जारी करा दिया। इस प्रकार उन्होंने मद्रास से एक बुरी प्रथा का खात्मा कर दिया और वहां के निवासियों के धन एवं स्वास्थ्य की रक्षा की।

इसी काल में आपने साक्षरता प्रचार हरिजनोद्धार एवं हिन्दी प्रचार का भी कार्य किया। जब मद्रास प्रांत में स्कूलों में हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाने का प्रश्न आया तो मद्रासियों ने इस बात का तीव्र विरोध किया। पर उस समय आपने एक दृढ़ नीति का अनुसरण किया और विरोधियों को कैद करके समस्या अधिकाधिक जटिल बनने से बचा लिया। अगर अन्य प्रांतों में भी इसी दृढ नीति का आश्रय लिया जाता तो सम्भवतः प्रांतीयता की भावना इतना जोर न पकड़ती, सन् १९३९ में कांग्रेसी सरकारों के स्तीफा देने पर आपने भी स्तीफा दे दिया।

सन् १९४१ में आपने यह अनुभव किया कि पाकिस्तान योजना को स्वीकार कर लेने में देश का हित है। समस्त देश इसके विरुद्ध था पर आप अपनी बात पर अड़े रहे। इसी प्रश्न पर तीव्र मतभेद के कारण आपको कांग्रेस से स्तीफा तक देना पड़ा। १९४५ में आप कांग्रेस में फिर सम्मिलित हुए। १९४६ में आप को मद्रास असेम्बली का सदस्य चुना गया। बाद में आप विधान परिषद के भी सदस्य चुने गए। भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् अगस्त १९४८ में आप पश्चिमी बंगाल के गवर्नर बनाए गए।

श्री राजगोपालाचार्य जहां एक चतुर राजनीतिज्ञ हैं वहां एक महान् साहित्यिक भी हैं। वे संस्कृत, इंगलिश तथा तामिल के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। तामिल एवं इंगलिश में आपने अनेकों सुन्दर कथाएं लिखी हैं जिनका कई भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। आज तामिल में जो टेकनीकल विचार प्रगट किये जा सकते हैं, उसका अधिकतर श्रेय राजा जी को ही दिया जाना चाहिये।

राजा जी का पारिवारिक जीवन सुखी नहीं बीता। आप श्वास के रोगी हैं, इसी लिये आप आहार सम्बन्धी बातों का बहुत विचार करते हैं। बहुत समय पहले ही आपकी पत्नी का देहान्त हो गया था। जिस जीवन में उसके सम्बन्ध में आपने कई मर्म स्पर्शी संस्मरण लिखे हैं। हाल ही में इनके भाई का देहान्त हो गया और फिर पुत्र का। किंतु इन सब बातों से भी आप इतने विचलित न हुए कि जितने कि हाल में ही हुए महात्मा जी के क्रूर वध से। एक विश्वस्त तामिल पत्र के अनुसार गंगा में गांधी जी की भस्म प्रवाहित होने के पश्चात् एकांत में जाकर आप जितना रोए, उतना आप पहले कभी नहीं रोए।

श्री राजगोपालाचार्य

इतनी सब बातों के होते हुए भी आप एक विनोदी जीव हैं, हालां कि उनके सुपरिचित आकार प्रकार के झुके हुए शरीर और आंखों के मोटे चश्मे को देख कर कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता वे कई दफा कुछ बातें करके इस प्रकार हंसते हैं कि दूसरा व्यक्ति यह समझ नहीं सकता कि वे हंस रहे हैं या व्यंग्य कस रहे हैं।

अब वे लार्ड मौण्टबेटन के जाने के बाद स्वतन्त्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल बनाये गये हैं। यद्यपि आप कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं बने, परन्तु स्वतन्त्र देश में यह सम्मान—वास्तविक राष्ट्रपति का पद — देकर भारतवासियों ने उनकी सेवाओं का सब से बड़ा मान किया है। आशा है कि जिस तरह वे अब तकथे देश की सेवा करते रहे हैं, उसी तरह नये उत्तरदायित्व के साथ नवीन समस्याओं का भी समाधान करने में वे सफल सिद्ध होंगे।

मैं युग के गान बदल दूँगा।

(श्री हरि)

जीवन की जटिल असङ्गतियां, मानव का शोषण, उत्पीड़न,
मैं जग से आज मिटा दूंगा लाकर विप्लव का परिवर्तन,
मैं शोषित पीड़ित मानव के जीवन का मान बदल दूंगा,
मैं युग का गान बदल दूंगा।

निर्दोष, निरीह, पतित बर्बर प्राणों में बिजली भर दूंगा,
फुफकार उठेगी नागिन बन, जनता पर जादू कर दूंगा,
जो जुल्मों को सहता जाता, मैं वह इन्सान बदल दूंगा।
मैं युग के गान बदल दूंगा।

अधिकारों के हामी जन को जंजीरों में जकड़े देखा,
मुस्काते जल्लादों-द्वारा उन पर कोड़े पड़ते देखा,
मैं अन्यायी के अधरों की ऐसी मुस्कान बदल दूंगा।
मैं युग के गान बदल दूंगा।

समता की ही पूजा होगी, मानवता का वन्दन होगा,
जन की विजयों के चरणों में जनता का अभिनन्दन होगा।
जो मन्दिर मस्जिद तक सीमित, मैं वह भगवान् बदल दूंगा।
मैं युग के गान बदल दूंगा

प्रशान्त महासागर का स्वर्ग — बाली

[श्री ए० मुहार्दो]

बाली जावा के पूर्व में एक छोटा सा द्वीप है, जो एक पतले जल डमरू मध्य के द्वारा अलग किया हुआ है। यहां की भूमि उपजाऊ है और जनता परिश्रमी तथा चतुर है। इसी लिए आप को आन्तरिक भाग में तथा पहाड़ों को छोड़ कर अन्य सब स्थानों में बहुत अच्छी तरह सजाये और सींचे हुए खेत दीखेंगे। प्रकृति ने इस छोटे द्वीप को अनेक सुन्दर दृश्यों, सुन्दर पहाड़ियों, ज्वालामुखी वाले बने जंगलों, झीलों और नदियों से सजाया है।

विदेशी यात्रियों ने बहुधा लिखा है कि बाली एक 'विस्मृत द्वीप' है, जहां कोई काम बाकी नहीं करता है तथा सब जगह शान्ति विराजमान है। एक छोटा स्वर्ग है, जहां मनुष्य अपने बालों में पुष्प लगाते हैं, लोग बिना धन और बिना बहुमूल्य वस्तों के ही, अत्यन्त आनन्द से रहते हैं। यह एक स्वर्ग है, जहां आप एक छोटी फूस की झोंपड़ी में ही, फूल और द्वीप के मधुर सूर्योदय के सहारे अपने दिन निकाल सकते हैं। यह प्रकृति सुन्दरी का स्वर्ग है जिसे 'प्रशान्त का स्वप्न' भी कहा जाता है। बाली में २० लाख की आबादी है और जावा के बाद यही इण्डोनेशिया का सबसे घना आबाद क्षेत्र है। यहां के अधिकतर निवासी अब भी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, जबकि बहुत समय पहले से ही इण्डोनेशिया के लोगों का बहुमत इस्लाम स्वीकार कर चुका है। हिन्दू संस्कृति, जिसका प्राचीन इण्डोनेशिया की संस्कृति तथा रहन सहन के ढंग पर बहुत बड़ा प्रभाव था तथा कुछ सीमा तक अब भी है, इस छोटे से सुन्दर द्वीप में अब भी फल फूल रही है।

भारतीय संस्कृति का प्रभाव

यहां के लोग बड़े धार्मिक हैं। आप को हर स्थान पर पवित्र मंदिर और मठ मिलेंगे। हर एक ग्राम एक मंदिर के चारों ओर बसा है। अपने कार्य अथवा व्यापार को प्रारम्भ करने के पहले हर एक साधारण बाली निवासी दिवस की सफलता के लिए मंदिरों और मठों में प्रार्थना कर लेता है। बरगद का वृक्ष यहां इतना ही पवित्र माना जाता है जितना कि भारत में। बाली साहित्य पर संस्कृत का विशेष प्रभाव है, हालांकि बाली वासी संस्कृत को बिल्कुल भूल चुके हैं। फिर भी वे भारतीय देवों के विषयों की पुरानी पुस्तकों का अब भी पाठ करते हैं। वे अब भी संस्कृत श्लोकों में गंगा, यमुना और सरस्वती की स्तुति गाते हैं। जावा के ५ द्वीपों पर हिन्दू भारतीय संस्कृति ने इण्डोनेशिया के इस भाग पर पूरा अधिकार कर लिया था।

कला प्रियता

बाली निवासी केवल मेहनती और योद्धा ही नहीं है, किन्तु सुशिक्षित कलाविद् भी हैं। बाली का 'लींगोंग नृत्य' और मूर्ति कला जगत् प्रसिद्ध है। लगभग हर एक बाली वासी छोटी मूर्तियां तथा लकड़ी की दूसरी चीजें बनाने की जानकारी रखता है, जिनको वह खाली समय में बनाता है। उनके सुन्दर और कलात्मक मंदिर, मठ और स्नानागार उनकी कला और प्रकृति-प्रेम का दिग्दर्शन कराते हैं। 'लींगोंग नृत्य' एक प्रकार का मंदिर का नाच है, जिसे कि स्त्रियां हाथ के पद-चाप और हाथ की मुद्राओं से सुन्दरता के साथ प्रदर्शित करती हैं।

बाली निवासियों के वाद्ययन्त्र विकसित कोटि के हैं, जिनमें विशेष लकड़ी तथा पीतल के पियानों, बांसुरी, वायलिन या रेबब ढोल और कुछ दूसरे हैं। यह सजीव और वीरता पूर्ण बाली का गान बाली वासियों के चरित्र से मिलता है, जो वीर ढंग और मुर्गे युद्ध इत्यादि पसन्द करने वाले होते हैं। वे धार्मिक कार्यों में भी अपने को बिल्कुल उग्रतरता के साथ नृत्य और गान में झोंक देते हैं और अपने मुर्दों को जलाने की उनकी सुन्दर प्रथा ने युद्ध के पहले बहुत से विदेशी यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित किया था।

समाज का विभाग

बाली का समाज चार भागों में विभक्त है, अर्थात् सर्वोच्च श्रेणी — ब्राह्मण, योद्धा क्षत्रिय, व्यापारी वैश्य और सबसे नीची श्रेणी वाले — भंगी, मिस्त्री, शूद्र। फिर भी यहां अस्पृश्य या अछूत नहीं और लोग दैनिक जीवन में आपस में मिलते ही रहते हैं। यहां का उच्च वर्ग 'त्राकोर्दें' है।

दूसरा मनोरंजक तथ्य यह है कि बाली वासियों ने जीवन का एक समाजवादी तरीका अपना रखा है। यहां पर अस्पृश्यता न होने के कारणों में एक यह भी है। वे फसल कटने के दिनों में खुशी के दिनों में और सकट के दिनों में एक दूसरे की सहायता करते हैं। जब किसी का धन पकता है तब उसके पड़ोसी आकर उसकी सहायता करते हैं और अपने श्रम के बदले में धान का एक हिस्सा लेते हैं और बदले में वह भी उनकी सहायता करता है। यहां कोई न तो धनी ही है और न गरीब। यह सर्वमान्य सत्य है कि बाली में कहीं भी वास्तविक भिक्षा नहीं जा दी जाती है। दरवाजे और खिड़कियों में तो कभी ताले भी नहीं लगते हैं। यहां कोई चोर नहीं है।

साम्राज्यवाद का शिकार

अभी वैधानिक दृष्टि से बाली पूर्वी इण्डोनेशिया का अंग है। यह द्वीप डच शासन के अन्तर्गत १६ वीं शताब्दी के अन्त में आया। डच साम्राज्यवादियों ने यह बहाना बनाया कि बाली वासियों ने डचों के जहाज लूटे हैं और इस बात को दुबारा न होने देने के लिए डच साम्राज्यवादियों ने अपनी कमी न शान्त होने वाली भूमि की भूख के साथ द्वीप पर आक्रमण किया। यह एक भयंकर युद्ध था, जो कई सालों के बाद खत्म हुआ और इसमें डचों को अपने हजारों सैनिक खोने पड़े। बाली वासी एक शांति प्रिय, कलाविद् और अच्छी चाल-ढाल का व्यक्ति होता है, किन्तु युद्ध में वह भी खतरनाक विरोधी बन जाता है। केवल पुरुषों ने ही युद्ध में भाग नहीं लिया, किन्तु तलवारों, भालों, खंजरों इत्यादि से लैस स्त्रियों ने भी युद्ध में पुरुषों का साथ दिया। डचों के अच्छे अस्त्र—शस्त्रों के कारण अंत में बाली वासियों को आत्म समर्पण करना पड़ा।

इण्डोनेशिया की स्वतन्त्रता के अग्रदूत डा० सुकर्ण

किन्तु उनकी स्वाधीनता तथा प्राचीन गौरव की भावनाएं अब भी नहीं मरी हैं। जापानियों के आने और इण्डोनेशियन रिपब्लिक के निर्माण के बाद यह भावना फिर जागी। सारी जनता बड़े साहस के साथ राष्ट्रपति सुकर्ण के नेतृत्व में आगे बढ़ी। बाली तथा दूसरे छोटे सुन्दर द्वीप एक बाली वासी डा० न्दे कुत पूजे की अध्यक्षता में इण्डोनेशियन रिपब्लिक के अंग हैं।

अंत में किसी प्रकार अंग्रेजी और आस्ट्रेलियन संगीनों की सहायता से डच अस्थायी रूप से द्वीप के मुख्य भाग को ले लेने में सफल हो गये। द्वीप के अन्दरूनी भागों में जंगल, और पहाड़ों में अब भी हजारों बहादुर बाली वासी गुरिल्ला अथक युद्ध कर रहे हैं और वे डच साम्राज्यवादी लुटेरों और भाड़े के टट्टुओं को नाकों चने चबवा रहे हैं।

इस प्रकार यह छोटा सा सुन्दर द्वीप जो कि युद्ध के पहले दुनिया के हर कोने से आने वाले हजारों यात्रियों को आकर्षित करता था, जो डच टूरिस्ट ब्यूरो, जहाजों तथा यातायात की कम्पनियों को बहुत गहरा लाभ पहुंचाता था, वही बाली आज उन डच साम्राज्यवादियों के लिए इण्डोनेशिया में एक दूसरा सर दर्द बन गया है।

———

हिन्दी जगत

हिन्दी या पंजाबी

[श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज]

★

कुछ सिख सज्जन यह कह रहे हैं कि हिन्दी को संयुक्त प्रांत में जमना पार भेज दिया जाये। पंजाब में पंजाबी ही होनी चाहिए। इस में दो बातें हैं। प्रथम पंजाबी बोली, दूसरे गुरुमुखी लिपि।

इस समय हिन्दी बिहार, मध्य-प्रदेश, संयुक्त प्रांत, राजस्थान में बोली जाती है। किन्तु वहां इन प्रांतों की भाषा हिन्दी है, वहां इन के गांव की भाषा एक नहीं। मध्य-प्रदेश वाला जो भाषा बोलता है बिहार वाला उस से सर्वथा भिन्न भाषा बोलता है। इसी प्रकार बिहार वाला संयुक्त प्रांत वाले से पृथक् भाषा बोलता है। यही नहीं कि एक प्रांत की भाषा दूसरे प्रांत की भाषा से भिन्न है, बल्कि एक प्रांत में भी कुछ दूरी पर भाषा में कुछ न कुछ अन्तर हो जाता है। वह भाषा ग्रामों की मानी जाती है, साहित्य की नहीं।

जिस प्रकार यह सब प्रांत ग्रामों में अलग २ भाषा बोलते हुए अपनी भाषा हिन्दी मानते हैं इसी प्रकार पंजाबी और उन की ग्रामों की भाषा को बोली मान कर हिन्दी को मुख्य भाषा मान लेना चाहिए। दूसरे पंजाबी भाषा के शब्द दूसरी भाषाओं से लेने होंगे। वह किस भाषा से लिये जायें। इस समय तीन भाषायें हैं, जिन से शब्द लिये जा सकते हैं। अंग्रेजी, फार्सी या उर्दू और हिन्दी। अंग्रेजी का तो प्रश्न ही नहीं, क्यों कि अंग्रेजी से अधिक शब्द पंजाबी में न खप सकेंगे। दूसरी फार्सी मुसलमानों के साथ थी, अब उसे रखना कठिन होगा। इस लिए पंजाबी में उसके शब्द भी न समा सकेंगे।

तीसरी है हिंदी। पंजाबी को सब शब्द हिन्दी से लेने होंगे। जब शब्द हिन्दी से लेने हैं तब प्रांत की भाषा हिन्दी मानने में लाभ रहेगा, क्यों कि हिन्दी पढ़े बिना इन शब्दों का व्यवहार और उचित प्रयोग कठिन होगा।

सिखों का धर्म ग्रन्थ जिस भाषा में है उसमें भी हिन्दी ही है। उदाहरण—

'एक ओंकार सत नाम करता पुरख निरभौ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभंग गुरप्रसाद जप आदि सच जुगादि सच है भी सच नानक होसी भी सच।'

इस में सब शब्द हिन्दी के हैं, वह भी संस्कृत से लिए हैं।

उपरिलिखित सब शब्दों में एक 'होसी' शब्द ऐसा है, जिसका पंजाबी का कहा जा सकता है। शेष सब शब्द हिन्दी के हैं। जब गुरु नानकदेव जी की बानी हिन्दी में है, तब [illegible] को प्रान्त की भाषा हिन्दी मानने में [illegible] न होना चाहिए।

यदि [illegible] की [illegible] से विचार करें तो पंजाबी हिन्दी का ही [illegible] रूप है।

अब लिपि के विषय में—

सिक्ख चाहते हैं कि पंजाब में गुरुमुखी ही हो, परन्तु पंजाब सरकार की आज्ञा यह है कि देवनागरी और गुरुमुखी दोनों होनी चाहिए और प्रत्येक अफसर को दोनों सीखनी होंगी। इस प्रश्न को इस प्रकार विचारना चाहिए।

(१) उच्चारण: — गुरुमुखी का उच्चारण ठीक नहीं है, जिस प्रकार उर्दू में उच्चारण अशुद्ध है, उसी प्रकार गुरुमुखी लिपि भी है। उर्दू में 'अलिफ' उच्चारण है और वह 'अ' की आवाज देता है। इसमें 'लाम' और 'फे' उच्चारण में हैं, जो आवाज में सर्वथा व्यर्थ हैं, इसलिए बालक को समझ में नहीं आता। इसी प्रकार 'काफ' और 'मीम' 'कम' किस प्रकार बन गया।

गुरुमुखी लिपि में उच्चारण 'ऊड़ा' 'आड़ा' 'कक्का' आदि हैं और आवाज में 'ऊड़ा' 'अ' और 'आड़ा' 'आ' और 'कक्का' केवल 'क' की आवाज देता है। इसके स्थान पर देवनागरी लिपि में यह लाभ है कि अक्षर का जो उच्चारण होता है, वही इसकी आवाज है। इसलिए बालक को समझने में बहुत आसानी होती है। जो अक्षर लिखने होते हैं, बालक उनका उच्चारण करेगा, वही, शब्द बन जायगा। गुरुमुखी और उर्दू में यह नहीं है।

(२) गुरुमुखी लिपि देवनागरी लिपि से ही बनी है। जो मूल है, उसे ही क्यों न माना जाय।

(३) सिक्खों का यह कहना है कि उनके धर्म पुस्तक सब गुरुमुखी लिपि में हैं। इसलिए पंजाब में गुरुमुखी लिपि ही होनी चाहिए। मैं यह मानता हूं कि सिक्खों के धर्म पुस्तक गुरुमुखी में हैं। अब श्री गुरुग्रन्थ साहिब देवनागरी लिपि में और उर्दू में भी छपे हैं। परन्तु वह प्रचार की दृष्टि से छापे गए हैं। परन्तु सिक्खों को महाराष्ट्र से शिक्षा लेनी चाहिए। महाराष्ट्र की अपनी लिपि थी। महाराष्ट्र के नेताओं ने विचार करके निश्चय किया कि महाराष्ट्र को वह लिपि छोड़ देनी चाहिए और उसके स्थान पर देवनागरी लिपि का प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रकार मुसलमानों के मौलवी और दूसरे सज्जन अर्बी लिपि सीख कर कुरान पाठ करते थे, उसी प्रकार सिक्खों के ग्रन्थी गुरुमुखी लिपि पढ़ सकते हैं।

गुरुमुखी लिपि में साहित्य बहुत ही कम है और पांच सिक्खों के लिए साहित्य तय्यार करना भी आसान बात नहीं है। जिस प्रकार अलीगढ़ यूनिवर्सिटी ने उर्दू का प्रेम छोड़ कर हिन्दी और देवनागरी लिपि को अपना लिया है, क्योंकि इसमें साहित्य पर्याप्त है और बिहार, मध्य प्रदेश, मध्य भारत, संयुक्त प्रांत राजस्थान में इसी का बोल बाला है उसी तरह यदि पंजाब भी इनके साथ सम्मिलित हो जाय तो इस को यह सारा साहित्य बना बनाया मिल जायगा और आगे को भी लाभ रहेगा। देवनागरी लिपि राष्ट्र भाषा होगी। तब सिक्ख इसे भी क्यों न अपनाएं!

मा० तारासिंह का हिन्दी विरोध

देश की परिवर्तित हालतों के अनुसार सिख अब अपनी पृथक् राजनीतिक सत्ता पर जोर नहीं दे रहे हैं। हम हिंदुओं के साथ मिलाप के हामी हैं।

मैंने यह कभी नहीं कहा कि हिन्दी के समर्थकों का स्थान यमुना के पार है। हिन्दी को पूर्वी पंजाब में अवश्य ही स्थान मिलना चाहिये, परन्तु उसका वही स्थान हो, जो ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजी का था। जैसे अंग्रेजी की शिक्षा प्राइमरी स्कूलों में न दी जाकर लोअर मिडिल या मिडिल श्रेणियों में दी जाती थी, इसी प्रकार पूर्वी पंजाब के स्कूलों में हिन्दी को छठीं या सातवीं श्रेणी से पढ़ाया जाये। —तारासिंह

भारतीय भाषाओंमें रूस की रुचि

रूस के प्राच्य-विद्याविशारद बारानिकोव द्वारा अनुवादित 'रामायण' का प्रकाशन शीघ्र ही होने वाला है। आपने भारत सम्बन्धी सोवियत अध्ययन और अन्वेषण का एक इतिहास भी लिख कर समाप्त कर डाला है। कल्यानोवने महाभारत की प्रथम पुस्तक का अनुवाद पूरा कर दिया है। सोवियत विद्यार्थी भारतीय इतिहास, अर्थ शास्त्र और साहित्य की पुस्तकों का अध्ययन और अध्यापन कर रहे हैं।

हिन्दी, उर्दू तथा मराठी के कोष रूसी भाषा में तैयार हो चुके हैं। हिन्दू एवं बौद्ध दर्शन शास्त्र का भी विस्तृत अनुसन्धान किया गया है साहित्यिक रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद किया जा रहा है। कई छात्रों ने मिलकर कौटिल्य के अर्थशास्त्र का भी रूपान्तर किया है।

—

हिन्दी में बीमा साहित्य

भारतीय बीमा कम्पनियों की प्रतिनिधि संस्था इण्डियन लाइफ आफिसेज एसोशिएशन ने अपनी सदस्य कम्पनियों से अनुरोध किया है कि बीमा जगत में प्रयुक्त किये जाने वाले पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्दों के गढ़ने में वे उसकी सहायता करें। एसोशिएशन ने कम्पनियों को लिखा है कि भारत सरकार के वाणिज्य विभाग की बातचीत से ज्ञात होता है कि हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा होगी, अतएव बीमा कम्पनियों के लिए उपयुक्त अवसर है कि वे अपनी पारिभाषिक शब्दावलि को भी हिन्दी में अनुवादित कर लें और अपने प्रास्पेक्टस तथा अन्य साहित्य हिन्दी में छपाने की व्यवस्था पूर्ण कर लें। बीमा सम्बन्धी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची बनाने के निमित्त एसोशिएशन ने एक कर्मचारी मण्डल नियुक्त कर दिया है और कम्पनियों से उसको सहयोग देने तथा उससे सहयोग लेने का आग्रह किया है।

—

'श्रीमती' का आदर

युक्तप्रान्तीय सरकार ने आदेश दिया है कि सरकारी कागजों में किसी भी महिला के नाम के साथ 'मुसम्मात' शब्द न लगाया जाय, क्योंकि वह बड़ा रूखा सा शब्द लगता है। अंग्रेजी के 'मिसेज' शब्द के बहिष्कार की भी आज्ञा दी गई है। इन दोनों के स्थान पर विवाहिता के लिए श्रीमती तथा अविवाहित के लिए कुमारी का उपयोग किया जायगा। यह स्मरणीय है कि मिस्टर, बाबू, मौलवी आदि के स्थान पर पुरुषों के लिए 'श्री' के उपयोग की आज्ञा पहले ही दी जा चुकी है।

—

नवलकिशोर पुरस्कार

बेतिया राज्य ने बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के तत्वावधान में हिन्दी भाषा की उत्कृष्ट पुस्तकों पर २०००) का महाराज नवलकिशोर पुरस्कार प्रतिवर्ष देना निश्चित किया है।

—

हिन्दी सम्राट के सामने

"मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि उत्तर हिन्दुस्तान की मारवाड़ी, पंजाबी, सिन्धी आदि भाषाएं एक तरह से हिन्दी की बोलियां बैठी हैं। सिंधी और हिन्दी दोनों संस्कृत से पैदा हुई हैं। अगर लिपि की रुकावट न रही तो कोई भी सिंधी आठ दिन के अन्दर हिन्दी सीख सकता है। सिंधी सीख कर आप [illegible] सिंध नदी में प्रवेश करते हैं तो, हिन्दी सीख कर आप समुद्र में प्रवेश करते हैं।"

—अजमेर में आचार्य विनोबा

—

श्री जिन्ना

एक प्रत्यक्षदर्शी का वर्णन

काश्मीर-अभियान का पाकिस्तानी षड़यन्त्र

अमेरिका और ब्रिटेन षड़यन्त्र में शामिल थे

[श्री बी० के० रेड्डी, भूतपूर्व अध्यक्ष, जन-सम्पर्क विभाग, 'आज़ाद काश्मीर' सरकार, पाकिस्तान]

★

भारत की जनता निश्चित रूप से, और सम्भवतः हमारी सरकार भी, अभी तक यह नहीं जानती कि काश्मीर व जम्मू पर कायरता, शैतानियत और धोखे से भरा हुआ जो आक्रमण किया गया है, उसकी योजना स्वयं पाकिस्तान के नेताओं और सैनिक अधिकारियों ने गत अगस्त मास के अन्त में जिन्ना साहब के प्रत्यक्ष आदेशों से तैयार की थी। न केवल ब्रिटिश गवर्नरों और पाकिस्तान में अभी तक औरों पर नियन्त्रण रखने वाले पदों पर आरूढ़ ब्रिटिश नागरिक अधिकारियों ने ही इस योजना को सक्रिय सहयोग दिया, अमेरिकन दूतावास के अधिकारियों का भी इस योजना को आशीर्वाद और समर्थन प्राप्त था। त्यागी फ्यूहरर का यह विश्वास था कि वह राजा-महाराजाओं को अपनी 'स्वतन्त्रता' के लिए भड़का कर भारतीय संघ के विरुद्ध एक नया मोर्चा स्थापित करने में सफल हो जाएंगे, किन्तु उनकी यह चाल बेकार गयी और उन्होंने एक दूसरा चतुराईपूर्ण रास्ता अख्तियार किया।

आरम्भ में, इस योजना को पूर्णतया गुप्त रखा गया और पाकिस्तान में भी बहुत थोड़े ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें इसके विषय में मालूम था। स्वभावतः हमारे भारतीय नेताओं की कल्पना और सन्देह से यह परे था कि सामूहिक हत्याकाण्डों के पश्चात् जब लाखों की संख्या में हिन्दू और सिख पाकिस्तान से भाग रहे हों और उससे भी अधिक संख्या में मुस्लिम शरणार्थी पाकिस्तान में आश्रय के लिए पहुंच रहे हों, पाकिस्तान के शासक एक शान्त पड़ोसी रियासत में एक और खून की होली खेलने की योजना बनाने में व्यस्त हो सकते हैं। सितम्बर में और अक्टूबर के आरम्भ में, काश्मीर रियासत के खिलाफ जिहाद बोलने के लिए धर्मान्ध व्यक्तियों को जिस प्रकार एकत्र किया गया, उसका पश्चिमी पंजाब और पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त में हमारे डिपुटी हाई कमिश्नरों, सम्पर्क-अधिकारियों तथा सैनिक निष्कासन-संगठन के अफसरों को पता तक न चला और यही कारण है कि जब पाकिस्तान ने काश्मीर पर आक्रमण किया, तो भारत सरकार और जनता स्तब्ध-सी रह गयी।

पाकिस्तान का हाथ

यह आश्चर्य का विषय है कि हमारी सरकार ने काश्मीर पर आक्रमण के सम्बन्ध में जो श्वेत-पत्र प्रकाशित किया है, उसमें अथ से इति तक कबाइलियों की हरकतों को ही प्रमुखता दे दी गयी है और पाकिस्तान पर केवल आक्रान्ताओं को रास्ता देने तथा यातायात, शस्त्रास्त्र व गोलाबारूद की सहायता प्रदान करने मात्र का दोष लगाया गया है। इस आक्रमण में पाकिस्तान की सेना, फ्रंटियर कान्स्टेबुलरी खासादारों और कबायली सैनिक दस्तों ने जो भाग लिया है, उसका बहुत कम उल्लेख किया गया है और पाकिस्तान के शहरी अधिकारियों ने इस आक्रमण के संचालन में जो भाग लिया है, उसकी तो चर्चा तक नहीं है। साम्प्रदायिक आधार पर देश के विभाजन के पश्चात् जो साम्प्रदायिक उपद्रव आरम्भ हुए, उससे दुर्भाग्यवश विदेशों में यह धारणा बैठ गयी कि काश्मीर पर 'कबायली' आक्रमण भी साम्प्रदायिक उपद्रवों का एक अंग है और मुस्लिम कबायली इस मुस्लिम बहुल रियासत को नव निर्मित मुस्लिम राज्य में शामिल कर लेने के लिए व्यग्र हैं। विदेशी लोगों के दिमाग में यह विचार आना स्वाभाविक है कि मुस्लिम कबायली काश्मीर के हिन्दू शासक द्वारा अपनी रियासत को भारतीय संघ में मिला देने से पहले ही उस पर अधिकार कर लेना चाहते थे और जब उन्होंने ऐसा करने का प्रयत्न किया, तो पाकिस्तान सरकार और जनता ने कबायली आक्रान्ताओं को यथाशक्ति सहायता दी।

किन्तु एक प्रत्यक्षदर्शी के नाते मैं यह कह सकता हूं कि वस्तुस्थिति इस से सर्वथा विपरीत है। न केवल पाकिस्तान सरकार और उसके सैनिक अधिकारी पाकिस्तान के सरकारी कोष और सशस्त्र सेनाओं की सहायता से इस लड़ाई को चला रहे हैं, ऐसी अनेक विदेशी शक्तियां भी हैं, जो पाकिस्तान को उसके इस धोखाधड़ी भरे कृत्य के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं और संघर्ष के लम्बा खिंच जाने के पक्ष में हैं।

मैं उन थोड़े से व्यक्तियों में से हूं, जो इस षड़यंत्र में शुरू में शामिल कर लिये गये थे और जो इस संघर्ष के विषय में प्रायः सभी गोपनीय बातें जानते हैं। मैं इस लेख में इस षड़यंत्र पर यथाशक्ति प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

शैतानियत और धोखे से भरी इस कार्रवाई पर प्रकाश डालने से पूर्व मैं यह बता देना आवश्यक समझता हूं कि मैं एक भारतीय नागरिक होते हुए भी 'आज़ाद काश्मीर' सरकार में कैसे सम्मिलित हो गया और छः महीने से अधिक समय तक उच्च पद पर कार्य कर चुकने के पश्चात् क्यों और कैसे पाकिस्तान से बच कर निकला।

मैं 'काश्मीर टाइम्स' का सम्पादक था और गत तीन या चार वर्षों से काश्मीर में एसोसियेटेड प्रेस आफ इण्डिया का प्रतिनिधि भी था। यद्यपि आरम्भ में मेरे पत्र की नीति नेशनल कान्फ्रेंस के पक्ष में थी, किन्तु दुर्भाग्य से बाद में मेरे और शेख अब्दुल्ला के मध्य कुछ गलतफहमियां उत्पन्न हो गईं। हम दोनों में मतभेद बढ़ते गये और काश्मीर की राजनीति में हम एक दूसरे के सख्त विरोधी हो गये। इसका यह स्वाभाविक परिणाम हुआ कि मैं शेख अब्दुल्ला के विरोधियों— काक और मुस्लिम कान्फ्रेंस — का समर्थन करने लगा।

श्री मेसर्वी

काक की बर्खास्तगी के पश्चात् काश्मीर की राजनीति का रुख बदल गया और नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं ने यह समझ कर कि एसोसियेटेड प्रेस का प्रतिनिधि होने के नाते मैं पाकिस्तान के हक में प्रचार करता हूं, मुझे रियासत से निर्वासित करा दिया। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। शेख अब्दुल्ला की पार्टी का विरोधी होते हुए भी मैं पाकिस्तान का ज़रा भी समर्थक नहीं था। शेख अब्दुल्ला से मेरा मतभेद 'काश्मीर छोड़ो' आन्दोलन के कारण हुआ था और मैं इसे दुर्भाग्यपूर्ण आन्दोलन मानता था। डोमीनियन में शामिल होने के प्रश्न पर मेरा मत स्पष्ट था और मैं जनमत लिये जाने के पक्ष में था। किन्तु एसोसियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि के नाते मेरी स्थिति बड़ी विचित्र थी। मेरा सम्बन्ध लाहौर आफिस से था, जिसका प्रबन्ध १५ अगस्त के बाद मुसलमानों के हाथ में आ गया था। वे मुझ से पूछे बिना ही श्रीनगर की तारीख देकर काश्मीर के सम्बन्ध में सभी किस्म के उत्तेजनात्मक समाचार दे डालते थे। इन समाचारों को पाकिस्तानी और विदेशी पत्र खूब चमका कर छापते और कभी-कभी बी० बी० सी० भी उन्हें ब्राडकास्ट कर देता था।

इससे काश्मीर सरकार मेरे से रुष्ट हो उठी और उसने मुझे ही इस आन्दो-

शेख अब्दुल्ला

खान ममदोत

सन का उत्तरदायी समझा। मैंने काश्मीर के प्रधानमंत्री को अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी और उनसे प्रार्थना की कि वह टेलीग्राफ आफिस से यह पता लगा सकते हैं कि इस प्रकार के आपत्तिजनक समाचार कौन भेजता है। किन्तु दुर्भाग्य से यथास्थित-समझौते के अन्तर्गत डाक व तार घर पर पाकिस्तान का नियन्त्रण था और काश्मीर सरकार इस बारे में कुछ भी पता लगाने में असमर्थ थी।

रियासत की निर्वासनाज्ञा के कारण मैं अक्टूबर के मध्य में काश्मीर से अमृतसर चला आया और वहां से एसोसियेटेड प्रेस के लाहौर आफिस को अपने पिछले बकाया वेतनों के बारे में टेलीफोन किया। मुझ से अपना वेतन लेने और भविष्य में नौकरी के विषय में चर्चा करने के लिए लाहौर आने को कहा गया और मैं पाकिस्तान के अमृतसर स्थित सम्पर्क-अधिकारी श्री जाहिद उमर के साथ २१ अक्टूबर को एक जीप द्वारा लाहौर रवाना हो गया। श्री जाहिद उमर मुझे गवर्नमेंट हाउस ले गये, जहां पश्चिमी पंजाब के शरणार्थी मंत्री मियां इफ्तखारुद्दीन से मेरी भेंट हुयी। मुझे पश्चिमी पंजाब के गवर्नर सर फ्रांसिस मुडी से भी मिलाया गया, जिसने मेरे बारे में जानने की मेरे से भी अधिक उत्सुकता प्रकट की और मुझे अगले दिन फिर मिलने को कहा। इसके पश्चात् मुझे पश्चिमी पंजाब के प्रधानमंत्री खान ममदोत के पास ले जाया गया। उन्होंने भी मेरे बारे में बड़ी दिलचस्पी दिखलायी और मुझ से पाकिस्तान का नागरिक हो कर वहीं रहने का आग्रह किया। मुडी और ममदोत के व्यवहार से मैं कुछ घबरा-सा गया और यह अनुभव करने लगा कि ये लोग काश्मीर के सवाल पर मुझे किसी गम्भीर स्थिति में डाल देना चाहते हैं। रात्रि को एक भोज में मेरा दो अन्य मंत्रियों—सरदार शौकतहयात खां और शेख करामत अली—से परिचय कराया गया। भोज में लाहौर के कई पत्र-सम्पादकों के अलावा रावलपिंडी डिवीजन के कमिश्नर ख्वाजा अब्दुर्रहीम भी उपस्थित थे।

वे लोग मुझे एक ओर ले गये और बताया कि अगले दिन—२२ अक्टूबर को—काश्मीर पर कोहाला और रामकोट की ओर से चढ़ाई की जायगी; रियासती फौज के मुस्लिम सदस्य फौज छोड़ कर भाग रहे हैं और बहुत बड़ी संख्या में आक्रान्ताओं में आ मिले हैं, उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया कि श्रीनगर पर तीन-चार दिनों में अधिकार कर लिया जाएगा और मुझे कहा कि यदि मैं चाहूं तो मंत्रिमंडल में अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधि के नाते शामिल हो सकता हूं।

यद्यपि मुझे पहले से यह आभास हो गया था कि पाकिस्तान शक्ति के जोर से काश्मीर को अपने में मिलाना चाहता है, किन्तु कुछ ही दिनों में उसे विजित कर लेने और एक नयी सरकार की स्थापना की बातें मुझे मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुयीं। मुझे यह अनुभव होने लगा कि मैं एक जाल में आ फंसा हूं और पाकिस्तान सरकार काश्मीर पर आक्रमण में मुझे एक कठपुतली के रूप में प्रयुक्त करना चाहती है। मैं दुविधा में फंस गया। यदि मैं इन्कार करता, तो मुझे यकीन था कि मैं कत्ल कर दिया जाता। इस पर मैंने बुद्धिमत्ता से काम लेने का विचार किया और मैंने उन्हें यह झूठा आश्वासन दे दिया कि मैं 'आजाद काश्मीर'—सरकार की यथासम्भव सहायता करूंगा। किन्तु अस्थायी सरकार में अल्प संख्यकों का प्रतिनिधित्व करने के बारे में मैंने उनसे कहा कि ऐसा व्यक्ति तो रियासत का ही होना चाहिए।

आजाद काश्मीर

उस रात मेरी एसोसियेटेड प्रेस के मैनेजर मालिक ताजुद्दीन से लम्बी बातचीत हुई और उन्होंने मुझे सारी स्थिति सविस्तार बतलाई। दूसरे दिन मैं एसोसियेटेड प्रेस के दफ्तर में बैठा हुआ था कि रावलपिंडी से एक ट्रंक-काल आयी। उस समय दफ्तर में कोई अन्य अधिकारी उपस्थित नहीं था, अतः टेलीफोन मैंने उठा लिया। टेलीफोन पर पाकिस्तान सेना के जनरल हैड क्वार्टर के जन सम्पर्क अधिकारी लेफ्टि-कर्नल आल्वी बोल रहे थे। उन्होंने मुझे मुसलमान समझ कर (उस समय तक एसोसियेटेड प्रेस के सब अ-मुस्लिम कर्मचारी वहां से जा चुके थे) कहा कि रामकोट की दिशा से आज रात निश्चित रूप से आक्रमण हो जायगा, किन्तु यह समाचार पाकिस्तान से प्रसारित न किया जाये। उन्होंने कहा कि जब यह समाचार श्रीनगर से दिल्ली और वहां से पाकिस्तान पहुंचेगा, तब पलन्दरी से प्रकाशित बता कर अस्थाई 'आजाद काश्मीर' सरकार के नाम से एक विज्ञप्ति जारी की जायगी। उन्होंने फोन पर वायदा किया कि रावलपिंडी से यह विज्ञप्तियां ९ बजे के रेडियो समाचारों से पहले ही भेज दी जाया करेंगी।

मैं बड़ी कठिनाई में पड़ गया और मुझे लाहौर से भागने का कोई उपाय नहीं सूझता था। दूसरे दिन मैंने बड़े आश्चर्य के साथ लाहौर के पत्रों में अपने नाम से जम्मू के उपद्रवों के बारे में एक वक्तव्य देखा। मैंने ताजुद्दीन से इसका विरोध किया और पूछा कि मेरे नाम से इस प्रकार का वक्तव्य क्यों दिया गया है। मुझे बताया गया कि यह सब मुझे पाकिस्तान में प्रसिद्धि दिलाने और अस्थायी सरकार में शामिल करने के लिए मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से किया गया है।

२५ अक्टूबर को रावलपिंडी डिवीजन के कमिश्नर ख्वाजा अब्दुर्रहीम के साथ मैं रावलपिंडी पहुंचा, जहां मैं सरदार इब्राहीम और मन्त्रिमण्डल के अन्य सदस्यों से मिला। इन लोगों को मैं पहले से जानता था। मुझसे 'आजाद काश्मीर' सरकार में सूचना विभाग ग्रहण करने को कहा गया।

उस समय स्थिति बड़ी अस्पष्ट थी और कोई भी वास्तविक सैनिक स्थिति के बारे में नहीं जानता था। लोग तरह तरह की अफवाहें उड़ा रहे थे। अधिकारियों और फौजियों-का ख्याल था कि भारतीय सेनाएं जम्मू प्रान्त में प्रविष्ट हो जायेंगी और वे उन्हें रोकने के लिए कठुआ सड़क को काटने की बात सोच रहे थे। इन लोगों में यह विश्वास पाया जाता था कि आक्रान्ता कम से कम काश्मीर घाटी पर तो अधिकार कर ही लेंगे। सरदार इब्राहीम और उनके साथी किसी भी क्षण श्रीनगर जाने को तैयार बैठे थे। महाराजा के श्रीनगर से भागने की खबर पाकिस्तान हाई कमिश्नर के दिल्ली आफिस से पहुंच चुकी थी।

२७ अक्टूबर को जब उन्होंने यह सुना कि भारत हवाई जहाजों से फौज भेज रहा है, तो उनसे बड़ा सदमा पहुंचा। बारामूला में कबायलियों को तुरन्त हवाई अड्डे पर अधिकार करने के लिए सन्देश भेजे गये।

मैं नहीं समझ पाता था कि ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए। मैं एक कैदी की भांति था और भारत को बच भागने का प्रयत्न करना मृत्यु को आह्वान करना था। २९ अक्टूबर को जब खान अब्दुल कयूम खां जिन्ना और लियाकत अली से मिलने लाहौर गये, तो रास्ते में एक रात के लिए रावलपिंडी उतरे। मैंने उनसे प्रार्थना की कि मुझे किसी प्रकार पेशावर भिजवा दिया जाए। उन्होंने मेरे साथ बड़ी भद्रता से बातचीत की, किन्तु बाद में यह कह कर कि काश्मीर के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाला और कोई योग्य व्यक्ति हमारे पास नहीं है, मुझ से 'आजाद काश्मीर' के प्रचार विभाग को सम्भालने का आग्रह किया।

मैंने लाचारी में करीब तीन मास तक 'आजाद काश्मीर' सरकार के जन-सम्पर्क विभाग के अध्यक्ष का कार्य किया। इस बीच में पाकिस्तान के जासूसी विभाग ने मेरे विरुद्ध यह रिपोर्ट कर दी कि मैं भारत भागने की कोशिश कर रहा हूं। किन्हीं विदेशी पत्रकारों ने मुझे धोखा दिया था और उन्होंने ही जासूसी विभाग को उक्त सूचना दी थी। इसके पश्चात् ख्वाजा अब्दुर्रहीम ने मुझे कबायलियों के हाथों मरवाना चाहा, किन्तु मैं भाग कर खान अब्दुलकयूम के पास पेशावर पहुंच गया। मेरे शिकायत करने पर उन्होंने बताया कि जब तक काश्मीर का सवाल खत्म न हो जाए, तब तक मुझे पुलिस की देख-रेख में रहना पड़ेगा, क्योंकि पाकिस्तान सरकार को भय है कि कहीं मैं भारत पहुंचकर नेहरू सरकार को सारी वस्तुस्थिति प्रकट न कर दूं और मित्रराष्ट्र संघ में काश्मीर का मामला उपस्थित होने पर पाकिस्तान सरकार की इस धोखाधड़ी की कलई न खुल जाए।

बच कर आया

अतः मैं चार मास तक सीमाप्रांत में नजरबन्द रहा और पाकिस्तान सरकार ने मेरी जगह डा० तासीर और हफीज जालन्धरी को नियुक्त कर दिया। किन्तु पाकिस्तान सरकार को उनके कार्य से सन्तोष नहीं हुआ और उन्हें शीघ्र ही हटा दिया गया। इस पर फिर मुझ से उक्त कार्य को सम्भालने के लिए कहा गया और सरदार इब्राहीम मेरे पास एबटाबाद आये और मुझ से पिछली घटनाओं के लिए माफी मांगने लगे। मैंने इसे स्वर्ण अवसर समझा और सोचा कि शायद अब भागने का मौका मिल जाए। मैंने उन से कहा कि मैं इस काम को करने को तैयार हूं पर मुझे पहले 'डान' के सम्पादक अल्ताफहुसैन और सैयद अलीजवाद से प्रचार कार्य के सम्बन्ध में परामर्श कर लेना चाहिये। इस पर मुझे १८ मई को एक फौजी हवाई जहाज द्वारा कराची भेज दिया गया। कराची में उतरते ही मैं मैक्लड-रोड पर एयर सर्विसेज आव इण्डिया के दफ्तर में पहुंचा और दो घण्टे बाद जामनगर रवाना होने वाले एक हवाई जहाज में एक भिन्न नाम से अपनी सीट बुक कराली। इस प्रकार मैं पाकिस्तान से भागने में सफल हो गया।

अब मैं काश्मीर पर आक्रमण के सम्बन्ध में उन ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डालूंगा, जिनके विषय में मेरी व्यक्तिगत जानकारी है। जन-सम्पर्क विभाग का अध्यक्ष होने के कारण मुझे प्रायः सब जानकारी हासिल हो जाती थी और उक्त पद से पृथक होने तक, मुझे काश्मीर का एक विशेषज्ञ समझा जाने के कारण, कोई भी कार्य मेरे परामर्श के बिना नहीं किया जाता था।

शेख अब्दुल्ला के 'नेतृत्व' [?] विद्रोह कराने की योजना

पहले तो जिन्ना साहब ने नवाब भोपाल के जरिये शेख को यह विश्वास दिलाया कि पाकिस्तान काश्मीर की स्वतन्त्रता का सम्मान करेगा, किन्तु जब उन्होंने अन्य रियासतों को एक के बाद एक भारतीय संघ में शामिल होते देखा, तो उन्हें भय हुआ कि कहीं काश्मीर भी उनके हाथ से न निकल जाए। इस पर

[शेष पृष्ठ २९ पर]

काश्मीर-अभियान का पाकिस्तानी षड़यन्त्र

(पृष्ठ १० का शेष)

उन्होंने एक ओर मुस्लिम कान्फ्रेंस द्वारा रियासत को पाकिस्तान में शामिल करने के पक्ष में आन्दोलन कराया और दूसरी तरफ साम्प्रदायिक उपद्रव कराने के उद्देश्य से वहां शस्त्रास्त्र व गोलाबारूद भिजवाया। बहुत से भूतपूर्व सैनिक भी रियासत में भेजे गये और उन्हें सभी मुख्य नाकों पर विशेष स्थिति के लिए तैयार रहने का आदेश दे दिया गया।

पाकिस्तान के अधिकारियों ने शेख अब्दुल्ला की नेशनल कान्फ्रेंस से भी बातचीत चलाने का प्रयत्न किया। रियासत की प्रजा को अपनी असहाय अवस्था का अनुभव कराने के लिए सब आवश्यक सामग्री भेजनी बन्द कर दी गयी और शेख अब्दुल्ला से कहा गया कि यदि वह रियासत को पाकिस्तान में शामिल किये जाने के पक्ष में प्रयत्न करे, तो काश्मीर को विशेष संरक्षण दिये जाएंगे।

यह सोचा गया कि यदि शेख अब्दुल्ला रियासत को पाकिस्तान में मिलाने के पक्ष में हो जाए, तो उनसे इस सम्बन्ध में एक सार्वजनिक घोषणा कराई जाए और यदि महाराजा इस सलाह को मानने से इन्कार करे, तो रियासत भर में एक साथ विद्रोह करा दिये जाए। उपद्रवों से पहले शेख अब्दुल्ला और उनके साथियों को पाकिस्तान बुला लिया जाए और शेख अब्दुल्ला की अध्यक्षता में एक अस्थायी सरकार गठित कर दी जाए।

तथापि, पाकिस्तान सरकार को इस योजना के कार्यान्वित होने की कमी आशा न थी। शुरू से ही जिन्ना साहब यह जानते थे कि शेख अब्दुल्ला उनके जाल में न फसेंगे। किन्तु असल योजना इस प्रकार थी: नेशनल कान्फ्रेंस के साथ चल रही इन चर्चाओं के आधार पर, शेख अब्दुल्ला को पाकिस्तान में आमन्त्रित किया जाय और यह आदेश जारी कर दिये गये कि उनका खूब शानदार स्वागत किया जाए। यदि वह पाकिस्तानी हिटलर की बात मान लें, तब तो अच्छा अन्यथा कराची में शेख अब्दुल्ला की जिन्ना से मुलाकात के दो दिन बाद काश्मीर पर चढ़ाई कर दी जाए। योजना यह थी कि यदि शेख अब्दुल्ला जिन्ना की बात न मानें, तो उन्हें गुप्त रूप से गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान को भेज दिया जाए और उनकी अध्यक्षता में एक अस्थायी सरकार स्थापित हो जाने की घोषणा कर दी जाए। बाद में उनके नाम से वक्तव्य और घोषणाएं प्रकाशित की जाती रहें, जबकि वह वस्तुतः किसी जेल में पड़े सड़ रहे हों।

इस प्रकार जब कबायली काश्मीर पर हमला बोलें, तो बेचारे काश्मीरी यह समझें कि उन्हें शेख अब्दुल्ला ने भेजा है। मैं नहीं जानता कि शेख अब्दुल्ला ने इस शरारत को पहले से भांप लिया था किन्तु जब वह पं० नेहरू से मिलने दिल्ली गये, तो पाकिस्तान सरकार की यह साजिश धरी रह गयी और उन्होंने रियासत पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया।

पहले पाकिस्तान वालों ने सोचा कि १५ अगस्त को इस बहाने से भिम्बर में साम्प्रदायिक दंगा कराया जाए कि पाकिस्तान के झण्डे का अपमान किया गया है। यदि दंगा हो जाए तो बाद में पुंछ में आम विद्रोह कर दिया जाए। कादियानी नेता मुहम्मद अहमद ने मुस्लिम कान्फ्रेंस के अध्यक्ष चौधरी हमीदुल्ला खां को इस सिलसिले में सैंकड़ों राइफिलें और बहुत सा गोला बारूद दिया। किन्तु यह योजना क्रियान्वित न हो सकी।

सितम्बर के शुरू में, पाकिस्तान सरकार ने अनुभव किया कि दंगे कराने से स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इस पर मरी में लियाकतअली खां ने आक्रमण की योजना तैयार करने के लिए एक गुप्त बैठक बुलायी। इसमें ममदोत, अब्दुलकयूम, शौकतहयात, ख्वाजा अब्दुर्रहीम, कर्नल अकबर खां, कर्नल शेरखां, कर्नल हामिद अली तथा बहुत से आजाद हिंद फौज के भूतपूर्व अफसर उपस्थित थे।

लियाकत ने पश्चिमी पंजाब और सीमाप्रांत के प्रधान मन्त्रियों को आदेश दिया कि वे काश्मीर पर हमले की योजना तैयार करने में फौजी अफसरों को प्रत्येक किस्म की सहायता दें और विविध नाकों पर आवश्यक लश्करों को जमा करने में सहयोग दें। पाकिस्तान सेना के एडजुटेण्ट जनरल मियां मोहम्मद अन्वार को इस कार्य के लिए आवश्यक जन देने की हिदायत कर दी गयी।

पहले यह सोचा गया कि पुंछ क्षेत्र में विघटित ८०,००० सैनिकों को शस्त्रास्त्र पहुंचा कर उन्हें विद्रोह के लिए उभारा जाये, किन्तु रियासती सेना ने उन्हें दबा दिया। इस पर मीरपुर, भिम्बर, कुमेतगढ़ और कठुआ क्षेत्रों में सशस्त्र गिरोहों के हमले करा के रियासती सेना को बिखेर देने की चाल चली गयी, जिसमें पाकिस्तान को काफी सफलता मिली और पुंछ के बहुत से लोग रावलपिंडी में पहुंच कर नये सिरे से सैनिक शिक्षा लेने लगे।

कबायलियों को भड़काया

सितम्बर के अन्त में कबायलियों में बड़ा असंतोष पाया जाता था। यातायात व्यवस्था के भंग हो जाने के कारण सीमाप्रांत में खाद्य सामग्री की बहुत कमी हो गयी थी और कबायली इलाके में चीजें और भी दुर्लभ थीं। ब्रिटिश फौजों के हट जाने से जो कबायली मजदूरी आदि करके पेट पालते थे, उन्हें बड़ा कष्ट अनुभव हो रहा था। पाकिस्तान भी अपनी फौजों को वहां से हटा रहा था। इससे कबायलियों को यह भी सन्देह होने लगा कि अंग्रेजों के समय उन्हें जो भत्ते मिला करते, वे अब बंद हो जाएंगे। ऐसे समय सीमाप्रांत के तत्कालीन गवर्नर कनिंघम ने एक चालाकी खेली। उसने पाकिस्तान सरकार से कह कर रावलपिंडी में फौजी अफसरों की एक बैठक बुलायी, जिसमें कबायलियों को काश्मीर के हमले में प्रयुक्त करने का निश्चय किया गया। इस बैठक में पाकिस्तान सेना के प्रधान सेनापति जनरल मेसर्वी और जनरल ग्रेसी भी उपस्थित थे।

कबायलियों से कहा गया कि वे काश्मीर पर हमले में भाग लें और वहां जितनी दौलत चाहें लूट लें। उनमें मुल्लों द्वारा यह प्रचार भी किया गया कि पूर्वी पंजाब में करीब एक करोड़ मुसलमानों को कत्ल कर दिया गया है। सीमाप्रान्त के जिन पठानों को बम्बई या कलकत्ता से चिट्ठियां आती थीं, उन्हें डाकखाने में ही नष्ट कर दिया जाता और यह प्रचार किया जाता था कि बम्बई और कलकत्ता में उनके सम्बन्धियों को मार डाला गया है। यह बात मुझे स्वयं मलाकंद के पोलिटिकल एजेंट शेख महबूब अली ने बतायी थी।

अभियान आरम्भ

शुरु में प्रान्तीय सरकार द्वारा इन कबायलियों को पेशावर की पुलिस लाइन्स में लाया गया, जहां उनके लिए यातायात की सब व्यवस्था कर दी गयी थी। २१ अक्टूबर को सीमा प्रान्त और पश्चिमी पंजाब के विविध भागों से आकर २५० से अधिक लारियां एकत्र हो गयीं और करीब ५००० कबायलियों को लेकर गढ़ी हबीबुल्ला और कोहाला रवाना हो गयीं। वे एक भी गोली चलाये बिना मुजफ्फराबाद पहुंच गये और सब से पहली लड़ाई शहर में लड़ी गयी। रियासती सेना को लड़ाई के लिए सगठित होने से पहले ही कबायली उन पर हावी हो गये और जो सैनिक कोहाला की ओर भागे, उन्हें उधर से बढ़ने वाले कबायलियों ने कत्ल कर दिया। पहले यह सोचा गया था कि मुजफ्फराबाद की ओर से बढ़ने वाले कबायली उड़ी में पुंछ वालों से आ मिलें और फिर दोनों मिल कर श्रीनगर पर हमला बोलें। अच्छे लड़ाकू होते हुए भी कबायलियों ने अपना अधिकांश समय लूटमार करने और सिक्खों को मारने के लिए उनकी तलाश करने में लगा दिया वे नियत समय से तीनदिन बाद बारामूला पहुंचे और तब तक उनके पास लूट का काफी सामान हो गया था। वे चाहते थे कि पहले वे इस माल को अपने घरों में रख आयें और फिर आगे की लड़ाई लड़ें। पाकिस्तान के शहरी व सैनिक अफसर भी लूटमार करने और महिलाओं का शिकार करने में व्यस्त थे। पहले यातायात इतना अस्तव्यस्त था कि बारामूला में जो कबायली थे, उन्हें प्रायः यह सुनने में आता कि श्रीनगर का पतन हो गया है और जो लोग उड़ी और मुजफ्फराबाद में थे, उन्हें यह मालूम तक न था कि भारतीय सेनाएं हवाई जहाजों से भेजी जा रही हैं। २८ अक्टूबर को लियाकत ने कयूम और ममदोत को बुलाया और उन दोनों से गढ़ी हबीबुल्ला पहुंच कर कबायलियों से यह अपील करने को कहा कि वे जल्दी ही श्रीनगर पर आक्रमण कर दें, अन्यथा बाजी हाथ से निकल जाएगी।

पाकिस्तान सरकार के तत्कालीन असिस्टेण्ड डिफेंस सेक्रेटरी मेजर ए० एस० बी० शाह चार या पांच बार उड़ी गये और शायद एक दफा बारामूला भी। अन्तिम बार उनकी कार को एक गोली भी लगी और वह बाल बाल बच गये। किन्तु निरन्तर प्रयत्नों

के बावजूद कबायली श्रीनगर के हवाई अड्डे पर अधिकार नहीं कर सके और इस बीच में, भारतीय कुमुक निरन्तर श्रीनगर पहुचती रही।

मैं उन दिनों पेशावर में प्रधानमन्त्री की कोठी पर ठहरा हुआ था। जिन्ना और लियाकत प्रतिदिन दस बारह बार अब्दुल कयूम को युद्ध की स्थिति जानने के लिए फोन किया करते थे। सीमा प्रांत के प्रधानमन्त्री ने अपने यहां एक वायरलेस ट्रांसमिटर और रिसीवर लगा रखा था और समाचार जानने के लिए एक संकेत-यन्त्र पट्टन भेज दिया था। जिन्ना श्रीनगर की लड़ाई को बहुत जल्द समाप्त कराना चाहते थे। फलतः उन्होंने लाहौर से आदेश भेजा कि बेगम शाहनवाज के भतीजे कर्नल अकबर खां के नेतृत्व में फ्रांटियर कान्स्टेबुलरी प्राइवेट पुलिस, लेबर स्काउटों तथा खस्सादारों को सादे कपड़ों में बारामूला भेजा जाए और टैकनिकल आदमी भी उनके साथ जाएं। उनके बारामूला में पहुंचने से पहले ही कबायलियों ने सीधा भागना शुरू कर दिया था और भारतीय सेना ने बिना विशेष कठिनाई के बारामूला पर पुनरधिकार कर लिया था। कर्नल अकबर खां को उड़ी के निकटवर्ती पुल उड़ाने और प्रत्येक मूल्य पर उड़ी के मोर्चों पर जमे रहने का आदेश दिया गया अब तक पाकिस्तान के अधिकारी यह समझ नहीं पाये हैं कि भारतीय सेना उड़ी में पहुंच कर क्यों रुक गई और मुजफ्फराबाद क्यों नहीं पहुंची।

इस समय

इन दिनों कबायलियों को लड़ाई में अधिक प्रयुक्त नहीं किया जा रहा है। लूट की नई सम्भावनाएं समाप्त हो जाने से वे इस लम्बी लड़ाई से उकता गये हैं और अपनी भोजन आदि की व्यवस्था से बहुत असन्तुष्ट हैं। पश्चिमी पंजाब में तो वे इतने अशान्तिप्रिय हो गये हैं कि लोग उनसे घृणा तक करने लगे हैं और उन्हें अधिक संख्या में नगरों में प्रविष्ट नहीं होने दिया जाता। जिन कबायलियों को अब भी मोर्चे पर भेजा जाता है, उन्हें रात को स्पेशल ट्रेन से लाकर दिन चढ़ने से पहले ही मोर्चे पर भेज दिया जाता है, ताकि उन्हें स्थानीय दूकानों को लूटने का अवसर न मिल सके।

कबायली अब स्पष्ट रूप से यह कहने लगे हैं कि वे टैंकों और हवाई जहाजों के खिलाफ नहीं लड़ सकते। उन का उत्साह मन्द पड़ता देख कर पाकिस्तान के सैनिक अधिकारी उन पर अनुशासन-हीनता का दोष लगाने लगे हैं और फलतः अब मोर्चे पर प्रतिदिन पाकिस्तान सेना के सैकड़ों नियमित सैनिक भेजे जाने लगे हैं। कर्नल अकबर खां की जगह—जिन्हें जनरल तारक के नाम से प्रसिद्ध किया गया—अब ब्रिगेडियर शेर खां को लड़ाकू सेनाओं का सेनापति बनाया गया है।

पाकिस्तान सेना की सप्लाई कोर ने अब रसद का कार्य भी अपने हाथ में ले लिया है। काश्मीर में लड़ने वालों को रसद सप्लाई कोर द्वारा दी जाती है। 'आजाद काश्मीर' सेना के आदमियों को अब बाकायदा वेतन भी दिया जाने लगा है और यह अदायगी पाकिस्तान सेना का अकाउन्ट्स सेक्शन करता है।

आजाद काश्मीर रेडियो मरी में है और इसे सैनिक अधिकारियों द्वारा फिट किया गया है। मरी का चुनाव विशेष रूप से इस लिए किया गया कि मरी और पलन्दरी दोनों एक ही 'बीम लाइन' पर स्थित हैं और यह पता लगाना कठिन है कि वस्तुतः यह स्टेशन कहां कायम किया गया है। पाकिस्तान सरकार यह कह सकती है कि यह स्टेशन पलन्दरी में है, जहां कि 'आजाद काश्मीर' का सदर मुकाम कभी भी पलन्दरी में नहीं रहा और शुरू से वह रावलपिंडी में ही है।

मैंने ऊपर काश्मीर के मामले में अमेरिका की दिलचस्पी का जिक्र किया है। इसके मेरे पास कई प्रमाण हैं। जब पाकिस्तान स्थित अमेरिकन राजदूत लेवा दूरे में गये, तो वहां एक कबायली नेता शहजादा फखरुद्दीन ने उनसे पूछा कि अमेरिका मित्रराष्ट्र संघ में भारत का समर्थन करेगा या पाकिस्तान का। श्री लुईस ने मुस्करा कर और शान्त भाव से कहा कि अमेरिका की सहानुभूति निश्चित रूप से पाकिस्तान के प्रति है। मैंने यह भी सुना था कि अमेरिकन दूतावास का मिलिटरी एटेची उड़ी और नौशेरा के मोर्चों पर भी स्थिति का निरीक्षण करने गया था।

—अनूदित

अपनी जानकारी बढ़ाइये !

★

बादलों का भी क्रय-विक्रय होगा

वर्षा का न होना दैवी प्रकोप समझा जाता है। वर्षा न होने पर यज्ञों का अनुष्ठान किया जाता है। गलियों में बच्चों की टोलियां 'बरसो राम धड़ाके से' के नारे लगाती हुई वर्षा की याचना करती हैं। परन्तु अब वे दिन दूर नहीं हैं जब वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा वरुण देवता पूर्ण तरह से हमारे वश में हो जायगे।

४ अप्रैल सन् १९४७ को वैज्ञानिक विधि से कई हजार मन पानी अमेरिका के एक स्थान पर बरसाया गया। इस कृत्रिम वर्षा का श्रेय पोर्टलैंड ओरिगो-नियन के ऋतु विभाग के अध्यक्ष कर्नल 'एकली एलीसन' को है। कर्नल एलीसन महोदय हवाई जहाज में उड़कर बादलों के ऊपर पहुंच गये। ये बादल बिना बरसे ही नगर के ऊपर से आगे चले जा रहे थे और कोई सम्भावना न थी कि ये बरसते। बड़े वेग से जाने वाले इन मेघों में कर्नल एलीसन ने ठोस कार्बन डाइआक्साइड की गोलियां छितरानी आरम्भ कीं ठीक उसी प्रकार से, जैसे किसान खेतों में बीज बोते हैं। थोड़ी ही देर के अनन्तर न बरसने वाले ये बादल घोर काले पड़ गये, पानी से लद गये और बड़े जोर से न केवल पानी की ही वर्षा हुई, प्रत्युत ओले भी बरसे। नीचे खेतों में खड़ी हुई जनता इस मूसलाधार वर्षा को देखकर चकित हो गई।

पन्द्रह मिन्ट के बाद ही कर्नल एलीसन ने एक दूसरे मेघमण्डल में नौ सेर शुष्कहिम अर्थात् ठोस 'कार्बन डाई आक्साइड' की गोलियों को छितराया। और फिर वे अपने इस प्रयोग के फल को देखने के लिए शीघ्रतापूर्वक हवाई जहाज से उतर कर नीचे आये। उन्होंने अपनी आंखों से देखा कि जिन बादलों में उन्होंने शुष्क हिम के बीज बोये थे, उनसे बर्फ के फाहों की वर्षा पृथ्वी पर हो रही है। ... मिनट तक वायुयान से उन्होंने इस ...म वर्षा के कौतूहल का स्वाद लिया।

कृत्रिम वर्षा का प्रथम विचार प्रोफेसर लैंगम्योर के हृदय में उत्पन्न हुआ। ये महोदय अमेरिका के प्रसिद्ध रसायनज्ञ हैं और इन्हें अपनी खोजों के उपलक्ष में नोबेल पुरस्कार भी मिल चुका है।

वैज्ञानिक वर्षा की यह कृत्रिम विधि युद्ध के कार्य के लिए आविष्कृत की गयी थी। अब वे दिन दूर नहीं हैं जब कि शत्रुओं की सेना को डुबाने के लिए इस प्रकार की वैज्ञानिक वर्षा की जाया करेगी। इन कृत्रिम बादलों की ओट में छिपे-छिपे ऊपर हमारे वायुयान शत्रुओं के देश में अनजाने ही प्रविष्ट हो सकेंगे। बहुत सम्भव है कि शीघ्र ही मेघों पर अधिकार जमाने के लिए परस्पर युद्ध हों। ... किसी पड़ोसी राष्ट्र के हमारी ... हो गई और यदि उनके राष्ट्र में बरसने वाले मेघ हमारे राष्ट्र में होकर जाते हों, तो शायद हम उन्हें वहां पहुंचने देने से पूर्व ही अपने ही देश में बरसा लें और वे तरसते रह जायं। सम्भव है कि लोग मेघों का व्यापार करने लगें। आज तो ये बातें आश्चर्यजनक मालूम होती हैं।

●

आंख की चिकित्सा

कुछ समय पहले एक कैनेडियन डाक्टर ने मेस्मरेजम के जोर से बिना कष्ट के प्रसव कर दिखाया था। उसी डाक्टर ने अब मेस्मरेजम से एक काने लड़के की खराब आंख ठीक कर दी है। उक्त लड़के की आंख दस वर्ष पहले कैंची लग जाने से फूट गई थी। आंख का घाव ठीक हो जाने पर भी वह उस आंख से देख नहीं सकता था। मेस्मरेजम के जोर से डाक्टर ने उसे सुला दिया और कुछ प्रश्न पूछने के बाद कहा कि उसकी आंख में कोई खराबी नहीं। वह लड़का जागा, तो उसे ठीक तरह दिखाई देने लगा।

युक्त प्रान्त के लिए नामों के सुझाव

युक्त प्रान्त का नाम क्या हो, यह सवाल प्रान्तीय सरकार के सामने काफी अर्से से है। लेजिस्लेटिव कौंसिल के पिछले अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास हुआ था कि युक्तप्रान्त का कोई नया नाम रख दिया जाना चाहिये। मालूम हुआ है कि इस सम्बन्ध में निम्नांकित नये नामों की सूची प्राप्त हुई है:—

आर्यावर्त, आर्यावर्त प्रदेश, अवध, भारतखण्ड, ब्रजकोशल या ब्रजकोशल, ब्रह्मावर्त, भागीरथ प्रदेश, ब्रह्म देश, ब्रह्मावर्त प्रान्त, हिन्दुस्थान, हिमालय-कोशल, कृष्ण-कोशल प्रान्त, मध्य-देश, नैमिषारण्य प्रदेश, नव-हिन्द, रामकृष्ण-प्रान्त, रामकृष्ण-प्रदेश, श्री रामकृष्ण प्रान्त, उत्तराखण्ड।

डर्बी की घुड़दौड़

डर्बी की घुड़ दौड़ में एक साल ट्रेनिंग पाये तीन साल की उम्र के घोड़े दौड़ते हैं और जो घोड़ा जीतता है उसे साल भर का सबसे अच्छा घोड़ा होने का सेहरा मिलता है। डर्बी जीतने की इच्छा घुड़ दौड़ के घोड़े रखने वाले सभी मालिकों और सवारों को होती है। लाखों ब्रिटेनवासी और दुनिया के अन्य शौकीन इस दौड़ में दिलचस्पी लेते हैं। डर्बी के बारहवें अर्ल एडवर्ड स्मिथ स्टैनली ने इस दौड़ को शुरू किया —डर्बी दौड़ १७८० में शुरू हुई।

इस साल की डर्बी की दौड़ में कई विशेषताएं हैं। इस साल ३० से अधिक घोड़े इस दौड़ में दौड़ेंगे। जो घोड़ा जीतेगा उसके मालिकों को १३००० पौंड मिलेगा। इतना बड़ा इनाम डर्बी में आज तक कभी नहीं रखा गया था। केवल इसी साल दो हजार गिनी की रेस में बड़ौदा के महाराज को 'माई बाबू' घोड़े पर १४ हजार पौंड इनाम मिला था, जो ब्रिटेन की आज तक की दौड़ों में सब से अधिक था।

१८६२ की डर्बी में सबसे अधिक ३४ घोड़े दौड़े थे। इस साल ३६ घोड़ों के नाम लिखाये गये हैं। डर्बी की दौड़ पहाड़ी ढालुएं रास्ते पर १॥ मील की होती है इसलिए खतरनाक भी रहती है।

आम तौर से यह माना जा रहा है कि बड़ौदा का 'माई बाबू' घोड़ा यह जीत लेगा। इसका सवार चार्ली स्मर्क भारतीय मालिकों के दो घोड़ों, सिकन्दर-लैंड और महमूद को जिता चुका है। 'दि कावलर' का नाम भी बहुत लिया जा रहा है। इसका सवार रिचार्ड पौंसड को छोड़ कर इस साल की और बड़ी-बड़ी घुड़ दौड़ें जीत चुका है। दो हजार गिनी की रेस में कावलर 'माई बाबू' से सिर्फ सिर के अन्तर से हार गया था।

इस दौड़ के लिए फ्रेंच शौकीन 'माई लव', 'रायल ड्रेक' और 'जेडा' इन तीन घोड़ों के नाम भी ले रहे हैं। यह घोड़ा पिछले साल के डर्बी विजेता पर्ल ड्राइवर का छोटा भाई है। इनके अलावा बैलोनेल (सवार एडगर ब्रिट) ब्लैक हारविन, सोलर स्लिपर, टार्मी, टोरी सेवेअड, क्रोटोमन, अम्बर और प्राइड आफ इंडिया – इन घोड़ों के नाम भी लिये जा रहे हैं।

अफीमची का अपूर्व बलिदान

रामेश्वर नामक एक अफीमची ने अपने अद्भुत आत्म-बलिदान से देश के नशानिषेध के इतिहास में अमर स्थान प्राप्त कर लिया है। कानपुर में नशानिषेध लागू होते ही उसने अफीम छोड़ दी थी। उसकी स्थिति दिनोंदिन खराब होने लगी। लोगों ने बहुत समझाया कि अफीम खाओ। पर उसने दृढ़ उत्तर दिया कि 'हमारी सरकार ने अफीम खाने की मनाही की है।'

उसकी हालत यहां तक बिगड़ी कि अस्पताल ले जाना पड़ा। बहुत समझाने पर भी उसने अफीम खाने से इनकार कर दिया। अन्त में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके अन्तिम शब्द थे 'हमारी सरकार ने मना किया है, हमें अफीम न खानी चाहिये।'

●

नर्मदा ताप्ती बांध योजना

तीन इंजिनीयर तथा उनके चुने हुए स्टाफ ने सी० पी० तथा गुजरात की नर्मदा तथा ताप्ती नदियों से बिजली पैदा करने की जो योजना है उसके लिये समुचित स्थान तथा प्रारम्भिक कार्यों की देख रेख के लिये अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इस बांध के तैयार हो जाने पर नर्मदा और ताप्ती नदियों की बाढ़ रोकी जा सकेगी, करीब १० लाख एकड़ जमीन की सिंचाई होगी, जल मार्ग की सुविधा होगी। तथा १० लाख किलोवाट बिजली पैदा होगी। ये दोनों ही नदियां बहुत समय से बरसात के दिनों में बाढ़ के कारण इस इलाके की जनता के जीवन के लिये महान् कष्ट का कारण बनी हुई हैं। बम्बई सरकार ने इन नदियों में बांध बनाने के विभिन्न लाभों पर केन्द्रीय सरकार से परामर्श मांगा है।

सी० पी० तथा बरार की सरकार ने भी इस का समर्थन किया है। जलपथ के डाइरेक्टर सरदार मान सिंह को इसकी सम्भावनाओं की जांच के लिये नियुक्त किया गया है।

अब यह अनुमान लगाया गया है कि ताप्ती नदी से उतनी ही जमीन सींची जायगी तथा उतनी ही बिजली पैदा की जा सकेगी जितनी कि अमेरिका की टेनेसी नदी से पैदा की होती है। नर्मदा से १५ से २५ गुना अधिक उत्पत्ति की सम्भावना है। भारत सरकार बम्बई सरकार तथा मध्य भारत सरकार के अतिरिक्त वे १३ राज्य जो बम्बई में मिल गये हैं, भी नर्मदा ताप्ती योजना में बड़ी दिलचस्पी रखते हैं।

———

.//

गणित के प्रतिभाशाली बालक

[डी० इङ्गलैण्ड]

६७८६७२, × ४५७८६३६७६×७२ कितना होगा। निस्सन्देह यह सवाल एक ही परेशानी पैदा करने वाली चीज है परन्तु संसार के असाधारण गणित मेधा-सम्पन्न बच्चों के लिए (ये बच्चे लड़के ही होते हैं) यह सवाल एक साधारण दिमागी गणित का सवाल होगा जिसको वे बड़ी आसानी से बिना कागज पैंसिल हल कर लेते हैं।

लम्बा गणित करना और हिसाब लगाने का काम आजकल मशीनों से लिया जाता है। ऐसे लोगों को जो ऐसे सवाल आसानी से बिना कागज पेंसिल के थोड़ी ही देर में हल कर देते हैं मानव गणित मशीन ही कहना चाहिये। ऐसी मानव मशीनों की सूची में हाल में दाखिल हुआ नाम एक दक्षिण अफ्रीकी फ्रैंक जे० स्मिथ है। प्रोफेसर जे० एम बीए (स्टेलेन बोश यूनिवर्सिटी) ने बताया है कि यह नौजवान जुबानी या दिमागी अङ्कगणित से उन सवालों को जे० एम० उसके चौथाई समय में हल कर देता है जो उन्हें" लागिरिथम और गणित मशीनों से हल करने में लगता है। जब वह फ्रैंक स्कूल का विद्यार्थी था वह बड़े बड़े कठिन २ गणित प्रश्नों को बिना कागज कलम के हल कर लेता था परन्तु इस को अच्छे नम्बर कभी नहीं मिलते थे क्योंकि उसकी रीति या पद्धति परम्परागत नहीं होता था जैसा शिक्षक चाहते थे।

अभी हाल ही में दो एक महीने को एक ऐसे ही जन्म जात गणितज्ञ का मेलबोर्न में पता लगा। ७ वर्ष की आयु में पाठशाला से निकाले के बाद वह तीन ही महीने में वह टेक्सपेयर्स ऐसोसियेशन (कर दाता सङ्घ) का बड़ा सलाहकार हो गया उसकी महत्वकांक्षा है कि वह एक ऐसा आदमी के रूप में विख्यात हो जो टेक्स 'कर' के विषय में अन्य किसी से भी अधिक जानता हो।

बहुत से तो ऐसे निकले कि बचपन में ऐसी असाधारण सिद्धता के लोगों को चकित करने के बाद संसार में उन्होंने कोई विशेष हलचल नहीं की ऐसा एक कभी कुछ वर्ष पहले मर गया। एक वह कसीन नीग्रो बालक था जो, लिखना कभी नहीं सीख सका परन्तु जो कठिन कठिन हिसाब मुंहजुबानी की गणना जो कुछ ही सेकिण्डों में कर डालता था। फिर भी उसका अन्त काहिरा के एक सरकारी चिकित्सालय में हुआ। मुहम्मद इस्माइल इस उत्तर में साधारण मान तक समता इतनी कम थी कि वह अपने शरीर की उचित देख रेख नहीं कर पाता था और और मित्रों ने उसे सरकारी चिकित्सालय के संरक्षण में रख दिया था, फिर भी उसकी गणित क्षमताए आश्चर्यजनक थीं।

उसके लिए ६६४ को ६७१ से गुणा आठ सैकिंड में कर डालना साधारण सी बात थी। वह उदल अङ्कों की संख्या को इतनी ही बड़ी संख्या से आसानी से गुणा कर सकता था। वह एक मिनट से भी कम समय में छः अंकों की संख्या का वर्गमूल निकाल सकता था और घनमूल निकालने में भी उसको इससे कुछ ही अधिक समय लगता था। अचम्भे की एक बात और भी थी कि वह अपनी गणना को चाहे जहां बीच में छोड़ दे सकता था और फिर जहा छोड़ा जो होता था वहीं उसे फिर से पकड़ ले सकता था।

मध्य कोर के शिक्षा विभाग के श्री डाइसन ने एक हिन्दू बालक की ऐसी ही सिद्धियों का उल्लेख किया था। यह बालक विकृत शरीर भी था और अशिक्षित भी। वह कम उम्र में ही मर गया। यह बालक तथा लगभग तत्काल ही बड़े बड़े जोड़ कर देता था और वर्गमूल और घनमूल निकाल देता था। ६६३४३६५७ का पचम मूल निकालना उसके लिए कई परेशानी की बात नहीं थी। एक बार मि० डाइसन ने बड़ी मेहनत से आठ या नौ अंकों की संख्या को एक संख्या का घन निकाला और फिर उस बालक को उसका घनमूल निकालने को दिया। लड़के ने इञ्जिनियरिंग कालेज के प्रिंसपल और मद्रास प्रेसीडेन्सी कालेज के गणित के प्रोफेसर को अपने उत्तरों से पूर्ण सतोष दिया।

—

पहेलियां

१—तीन अक्षर का मेरा नाम।
आता हूं रहने के काम॥
रखता चार मात्राओं का तन।
घर कहो या कहदो मकन॥

२— आदि हीन कर उलट इसे,
करदे अंग्रेजी सन।
चरहीन कर मुझे दें दो,
तीस दिनों का सन।
काट पैर अपना,
नहीं खोना चाहिए मान।
सरल करो पहेली को,
सुमनों का अमर दान।

१—(मकान) २—(मानव)

— बाबूलाल नलावेका

—

खटमल — उमासिंह सूद

देवराज ने भाड़ के बिस्तर किये, किया उनमें फलिट का छिड़कान देखो।
कहता आज न दीखेगा कोई खटमल, मिटगया है इनका नाम निशान देखो।
आधी रात को मेरी जब आंख खुली, नजर आए तब खटमल जवान देखो।
दिल घबरा उठा यह देख के सब, क्या पर्वाह थी उन्हें मेहरबान देखो।

बदन उनका था बना हुआ कुआ, खून पी पी हमारा वह शैतान देखो।
उठी "ऊषा" झट पलग छोड़ तब, लगी चुनने वह 'खटमल' भगवान देखो।
चूंगी लेकर उन्हें शहीद किया, दो चार के ये महमान देखो।
उठाया तकिया तो पाई उनकी पलटन, बैठे हुए थे मग्न ध्यान देखो।

एक धक्का तो प्राणों के पड़े लाले, भाग के बचाने लगे वह जान देखो।
पर बचे न "बीबी" की नजर से वह, क्योंकि वह थे खूनी पठान देखो।
उधर 'डैडी भी सोते थे गूढ़ निद्रा, खटमल स्वप्न में भी न पहुंचा ध्यान देखो।
हिलाने की देर थी उनकी खाट को जो, निकल पड़े सैंकड़ों ताना तान देखो।

"बाल मण्डल" तो सोए पसार बाजू, खटमल रखते शायद उनका मान देखो।
"भय्या" कहे फलने दो खूब इन्हें, आखिर हैं बेचारे नादान देखो।
रात नींद भाग गई कुछ हमसे किस खुबली ने था हलकान देखो।
और कोई न सूझा उपाय था जब, किया बदन को लहु लुहान देखो।

एक सांई की जान ने जान हमारी, दूसरा खटमल ने किया हैरान देखो।
चाहे दिल यह दुनिया से खत्म हो सब, पर है यह हस्ती महान देखो।
हार मानते हैं हम सब मिलकर, हैं खटमल वह हम से बलवान देखो।

गुरू और चेला

एक समय की बात है कि एक गुरू और एक चेला, अपने गाव से किसी दूसरे गाव में जा रहे थे। दोनों गावों के बीच लुटेरों और डाकुओं का बहुत डर था। डाकू या लुटेरे एक आदमी को तो पकड़ कर अपने पास कैद कर लेते थे, और दूसरे को रुपये लेने के लिये भेज देते थे। जब तक वह रुपये लेकर न आ जाय तब तक पहले आदमी को नहीं छोड़ते थे।

गुरू जी एक ऐसा मत्र जानते थे, जिसका पूर्णिमा के दिन उच्चारण करने से आकाश से हीरे, जवाहरात की झड़ी लग जाती थी। चेले ने गुरू जी को समझा दिया था कि चाहे जान चली जाये तो भी उस मत्र को न बोलना।

वे बीच रास्ते में आये थे कि डाकुओं के एक समूह ने उन्हें घेर लिया, और गुरू जी को पकड़ कर चेले को १०००) रुपये लाने को भेज दिया।

गुरू जी को छः दिन तक तो कैद रखा और सातवें दिन उनसे कहा— 'यदि कल तक १०००) रुपये नहीं आये तो तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा।' गुरू जी ने उस समय कुछ न कहा।

'अमराई' के लेखक

गतांक मे प्रकाशित 'अमराई' में लेखक का नाम भूल से रह गया था। उसके लेखक 'मनरञ्जन' के सम्पादक श्री चिरञ्जीत हैं।

आठवें दिन डाकुओं का सरदार दो तीन आदमियों के साथ आया और बोला अब तुम्हारा गला कटने वाला है।

गुरू जी चेले की बात को भूल गये और कहा यदि तुम मुझे न मारो तो मैं तुम्हें हीरे, जवाहरात दिखा सकता हूं।'

सरदार 'कैसे गुरू जी' एक मत्र के बल से।

गुरू जी ने उनको सब बातें बता दी और अपने को खुलवा कर पूर्णिमा के दिन मत्र बोल कर खूब हीरे जवाहरात उन्हें दिलवा दिये। डाकुओं ने उनकी गठरी बांध ली और चल पड़े। गुरू जी भी उनके पीछे हो लिये।

मार्ग में उन्हें लुटेरों का समूह मिला और आधा धन मांगा। डाकुओं ने कहा कि हमारे पीछे बुड्ढा आ रहा है। वह मत्र द्वारा बहुत हीरे, जवाहरात दिला देगा।

लुटेरे उनको एकान्त में ले गये, और धन देने को कहा। गुरू जी ने इन्कार कर दिया। इस पर लुटेरों ने उनको कत्ल कर डाला, और डाकुओं से बदला लेने

[शेष पृष्ठ २५ पर]

सुगम वर्ग प्रतियोगिता सं० ३४

पुरस्कार विजेता

सुगमवर्ग प्रतियोगिता सं० ३४ में जिन लोगों ने भाग लिया है, उनमें पुरस्कार विजेता निम्न व्यक्ति हैं। पुरस्कार विजेताओं से निवेदन है कि यदि वे अपना फोटो प्रकाशनार्थ भेज सकें तो उत्तम हो।

प्रथम विजेता — दो गलतियों, ३००) पुरस्कार दिया गया।

श्री मदनबिहारीलाल सक्सेना, गया (बिहार)।

द्वितीय विजेता — तीन गलतियां, पांच व्यक्ति इसमें सफल रहे, प्रत्येक को २५) दिया गया।

१. श्री कृपानारायण आबेरिया, गुना (ग्वालियर) २ श्री कृष्णकान्त मलहोत्रा, दिल्ली। ३. श्री चन्द्रकान्त 'कात्यायन' नागपुर। ४ श्री रिपुदमन अरोड़ा, दिल्ली। ५. श्री नेमीचन्द जैन, आगरा।

तृतीय विजेता — चार गलतियां, १५ व्यक्ति इसमें सफल रहे, प्रत्येक को ५) दिये गये।

१. श्री लालचन्द कक्कड़, अम्बाला। २. श्री जयदेव शर्मा, जयपुर। ३. श्री कुन्दनलाल वर्मा, कन्नौज। ४. पं० हरिहरनाथ शर्मा, अलीगढ़। श्री विमल कुमार, बनारस। ६. कुमारी सुषमा, द्वारा देवकुमार जी, नैनीताल। ७ श्री जगतनारायण चावला, मेरठ। ८. श्री लाला करोड़ीमल अग्रवाल, मुरादाबाद। ९. श्री जगतसिंह ठाकुर, बुलन्दशहर। १०. श्री दशरथकुमार जैन, लश्कर। ११ श्री रामअवतार सिंह वर्मा, मुजफ्फरपुर। १२ श्री निरंजनलाल, मुजफ्फरनगर। १३. श्री वासुदेव शर्मा, मथुरा। १४. श्री कुसुमकुमार 'काश्यप', झांसी। १५. श्री सत्यपाल मेहता, बिजनौर।

विशिष्ट पुरस्कार — निम्न पांच व्यक्तियों को एक एक रुपया विशेष पुरस्कार दिया गया है। इन्हें एक अधिकार-पत्र भेजा जायगा, जिससे वे एक शर्त मुफ्त भर कर भेज सकेंगे। उस पूर्ति के साथ अधिकार-पत्र लौटा देना चाहिये।

१. श्री जुगलकिशोर जी, बादकुई। २ श्रीनानुभाई मिस्त्री, अजमेर। ३. श्री विरोचनकुमार, जोधपुर। ४ श्री योगेश लाल कन्हैयालाल, दिल्ली। ५ श्री चन्द्रशेखर राजपाल, भिवानी।

भूल सुधार

ता० १४ जून के अंक में जो आनन्द पहेली नं० 'ख' छपी है उसमें भूल से नं० ९ बायें से दायें में 'ठा' की जगह 'ट' छप गया है। तथा सीलबन्द उत्तर में ऊपर से नीचे १ में 'दिमाग' की जगह 'दिमाग' छप गया। कृपया पाठक नोट कर लें। —विज्ञापन मैनेजर

स्त्रियां सीता बनें। —राजा जी

और मर्द रावण बन सकते हैं क्या !

× × ×

शरणार्थी स्वतन्त्र भारत की पूंजी हैं। —मोहनलाल सक्सेना

'तभी' पूंजी इधर उधर बिखरी पड़ी है।

नवजात शिशु की लाश मिली। —एक शीर्षक

कोई हर्ज नहीं। आज कल शिशु तो अलग, शिशुओं के चाचाओं की भी दो चार लाशें रोज ही पार्कों आदि में देखी जा सकती हैं।

× × ×

इसराइल को स्वीकार करना एक पक्ष को मदद देना है। —ब्रिटिश सरकार

बिल्कुल ठीक। सुलगती रहेगी तो हाथ सिकते रहेंगे। बुझ गई तो कहीं के न रहेंगे।

× × ×

इब्राहीम की कथित आजाद काश्मीर सरकार टूट गई।

दो दिन और न टूटती तो मर्सिया काश्मीर-कमीशन से ही पढ़वा देते। खैर, अब बिचारे कायदे आजम इस काम को पूरा कर देंगे।

× × ×

हमारे यहां दस हजार मजदूर केवल रोटी पर ही काम कर रहे हैं। —पाकिस्तान सरकार

पाकिस्तान में बेचारों को दो रोटी भी मिल जायें यह भी क्या कुछ कम है !

× × ×

भारत ने विदेशों में राजदूतावास कायम करने के लिये साढ़े उनतीस लाख रुपये से अधिक खर्च किया।

श्रीमान् जी, इससे अधिक का बिल तो द्वापर युग में उन नाई ब्राह्मणों का बना था जो गांधारी को कंधार में देखने गये थे।

× × ×

टिहरी में ४०० नई अदालतें खुलेंगी। —यू० पी० सरकार

सरकार कम से कम चार लोगों को तो यह बता दे कि वह इन नये कारखानों में अच्छे नागरिक तैयार होंगे या यू० पी० के बेकार वकीलों को कार दे बनाने का यह कोई नया उद्योग-धन्धा है।

× × ×

पाकिस्तान के प्रदेश के लिये हमारा कोई दावा नहीं और जो था भी वह हमने उसके हक में छोड़ दिया। —अफगान राजदूत

अच्छा किया, मियां, मौसेरा भाई है।

× × ×

ग्राम विद्यालयों में ही गांधी जी के रचनात्मक कार्य पूरे हो सकते हैं। —माउण्टबेटन

क्यों कि घास छीलने से हुक्का भरने तक की सारी ट्रेनिंग अध्यापक दे देते हैं।

× × ×

काश्मीर कमीशन की पहली बैठक में केवल दो प्रतिनिधि शामिल हुए। —एक शीर्षक

इस समाचार को जरा जफरुल्ला तक और पहुंचा देना कि मेहमानों का खाना उनके आने पर ही बनवाये।

× × ×

ब्रिटेन में एक स्त्री के चार बच्चे पैदा हुए। —एक शीर्षक

दोनों महायुद्धों में ब्रिटेन ने जो जन-शक्ति का नुकसान उठाया है, शायद उसको पूरा करने की प्रकृति की इच्छा है।

× × ×

डाक्टरों ने लियाकतअली खां को तीन दिन विश्राम की सलाह दी है। —पाकिस्तान सरकार

शायद डाक्टर जल्दी में नब्ज देख गये। वरना अपने राम तो उन्हें बस अब सारी जिन्दगी ही आराम की सलाह देने वाले थे।

× × ×

हमें अमेरिका की नीयत पर सन्देह होता है। —सुरक्षा कौंसिल में ग्रोमीको

जरूर होता होगा। चोर की शक्ल बस चोर ही पहचानता है।

× × ×

माउण्टबेटन को विदायगी का शानदार भोज दिया जायगा। —एक सरकारी समाचार

दे दीजिये, कौन सा बेचारा रोज रोज खाने आयेगा।

[पृष्ठ २१ का शेष]

गये। जब लुटेरे डाकुओं के पास पहुंचे तब वे बंटवारा कर रहे थे।

लुटेरों ने आते ही तलवार चला दी। खूब देर तक युद्ध होता रहा। कई लुटेरे व डाकू मारे गये दस-पांच लुटेरे बच रहे वे भी भाग गये। दस-बारह डाकू जब धन बांटने लगे, तो वे लोभ के कारण द्वन्द युद्ध करने लगे। दो बचे। बाकी आठ मारे गये। एक ने दूसरे से कहा 'तुम तो बाजार से खाना लाओ और मैं धन की देख भाल करता हूं।' दूसरा बाजार गया और लोभ के कारण उसने भोजन में विष मिला दिया, और दूसरे ने सोचा जब वह खाना रखने के लिये झुकेगा मैं उसका गला काट दूंगा।

जब वह दूसरा आदमी खाना रखने लगा तो पहले वाले ने उसका गला काट दिया। पहला आदमी बड़ा खुश हुआ कि उसको सारा धन मिल गया। उसको जोर की भूख लग रही थी। ज्यों ही वह खाना खाने लगा वह विष के कारण मर गया।

वह चेला जब रुपये लेकर आया, तो गुरू जी की लाश को देख कर बेहोश हो कर गिर पड़ा, और फिर जब होश आया तो डाकुओं की सारी सम्पत्ति लेकर गुरू जी की दाहक्रिया कर, उस धन को लेकर गांव चला गया।

—निर्मल कोटिया

[पृष्ठ ४ का शेष]

नहीं कर सकते जब तक कि वहां पहले उत्तरदायी सरकार न बनाई जाय। और उत्तरदायी सरकार की स्थापना हैदराबाद में हो कर रहेगी, चाहे शांतिपूर्वक हो या किसी और प्रकार हो। यह मेरा दृढ़ विश्वास है। युग बदल चुका है हैदराबाद को बदलना ही पड़ेगा।

हमको हैदराबाद किसी प्रकार का धोखा या चकमा नहीं दे सकता। हैदराबाद यह कान खोल कर सुन ले। अगर वहां परिस्थिति बिगड़ती है, तो उसका परिणाम हैदराबाद अच्छी तरह जानता है, यही हमारी चेतावनी है।

पहेली सं० ३५ की संकेतमाला

बायें से दायें

१. राजधानी का प्रमुख समाचार पत्र।
३. दुकानदार के लिए बहुत लाभकारी है।
५. अच्छे''' पर नाटक की सफलता का बहुत आधार होता है।
७. अतिथि को''' देना हिन्दुस्तान का खास रिवाज है।
८. दिन को यह निस्तेज होता है।
१०. प्रतिष्ठा।
११. यह न हो तो पेट के लाले पड़ जाते हैं।
१२. अवयोन्द्रिय।
१३. इस उमर में भारी काम की आशा नहीं की जा सकती।
१४. गरमी के दिनों में लोग देर तक इस पर पड़े रहते हैं।
१६. बड़ा व गोल तकिया।
१७. यह बिगड़ जाय तो संगीत का मजा नहीं रहता।
१८. डरपोक आदमी को इस जानवर की उपमा दी जाती है।
२०. खरगोश।
२१. उमर।
२३. वैद्यों के विशेष उपयोग की वस्तु है।
२४. प्रायः पदार्थ आग पर रखने से''' हो जाते हैं।
२५. इससे काम कर देने से ग्राहक खुश हो जाते हैं।

ऊपर से नीचे

१. बहादुरी।
२. दवाई का''' ठीक न हो तो उसका उलटा प्रभाव हो सकता है।
३. "शासक" की उलट फेर।
४. परमात्मा।
६. "नियम" की गड़बड़ी से बना है।
९. वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण अङ्ग है।
१०. इस तालाब में राजहंस रहते हैं।
१२. आलसी आदमी इससे बचता है।
१३. सादापन।
१५. यहां पैसे बनते हैं।
१७. यह पेड़ बहुत ऊंचा होता है।
१९. खतरनाक रोगी अच्छे वैद्य की''' से ठीक हो सकता है।
१०. खरबूजे की तरह का एक स्वादिष्ट फल।
१२ मृत्यु का देवता।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३५

ये वर्ग आपके हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

(१००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३५] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले व संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १२ जुलाई के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ७ जुलाई १६४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३५, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि २ जुलाई १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय।–)

विविध

बृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ॥।=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य ३)

प्रेमदूती

श्री विराज की रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जागृत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ॥।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ॥=) डाक व्यय।–)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १॥) डाक व्यय।=)

हिन्दू संगठन होआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इस लिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री अनन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय।–)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय।=।

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

सामाजिक उपन्यास

'[illegible]'

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अत्यधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी प्रतियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक के आधार पर और अखण्ड देश, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर लेख, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय।–)

तेल विज्ञान

शिलाजत से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय।–)

तुलसी

तुलसीजाति के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

(ले० प्रो० फकीरचन्द जी एम. एस सी.)

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १॥) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की
'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड इ एक साथ लेने पर मूल्य ॥)

वीर अर्जुन

वर्षा के प्रारम्भ हो जाने पर ऐसे दृश्य प्रायः सर्वत्र सुलभ हो गये हैं।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १६ आषाढ़ सम्वत् २००५

पांच महीनों के बाद आत्मनिरीक्षण

देश के पितामह म० गांधी के अमर बलिदान के बाद समस्त देश ने उनके प्रति अपनी नम्र श्रद्धांजलि अर्पित की थी। उस समय हजारों कांग्रेस-कर्मियों ने गांव गांव और शहर शहर में तथा सैंकड़ों राष्ट्रनेताओं ने, जिनमें केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारों के मन्त्री पार्लमेण्टरी सैक्रेटरी और कांग्रेस के अधिकारी सम्मिलित थे और पं० नेहरू जैसे राष्ट्रसूत्रधारों ने हजारों लाखों की उपस्थिति में अत्यन्त गर्व के साथ यह घोषणा की थी कि गांधीजी का भौतिक शरीर नष्ट हो गया, लेकिन उनकी आत्मा अमर है, उनके सदेश को हम अमर रखेंगे और हजार, दस हजार बरस बाद वे और भी अधिक उज्ज्वल रूप में जीवित रहेंगे। उस समय हमारे राष्ट्र नेताओं ने उनके मिशन को जीवित रखने का निश्चय किया था। म० गांधी ने राष्ट्र का निर्माण किया था और उनकी तपस्या, साधना और अद्भुत नेतृत्व के कारण ही आज हमारा यह स्वरूप बन पाया है।

लेकिन म० गांधी के अमर बलिदान के करीब पांच मास बाद आज यदि हम आत्म-निरीक्षण करने का थोड़ा सा भी प्रयत्न करते हैं, तो सिवाय गहरे दुःख, क्षोभ और निराशा के दूसरा कोई भाव पैदा नहीं होता। किसी भी क्षेत्र में हम म० गांधी की निर्धारित नीति पर चलने का प्रयत्न नहीं कर रहे। कांग्रेस पर म० गांधी के सन्देश को क्रियान्वित करने की सबसे बड़ी जिम्मेवारी है। आज भी वह सबसे अधिक सगठित देशव्यापी संस्था है। देश के समस्त शासन का उत्तरदायित्व भी उसी पर है, किन्तु भ्रष्टाचार, ईर्षा-द्वेष, लूट-मार, दलबन्दि और चोरबाजारी आदि के कारण यही संस्था सबसे अधिक बदनाम हो रही है। पिछले दिनों संयुक्तप्रान्त व बिहार के चुनावों में पार्टीबाजी का जो कुत्सित रूप देखने में आया और एक दूसरे पर जितना मनमाना कीचड़ उछाला गया, उससे कांग्रेस के ही मेंबर व कार्यकर्ता, जिनका जनता सम्मान करती थी, आज जनता की आंखों से गिर गये हैं। लोग खुल्लमखुल्ला कहने लगे हैं कि इन कांग्रेसियों से तो पिछले सरकारी कर्मचारी ही अच्छे थे। अपने छोटे-छोटे स्वार्थ के लिए जनता का हजारों लाखों रु० तबाह करने वाले कांग्रेसी मन्त्री लगातार कांग्रेस को बदनाम कर रहे हैं। जो कांग्रेसी शब्द कल जनता में आदरसूचक शब्द था, आज वह हीन अर्थ में और व्यंग से प्रयुक्त किया जाने लगा है।

म० गांधी का स्मारक बनाने के लिए एक विराट् कोष की स्थापना की गई है। आचार्य कृपलानी ने पिछले दिनों रचनात्मक कार्यक्रम को उपेक्षा की दृष्टि से न देखने का अनुरोध किया है। लेकिन आज प्रत्येक कांग्रेसी, कांग्रेस सरकार के युग में अपने किये त्याग व बलिदान का फल तत्काल पा लेने की जितनी चिन्ता कर रहा है उसका चौथा भाग भी गांधी जी के मुख्य सदेश रचनात्मक सेवा की ओर वह नहीं कर रहा। इसी कारण गांधीवाद की आत्मा तड़प रही है और वह दुःख तब और भी बढ़ जाता है, जब 'गांधीजी की जय' के नारे के साथ अपना स्वार्थ साधन किया जाता है।

गांधीवाद की आत्मा अपरिग्रह में निहित है। यही उनकी विश्व को सब से बड़ी देन है। व्यक्तिगत जीवन का अपरिग्रह ही सामाजिक जीवन में उद्योग धन्धों के विकेन्द्रीकरण के रूप में परिणत हो जाता है। हम महात्मा के उस सदेश को समझ ही नहीं सके, हमारा दृष्टिकोण ही उनके बिलकुल विपरीत है। जिस यूरोपियन शिक्षा दीक्षा, विचारधारा, और पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से गांधी जी हमें मुक्त करना चाहते थे, हम उसी के शिकार हो रहे हैं। हम जब ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करते थे, तब शासन चक्र के बहुत खर्चीले होने की शिकायत करते थे, लेकिन आज हमारे तपस्वी कांग्रेसी नेताओं के सरकारी पदों पर वेतन व भत्ते आदि निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। किसी समय हमने ५००) रु० वेतन की अधिकतम सीमा नियत की थी, जो आज १५००) तक पहुंच सकती है। किन्तु भत्तों के रूप में तो लाखों रु० प्रति प्रान्त में मन्त्रिमण्डल पर खर्च हो जाता है। शानदार मोटरें, शानदार कोठियां और नौकर चाकर तथा दूसरे चकाचौंध करने वाले ठाठ रख कर यदि हमारे नेता साधारण सरकारी कर्मचारियों से लघु, निर्लोभ और ईमानदार बनने की आशा करें, तो वह असम्भव है।

म० गांधी सन्त होते हुए भी सब से बड़े क्रान्तिकारी थे। विश्व की आर्थिक समस्याओं के लिए ग्रामोद्योग उनके निकट सर्वोत्तम समाधान था और इसे अस्वीकृत करके हम गांधीवाद का हनन कर देते हैं। हमें भय है कि ग्रामोद्योगों की उन्नति के लिए अपने बजट में दो चार लाख रु० की राशि नियत कर के बड़ी बड़ी औद्योगिक योजनाओं का निर्माण करते हुए वे अपने को गांधीवादी नहीं कह सकते। हम इस लेख में बड़े धन्धे बनाम घरेलू धन्धों के बारे में विवेचन नहीं करना चाहते, लेकिन इतना अवश्य कहना चाहते हैं कि यदि हमारी सरकार गांधीवादी आर्थिक योजना पर विश्वास नहीं करती, तो उसे ऐसा करने का अधिकार है किन्तु उस अवस्था में गांधीवादी नारे के बार बार प्रयोग का औचित्य हमें समझ में नहीं आता। यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हम गांधी जी के सबसे महान् सदेश को कहां तक स्वीकार करते हैं।

आज केवल स्वार्थ साधन के लिए—मुस्लिम तोषिणी नीति के परिपालन के लिए और हिन्दी के अधिकार को कुचल कर हिन्दुस्तानी का समर्थन प्राप्त करने के लिए यदि गांधी जी के नाम का उपयोग किया जाता है, तो जनता उन नेताओं से पूछ सकती है कि क्या गांधीवाद की सीमा केवल हिन्दुस्तानी तक समाप्त हो जाती है और क्या गांधीवाद का निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में त्यागमय जीवन, भारतीय पद्धति से रहन सहन और उद्योगों के विकेन्द्रीकरण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था? वस्तुतः यही कारण है कि आज गांधी जी का नाम देश के महान नेताओं और तपस्वी कार्यकर्ताओं के मुंह से निकल कर भी जनता पर कुछ प्रभाव नहीं डालता। इन पांच महीनों में हम गांधीवाद के सदेश से दिन प्रति दिन दूर होते जा रहे हैं और अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर रहे हैं कि गांधीवाद इहलोक की वस्तु नहीं है। क्या देश के गांधीवादी विचारक, कांग्रेसी कार्यकर्ता और प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकारों के सचालक शान्त चित्त से इन पंक्तियों पर विचार करेंगे?

स्व० सुधाकरजी

गत सप्ताह श्री सुधाकरजी का देहावसान हो गया। पिछले दिनों वृद्धावस्था तथा अस्वास्थ्य के कारण यद्यपि वे सक्रिय सार्वजनिक जीवन में बहुत भाग नहीं ले सके और इसी कारण वे सर्वसाधारण के बहुत निकट नहीं आ सके, किन्तु इन्हें जानने वाले जानते हैं कि वे शान्त कार्यकर्ता तथा अत्यन्त सज्जन थे। गुरुकुल कांगड़ी में बरसों उपाध्याय रहे, फिर लाहौर में एक अंग्रेजी पत्र के सम्पादक व सचालक रहे, कुछ वर्ष शाहपुरा में राजकुमारों के शिक्षक रहे और अन्त में आप दिल्ली आ गये। यहां शारदा मन्दिर के व्यवसाय की अपेक्षा भी आप अधिकांश समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को देते रहे। जिन दिनों हैदराबाद में आर्यसमाज ने सत्याग्रह संघर्ष छेड़ा था, आप ही पत्रों, भाषणों व सार्वजनिक वाहवाही से दूर रहकर मूकरूपेण युद्ध के प्रकाशन तथा सगठन का कार्य करते रहे। पाठकों को शायद स्मरण न हो कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंगलाप्रसाद पुरस्कार के विजेता भी आप थे। जब यह पुरस्कार प्रारम्भ हुआ था और पुरस्कार प्राप्ति के लिए दलबन्दी या कनवैसिंग का युग नहीं आया था, तभी आपको 'मनोविज्ञान' पुस्तक पर यह पुरस्कार मिला था। वे आज चले गये। मंगलमय भगवान उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

समाचार हिन्दी में

पिछले दिनों लार्ड मौण्टबेटन ने दिल्ली की विदाई सभा में पांच सात वाक्य हिन्दी में कहे थे। यूनाइटिड प्रेस ने वह भाषण रोमन लिपि में ज्यों का त्यों समाचार पत्रों को भेजा है। यदि यह सम्भव हो सकता है, तो शेष समाचार भी हिन्दी में रोमन लिपि के द्वारा भेजे जा सकते हैं। क्यों नहीं एसोसियेटिड प्रेस हिन्दी की दिशा में एक बड़ा कदम उठाता? यह ठीक है कि आज अंग्रेजी पत्र हिन्दी पत्रों की अपेक्षा अधिक हैं और वे एसोसियेटिड प्रेस के ग्राहक हैं, किन्तु यदि उत्तर भारत के प्रान्तीय भाषा के पत्रों की सम्मति ली जाय, तो हमें विश्वास है कि वे सब अंग्रेजी भाषा की जगह रोमन लिपि व हिन्दी भाषा में समाचार लेना अधिक पसन्द करेंगे। इस तरह समाचार समिति ज्यादा पत्रों की सेवा कर सकती है। भाषा जहां हिन्दी हुई, वहां लिपि के भी नागरी होने की शीघ्र सम्भावना की जा सकती है।

फिर कण्ट्रोल की आवाज

अन्न और वस्त्र फिर महंगे हो चले हैं और इस लिए फिर से कण्ट्रोल व राशन की चर्चा की जाने लगी है। जनता का कष्ट निस्सन्देह बढ़ गया है और व्यवसायियों तथा व्यापारियों ने अन्न वस्त्र को दुर्लभ करके घोर अपराध किया है, लेकिन इस से विचलित हो कर फिर कण्ट्रोल की बात करने में हम कोई औचित्य नहीं देख सके हैं। उससे सर्वसाधारण का कष्ट जहां कम न हुआ था, वहां सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार के कारण लाइसेंस, परमिट आदि में रिश्वतखोरी सीमा पार कर गई थी। जनता के नित्यप्रति के व्यवहार पर सरकार का इतना कठोर नियन्त्रण उसके अधिकारों पर कुठाराघात ही था। इन्हीं कारणों से म० गांधी ने अपने जीवनकाल के अन्तिम

लार्ड माउण्टबेटन की विदाई

भारत से अन्तिम गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटन की विदाई इस सप्ताह की सबसे प्रमुख घटना है। जिस उत्साह और भावमय हृदय से हिन्दुस्तान की जनता ने माउण्टबेटन परिवार को विदाई दी वह न केवल ब्रिटेन के इतिहास में अपितु स्वयं इस देश के इतिहास में भी एक अद्भुत दृश्य था।

दिल्ली के गांधी ग्राउण्ड में लगभग दो लाख जनता की उपस्थिति में दिल्ली म्यूनिसिपैलिटी के अध्यक्ष डा० युद्धवीर सिंह ने मान पत्र पढ़ा और भारतीय जनता की ओर से कृतज्ञता प्रकट की। बाद में उन्हें गांधी जी की एक मूर्ति भेंट की गई।

२१ जून को लार्ड माउण्टबेटन अपनी पत्नी तथा पुत्री के साथ ठीक सवेरे ८॥ बजे विमान द्वारा दिल्ली से विदा हो गये। विदाई के समय ३१ तोपों की सलामी दी गई। उसी दिन गवर्नमेंट हाऊस में राजगोपालाचार्य ने प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल के रूप में शपथ ग्रहण की।

गांधी हत्या अभियोग

म० गांधी के कथित हत्यारे नाथूराम विनायक गोडसे और सात अन्य व्यक्तियों के मुकद्दमे की सुनवाई लाल किले में स्पेशल जज श्री आत्माचरण के समक्ष प्रारम्भ हो गई है। सभी अभियुक्तों के विरुद्ध लगाये गये अभियोग पढ़ कर सुनाये जा चुके हैं। बाडगे नामक नौवें अभियुक्त को छोड़ दिया गया है, क्योंकि वह सुल्तानी गवाह बन गया है। शेष आठों अभियुक्तों ने अपने आपको निर्दोष बताते हुए मुकदमा चलाने की मांग की है। इस समय सबूत पक्ष के गवाहों के बयान चल रहे हैं।

हैदराबाद

ब्रिटिश लोर्ड सभा में श्री चर्चिल [illegible] यह पूछने पर कि हैदराबाद की वर्तमान [illegible] समस्या को सुलझाने में ब्रिटिश

सरकार मध्यस्थ का काम क्यों नहीं करती— राष्ट्रमण्डल विभाग के मन्त्री नोयलबेकर ने उत्तर दिया कि ब्रिटेन का यह कार्य क्षेत्र नहीं है और न ही इस विषय में ब्रिटेन की कोई जिम्मेवारी है। हैदराबाद के मामले को संयुक्तराष्ट्रीय संघ में पेश करने की चर्चा भी निराधार प्रमाणित हुई है, क्योंकि हैदराबाद सरकार की एक प्रेस विज्ञप्ति में इसका निराकरण किया गया है।

हैदराबाद की सरकार रियासत में कुछ शासन-सुधार करने पर विचार कर रही है। सम्भावना यह है कि हिन्दू और मुसलमानों के समान प्रतिनिधित्व के आधार पर एक आम चलाऊ सरकार बनाई जायेगी और वर्तमान अन्तःकालीन मन्त्रिमण्डल को भंग कर दिया जायेगा। नई सरकार में युक्तप्रान्त की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू की सुपुत्री कुमारी पद्मजा नायडू को भी लिया जायगा।

इधर रजाकारों के अत्याचारों में कोई कमी नहीं हुई है। हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की विज्ञप्ति में बताया गया है कि १ जून से १५ जून तक भारतीय संघ के १३६ सीमावर्ती गांवों को लूटा गया है। आक्रमणों में ३७ लाख रुपया, २५५ तोला सोना, काफी बड़ी मात्रा में चांदी तथा ५०० बोरी अनाज लूटा गया है। हमलों में २०० ग्रामीण मारे गये हैं। कूषनी के दंगे के बाद लगभग ७०० परिवार भारतीय प्रदेश में आ गये हैं। अगले १० दिनों में निजाम से फिर चर्चा चलने की सम्भावना है।

काश्मीर का मोर्चा

भारतीय सेना की कुछ टुकड़ियों ने कुछ दिन पहले पुंछ और जम्मू के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया था। उसी दिशा में प्रगति करती हुई हमारी सेनाओं ने अब मेंढर पर भी कब्जा कर लिया है। आक्रान्ताओं के भय से भागे हुए लोग अब पुनः वापिस लौट रहे हैं और अपनी रक्षा के लिए भारतीय सेना के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं।

काश्मीर कमीशन

मित्रराष्ट्र संघ द्वारा नियुक्त काश्मीर कमीशन आगामी ५ जुलाई को जेनेवा से भारत के लिए रवाना हो जाएगा। यह कमीशन पहले कराची जायगा और बाद में दिल्ली। कमीशन ने भारत और पाकिस्तान की सरकारों को लिखा है कि वे कमीशन के कार्यों में सहयोग देने के लिए अपना एक एक सम्पर्क अधिकारी भेजें। कमीशन ने कश्मीर संघर्ष सम्बन्धी शिकायतों की जांच के तरीकों से भी दोनों देशों की सरकारों को सूचित कर दिया है।

दिल्ली में लाहौरी गेट के पास एक वैगन में आग लग गई, जिस में मेथिलेटेड स्प्रिट के ५६ ड्रम रखे हुए थे। इस आग की ३०० फीट ऊंची लपटें मीलों दूर से देखी जा सकती थीं।

युक्तप्रान्त में सिख मोर्चा समाप्त

सिख प्रतिनिधि बोर्ड के निश्चय के अनुसार १०० कृपाणधारी सिखों का एक जत्था जिसमें ६ स्त्रियां भी थीं, सेक्रेटेरियट के सम्मुख प्रदर्शन के लिए गया। जिस समय बाहर सड़क पर मोर्चा जमा था उसी समय उधर सेक्रेटेरियट के भीतर सिख प्रतिनिधियों और सरकारी अधिकारियों में कृपाण पर लगी हुई पाबन्दी के बारे में बातचीत हो रही थी। तीन घण्टे की बातचीत के बाद सरकार [illegible] की ओर से [illegible] कि सिखों के कृपाण लेकर चलने पर कोई पाबन्दी नहीं है और आर्म्स ऐक्ट में इसके लिए छूट दे दी गई है। इस निर्णय के बाद सिख मोर्चे की अब कोई आवश्यकता नहीं रही।

कांग्रेस के एक करोड़ पांच लाख सदस्य

इस वर्ष कांग्रेस के एक करोड़ पांच लाख प्रारम्भिक सदस्य बने हैं, जबकि १९४६ में ५५ लाख ही सदस्य थे। अर्थात् तब से अब तक सदस्यता में लगभग १०० प्रतिशत वृद्धि हो गई है। युक्तप्रान्त में सबसे अधिक सदस्य बने हैं। यहां की सदस्य संख्या २१ लाख है। इसके बाद आन्ध्र व बिहार का नम्बर है।

हीरालाल गांधी का देहान्त

महात्मा गांधी के सबसे बड़े पुत्र श्री हीरालाल गांधी का कुछ दिन की बीमारी के बाद बम्बई में देहान्त हो गया है।

पूर्वी बंगाल के शरणार्थी

पश्चिमी बंगाल की सरकार को प्राप्त आंकड़ों से यह पता लगता है कि अभी तक पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों का आना निरन्तर जारी है। गत दो मासों में लगभग दस लाख उत्पीड़ित पश्चिमी बंगाल में आ चुके हैं। सरकारी अनुमान के अनुसार अब तक कुल साढ़े ग्यारह लाख उत्पीड़ित पूर्वी बंगाल से आ चुके हैं। पश्चिमी बंगाल की सरकार ने घोषणा की है कि २५ जून के बाद पूर्वी पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों को कोई सुविधा नहीं दी जाएगी।

दिल्ली में प्रधानमंत्री-सम्मेलन

भारत सरकार ने पाकिस्तान से आये शरणार्थियों को स्थायी रूप से भारतीय संघ के प्रदेशों में बसाने और उन्हें, शरणार्थी-कैम्पों से हटाने के प्रश्न पर विचार करने के लिए ५ जुलाई को नई दिल्ली में सब प्रांतों के प्रधानमन्त्रियों एवं रियासतों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाया है।

ब्रिटिश राजा 'भारत-सम्राट् नहीं'

लन्दन गजट द्वारा घोषणा की है कि ब्रिटेन के राजा ने 'भारत का सम्राट्' की राजकीय उपाधि का परित्याग कर दिया है। ब्रिटिश सत्ता हस्तान्तरित हो जाने के कारण अब यह उपाधि निरर्थक थी।

मोलोतोव वारसा में

सोवियत विदेशमंत्री म० मोलोतोव वारसा पहुंच गये। यूरोप के विभिन्न देशों की कम्यूनिस्ट पार्टियों के नेता इस समय वारसा में हैं। [illegible] जा रहा है कि

[शेष पृष्ठ २६ पर]

दिनों में क[illegible] [illegible] के विरुद्ध जबर्दस्त आवाज उठाई थी। आज हम अन्नवस्त्र के महंगा होते ही [illegible] निश्चित और परिणाम के [illegible] अवलंबन करने के लायक उपाय क्या [illegible] ले रहे हैं। क्या हमारे में कोई मौलिकता है ही नहीं? क्या अन्न वस्त्र के व्यापारियों पर कोई कठोर कदम नहीं उठाया जा सकता? क्या यह बात पड़ताल नहीं की जा सकती कि मूल्य-वृद्धि का वास्तविक अपराधी कौन है? क्या मिल मालिकों व बड़े व्यापारियों से कोई गारंटी नहीं ली जा सकती? ऐसा करने की बजाय हम फिर कनकल, रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार आदि पुनर्जीवित कर रहे हैं।

प्रथम भारतीय गवनर जनरल का स्वागत

अन्तिम अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड मौएटबेटन श्री राजगोपालाचार्य का स्वागत कर रहे हैं।

श्री राजगोपालाचार्य राजधानी में हवाई जहाज से उतर रहे हैं।

राजाजी को सलामी दी जा रही है।

लेडी मौएटबेटन राजाजी से मिल रही हैं

ब्रिटिश सेनाएं जेरूसलेम खाली कर रही हैं।

युद्धकाल में पैंसिलिन सम्बन्धी सेवाओं के लिए अमेरिकन ...

हैदराबाद के पीछे भी ब्रिटेन का हाथ !

श्री पट्टाभिसीता रमैया द्वारा स्थिति का गम्भीर विवेचन

यह राजनीति है !

काश्मीर के लुटेरों के पीछे पाकिस्तान नहीं है ? क्या कनिंघम, मैरो, डाउ और मूडियों जैसे अंग्रेज गवर्नर पाकिस्तान के पीछे नहीं हैं ? क्या ब्रिटेन अंग्रेज गवर्नरों के पीछे नहीं है ? परन्तु ब्रिटेन का ही एक बेटा भारत का गवर्नर जनरल है, और वह पाकिस्तान की नीति का मुकाबला कर रहा है, और उस नीति को वही ब्रिटेन चला रहा है, जिसने भारत को गवर्नर जनरल दिया है। राजनीति एक विरोधी और विरोधाभासों का खेल है। रूस व अमरीका संयुक्त राष्ट्र सगठन में परस्पर ऐसे विरोधी हैं, जैसे दो ध्रुव, परन्तु फिर भी इसराइल की मान्यता देने में वे दोनों साथ हैं। संयुक्तराष्ट्र संगठन में ब्रिटेन और अमरीका साथी हैं, परन्तु फिलस्तीन की समस्या पर एक दूसरे के ठेठ विरोधी हैं। राजनीतिक चालसियां सम्बद्ध नीति की अभिव्यक्तियां नहीं होती। द्वितीय विश्व-युद्ध की प्रथम अवस्था में रूस और जर्मनी साथी थे। बाद की अवस्था में वे एक दूसरे के कट्टर शत्रु थे। यदि मौंट-बेटन-मांकटन धुरी के चारों ओर भारत में ब्रिटेन की नीति चक्कर काटती है, और पाकिस्तान में जिन्ना-मूडी धुरी के आस-पास चक्कर काटती है, तो हमें उससे अचम्भा नहीं होना चाहिये। जीवन तर्क से बहुत भिन्न होता है, और राजनीतिक जीवन तो तत्वतः ही समझौतों का एक बण्डल ही होता है।

हैदराबाद के बोटाले के पीछे ब्रिटेन का उतना ही हाथ है, जितना पाकिस्तान के पीछे— वही मेकियवेलीय छल, पूरा-पूरा ढोंग, कपट और विश्वासघात, जिसे आत्म ग्लानि की हवा भी नहीं लगती। केवल हमीं इतने बुद्धू हैं जो यह विश्वास करते हैं कि हमारा कल्याण माउन्टबेटन और मांक्टनों के हस्तक्षेप से होगा। निजाम की सरकार तो एक छाया 'खेल' मात्र है, जिसे ब्रिटेन का वैदेशिक और डोमीनियन कार्यालय संचालित करता है। नहीं तो भला मि० आर. के. बटलर भारत में दो के स्थान में तीन डामिनियनों की बातें कैसे करते ? या केबिनेट मिशन अपने १२ मई १९४६ के वक्तव्य में सरकार या सरकारों' की बातें कैसे करता ? इसे बड़ी सावधानी से २३ मई १९४६ तक छिपाकर रखा गया और फिर इस अनुबन्धन के लिए' स्पष्टीकरण के साथ प्रकाशित किया था।

ब्रिटेन की दुरभिसंधि

भारत की स्वतन्त्रता स्वीकार की गयी, परन्तु योजना ऐसी बन गई कि वह चारों तरफ से चार आगों में फंस जाय— उत्तर में काश्मीर की आग, पश्चिम में जूनागढ़, दक्षिण में हैदराबाद और पूर्व में त्रिपुरा की आग से। वास्तव में अंग्रेजों की यही योजना थी। कुछ झिझक कर और बहुत कुछ दबाव के बाद हैदराबाद अपनी 'स्वातन्त्र्य' घोषणा की स्थिति से पीछे हटा और २९ नवम्बर १९४७ के दिन उसने भारतीय संघ से 'यथापूर्व' का समझौता किया। तुरन्त उसने इस बड़ी मुश्किल से प्राप्त समया-वकाश का उपयोग सक्रिय आक्रमणात्मक सैनिक तैयारियों में किया और लूट, आगजनी, बलात्कार और हत्याओं को प्रोत्साहित किया। निजाम ने माउण्टबेटन के दिल्ली आने के निमन्त्रण को दर्प और तुच्छता से अस्वीकार कर दिया, इसके बाद ही बम्बई-मद्रास और देहली के बीच चलने वाली रेलों पर अत्याचारी हमले हुए। इससे कटुता बढ़ गई और शांति व युद्ध के बीच भारत का भाग्य तय हो जाना चाहिए था। परन्तु हमारी जनता उत्तरदायी लोगों से सीधे और बोधगम्य उत्तर की मांग उचित रीति से ही कर रही है कि एक प्रबल सरकार एक क्षुद्र राज्य के प्रति ढीलमदाल दीर्घसूत्रता की नीति क्यों बरत रही है जबकि वे अन्तिम मनुष्य और अन्तिम रुपये तक अपनी मातृभूमि की इज्जत रखने और हैदराबाद की सीमा में रहने वाले अपने भाई-बहनों की जान-माल की रक्षा करने को बिल्कुल तैयार हैं। किसी संतोषप्रद स्पष्टीकरण के अभाव में, इस मनोवैज्ञानिक क्षण में, भारत की भावी पीढ़ियां निन्दा कर सकती हैं और इसे मानसिक दुर्बलता और हृदय की लुंजता का परिणाम समझ सकती हैं जबकि निर्णय की दृढ़ता और हृदय की सख्ती की जरूरत थी।

हो क्या रहा है ?

अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद् के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री पट्टाभि सीता-रमैया ने हैदराबाद के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये हैं, वे ऊपर के लेख में दिये गये हैं। हमें यह भी देखना चाहिए कि हो क्या रहा है ?

सर मौंकटन निजाम के वकीलों के सलाहकार हैं। वे पिछले महीनों में कई बार इंग्लैण्ड गये और हैदराबाद आये। उनका आना जाना मार्ग बम्बई न हो कर सदा करांची मार्ग रहा है।

पिछले दिनों निजाम हैदराबाद ने इंगलैण्ड की कम्पनियों से कई व्यापारिक ठेके किये हैं। इनके कारण इंग्लैण्ड का हैदराबाद में विशेष हित पैदा हो गया है।

यद्यपि इंगलैण्ड की सरकार हैदराबाद के मामले में अब तक तटस्थता वृत्ति दिखा रही है, तथापि वहां का प्रभावशाली प्रेस और राजनीतिज्ञों का एक समूह सदा हैदराबाद का समर्थन करता रहा है। इस क्षेत्र की ओर से पिछले दिनों जो आवाजें उठाई गईं, वे निम्न-लिखित हैं—

१. निजाम हैदराबाद को स्वतंत्र रूप से ब्रिटिश कामनवैल्थ का सदस्य मान लिया जाय।

२. हैदराबाद से पृथक् सन्धि कर ली जाय।

३. हैदराबाद का प्रश्न मित्रराष्ट्रसंघ में पेश किया जाय। इंगलैण्ड के कुछ राजनैतिक क्षेत्रों में यह भी संभावना की जा रही है कि सर वाल्टर अमेरिका जा कर स्थिति का अध्ययन करेंगे कि वहां यह मामला पेश भी किया जा सकता है या नहीं। जब यहूदी एजेंसी अरब राष्ट्रों के विरुद्ध अपील कर सकती है, तो हैदराबाद का प्रश्न भी कोई राष्ट्र पेश कर सकता है। इस संबंध में यह भी कल्पना की जा रही है कि मित्रराष्ट्र-संघ में इस प्रश्न के पेश होने पर ब्रिटेन का रुख क्या होगा ? एक संभव कल्पना यह है कि काश्मीर के प्रश्न पर उसने जो रुख लिया है, वही वह हैदराबाद के प्रश्न पर भी लेगा और सभी जानते हैं कि वह रुख भारत विरोधी रहा है।

मि० चर्चिल का पार्लमेण्ट में यह प्रश्न कम अर्थपूर्ण नहीं है कि क्या इंगलैण्ड इस प्रश्न पर मध्यस्थ बनेगा ? यद्यपि कामन वैल्थ के मंत्री श्री नोएल-बेकर ने इसका स्पष्ट प्रतिवाद यह कह किया है कि यह हमारे क्षेत्र और अधिकार से बाहर का विषय है, तथापि यह भी किसी से छिपा नहीं है कि आंतरिक नीति में मि० चर्चिल व एटली कितने ही घोर विरोधी क्यों न हो, विदेशी नीति दोनों दलों की एक है। इसलिए यह असंभव नहीं है, कि अनिश्चित परिस्थितियों के कारण अपने को किसी एक पक्ष में न बांधने वाली सरकार हैदराबाद से मन ही मन कोई पक्षपात रखती हो और वह सिर्फ उस स्थिति की प्रतीक्षा कर रही हो, जबकि भारतीय पक्ष की अपेक्षा निजाम का पक्ष अधिक प्रबल हो रहा हो। जब तक ऐसा नहीं होगा, ब्रिटेन अपनी आम्यन्तरिक नीति

पूर्वीय एशिया में भारत का महत्व असाधारण है। ब्रिटेन की यह स्वाभाविक इच्छा है कि वह देश पर किसी तरह प्रभाव डाल सके। उत्तर और पूर्वी भारत में पाकिस्तान इसकी सहायता कर रहा है, दक्षिण में यह कमी हैदराबाद पूरी कर सकेगा। यदि इंग्लैण्ड अरब राष्ट्रों में ट्रांसजोर्डन के शासक को अपनी कठपुतली बना सकता है, तो निजाम, जिसका समग्र जीवन ही ब्रिटेन की कृपा पर निर्भर रहा है, क्यों उसका शिकार नहीं बन सकता ?

राजनीति में और आज की राजनीति में असंभव कुछ नहीं है। इसलिए यह भी असम्भव नहीं है कि यदि ब्रिटेन भारत को कहीं भी असावधान या दुर्बल पाये, तो वह हैदराबाद के साथ कोई भी समझौता कर ले। उसके लिए किसी बन्दरगाह का प्राप्त करना भी बहुत असंभव नहीं है। गोआ पुर्तगाल के हाथ में है। उसे कोई भी छोटा बड़ा प्रलोभन दिया जा सकता है और इस तरह गोआ व हैदराबाद के बीच में एक छोटा सा भूखण्ड ही बाधक बनेगा और यह समस्या आज की समस्या से किसी भी तरह बहुत हलकी है।

निजाम राज्य चारों ओर से भारतीय संघ से घिरा हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वह अपने बलबूते पर भारत से संघर्ष नहीं लेना चाहेगा। आज यदि उसने संकट पैदा कर दिया है, तो उसका कारण ब्रिटेन या उस जैसी किसी शक्ति का सहयोग ही है।

गांधीजी की हत्या का संगठित षडयन्त्र

प्रमुख अभियुक्त नाथूराम विनायक गोडसे है, क्योंकि उसी की गोली से म० गांधी जी का प्राणान्त हुआ। अभियुक्तों सहित सभी लोगों को यह ज्ञात है कि गांधी जी भारत के ही नेता नहीं थे, वह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के महापुरुष थे। उन्होंने अपना जीवन अहिंसा और विश्वभ्रातृत्व के सिद्धांतों का प्रचार करने में लगा दिया। गांधी जी का इस प्रकार मरना इस दृष्टि से ठीक कहा जा सकता है कि उन्होंने सदैव इन्हीं सिद्धांतों के लिए अपना जीवन अर्पित किया हुआ था। सामान्यतः इस हत्या के पीछे क्या उद्देश्य था, इसकी विवेचना करना निरर्थक

अभियुक्तों का परिचय—षडयन्त्र का उद्देश्य—श्री सावरकर षडयंत्र के केन्द्र व गुरु—हत्या के प्रथम प्रयत्न विफल—ग्वालियर से पिस्तौल—प्रायः सभी अभियुक्त पिकड़ा हाल में तीन—अभियुक्त फरार।

होता किन्तु इस विषय में यह बहुत स्पष्ट मालूम होता है, क्योंकि कटघरे में सिर्फ एक ही अभियुक्त न होकर उसके साथ ७ अन्य भी हैं, जिन्होंने इस घटना के होने में हाथ बटाया।

नाथूराम गोडसे — मार्च १९४४ से पूना से प्रकाशित होने वाले मराठी दैनिक 'अग्रणी' का सम्पादक था। आप्टे उसका जनरल मैनेजर था। पत्र के विचार म० गांधी द्वारा प्रचारित अहिंसा और भ्रातृत्व की नीति के विरुद्ध थे।

१५ अगस्त को देश का विभाजन होने से पूर्व भारत में स्थिति बड़ी अशान्त थी और उसके बाद तो दोनों जातियों में भारी संघर्ष व रक्तपात होने पर स्थिति और भी कठिन हो गई। इस सारे अरसे में गांधी जी निरन्तर यही कहते रहे कि प्रतिशोध और प्रतिहिंसा के लिए किसी भी उत्तेजनात्मक स्थिति के बावजूद भारत के मुसलमानों के प्रति अहिंसात्मक व शान्ति का रवैया रखना चाहिए। गांधी जी का रवैया बहुत पहले से ऐसा ही था जिसका प्रमाण उनकी नोआखाली व बाद में बिहार की यात्राओं से स्पष्ट है। बाद में पंजाब में झगड़े हुए और उसके बाद विभाजन के बाद तो स्थिति बड़ी खराब हो गई। गांधी जी का रवैया सदैव अपने आदर्शों के अनुकूल रहा।

इसके विपरीत नाथूराम गोडसे का रवैया इससे बिलकुल उल्टा था। वह बदले, खूनखराबी, आदि का समर्थक था। अंत में वह गांधी जी की मुसलमानों को खुश करने की नीति से इतना निराश हो गया कि उसने समझ लिया कि इस प्रचार को बन्द करने का तरीका उस व्यक्ति का ही अन्त कर देना है। उसने विवेक खो दिया। पहले तीनों अभियुक्त इन्हीं विचारों के थे और उन्होंने आपस में घनिष्ठ सम्पर्क रखा। चौथा अभियुक्त मदनलाल पंजाब का शरणार्थी था। वह भी स्वभाव से उद्दण्ड, भावुक और किसी भी काम को कर गुजरने की हिम्मत वाला था।

वह पहले अहमदनगर में करकरे से मिला। उसके स्वभाव को समझ कर पहले तीनों अभियुक्तों ने उसे अपनी उद्देश्य सिद्धि के उपयुक्त समझा।

पांचवां अभियुक्त शंकर बाडगे का नौकर था। बाडगे, जिसे माफी दी जा चुकी है, पूना में हथियारों की दुकान का मालिक था, जहां चाकू छुरे व खंजर आदि बिकते थे। बाडगे का नाथूराम गोडसे, आप्टे व करकरे से परिचय हुआ और इस बात के प्रमाण दिए जायेंगे कि उसने उन्हें हथियार मुहैया किये। उसे २० जनवरी से उन्होंने अपनी योजना में भी शामिल होने को राजी कर लिया। शंकर बाडगे का नौकर था और वह भी स्वेच्छा से अपने मालिक के साथ मिल गया। उसे दिल्ली जाने के उद्देश्य का पता था, इसमें किसी संदेह की गुंजायश नहीं। उसने भी एक हथियार को पसन्द कर देखा था और २० जनवरी को प्रार्थना स्थल में उपस्थित था।

गोपाल गोडसे प्रथम अभियुक्त का भाई है और वह खिड़की में सरकारी दफ्तर में काम करता था। उसने किसी बहाने से छुट्टी ली, ताकि वह भी अन्य अभियुक्तों के साथ दिल्ली जा सके। उन सब के पास हथियार विस्फोटक पदार्थ थे।

डा० परचुरे अपने आप को ग्वालियर का निवासी बताता है, पर यह बात गलत है। जब २० और ३० जनवरी के बीच नाथूराम गोडसे व आप्टे ग्वालियर गये तो उसने उनके लिये उस पिस्तौल का प्रबन्ध किया जिस से अन्त में हत्या की गई। उस पिस्तौल को लेकर प्रथम व द्वितीय अभियुक्त दिल्ली आ गये और यहां हत्या की गई।

वि० दा० सावरकर परिचित नाम है और वह बहुत समय तक हिन्दू महासभा के प्रधान रहे हैं। उन्हें अहिंसा या मुस्लिम-प्रेम के विचारों से कोई सहानुभूति नहीं है। वह दादर (बम्बई) में रहते हैं। प्रथम और द्वितीय अभियुक्त उनसे मिलते रहे। यह कहा जा सकता है कि सावरकर का उन पर पर्याप्त प्रभाव भी रहा है और वे उन्हें अपना गुरु मानते हैं। 'अग्रणी' पत्र भी सावरकर के आशीर्वाद से ही शुरू किया गया था और पत्र के प्रथम पृष्ठ पर सदैव उनका का फोटो छपता था।

नाथूराम गोडसे व आप्टे का सावरकर से निरन्तर सम्बन्ध रहा है। २० जनवरी से पूर्व उनके सम्बन्ध से यह भी प्रकट है कि सावरकर को भावी घटनाओं की सिर्फ जानकारी ही नहीं थी बल्कि कहा जा सकता है कि उनके सहयोग के बिना यह संभव भी नहीं होती।

नाथूराम गोडसे ने १९३८ में हैदराबाद के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया था और बाद में वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में शामिल हो गया था। फिर उसने हिंदू रक्षा-दल का संगठन किया। १९४४ में उन्होंने 'अग्रणी' अखबार निकाला, जिसके लिए सावरकर ने १५००० रु० भी प्रदान किये थे।

पंजाब के उपद्रवों से लेकर महात्मा गांधी द्वारा दिल्ली में किये गये आमरण अनशन तक की घटनाओं के प्रसंग से नाथूराम गोडसे के पत्र 'अग्रणी' में जो लेख प्रकाशित होते रहे हैं, उनसे गांधी जी के प्रति अभियुक्त के दृष्टिकोण का पता चलता है।

आप्टे एक बड़ा प्रतिभाशाली व्यक्ति है और वह कुछ साल वर्ष तक अहमदनगर में अध्यापन का कार्य कर चुका है। वह करकरे से परिचित था।

करकरे राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ का सदस्य था और उसने १९३८-३९ में हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया था। १९४१ में वह आप्टे के निकट सम्पर्क में आया और १९४३ में कुछ समय तक हिन्दू महासभा के मन्त्री पद पर रहा। गांधीजी की हत्या के षडयन्त्र में करकरे नाथूराम गोडसे और आप्टे के साथ आरम्भ से मिला हुआ था। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि इन लोगों में से किसके मन में गांधीजी की हत्या का विचार सब से पहले उत्पन्न हुआ और कब हुआ, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि नाथूराम गोडसे, आप्टे और करकरे ने दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह अथवा अधिक से अधिक जनवरी के आरम्भ में गांधीजी की हत्या कर देने का षडयन्त्र रचा।

नवम्बर १९४७ में करकरे की मदनलाल से भेंट हुई और उसने उसे किसी धन्धे पर लगाने में सहायता प्रदान की। करकरे की राजनीतिक हलचलें कुछ इस प्रकार की थीं कि मदनलाल ने उसे उसके कामों में सहयोग देने का निश्चय किया। करकरे अहमदनगर का एक नेता था और शरणार्थियों के मामले में बड़ी रुचि रखता था। उसने उनकी सहायता की व्यवस्था की और इस प्रकार मदनलाल उसके सम्पर्क में आ गया।

गांधीजी की हत्या के अभियोग में सरकारी वकील श्री दफ्तरी ने इस्तगासा दायर करते हुए संसार के समस्त इतिहास में विश्व विभूति की हत्या के भीषणतम षड्यन्त्र की यह कहानी अदालत में सुनाई है।

१० जनवरी को मदनलाल करकरे के साथ बम्बई लौटा और १२ जनवरी को फिर प्रो० जैन से मिला और उसे अपने दिल्ली जाने का उद्देश्य भी प्रकट किया। प्रो० जैन ने उसकी इस बात को गम्भीरता से नहीं लिया, फिर भी सामान्यतः इस प्रकार की कार्रवाई को मूर्खतापूर्ण बतला कर उसे अनुत्साहित करने का प्रयत्न किया।

वह कुछ वर्षों से अवश्य ग्वालियर में रहता रहा है और वहां की सार्वजनिक हलचलों में भाग लेता रहा है। वह गोडसे को जानता था।

सावरकर का गोडसे, आप्टे और करकरे से निकट सम्बन्ध था और जब कभी सावरकर बम्बई से बाहर जाते तो आप्टे या गोडसे में से कोई उनके साथ अवश्य रहता था। नाथूराम गोडसे और आप्टे अन्तिम बार १४ जनवरी १९४८

[शेष पृष्ठ १४ पर]

पति पत्नी एक दूसरे को सुखी कैसे करें ?

[श्रीमती नर्बदादेवी]

★

विवाह के पश्चात् नव-वधू ससुराल जाती है, जहां पर उसे पूर्ण अपरिचित वातावरण मिलता है ! उसे अपने ससुराल वालों से कई हृदय में चुभने वाले ताने सुनने पड़ते हैं, यदि विवाह में उसके माता पिता ने मुट्ठी खोलकर रुपया न लुटाया हो ! नव पत्नी अपने को एकाएक ऐसे वातावरण में पाकर जीवन से निराश हो जाती है व ईश्वर से प्रार्थना करती है — 'प्रभु मौत दे दे ।'

ऐसे अवसर पर पति देवता को कोने में बैठ कर मुंह न छिपाना चाहिये, अपितु अपनी विवाहिता पत्नी को इस अनोखे वातावरण से जानकार करवाना चाहिये, उसका सर्व प्रकार से मनोरंजन करना चाहिये, कटु-आलोचना करने वाले अपने स्वजनों को भी समझाना चाहिये !

पुरुषों की भांति स्त्रियां भी हृदय रखती हैं, अतः पति को अपनी समस्त आय निजी-स्वार्थों में व्यय न करके उसका उपयुक्त अंश पत्नी को भी देना चाहिये ! ससुराल में औरतें अपनी मांगों की पूर्ति बहुधा पति को कह कर ही करवाया करती हैं, जो पति को अपनी पत्नी की मांगें अनसुनी न करके उसका उचित उत्तर देना चाहिये !

कई मनुष्य अपनी पत्नी में अपनी इच्छा के विपरीत आदतें पाकर उन्हें दूर करने के उद्देश्य से बल का प्रयोग करते हैं, यह सर्वथा निन्दनीय है। ऐसी परिस्थितियों में पति को धैर्य व संयम रखना चाहिये व उचित ढंग से अपनी पत्नी को समझाना चाहिये !

इसके अतिरिक्त पति को अपना अवकाश का वक्त न तो गुप्त ढंग से ही व्यतीत करना चाहिये, न मित्र मंडली में गप्पें हांकने ही में ! उसे कुछ समय पत्नी के साथ मनोरंजन करने में भी बिताना चाहिये ! अन्तिम बात यह है कि पति को अपने निजी कार्यों में पत्नी से परामर्श भी करना चाहिये व उसका ध्यान भी चाहिये ।

पत्नी के कर्तव्य

सुखी जीवन के लिये जिस प्रकार पति को अपने कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक है, उसी प्रकार पत्नी को भी। यदि पति अपनी कमाई को पत्नी की इच्छापूर्ति में खर्च करता है तो पत्नी को भी अपने हंसते हुए मुखड़े व मीठे वार्तालाप द्वारा अपने पति के दिन भर के श्रम को दूर करने का प्रयास करना चाहिये ! उसे भोजनादि बनाने में विशेष सावधानी रखनी चाहिये, जिससे मनुष्य अपने पूरे दिन का परिश्रम स्वादिष्ट भोजन से परोसी हुई थाली को देखते ही भूल जाय ! पति-महाशय को भी भोजन पर व्यर्थ की कटु आलोचना करके पत्नी का जी न जलाना चाहिये !

पत्नी का गृह-संचालन की कला में पारंगत होना नितान्त आवश्यक है ! उसे स्वयं में तथा अपने घर में ऐसा आकर्षण उत्पन्न करना चाहिये कि मनुष्य को विवश होकर अपने अवकाश के घण्टे घर ही में बिताने पड़ें ।

पत्नी को किसी खर्चीली आदत का अभ्यास न करना चाहिये ! जिस किसी वस्तु की उसे आवश्यकता हो तो पति को सीधे ढंग से कहना चाहिये ! उसे छिपाने का प्रयास करना या उल्टे-टेढ़े ढंग से कहना कभी कभी पति-पत्नी दोनों को ले डूबता है। पति के सम्मुख अत्यधिक लज्जावती बनना पत्नी के लिये श्रेयस्कर नहीं अपितु हेयकर है !

पत्नी को अपने पति के समस्त कार्यों का ज्ञान होना चाहिये, जिससे कि वह पति को समय समय पर अमूल्य परामर्श दे सके व पति की अनुपस्थिति में नव आगन्तुकों को उचित उत्तर दे सके।

इन थोड़े से कर्तव्यों को यदि पति-पत्नी पूर्ण रूप से एक दूसरे के प्रति निभायें तो तनिक से प्रयास से वैवाहिक जीवन सुखी बन सकता है ! पति-पत्नी का जीवन एक दूसरे के अभाव में अपूर्ण है, अतः दोनों को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुये अपने जीवन को एक पूर्ण इकाई में परिवर्तन करने का यथा-शक्ति प्रयत्न करना चाहिये।

कुछ समाचार

महिला पुलिस

कलकत्ते में महिला पुलिस की भर्ती का काम एक मास के भीतर आरम्भ कर दिया जायगा। सिर्फ शिक्षित महिलाओं को ही पुलिस में भर्ती किया जायगा। अफसर श्रेणी में रखी जाने वाली महिलाएं कम से कम बी० ए० पास रहेंगी और साधारण दर्जे में, जो असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर आफ पुलिस की बराबरी का दर्जा होगा, मैट्रिक पास महिलाओं को लिया जाएगा।

शिक्षिताओं में अनाचार

कई सप्ताह पहले मालिश करने वाली जो लड़कियां कलकत्ते में गिरफ्तार की गई थी, उनके सम्बन्ध में बतलाया गया कि उनमें से अधिकांश पढ़ीलिखी हैं और कुछ तो मैट्रिक पास हैं। जांच करने से मालूम पड़ा कि उन्हें साधारणतः चार श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम तो विधवाएं, द्वितीय पतियों द्वारा छोड़ी गई, तृतीय पूर्वी बंगाल से आई हुई लड़कियां तथा चतुर्थ वेश्या।

भारतीय महिला बैरिस्टर

गत १६ जून को एक भारतीय महिला बैरिस्टर ने ब्रिटिश प्रिवी कौंसिल के समक्ष भाषण करके एक नवीन इतिहास का निर्माण किया है। उनका नाम कुमारी देवकी है। वे हिन्द से आये हुए एक मामले की अपील में प्रतिवादी की ओर से कौंसिल के सम्मुख उपस्थित हुई थीं। उनका बयान बहुत ही आकर्षक था। उन्होंने बहुत ही विश्वास तथा स्पष्टता के साथ तर्कों के समक्ष भाषण किया। कुमारी देवकी की अवस्था ३० वर्ष से कुछ कम है।

समाज सेवा नहीं, संतान पालन श्रेयस्कर

भारतीय कन्याओं को गवर्नर जनरल का सन्देश

हमें अपने देश की लड़कियों को लड़कों के बराबर ही क्रियाशील और उपयोगी नागरिक बनाना चाहिए। कन्याओं के लिए अविवाहित रह कर सामाजिक सेवा करने की अपेक्षा विवाह करना और संतान का पालन पोषण करना श्रेयस्कर है।

भारत की कन्याएं दुखी हैं, चाहे वे कितने ही सुन्दर और भड़कीले वस्त्र पहनती हों और चाहे उनके मुख पर कैसी ही मुसकान क्यों न खेलती हो। वास्तव में वे अत्यन्त दुःखी हैं। इसलिए उन्हें चाहिए कि वे ईश्वर पर भरोसा रखें और अपना स्वर्ग सुख अपने चित्त में प्राप्त करने की चेष्टा करें, जैसा कि सीता जी ने किया था। जो साहस युवतियां श्वसुर के अनजाने गृह को जाते समय दिखाती हैं वह अतुलनीय है। ऐसी परिस्थिति में ईश्वर ही उन्हें सुखी और वीर बनाता है।

— श्री राजगोपालाचार्य

शिक्षा में पुरुषों से भी आगे

कलकत्ता विश्वविद्यालय की आई० ए० (एफ०ए) परीक्षा का जो परिणाम प्रकाशित हुआ है, उसमें प्रथम दस सफल परीक्षार्थियों में पांच स्थान छात्राओं ने प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया है कि समाज लड़कों पर जितना व्यय करता है यदि उतना ही व्यय लड़कियों पर भी किया जाये तो शिक्षा ही नहीं, किसी क्षेत्र में वे लड़कों से पीछे न रहें। प्रथम दस स्थानों में प्रथम और द्वितीय स्थान आशुतोष कालेज की श्रीमती गौरी सेन गुप्ता और श्रीमती शिप्रा सरकार ने, चतुर्थ स्थान गोखले मेमोरियल कालेज की श्रीमती शिप्रा सेन, पांचवां और नवां स्थान आशुतोष कालेज की श्रीमती मीरा दास गुप्त तथा श्रीमती नन्दिता भट्टाचार्य ने प्राप्त किया है।

इंग्लैण्ड में पत्नी की हीन दशा

नीना नकुशिना नाम की एक रूसी महिला ने कम्यूनिस्ट दल के मुखपत्र 'प्रवदा' में एक-लेख प्रकाशित किया है जिसमें वह लिखती है कि मैंने एक अंग्रेज से शादी की और फिर उसके साथ ब्रिटेन गयी। यह मैंने बड़ी मूर्खता की। अंग्रेज के साथ विवाह करके मैंने ढाई वर्ष के भीतर केवल दुःखों, खुशी और अधिकारों के न होने का अनुभव किया।

इंग्लिश परिवार में स्त्रियों की दासता देख कर तो मैं हैरान रह गई। वहां के इंग्लिश समाचार पत्रों में सोवियट के विरुद्ध बड़ी गन्दगी के साथ प्रोपेगण्डा किया जाता है। कुछ रूसी स्त्रियों ने अंग्रेजों के साथ ब्याह किये, पर उन्हें अपने पतियों से मिलने के लिये ब्रिटेन नहीं जाने दिया गया। मेरा पति मुझ से अलग होने के लिये राजी हो गया, ताकि मेरे पुत्र को सोवियट रूस में अच्छी शिक्षा मिले और उसे बेकारी का भय न रहे।

एक दूसरी रूसी स्त्री ने भी अपने बयान में बताया है कि इंग्लैण्ड में पत्नी की स्थिति गुलाम से भी बुरी है। मैं अपने अंग्रेज पति से बाजार जाने के लिए कह गई, लेकिन उन्हें इस बात में भी ऐतराज था कि मैं दो घंटे भी बाजार में कुछ चीज खरीदूं। दरअसल अंग्रेज लोग अपनी स्त्रियों को किसी तरह की आजादी देना नहीं चाहते।

भारत सरकार को सामयिक परामर्श

सरकारी अफसरों को भारी वेतन मत दो

[श्री किशोरलाल मशरूवाला]

ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान में कई बुराइयां पैदा की हैं। उनमें से एक है ऊंचे पदों के साथ वेतनों को जोड़ना। इस बुराई को हमें जल्दी से जल्दी खत्म कर देना चाहिये। सरकारी नौकरियों की व्यवस्था सिर्फ इसी सिद्धान्त पर नहीं की गयी है कि जिम्मेवारी के पदों पर काम करने वाले लोगों को अच्छी तनखाहें, भत्ते वगैरा दिये जायं, ताकि सरकार योग्य आदमी पा सके और सरकारी अफसर भी फर्ज अदा करने में ईमानदारी से अपना पूरा समय, शक्ति और ध्यान लगावें। उनकी व्यवस्था इस उसूल पर भी की गयी है कि सरकारी अफसरों की जिम्मेदारी बढ़ने के साथ ही उनकी तनखाहें, भत्ते, रहने के सुभीते वगैरा भी तब तब तक बढ़ते रहें, जब तक वे आखिरी पद पर न पहुंच जाय। हर नौकरी का आधार यही स्वीकृत पद्धति मानी गयी है और सिर्फ पैसे को ही राज के किसी अफसर की सेवाओं की कदर करने या उसस अच्छी से अच्छी सेवा लेने का साधन समझा गया है।

कुछ बरस पहले कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया था कि एक खास हद के बाद किसी अधिकारी की तनखाह न बढ़ाई जाय, फिर उसके पद का राज में कोई भी महत्व क्यों न हो। सिक्के की उस समय की कीमत के आधार पर ज्यादा से ज्यादा मासिक वेतन ५०० रु० तय किया गया था। आज की हालतों में इतनी रकम बिलकुल अपर्याप्त मानी जा सकती है। उसे बदल कर पैसे की आज की कीमत के आधार पर दूसरी रकम तय की जा सकती है। मुझे लगता है कि किसी अफसर की तनखाह तय करने में असल की चीज पांच सौ का आंकड़ा नहीं है। महत्व इस बात का था कि एक हद के बाद किसी पद का तनखाह के साथ कोई जरूरी सम्बन्ध नहीं होना चाहिये। दूसरे, अफसरों की तनखाहें गरीब देश के खजाने को देखकर तय की जानी चाहिये।

मालूम होता है, इन दोनों विचारों को अब कांग्रेस सरकारों और विधान का मसविदा बनाने वाल' ने छोड़ दिया है। मसविदे की दूसरी फेहरिस्त में प्रेसिडेन्ट, गवर्नर, मन्त्री, स्पीकर, सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के जज, वगैरा जैसे राज के कुछ ऊंचे अधिकारियों की तनखाहें निश्चित आंकड़ों में इस तरह [illegible] की गई हैं :

प्रेसिडेन्ट —रु० ५,५०० माहवार + भत्ते
गवर्नर —रु० ५,५०० " + भत्ते

सुप्रीम कोर्ट का चीफ जस्टिस —रु० ५,०००
दूसरे जज — रु० ४,५००
हाई कोर्ट का चीफ ज० —रु० ४,०००
दूसरे जज रु० ३,५००

मैं समझता हूं कि प्रेसिडेन्ट और गवर्नरों के भत्ते इसलिये हैं कि वे मेहमानों की आवभगत और दावत कर सकें और राजनीतिक-सामाजिक ढंग के फर्ज पूरे कर सकें।

अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान में आते ही हमारे राष्ट्र की एक कमजोरी को पहचान लिया था। उन्होंने यह जान लिया था कि हिन्दुस्तान के लोग दरबारों, जुलूसों, उत्सवों और भीड़ भड़क्के के जलसों में दौलत की तड़क-भड़क दिखाने से जितने प्रभावित होते हैं, उतने और किसी चीज से नहीं। देश का बारहों महीने दुःखी और अधभूखा रहने वाला गरीब से गरीब आदमी शादी, मौत या परिवार की दूसरी किसी महत्व की घटना के समय एक दम खुले हाथ खर्च करने लगता है और धूमधाम के अपने कला-प्रेम का दिखावा करता है। इस के लिए वह अपनी जायदाद भी बेच डालता या गिरवी रख देता है, और कपड़े व गहने उधार लेता है। कुछ समय पहले तक कोई कोई लोग तो इन खर्चों के लिये रुपया लेकर जीवन भर की नौकरी के इकरारनामें भी लिख देते थे। गरीब से गरीब आदमी भी अपने धनी से धनी जातिभाई की बराबरी करने की कोशिश में रहता है। इस लिये अंग्रेजों ने सोचा कि जब तक वे राजकाज चलाने में नवाबी शान शौकत और तड़क-भड़क नहीं कायम रखेंगे, तब तक लोग उनकी इज्जत नहीं करेंगे।

हमने हर्ष और शोक दोनों में अपनी इस राष्ट्रीय कमजोरी को वैसा का वैसा रखा है। १५ अगस्त को औपनिवेशिक स्वराज्य पाने के समय हमने जिस तरह खुशियां मनायीं तथा जिस ढंग से और जिस पैमाने पर गांधीजी के दाहसंस्कार और अस्थिविसर्जन की विधि पूरी की, उसकी तुलना —अगर आगे बढ़ने की बात न की जाय— मुगलों के जमाने में होने वाले इसी तरह के कामों से और लार्ड कर्जन के कारोनेशन दरबार से की जा सकती है, जिसकी उस समय कड़ी टीका की गयी थी। जब गांधीजी राउण्ड टेबल कान्फरेन्स में शामिल होने के लिये लन्दन गये थे, तब उन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि वे गरीब देश के सच्चे प्रतिनिधि दिखाई दें। लेकिन जब गांधीजी मरे, तो हमने इस बात की सावधानी रखी कि उनकी भस्म इस तरह विसर्जित की जाय और उनका श्राद्ध ऐसी धूमधाम से किया जाय, मानो वे दुनिया के सबसे संपन्न राष्ट्र के पिता हों।

इन प्रदर्शनों के पीछे रहने वाले विचारों के आधार पर ही ऊंचे अफसरों को ऊंची तनखाहें दी जाती हैं और उनकी तड़क-भड़क कायम रखी जाती है। हम अपने लोगों पर और विदेशियों पर अपनी सादगी, बुद्धि और सच्चरित्र के सच्चे गुणों से नहीं, बल्कि शानशौकत भरे जलसों और तमाशों से प्रभाव डालना चाहते हैं। इन्हें संभव बनाने के लिये जरूरी है कि जैसे जैसे पद बढ़े, वैसे वैसे तनखाह भी बढ़ायी जाय।

मैं कट्टर संयम का जीवन बिताने की बात नहीं करता, लेकिन साधारण दर्जे का जीवन बिताने की बात जरूर करता हूं, जिसकी हद को सार्वजनिक जीवन में पार नहीं करना चाहिये। किसी खास दर्जे तक पद और तनखाह का सम्बन्ध रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए जब तक कोई सरकारी नौकर जिला अफसर—मजिस्ट्रेट, जज, कलेक्टर, पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट वगैरा नहीं बन जाता, तब तक ऐसा किया जा सकता है। उसके बाद किसी को सीनियर होने के नाते ऊंचे पद पर जाने का हक नहीं दिया जाना चाहिये। सिर्फ योग्यता के आधार पर ही किसी को ऊपर के पद के लिये चुना जाय। और इस चुनाव से उसकी तनखाह, भत्ते वगैरा में कोई फर्क नहीं होना चाहिये। किसी को ज्यादा बड़ी जिम्मेदारी के पद पर रखना ही उसकी योग्यता की कदर करना है। और ज्यादा ऊंचा पद जब आदमी के मान-सम्मान को बढ़ाता ही है, तब फिर तनखाह और भत्ता बढ़ाना बेकार है। अगर ऊंचे पद पर जाने से ज्यादा सफर करने, ज्यादा सरकारी मेहमानों की आवभगत करने, वगैरा में ज्यादा खर्च करना जरूरी हो जाये तो वह खर्च दिया जा सकता है। इसके अलावा दूसरा क्या कारण है कि हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस और छोटे जज की तनखाह में या सुप्रीम कोर्ट के जजों और उसी तरह के दूसरे अफसरों और डिस्ट्रिक्ट जज की तनखाह में फर्क रखा जाय? किसी आदमी का सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस के पद के लिये चुना जाना ही इस बात का सबूत है कि दूसरे जजों और मेम्बरों के बनिस्बत उसकी योग्यता और सेवाओं की ज्यादा कदर और तारीफ की गयी है। लेकिन इस नियुक्ति से उसके लिये यह जरूरी नहीं हो जाता कि वह अपने में कोई अलग तरह की योग्यता पैदा करे या अलग तरीके से काम करे या जज अथवा ऐडवोकेट के नाते उसे रोज जितना काम करना पड़ता था, उससे ज्यादा काम करे। सुप्रीम कोर्ट के दूसरे जज भले उसके मातहत काम करें और उस से हुक्म लें, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उन्हें चीफ जस्टिस से कम शक्ति खर्च करनी होगी और कम दरजे के कानूनी ज्ञान का उपयोग करना होगा। चीफ जस्टिस अपने साथी जजों से किसी भी दृष्टि से ऊंचा क्यों न हो, लेकिन उसकी कीमत पैसों में नहीं आंकी जा सकती। अगर बड़प्पन को स्पष्ट करना जरूरी हो तो ऊंचे अफसर को ज्यादा सम्मान की कोई पदवी दे दी जाय। लेकिन इसके लिये कोई कारण नहीं कि हर ऊंचे पद के साथ साथ बढ़ी हुई तनखाह भी दी जाय। यही दलील प्रेसिडेन्ट, गवर्नर, प्रधानमंत्री और छोटे मंत्रियों, वगैरा के लिये भी लागू होती है।

इस रिवाज के साथ एक दूसरा बेतुका रिवाज यह है कि अगर किसी अफसर की थोड़े दिनों के लिये किसी ऊंचे पद पर नियुक्ति होती है, तो थोड़े दिनों के लिये उसकी तनखाह भी बढ़ जाती है। मिसाल के लिये, अगर किसी प्रान्त का गवर्नर एक हफ्ते या पन्द्रह दिनों के लिये छुट्टी पर जाता है और उसकी जगह उसके बाद का अफसर काम करता है, तो रिवाज के मुताबिक उसे अधिक भत्ता मिलना ही चाहिये, मानो वह इस जगह पर रोज छह या सात घण्टे काम करने के बजाय बारह घण्टे काम करेगा, या उस दरमियान उसे अपने लड़के की कालेज फीस या अपने निजी मददगारों की तनखाहें बढ़े हुए परिमाण में देनी होंगी। पद और तनखाह के इस झूठे सम्बन्ध को जितना जल्दी तोड़ दिया जाय, उतना अच्छा है।

— ह० सेवक से

पौण्ड ऋण का प्रश्न

[श्री जान किम्सले]

आजकल लन्दन में भारत और पाकिस्तान की पौण्ड ऋण सम्बन्धी बात चीत चल रही है और भारत के अर्थमंत्री श्री षण्मुखम चेट्टी वहां गये हुए हैं। इस युद्धकालीन सञ्चय के बारे में लेखक ने ब्रिटेन के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला है।

अभी तक सब को यह अच्छी तरह से मालूम नहीं है कि भारत के ऐसे ऋण अथवा पौण्ड पावनों के इकट्ठा होने के क्या कारण थे। ब्रिटेन ६ वर्ष तक विनाशकारी युद्ध से घिरा हुआ था। उसको युद्ध शस्त्रों के निर्माण के लिये अपने शान्तिकालीन निर्यात का बलिदान करना पड़ा। अनिवार्य था कि उसको अपने निर्यात से कई गुणा अधिक माल बाहर से खरीदना पड़ा। व्यापारिक कर्ज इकट्ठे हो गये और साथ मे अन्य खर्च भी सम्मिलित होता रहा, जो कि भारत, पाकिस्तान, बर्मा और अन्य स्थानों पर स्थित ब्रिटिश सेनाओं पर स्थानीय मुद्राओं में खर्च किया जाता रहा। यह तो अब बीता इतिहास है और आज हमारे सामने विचारणीय प्रश्न यह है कि अभी तक रुके हुए पौंड-ऋणों का निबटारा किस प्रकार किया जावे।

ब्रिटेन के अतिरिक्त सभी पौंड क्षेत्रों के लिये यह समस्या अत्यन्त आर्थिक महत्व रखती है। ब्रिटिश सचय में से भारी रकम बाहर निकालने से सारे पौंड क्षेत्र के लिये परिणाम भयकर हो सकते है।

ऋण और पूंजी

द्वितीय महायुद्ध के अंत होने पर ब्रिटेन के सिर पर ३ अरब ६५ करोड़ पौंडों का सम्पूर्ण कर्जा था, जिसमें से १ अरब ३० करोड़ पोंडों की एक अत्यधिक भारी रकम केवल हिन्द और पाकिस्तान को देनी थी। युद्ध आरम्भ होने पर, केवल ५० करोड़ का सम्पूर्ण ऋण देना था। १९४७ के अन्त तक व्यापारिक खातों और अन्य खातों द्वारा भुगतान होने के कारण १० करोड़ पोंडों की कमी होकर ३ अरब ५५ करोड़ का ऋण शेष रह गया था। कुछ देशों की रकमें अवश्य चढ़ोथीं, लेकिन दूसरी गिर गई थीं।

भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध में यह अनुमान किया जाता है कि उनका ऋण घट कर १ अरब २० करोड़ पौंड रह गया था। पिछले अगस्त से बाद की अवधि के लिये, ब्रिटेन ने अपनी कठिनाइयों के होते हुए भी, भारत और पाकिस्तान को लगभग १० करोड़ का भुगतान कर दिया था युद्ध के बाद इन बड़ी रकमों को सिर से उतारने का स्पष्ट और सरल तरीका यह था कि या तो बैंक खाते के रकमें निकालने की सहूलियत दे दी जाती अथवा इकट्ठी रकमें लेनदार देशों के खातों में जमा कर दी जातीं। जिस कारण ने इस भारी संचय को जन्म दिया था, उसी ने इस उपाय का कार्यान्वित करना सर्वथा असम्भव बना रखा था। छोटी सी रकम तक के लिये भी ब्रिटेन को प्रबन्ध करना पड़ता था। दूसरे शब्दों में, या तो उसे विदेशी भुगतान के खातों के लिये तत्काल एक भारी और बढ़ती हुई बचत पैदा करनी पड़ती अथवा सोने का अम्बार, डालर और अन्य मुद्रा संचय। वस्तुतः उसके पास इनमें से कोई प्रबन्ध नहीं था।

१९४७ में सोना और डालर सचय में से उसको एक पौंड की भारी और असहनीय रकम को खाली तले से निकालना पड़ा और इन कमी को अमरीका और कनाडा के डालर कर्जों की ठोस सहायता द्वारा और सोना बेचकर पूरा किया गया था। इस वर्ष के आरम्भ में अमरीकी कर्जा समाप्त हो गया था और उपस्थित थोड़ी-सी कमी को दोबारा सोना बेचकर और अंतर्राष्ट्रीय द्रव्य कोष से उधार लेकर पूरा किया गया था। जनवरी के शुरू में ब्रिटेन की और बाकी के पौंड क्षेत्रों के साथ हिन्द और पाकिस्तान की आवश्यकताओं के दबाव पड़ने पर भी सचय केवल ६८ करोड़ पौंडों तक नीचे आये थे। यह अनुमान किया जाता है कि इस वर्ष के मध्य तक ये सचय और भी भयकर रूप से गिर जायेंगे और ४५ करोड़ पौंड के समान बहुत थोड़ी सी रकम बाकी बचेगी।

स्पष्टतया इन कारणों को देखते हुए, पौंड ऋण में से रकम के भुगतान की एक पर्याप्त रूप से सकुचित सीमा होनी चाहिये, विशेषतया उनमें बड़ा डालरों और अन्य नकद मुद्राओं की जबर्दस्त मांग हो। लन्दन में चल रही वर्तमान बातचीत ब्रिटेन की सारी आर्थिक अवस्था को हानि पहुंचाये बिना हिन्द और पाकिस्तान को कितनी रकम दी जा सकती है, इसका निर्णय करेगी।

यग वीमेन क्रिश्चियन एसोसियेशन के एक विशेष आयोजन में लार्ड माउण्टबेटन भी सम्मिलित हुए। श्रीमती जानमथाई और लेडी शोन उन्हें विदाई दे रही हैं।

ब्रिटेन का व्यापारिक उद्देश्य

ब्रिटेन का अन्य देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध अधिकतर इस पौंड पावने के प्रश्न पर ही अटका हुआ है। ब्रिटेन के व्यापारिक उद्देश्य साफ हैं — पारस्परिक व्यापार को अधिक सम्भव सीमा तक बढ़ाना, जबकि साथ-साथ वह एक तरफ भारी बेबाकियों को चुकता करने के प्रयत्न भी करता रहेगा। अन्य देशों के साथ किये गये हाल के अनेक व्यापारिक समझौतों में यह नीति बहुत सफल रही है। हिन्द और पाकिस्तान के मामले में ऐसे उद्देश्य अत्यधिक तगड़े हैं। ब्रिटेन ने इन दोनों देशों से १९३८ में ५ करोड़ पौंडों का आयात किया था और निर्यात ३ करोड़ ४० लाख पौंड था। १९४६ में आयात ६ करोड़ ९० लाख पौंड का और निर्यात का ८ करोड़ पौंडों का था, लेकिन १९४७ में ८ करोड़ ४० लाख पौंडों के आयात और ९ करोड़ २० लाख पौंडों के निर्यात से समानता आ गई है।

ब्रिटिश द्विदेशीय व्यापारिक नीति का मुख्य उद्देश्य यही है कि ब्रिटिश माल अधिकतर उन साथियों को भेजा जाय जिन्हें इसकी अत्यधिक आवश्यकता है। इस प्रवृत्ति का प्रमाण इस बात से मिलता है कि १९४८ के प्रथम चार मासों में हिन्द और पाकिस्तान को १ करोड़ १५ लाख पौंडों की ब्रिटिश मशीनें निर्यात की गयीं, जबकि १९४७ में ८० लाख पौंडों से कम का निर्यात हुआ था। यह स्पष्ट है कि पहले के निर्यात से वर्तमान निर्यात का बहुत अधिक मात्रा में बढ़ गया है, जब हिन्द और पाकिस्तान ब्रिटिश कपड़ा मशीनों के सबसे बड़े ग्राहक हैं। १९४७ में ब्रिटिश उत्पत्ति का ८ प्रतिशत निर्यात हिन्द और पाकिस्तान को किया गया और इसमें ४२ प्रतिशत पूंजीगत माल शामिल था — जिसका निर्यात अति दुर्लभ होता है। वास्तव में निर्यात होने वाला १२ प्रतिशत ब्रिटिश पूंजीगत माल भारत के हिस्से में आया।

मेरे विचार में जबकि पौंड ऋण के प्रश्न पर विचार हो रहा है, हमें मांगों और आकांक्षाओं को पीछे ही छोड़ देना चाहिए, क्योंकि इसके परिणामों का वर्तमान रूप में परिचित होना ही वास्तविक महत्व रखता है। यदि ब्रिटेन अपनी शक्ति के बाहर कोई वायदा करे तो उससे कोई लाभ नहीं पहुंच सकता। हालांकि ब्रिटिश व्यापार सरणाओं से पता चलता है कि इस वर्ष सुदूरपूर्व सम्बन्धी एक भारी कमी पैदा होगी, जिसे मार्शल सहायता भी पूरा नहीं कर सकेगी। स्पष्टतया कहा जाये तो इस समय ब्रिटेन का कमजोर आर्थिक ढांचा अत्यधिक बोझ पड़ने से बिलकुल टह जायेगा, जिसके भयकर परिणाम ब्रिटेन के साथ-साथ अन्य स्टर्लिंग क्षेत्रों और फलस्वरूप बाकी के संसार के लिए भी घातक सिद्ध होंगे।

फिलस्तीन और तीन बड़ी शक्तियां

[श्री विलम स्टीड]

ब्रिटेन ने फिलस्तीन के संघर्ष को कुछ समय के लिए कैसे टाला, इसकी कहानी इस लेख में देखेंगे।

फिलस्तीन की अवस्था में परिवर्तन से स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर अच्छा प्रभाव पड़ने की आशा पैदा हो गई है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् २६ मई को यहूदियों और अरबों से अमल कराये जाने वाले स्वीकृत प्रस्ताव— विचाराधीन मध्यस्थता के लिए यहूदियों और अरबों की चार सप्ताहों की एक विराम सन्धि के प्रस्ताव के साथ उसकी शर्तों को पूर्णरूप से और शीघ्र मान लिए जाने पर जोर नहीं दिया गया और इसका एक लाभ यह हुआ है कि अमरीका और ब्रिटेन में पैदा होने वाले एक गम्भीर मनमुटाव की आशंका अब एक परस्पर सहयोग और सद्भावना में बदल गई है।

इस सफलता का मुख्य श्रेय सुरक्षा परिषद् में ब्रिटिश प्रतिनिधि सर अलेक्जेण्डर कडोगन और विदेशमंत्री श्री अर्नेस्ट बेविन को है। किपलिंग लिखित प्रसिद्ध कविता 'वीरता' में की दो परीक्षाओं में वे वस्तुतः उत्तीर्ण हो गये हैं। किपलिंग लिखता है —

"जब सबका दिमाग बिगड़ रहा हो और इसका दोष तुम पर लाद रहे हों, तब यदि आप अपने मन में धैर्य रख सकते हैं, यदि तुम अपने पर विश्वास कर सकते हो, जबकि सब पर तुम को शंका हो, लेकिन दूसरों पर शंका करते समय ज्यादा उदार होना चाहिए।"

इस कविता के अनुसार इन्होंने अपने दिमागों को वश में रखा और झूठी शंकाओं की उपेक्षा करना ठीक समझा। फलस्वरूप, ब्रिटिश प्रस्ताव ने मंत्री मार्शल और वाशिंगटन राज्य विभाग को भी चिंतामुक्त कर दिया, क्योंकि इससे पूर्व वे यथार्थ शंकाओं के लिए उन्हें माफ करना नहीं भूले।

"इजराइल" की स्वीकृति

अमेरिका में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि श्री मार्शल और उनके कूटनीतिज्ञ सलाहकार प्रेसीडेंट ट्रूमैन द्वारा "इजराइल" के शीघ्र एक राज्य स्वीकार किये जाने और फिलस्तीन की समस्या के आगामी संचालन के प्रति उदासीन थे। उनको मुख्यरूप से व्यग्रता तब हुई, जबकि सुरक्षा परिषद में रूसी प्रतिनिधि ने कुछ समय पूर्व का अस्वीकृत अमरीकी प्रस्ताव दोबारा उपस्थित किया। इसमें अरबों और यहूदियों को ३६ घण्टे के अन्दर शस्त्र युद्ध बन्द करने का आदेश दिया गया था और ऐसा न करने पर तुरन्त कार्रवाई की धमकी थी। इस प्रस्ताव से ब्रिटेन सहमत नहीं था।

संभव है कि यहूदियों ने यह प्रस्ताव मान लिया हो अथवा इसे मानते हुए वे दिखाई दिये हों। अरबों ने इसे स्वीकार कर लिया होता। मित्र राष्ट्रीय संघ को या तो अपनी विवशता स्वीकार करनी पड़ती अथवा मित्र राष्ट्रों (रूस भी) की शक्ति द्वारा हस्तक्षेप करके अरबों की स्वीकृति लेनी पड़ती। मित्र राष्ट्रीय संघ को ऐसे झगड़े में उलझना पड़ता, जिसमें नीति और अनीति बराबर से संतुलित हैं और सारे मुस्लिम जगत के निकट अकारण कोपपात्र बनने की नौबत आ जाती। लन्दन की तरह वाशिंगटन स्थित राज्य विभाग ने भी यह सम्भावना स्पष्ट रूप से अनुभव कर ली थी, यद्यपि प्रेसीडेंट ट्रूमैन इसे बहुत कम महत्व देते थे। अमेरिकन राज्य विभाग यह जानता था कि सुरक्षा परिषद में अमरीका का प्रतिनिधि, सर्व प्रथम अपने हाथों पेश किये गये अस्वीकृत प्रस्ताव का समर्थन करने में अपने को नहीं रोक सकेगा, क्योंकि उसी का प्रस्ताव सोवियत रूस द्वारा दोबारा पेश किया गया था। इस प्रस्ताव ने सुरक्षा परिषद् की स्थिति विषम हो जाती।

विराम-सन्धि आदेश

घटनाक्रम की इस स्थिति में ब्रिटिश प्रस्ताव ने सुरक्षा परिषद् को बचाव का एक मार्ग सुझा दिया। इस प्रस्ताव का अभिप्राय यह था कि चार सप्ताहों की विराम-संधि को कार्यान्वित करने के के लिए अरबों और यहूदियों को सुझाया जाये। इस सन्धिकाल में दोनों पक्षों को हर ओर से हथियार मिलना बन्द हो जाये, जिससे मध्यस्थता के लिए समय मिल सके; ब्रिटिश सन्धि की शर्तों के अनुसार अरब सेना में कार्य करने वाले २१ ब्रिटिश अफसरों को भी शीघ्र अलग करना होगा; और फिर भी, यदि अरबों अथवा यहूदियों में से कोई भी युद्ध जारी रखेगा, तो ब्रिटेन भी मित्र राष्ट्रीय संघ के निर्णय को मनवाने में साथ देगा। अब मित्र राष्ट्रीय संघ ने फिलस्तीन को सन्धि कमीशन रवाना कर दिया है और स्वीडन के काउण्ट बर्नाडोटे को विशेष मध्यस्थ नियुक्त किया गया है।

यह बातें तुरन्त कार्रवाई की मांग करने वाले सोवियत प्रस्ताव के अनुकूल नहीं थीं। मध्यस्थता असफल होने पर, रूसी प्रतिनिधि ने कहा, 'हमको सहायता लेकर शान्ति स्थापित करनी चाहिये' पर क्या यह सहायता है — चार्टर के खण्ड के अंतर्गत दबाव डालना सहायता है ? इस धमकी के परिणाम को देखे बिना हमें अपने आप को ऐसे झगड़े में नहीं फंसाना चाहिए, जिससे हमारा प्रभाव एक अथवा दूसरे पक्ष पर बिलकुल समाप्त हो जाये, क्योंकि दबाव डालने का यह निश्चित परिणाम है। मित्र राष्ट्रीय संघ को वैसी उलझन में फंसाना ठीक नहीं है, जिसमें अब तक ब्रिटेन था।

इस दलील की शक्ति ने सुरक्षा परिषद को प्रभावित कर दिया। रूसी प्रस्ताव अस्वीकार हो गया और निःसन्देह अमेरिकी प्रतिनिधि भी, जिसने रूस का साथ देना ठीक समझा था, चिन्ता मुक्त हो गया। वाशिंगटन राज्य विभाग को भी बड़ी भारी उलझन से छुटकारा मिल गया। ब्रिटिश प्रस्ताव उन साधारण संशोधनों के पश्चात् ग्रहण कर लिया गया, जो कि लन्दन स्थित अमरीकी राजदूत सुझाये गये थे और जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने भी मान लिया था। इस मार्ग के द्वारा अमेरिका और ब्रिटेन के बीच पैदा होने वाले मतभेद को भी दूर कर दिया गया, और मार्शल योजना के अंतर्गत पश्चिमी यूरोप के पुनरुत्थान सम्बन्धी सहायता पर पड़ने वाले इसके सम्भावित प्रतिघातों को टालने में भी सफलता मिली।

मार्शल योजना भंग करने के दूसरे प्रयत्न में असफल होने के कारण सोवियट रूस को जो निराशा हुई उसकी झलक ब्रिटेन के विरुद्ध उच्छृंखल निन्दा के रूप में दिये गये एक रूसी भाषण में पायी गयी। इस चिह्नों के कारण साफ थे। रूस ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में था जब वह यहूदियों की विप्लवी अभिलाषाओं को सहारा देने वाली अपनी फौजें फिलस्तीन में भेज सके और विशेषरूप से आतंकवादी दल के लिये, जो कि साम्यवादियों का दल है अमेरीका और ब्रिटेन के बीच सनातनी पैदा करवा कर उसको मार्शल योजना भंग करने का जो सुअवसर मिल गया था वह भी नहीं मिला।

अब समस्त स्थिति का दारोमदार स्वयं फिलस्तीन पर है। वहां मित्र राष्ट्रीय संघ की सन्धि कमीशन और काउण्ट बर्नाडोटे का काम भी सुगम नहीं होगा। उन्हें अरबों के उस क्रोध का सामना करना होगा जो कि कुछ सरकारों द्वारा 'इजराइल राज्य' स्वीकार कर लिये जाने पर पैदा हो चुका है और उनको उस खतरे की तरफ भी ध्यान देना पड़ेगा, जो कि 'इजराइल की दुर्बल सरकार के सामने आतंकवादी दल और अन्य विप्लवी यहूदियों का नियंत्रण करने में असमर्थ होने पर पैदा हो सकता है।

फिलस्तीन की समस्या का अभी अंत होता नहीं दिखाई देता। लेकिन दम लेने और शान्ति पूर्वक कुछ विचार करने के लिये स्थान मिल गया है। अब यह बात भी स्पष्ट हो गई कि अमेरीका का जनमत प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन की यहूदी पक्ष में की गई शीघ्र कारवाई के समर्थन में सर्वसम्मत नहीं है। मेरे विचार में श्री अर्नेस्ट बेविन और सर अलेक्जेण्डर कडोगन हर अवस्था में मित्र राष्ट्रीय संघ द्वारा प्रशंसा प्राप्त करने के अधिकारी हैं; क्योंकि उन्होंने बदनामी सुनते हुए भी अपने दिमागों को ठीक स्थान पर साधे रखा।

हमारी पंजाब की चिट्ठी

दोनों पंजाबों में घोर अव्यवस्था

दोनों मन्त्रिमण्डल डांवाडोल — श्री भार्गव से असन्तोष — शरणार्थियों की समस्या — बिजली व पानी का झगड़ा — पंजाबी को नई मांग — पूर्वी पंजाब ज्यादा जोरदार — सिखों की संकीर्णता जाटों में भी।

पश्चिमी पंजाब के प्रधान मन्त्री नवाब ममदोत

पूर्वी पंजाब के प्रधान मन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव

इस समय हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में सबसे ज्यादा अशान्त और अव्यवस्थित प्रान्त पूर्वी पंजाब और पश्चिमी पंजाब है। विभाजन के बाद बंगाल के दोनों भागों में कुछ समय तक अशान्ति रही परन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि विभक्त पंजाब की अपेक्षा विभक्त बंगाल परस्पर एक दूसरे के साथ मिलकर चलने का यत्न कर रहे हैं। दोनों बंगालों की सरकारें भी परस्पर एक दूसरे के समीप आने की कोशिश में हैं। दोनों बंगालों की जनता ने पूर्वी बंगाल में बंगाली को अपना कर, मि० जिन्ना के 'हिन्दू मुसलमान भिन्न २ भाषा बोलने वाली दो कौमें हैं' सिद्धांत का प्रत्यक्ष खण्डन कर दिया है। परन्तु पंजाब में दिन प्रति दिन दोनों पंजाबों में अविश्वास तथा भेद भाव गहरे होते जा रहे हैं। केवल यही नहीं, पूर्वी पंजाब और पश्चिमी पंजाब की सरकारें तथा जनता अभी तक अपने पैरों पर स्थिर रूप से खड़े होकर शासन का कार्य भी ठीक प्रकार से प्रारम्भ नहीं कर सकीं। पश्चिमी पंजाब का मंत्रिमण्डल डावां डोल स्थिति में रहता है। उसके प्राइममिनिस्टर मि० ममदोत को आए दिन कराची जाकर मि० जिन्ना की शरण लेकर अपनी गद्दी संभालनी पड़ रही है। हर समय कोई न कोई मुस्लिम लीगी समुदाय मन्त्रीमंडल के विरुद्ध असन्तोष प्रकट करता रहता है। मियां इफ्तिखारुद्दीन खां मंत्री बने। मतभेद होने के कारण उन्हें त्याग-पत्र देना पड़ा। अब मि० दौलताना और मि० शोकत हयात का त्याग-पत्र देकर प्रधान मन्त्री के प्रति असन्तोष प्रकट कर रहे हैं। पाकिस्तान के प्राइम मिनिस्टर मि० लियाकत अली खां ने सरकारी वक्तव्य प्रकाशित कर अपनी तटस्थता को प्रकट करते हुए पश्चिमी पंजाब के मंत्रिमंडल की गुत्थी को सुलझाने में अपनी असमर्थता प्रकट करके प्रान्तीय गवर्नर को इस विषय में विशेष अधिकार देने की घोषणा की है।

श्री भार्गव से असन्तोष

इसी प्रकार से पूर्वी पंजाब का मंत्री-मंडल भी प्रथम दिन से जनता के असंतोष का लक्ष्य बन रहा है। १४ अगस्त को लाहौर से शासन भार संभालने के लिए शिमला आते हुए, श्री गोपीचन्द जी तथा इनकी पार्टी के विशेष व्यक्तियों को लाजपतराय हाल में एकत्रित जनता ने लाहौर को अग्नि की ज्वालाओं में झुलसते हुए छोड़कर जाने पर धिक्कारा था। आज भी मास्टर तारा सिंह और देशसेवक सेना के नेता स० मोहन सिंह तथा श्रीयुत भीमसेन सच्चर आदि दिल्ली हाई कमाण्ड के पास समय समय पर इस मंत्रिमंडल के विरुद्ध असन्तोष प्रकट करने में कोई कसर नहीं कर रहे। श्री डाक्टर गोपीचन्द जी का मन्त्रिमन्डल जो भी थोड़ा बहुत काम कर रहा है, वह अधिकांश में कांग्रेस हाई कमाण्ड के भरोसे तथा उनकी साख पर कर रहा है। अकाली पार्टी नेशनलिस्ट सिक्ख सच्चर ग्रुप इन लोगों ने इस मंत्रिमन्डल की स्थिति को भी डावां डोल किया हुआ है।

प्रान्तों का असंतुष्ट वातावरण

शासनतंत्र के कर्मचारियों की लापरवाही के कारण जनता में असन्तोष पैदा हो रहा है। इस परिस्थिति को बदलने के लिये पूर्वी पंजाब सरकार ने 'एण्टी करप्शन सप्ताह' मनाना शुरू किया है। पिछले सप्ताह जालन्धर में पूर्वी पंजाब के जिला अफसरों की कान्फ्रेंस बुलाई गई थी। उसमें उन्हें प्रेरणा की गई थी कि वह पूर्वी पंजाब के शासन में से रिश्वत खोरी और सिफारिशों की सुनवाई तथा काम न करने की प्रवृत्ति को कम कर न्याय पूर्वक निष्पक्षपात होकर शासन करें। उस अवसर पर इन जिलाधीशों ने भी शिकायतें कीं कि हम क्या करें। कई मन्त्रियों की सिफारिशें तथा उनके द्वारा प्रबन्ध में अनावश्यक हस्ताक्षेप ने हमें परेशान किया हुआ है। इसका परिणाम यह है कि पूर्वी पंजाब के कस्बों देहातों तथा सीमावर्ती प्रदेशों में लूट मार हत्या काण्ड का जोर है। दिन दहाड़े डाकू लुटेरे आते जाते नागरिकों का सामान लूट लेते हैं। इन दिनों गुरदासपुर, बटाला, श्री हरगोविन्दपुर के आस पास तो इस प्रकार की घटनाओं ने जनता में भारी आतंक पैदा कर दिया है।

इस कुप्रबन्ध का एक कुपरिणाम यह हो रहा है कि देहातों तथा शहरों में लोग नए या पुराने कारोबारों को भली भांति चलाने में हतोत्साह हो रहे हैं। विशेषकर पश्चिमी पंजाब से आए हुए शरणार्थियों को फिर से बसाने वाले विभाग की कारगुजारी ने जनता को परेशान किया हुआ है। देहातों में काश्त करने वाले शरणार्थियों को यह भरोसा नहीं कि वह वहां से कब कहां भेज दिये जायेंगे। मुसलमानों की जमीनों का अधिकांश भाग वीरान पड़ा है। हिन्दू सिक्ख जमींदारों की जमीनें काश्तकारों को न मिलने से अधिकांश में उजाड़ पड़ी हैं।

यही हाल पश्चिमी पंजाब का है। पश्चिमी पंजाब में यह अफवाह जोरों पर है कि हिन्दुस्तान पाकिस्तान पर हमला करेगा। इसी आतंक से भयभीत हजूम ने लाहौर में एक ईसाई साधु को मार दिया। पंजाब गवर्नमेंट ने विशेष विज्ञप्ति प्रकाशित कर इस प्रकार की अफवाहें फैलाने वालों को सावधान किया। एंग्लो इंडियन सिविल मिलिटरी गजट ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि जनता पर इन विज्ञप्तियों का कोई असर नहीं। अन्तः प्रान्तीय कर्मचारियों के फैसलों का भी कोई असर नहीं क्यों कि रोजाना कारोबार में दोनों पंजाबों की जनता में अविश्वास, असहयोग और विद्वेष की भावनाएं बद्धमूल हैं। इन दिनों लाहौर और पेशावर में भिखारियों, गठ कतरों और मसजिदों में मौलवियों द्वारा चोरी की जाने की घटना बढ़ रही हैं। सिविल मिलिटरी गजट के लेखानुसार ८ साल के बच्चे भी इन कार्यों में लगे हुए हैं। इसका मुख्य कारण यह है बाहर से आए शरणार्थी बेकार और बेरोजगार हैं।

अभी समाचार पत्रों में पूर्वी पंजाब के सीमाप्रांत पर शत्रु आक्रमण की आतंकमयी भावनाओं को कम करने के लिये श्री गोपीचन्द भार्गव विज्ञप्तियां निकाल रहे हैं, परन्तु सरकार के इन कामों का असर बहुत कम होता है क्यों कि शरणार्थी तथा दूसरे लोग भी बेकार और बेरोजगार होकर लाचार जीविका निर्वाह के लिये सब कुछ करने को उद्यत हो जाते हैं।

बिजली और पानी का झगड़ा

पिछले दिनों दोनों पंजाबों में बिजली और नहर के पानी के सम्बन्ध में झगड़ों ने उग्र रूप धारण कर लिया। भारतीय सरकार की उदारता और दूरदर्शिता से मामला टल गया है—पता नहीं दोनों में इन मामलों के कारण कब कब कम भयंकर रूप धारण करले। पाकिस्तान में नान पंजाबी मुसलमान पंजाबियों से नफरत और ईर्ष्या करते हैं—इधर हिन्दुस्तान में नान-पंजाबी जनता पंजाबी शरणार्थियों, विशेषतः स्यालकोट, झंग, मुजफ्फरगढ़ की ओर से आने वालों को अपनाने में कतराती है। पाकिस्तान में उर्दू भाषा के बढ़ते हुए प्रभाव को कम करने के लिये पंजाबी मुसलमान देहाती पंजाबियों की सहूलियत के लिए पंजाबी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दे रहे हैं। इधर पूर्वी पंजाब में भी कुछेक हिन्दू तथा सिक्ख—सिक्खों में भी अकाली विशेष रूप से—पंजाबी भाषा को पूर्वी पंजाब की भाषा बनाने पर अत्यन्त आग्रह कर रहे हैं। दोनों पंजाबों की तनातनी का मूर्तरूप इस घटना में स्पष्ट चित्रित होता है कि कादियां में ३००४०० मिर्जाई मुसलमान भारत सरकार की संरक्षा में अपने मजहब की मसजिदों की रक्षा के लिये रुके हुए हैं। उधर पाकिस्तान के ननकाना साहब में सिक्ख ३०००-४००० की संख्या में रुके पड़े हैं। यह असुविधायें इस बात की सूचक हैं कि जब तक पंजाब इस प्रकार बंटा रहेगा, शान्ति कायम नहीं हो सकती। स्थिति यह है कि दोनों एक दूसरे से डर रहे हैं—इसका उपाय यह है कि दोनों पंजाबों के मन्त्रिमंडल जनताओं के पारस्परिक द्वेषों को दूर करने के लिये पंजाबी सभ्यता को विकसित करें।

पूर्वी पंजाब ज्यादा कमजोर

उपरिलिखित समानताओं के होते

(शेष पृष्ठ १८ पर)

पृथ्वी का निकटवर्ती मंगल ग्रह

[प्रो० बसन्तलाल एम० एस-सी, उदयपुर]

पृथ्वी के निकट होने के कारण मंगल के ग्रह ने वहां के निवासियों की दृष्टी आकर्षित किया है। वैज्ञानिकों ने मंगल के बारे में जो खोज की है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है।

पृथ्वी के समान मंगल को अपनी धुरी के चारों ओर घूमने में २४ घण्टे से कुछ ही अधिक समय लगता है। उसकी धुरी का झुकाव भी लगभग पृथ्वी के धुरी के झुकाव के बराबर है। मंगल के चारों ओर का वायुमण्डल पृथ्वी के वायुमण्डल के समान मोटा नहीं है। मंगल के धरातल पर भी गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी पर की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से आधी है, इसी कारण वहां के वायुमण्डल के अधिक मोटा होने की आशा नहीं की जा सकती। आधुनिक मान्यताओं के अनुसार मंगल पर के वायुमण्डल का घनत्व पृथ्वी के वायुमण्डल के घनत्व का चौथाई है। प्रो० लावेल का अनुमान है कि मंगल पर का वायुमण्डल हमारे यहां के ऊंचे से ऊंचे पर्वतों के निकट के वायुमण्डल से भी पतला है। मंगल का द्रव्यमान पृथ्वी के द्रव्यमान का लगभग नवां भाग है। उसका व्यास ४२१६ मील है, जबकि पृथ्वी का व्यास ७९२७ मील है। मंगल को सूर्य की परिक्रमा करने में १.८८ वर्ष लगते हैं।

मंगल की ओर देखने से वह लाल का चमकता हुआ बिन्दु दिखलाई देता है। लेकिन दूरबीन द्वारा देखने पर वहां के धरातल को लालिमा का होने के साथ साथ उसमें कहीं कहीं हरित नील वर्णयुक्त कुछ धब्बे दिखलाई पड़ते हैं। ये धब्बे स्थायी हैं। यह अनुमान किया जाता था कि लाल रंग मंगल के स्थल को प्रदर्शित करता है, जबकि हरित नील वर्ण के धब्बे वहीं पर जल समुद्र या जल प्रदेश होने की सूचना देते हैं। मंगल ग्रह के ध्रुवों पर श्वेत प्रदेश दिखलाई देता है। यह सफेद भाग ग्रीष्मऋतु में प्रायः लुप्त हो जाता है, किन्तु ठण्डे दिनों में पुन: दृष्टिगोचर होने लगता है। वैज्ञानिकों का ख्याल है कि यह सफेद भाग वहां के बर्फीले प्रदेश को प्रदर्शित करता है।

पृथ्वी और मंगल की समानता ने एक नवीन कल्पना को जन्म दिया है। लोगों का अनुमान है कि मंगल पर भी पृथ्वी जैसे ही मनुष्य हैं, किन्तु वे हमारे यहां के मनुष्यों के समान नहीं हैं।

यह अनुमान किया जाता था कि मंगल पर के ध्रुवों का श्वेत प्रदेश [illegible] के कारण है किन्तु वास्तविकता यह [illegible] नहीं है, जितना कि [illegible] है। क्योंकि मंगल पर का पानी बरफ के रूप में परवर्तित होता जा रहा है तो वहां के वायुमण्डल में पानी व भाप के कणों का अस्तित्व होना जरूरी है, किन्तु इस बात के अभी पूरे प्रमाण नहीं मिलते। यह भी अनुमान किया जाता है कि मंगल पर के ध्रुवों का श्वेत प्रदेश कारबन-डाइ ऑक्साइड गैस — जिसके जमने का तापमान बहुत ही कम है — के कारण है, किन्तु प्रो० लावेल ने थोड़े दिन हुये जब यह विज्ञप्ति निकाली थी कि प्रकाश-विच्छेद यन्त्र द्वारा जांच करने पर मंगल के वायुमण्डल में पानी के भाप के कण पाये जाते हैं।

दूरबीन द्वारा देखने पर मंगल में कुछ काली रेखाएं दिखलाई पड़ती हैं। साधारणतया लोगों का यह ख्याल है कि यह रेखायें मंगल पर की नहरें हैं। सन् १८७७ ई० में इटली के प्रसिद्ध ज्योतिषी शिपरेली ने यह विज्ञप्ति निकाली थी कि मंगल के धरातल पर कुछ काली रेखायें दृष्टिगत होती हैं। इस विज्ञप्ति के अनुसार इन रेखाओं की लम्बाई कई हजार मील तथा चौड़ाई २० से ६० मील तक बतलाई गई। शिपरेली ने इन रेखाओं का नाम चेनल्स रखा जिनको इटली की भाषा में कैनल्स कहते हैं। इटली भाषा का यह शब्द शीघ्रता से अंग्रेजी भाषा के कैनाल्स शब्द में अनुवादित कराया गया और लोगों में यह भ्रम फैल गया कि इस प्रकार की रेखायें वहां पर नहरें होने की सूचना देती हैं।

प्रो० लावेल ने मंगल के बारे में महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन किया है। उनका अनुमान है कि यह कैनल्स काफी सकड़ी हैं उनके अनुसार सबसे पतली रेखाओं की चौड़ाई २ या ३ मील है जबकि मोटी रेखाएं १५ से २० मील तक चौड़ी हैं। उनका कहना है कि इन रेखाओं की लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक है। कई रेखायें २००० मील तक लम्बी हैं तथा उनमें से एक की लम्बाई ३५४० मील है। तब क्या ये रेखायें पानी की वास्तविक लम्बी चौड़ी धारायें हैं। प्रो० लावेल का कहना है 'हां'। मंगल पर की यह सारी रेखायें वहां के ध्रुवीय श्वेत प्रदेश के निकट आकर एकत्रित हो जाती हैं। लावेल के निरीक्षणों के अनुसार जहां पर यह रेखाएं एक दूसरे को काटती हैं वहां कुछ काले धब्बे दिखलाई पड़ते हैं। मंगल पर के स्थायी श्वेत प्रदेश के निकट एक गहरे नीले रंग का स्थायी धब्बा दिखलाई पड़ता है। इससे सिद्ध होता है कि ध्रुवों पर भी श्वेतता ऐसी वस्तु के कारण है जो पिघलती है। ऐसी वस्तुओं में पानी ही ऐसी चीज है जो इस प्रकार का प्रदर्शन करे। मंगल सूर्य से काफी दूर है। वहां का वायुमण्डल इतना पतला है कि सूर्य की गरमी को शोषित करके रोक नहीं सकता। ऐसी दशा में किसी वस्तु के पिघलने का प्रश्न आश्चर्यप्रद ही प्रतीत होता है, किन्तु प्रोफेसर लावेल का कहना है कि वायुमण्डल के पतला होने के कारण सूर्य की किरणें तेजी के साथ पड़ती हैं और पानी पिघलने लगता है। मंगल पर जल वायु यद्यपि ठंडी है लेकिन वहां का तापमान पानी के जमने के तापमान से सदैव अधिक रहता है। पहिले लोगों का यह विचार था कि मंगल में दिखाई देने वाले धब्बे वहां के समुद्र हैं, किन्तु लावेल के निरीक्षणों ने इस विचार को गलत सिद्ध कर दिया है क्योंकि मंगल की रेखायें एक दूसरे को काटती हुई प्रतीत होती हैं। इसके अतिरिक्त ऋतु परिवर्तन के साथ २ उन धब्बों के रंग में भी परिवर्तन होता दिखलाई पड़ता है। उन का हरित नील वर्ण दूसरे रंग में बदल जाता है और वह पुन: हरित नील वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। लावेल का अनुमान है कि यह धब्बे वनस्पति के प्रदेश हैं जिन में बर्फ के पिघले हुये पानी से सिंचाई होती है।

वहां की नहरों के बारे में भी यह देखा गया है कि वे मंगल ग्रह की शरद ऋतु में दिखलाई नहीं पड़तीं किन्तु बसन्त ऋतु में जब कि ध्रुवीय श्वेत प्रदेश धीरे धीरे लुप्त होने लगता है वे पुन: दृष्टिगोचर होने लगती हैं। लावेल का अनुमान है कि मंगल ग्रह की बड़ी २ काली रेखाओं के बीच में पानी की वास्तविक नहरें मौजूद हैं जिनके द्वारा वहां सिंचाई होती है। जो काली रेखायें हमें दिखलाई पड़ती हैं वे नहरें नहीं हैं क्यों कि वहां की नहरें काफी सकड़ी हैं, किन्तु ये रेखायें नहरों के किनारे बड़े लम्बे चौड़े वनस्पति प्रदेश हैं जिन में उन नहरों द्वारा सिंचाई होती है। तब वहां जीवन का अस्तित्व भी है। इस विषय में समाचार पत्रों में अनेक बेसिर पैर की बातें निकली हैं। प्रो० लावेल भी मंगल में जीवन अस्तित्व के सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं किन्तु उनका विश्वास इस प्रकार के बेसिर पैर के आधारों पर निर्भर नहीं है, वे विश्वास तब करते हैं जब उनके निरीक्षणों द्वारा निकले हुए परिणाम उन्हें ऐसा करने को विवश कर देते हैं। उनके विचार इस प्रकार हैं :—

एक समय था जब कि मंगल पर पानी की काफी कमी हो गई थी। पानी की इस कमी को पूरा करने के लिये वहां के निवासियों ने अच्छे उपाय सोच निकाले हैं। इन काली रेखाओं का सीधापन तथा उनकी रेखागणितानुकूल आकृति उनके कृत्रिम होने का प्रमाण देती है। मंगल के ध्रुवीय श्वेत प्रदेश की बरफ का पिघल कर वहां की मध्यरेखा की ओर बहने का इसके अतिरिक्त और कोई कारण नहीं मिलता। उदाहरणतः पृथ्वी पर की नदियों का बहाव धरातल

की ऊंचाई नीचाई के ऊपर निर्भर है। लूमेल के निरीक्षणों के अनुसार पानी एक ध्रुवीय प्रदेश से मध्य-रेखा की ओर बहता हुआ दूसरे ध्रुव पर पहुंच जाता है और वहां जाकर जम जाता है। समय आने पर वह पानी पुनः पिघल कर पहिले ध्रुव पर पहुंच जाता है। इस प्रकार पानी का आवागमन जारी रहता है। इससे सिद्ध होता है कि वहां के निवासियों ने कृत्रिम रूप से पानी के बहाव का इस प्रकार प्रबन्ध किया है। प्रो० लावेल ने अपनी मृत्यु तक इसी बात की पुनरावृत्ति की थी कि मंगल पर की काली रेखायें वहां की नहरों और उनके आसपास की वनस्पति प्रदेश को सूचित करती हैं। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहिले एक व्याख्यान में कहा था कि मंगल के लगातार निरीक्षणों से कोई बात ऐसी नहीं मिलती जो वहां पर जीवन अस्तित्व की कल्पना के विरुद्ध जाती हो।

सन् १९१३ में प्रो० पिकरिंग ने अमेरिका और योरुप के ज्योतिषियों का एक संघ स्थापित किया था। यद्यपि उन्होंने स्वयं कोई सिद्धान्त स्थिर नहीं किया किन्तु उनका कहना है कि उनके निरीक्षणों के परिणाम लावेल के विरुद्ध नहीं जाते। सन् १९१८ में पिकरिंग ने मंगल के बारे में अपना नवीन सिद्धान्त वैज्ञानिकों के सामने रक्खा। इसके अनुसार मंगल पर के केनाल्स का कार्य वही है जो हमारे यहां के समुद्र करते हैं। मंगल की ग्रीष्म ऋतु में इन केनाल्स का पानी भाप बन कर उड़ता है और मेंह के रूप में पुनः वहां बरस पड़ता है, किन्तु पिकरिंग का उक्त सिद्धान्त सन्तोष जनक नहीं है।

मंगल पर जीवन के अस्तित्व का प्रश्न वहां के तापमान से बहुत कुछ सम्बन्धित है। कुछ समय हुआ जब डाक्टर अलफ्रेड रसेल ने गणित द्वारा यह सिद्ध किया था कि मंगल का तापमान बरफ के तापमान से भी कम है। यदि यह सत्य है तो वहां जीवन के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती।

लावेल और पिकरिंग का कहना है कि वहां के वायुमण्डल के स्वच्छ रहने के कारण दिन का तापमान काफी बढ़ जाता है। पिकरिंग का विश्वास है कि मंगल पर रात्रि में बदली होने के कारण सूर्य से आई हुई गर्मी का अधिकांश बचा रह जाता है। इस प्रकार मंगल पर की रातें अपेक्षाकृत गरम रहती हैं।

सन् १९२४ में रेडियोमीटर द्वारा मंगल के धरातल का तापमान मापा गया था। इस निरीक्षण से वहां का तापमान ७० से १५० सेन्टी ग्रेड के बीच में निश्चित किया गया था। उक्त प्रयोगात्मक परिणाम वहां पर जीवन के अस्तित्व का समर्थन करते हैं यदि परमाणु शक्ति (एटोमिक एनर्जी) का उपयोग यातायात के साधनों को विकसित करने में किया गया तो मुमकिन है हम निकट भविष्य में मंगल की यात्रा कर सकें।

अपशकुन

[श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

इस तरह काम करते करते सतीश को जब साली के विवाह का निमन्त्रण मिला, तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। मरुस्थल के बीच थके मांदे राहगीर को हरित भूमि देख कर जो प्रसन्नता होती है, सतीश की प्रसन्नता भी बहुत कुछ वैसी ही थी। मरुस्थल में जिस प्रकार रेत के बवण्डर उठा करते हैं और राहगीर को परेशान कर जाते हैं, ठीक उसी प्रकार सतीश के जीवन में भी पिछले सात वर्षों में तरह तरह के बवण्डर उमड़ चुके हैं और उसे अनेक परेशानियों के भंवर जाल में पटक चुके हैं।

लम्बे लम्बे सात साल सरक गये। लेकिन इस बीच न तो सतीश अपने सम्बन्धियों से जाकर कभी मिल जुल सका, न चैन के साथ जिन्दगी ही बसर कर सका। इस बीच संसार का दूसरा ऐतिहासिक महायुद्ध हो चुका। कितने ही राष्ट्रों का नाम निशां भी दुनिया के नक्शे से मिट चुका। अनेक परिवर्तन हो चुके; लेकिन सतीश की जिन्दगी निरानन्द ही रही। उसमें ऐसा कोई परिवर्तन नहीं हुआ, जिससे सतीश को किसी प्रकार का सन्तोष होता अथवा सुख मिलता। इस बीच जो बवण्डर उसके जीवन में आये, वे उसे अपेक्षाकृत अकिंचन ही बना गये।

अपनी जन्मभूमि छोड़ परदेश में आकर सतीश ने सोचा था कि वह चैन की जिन्दगी बसर करेगा। लेकिन समय ने उसका साथ आज तक नहीं दिया। वह जिस काम में अपना हाथ लगाता उसी में असफलता उसके पल्ले पड़ती। दो साल तक उसने अनेक प्रयोग किये। कभी चीनी की रंग बिरंगी चिड़िया बना कर बच्चों की दुनिया में डेरा जमाया किया; कभी थापी झोले में पुस्तकें भर कर बड़े आदमियों की कोठियों के दरवाजे खटखटाये तो कभी कांच की खिड़कियों से सजे सजाये ठेले में आधुनिकतम शृङ्गार सामग्री लेकर फैशन परस्त श्रीमतियों को लुभाया।

लेकिन सतीश की भावुकता ने उसे कभी आगे न बढ़ने दिया। चीनी की चिड़ियां एक लम्बे से डण्डे में लिपटी घास में खोंस कर वह बाबा भोलानाथ की नगरी- काशी—की गलियों में चक्कर काटता। एक हाथ से अपनी पीतल की थाली बजाते हुए जब वह मीठे गले से चिल्लाता—'चीना की चिरैया, ले लो भैया! नाचो नाचो ता ता थैया!'—तो आसपास के बच्चे उसके चारों ओर शहद की मक्खियों की तरह आ जाते। लेकिन इन सभी बच्चों के मां बाप सभी ... [illegible] जितने ही बच्चे उन ... [illegible] ... जो

पैसे देकर चीनी की चिड़िया मोल लेते और मजे से खाया करते।

दो चार दिन तक सतीश ने लगातार देखा कि कुछ बच्चे ऐसे हैं, जो चिड़िया मोल तो नहीं ले सकते; लेकिन उनका दिल चाहता है कि चिड़िया उन्हें मिल जायें, तो वे निहाल हो जायें। एक दिन सतीश ने ठाकुर जी के मन्दिर के पास, पीपल के पेड़ के नीचे खड़े होकर प्रसन्नता से अपना राग अलापा और बड़ी देर तक थाली टुनटुनाता रहा। जब बहुत से बच्चे आ गये और चिड़िया की मांग करने लगे, तो उसने कहा—'आज पहले पैसे लूंगा। फिर सब को एक पंक्ति में खड़ा करके बारी बारी से एक एक चिड़िया दूंगा।'

जो बच्चे पैसा लाये थे, वह प्रस्ताव सुन कर प्रसन्न हुए। सतीश को लपक कर पैसे दे दिये और फौरन एक कतार बना कर खड़े हो गये। जिनके पास नहीं थे वे बेचारे अपना सा मुंह लटकाये एक ओर खड़े रहे कुण्ड में।

और, जिन बच्चों ने पहले से ही सतीश को पैसे दे दिये थे, वे यह देख कर दंग रह गये कि कुण्ड में खड़े बच्चों को सतीश एक-एक चिड़िया बांट रहा है। धीरे धीरे लगभग सारी चिड़िया बंट चुकीं। मुश्किल से पन्द्रह बीस बच रहीं।

'अरे, हमने पैसे दिये हैं! हमें क्यों नहीं देते?' पैसे देकर कतार बांधे खड़े बच्चों ने चिल्लाना शुरू कर दिया।

'अभी देता हूं!' सतीश ने कहा। फिर जिन बच्चों को वह मुफ्त में चिड़िया बांट चुका था, उनसे कहा—'अब तुम सब जा सकते हो'

नाचते-कूदते वह सब बच्चे अपने अपने घर चले गये। जिन बच्चों ने पैसे दे दिए थे, लेकिन अब तक चिड़िया न पा सके थे, वे ज्यों के त्यों मन मसोस कर कतार में खड़े थे।

सतीश ने कहा—'देखो भई, तुम रोज चिड़िया खरीदते हो। एक दिन न मिली, तो कोई हर्ज नहीं!' और उनके पैसे वापस कर दिये। फिर जो चिड़िया बच रही थीं, उन्हें इन बच्चों के सामने हवा में उछालते हुए कहा—'लूटो खाओ।'

मोहल्ले के लोग, जो सतीश का यह हाल देख रहे थे, समझ गये कि चिड़िया वाला सनकी है। देखो न, मुफ्त में चिड़ियां लुटा डालीं।

लेकिन सतीश सनकी नहीं था। उन बच्चों की कातर दृष्टि उसकी भावुकता को बेध चुकी थी, जो पैसे देकर चिड़िया खरीदने में असमर्थ थे। और, इसके बाद सतीश ने फिर कभी चीनी की चिड़िया नहीं बनाई।

पुस्तकों के बेचने में भी उसे कभी सफलता हाथ नहीं लगी। और, शृङ्गार सामग्री का तो लगभग चिड़ियों-जैसा ही हाल हुआ। जिस किसी तरुणी को ललचाई आंखों शृङ्गार सामग्री देखते पाया और उसकी असमर्थता का आभास सतीश को हुआ नहीं कि यों ही उसने चीजें लुटा डालीं।

भावुकता की दुनिया में सतीश का चाहे जितना आदर हो, लेकिन व्यावहारिकता की दुनिया में ऐसा व्यक्ति सदा दुःखी रहता है। सतीश का भी यही हाल हुआ। काशी में दो साल रहकर, वह एक दिन अपनी पत्नी के साथ चुपचाप प्रयाग चला आया और पिछले पांच साल से किले में क्लर्की कर रहा है। सवेरा होते ही किले की तरफ उसके कदम बढ़ जाते और शाम होते २ कहीं घर वापस आ पाता। थका-मांदा होने पर फिर कहीं जाने आने की शक्ति उसमें रह नहीं जाती। खाना खाकर लेट रहता और अपनी निरानन्द जिन्दगी पर जाने क्या क्या सोचता रहता।

ऐसी दशा में जब उसे साली के विवाह का निमन्त्रण मिला, तो स्वभावतः वह अपूर्व प्रसन्नता से भर उठा। घर आकर उसने पत्नी से कहा—'लो, तुम्हारी छोटी बहिन का विवाह हो रहा है। निमन्त्रण आया है'

'अरे, पहले से कोई खबर भी नहीं और एक दम निमन्त्रण आ पहुंचा!' श्यामा ने निमन्त्रण पत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, और उसे एक सांस में ही पढ़ डाला। फिर कहा—'ठीक ही है। दादा अब बूढ़े हैं न। सम्बन्ध तय होते ही इसी साल सरला के हाथ पीले कर देना उन्होंने ठीक समझा होगा। इसी लिए पहले से कोई खबर नहीं भेज सके।'

'ठीक क्यों न होगा!' सतीश ने मुस्कराते हुए कहा—'सात साल सरक गए। इस बीच तुम अपने मां-बाप और बहिनों से मिल नहीं सकीं। अब विवाह के सिलसिले में मौज ही मौज है।'

'सचपूछो तो मौज रहेगी तुम्हारी। श्यामा ने कहा।

'मौज!' सतीश ने दोहराया। फिर शायद विद्रूप के स्वर में कहा—'हां, मौज ही रहेगी। प्रयाग से नागपुर तक आने जाने में एक सैंकड़ा से कम स्वाहा न होगा। रेलगाड़ियों में गाजर-मूली की तरह मुसाफिर भरे रहते हैं। साला के विवाह के सिलसिले में इस यात्रा में छठी का दूध याद आ जायगा।'

'और, यह न कहोगे कि जब सालियां ठठोली कर तुम्हारे गाल लाल करेंगी,

यहां तुम्हें पहाड़ तो खोदना नहीं है। दिन भर आराम से पड़े रहोगे और बैठे अपने जंगार होते देखोगे।'

'तुम ठीक कह रही हो।' सतीश ने कहा — 'सचमुच अपनों से दूर रहते रहते अब जी ऊब चुका है। परदेश में रहकर रुपया चाहे जितना कमा लो, लेकिन सामाजिक सुख नसीब नहीं होता। दिन-भर काम करो और शाम को पक्षियों की तरह घोंसले में आकर छिप रहो। फिर, रुपए भी तो हम नहीं कमा सके। महायुद्ध जन्य महंगाई ने हमें कभी पन-पने नहीं दिया। भला, यह भी कोई जिन्दगी है।'

'तब एक काम करो न।' श्यामा ने एक नया प्रस्ताव पेश किया — 'बता बताओ इस मिले की नौकरी को। चलो, अब हम भी वहीं नागपुर में रहेंगे। अरे, नौकरी ही जब करनी है, तो कहीं भी रहे। क्या प्रयाग क्या नागपुर। वहां कम से कम अपनों के बीच तो रहेंगे। सुख-दुख में अपनों का सहारा तो रहेगा।'

'सुझाव तो बढ़िया है श्यामा। लेकिन तुम्हारे दादा यह न कहेंगे कि दिया था विवाह का निमन्त्रण और आ गए हजरत बोरिया बिस्तर बांध कर। फिर, मकानों की हालत तो तुम यहां देख ही रही हो। दूसरे महायुद्ध के बाद ऐसा मालूम पड़ता है कि जनसंख्या आदमियों का संहार हो जाने के बावजूद भी जन-संख्या नदी की बाढ़ की तरह बढ़ गई है। किराए पर मकान मिलना आकाश कुसुम हो गया है। मान लो कि नागपुर में हम लोगों को महीनों किराए पर मकान न मिला तो क्या होगा?'

'कुछ नहीं होगा।' श्यामा ने अपने प्रस्ताव की स्वीकृति की झलक पाते हुए कहा — 'सात साल के बाद हम जा रहे हैं। दादा ऐसे नहीं कि किराए पर मकान न मिलने की हालत में यह कह दें कि अपना रास्ता नापो।'

'यह तो मैं भी जानता हूं, लेकिन किसी की भलमनसाहत का अनुचित लाभ उठाना ठीक नहीं।'

'इसी को कहते हैं बालू पर तैरना।' श्यामा ने मुस्कुराते दिखलाते हुए कहा—'अरे, जब गहराई में घुसेंगे, तब तैरने की बात भी सोच ली जाएगी।'

'अच्छा, तो तय रहा कि हम लोग एक सप्ताह के भीतर ही यहां से अलविदा हो जाएंगे।' सतीश ने कह दिया।

मकान पर झुके नीम के वृक्ष पर बैठे-से श्वेत कई बड़े-बड़े पक्षियों ने पर फड़फड़ाए और किसी दूसरे वृक्ष की तरफ उड़ गए। सन्ध्या के झुटपुटे में श्यामा ने इन पक्षियों को ध्यान पूर्वक देखा और कहा — 'हां, हमें चलना ही चाहिए। परदेश में आजीवन रहना ठीक नहीं।'

दूसरे दिन मिले में जाकर सतीश ने अपना इस्तीफा पेश कर दिया। बिना किसी आपत्ति के इस्तीफा मन्जूर कर कर लिया गया। दूसरा महायुद्ध समाप्त हो ही चुका था। सरकार स्वतः मजदूरों और स्थायी क्लर्कों की छुट्टी कर रही थी। सतीश का काम और व्यवहार इतना अच्छा था कि अब तक उसके बड़े बाबू ने उसे अलग करने की सिफारिश नहीं की थी। लेकिन सतीश ने जब स्वयं शहर छोड़ देने का निश्चय व्यक्त किया और बड़े बाबू को अपना मन उचाट जाने का हाल बतलाया, तो उन्होंने उसका इस्तीफा फौरन मन्जूर कर दिया।

इस्तीफा मन्जूर होने की बात सुनकर श्यामा फूली न समाई। वह अपने मां बाप के शहर में जो जा रही थी। कहा उसने— 'एक पत्र आज ही दादा के नाम भेज दो। उचित मकान की तलाश में रहने की बात भी लिख दो।'

'तुम भी गजब करती हो श्यामा।' सतीश ने कहा — 'अरे, विवाह की भाग दौड़ में दम लेने की तो फुरसत न मिलेगी उन्हें, फिर तुम्हारे लिए मकान खोजने कौन जाएगा?'

'लिख देने में क्या हर्ज है?'

'है क्यों नहीं? उन्हें व्यर्थ परेशानी होगी।'

'तब नागपुर में रहने का निश्चय तो उन्हें लिख ही भेजो।'

'हां, यह मैं लिख देता हूं।' और सतीश ने उसी वक्त एक पत्र लिख कर नागपुर भेज दिया। फिर श्यामा से कहा — 'अब दादा का उत्तर आ जाने पर ही हमें चलना होगा।'

'तो क्या तुम्हें यह संशय है कि वे इस निश्चय का स्वागत न करेंगे?'

संशय नहीं; लेकिन व्यावहारिकता का तकाजा तो यही है। तुम अधीर क्यों होती हो? मेरा ख्याल है, एक सप्ताह के भीतर ही उनका उत्तर आ जाएगा। तब तक हम दो चार बार त्रिवेणी स्नान कर डालें और ·· '

'जो पाप इस जीवन में किए हों, उन्हें धो डालें।' श्यामा ने मजाक के लहजे में कहा।

'अनजान में भले ही कोई पाप हो गया हो श्यामा, लेकिन जान-बूझकर आज तक मैंने कोई पाप नहीं किया।'

'अरे, मजाक को भी तुम कभी कभी गम्भीरता के आवरण से ढक देते हो। त्रिवेणी-स्नान तो इस सप्ताह हमें अधिक से अधिक करना ही चाहिये। फिर, कौन जाने, कब आ सकें।'

एक सप्ताह का समय बात-की बात में सरक गया। इस बीच परिचितों से मिलने त्रिवेणी-स्नान करने और आराम के सिवा कोई काम नहीं किया सतीश ने। अन्त में श्वसुर का उत्तर मिला गया। उन्होंने

[शेष पृष्ठ १९ पर]

राष्ट्रीय सरकार की आंखें और कान

—हमारा गुप्तचर विभाग

[श्री आनन्द जैन]

★

संसार की समस्त सरकारें गुप्तचर विभाग की कार्यकुशलता पर ही प्रायः आधारित रहती हैं, इसी विभाग में उनके प्राण रहते हैं। गुप्तचरों को सी० आई० डी० भी कहते हैं। ४० करोड़ की आबादी वाले भारत पर ब्रिटिश सरकार के इसी विभाग के ५-६ उच्च अफसर हमदर्दी से शासन करते थे। इस केन्द्रीय गुप्तचर विभाग की शाखाएं भारत के समस्त भागों में थीं। कहीं कहीं पर तो केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के कर्मचारी बिना स्थानीय पुलिस की सहायता के भी कार्य करते थे और अब भी करते हैं। १५ अगस्त, १९४७ से पहले इन्हीं कर्मचारियों की रिपोर्ट पर अन्तिम निर्णय किया जाता था।

ब्रिटिश सरकार का गुप्तचर विभाग (स्काटलैण्ड यार्ड) विश्वविख्यात है। इंगलैण्ड में प्रत्येक नेता की रक्षा के लिए गुप्तचर रहते हैं और इतनी चालाकी से काम करते हैं कि नेता को स्वयं नहीं मालूम पड़ता। भारत में आने वाले मंत्रिमण्डल मिशन के साथ भी ऐसी गुप्तचर आये थे।

भारतीय गुप्तचर

किन्तु दुःख है कि हमारी भारत सरकार का गुप्तचर विभाग बहुत ही निम्न कोटि का है। पहले के अंग्रेज अफसर तो ब्रिटेन चले गये और उन द्वारा सिखलाये गये मुसलमान पाकिस्तान चले गये। इसलिए विशेषज्ञों की बहुत कमी हो गयी है। केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के कार्यकुशल न होने के कारण सम्पूर्ण भारत को उसका फल भुगतना पड़ रहा है। सितम्बर के दंगों में दिल्ली के मुसलमानों ने हमारों हथियारों तथा बमों का प्रयोग किया। किन्तु हमारे गुप्तचर विभाग को एक साल से होने वाली तैयारी की कोई खबर नहीं लगी। इसी विभाग पर दूसरा चांटा तब पड़ा जब केन्द्र में ही गांधी जी की हत्या हो गई। गुप्तचर बचा न सके, या यों कहा जाय कि उन्हें इसकी खबर ही नहीं लगी। समस्त भारत में राष्ट्रीय नेताओं को मारने का षडयंत्र रचा गया, किन्तु हमारे गुप्तचर विभाग को उसका पता ही नहीं।

गोडसे को बम्बई में पकड़ा जा सकता था, रास्ते में वह कई स्थानों पर ठहरा वहां पकड़ा जा सकता था, रेल में गिरफ्तार किया जा सकता था, किन्तु हमारा गुप्तचर विभाग तो सो रहा था।

गांधीजी की हत्या

गांधीजी की हत्या के सम्बन्ध में सरदार पटेल ने भारतीय पार्लमेंट में बतलाया था कि गांधी जी द्वारा इन्कार करने के कारण ही गुप्तचर उनकी रक्षा के लिए तैनात नहीं किए गए थे। अब जरा विदेशों की ओर भी देखिये। अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने सैंकड़ों बार गुप्तचर विभाग को चेतावनी दी थी कि गुप्तचर उनके पीछे न आया करें किन्तु तब भी जब तक वे जीवित रहे ४ या ५ गुप्तचर सदा उनकी रक्षा को तत्पर रहते थे।

स्काटलैण्ड यार्ड

पिछले कई वर्षों से यहूदी बार बार यह चेतावनी देते हैं कि ब्रिटिश पार्लमेंट को उड़ा दिया जायेगा या फलां इमारत को उड़ा दिया जायेगा, किन्तु स्काटलैण्डयार्ड ने सदा ही ऐसी योजनाओं की कली को खिलने से पहले ही तोड़ दिया है और फलस्वरूप पार्लमेंट को कोई हानि नहीं हुई।

गुप्तचरों की शिक्षा

ब्रिटिश सरकार चुनाव करके इंगलैण्ड के योग्य व्यक्तियों को गुप्तचर बनाने की शिक्षा देती है। स्काटलैण्ड यार्ड के स्कूल में दो वर्षों तक शिक्षा होती है, फिर विद्यार्थी अपना क्षेत्र चुन लेता है। जो भाषा सम्बन्धी जानकारी अच्छी रखता है उसे विदेशों में राजदूतों के साथ भेजा जाता है। वहां वे अपनी सरकार विरोधी कार्रवाइयों की जांच करते हैं, गुप्त से गुप्त स्थान के चित्र और नक्शे भेजते हैं, इत्यादि। जो विद्यार्थी कानूनी जानकारी रखता है उसे देश में ही हत्याओं तथा सरकार विरोधी षडयंत्रों की खोज के लिए रखा जाता है। हत्यारों का पता लगाने वाले गुप्तचरों को दवाइयों की शिक्षा भी दी जाती है।

हमारी परंपरा

प्राचीन काल में हमारे देश के प्रमुख राजा गुप्तचर (अय्यार) रखते थे, जो अपने काम में विशेष रूप से निपुण होते थे। कई पुस्तकों में इन अय्यारों की चालाकियों का वर्णन है।

किन्तु गुलामी के समय में हम अपनी इस चीज को भूल चुके हैं। अब चूंकि भारत आजाद हो गया है इस लिए भारतीय गुप्तचरों की न केवल नागरिकों की सुरक्षा के लिए ही आवश्यकता है, वरन् देशी तथा विदेशी

आह्वान

[श्री चन्द्र बी० काम]

अत्याचारों से आतङ्कित उठ ! जाग ! जाग ! नवयुवक जाग !
उठ ! स्वाभिमान के उग्र रूप उठ सोई माता के सुहाग !
किस मादक मदिरा के मद की मस्ती की नींद तुझे आई,
कैसे रण भेरी पर मरने वाले ने आंखें झपकाईं।
मानव की कठिन परीक्षा में जो सदा सफल होता आया,
उस अटल अदम्य मनस्वी ने कैसे अपनापन बिसराया।
तुरही का तीखा स्वर सुन सुन जो हृदय प्रफुल्लित हो जाता,
वह वीर वक्र भ्रू चाप तेज क्यों शक्ति हीन अब कहलाता।
भालों की नोकों के बल पर अब शत्रु हृदय फिर दहलाने,
मानवता के उज्ज्वल प्रतीक ! सुन रण भेरी का मधुर राग।
अत्याचारों से आतङ्कित, उठ ! जाग ! जाग ! नवयुवक जाग !

क्यों हृदय, प्रफुल्लित होता है, दुश्मन का तुम को पा अशक्त,
तुम पर ही जो पलने वाले तेरा ही पीते अरुण रक्त।
दुष्टों की द्वेष भरी आंखें तेरे वैभव को घूर रहीं,
अभिमान, तुम्हारे मानस के वह क्यों कर चकनाचूर रहीं।
तेरे अन्तर की आग बुझी, तेरा गौरव क्यों धुंधलाया,
सन्मान बिन्दु, तेरे पर क्यों, अब काला बादल घिर आया।
क्या सचमुच अपना पतन देख भी लज्जा तुम्हें नहीं आती !
गौरव-भूले ! पथ भ्रान्त दीप ! सुषमा के सुन्दर सरस राग—
अत्याचारों से आतङ्कित, उठ जाग जाग, नवयुवक जाग !!

अपमान ताड़ना सही महा अब तो निद्रा को त्याग त्याग,
अन्तर की बुझी हुई ज्वाला, अब पुनः प्रज्वलित कर समाज।
कण कण में बिजली सी भर कर साहस का सिंह सशक्त बना,
उस बल्य वृक्ष को पुनर्जन्म दे जिसका अणु अणु सूचक बना।
भयभीत सिंह ! भय को तज कर पहिचान स्वाभिमान अपना,
अपना पौरुष फिर जाग्रत कर तन्द्रा का तज धूमिल सपना।
अब मान बिन्दु की रक्षा हित शोणित में ज्वाला सी भर कर,
फट पड़ो देख दूषित दल पर लेकर मानस में प्रखर आग।
अत्याचारों से आतङ्कित, उठ जाग जाग, नवयुवक जाग !

इन गीतों में जीवन भर दो !

[श्री श्रीकृष्ण 'सरल']

इन सांसों में प्राण फूंक दो ! इन गीतों में जीवन भर दो !
गतिमय कर जीवन को उसमें, शत-शत विद्युत् के कण भर दो !
साध न कवि बनने की युग के
साथ साथ पग धर न सकूं जो,
बलिदानों के आमन्त्रण को
पाकर भी कुछ कर न सकूं जो,
जो दुख दर्द किसी का अपने
स्वर में भरकर गा न सकूं मैं,
सुप्त राष्ट्र में यदि नव जीवन
इन गीतों से ला न सकूं मैं।
रुक न सके आंधी तूफानों में मुझ में वह यौवन भर दो !
इन सांसों में प्राण फूंक दो ! इन गीतों में जीवन भर दो !
यदि अभिलाषा है जीवन में
मुझ को प्रणय राग गाने की,
तो अभिलाषा है जन जन में
क्रान्ति ज्वाल भी भड़काने की,
नहीं चाहता मधुर स्वरों को
गा, केवल अपना मन भरना,
ऐसे भी अगणित प्राणी हैं
जिनके लिए बहुत कुछ करना,
शक्ति-भक्ति के साथ साथ इस तन में गिरि सा दृढ़ मन भर दो।
इन सांसों में प्राण फूंक दो, इन गीतों में जीवन भर दो !

यह कैसी क्रान्ति ?

[काजी अनवरुद्दीन खां अख्तर, एम० एल० ए०]

प्राकृतिक नियम के अनुसार वृक्षों में एक वर्ष में एक बार क्रान्ति आती है। पतझड़ के मौसम में पुराने पत्ते एक एक कर के पृथ्वी पर आ गिरते हैं और सदा के लिये अपना अस्तित्व खो देते हैं। पतझड़ के पश्चात् एक भी पुराना पत्ता वृक्ष की डाली पर बाकी नहीं रहता। क्रान्ति का अर्थ है आमूल-चूल परिवर्तन। यदि वृक्ष पर एक भी पुराना पत्ता रह जाय, तो वृक्ष की शोभा को नष्ट करने में भारी सहायक होता है। नए पत्तों के लिए यह बात असह-नीय है कि उनके बीच एक सूखा और कुरूप पत्ता अपने अवांछनीय अस्तित्व को बनाए रखने का दुःसाहस कर सके।

किसी देश में भी जब क्रान्ति आती है, पुराने नाकारा तथा अत्याचारी शासन का अन्त होता है और नवीन शासन विधान अस्तित्व में आता है, तो समस्त दकियानूसी कल-पुर्जे सर पर पैर रख कर छू मन्तर हो जाते हैं। क्रांति की पूर्णता तभी होती है, जब कि पुराने शासन के पिट्ठू पुराने शासन के साथ ही दम तोड़ दें।

शताब्दियों के बाद हमारे देश में भी क्रान्ति आई है, परन्तु क्रान्ति से शासक के ढांचे में जो नवीन परिस्थिति उत्पन्न हुआ करती है वह अब तक इस देश की जनता की नजरों के सामने नहीं आई है। अत्याचारी शासक के जमाने के अधिकारी तथा कर्मचारी उसी पुराने ठाठ बाठ एवं मौज शौक का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। देश की शृंखलाओं को दृढ़ बनाने वाले मुस्लिम आबाद नवीन भारत में स्वातंत्र्य संग्राम के योद्धाओं का मुंह चिढ़ाने तक का साहस कर रहे हैं। देश को फिरंगी डाकुओं से मुक्ति दिलाने के लिए युद्ध करने वाले साहसी युवकों को कठिन कारावास का दण्ड देकर निन्दनीय पाप करने वाले न्यायाधीश अब भी न्याय के शासन पर बड़ी शान से विराजमान हैं। वह मजि-स्ट्रेट, जो देश को आजाद देखना अप-राध समझते थे, आज आजादी के बाद इस देश में रह कर अपने आपको अप-राधी क्यों नहीं समझते। देश के नेताओं तथा कार्यकर्ताओं को सजा देने वाले आज अपने आपको सजा के लिए पेश क्यों नहीं करते ? क्यों कि एक वर्ष पहले देश को आजाद कराना उनके नजदीक एक महान अपराध था।

हमारे देश में कई वर्षों बाद पतझड़ आया है, परन्तु आठ मास का समय बीतने पर भी पुराने पत्ते अपनी अपनी जगह पर ज्यों के त्यों कायम हैं। सिकन्दर, सर अकबर हैदरी आदि ने देश की जो सेवा ब्रिटिश शासन के पहिले जन कर की है, उससे कौन परिचित नहीं। सन् ४२ में इस प्रकार के लोगों ने जो करतब दिखाए, वह किस से पोशीदा हैं ? देश के टुकड़े कराने वाले लीगी महारथी आज भारत की विधान परिषद् में बैठ कर देश के निर्माता बनने जा रहे हैं। हसन इमाम, बेगम एजाज रसूल, सेठ आजाद भारत की पार्लिमेंट में मुफ्त में कुर्सियां तोड़ रहे हैं। मदनी, हिफजुर्रहमान, [illegible], लाल जी, मजीद और मुश्ताक आसमान के तारे गिन रहे हैं।

गोरा शाही के मुंह पर थप्पड़ रसीद करने वाले सहगल, ढाइलन, भोंसले और ढिल्लन के लिये सेना में स्थान नहीं है, क्योंकि उन्होंने गोरा शाही का जनाजा अपने कन्धों पर उठा कर कब्रस्तान तक पहुंचाया। भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम से सदा दूर रहने वाले बलदेवसिंह आदि पुरुषों के लिए स्वतन्त्र सरकार में स्थान हो सकता है और वे मन्त्री पद पर आसीन हो सकते हैं परन्तु भोंसले और ढाइलन आदि के लिए स्वतन्त्र भारत में जगह नहीं।

लोग कहते हैं कि यह सब कुछ क्यों हो रहा है क्या इसके पीछे किसी का हाथ है ? जब कांग्रेस में योग्य व्यक्तियों की कमी नहीं है ! सैकड़ों क्रान्ति व्यक्ति पुराने व्यक्तियों की जगह लेने को तैयार हैं तो फिर पुरानी नौकर शाही को छुट्टी देने में विलम्ब क्यों किया जा रहा है ? क्या ये पुराने आफिसर अन्दर ही अन्दर नए शासन की नींव को ढीली तो नहीं कर रहे हैं ?

षडयंत्रों से अपने राष्ट्र की रक्षा करना प्रमुख ध्येय है। हमारी सरकार को भी विदेशों में गुप्तचर भेजने हैं।

इसके लिए एक केन्द्रीय गुप्तचर शिक्षा स्कूल खोला जाय और समस्त भारत के युवकों में से चुनाव करके योग्य व्यक्तियों को शिक्षा दी जाय।

(पृष्ठ १२ का शेष)

हुए भी दोनों मंत्रियों में पूर्वी पंजाब संगठन की दृष्टि से कमजोर है। पाकि-स्तानी पंजाब में इस्लाम के नाम पर सब लोग मिस्टर जिन्ना के सामने झुक जाते हैं, परन्तु पूर्वी पंजाब में कोई भी सिरोह अपनी पृथक् हस्ती को छोड़ कर हिन्दुस्तान—भारतवर्ष के नाम पर अपने व्यक्तित्व को छोड़ने को उद्यत नहीं होता।

नागोके और मास्टर तारासिंह

अभी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और अकाली दल के निर्वाचन में यह बुराई स्पष्ट हो गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी में राष्ट्रवादी कांग्रेसी सिक्ख विजयी हुए तो अकाली दल में मास्टर तारासिंह के पक्षपाती खालिस्तान बनाने वाले। मास्टर तारासिंह ने गुरु का बाग में इस निर्वाचन के बाद ही घोषणा कर दी कि हम सिक्ख पंथ को पृथक् कौम बनाएंगे और पंजाबी को हिन्दी की उपेक्षा कर पंजाब की अदालती भाषा बनाएंगे। सिक्ख कौम को पृथक् कौम बनाने की लहर ने शेष पंजाबियों में, विशेष कर हिन्दुओं में, जाटों और नान जाटों में, भेद भाव को जन्म दिया है। पूर्वी पंजाब के मन्त्रिमण्डल में काट-छांट की दृष्टि से मंत्री नियत किये जाने भी इसी संकीर्ण घातक प्रवृत्ति के परिणाम हैं। पूर्वी पंजाब को इस घातक प्रवृत्ति से बचाने के लिये कांग्रेस हाई कमांड को विशेष ध्यान देना चाहिए—इस घातक प्रवृत्ति ने कांग्रेस के संगठन को भी शिथिल कर दिया है।

अपशकुन

(पृष्ठ १६ का शेष)

सतीश के नागपुर जा बसने के निश्चय का खुश कर स्वागत किया। मकान की कोई चिन्ता न करने का आश्वासन भी दिया।

प्रस्थान करने के दिन सुबह से ही श्यामा तैयारी करने में जुट गई। चाय पी लेने के बाद सतीश ने कहा — और तो सब मित्रों से मिल-भेंट चुका हूं; लेकिन मनोहर से अब तक नहीं मिल सका, श्यामा। परसों उसके घर गया था, परन्तु भेंट नहीं हुई।

'एकाध मित्र से अगर न भी मिले तो क्या हानि हो जाएगी?' श्यामा ने पान के बीड़े तैयार करते हुए कहा — हफ्ते भर से तो दोस्तों से मुलाकात की जा रही हैं, फिर भी जाने की घड़ी तक पूरी नहीं हो रही हैं। फिर, तुम जिस तरह दौड़ २ कर जा रहे हो, तुम्हारे दोस्त क्यों नहीं आ जाते तुम से मिलने?'

'इस में मेरे दोस्तों का दोष नहीं है श्यामा! अचानक चल पड़ने का हमारा विचार ही इसका कारण है। खैर, तुम्हारी तैयारी तो करीब-करीब पूरी हो ही चुकी है। मेरी सहायता की तो भी तुम्हें कोई जरूरत नहीं रहती। अकेले-अकेले सारी तैयारी करने में तुम अपना सानी नहीं रखतीं।'

'रहने भी दो यह तारीफ!' श्यामा ने पान के बीड़े देते हुए कहा — 'जहां तुम्हें जाना हो, शौक से जाओ। लेकिन जल्दी लौटने का ख्याल जरूर रखना ताकि खाने-पीने के बर्तन सारे मैं बन्द करने का समय मिल सके मुझे।'

'मैं बहुत जल्द लौटूंगा, श्यामा!' और सतीश अपनी साइकिल लेकर मनोहर से मिलने चला गया।

एक मनोहर से ही सतीश को नहीं मिलना था, बल्कि चार-पांच दोस्तों से मिलना था। श्यामा को उसने जान-बूझ कर चार-पांच दोस्तों के नाम नहीं गिनाए; अन्यथा वह घर से बाहर कदम भी न रखने देती। लेकिन सदा के लिए जब सतीश प्रयाग छोड़ कर जा रहा है, तब सभी मित्रों से मिल-भेंट लेना वह जरूरी समझता है। पता नहीं, कब किस मित्र की क्या सहायता उसे इस जीवन में लेनी पड़े।

दोस्तों से मिलते-मिलाते सतीश को ग्यारह बज गये। घर लौट कर उसने देखा कि श्यामा सारा सामान 'पैक' कर चुकी है। सिर्फ वही बोरा बन्द करने को बाकी है, जिसमें खाने-पीने के बर्तन भरे जाएंगे।

'बहुत देर हो गई श्यामा।' सतीश ने कहा — 'क्या करूं, रास्ते में ही जो मित्र मिल जाता, दस-पांच मिनट का समय ले लेता। अच्छा, मैं अभी नहा-धोकर खाना खा लेता हूं।'

मन-ही-मन श्यामा इस विलम्ब पर झुंझला उठी थी। लेकिन क्षमा भावना के ठण्डे छींटों ने उसका पारा चढ़ने न दिया। खाना खा-पीकर निवृत्त होते-होते एक बज गया। श्यामा ने दो बजते बजते बर्तनों का बोरा भी बन्द कर लिया और कहा — 'जाओ, तांगा ले आओ अब।'

'मैं जानता हूं श्यामा, मिसेज के घर पहुंचने की उत्सुकता स्वाभाविक है। लेकिन हमारी गाड़ी सवा छः बजे शाम को जाती है। वह तुम्हारे साथ तनिक भी रियायत न करेगी — दो मिनट पहले भी न खुलेगी।'

श्यामा ने पति का विद्रूप बखूबी समझ लिया। ईंट का जवाब पत्थर से देना तो उसने ठीक नहीं समझा; लेकिन मियां की जूती मियां के ही सिर देने से वह न चूकी; कहा —'अरे, तुम्हीं कह रहे थे कि मूली-गाजर की तरह आजकल गाड़ियां भरी रहती हैं। फिर क्यों न हम काफी समय पहले स्टेशन पहुंच जाए और बिस्तर फैला कर मनमानी जगह घेर लें? लगभग २४ घण्टे का सफर है। गाड़ी तो वहीं से बनकर चलती है न? इण्टर का टिकट भी क्यों खरीदें हम? पहले से चलकर थर्ड- क्लास में ही ही जगह घेर लें और जो पैसे बच सकें, बचा लें। अपना पैसा गाढ़े वक्त में काम देता है। नागपुर में कौन जाने, कितने दिन बैठे बैठे समय बिताना पड़े! इसीलिए कहती हूं कि अब तुम तांगा ले आओ।'

किसी और का आग्रह होता, तो सतीश इस वक्त साफ टाल देता। लेकिन श्रीमती जी का आग्रह टालने की क्षमता उसमें नहीं है। एक विनम्र आज्ञाकारी पति की तरह वह श्रीमती जी का बुजुर्गी से भरा भाषण सुनकर चुपचाप तांगा लेने चल पड़ा।

घर के निकट ही चौराहा था। चौराहे से पश्चिम की तरफ सौ कदम पर तांगे का अड्डा था। सतीश ने अड्डे पर देखा कि इस दोपहरी में सिर्फ दो तांगे वहां खड़े हैं। एक तांगे वाले से सतीश ने स्टेशन चलने की बात कही। उसने दो रुपए मांगे।

सतीश को दो रुपये बहुत ज्यादा लगे। वह दूसरे तांगे वाले की तरफ बढ़ गया। वह तांगा पश्चिम को ही मुंह किए खड़ा था। तांगेवाले ने अपना सिर थोड़ा-सा घुमाकर कहा — 'बाबू जी इस दोपहरी में सच बात कहे देता हूं: सवा रुपया लूंगा। इससे कम एक पैसा नहीं। कहें तो ले चलूं?'

किरन ज्यादा महंगाई का विचार

करते हुए सतीश को ऐसा करना सर्वथा उचित प्रतीत हुआ। कह दिया —'चलो भाई!' और तांगे पर जा बैठा।

तांगे पर बैठते समय सतीश ने जब तांगेवाले के पूरे चेहरे को निकट से देखा तो उसे काना पाया। 'काना!' सतीश ने मन ही मन कहा। उसे एक धक्का-सा लगा। किसी यात्रा पर प्रस्थान करते समय काने का दिख जाना बड़ा अपशकुन माना जाता है।

'अस्सी मील पर मिले काना, तो लौट घर आना!' यह कहावत याद आते ही सतीश का हृदय जोरों से धड़कने लगा। किसी अज्ञात आशंका का बवण्डर उसके हृदय को झकझोर उठा। लेकिन बात तय हो चुकी थी, अतः सतीश मन मार कर तांगे पर बैठा रहा।

घर के दरवाजे पर तांगा रोक कर सतीश भीतर गया। पत्नी से कहा — 'तांगा तो ले आया, लेकिन तांगे वाला काना है। प्रारम्भ में ही अपशकुन हो गया!'

'रहा करे काना, हमारा क्या छीन लेगा!' श्यामा ने कहा — 'प्रस्थान के समय शकुन अपशकुन के फेरे में नहीं पड़ना चाहिए। आजकल कौन मानता है यह दकियानूसी-पुराण!'

पत्नी की दिलासा पाकर सतीश ने बहुत कोशिश की कि इस अपशकुन की बात को वह अपने मन से दूर कर दे, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। तांगे वाले की सहायता से सारा सामान तांगे पर लाद कर सतीश अपनी पत्नी के साथ तांगे पर बैठ, स्टेशन की तरफ चल पड़ा।

स्टेशन पर टिकट घर की खिड़की के सामने सतीश ने जब देखा कि सैंकड़ों मुसाफिर कतार बांधे खड़े हैं, तो उसके देवता कूच कर गये। उस भीड़ में घुसने पर हड्डी-पसली टूट जाने पर भी टिकट मिलने की शीघ्र सम्भावना नहीं थी। किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा हो गया।

श्यामा ने कहा — 'अरे तुम, क्या सोचने लगे? वे पुलिस के सिपाही जो घूम रहे हैं, इन्हें कुछ भेंट चढ़ा कर अपना टिकट ले लो न। तनिक सी भेंट पाते ही वे फौरन टिकट ला देंगे। पढ़ा नहीं अखबारों में कि ये लोग खुले आम घूस लेते हैं।'

तरकीब सचमुच सफल हो गई। दो रुपये देने पर एक पुलिस वाले ने बात की बात में तीसरे दर्जे के दो टिकट लाकर सतीश को थमा दिये। टिकट पाकर सतीश के दम में दम आया। कहा श्यामा से— 'देखो, काना मिला था न, सो यहीं से परेशानी शुरू हो गई। भगवान् मालिक है, नागपुर तक पहुंचते-पहुंचते क्या होता है।'

'कुछ नहीं होगा!' श्यामा ने कहा— 'मन का भूत विकट होता है। हरदम अपशकुन की आशंका से भरे रहोगे, तो सर्वत्र परेशानी ही नजर आयेगी। अरे, हमने काने का मुंह देखा चलते समय; लेकिन हजारों मुसाफिरों को भी तो परेशानी हो रही है न! क्या इन सभी को प्रस्थान करते समय काना मिला होगा?'

'अच्छा चलो, प्लेटफार्म पर चलें।' और सतीश ने दो-तीन कुलियों को बुला कर इटारसी जाने वाली गाड़ी पर सामान ले चलने का आदेश दिया।

कुलियों ने तीसरे दर्जे के एक डब्बे में इनका सामान रख दिया और अपनी मजदूरी लेकर चले गये। गाड़ी छूटने में अभी लगभग तीन घण्टे का समय था। लेकिन मुसाफिर थे कि अभी से गाड़ी में आकर भरने लगे थे।

श्यामा ने बेंच के छोर पर अपना बिस्तर बिछाया और सामान यथा स्थान जमा कर काफी जगह घेर ली। सतीश भी चैन की सांस लेकर श्यामा के निकट सामने वाली बेंच पर बैठ गया। ज्यों ज्यों गाड़ी छूटने का समय निकट आता गया मुसाफिर भी उतनी ही अधिक संख्या में आकर उस डब्बे में भरने लगे। गर्मी के मारे सतीश का जी घबराने लगा। लेकिन कोई चारा नहीं था इससे मुक्ति पाने का। खजूर का पंखा यदि श्यामा ने ऊपर न रख लिया होता, तो दम घुट जाने में कोई कसर नहीं थी। धीरे धीरे भीड़ इतनी बढ़ गई कि श्यामा को अपना बिस्तर समेट कर आधा कर लेना पड़ा।

राम राम करके गाड़ी ठीक छः बजे प्लेटफार्म से सरकने लगी। श्यामा की आंखों में प्रसन्नता की झलक आकार हो उठी। वह अपने पिता के घर को जा रही थी।

सतीश ने स्वीकार किया कि आज कल शादी या सालें — किसी भी विवाह का निमन्त्रण स्वीकार करना दुनिया भर के खुराफातों और झंझटों को निमन्त्रण देना है। लेकिन अब तो वह न केवल साली के विवाह का निमन्त्रण स्वीकार कर चुका है; प्रत्युत सारी गृहस्थी को भी साथ-साथ ढोए ले जा रहा है। अब तो कई खुराफात सामने आयेंगे, उनका सामना उसे करना ही होगा।

लेकिन अपने मन की यह बात उसने श्यामा को नहीं बतलाई। ऐसा करके न तो वह पिता के घर जाने का श्यामा का हौसला ही कम करना चाहता था, न अपनी साली के विवाह के निमन्त्रण को ही किसी तरह महत्त्वहीन बतलाना चाहता था।

गाड़ी छुक-छुक भक-भक करती अपने पथ पर बढ़ी जा रही थी और सतीश अपनी अस्पष्ट आशंका में उन भूलों पर भूलता जा रहा था जो नागपुर पहुंचने पर कदाचित् उसे अनेक परेशानियों और झंझटों में पटक देगा। प्रस्थान करते समय उसे काना जो मिल गया था! अपशकुन जो हो गया था। अपने मन की कमजोरी पर नियन्त्रण कर सकने में वह सर्वथा असमर्थ था।

———

आर्य जगत्

आर्य पुरुषों से—

★

उत्सवों का दौरा प्रायः समाप्त हो गया है। अब आर्य समाजों के अधिकारियों को चाहिये कि अपने अपने स्थान पर वर्ष भर में निम्न लिखित रचनात्मक कार्य क्रम को पूरा करने की व्यवस्था करें।

(१) समाज के अधिकारियों में से कोई मुख्य अधिकारी प्रधान या मन्त्री आर्य समाज के सभासदों से मिल कर पता करें कि उनमें से कौन २ हिन्दी नहीं जानता, कौन २ नित्य संध्या नहीं कर सकते, उन्हें दोनों कामों के करने में सहायता देने की व्यवस्था करें।

इसके साथ ही प्रतिदिन समाज में कम से कम एक समय सन्ध्या हवन की व्यवस्था अवश्य की जाय। कोई आवे या न आवे समाज के अधिकारियों को ही यह कार्य हाथ में लेना चाहिये। इस अवसर पर परस्पर स्वाध्याय में एक दूसरे की सहायता की जाय। पुस्तकाध्यक्ष को विशेष रूप से समाज के सभासदों तथा उनके परिवारों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिये।

(२) स्थानीय आर्यसमाज को स्थानीय आर्यवीर दल बनाना चाहिए। इस के द्वारा सेवा तथा व्यायाम प्रचार का काम करना चाहिये।

(३) जन्म मूलक शर्मा, वर्मा, लाला, पण्डित आदि शब्दों का प्रयोग समाज के कामों में बन्द कर देना चाहिये। परस्पर जन्म मूलक जात पात के बन्धनों को छोड़ कर गुणकर्मानुसार आर्यों में परस्पर विवाह सबंध कराने के लिए योग्य वरों और कन्याओं की सूची बनानी चाहिए। अछूतों तथा निरामिषभोजी हिन्दुस्तानी भारतीय मुसलमानों के साथ खान पान तथा विवाह सम्बन्ध करने चाहिएं।

(४) वानप्रस्थाश्रम के योग्य आयु के आर्य पुरुषों के सहयोग से आर्यसमाज मन्दिरों में सत्संग कीर्तन चालू करने चाहिएं।

(५) इन दिनों बढ़ते हुए शराब और मांस प्रचार के विरुद्ध संगठित रूप में मौखिक व सार्वजनिक सभाओं द्वारा आंदोलन करना चाहिए।

(६) अपने शहर में पश्चिमी पंजाब से आये हुए शरणार्थियों की सेवा तथा सहायता की जाये।

— भीमसेन विद्यालंकार

प्रो० सुधाकर जी का देहान्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मन्त्री प्रो० सुधाकर एम० ए० का १६ जून को देहावसान हो गया। आप कई वर्षों से रक्तचाप रोग से पीड़ित थे।

प्रोफेसर जी लगभग ११ वर्ष तक सभा के मन्त्री रहे थे और हैदराबाद-सत्याग्रह के समय भी आप ही मन्त्री थे। आप हिन्दी और अंग्रेजी के उच्च-कोटि के विद्वान् थे। लगभग १० वर्ष तक आप गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी में अध्यापन कार्य करते रहे। आप की 'मनोविज्ञान' पुस्तक पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से मंगलाप्रसाद पुरस्कार भी दिया गया था। आपके निधन से आर्यसमाज की महान् क्षति हुई है।

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन

३१ जुलाई और १ अगस्त ४८ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन होगा।

सभा के इस वार्षिक अधिवेशन के लिए विचारणीय विषयों के सम्बन्ध में समाजों तथा प्रतिनिधियों को निम्नलिखित विषयों पर अपनी सम्मति, योजना, प्रस्ताव तथा प्रश्न भेजने चाहिएं। जिस से सभा में उन पर विचार किया जा सके।

(१) दयानन्द उपदेशक विद्यालय कहां और किस रूप में स्थापित किया जाय।

(२) वर्तमान प्रचार प्रणाली में क्या परिवर्तन किया जाय।

(३) शिक्षा संस्थाओं का स्थानीय आर्य समाजों तथा प्रान्तीय प्रतिनिधियों के साथ क्या सम्बन्ध होना चाहिए।

(४) आर्य शिक्षासमिति दयानन्द दलितोद्धारसभा, विदेश प्रचार तथा सभा द्वारा लेखबद्ध प्रचार के लिए क्या योजना चालू की जाय।

(५) जीवन-सदस्य प्रचारकों के लिए क्या योजना स्वीकार की जाय।

(६) आर्य समाजों के उत्सवों को आकर्षक तथा प्रभावशाली कैसे बनाया जाय।

(८) शुद्धि तथा दलितोद्धार का आन्दोलन किस रूप में चलाया जाय।

जातिभेद निवारक आर्य परिवार संघ का निर्वाचन

(१) अध्यक्ष—पं० गंगा प्रसाद जी रि० चीफ जज। (२) उपाध्यक्ष—पं० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति। (३) संचालक—प० रुद्रसेन जी। (४) उपसंचालक—पं० भगवान स्वरूप जी न्याय-भूषण। (५) सहसंचालक—स० आनन्द भिक्षु जी वानप्रस्थाश्रम। (६) कोषाध्यक्ष—प० राम प्रताप जी आर्य।

—

आर्य शिक्षालयों में संस्कृत

अंग्रेजों के शासन काल में भारतीय शिक्षालयों में अंग्रेजी भाषा का प्राधान्य रहा। अंग्रेजी अध्यापकों को मान की दृष्टि से देखा जाता रहा तथा उनके ही वेतन अन्य भाषाओं के अध्यापकों की अपेक्षा अच्छे नियत किए गये। शिक्षा विभाग से सम्बन्धित आर्य शिक्षालयों में भी अंग्रेजी भाषा तथा इसके अध्यापकों की प्रधानता रही क्योंकि अंग्रेजी भाषा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय का स्थान प्राप्त था। हिन्दी भाषा वैकल्पिक विषय होने के कारण उचित स्थान प्राप्त न कर सकी। अब विदेशी शासन के चले जाने से परिवर्तन हो गया है। अब हिन्दी को अनिवार्य विषय का स्थान प्राप्त हो जायगा, इसलिए प्रत्येक छात्र को हिन्दी लेनी होगी तथा उसमें उत्तीर्ण होना भी आवश्यक हो जायगा ऐसी अवस्था में अब आर्य शिक्षालयों में अन्य सरकारी शिक्षालयों की अपेक्षा कोई विशेषता नहीं रह जायगी। क्योंकि अन्य शिक्षालयों में भी हिन्दी अनिवार्य हो जायगी। इसलिए अब आर्य शिक्षालयों की प्रबन्ध कमेटियों को अपनी संस्थाओं में प्रत्येक विद्यार्थी को संस्कृत पढ़ने पर जोर देना चाहिए। संस्कृत के पढ़ने से स्कूलों के यही छात्र आगे जाकर भारतीय संस्कृत ग्रन्थों का सुगमता से अध्ययन कर सकेंगे तथा भारतीय संस्कृति के प्रति उनके हृदय में आदर के भाव उत्पन्न हो सकेंगे।

—कृष्णचन्द्र शास्त्री

—

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रांत का नया निर्वाचन

१. प्रधान राजगुरु श्री-धुरेन्द्र शास्त्री, २. उपप्रधान—श्री मदनमोहन सेठ, ३. श्री ईश्वर दयालु आर्य, ४. श्री द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री, ५. मन्त्री और अधिष्ठाता—श्री पं० रामदत्त शुक्ल, ६. उपमन्त्री—श्री धर्मपाल विद्यालंकार, ७. श्री भृगुदत्त शास्त्री, ८. श्री विश्वबन्धु शास्त्री, ९. श्री सुरेन्द्र शर्मा, १०. पुस्तकाध्यक्ष—श्रीराम आर्य, ११. स० पुस्तकाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द्र।

—

गुरुकुल वृन्दावन

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की अधिकारी परीक्षा संयुक्तप्रान्तीय इन्टर मीडिएट बोर्ड द्वारा हाई स्कूल परीक्षा के समकक्ष, तथा 'शिरोमणि' परीक्षा आगरा यूनीवर्सिटी द्वारा बी० ए० के समकक्ष स्वीकार कर ली गई है। गुरुकुल की 'आयुर्वेद शिरोमणि' परीक्षा को 'ए' श्रेणी में रजिस्ट्रेशन तथा स्वास्थ्य विभाग के सरकारी पदों पर नियुक्ति आदि के लिए संयुक्तप्रान्तीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

सोवियत में बच्चों के लिये महल

[एस० वेप्रित्स्काया]

यह सभी जानते हैं कि सोवियत में बच्चों को प्यार किया जाता है। यह प्यार सिर्फ जबानी नहीं होता बल्कि काम में भी लाया जाता है और सिर्फ मां-बाप नहीं, बल्कि सरकार भी जो जनता की इच्छाओं की प्रतिनिधि है चाहती है कि आगे की पीढ़ी में मस्ती की जिन्दगी हो। बहुत ही सुन्दर महल जिनमें क्रान्ति के पहले जार के परिवार वाले और धनी लोग रहते थे, बच्चों को दे दिये गये हैं।

लेनिनग्राड के अनिचकोफ महल को लीजिये। महल में पहले वाले सारे सुख हैं। सफेद संगमरमर की सीढ़ियां पहले ही की तरह सुन्दर हैं। हाल पहले ही की तरह कला कृतियों से सजे हैं। छुट्टियों के समय यहां जिसे अब नौजवानों का महल कहते हैं, ४००० मेहमान आते हैं। संगीत से हाल गूंज जाता है, अतिथि नाचते और गाते हैं। ये छोटे छोटे मेहमान ही इस महल के मालिक हैं।

स्कूल की पढ़ाई के समय के बाद भी बच्चे यहां आते हैं। उन्हें महल के सैकड़ों कमरों में वे सारी चीजें देखने को मिलती हैं जिन्हें देखने के वे उत्सुक रहते हैं।

हर चीज का नाम बताना भी कठिन है। यहां विशेष प्रयोगशालाएं, स्टूडियो, कारखाने, फूल पौधे आदि हैं। हर कमरे में किसी न किसी विज्ञान, कारीगरी या कला का समान मिलेगा।

महल के दूसरे हिस्से में जो नया बना है, विज्ञान और कारीगरी के भेद बच्चों को बताये जाते हैं। बारह साल पहले लेनिनग्राड के कारखानों से ५०० मशीनों के पुर्जे, यन्त्र और दूसरी चीजें यहां लायी गयीं। हम एक कमरे में घुसे। यह बढ़ई के काम का था। यहां हमने कुछ बच्चों को बेंचें बनाते देखा। कमरों की दीवारों में २६ तरह की लकड़ी नमूने के लिये लगी हैं।

नाटक घर में बच्चे नाटक तैयार कर सकते और खेल सकते हैं। यहां मशहूर अभिनेता उन्हें सिखाने के लिये रहते हैं। नाटक खेलने के लिये १००० पोशाकें हैं। गाने वालों के लिये ६० पिआनो, बच्चों के कई संगीत दल और बैण्ड दल भी बने हैं।

लड़ाई के बाद ज्यों ही लेनिनग्राड की मरम्मत शुरू हुई, नौजवान कम्यूनिस्ट संघ के ४,००० से ज्यादा मेम्बर महल की मरम्मत करने आये जिससे जल्द से जल्द महल बच्चों को सौंप दिया जाय।

इसी तरह दूसरे शहरों में भी बच्चों के महल हैं।

मास्को में चाय के धनी व्यापारी विसोत्स्की का महल बच्चों को दे दिया गया। यह महल अच्छा तो था। लेकिन दीवारों में काला शाह बलूत लगा होने के कारण इसका रंग काला था। इसे फिर से बनवाया गया। सोवियत के महल बनाने वालों और कलाकारों ने इसे चमका दिया। इसमें संगमरमर का हाल बनाया गया और बाजों के लिये जगह भी। दीवारों पर बच्चों की परियों की कहानियों के चित्र आंके गये।

लेनिनग्राड की तरह यहां भी सुख की सारी चीजें जुटायी गयी हैं जो बच्चों का ज्ञान बढ़ावें और रुचि अच्छी करें।

यूराल के एक लखपती ने येकातेरिनबर्ग (अब स्वर्दलोवस्क) की एक पहाड़ी में महल बनवाया। १९३७ में यह इमारत नौजवानों के महल के लिये दे दी गयी। यूराल के कलाकारों ने इसको सजाया।

का उद्घाटन हुआ। वह दिन कभी भुलाया नहीं जा सकता। लड़की लड़के खुश थे। महल के बाग की रोशनी और गर्मियों में शाम के वक्त बच्चों का गाना, भूला नहीं जा सकता। यह घर इतिहास जानने वालों के लिये खास तौर से मशहूर है। मास्को के हजारों छोटे छोटे लड़के मास्को और अपने देश के इतिहास की खोज में भाग लेते हैं। जिस कमरे में बच्चे पढ़ते हैं, उसमें सतरहवीं शताब्दी के मास्को का माडेल है।

नौजवान चित्रकार और मूर्तिकार स्टूडियो में काम करते हैं और नौजवान कारीगर कारखानों में लगे रहते हैं। चारों ओर गाने की लहरें उठती हैं और सभी कमरे रोशनी से जगमगाते रहते हैं। सिर्फ उस कमरे में रोशनी नहीं रहती, जिसमें भूगोल सम्बन्धी फिल्म दिखाया जाता है।

तिबलिसी और ओडेसा के महल भी जो पहले राजकुमार वोरोन्त्सोफ के थे, सोवियत सरकार के बच्चों को दे दिये हैं।

३००० से अधिक बच्चे रोज यहां आते हैं। बच्चों को पढ़ाने के लिये ४५ केन्द्र हैं। यहां की भूगोल सोसाइटी 'विश्व' को सारे देश के बच्चे जानते हैं। 'विश्व' के सदस्य सारे यूराल में घूमने जाते हैं और इन यात्राओं के समय वे जो कुछ इकट्ठा करने लायक चीजें लाते हैं, वे इस महल में रखी जाती हैं। यह सचमुच अजायब घर है। यहां खनिजों की रबड़, मैडागास्कर की काली लकड़ी, चीन के सिक्के और टिकटें मिलेंगी। बच्चे दूसरे देशों के बच्चों को चिट्ठियां लिखा करते और आपस में चीजों की अदला बदली किया करते हैं।

सब से नया नौजवानों का महल सोवियत लिथुआनिया की राजधानी विल्नियस में कुछ दिन पहले खोला गया है। यहां पहले जनरल रिनेनकाम्फ रहता था। (ताश)

यह कैसे विद्यार्थी तुम ?

[विद्यार्थी गोविन्द चन्द बेरी 'आलोक']

तुम सदा विद्यार्थी अपने को कहते हो,
पर क्या कभी पंक्तिओं को भी सहते हो?
काम कोई करते नहीं तुम ठीक समय पर।
प्रातः देर तक पड़े रहते हो बिस्तर पर।
रजनी में तुम अति विलम्ब से सोते हो।
अपने ही हाथों अपना स्वास्थ्य खोते हो।
तुम्हारा जीवन सादा नहीं, है आडम्बर मय।
अकारण ही तुमको लगा करता है भय।
फैशन का भूत तुम पर सदैव सवार है।
पर क्या करें? इस से तो बिलकुल लाचार हैं।
पुस्तकों को तो मंगा कर धर देते ताक पर।
और फिर घूमते रहते हो इधर से उधर।
'घूमने जाते हैं' कह जाते हो तुम घर पर।
पर जा रहे हो दोस्तों के साथ देखने पिक्चर।
परीक्षा आई कि रख लेते हो दो चार ट्यूटर।
कहते हो—क्या अच्छा हो पास हो जावें अगर।
काम तुम को अभी से करने लगा बेकाम।
संयम को तो करते दूर से ही तुम प्रणाम।
पाश्चात्य सभ्यता के बने तुम सच्चे पुजारी।
घृणा से देखते तुम भारतीय पद्धति सारी।
लोग समझते हैं—तुम करते विद्याभ्यास,
पर क्यों इस प्रकार करते सत्यानाश॥

हिमालय

[सुन्दर लाल 'अनन्त']

लखो बालको उच्च हिमालय,
कैसा अटल, अचल हिमालय।
श्वेत श्वेत हिम इस पर छाया,
कैसा सुन्दर दृश्य बनाया!
कितना उपयोगी हितकारी,
कितना सुखी और उपकारी।
गङ्गा-यमुना बहती इस में,
शोभा बढ़ती इसकी उसमें।
ऊंचे ऊंचे शिखर सुहाये,
डर से झुकते बादल आये।
बरसाते जल वारी वारी,
जिस पर अवलंबित खेती सारी।
इससे शिक्षा मिलती भारी,
बनो अभय औ पर उपकारी

चमकीले तारे

[जगदीशलाल 'शाह' नैनीताल]

ये चमकीले तारे हैं,
बड़े अनूठे प्यारे हैं।
आंखों में बस जाते हैं,
जी को बहुत लुभाते हैं।
जगमग-जगमग करते हैं,
हंस-हंस मन को हरते हैं।
नये जड़ाऊ गहने हैं,
विभावरी ने पहिने हैं।
कितने रंग बदलते हैं,
बड़े दिए से जलते हैं।
हीरे बड़े फबीले हैं,
छवि से भरे छबीले हैं।
कभी टूट ये पड़ते हैं,
फूलों जैसे झड़ते हैं।
चिनगी-सी छिटकाते हैं,
छोड़ फुलझड़ी जाते हैं।

गांधीजी की हत्या का संगठित षड़यन्त्र

[पृष्ठ ७ का शेष]

को सावरकर के मकान पर गये थे। इसके चार दिन बाद वे बम्बई से चले आये। 'हमारा यह पक्ष है कि यह भेंट अत्यन्त अर्थपूर्ण थी।'

करकरे और मदनलाल ९ जनवरी को पूना गये और वहां मदनलाल को नाथूराम गोडसे और आप्टे से मिलाया गया। इसके बाद करकरे और मदनलाल बाडगे की दूकान पर गये। बाडगे का नौकर शंकर किस्तैया भी वहां उपस्थित था। दूकान में उन्होंने हथगोले और गन-काटन देखे। १० जनवरी को करकरे और बाडगे बम्बई आये और श्री सावरकर के मकान पर गये। उसी दिन करकरे और मदनलाल प्रो० जैन से मिले।

१३ जनवरी को नाथूराम गोडसे ने आप्टे की पत्नी को अपने २००० रु० के जीवन बीमा का उत्तराधिकारी नामजद किया। यह चीज आप्टे की जानकारी से की गई।

१४ जनवरी को गोडसे और आप्टे बम्बई में थे। पहले वे एक होटल में ठहरे और फिर थाना में जोशी नामक एक व्यक्ति के घर चले गये। मदनलाल, बाडगे और शंकर भी बम्बई में थे। बाडगे के पास अपने थैले में कुछ विस्फोटक पदार्थ थे, जिनमें से पांच हथगोले और दो गनकाटन थे। उसी दिन नाथूराम ने ३ हजार रु० की एक अन्य पालिसी का उत्तराधिकारी गोपाल गोडसे की पत्नी को नामजद किया।

करकरे, मदनलाल, नाथूराम गोडसे और आप्टे १७ जनवरी को दिल्ली पहुंच गये। बाडगे, शंकर और गोपाल गोडसे १९ को दिल्ली पहुंचे।

२० जनवरी को प्रातः आप्टे शंकर और बाडगे को बिड़ला हाउस ले गया और उन्हें वह स्थान दिखलाया जहां गांधी जी प्रार्थना किया करते थे।

अभियुक्तों के पास दो बन्दूकें, पांच हथगोले, दो गन काटन आदि थे। २० जनवरी को ये शस्त्रास्त्र परस्पर बांट लिए गये। योजना यह थी कि मदनलाल गन-काटन फेंके। धमाके से जब गड़बड़ी मचे, तो दूसरे अभियुक्त भी अपने-अपने हथ-गोले फेंकें और इस बीच में पिस्तौलों से गोली चला दी जाए। किन्तु गन-काटन फेंके जाने के बाद शेष योजना पर अमल नहीं किया गया। इसका कारण शायद यह था कि गन-काटन फेंके जाने से अधिक गड़बड़ी नहीं हुई।

करकरे पहले ही बिड़ला हाउस से चल दिया था। आप्टे, नाथूराम गोडसे, बेर बाद एक टैक्सी से रवाना हुए। २० जनवरी को ये सब व्यक्ति बिड़ला हाउस में उपस्थित थे। मदनलाल को पकड़ कर हिरासत में ले लिया गया।

नाथूराम गोडसे और आप्टे उसी रात दिल्ली से चले गये। पहले वे कानपुर गये, फिर कल्याण और थाना होते हुए बम्बई पहुंचे। बाद में नाथूराम गोडसे, आप्टे, करकरे और गोपाल गोडसे थाना में एक मित्र के घर पर मिले।

२७ जनवरी को नाथूराम गोडसे और आप्टे प्रातः विमान द्वारा दिल्ली रवाना हुए। उसी शाम को वह ग्वालियर चले गये और और डा० परचुरे से पिस्तौल हासिल की। २९ जनवरी को वे दिल्ली लौट आये। २८ जनवरी को करकरे भी दिल्ली पहुंच गया। ३० जनवरी को सब इकट्ठे प्रार्थनास्थल को गये।

गांधी जी की हत्या के बाद नाथूराम गोडसे को घटनास्थल पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। आप्टे और करकरे को १४ फरवरी को बम्बई में, शंकर को ६ फरवरी को और गोपाल गोडसे को ५ फरवरी को पूना में गिरफ्तार किया गया। सावरकर ६ फरवरी को पूना में नजरबन्द कर लिये गये और डा० परचुरे को ५ फरवरी को ग्वालियर में गिरफ्तार किया गया।

इस षड़यंत्र में तीन अभियुक्त गंगाधर दण्डवते, गंगाधर जाधव और सूर्यदेव शर्मा — शामिल हैं और ये अभी तक गिरफ्तार नहीं किये जा सके हैं।

— —